Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

निशीथ-सूत्रम्

NIŚĪTHA-SŪTRA

II PART

सम्पादक

उपाध्याय कवि श्री अमर मुनि
मुनि श्री कन्हैयालाल "कमल"

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पुस्तक परिचय

निशीथ-भाष्य एक महत्त्वपूर्ण विशालकाय आगम है। उसमें आचार के सभी अंगों का जीवन एवं देश-काल की परिस्थितियों के अनुसार सांगोपांग वर्णन किया गया है। आचार के साथ दर्शन, तत्त्व-ज्ञान एवं उस समय की सांस्कृतिक, राजनैतिक, सामाजिक स्थिति का, रहन-सहन, रीति-रिवाज आदि सभ्यता का भी विस्तृत वर्णन मिलता है। वस्तुत निशीथ, एक ज्ञान-कोष है। जो अब तक अलभ्य था। उपाध्याय श्री अमरमुनिजी एवं सहयोगी पं० मुनि श्री कन्हैयालालजी द्वारा इसका संपादन तथा सन्मति ज्ञानपीठ, आगरा द्वारा प्रकाशन हुआ था। उक्त संपादित निशीथ पर कुछ रिसर्च स्कॉलर पी.एच.डी. भी कर चुके हैं।

भारत के मूर्धन्य विद्वानों एवं विशेष कर जर्मनी के कई पुस्तकालयों एवं विद्वानों की ओर से निरन्तर निशीथ की माँग आ रही है, उसकी संपूर्ति के लिए 'निशीथ-सूत्रम्' का द्वितीय संस्करण मुद्रित हो रहा है।

प्रस्तुत आगम पर स्थविर पुंगव श्री विसाहगणी महत्तर का भाष्य और आचार्य प्रवर श्री जिनदास महत्तर की विशेष चूर्णि भी प्रकाशित हो रही है। सुप्रसिद्ध दार्शनिक विद्वान् पं० दलसुख मालवणिया, अहमदाबाद 'निशीथ: एक अध्ययन' तथा सुप्रसिद्ध शोधकर्त्ता बी० बी० रायनाडे (उज्जैन) द्वारा इंग्लिश में लिखित समालोचनात्मक विस्तृत प्रस्तावना भी साथ में संलग्न है।

प्रस्तुत ग्रन्थ चार भागों में डेमी साइज 8 पेजी लगभग 2000 पृष्ठ।

द्वितीय संस्करण मूल्य : 600 रु०

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

AGAM SAHITYA RATNAMALA BOOK NO. 4.

NISHITH SUTRAM

(With Bhashya)

By

STHAVIR PUNGAVA SHRI VISAHGANI MAHATTAR

and Vishesh Churny

By

ACHARYA PRAVAR SHRI JINDAS MAHATTAR

PART II

UDESHIKA 1-9

Edited By

UPADHAYA KAVI SHRI AMAR CHAND JI MAHARAJ

&

MUNI SHRI KANHAIYA LAL JI MAHARAJ "KAMAL"

Published By

Bharatiya Vidya Prakashan
Delhi : Varanasi

Sanmati Gyan Peeth
Agra : Viraytan, Rajgir

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

Published by :
BHARATIYA VIDYA PRAHASHAN
I. U. B. Jawahar Nagar,
Bungalow Road, DELHI-7.

P. Box 108, Kachauri Gali,
VARANASI-1.

© **SANMATI GYAN PEETH,**
Lohamandi AGRA.
Viraytan, RAJGIR.

Second Revised Edition, 1st November, (Sharad Purnima) 1982

State Museum Library Lucknow

PRICE : 600.00.
Four Parts (Complete set)

5586

Printed by :
TAJ OFFSET
DELHI.

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आगम-साहित्य रत्न-मालायाश्चतुर्थं रत्नम्

स्थविर - पुंगव श्री विसाहगणि महत्तर - प्रणीतं, सभाष्यं

निशीथ-सूत्रम्

आचार्य-प्रवर श्री जिनदास महत्तर-विरचितया

विशेष-चूर्ण्या समलंकृतम्

द्वितीयो विभागः

उद्देशकाः १-९

सम्पादक

उपाध्याय कवि श्री अमरमुनि जी महाराज

तथा

मुनि श्री कन्हैयालाल जी म० "कमल"

प्रकाशक :

भारतीय विद्या प्रकाशन

दिल्ली : वाराणसी

सन्मति ज्ञान पीठ, आगरा

आगरा : वीरायतन, राजगृह

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

प्रकाशक

भारतीय विद्या प्रकाशन

१. यू० बी० जवाहरनगर
बैंग्लो रोड़, दिल्ली-७

पो० बा० १०८, कचौड़ी गली,
वाराणसी-१

© सन्मति ज्ञान-पीठ

लोहामण्डी,
आगरा

वीरायतन,
राजगृह

State Museum Library
Lucknow

5586

द्वितीय संशोधित संस्करण, १ नवम्बर (शरद् पूर्णिमा) १९८२.

मूल्य रु० ६००-०० (सम्पूर्ण चार भाग)

मुद्रक

ताज आफसेट प्रिंटर्स,
जामा मस्जिद, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

किस के कर-कमलों में ?

जिन का स्नेह-सिक्त वरद - हस्त,
मेरे सिर पर सदा से रहा है।
जिनका वात्सल्य मेरी संयम यात्रा का,
संबल सबल और सुखद पाथेय रहा है।

जिन का मनो लोक गगन - सा विशाल,
विराट और शारदी प्रभा से भी शुभ्र है।
जिन का हृदय पर-वेदना में कुसुमादपि कामल,
और अपनी संयम साधना में वज्रादपि कठोर है।

जिन का तपः पूत जीवन पवित्र है,
जिन का आचार निर्मल एवं शुद्ध है।
जिन का विचार उच्चतर, और
वाणी मधुर, सरस एवं स्निग्ध है।

अपने उन परम - पवित्र,
परम - गुरु, परम - श्रद्धेय।
श्री फतेहचन्द जी म० को,
सभक्ति सविनय समर्पित।

—मुनि कन्हैयालाल 'कमल'

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आत्म-निवेदन

मानव-मन में चिरकाल से संकलित संकल्पों की सिद्धि, मानव के तदनुरूप सत्साहस, साधन-परिज्ञान एवं अथक परिश्रम से होती है। साहित्य साधना का यही मूल मंत्र मेरे जीवन को सदा प्रगति की ओर बढ़ाता रहा है।

श्रद्धेय उपाध्याय कविरत्न श्री अमरचन्द्र जी महाराज की विमल यश-रश्मियां मेरे मानस को चिरकाल से आलोकित कर रही थी, पर उनके व्यावर वर्षावास से पूर्व जब मैंने सुना कि उपाध्याय श्री जी मरुधरधरा को पावन करने के लिए पधार गए हैं, तब मेरा हृदय हर्ष-विभोर हो गया।

उनके महामहिम व्यक्तित्व का स्पष्ट और विशद परिचय—मुझे "मधुकर" जी महाराज ने कराया, क्योंकि वे व्यावर-वर्षावास में उपाध्याय श्री के ज्ञानामृत का निरन्तर पान करते रहे थे।

अजमेर वर्षावास से पूर्व उपाध्याय कवि श्री जी के दर्शनों का पुण्यमय लाभ मुझे पुष्कर में मिला। वह दिवस मेरे जीवन का पवित्रतम दिवस था। पुष्कर में अल्प समय के संपर्क से ही मुझे कवि श्री जी के दार्शनिक मस्तिष्क का, सरस कवि मानस का और विराट व्यक्तित्व का साक्षात्कार हो गया। फिर तो सादड़ी सम्मेलन में, सोजत सम्मेलन में, जोधपुर के संयुक्त वर्षावास में और भीनासर के सम्मेलन में, कवि श्री जी के उर्वर एवं ज्योतिर्मय मस्तिष्क ने जो विचार क्रान्ति पैदा की, उससे आज कौन अपरिचित है? कवि श्री जी के विराट मानस में सबको सहज स्नेह से आत्म-जन बनाने की अपार क्षमता है।

ज्ञान और विचार के इस अधि देवता ने एक ओर अपने अगाध ज्ञान से समाज के पुरातन मानस को प्रभावित किया, तो दूसरी ओर समाज के उदीयमान अंकुरों को भी अपने ज्ञान के जल से सहज स्नेह के साथ सींचा है। इसका अर्थ-यह है, कि कवि श्री जी पुराने और नये युग की सन्धि हैं, बेजोड़ कड़ी हैं। उनके जीवन की अमर देन है—समाज संघटन।

मैं अपने साहित्यक जीवन के प्रारम्भ से ही आगम-साहित्य के सम्पादन के लिए उत्साहित रहा हूँ। आगम साहित्य की सेवा मेरे जीवन की विशेष अभिलाषा रही है। परन्तु मैं युगानुरूप अपनी एक नयी पद्धति से ही आगम साहित्य की सेवा करना चाहता था। अपनी इस साध को पूरा करने के लिए मुझे अतीत में बहुत कुछ श्रम करना पड़ा है। मैं आगमों का विषय-क्रम से वर्गीकरण करने का कार्य करीब ७-८ वर्ष पूर्व से कर रहा हूँ, उसे सुसम्बद्ध करने के लिए मुझे किसी बहुश्रुत के सहयोग की अपेक्षा थी।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कविश्री जी के जयपुर वर्षावास में इसी शुभ संकल्प को लेकर मैं उनकी पवित्र सेवा में रह चुका हूँ। परन्तु उनका स्वास्थ्य ठीक न रहने से मैं पूरा लाभ नहीं ले सका। मेरे मन की चिर साध ज्यों की त्यों बनी रही। परन्तु मैं निराश और हताश नहीं हुआ, क्योंकि "आशा मानव की परिभाषा" यह मेरे जीवन का संबल रहा है। अस्तु अपने संकलित आगम साहित्य को अन्तिम मूर्त रूप देने की पबल भावना से ही मैं हरमाड़ा से आगरा पुनः कवि श्री जी की पुनीत सेवा में उपस्थित हुआ।

आगमों के वर्गीकरण का कार्य साधारण नहीं है, अपितु यह एक चिरसमय-साध्य महान् कार्य है, परन्तु कवि श्री जी के दिशा-दर्शन से काफी सफलता मिली है, उसका एक भाग लग-भग तैयार हो चुका है, और वह देर-सवेर में प्रकाशित भी होगा।

निशीथ भाष्य एवं निशीथ चूर्णी का सम्पादन जिसकी मुझे स्वप्न में भी कल्पना नहीं थी, वह भी कवि श्री जी की प्रेरणा, दिशा दर्शन और उत्साह का ही शुभ परिणाम है। अन्यथा यह महान् कार्य कहाँ और मेरी अल्प शक्ति कहाँ ?

आगरा प्रस्थान से पूर्व मेरे सामने अनेक विकट समस्याएँ थीं, जिसमें श्रद्धेय गुरुदेव फतेहचन्द्र जी म० की अस्वस्थता मुख्य थी। परन्तु गुरुदेव ने मुझे आगरा जाने के लिए केवल प्रेरणा ही नहीं दी, बल्कि हृदय के सहज स्नेह से शुभाशीश भी प्रदान की। उनके शुभाशीर्वाद के बिना मेरा आगरा आना संकल्प-मात्र स्वप्न ही बना रहता। अतः मैं अपने मानस की सम्पूर्ण भक्ति के साथ गुरुदेव का अभिनन्दन करता हूँ। साथ ही गुरुदेव की सेवा का भार मुमुक्षु पं० मुनि श्री मिश्रीमल जी महाराज ने स्वीकार करके महान् ज्ञान-यज्ञ के लिए जो सेवाएँ अर्पित की हैं इसके लिए भी मैं उनका हृदय से आभारी हूँ।

श्रद्धेय अमोलकचन्द्र जी महाराज की प्रेरणा, उत्साह और सहयोग भी मेरे जीवन में चिरस्मणीय बना रहेगा। निशीथ-चूर्णि के प्रस्तुत प्रकाशन में सब से बलवती प्रेरणा आपकी ही रही है। मैं अपने निकट सहयोगी मुनि श्री चाँदमल जी की सेवा को भी नहीं भूल सकता उनकी सक्रिय सेवा भी मेरे कार्य में एक विशेष स्मरणीय रहेगी।

दिनांक
श्री पार्श्वजयंती
१६–१२ सन् १९५७
लोहामंडी, आगरा।

मुनि कन्हैयाल,'कमल'

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

विषयानुक्रम

प्रथम उद्देशक

सूत्र संख्या	विषय	गाथाङ्क	पृष्ठाङ्क
	अनुगम–अनुयोग की व्याख्या		१–२
१	हस्तकर्म	४९७–५९१	२–२६
	हस्तकर्म का पदार्थ	४९७	२
	भिक्षुपद का निक्षेप	४९८	,,
	हस्त का निक्षेप	४९९	३
	कर्म का निक्षेप	५००	,,
	द्रव्य कर्म और भावकर्म	,,	,,
	हस्तकर्म के भेद	५०१	४
	असंक्लिष्ट हस्तकर्म के भेद-प्रभेद तथा तत्सम्बन्धी प्रायश्चित्त	५०२–५०३	,,
	सिद्धसेन के मतानुसार हस्तकर्म के छेदन आदि भेद तथा तत्सम्बन्धी प्रायश्चित्त	५०४–५०५	४–५
	छेदन आदि के अपवादों का स्वरूप	५०६–५१३	५–७
	सहेतुक और अहेतुक संक्लिष्ट हस्तकर्म	५१४–५१६	७
	सदोष वसति में संक्लिष्ट हस्तकर्म के हेतुओं की परम्परा तथा संयम की रक्षा के लिए गीतार्थ-निर्दिष्ट अपवाद व तद्विषयक प्रायश्चित्त	५१७–५६४	७–१९
	यतना की स्थिति में भी साधक की संयम में अस्थिरता एवं तद्विषयक पानी के प्रबल प्रवाह से पतित वट-पादप का दृष्टान्त	५६५	१९
	वसति के बाहर मोहोदय के हेतु	५६६	,,
	श्रवण, दर्शन, स्मरण आदि से होने वाले मोहोदय का निग्रह करने के हेतु प्रशस्त भावना एवं यतना	५६७–५७०	१९–२०
	बाह्य निमित्त के अभाव में होने वाले तीव्र मोहोदय के आभ्यन्तरिक हेतुओं का स्वरूप एवं तत्सम्बन्धी तीन दृष्टान्त :— १—चक्रवर्ती का आहार २—कामातुर युवती ३—पानी के प्रवाह में बहने वाला पुरुष	५७१–५७७	२१–२२

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सूत्र संख्या	विषय	गाथाङ्क	पृष्ठाङ्क
	हस्त कर्म के प्रायश्चित्तों का कालकृत विभाग	५७८–५८५	२२–२४
	मोहोदय होने पर आचार्य से निवेदन तथा	५८६	२४
	आचार्य द्वारा मोहोपशमन की विधि का उपदेश	५८७	२५
	निर्ग्रन्थियों के लिए विशेष प्रायश्चित्त का निरूपण	५८८	,,
	कारित एवं अनुमोदित हस्तकर्म के विभिन्न प्रायश्चित्त	५८९	,,
	कारित एवं अनुमोदित का स्वरूप	५९०–५९१	२५–२६
	निर्ग्रन्थियों के लिए विशेष प्रायश्चित्त का निरूपण	५९२–६१३	२६–३२
२–९	अंगादान		
२	काष्ठ आदि से अंगादान के संचालन का निषेध एवं	५९२–५९६	२६–२७
	तत्सम्बन्धी प्रायश्चित्त		
३	अंगादान के मर्दन का निषेध एवं तत्सम्बन्धी प्रायश्चित्त		२७
४	तेल आदि से अंगादान के अभ्यंग का निषेध तथा तत्सम्बन्धी प्रायश्चित		,,
५	लोध आदि के कल्क से अंगादान के उबटन का निषेध एवं तद्विषयक प्रायश्चित्त		,,
६	शीत अथवा उष्ण जल से अंगादान के धोने का निषेध एवं तद्विषयक प्रायश्चित्त		,,
७	अंगादान की त्वचा दूर करने का निषेध तथा तत्सम्बन्धी प्रायश्चित्त		२८
८	अंगादान के सूँघने का निषेध		,,
	उपर्युक्त सात सूत्रों के सात दृष्टान्त	५९७–५९८	,,
	अंगादान सम्बन्धी अपवाद	५९९	२९
	संचालन-विषयक सूत्र को छोड़कर शेष छः सूत्रों द्वारा-निर्ग्रन्थों के समान निर्ग्रन्थियों का वर्णन	६००	,,
९	शुक्रपात का निषेध तथा तत्सम्बन्धी प्रायश्चित्त एवं अपवाद	६०१–६१२	२९–३१
	निर्ग्रन्थों के समान निर्ग्रन्थियों का वर्णन	६१३	३२
१०	सचित्त पुष्प आदि की गन्ध सूंघने का निषेध		३२
	गंध सूंघने से लगने वाले दोष, तत्सम्बन्धी विराधना, अपवाद एवं विधि	६१४–६१८	३२–३३
११	सोपान आदि का निर्माण करवाने का निषेध		३३
	सोपान आदि के निर्माण से लगने वाले दोष, तत्सम्बन्धी अपवाद एवं क्रम	६१९–६२९	३३–३५
१२	सेतु-पुल का निर्माण करवाने का निषेध		३६
	सेतु का निर्माण करवाने से लगने वाले दोष एवं तद्विषयक अपवाद	६३०–६३८	३६–३७

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सूत्र संख्या	विषय	गाथाङ्क	पृष्ठाङ्क
१३	छींके के निर्माण का निषेध		३७
	छींके के निर्माण के अपवाद	६३६–६५०	३८-३९
१४	रज्जु, चिलमिली आदि के निर्माण का निषेध		३९
	एतद्विषयक अपवाद	६५१–६६१	४०-४१
१५-३८	सूई, कतरनी, (कैंची) नखछेदक एवं कर्णशोधक	६६२–६८४	४१-४६
१५-१८	सूई, कतरनी, नखछेदक एवं कर्णशोधक के सुधरवाने का निषेध एवं तद्विषयक अपवाद	६६२–६६७	४१-४२
१९-२२	बिना प्रयोजन सूई आदि की याचना करने का निषेध एवं तद्विषयक दोष	६६८–६७०	४२-४३
२३-२६	सूई आदि की अविधि से याचना करने का निषेध		४३
२७-३०	सूई आदि जिस प्रयोजन से लाई जाए उसके अतिरिक्त अन्य प्रयोजन सिद्ध करने का निषेध	६७१–६७२	४३-४४
३१-३४	सूई आदि केवल अपने कार्य के लिए लाने पर अन्य को देने का निषेध	६७३–६७४	४४
३५-३८	सूई आदि के अविधिपूर्वक लौटाने का निषेध	६७५–६८१	४४-४५
	सूई आदि के लौटाने की विधि	६८२–६८४	४६
३९-४६	पात्र, दण्ड आदि	६८५–७५८	४६-५६
३९	पात्र सुधरवाने का निषेध	६८५–६८८	४६-४७
	पात्र के भेद व पात्र-सम्बन्धी अपवाद	६८९–६९८	४७-४८
४०	दंड आदि सुधरवाने का निषेध		४८
	दंड के भेद	६९९	४९
	दंड का परिमाण	७००–७०२	,,
	दंड रखने का प्रयोजन	७०३	,,
	दंड आदि सुधरवाने के अपवाद	७०४–७२५	४९-५१
४१	पात्र के थेगली लगाने का निषेध		५१
	पात्र के थेगली लगाने के अपवाद	७२६–७३१	५१-५२
४२	पात्र के तीन से अधिक थेगलियां लगाने का निषेध एवं तत्सम्बन्धी अपवाद	७३२–७३६	५२-५३
४३	पात्र को अविधि से बांधने का निषेध		५३
	बंधन के प्रकार तथा बंधन की विधि	७३७–७३९	,,
	बिना प्रयोजन विधिपूर्वक बांधने का भी निषेध	७४०	,,
	पात्र बांधने के अपवाद	७४१–७४२	५४

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सूत्र संख्या	विषय	गाथाङ्क	पृष्ठाङ्क
४४	पात्र को एक बंधन से बांधने का निषेध	७४३–७४४	५४
४५	पात्र को तीन से अधिक बंधनों से बांधने का निषेध एवं तत्सम्बन्धी प्रायश्चित्त व अपवाद	७४५–७४९	,,
४६	नियत काल के बाद अधिक बंधन वाला पात्र रखने का निषेध	७५०	५५
	बन्धन वाला पात्र रखने से लगने वाले दोष	७५१--७५८	५५--५६
४७--५६	वस्त्र	७५९--७९७	५६--६२
४७	वस्त्र के थेगली देने का निषेध		५६
	वस्त्र के प्रकार	७५९--७६३	५६--५७
	वस्त्रों के परिभोग की विधि तथा तद्विषयक गुण	७६४--७६६	५७--५८
	बहु परिकर्मयुक्त वस्त्र ग्रहण करने का निषेध एवं तत्सम्बन्धी अपवाद	७६७--७७५	५८--५९
४८	वस्त्र के तीन से अधिक थेगलियां लगाने का निषेध तथा तत्सम्बन्धी अपवाद	७७६--७८०	५९--६०
४९	वस्त्र को अविधि से सीने का निषेध तथा तत्सम्बन्धी प्रायश्चित्त		६०
	सिलाई के भेद	७८१--७८३	,,
५०	वस्त्र के गांठ लगाने का निषेध, तत्सम्बन्धी अपवाद एवं प्रायश्चित्त	७८४--७८६	६०--६१
५१	वस्त्र के तीन से अधिक गांठें लगाने का निषेध		६१
५२	फटे हुए वस्त्र के गांठ लगाने का निषेध		,,
५३	फटे हुए वस्त्र के तीन से अधिक गांठें लगाने का निषेध		,,
५४	अविधि से गांठ लगाने का निषेध		,,
५५	असदृश वस्त्र की थेगली लगाने का निषेध, तत्सम्बन्धी अपवाद एवं प्रायश्चित्त	७८७--७९१	,,
५६	प्रमाण से अधिक वस्त्र नियत काल से अधिक समय तक रखने का निषेध, तत्सम्बन्धी अपवाद एवं प्रायश्चित्त	७९२--७९७	६१--६२
५७	घर की भित्ति पर लगे हुए धूम को लेने का निषेध		६२
	एतत्सम्बन्धी अपवाद एवं प्रायश्चित्त	७९८--८०३	६२--६३
५८	सदोष आहार ग्रहण करने का निषेध		६३
	एतत्सम्बन्धी प्रायश्चित्त एवं अपवाद	८०४--८१५	६३--६६

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

द्वितीय उद्देशक

सूत्र संख्या	विषय	गाथाङ्क	पृष्ठाङ्क
	प्रथम और द्वितीय उद्देशक का सम्बन्ध	८१६--८१८	६७
१--८	पाद-प्रोञ्छनक (रजोहरण)	८१९--८५०	६७--७२
१	काष्ठ के दंड वाला पाद-प्रोञ्छनक बनाने का निषेध, तत्सम्बन्धी प्रायश्चित्त एवं अपवाद	८१९--८२७	६७--६९
	काष्ठ के दण्ड वाला पाद-प्रोञ्छनक रखने से लगने वाले दोष	८२८	६९
	काष्ठ के दण्ड वाला पाद-प्रोञ्छनक रखने के कारण	८२९	७०
	दण्ड और दसा का परिमाण	८३०	,,
	काष्ठ के दण्ड वाला पाद-प्रोञ्छनक रखने के अपवाद	८३१--८३४	,,
२	काष्ठ के दण्ड वाला पाद-प्रोञ्छनक ग्रहण करने का निषेध		,,
३	काष्ठ के दण्ड वाला पाद-प्रोञ्छनक लेकर रखने का निषेध		,,
४	काष्ठ के दण्ड वाला पाद-प्रोञ्छनक रखने की आज्ञा देने का निषेध		,,
५	काष्ठ के दण्ड वाला पाद-प्रोञ्छनक देने का निषेध		७१
६	काष्ठ के दण्ड वाले पाद-प्रोञ्छनक के परिभोग का निषेध	८३५--८३७	,,
७	नियत काल से अधिक काष्ठ के दण्ड वाला पाद-प्रोञ्छनक रखने का निषेध, एतत्सम्बन्धी प्रायश्चित्त एवं अपवाद	७३८--८४४	७१--७२
८	काष्ठ के दण्ड वाले पाद-प्रोञ्छनक को धोने का निषेध, तत्सम्बन्धी प्रायश्चित्त एवं अपवाद	८४५--८५०	७२--७३
९	गन्ध		७३
	चन्दन आदि की गन्ध सूंघने का निषेध, तत्सम्बन्धी अपवाद एवं प्रायश्चित्त	८५१	,,
१०	सोपान		,,
	सोपान आदि का स्वयं निर्माण करने का निषेध, तत्सम्बन्धी अपवाद एवं प्रायश्चित्त		,,
११	सेतु		,,
	सेतु का निर्माण करने का निषेध, तत्सम्बन्धी अपवाद एवं प्रायश्चित्त		,,
१२	छींका		,,
	छींका आदि के निर्माण का निषेध, तत्सम्बन्धी अपवाद एवं प्रायश्चित्त		,,
१३	रज्जु		,,
	रज्जू आदि का निर्माण करने का निषेध, तत्सम्बन्धी अपवाद एवं प्रायश्चित्त		,,
१४-१७	सूई आदि के सुधारने (संवारने) का निषेध		७४
१८--१९	भाषा	८५२--८८५	७४--८

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सूत्र संख्या	विषय	गाथाङ्क	पृष्ठाङ्क
१८	कठोर भाषा बोलने का निषेध		
	तत्सम्बन्धी अपवाद एवं प्रायश्चित्त	८५२-८७४	७४--७६
१९	मृषावाद बोलने का निषेध, तद्विषयक अपवाद एवं प्रायश्चित्त	८७५--८८५	७६--८१
२०	अदत्तादान	८८६--८९४	८१--८३
	अदत्तादान का निषेध, तद्विषयक अपवाद तथा प्रायश्चित	,,	,,
२१	हस्त-पाद-प्रक्षालन	८९५--९१२	८३--८६
	हाथ-पैर आदि धोने का निषेध, तत्सम्बन्धी अपवाद तथा प्रायश्चित	,,	,,
२२	चर्म	९१३--९४७	८६--९३
	चर्म रखने का निषेध, तत्सम्बन्धी अपवाद एवं प्रायश्चित्त	,,	,,
२३--२४	वस्त्र	९४८--९७४	९३--९८
२३	प्रमाण से अधिक वस्त्र रखने का निषेध, वस्त्रों के प्रकार,		
	अधिक मूल्य के वस्त्र रखने का निषेध,		
	प्रमाण से अधिक तथा बहुमूल्य वस्त्र-ग्रहण-सम्बन्धी अपवाद एवं प्रायश्चित्त	,,	९३--९७
२४	अखण्ड वस्त्र लेने का निषेध		९८
२५--३१	पात्र, दण्ड आदि	९७५--९९८	९८--१०२
२५	पात्र सुधारने का निषेध, तत्सम्बन्धी अपवाद एवं प्रायश्चित्त	९७५--९७६	९८
२६	दण्ड आदि सुधारने का निषेध,		
	तत्सम्बन्धी अपवाद एवं प्रायश्चित्त	९७७	९८--९९
२७	स्वजन के द्वारा गवेषित पात्र ग्रहण करने का निषेध,		
	तत्सम्बन्धी अपवाद तथा प्रायश्चित्त	९७८--९८७	९९-१००
२८	अन्य तीर्थी आदि पर के द्वारा गवेषित का पात्र लेने का निषेध,		
	तत्सम्बन्धी अपवाद एवं प्रायश्चित्त	९८८	१०१
२९	ग्राम महत्तर आदि द्वारा गवेषित पात्र लेने का निषेध,		
	तद्विषयक अपवाद तथा प्रायश्चित्त	९८९--९९०	,,
३०	बलवान् द्वारा गवेषित पात्र ग्रहण करने का निषेध,		
	तद्विषयक अपवाद एवं प्रायश्चित्त	९९१--९९२	,,
३१	दान का फल बताकर पात्र लेने का निषेध,		
	तत्सम्बन्धी अपवाद एवं प्रायश्चित्त	९९३--९९८	१०१--१०२
३२--३६	आहार	९९९-१००९	१०२--१०५
३२	नित्यपिण्ड और अग्रपिण्ड ग्रहण करने का निषेध		१०३
	नित्य पिण्ड के भेद	९९९	,,
	निमन्त्रण आदि की व्याख्या	१०००--१००२	,,

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सूत्र संख्या	विषय	गाथाङ्क	पृष्ठाङ्क
	नित्यपिण्ड संबन्धी प्रायश्चित्त	१००३--१००४	१०३--१०४
	नित्यपिण्ड ग्रहण करने से लगने वाले दोष	१००५--१००६	१०४
	नित्यपिण्ड सम्बन्धी अपवाद	१००७	"
३३--३६	नित्य पिण्ड का उपभोग करने का निषेध, तद्विषयक अपवाद एवं प्रायश्चित्त	१००८--१००९	१०४--१०५
३७	वास	१०१०--१०२४	१०५--१०८
	चार प्रकार के नित्य	१०१०	१०५
	द्रव्यादि की चतुर्भङ्गी	१०११--१०१२	"
	द्रव्यादि चार प्रकार के नित्यों की विशेष व्याख्या	१०१३--१०१८	१०६--१०७
	नित्यवास के प्रायश्चित्त	१०१९-१०२०	१०७
	नित्यवास के अपवाद	१०२१--१०२४	१०७--१०८
३८	दान-संस्तव	१०२५--१०५३	१०८--११३
	दान के पूर्व अथवा पश्चात् दाता के संस्तव का निषेध		१०८
	संस्तव के भेद	१०२५--१०४०	१०८--१११
	स्वजन-संस्तव के दोष	१०४१--१०४५	१११--११२
	वचन-संस्तव	१०४६--१०४७	१११
	पश्चात्-संस्तव	१०४८--१०४९	"
	संस्तव का प्रायश्चित्त	१०५०	"
	संस्तव सम्बन्धी अपवाद	१०५१	"
	वचन और स्वजन-संस्तव की पूर्वापरता	१०५२	११३
	निर्ग्रन्थों के समान निर्ग्रन्थियों का वर्णन	१०५३	"
३९	आहार	१०५४ १०७९	११३-११७
	भिक्षाकाल के पूर्व अथवा पश्चात् स्वजनों के यहां भिक्षार्थ जाने का निषेध एवं तद्विषयक दोष	१०५४--१०६०	११३--११४
	भिक्षार्थ जाने के कारण	१०६१--१०६३	११४--११५
	प्रबलतम कारण के सात भेद	१०६४--१०६६	११५
	कारणवशात् भिक्षा के लिए जाने वाला आराधक	१०६७--१०६८	११५-११६
	मातृकुल और पितृकुल की व्याख्या	१०६९--१०७२	११६
	अकाल-प्रवेश के दोष	१०७३--१०७७	११६-११७

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सूत्र संख्या	विषय	गाथाङ्क	पृष्ठाङ्क
	अकाल-प्रवेश के अपवाद	१०७८	११७
	अकाल में भिक्षार्थ प्रवेश की विधि	१०७९	,,
४०-४२	अन्यतीर्थी आदि के साथ भिक्षा आदिके लिए गमन	१०८०-११०३	११८-१२२
४०	अन्यतीर्थी आदि के साथ भिक्षा के लिए जाने का निषेध, तत्सम्बन्धी दोष तथा अपवाद	१०८०-१०८९	११८-१२०
४१	अन्यतीर्थी आदि के साथ शौच या स्वाध्याय के लिए जाने का निषेध, तत्सम्बन्धी दोष एवं अपवाद	१०९०-१०९५	१२०-१२१
४२	अन्य तीर्थी अथवा गृहस्थ के साथ विहार करने का निषेध, तत्सम्बन्धी दोष, अपवाद. विधि एवं प्रायश्चित्त	१०९६-११०३	१२१-१२२
४३	पानक	११०४--११११	१२२--१२४
	कसैले पानी को परठने-फेंकने का निषेध, तत्सम्बन्धी दोष तथा अपवाद	११०४-१११०	,,
	अपेय की व्याख्या	११११	१२४
४४--४५	आहार	१११२-११३७	१२५-१३०
४४	अनेक प्रकार के भोजन में से अच्छा-अच्छा खाकर खराब-खराब फेंक देने का निषेध, तत्सम्बन्धी दोष, अपवाद आदि	१११२-११२१	१२५-१२६
४५	अधिक आहार में से बचे हुए आहार को बिना अनुज्ञा के फेंकने पर लगने वाले दोष, तद्विषयक अपवाद आदि	११२२-११३७	१२६-१३०
४६-४९	सागारिक पिण्डादि	११३८-१२१६	१३०-१४८
४६-४७	सागारिक पिण्ड का उपभोग करने एवं ग्रहण करने का निषेध		१३०
	सागारिक की व्याख्या	११३८-११४०	१३०-१३१
	शय्यातर आदि की व्याख्या	११४१-११५०	१३१-१३३
	पिण्ड के प्रकार, तत्सम्बन्धी दोष, अपवाद, विधि आदि	११५१-१२०४	१३३-१४६
४८	सागारिक के कुल को बिना जाने पूछे आहारार्थ प्रवेश करने का निषेध, तत्सम्बन्धी दोष एवं अपवाद	१२०५-१२०९	१४६-१४७
४९	सागारिक की निश्राय में आहार ग्रहण करने का निषेध	१२१०--१२१६	१४७-१४८

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सूत्र संख्या	विषय	गाथाङ्क	पृष्ठाङ्क
५०–५८	शय्या-संस्तारक	१२१७-१३८६	१४९-१८७
५०	पर्युषणतक के लिए लाये हुए शय्या-संस्तारक को अतिरिक्त काल तक रखने का निषेध	१२१७-१२४३	१४९-१५४
५१	संवत्सरी के बाद दस रात्रि से अधिक समय तक शय्यासंस्तारक रखने का निषेध	१२४४-१२८०	१५४-१६३
५२	वर्षा में भींगते हुए शय्या-संस्तारक को उठा कर एक ओर न रखने से लगने वाले दोष	१२८१-१२८६	१६३-१६४
५३	बिना सागारिक की अनुमति के प्रत्यर्पणीय शय्या-संस्तारक एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने का निषेध	१२८७-१२९९	१६४-१६७
५४-५५	सागारिक के शय्या-संस्तारक को बिना अनुज्ञा के एक स्थान से दूसरे स्थान में बाहर ले जाने का निषेध		१६७
५६	प्रत्यर्पणीय शय्या-संस्तारक को बिना वापिस सौंपे विहार करने का निषेध	१३००-१३०९	१६७-१६९
५७	बिछाये हुए शय्या-संस्तारक को बिना समेटे विहार करने का निषेध	१३१०-१३१३	१६९-१७०
५८	खोए गए शय्या-संस्तारक के न ढूंढने पर लगने वाले दोष	१३१४-१३८६	१७०-१८७
५९	बिना प्रतिलेखन उपधि रखने का निषेध		१८७
	उपधि-उपकरण के प्रकार	१३८७-१३८९	१८८
	जिनकल्पिक उपधि	१३९०-१३९४	१८८-१८९
	स्थविरकल्पिक उपधि	१३९५-१४१६	१८९ १९३
	उपधि की प्रतिलेखना एवं तत्सम्बन्धी दोष	१४१७-१४३७	१९३-१९७

तृतीय उद्देशक

	द्वितीय तथा तृतीय उद्देशक का सम्बन्ध	१४३८	१९९
१-१५	आगंतागार, आरामागार, गृहपतिकुल आदि से सम्बन्धित आहार	१४३९-१४८१	१९९-२०९
१-४	आगंतागार (मुसाफिर खाना) आदि में जोर-जोर से चिल्लाकर आहार मांगने का निषेध, तत्सम्बन्धी दोष, अपवाद आदि	१४३९-१४४८	१९९-२०१
५--८	आगंतागार आदि में कौतुक के निमित्त आने वाले से आहार मांगने का निषेध, तत्सम्बन्धी दोष, अपवाद एवं प्रायश्चित्त	१४४९-१४५७	२०१-२०३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सूत्र संख्या	विषय	गाथाङ्क	पृष्ठाङ्क
९-१२	आगंतागार आदि में सन्मुख लाकर दिये जाने वाले आहार-के ग्रहण का निषेध आदि	१४५८-१४६४	२०३-२०५
१३	गृहपति के मना करने पर आहारादि के निमित्त प्रवेश करने का निषेध	१४६५-१४७०	२०५-२०६
१४	भोज के स्थान पर जाकर आहारादि ग्रहण करने का निषेध	१४७१-१४८२	२०६-२०९
१५	त्रिगृहान्तर से लाकर दिये जाने वाले आहार के ग्रहण का निषेध	१४८३-१४९०	२०९-२१०
१६--२१	पाद का प्रमार्जन आदि	१४९१-१४९९	२१०-२१३
१६	पाद के आमज्जन-प्रमार्जन का निषेध	१४९१-१४९४	२१०-२११
१७	पाद के परिमर्दन का निषेध		२११
१८	पाद के अभ्यंग का निषेध		,,
१९	पाद के उबटन का निषेध		,,
२०	पाद के प्रक्षालन का निषेध		२११-२१२
२१	पाद को रंगने का निषेध	१४९५-१४९९	२१२-२१३
२२-२७	काय का प्रमार्जन आदि	१५००	२१३
२८-३३	काय के व्रण का प्रमार्जन आदि	१५०१-१५०४	२१३-२१५
३४-३९	गांठ-गूंबड़े आदि का उपचार	१५०५-१५०९	२१५-२१७
४०	गुदा आदि की कृमियां को अंगुली से निकालने का निषेध	१५१०-१५१३	२१७
४१-४६	लम्बे बढ़े हुए नख, बाल आदि का छेदन करने का निषेध		२१७-२१८
४७-६६	दांत, ओष्ठ आदि के प्रमार्जन, परिमर्दन आदि का निषेध	१५१४-१५२०	२१८-२२१
६७-६८	काय को विशुद्ध करने का निषेध	१५२१-१५२३	२२१-२२२
६९	ग्रामानुग्राम विचरण करते हुए वस्त्रादि से सिर ढकने का निषेध	१५२४-१५२८	२२२-२२३
७०	वशीकरण-सूत्र (ताबीज) बनाने का निषेध	१५२९-१५३२	२२३-२२४
७१-८०	घर में, घर के द्वार पर, घर के आंगन में, श्मशान में, कीचड़ आदि के स्थान में उच्चार-प्रश्रवण (टट्टी-पेशाब) डालने का निषेध, तत्सम्बन्धी प्रायश्चित्त, अपवाद आदि	१५३३-१५५४	२२४-२२९

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

चतुर्थ उद्देशक

सूत्र संख्या	विषय	गाथाङ्क	पृष्ठाङ्क
	तृतीय और चतुर्थ उद्देशक का सम्बन्ध	१५५५	२३१
१	राजा को वश में करने का निषेध	१५५६-१५६७	२३१-२३३
२-१८	राजरक्षक, नगररक्षक इत्यादि को वश में करने आदि का निषेध	१५६८-१५८२	२३३-२३६
१९	कृत्स्न-अखण्ड औषधि के उपभोग का निषेध	१५८३-१५९१	२३६-२३८
२०-२१	आचार्य एवं उपाध्याय को बिना दिए आहार का उपभोग करने का निषेध	१५९२-१६१६	२३८-२४३
२२	स्थापना-कुल में बिना जाने-बूझे प्रवेश करने का निषेध	१६१७-१६६५	२४३-२५३
	स्थापना-कुल के भेद	१६१७-१६२२	२४३-२४४
	स्थापना कुल सम्बन्धी दोष	१६२३-१६२४	२४४
	तत्सम्बन्धी प्रायश्चित	१६२५	,,
	स्थापना-कुल में प्रवेश न करने वाले क गुण	१६२६	२४५
	गच्छवासियों की समाचारी	१६२७-१६५२	२४५-२५१
	स्थापना-कुलों में भोजनादि ग्रहण करने वालों की समाचारी	१६५३ १६६५	२५१-२५३
२३	साधु द्वारा साध्वी के उपाश्रय में अविधिपर्वक प्रवेश करने का निषेध	१६६६-१७४५	२५४-२६९
	साधु-साध्वियों की समाचारी	१७४६-१७८४	२७०-२७७
२४	साध्वी के आगमन-पथ में दड आदि रखने का निषेध	१७८५-१७९६	२७७-२७९
२५-२६	क्लेश का निषेध	१७९७-१८२२	२७९-२८५
२५	नये क्लेश की उत्पत्ति का निषेध	१७९७-१८१७	२७९-२८४
२६	पुराने क्लेश की पुनरुत्पत्ति का निषेध	१८१८-१८२२	२८४-२८५
२७	मुँह फाड़-फाड़ कर हँसने का निषेध	१८२३-१८२७	२८५-२८६
२८-३७	पार्श्वस्थ आदि शिथिलाचारियों के साथ सम्बन्ध-स्थापन का निषेध	१८२८-१८४७	२८६-२९०
३८-३९	सस्निग्ध हस्त आदि से आहार ग्रहण करने का निषेध	१८४८-१८५३	२९०-२९१
४०-४८	ग्राम-रक्षक आदि की प्रशंसा-पूजा करने का निषेध	१८५४	२९१-२९२
४९-१०१	परस्पर पाद, काय, दन, ओष्ठ इत्यादि के प्रमार्जन, परिमर्दन आदि का पूर्ववत् निषेध	१८५५	२९२-२९७
१०२-१०३	उच्चार-प्रश्रवण भूमि के अप्रतिलेखन से लगने वाले दोष	१८५६-१८६३	२९७-२९८
१०४-१११	उच्चार-प्रश्रवण सम्बन्धी अन्य दोष एवं प्रायश्चित्त	१८६४-१८८२	२९८-३०३
११२	अपारिहारिक द्वारा पारिहारिक के साथ आहारादि का उपभोग करने का निषेध, तत्सम्बन्धी दोष, प्रायश्चित्त एवं अपवाद	१८८३-१८९४	३०३-३०५

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पचम उद्देशक

सूत्र संख्या	विषय	गाथाङ्क	पृष्ठाङ्क
	चतुर्थ और पंचम उद्देशक का सम्बन्ध	१८९५	३०७
१-१०	सचित्त वृक्ष के मूलपर खड़े होकर आलोचना, स्वाध्याय आदि करने का निषेध	१८९६-१९२०	३०७-३१२
११	अपनी संघाटी अन्यतीर्थिक आदि से सिलवाने का निषेध	१९२१-१९२९	३१२-३१३
१२	संघाटी के दीर्घसूत्र करने का निषेध	१९३०-१९३४	३१४
१३-१४	लिम्ब, पलाश इत्यादि के पत्तों पर रख कर आहार करने का निषेध	१९३५-१९४३	३१४-३१६
१५-२३	प्रातिहार्य—लौटाने योग्य पाद-प्रोञ्छन इत्यादि निश्चित अवधि से अधिक समय तक रखने का निषेध	१९४४-१९६४	३१६-३२०
२४	सन, ऊन, कपास आदि का दीर्घ सूत्र बनाने का निषेध	१९६५-१९९५	३२०-३२६
२५-३३	सचित्त, चित्र एवं विचित्र दारु-दण्ड इत्यादि के निर्माण, ग्रहण एवं परिभोग का निषेध	१९९६-२००३	३२६-३२८
३४-३५	नवस्थापित निवेश, ग्राम, सन्निवेश आदि में प्रवेश कर आहारादि ग्रहण करने का निषेध	२००४-२०१२	३२८-३३०
३६-५९	मुख, दंत, ओष्ठ, नासिका इत्यादि को वीणा के समान बनाने एवं बजाने का निषेध	२०१३-२०१६	३३०-३३१
६०-६२	औद्देशिक, सप्राभृतिक एवं सपरिकर्म शय्या के परिभोग का निषेध	२०१७-२०६८	३३१-३४१
६३	असंभोगी के साथ संभोग का निषेध—संभोगी एवं असंभोगी की सोदाहरण विस्तृत व्याख्या	२०६९-२१५८	३४१-३६३
६४-६६	रखने योग्य अलाबु-पात्र, दारु-पात्र, मृत्तिका-पात्र, वस्त्र, कम्बल, दण्ड आदि को तोड़-फोड़ कर फेंक देने का निषेध	२१५९-२१६४	३६३-३६५
६७	प्रमाणातिरिक्त रजोहरण रखने का निषेध	२१६५-२१७२	३६५-३६६
६८	सूक्ष्म रजोहरण-शीर्षक बनाने का निषेध	२१७३-२१७४	३६६-३६७
६९-७२	रजोहरण को अविधि से बाँधने का निषेध	२१७५-२१८०	३६७-३६८
७३-७७	रजोहरण को अविधि से रखने का निषेध, तत्सम्बन्धी प्रायश्चित्त एवं अपवाद	२१८१-२१९४	३६८-३७०

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

षष्ठ उद्देशक

सूत्र संख्या	विषय	गाथाङ्क	पृष्ठाङ्क
	पंचम और षष्ठ उद्देशक का सम्बन्ध	२१६५	३७१
१–७७	स्त्री के साथ मैथुन-सेवन की इच्छा	२१६६-२२८६	३७१-३९४
१	मातृगाम के विविध प्रकार	२१६६-२२०१	३७१-३७२
	एतद्विषयक विविध प्रायश्चित्त	२२०२-२२४८	३७२-३८१
२–११	मैथुनेच्छा से हस्तकर्म आदि करने का निषेध		३८२-३८३
	एतद्विषयक विवेचन	२२४९-२२५६	३८३-३८४
१२	मैथुनेच्छा से कलह करने का निषेध	२२५७-२२६०	३८४
१३	मैथुनेच्छा से लेख लिखने का निषेध	२२६१-२२६८	३८५-३८६
१४–१८	मैथुनेच्छा से जननेन्द्रिय को पुष्ट करने का निषेध	२२६९-२२७७	३८६-३८७
१९–२३	मैथुनेच्छा से चित्र-विचित्र वस्त्र धारण करने का निषेध	२२७८-२२८०	३८८
२४–७७	मैथुनेच्छा से अपने पाद, काय आदि के प्रमार्जन, परिमर्दन इत्यादि का निषेध	२२८१-२२८६	३८८-३९४

सप्तम उद्देशक

सूत्र संख्या	विषय	गाथाङ्क	पृष्ठाङ्क
	षष्ठ एवं सप्तम उद्देशक का सम्बन्ध	२२८७	३९५
१–९१	स्त्री के साथ मैथुन-सेवन की इच्छा	२२८८-२३४०	३९५-४१३
१–३	मैथुनेच्छा से माला बनाने, धारण करने आदि का निषेध	२२८८-२२९१	३९५-३९६
४–६	मैथुनेच्छा से लोहे इत्यादि का संचय करने का निषेध	२२९२-२२९४	३९७
७–९	मैथुनेच्छा से हार, अर्धहार, एकावली, मुक्तावली इत्यादि के निर्माण, धारण आदि का निषेध	२२९५-२२९७	३९७-३९८
१०–१२	मैथुनेच्छा से अजिन, कंबल इत्यादि के निर्माण, धारण आदि का निषेध	२२९८-२३००	३९८ ४००
१३	मैथुनेच्छा से आंख, जंघा इत्यादि के संचालन का निषेध	२३०१-२३०२	४००
१४–६६	मैथुनेच्छा से परस्पर पाद आदि के प्रमार्जन, परिमर्दन, उबटन, प्रक्षालन इत्यादि का निषेध	२३०३-२३०७	४००-४०६
६७–७८	मैथुनेच्छा से सचित्त पृथ्वी आदि पर बैठने, सोने इत्यादि का निषेध	२३०८-२३१३	४०६-४०९
७९–८१	मैथुनेच्छा से एक दूसरे की चिकित्सा आदि करने का निषेध	२३१४-२३२०	४०९-४१०
८२–८४	मैथुनेच्छा से पशु-पक्षी के अंगोपांगों के स्पर्शन आदि का निषेध	२३२१-२३२८	४१०-४११
८५–९१	मैथुनेच्छा से आहारादि देने, वाचना प्रदान करने इत्यादि का निषेध, तद्विषयक प्रायश्चित्त आदि	२३२९-२३४०	४११-४१३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अष्टम उद्देशक

सूत्र संख्या	विषय	गाथाङ्क	पृष्ठाङ्क
	सप्तम एवं अष्टम उद्देशक का सम्बन्ध	२३४१	४१५
१–११	स्त्री के साथ विहार, स्वाध्याय आदि करनेका निषेध	२३४२-२४६६	४१५-४४१
१	आगंतागार, आरामागार आदि स्थानों में अकेली स्त्री के साथ विहार, स्वाध्याय, आहार, उच्चार-प्रश्रवण एवं कथा करने का निषेध	२३४२-२४२५	४१५-४३१
२–१०	उद्यान, उद्यानगृह, उद्यानशाला आदि में अकेली स्त्री के साथ स्वाध्याय यावत् कथा करने का निषेध	२४२६--२४३५	४३१-४३५
११	स्वगच्छ अथवा परगच्छ की साध्वी के साथ विहारादि करने का निषेध	२४३६-२४६६	४३५-४४१
१२–१३	स्वजन अथवा परजन के साथ उपाश्रय में रात्रि के समय शयन करने का अथवा बाहर आने-जाने का निषेध	२४६७-२४७७	४४१-४४३
१४–१८	राजा के यहां से आहारादि ग्रहण करने का निषेध	२४७८-२४९५	४४३-४४७

नवम उद्देशक

सूत्र संख्या	विषय	गाथाङ्क	पृष्ठाङ्क
	अष्टम एवं नवम उद्देशक का सम्बन्ध	२४९६	४४९
१–२	राजपिण्ड के ग्रहण एवं उपभोग का निषेध	२४९७-२५१२	४४९-४५१
३–५	राजा के अन्तःपुर में प्रविष्ट होने का निषेध	२५१३-२५२५	४५२-४५४
६	राजा के यहां बने हुए भोजन में से द्वारपाल इत्यादि के भाग को ग्रहण करने का निषेध	२५२६-२५३२	४५४-४५५
७–२८	राज्याभिषिक्त राजा को देखने आदि का निषेध	२५३३-२६०५	४५५-४७०

अशुद्धि-शोधन—

प्रस्तुत भाग के पृष्ठ ३११ पर सूत्र दशवां मुद्रण में छूट गया है, वह इस प्रकार है :—

जे भिक्खू सचित्त-रुक्ख-मूलंसि ठिच्चा सज्झायं पडिच्छइ,
पडिच्छंतं वा सातिज्जति ॥ सू० १० ॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अर्हम्

निशीथ-सूत्रम्

[भाष्य-सहितम्]

आचार्यप्रवरश्रीजिनदासमहत्तरविरचितया

विशेषचूर्ण्या समलंकृतम्

द्वितीयो विभागः

उद्देशकाः १-६

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ण हु होति सोयितव्वो, जो कालगतो दढो चरित्तम्मि।
सो होइ सोयितव्वो, जो संजम-दुब्बलो विहरे ॥१७१७॥
लद्धूण माणुसत्तं, संजम-चरणं च दुल्लभं जीवा ॥
आणाए पमाएत्ता, दोग्गति-भय-वड्ढगा होंति ॥१७१८॥

— भाष्यकारः

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अर्हम्

नमोऽत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स

आचार्य प्रवर श्री विसाहगणी-विनिर्मितं, सभाष्यम्

निशीथ-सूत्रम्

आचार्य श्री जिनदासमहत्तर-विरचितया
विशेष चूर्ण्या समलंकृतम्

प्रथम उद्देशकः

[1]भणिओ णामणिप्फण्णो णिक्खेवो –

इदाणिं सुत्तालावगणिप्फण्णो णिक्खेवो अवसरपत्तो वि सो ण णिक्खिप्पति ।

कम्हा ? लाघवत्थं ।

अत्थि इतो ततियं अणुओगदारं अणुगमो त्ति ।

तहिं णिक्खित्ते इह णिक्खित्तं, इह णिक्खित्ते तहिं णिक्खित्तं, तम्हा तहिं चेव णिक्खिविस्सामि । तं च पत्तं ततियमणुओगद्दारं अणुगमो त्ति । सो य अणुगमो दुविहो – सुत्ताणुगमो णिज्जुत्तिअणुगमो य । सुत्ताणुगमे सुत्तं उच्चारेयव्वं अक्खलियादि गुणोवेयं, णिज्जुत्ति अणुगमे तिविहो. तं जहा – णिक्खेव-णिज्जुत्ती उवोग्घाय-णिज्जुत्ती सुत्तफासिय-णिज्जुत्ती य । णिक्खेव-णिज्जुत्ती आदितो आरब्भ-जाव-सुत्तालावगणिप्फण्णो णिक्खेवो एत्थंतरा जे च णामाति-णिक्खेवा कता ते सव्वे णिक्खेव-णिज्जुत्तीए, जे य वक्खमाणा । गता णिक्खेवणिज्जुत्ती ।

---

१ पीठिकायामिति ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इदाणिं उवोग्घायणिज्जुत्ती-

सा जहा – सामाइयज्झयणे इमाहिं दोहिं गाहाहिं अणुगता –

गाहाओ—उद्देसे १ णिद्देसे २ अ, निग्गमे ३ खेत्त ४ काल ५ पुरिसे य ६ ।

कारण ७ पच्चय ८ लक्खण ९, नये १० समोआरणा ११ ऽणुमए १२ ॥१॥

किं १३ कतिविहं १४ कस्स १५, कहिं १६ केसु १७ कहं १८ किच्चिरं १९ हवइ कालं ।

कइ २० संतर २१ मविरहियं २२, भवा २३ गरिस २४ फासण २५ निरुत्ति २६ ॥२॥

यथासंभवमिहाप्यनुगन्तव्या ।

इदाणिं सुत्तफासिय-णिज्जुत्ती – सुत्तं फुसतीति सुत्तफासिया । सा पुण सुत्ते उच्चारिए भवति, अणुच्चारिए किं फुसइ, तम्हा सुत्ताणुगमो जो य सण्णासितो, सुत्तालावगो ठावितो, सुत्तफासिया-णिज्जुत्ती य तिण्णि वि समगं वुच्चंति ।

तत्थ सुत्ताणुगमे सुत्तं उच्चारेयव्वं अखलिय अमिलिएत्यादि –

संहिता य पदं चेव, पयत्थो पयविग्गहो ।
चालणा य पसिद्धी य, छव्विहं विद्धि लक्खणं ॥१॥

तत्थ सुत्ताणुगमे संहितासूत्रम् –

जे भिक्खू हत्थकम्मं करेइ, करेंतं वा साइज्जइ ॥सू०॥१॥

इदाणिं सुत्तालावगो भण्णति – "जे" त्ति पदं, "भिक्खु" पयं, "हत्थ" पदं, "कम्मं" ति पदं, "करेति" पदं, "करेंतं" पदं, "वा" इति पदं, "सातिज्जति" त्ति पदं ।

इदाणिं पदत्थो भण्णति –

जे त्ति य खलु णिद्देसे, भिक्खू पुण भेदणे खुहस्स खलू ।
हत्थेण जं च करणं, कीरति तं हत्थकम्मं ति ॥४९७॥

जे" इति निद्देसे, "खलु" विसेसणे, किं विशिनष्टि ? भिक्षोर्नान्यस्य, "भिदि" विदारणे "क्षुध" इति कर्मण आख्यानं, ज्ञानावरणादिकर्म भिनत्ती ति भिक्षुः, भावभिक्षोर्विशेषणे पुनः शब्दः, "हत्थे" त्ति हन्यतेऽनेनेति हस्तः, हसति वा मुखमावृत्ये ति हस्तः, आदाननिक्षेपादिसमर्थो शरीरैकदेशो हस्तोऽतस्तेन यत् करणं व्यापारेत्यर्थः, स च व्यापारः क्रिया भवति, अतः सा हस्तक्रिया क्रियमाणा कर्म भवतीत्यर्थः । "साइज्जति" साइज्जणा दुविहा—कारावणे अणुमोदणे एस पयत्थो गओ ।

इदाणिं सुत्तफासिया-णिज्जुत्ती अत्थं वित्थारेति –

णामं ठवणा भिक्खू, दव्व-भिक्खू य भाव-भिक्खू य ।
दव्वं सरीरभविओ, भावेण तु संजओ भिक्खू ॥४९८॥

नाम-स्थापने पूर्ववत् । दव्व-भिक्खू दुविहो–आगमओ णो आगमओ य । आगमतो भिक्खुशब्दार्थज्ञो । तत्रचानुपयुक्तः अनुपयोगो द्रव्यमिति कृत्वा ।

णोआगमतो अस्य व्याख्या – दव्वपच्छद्धं । "दव्व" मिति णोआगमतो द्रव्य-भिक्षुः प्रतिपाद्यते – सरीरग्रहणात् ज्ञशरीर-द्रव्यभिक्षु भव्यशरीर-द्रव्यभिक्षुश्च भविउ त्ति ज्ञशरीर-भव्यशरीर-व्यतिरिक्तः एगभविओ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

बद्धाउग्रो अभिमुहणामगोत्रो य। एगभविग्रो जो अणंतरं उव्वट्टित्ता वितिए भवे भिक्खू होहिति। बद्धाउग्रो जत्थ भिक्खुभावं वेदिस्सति तत्थ जेण आउणामगोयाति कम्माति बद्धाति। अभिमुह-णाम-गोग्रो पव्वज्जाभिमुहो संपट्टितो।

अहवा – ज्ञशरीर-भव्यशरीरव्यतिरिक्तो द्रव्यभिक्षुः शाक्य-तापस-परिव्राजकादि। च शब्दो – समुच्चये। इदाणि भावभिक्खू "भावेण तु" भावग्गहणा भावभिक्षुः, तु शब्दो भेद दर्शने, को भेद ? इमो – आगमतो णोआगमतो अ। आगमग्रो जाणए उवउत्ते भावभिक्खू भवति। णोआगमतो संजतो, सं एगीभावेण जातो संयतः मूलुत्तरगुणेष्वित्यर्थः। इह भावभिक्खुणा अधिकारः ॥४९८॥

इदाणिं हत्थो भणति –

णामं ठवणा हत्थो, दव्वहत्थो य भावहत्थो य।
मूलुत्तरो य दव्वे, भावम्मि य कम्मसंजुत्तो ॥४९९॥

णाम-स्थापने पूर्ववत्। द्रव्यहस्तो तृतीयपादेन व्याख्यायते, स च पाद एवमवतीर्यते आगमतो णोआगमतो य। आगमतो जाणए अणुवउत्तो, णोआगमतो हत्थसद्दजाणगस्स शरीरगं, तं हस्तशब्दं प्रति द्रव्यं भवति, भूतभावत्वात्। भव्यशरीरं हत्थसद्दं अहुणा ण ताव जाणति किंतु जाणिस्सति, तदपि हस्त-शब्दं प्रतिद्रव्यं भवति, भाविभावत्वात्। ज्ञशरीरभव्यशरीरव्यतिरिक्तो द्रव्यहस्तः मूलगुणनिव्वत्तितो उत्तरगुण-निव्वत्तिग्रो य। मूलगुणनिव्वत्तिग्रो मृताख्ये शरीरे, जो पुण कट्ठलेप्पचित्तकम्मादिसु सो उत्तरगुणनिव्वत्तितो; द्रव्यमिति गतार्थ एव, च शब्दो समुच्चते। इदाणि भावहत्थो – आगमतो जाणए उवउत्ते, णोआगमओ "भावम्मि य कम्मसंजुत्तो" आदाणनिक्षेपक्रियाकर्मणा च युक्तो भावहस्तो भवति, च शब्दाज्जीवप्रदेशाधिष्ठितश्च। भावहस्तेनाधिकारेत्यर्थः ॥४९९॥

इदाणिं कम्मं भणति –

कम्मचउक्कं दव्वे, संतं उक्खेव तुन्नगादी वा।
भावुदओ अट्ठविहो, मोहुदएणं तु अधिकारो ॥५००॥

कम्मसद्दो चउव्विहो – णामादिणिक्खेवो। णाम-ठ्ठवणाओ पूर्ववत्। सव्वं घोसेऊण ज्ञशरीर-भव्यशरीर-व्यतिरिक्तं। द्रव्यकम्मं दुविहं – दव्वकम्मं नोदव्वकम्मं च। दव्वकम्मं णाम जे कम्मवग्गणाए णाणावरणादिजोग्गा पोग्गला कम्मत्तेण परियास्यन्ति ण ताव गच्छन्ति।

अहवा – दव्वकम्मं "संतं" ति संतमिति ज्ञानावरणादिबद्धं ण ताव उदयमागच्छति तं संतं दव्वकम्मं भणति। णोदव्वकम्मं ति उत्क्षेपणमवक्षेपणमाकुंचन-प्रसारण-गमनं, "तुण्णगादि" तुण्णगमिति वत्थच्छिदे पुण णवकरणं तुण्णणमिति भणति, आदि सद्दातो कुंभकार-रहकार-तंतुगार-लोहगारादि। गतं दव्वकम्मं।

इदाणिं भावकम्मं। तं दुविहं – आगमतो णोआगमतो य। आगमतो उवउत्तो णोआगमतो अ भावकम्मं "भावुदओ उ अट्ठविहो" – णाणावरणादिआणं कम्माणं जो णाणावरणादितेण भावुदओ अनुभावेत्यर्थः, तं भावकम्मं भणति। इह पुण कतमेण कम्मुदएण अधिकारो ? भणति – मोहस्सुदएण अधिकारः प्रयोजनमित्यर्थः ॥५००॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जं भावहत्थेण कम्मं करेति तं भण्णति हत्थकम्मं ।

त पुण दुविहं हत्थकम्मं । जतो भणति –

तं दुविहं णातव्वं, असंकिलिट्ठं च संकिलिट्ठं च ।
जं तं असंकिलिट्ठं, तस्स विहाणा इमे होंति ॥५०१॥

"तद" इति हत्थकम्मं संबज्झति । "दुविह" मिति दुभेदं । "णायव्व" मिति बोधव्वं । के ते दो भेदा ? भण्णंति – संकिलिट्ठं असंकिलिट्ठं च । अदुष्टात्मचित्तस्य यत् कर्म तत् असंकिलिट्ठं, तत्प्रति पक्षतो संकिलिट्ठं । च शब्दौ भेदप्रदर्शकौ । जं तं पुव्वाभिहियं असंकिलिट्ठं, जगारुद्दिट्ठस्स तगारेण णिद्देसो, विहाणा-इति भेदा, "इमे" इति वक्ष्यमाणा भवन्ति ॥५०१॥

[१]छेदणे [२]भेदणे चेव, [३]घसणे [४]पीसणे तहा ।
[५]अभिघाते [६]सिणेहे य, [७]काये [८]खारो दियावरे ॥५०२॥

वक्ष्यमाणस्वरूपा एषा गाहा । छेदणं झुसिरे अज्झुसिरे वा करेति, एवं भेदादिएसु वि । एक्केक्कं पुणो अणंतरे परंपरे य ॥५०२॥

एवं भेदेषु विवरितेष्विदं प्रायश्चित्तम् –

अज्झुसिर-झुसिरे लहुओ, लहुया गुरुगो य हुंति गुरुगा य ।
संघट्टण परितावण, लहुगुरुगऽतिवातणे मूलं ॥५०३॥

अज्झुसिरे अणंतरे लहुगो, झुसिरे अणंतरे लहुगा, अज्झुसिरे य परंपरे गुरुगो, झुसिरे य परंपरे गुरुगा बहुतरदोषत्वात् गुरुतरं प्रायश्चित्तं, परम्परे शस्त्रग्रहणाच्च संक्लिष्टतरं चित्तं, अतो परंपरे गुरुतर प्रायश्चित्तं । एयं सुद्धपदे पच्छित्तं ।

असुद्धपदे पुण इणमण्णं "संघट्टण" पच्छद्धं ।

बेइंदियाणं संघट्टेइ लहुगा, परितावेइ चउगुरुं, ([१]उपद्रवयति षट्लघु ।

त्रीन्द्रीन् संघट्टयति चतुगुरु, परितापयति षट्लघु, अपद्रावयति षट्गुरु ।

चतुरिन्द्रियान् संघट्टयति षट्लघु, परितापयति षट्गुरु, अपद्रावयति छेदः ।

पंचेन्द्रियान् संघट्टयति षट्गुरु, परितापयति छेदः) पंचेंदिय अइवाए इति मूलं, शेषं उपयुज्य वक्तव्यम् ॥५०३॥

इदमेवार्थं सिद्धसेनाचार्यो वक्तुकाम इदमाह –

एक्केक्कं तं दुविहं अणंतरपरंपरं च णातव्वं ।
अट्ठाणट्ठा य पुणो, होति अणट्ठाय मासलहू ॥५०४॥

"एक्केक्कमिति छेदादिया पदा संबज्झंति "तद" इति छेयादि एवं संबज्झति । "दुविहं" दुभेयं अणंतरं-परंपरं, च सद्दो समुच्चए, पुणो एक्केक्कं दुविहं "अट्ठाणट्ठा" य । अर्थः प्रयोजनं, अणट्ठो निःप्रयोजनं अणट्ठाए छेदणादि करेंतस्स असमायारिणिप्फण्णं मासलहुं ॥५०४॥

---

१ कोष्ठकान्तर्गत पाठः पूनासत्कप्रतौ न विद्यते ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अज्झुसिराणंतरे लहु, गुरुगो तु परंपरे अज्झुसिरम्मि ।
झुसिराणंतर लहुगा गुरुगा य परंपरे अहवा ।।५०५।।

एतीए गाहाए पिट्ठतो अहवा सद्दो पउत्तो; अहवा सद्दातो एतेसु चेव छेदणादिसु अज्झुसिर-झुसिर-अणंतर-परंपरेसु प्रकारवाचकत्वात् ।

अहवा – शब्दस्य इमं पच्छित्तं अज्झुसिरे अणंतरे मासलहु, परंपरे मासगुरुं अज्झुसिरे चेव । झुसिरे अणंतरे चउलहु, परंपरे चउगुरुं झुसिरे चेव ।।५०५।।

कहं पुण छेदणं, अणंतरे परंपरे वा संभवति ?

णह-दंतादि अणंतरं, पिप्पलगादि परंपरे आणा ।
छप्पइगादि संजमे, छेदे परितावणा ताए ।।५०६।।दा०गा०।।

णहेहिं दंतेहिं वा जं छिंदति तं अणंतरे छेयो भण्णति, आदिग्गहणातो पायेण, परंपरे छेदे पिप्पलगेण, आदिग्गहणातो [1]पाइल्लग छुरिय-कुहाडादीहिं च । "आण" त्ति अणंतरपरंपरेण छिंदमाणस्स तित्थगर-गणहराण आणाभंगो कतो भवति, आणाभंगे य चउगुरुगं, अणवत्थपसंगेण तं दट्ठूण अण्णे वि करेंति छेदादी, तत्थ वि चउलहुगा मिच्छत्तं च जणयति । एते अच्छंता छेदगादि [2]सिट्टरेहिं अच्छंति, ण सज्झाते, एत्थ वि चउलहुआ (अ "इत्यपि") वत्थे छिज्जंते छप्पइगादि छिज्जंति । एस से संजमविराहणा । आदिसद्दातो अणंतरपरंपर-छेदणादिकिरियासु छज्जीवणिकाया विराहिज्जंति । तत्थ से छक्कायपच्छित्तं । अह छेदणादिकिरियं करेंतस्स हत्थपादादि छेज्जेज्ज, ततो आयविराहणा, तत्थ से चउगुरु ।

अहवा "परितावणाए" त्ति परितावमहादुक्खेत्यादि गिलाणारोवणा। ५०६।। "छेयणे" त्ति गयं ।

इदाणिं भेयणादि पदा भण्णंति –

एमेव सेसएसु वि, कर-पातादी अणंतरे होंति ।
जं तु परंपरकरणं, तस्स विहाणा इमे होंति ।।५०७।।

"एमेव" जहा छेयणपदे, "सेसएसु" त्ति भेयणादिपदेसु तेसु अणंतरं दरिसावयंति, 'करपाया" पसिद्धा, आदिसद्दातो जाणुकोप्परजंघोरु घेप्पंति । एवं जहा संभवं भेदणादिपएसु अणंतरकरणं जोएयव्वं । "जं तु परंपरकरणं" ति जं पुण भेयणादिपदेसु परंपरकरणं तस्स विहाणा भेदा इमे भवन्तीत्यर्थः ।।५०७।।

कोणयमादी भेदो, घंसण मणिमादियाण कट्ठादि ।
पट्टे वरादिपीसण, गोफणधणुमादि अभिघाओ ।।५०८।।

कोणओ लगुडो भण्णति, आदिसद्दाओ उवललेट्ठुगादि, तेहिं घडगादिभेदं करेति । भेदे त्ति गतं ।

घंसणमिति घंसणदारं गहियं – तत्थ परंपरे मणियारा साणीए घंसंति लगुडेण वेधं काउं । आदिसद्दातो मोत्तिया । कट्ठादि त्ति चंदणकट्ठाओ घरिसादिसु घृष्यन्ति । घंसणे त्ति गतं ।

पट्ट त्ति गंधपट्टातो तत्थ वरा प्रधाना गंधा पीसिज्जंति । पीसण त्ति गतं ।

---

१ (प्रत्यं० "विरचिते इति") २ फावडा=मिट्टी खोदने का एक साधन । ३ चेष्टादिभिः ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

गोफणा चम्मदवरगमया पसिद्धा, ताए लेट्टुओ उवलओ वा घत्तिज्जंति, सो अभिघातो भण्णति, घणूण वा कंडं । अभिघाओ त्ति गयं ॥५०८॥

अहवा अभिघाओ इमो होइ –

विधुवण णंत कुसादी, सिणेह उदगादि आवरिसणं तु ।
काओ उ बिंदसत्थे, खारो तु कलिंचमादीहिं ॥५०९॥

विधुवणो [1]वीतणगो, "णंतं" वत्थं, तेहिं वीयंतो अभिधातं करेति पाणिणं । कुसो दब्भो, तेण [2]मज्जणातिसु अभिघातं करेति । अभिघाउ त्ति गयं ।

– "सिणेह त्ति" सिणेहद्दारं, उदगं पाणीयं, तेण आवरिसणं करेति । आदिसद्दातो घय-तेल्लेण वा । सिणेह त्ति गतं ।

"काउ" त्ति काओ सरीरं, "बिंबि" त्ति बिंबयं तेण गिल्लेवकादि कायं णिव्वत्तेति, "सत्थे" त्ति-शस्त्रेण परंपरकरणभूतेण पत्रछेदादिषु कायं निवर्तयन्ति । काये त्ति गतं ।

अज्झुसिरे वा खारं छुभति, तं पुण परंपराहिकारे अणुवट्टमाणे "कलिंचमादीहिं" ति कलिंचे — वंसकप्परी ताए छुभति । खारे त्ति गतं ॥५०९॥

एक्केक्का उ पदाओ, आणादीया य संजमे दोसा ।
एवं तु अणट्ठाए, कप्पति अट्ठाए जतणाए ॥५१०॥

एक्केक्काओ छेदादिपदाओ आणाभंगो अणवत्थकरणं मिच्छत्तजणयं आयविराहणा संजमविराहणा य । एते दोसा अणट्ठाए करेंतस्स भवति । मूलदारगाहाए "अवरे" त्ति अन्यान्यपि एतज्जातीयानि गृह्यन्तेत्यर्थः

अहवा – उस्सग्गातो अवरो अववातो भण्णति, कप्पति युज्यते कर्तुं, अर्थः प्रयोजनं, कारणे प्राप्ते, नो अयत्नेन यत्नेनेत्यर्थः ॥५१०॥

असती अधाकडाणं, दसिगाधिकछेदणं व जतणाए ।
गुलमादि लाउणालो, कप्परभेदो वि एमेव ॥५११॥

असति अभावो अहाकडा अपरिकम्मा दसिया छिंदियव्वा, पमाणाहिकस्स वा वत्थस्स छेदणं जयणे ति, जहा – आयसंजमविराहणा ण भवति, भेदणद्दारे गुलगहणं पिंडगस्स वा भेदो, "लाउनालो"— वींटी सा अहिकरणभया भिज्जति, संजती वा हत्थकम्मं करिस्सति । "कप्परं" कवालं, तं वा अहिकरणभया भिज्जति, एमेव त्ति जयणाए ॥५११॥

घंसणादवाओ –

अक्खाणं चंदणस्स वा, घंसणं पीसणं तु अगतादि ।
वग्घादीणऽभिघातो, अगतादि य ताव सुणगादि ॥५१२॥

"अवखा" पसिद्धा तेसिं विसमाण समीकरणं, चंदणस्स वा परिडाहे घंसणं, पीसणद्दारे पीसणं अगतस्स अण्णस्स वा कस्सति कारणेण, अभिघातो गोप्फण्णेण धणुएण वा वग्घादीण ऽभिभवंति अभिघाओ कायव्वो । अगतस्स वा पताविज्जंतस्स सुणगादि वा अभिपडंता लेट्टुणा धाडेयव्वा ॥५१२॥

---

१ वीजनकम् । २ स्नानादि । ३ 'मणीए' इत्यपि ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सिणेहे अववाओ –

बितियदवुज्झणजतणा, दाहेणं देहभूमि सिंचणता ।
पडिणीयाऽसिवसमणी, पडिमा खारो तु सेल्लादी ॥५१३॥

"बितिय" अववायपदं, "दवं" पाणगं, तं उज्झति जयणाए आवरिसंतो।

अहवा – बितिए त्ति तृषा डाहे वा सरीरस्स देहं सिंचति [1]गिलाण परिणीए वा सीतलट्टया भूमिं सिचति। "काए" त्ति कोइ गिहत्थो पडिणीतो [2]तस्य प्रतिकृतिं कृत्वा मंत्रं जपेत्ता विद्यावद् भद्रीभूतः। असिवे वा असिवप्रशमनार्थं प्रतिमा कर्तव्या। "खारो" त्ति बितियपदे अणंतरपरंपरे छुभिज्ज अज्झुसिरे वा झुसिरे वा, तत्थ झुसिरे दरिसावयति "खारो तु सेल्लादि" त्ति। सेल्लं वालमयं झसिरं, तं खारे छुभति, किं खारो संजाओ न वि त्ति ॥५१३॥ असंकिलिट्ठं कम्मं भणियं।

इदाणिं संकिलिट्ठं भण्णति –

जं तं तु संकिलिट्ठं, तं सणिमित्तं च होज्ज अणिमित्तं ।
जं तं सणिमित्तं पुण, तस्सुप्पत्ती तिधा होति ॥५१४॥

जं ति अणिद्दिट्ठं, तं ति, पूर्वाभिहितं, तु शब्दो संकिलिट्ठविसेसणे। तस्स संकिलिट्ठस्स दुविहा उप्पत्ती-सणिमित्ता अणिमित्ता य। णिमित्तं हेऊ वक्खमाणस्सरूवो, अणिमित्तं निरहेतुकं। जं तं सणिमित्तं तस्सुप्पत्ती बहिरवत्थुमवेक्ख भवति ॥५१४॥

पुनरवधारणे चोदग आह – णणु कम्मं चेव तस्स णिमित्तं, किमण्णं बाहिरणिमित्तं घोसिज्जति ?

आचार्याह –

कामं कम्माणिमित्तं, उदयो णत्थि उदओ उ तव्वज्जो ।
तहवि य बाहिरवत्थुं, होति निमित्तं तिमं तिविधं ॥५१५॥

कामं अनुमतार्थे, किमनुमन्यते ? कर्मणिमित्तो उदय इत्यर्थः। न इति प्रतिषेधे उदयः कर्मवर्ज्यो न भवतीत्यर्थः। तथापि कश्चिद् बाह्यवस्त्वपेक्षो कर्मोदयो भवतीत्यर्थः। तिविधं बाह्यनिमित्तमुच्यते ॥५१५॥

सद्दं[1] वा सोऊणं, दट्ठुं[2] सरितुं[3] व पुव्वभुत्ताइं ।
सणिमित्तऽणिमित्तं पुण, उदयाहारे[1] सरीरे[2] य ॥५१६॥

गीतादि विसयसद्दं सोउं, आलिंगणातित्थीरूवं वा दट्ठुं, पुव्वकीलियाणि वा सरिउं, एतेहिं कारणेहिं सणिमित्तो हूदओ। अणिमित्तं पुण, पुणसद्दो अणिमित्तविसेसणे, कम्मुदओ आहारेणं सरीरोवचया, च सद्दो भेदप्रदर्शने ॥५१६॥

"सद्दं वा सोऊणं" ति अस्य व्याख्या –

पडिबद्धा सेज्जाए, अतिरित्ताए व उप्पता सद्दे ।
बहियावणिग्गतस्सा, सुणणा विसउब्भवे सद्दे ॥५१७॥

---

[1] भक्तप्रत्याख्यानिनं दाहाभिभूतं। [2] तस्योपशमनीं।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

दव्वभावपडिबद्धाए सेज्जाए विसओब्भवसद्दं सुणेज्ज, "अतिरित्ताए व" त्ति अतिरित्ता घंघसाला, वहिया वसहीओ वियारभूमादि णिग्गतो वा विसउब्भवं सद्दं सुणेज्जा ॥५१७॥

"पडिबद्धा सेज्जाए य" त्ति अस्य व्याख्या –

पडिबद्धा सेज्जा पुण, दव्वे भावे य होति दुविधा तु ।
दव्वम्मि पट्टिवंसो, भावम्मि चउव्विहो भेदो ॥५१८॥

प्रतिबद्धा युक्ता संश्लिष्टा इत्यर्थः । सेज्जा वसही । रा संयोगो द्विविधो–द्रव्ये भावे च । द्रव्यप्रतिबद्धा पट्टिवंसो वलहरणं, तेन प्रतिबद्धा एगमोब्भा इत्यर्थः । भावप्रतिबन्धे चउव्विहो भेदो ॥५१८॥

इमो –

पासवणट्ठाणरूवे[१ २ ३], सद्दे[४] चेव य हवंति चत्तारि ।
दव्वेण य भावेण य, संजोगे चउक्कभयणाउ ॥५१९॥

पासवणं काइयभूमी, ठाणमिति इत्थीण अच्छणठाणं, रूवमिति जत्थ वसहीठिएहिं इत्थीरूवं दीसति, सा रूव-प्रतिबद्धा । "सद्दे त्ति" जत्थ वसहीए ठितेहिं भासा-भूसण-रहस्ससद्दा सुणिज्जंति, सा सद्दपडिबद्धा । एस चउव्विहो भावपडिवंधो भणितः ।

इदाणिं दव्वपयस्स भावपदस्स य संयोगे चउक्कभयणा कायव्वा ।

इमा भयणा –

दव्वओ पडिबद्धा, भावओ पडिबद्धा ।
दव्वओ पडिबद्धा, ण भावओ ।
भावओ पडिबद्धा, ण दव्वओ ।
ण दव्वतो पडिबद्धा, ण भावतो पडिबद्धा ॥५१९॥

एवं चउभंगे विरचिते भण्णति –

चउत्थपदं तु विदिण्णं, दव्वे लहुगा य दोस आणादी ।
संसद्देण विबुद्धे, अधिकरणं सुत्तपरिहाणी ॥५२०॥

"चउत्थं पदं" चउत्थो भंगो समनुज्ञातः, तत्र स्थातव्यमित्यर्थः । "दव्वे" त्ति दव्वतो, ण भावतो द्वितीयभंगेत्यर्थः । तत्थ सुद्धपदे वि चउलहुगा । आणा-अणवत्थ-मिच्छत्त विराहणा य भवन्ति ।

इमे य अण्णे दोसा "संसद्देण" पच्छद्धं । साधुसद्देण असंजया विबुद्धा अधिकरणाणि करेंति । अह साहू अधिकरणभया णिसंचारा तुण्हिक्का य अत्थंति तो सुत्तऽत्थाणं परिहाणी ॥५२०॥

कालस्याग्रहणे स्वाध्यायस्य अकरणात् इमं से पच्छित्तं –

सुत्तऽत्थावस्सणिसीधियासु वेलथुतिसुत्तणासेसु ।
लहुगुरु पण पण चउ लहुमासो लहुगा य गुरुगा य ॥५२१॥

एयस्स पुव्वद्धेण अवराहा । पच्छद्धेण पच्छित्ता जहसंखं । सुत्तपोरिसिं ण करेंति मासलहुं । अत्थपोरिसिं ण करेंति मासगुरुं । "आवस्सिणिसीहि" ताण अकरणे पणगं । "वेल" त्ति आवस्सगवेलाए

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आवस्सगं न करेति चउलहु । अधिकरणभया अविधीए करेति । आवस्सगे कते थुतीओ ण देति मासलहुं । सुत्तणासे चउलहुं । अत्थणासे चउगुरुं ॥५२१॥

"संसद्देण विबुद्धे अहिकरणं" ति अस्य व्याख्या –

आउज्जोवणवणिए, अगणि कुटुंबी कुकम्म कुम्मरिए ।
तेणे मालागारे, उब्भामग पंथिए जंते ॥५२२॥

साधुसद्देण विबुद्धा "आउ" त्ति पाणियस्स गच्छंति । "उज्जोवणं" ति गावीणं पसरणं सगडादीणं वा पयट्टणं । "कच्छपुडियवाणिओ" वापारे गच्छति । लोहारादी उट्ठेउं अग्गीकम्मेसु लग्गंति । कुटंबिया साधुसद्देण विच्छुद्धा (विबुद्धा) खेत्ताणि गच्छंति । कुच्छियकम्मा कुकम्मा मच्छबंधगादयो मच्छगाण गच्छंति । जे कुमारेण मारेंति ते कुमारिया, जहा "खट्टिका", महिसं दामेउण लउडेहिं कुट्टंति ताव जाण सूणा सिंधमारगा वा । समणा जग्गंति त्ति तेणा आसरंति । मालाकारो करंडं घेत्तूणारामं गच्छति । उब्भामगो पारदारिको, सो उब्भामिगा समीवातो गच्छति । पंथिया पंथं पयट्टंति । जंते त्ति जंतिया जंते वाहेंति ॥५२२॥

अहिकरणभया तुण्हिक्का चेट्ठा करेंति, तो इमे दोसा –

आसज्जणिसीहियावस्सियं च ण करेंति मा हु बुज्झेज्जा ।
तेणा संका लग्गण, संजम आया य भाणादी ॥५२३॥

आसज्जं णिसीहियं आवस्सियं च ण करेंति, मा असंजया बुज्झिस्संति, तमेव तुण्हिक्कं अतितं णिग्गच्छंतं वा अण्णो साधू तं तेणगं संकमाणो जुद्धं लगेज्जा, तो जुज्झंतो संजमविराहणं आयविराहणं वा करेज्जा, भायणभेदं, आदिसद्दातो अण्णस्स साहुस्स हत्थं पादं विराहेज्जा, तम्हा एतद्दोसपरिहरणत्थं दव्वपडिबद्धाए ण ठायव्वं ॥५२३॥

इदानिं अस्यैव द्वितीयभंगस्स अववायं ब्रवीति –

अद्धाण णिग्गतादी, तिक्खुत्तो मग्गिऊण असतीए ।
गीतत्था जतणाए, वसंति तो दव्वपडिबद्धे ॥५२४॥

अद्धाण णिग्गता एवं प्रतिपन्ना "आदि" सद्दातो असिवादिणिग्गता वा "तिक्खुत्तो" तिण्णि वारा दव्वभावे हि अपडिबद्धं मग्गिऊण असति त्ति अलाभे चतुर्थभंगस्येत्यर्थः । गीतत्था सुत्तत्था जयणाए दोसपरिहरणं, "तो" त्ति कारणदीवणे कारणेण वसंति दव्वपडिबद्धे त्ति ॥५२४॥

"गीयत्था जयणाए" त्ति अस्य व्याख्या –

आपुच्छण आवस्सग, आसज्ज णिसीहिया य जतणाए ।
वेरत्तिय आवासग, जो जाधे चिंधणदुगम्मि ॥५२५॥

आपुच्छणं जयणाए करेंति साधू, कातियभूमिं णिग्गच्छंतो अण्णं साहुं आपुच्छिउं णिग्गच्छति, सो य छिक्कमेत्तो चेव उट्ठेउं डंडगहियत्थो दुवारे चिट्ठति, जाव सो आगतो एसा आपुच्छणजयणा । आवस्सगं आसज्जं णिसीहीयं च हियएण करेज्ज जहा वा ते ण सुणेंति । "वेरत्तियं" त्ति वेरत्ति अकालवेलाए जो जाहे चेव सो ताहे कालभूमिं गच्छति, तुसिणीया आवस्सगं जयणाए करेंति, जो वा जत्थ ठितो करेति ।

अहवा जाहे पभायं गिहत्था उट्ठिता ताहे आवस्सयं थुतीओ वि जयणाए करेंति "चिंधणदुगम्मि त्ति

२

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

चिधंति लक्खेंति, सुत्तुद्देसगादिसु 'दुगं" सुत्तं अत्थो य, तत्थ जं वेरत्तियं करेंताण संकितं तं दिवा पुच्छतीत्यर्थः ॥५२५॥

जयणाहिगारे अणुवट्टमाणे इमं पि भण्णति –

जणरहिते वुज्जाणे, जयणा सद्दे य किमु य पडिबद्धे ।
ढड्ढरसराणुपेहा, ण य संधाडेण वेरत्ती ॥५२६॥

जणरहिते उज्जाणे वसंता सद्दे जयणं करेंति, मा हु दुपद-चउप्पद-पक्खि-सरिसिवादि बुज्झेज्जा, जति जणरहिते एस जयणा दिट्ठा किमंग पुण दव्वपडिबद्धाए. सो पुण साहु ढड्ढरसद्दो सो वेरत्तियं करेंतो अणुप्पेहाए सज्झायं करेति, ण य संघाडेण वेरत्तियं करेति ॥५२६॥ गतो बितियभंगो सावयातो ।

इदाणिं ततियभंगो "भावओ पडिबद्धा णो दव्वओ" एस भण्णति –

भावम्मि उ पडिबद्धे, चतुरो गुरुगा य दोस आणादी ।
ते वि य पुरिसा दुविहा, भुत्तभोगी अभुत्ता य ॥५२७॥

भावपडिबद्धाए ट्ठायमाणाणं पच्छित्तं इमं – "चउरो" त्ति चत्तारि चउगुरुगा पासवणादिसु, आणादिणो य दोसा भवंति ! जे पुण ते भावपडिबद्धाए वसहीए ठायंति ते दुविहा पुरिसा – भुत्तभोगा अभुत्तभोगा य । जे इत्थिभोगं भुंजिउं पव्वइया ते भुत्तभोगा, इतरे कुमारगा ॥५२७॥

भावपडिबद्धाए पासवणादिसु चउसुवि पदेसु सोलसभंगा कायव्वा ।

जओ भण्णति –

भावम्मि उ पडिबद्धे, पण्णरसपदेसु चउगुरु होंति ।
एक्केक्काओ पदातो, दोसा आणादी सविसेसा ॥५२८॥

"भावम्मि उ पडिबद्धे" त्ति एत्थ वयणे[1] सोलस भंगा दट्ठव्वा । ते य इमे – पासवणपडिबद्धा ठाणपडिबद्धा रूवपडिबद्धा सद्दपडिबद्धा – १ एस पढमभंगो । एस पासवण-ट्ठाण रूव-पडिबद्धा णो सद्द पडिबद्धा एवं सोलस भंगा कायव्वा । एवं रचिएसु पच्छित्तं विज्जइ । आदि भंगाओ आरब्भ-जाव-पण्णरसमो ताव चउगुरुं भवति । आदेसे वा पढमभंगे चउगुरुगा, एवं जत्थ भंगे जति पदाणि विरुद्धाणि तति चउगुरुगा, सोलसमपदं सुद्धं । एक्केक्काउ पदाउ" त्ति एक्केक्कभंगाउ त्ति वुत्तं भवति आणादिदोसा भवंति । "सविसेस" त्ति दव्वपडिबद्ध समीवाओ सविशेषतरा दोसा भवंतीत्यर्थः ॥५२८॥

१　पासवण-पडिबद्धा,　ठाण-पडिबद्धा,　रूव-पढिबद्धा,　सद्द-पडिबद्धा
　　१　　　१　　　१　　　१

१	पासवण-पडिबद्धा,	ठाण-पडिबद्धा,	रूव-पडिबद्धा,	णो सद्द-पडिबद्धा	९ — ० — १ — १ — १
२	१ ,, ,,	१ ,, ,,	१ ,, ,,	० ,, ,,	१० — ० — १ — १ — ०
३	१ ,, ,,	१ ,, ,,	० ,, ,,	१ ,, ,,	११ — ० — १ — ० — १
४	१ ,, ,,	१ ,, ,,	० ,, ,,	१ ,, ,,	१२ — ० — १ — ० — ०
५	१ ,, ,,	० ,, ,,	१ ,, ,,	१ ,, ,,	१३ — ० — १ — १ — ०
६	१ ,, ,,	० ,, ,,	१ ,, ,,	० ,, ,,	१४ — ० — ० — १ — १
७	१ ,, ,,	० ,, ,,	० ,, ,,	१ ,, ,,	१५ — ० — ० — ० — १
८	१ ,, ,,	० ,, ,,	० ,, ,,	० ,, ,,	१६ — ० — ० — ० — ०

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इदाणिं पासवणादिपदाणं अन्योन्यारोपणं क्रियते –

ठाणे नियमा रूवं, भासा सद्दो उ भूसणे भइओ ।
काइय ठाणं णत्थी, सद्दे रूवे य भय सेसे ॥५२६॥

जत्थ ठाणं तत्थ रूवं भासासद्दो य णियमा भवंति, भूसणसद्दो [1]भतितो, जेण रंडकुरंडातो य अणाभरणियाओ भवंति । पासवणे पुण ठाणं णत्थि, जत्थ कातियभूमी पडिबद्धा तत्थ ठाणं णत्थि, भासा-सद्दो भूसणसद्दो रूवं च "भय" त्ति भयणिज्जं कयाइ भवंति कयाइ ण भवंति । सेसे त्ति एतान्येव शब्दादीनि शेषाणीत्यर्थः ॥५२६॥

जत्थ साहूणं असंजतीण य एगा काइयभूमी सा पासवणपडिबद्धा तत्थ दोसा भणंति –

आयपरोभयदोसा, काइयभूमीए इच्छऽणिच्छंते ।
संका एगमणेगे, वोच्छेदे पदो सतो जं च ॥५३०॥

"आय" त्ति – साधुः अप्पणेण खुब्भति । "पर" त्ति इत्थिया साहुम्मि खुब्भति । "उभयं" ति साधू इत्थीए, इत्थीया साधुम्मि । एते आत्मपरोभयदोषाः काइयभूमी भवंतीत्यर्थः । "इच्छऽणिच्छंते" त्ति जइ इत्थिया साहुम्मि खुब्भति तं जइ पडिसेवति तो वयभंगो । अह णेच्छति तो उड्डाहं करेति । एवं उभयथापि दोषः । अह साधू इत्थीए खुब्भति तो सा इत्थी इच्छेज्ज वा अणिच्छेज्ज वा । जति अणिच्छा तो उड्डाहं करेति – एस मे समणो वाहति । "संक" त्ति इत्थिया पविट्ठा काइयभूमीए पच्छा साहू पविट्ठतो तया एगे संकति किं मण्णे एताणि तुरियाणि ।

अहवा – अणायारे एगे संकति अणेगा वा, एगमणेगे वा वोच्छेदं करेति वसहिमादीणं । पदुट्ठो वा गेण्हणकड्ढणववहारादि करेज्ज ॥५३०॥

जत्थ गिहत्थीणं संजयाण य एगं ठाणं तत्थिमे दोसा –

दुग्गूढाणं छण्णंगदंसणे भुत्तभोगिसतिकरणं ।
वेउव्वियमादीसु य, पडिबंधुड्डंचगा संका ॥५३१॥

"दुग्गूढं" दुगोवियं दुण्णियत्थं दुपाउयं वा छण्णंगं उरुगादि ताणि दट्ठुं भुत्तभोगिणं स्मृतिकरणं भवति । "वेउव्वियमि" ति महत्प्रमाणं !

अहवा – वेउव्वियं मरहट्ठविसए सागारियं वज्झति, तत्थ वेंटको कज्जति अंगुलिमुद्दिगावत्, सा य अगारी तारिसेण पडिसेवियपुव्वा तस्स य साहुस्स सागारियं वेउव्वियं तत्थ पडिबंधं जाति, "उड्डंचगो वा" कुंठितं करेति, अगारी वा संकति – किं मण्णे एस साधू सागारियं दंसेति, प्राय सो मां प्रार्थयतीत्यर्थः । लोगो वा संकति ण एते साधू ॥५३१॥

किंचान्यत् –

अगुत्ति य बंभचेरे, लज्जाणासो य पीतिपरिवड्ढी ।
साधु तवो वणवासो, णिवारणं तित्थपरिहाणी ॥५३२॥

---

१ भजनावान्=स्याद्वा न वेत्यर्थः ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

एगट्ठाणे बंभचेरस्स अगुत्ती भवति। परोप्परो य लज्जाणासो अभिक्खदंसणे वा पीतिपरिवड्ढी। लोको उभ्रसवचनेन ब्रवीति—साधु ! तवो वणवासो। रातादि निवारणं यथा—मा एतेसिं मज्झे कोति पव्वयउ, एवं तित्थवोच्छेदो भवतीत्यर्थः ॥५३२॥

रूवपडिबद्धाए इमे दोसा, साधू अगाराणं इमं पेक्खेति –

चंकम्मियं ठियं जंपियं च विप्पेक्खित्तं च सविलासं।
आगारे य बहुविधे, दट्ठुं भुत्तेयरे दोसा ॥५३३॥

"चंकम्मितं" गतिविभ्रमं ठिता उब्भाकडित्थंभगेण मितं गच्छति, हंसी वा जंपति महुरं, कोइला वा, विप्रेक्षितं निदीक्षितं तच्च भ्रूक्षेपसहितं, सविस्मितं मुखं प्रहसितं सविलासं, एवमादि स्त्रीणां बहुविधानाकारानलंकृतान् दृष्ट्वा भुक्तभोगिनां स्मृतिकरणं भवति। "इतरे" अभुत्तभोगी, तेषां कोतुकं भवति, न चेव अम्हेहिं माणुस्सगा कामभोगगुणा भुत्ता, एवं तेसिं पडिगमणादओ दोसा भवंति ॥५३३॥

ताओ वा इत्थीओ ते साहुणो णाणादिसिलो तत्थ ठितो दट्ठूण एवं संकेज्जा --

जल्लमलपंकिताण वि, लावण्णसिरी तु जहासि देहाणं।
सामण्णम्मि सुरूवा, सतगुणिया आसि गिहवासे ॥५३४॥

"जल्लो" कद्दिमभूतो, "मलो" उव्वट्टितो फिट्टति, पंकिता णाम तेण जल्लमलेन युताः, "लावणं" सरीरसोभा, लावणमेव श्री लावणश्री, जहा – यस्य साधोर्देहे शरीरे अनभ्यंगादिभावेन युक्तस्यापि समणस्स भावो सामण्णं तस्सिं सुरूपता लक्ष्यते यदा पुनर्गृहवासे अभ्यंगभावेन युक्तमासीत्तदा समीपतः शतगुणा सुरूपता आसीत् ॥५३४॥

सद्दपडिबद्धाते दोसा –

गीताणि य पढिताणि अ, हसिताणि य मजुला य उल्लावा।
भूसणसद्दे राहस्सिएण सोतूण जे दोसा ॥५३५॥

स्त्रीणां गीताणि, विदुषस्त्रीणां च पठितानि श्रुत्वा, सविकारहसिताणि च, मनं ज्वलयन्ति मनं क्षोभयन्ति ये उल्लावा तांश्च श्रुत्वा, वलयनूपुरशब्दांश्च, रहसि भवा राहस्सिगा, पुरुषेण स्त्री भुज्यमानायां स्तनितादिशब्दान् करोति, ते रहस्यशब्दास्तान् श्रुत्वा ये भुक्ताभुक्तसमुत्था दोसा भवंति तानाचार्यः प्राप्नोति। यस्य वा वसेन तत्र स्थिता।

अहवा "ये दोस" त्ति – पावति तं निप्फण्णं पायच्छित्तं भवति ॥५३५॥

इत्थियाओ वा साधूण सद्दे सुणंति –

गंभीरविसदफुडमधुरगाहओ सुरसरो सरो जहसि।
सज्झायस्स मणहरो, गीतस्स णु केरिसो आसी ॥५३६॥

"गंभीरो" साणुणादी, विसदो व्यक्तः, "फुडो" अभिधेयं प्रति स्पष्टः, "मधुरो सुखावहः, सुंभगत्वादर्थऽग्राहणसमर्थो ग्राहकः, शोभनस्वरो यथा अस्य साधोः स्वाध्यायं प्रति मनं हरतीति मनोहरः। जया पुण वीसत्थो गिहत्थकाले गेयं करोति उ ततो किण्णरो इव आसी ॥५३६॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पुरिसा य भुत्तभोगी, अभुत्तभोगी य ते भवे दुविधा ।
कोऊहण सितीकरणुब्भवेहिं दोसेहिमं कुज्जा ॥५३७॥

ते पुण पुरिसा दुविहा – भुत्तभोगी अभुत्तभोगी य । स्मृतिकरणा कौतुकदोषा तेहिं दोसेहि उप्पण्णेहिं इमं कुज्जा ॥५३७॥

पडिगमण अण्णतित्थिय, सिद्ध संजति सलिंगहत्थे य ।
अद्धाण वास सावय, तेणेसु य भावपडिबंधो ॥५३८॥

"पडिगमणं" उण्णिक्खमणं, अण्णउत्थिएसु वा जाति, "सिद्धपुत्ति" वा पडिसेवति, संजतीं वा सलिंगे ठितो पडिसेवति, हत्थकम्मं वा करेति । तम्हा एयद्दोसपरिहरणत्थं ण तत्थ ठाएज्जा । भवे कारणं जेग तत्थ ठाएज्जा "अद्धाण" पच्छद्धं । अद्धाणं पडिवन्ना वा, वासं वा पडति, वहिं वा गामस्स सावयभयं सरीरोवकरणतेणा वा एतेहिं कारणेहिं भावपडिबद्धे ठायंति ॥५३८॥

तं पुण इमाए जयणाए ठाएंति –

विहिणिग्गतो तु जतितुं, पडिबद्धे दव्वजोतिरुक्खाहे ।
ठायंति अह उ वासं, सावयतेणे य तो भावे ॥५३९॥

विहिणिग्गता सुद्धवसहि-अभावे दव्वपडिबद्धाए ठायंति । तस्स अभावे जोइपडिबद्धाए । तस्स अभावे बहिया रुक्खहेट्ठे ठायंति

अहवा – वुट्ठी संपडइ, सावयभयं वा, बाहिरे तेणगभयं वा तो भावपडिबद्धाए ठायंति ॥५३९॥

तत्थ वि इमा जयणा –

भावंमि ठायमाणो, पढमं ठायंति रूवपडिबद्धे ।
तहियं कडगचिलिमिली, तस्सऽसती ठंति पासवणे ॥५४०॥

भावपडिबद्धाए ठायमाणा पढमं ठयंति रूवपडिबद्धाए, पुव्व-भणिय-दोसपरिहरणत्थं अंतरे कडय-चिलमिली वा अंतरं देंति । 'तस्सऽसति" त्ति रूवपडिबद्धाए, तस्स असतीए पासवणपडिबद्धाए । तत्थ वि पुव्वदोसपरिहरणत्थं मत्तए वोसिरिउं अण्णत्थ परिट्ठवें ॥५४०॥

असती य मत्तगस्सा, णिसिरणभूमीए वाधि असतीए ।
वंदेण वोलपविसण, तासिं वेलं च वज्जेज्ज ॥५४१॥

असति पासवणमत्तगस्स अण्णाए वा काइयभूमीए असति "वंदेण" वंदणवोलं रोलं करेंता 'विसंति" प्रविशंतीत्यर्थः । "तासिं" त्ति अगारीणं जा वोसिरणवेला तं वज्जेंति ॥५४१॥

पासवणपडिबद्धाए असतीए सद्दपडिबद्धाए ठायंति । सो य सद्दो तिविहो – भूसण-भासा-रहस्ससद्दो य ।

तत्थ वि पढमं इमेसु –

भूसणभासासद्दे, सज्झायज्झाण णिच्चमुवयोगे ।
उवकरणेण सयं वा पेल्लण अण्णत्थ वा ठाणे ॥५४२॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पढमं भूसणसद्दपडिबद्धाए, पच्छा भासासद्दे । तत्थ पुव्वभणिय-दोसपरिहरणत्थं इमा जयणा भण्णति --समुदिया महंतसद्देण सज्झायं करेंति, झाणलद्धि वा झायंति, एतेष्वेव नित्यमुपयोगं । भूसण-भासासद्दपडिबद्धाए असति, ठाण-पडिबद्धाए वा ठायंति । तत्थ वि पुव्वभणियदोसपरिहरणत्थं इमा जयणा "उवकरणे" पच्छद्धं । उवगरणं विप्पगिण्णं तहा ठाएंति जहा तेसिं ठाणओ ण भवति, सयं वा विप्प-गिण्णा होउ पेल्लंति । अणत्थ वा ठाणे गतुं दिवसतो अच्छंति ॥५४२॥

ठाणपडिबद्धाए असति रहस्ससद्दपडिबद्धाए ठंति –

परियारसद्दजयणा, सद्दवते तिविध-तिविध-तिविधेया ।
उद्दाण-पउत्थ-सहीणभत्ता जा जस्स वा गरुई ॥५४३॥

पुरिसेण इत्थी परियारिया पडिभुंजमाणि त्ति वुत्तं भवति, जं सा सद्दं करेति तत्थ [१]जयणा कायव्वा । "सद्दवए" त्ति सद्दतो तिविहा – मंदसद्दा मज्झिमसद्दा तिव्वसद्दा य । वएण तिविहा – थेरी मज्झिमा तरुणी य । एक्केक्का तिविहा – [२]उद्दाणभत्तारा [३]पउत्थभत्तारा [४]साहीणभत्तारा य । एवं पउत्थवियासु ठाइयव्वं इमाए जयणाए – पुव्वं उद्दाणं भत्ताराए थेरीए मंदसद्दाए । ततो एतेण चेव कमेण एतासु चेव थेरीसु मज्झिमसद्दासु । ततो एतेण चेव कमेण एतासु चेव थेरीसु तिव्वसद्दासु । ततो उद्दाण-पउत्थपतियासु । ततो एतासु चेव जहक्कमेण मज्झिमासु मंदसद्दासु । ततो एतासु चेव जहक्कमेण तिव्व-सद्दासु । तओ साहीणभत्तरासु थेरीसु मंदसद्दासु जाव तिव्वसद्दासु । [ततो सभोइयासु थेरी मज्झिमासु जहासंखं । तओ-सभोइयासु तरुणित्थीसु मंदमज्झिमतिव्वसद्दासु जहसंखं ।]

अहवा – "जा जस्स वा गरुणीय" त्ति – जा इत्थी जस्स साहुस्स माउलदुहियादिया भव्वा सा गरुगी भण्णति । सा (स) तं (तां) परिहरति ।

अहवा "गरुगि" त्ति जो जस्स सद्दो रुचति तिव्वादिगो तेण जुत्ता गुरुगी भण्णति, सो तं तां परिहरति ॥५४३॥

अहवा इमो कमो अण्णो –

उद्दाणपरिट्ठविया, पउत्थ कण्णा सभोइया चेव ।
थेरीमज्झिमतरुणी, तिव्वकरो मंदसद्दा य ॥५४४।

इह गाहाए "कण्णा" सद्दो बंधाणुलोमाओ मज्झे कओ एस आदीए कायव्वो । "कण्णा" अपरिणीया, "उद्दाण-भत्तारा" भत्तारेण परिठविता, पवासिय-भत्तारा, साहीण-भत्तारा सभोइया भण्णति । एयाओ जहासंखेण थेरी-मज्झिम-तरुणी । एवं परूवियासु इमो कमो – पुव्वं कण्णाए थेरीए । ततो कण्णाए कप्पट्ठियाए । ततो मज्झिमकण्णाए । ततो उद्दाण-परिट्ठवण-पउत्थ-थेरीसु जहासंखं । ततो एतासु चेव मज्झिमासु । ततो एतासु चेव तरुणीसु । तओ सभोतिअथेरीए मंद-मज्झिम-तिव्वसद्दाए जहसंखं । ततो मज्झिमाए सभोतियाए तिविहसद्दाय जहासंखं । ततो तरुणित्थीए सभोइयाए तिविहसद्दाए जहासंखं । एवं सामण्णजयणाए भणियं । विसेसेणं पुण जस्स जं अप्पदोसतरं तत्थ तेण ठायव्वं ॥५४४॥

१ स्वाध्यायकरणादिका । २ अपद्राणभर्तृका । ३ प्रोषितभर्तृका । ४ स्वाधीनभर्तृका ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पासवणादिपडिबद्धासु "सिद्धसेनायरिएण" जा जयणा भणिया त चेव संखेवओ "भद्दबाहू" भण्णति –

पासवणमत्तएगं, ठाणे अण्णत्थ चिलिमिली रूवे ।
सज्झाए झाणे वा, आवरणे सद्दकरणे व ॥५४५॥

पुव्वद्धं कंठं । इमा सद्दे जयणा 'सज्झाए" त्ति । अस्य व्याख्या – ॥५४५॥

वेरग्गकरं जं वा वि, परिजितं बाहिरं च इतरं वा ।
सो तं गुणेइ सुत्तं, झाणसलद्धी उ झाएज्जा ॥५४६॥

वेरग्गकरं जं सुत्तं तं पढति, जहा तं सद्दं न सुणेति ।

जं वा वि सुट्ठु परिचियं अखलियं आगच्छति तं पुण अंगबाहिरं पण्णवण दि इतरं अंगपविट्ठं आयारादि जस्स साहुस्स एतेसिं अण्णतरं आगच्छति सो तं गुणे ति सुत्तं । "झाणेव" त्ति अस्य व्याख्या- झाणसलद्धी झायति ॥५४६॥

"आवरणे सद्दकरणे य" त्ति –

दोसु वि अलद्धि कण्णावरेंति तह वि सवणे करे सद्दं ।
जह लज्जियाण मोहो णसति जयणातकरणं वा ॥५४७॥

"दोसु वि" त्ति झाणे पाढे वा जो अलद्धि कण्णा आवरति आवरेंति त्ति वुत्तं भवति । तह वि जइ सद्दं सुणेति ताहे सद्दं करेति तहा जहा तेसिं लज्जियाण मोहो णासति – किमेयं भो ! विगुत्ता ण पस्ससि अम्हे ! जइ तह ण ठाति तो जयणाए करेति । पेच्छ भो ! इंददत्ताइ सोमसम्मा इमो अम्ह पुरओ विगुत्तो अणायारं सेवति ॥५४७॥ गतो ततियभंगो ।

इदाणिं पढमो भंगो भण्णति –

उभयो पडिबद्धाए, भयणा पन्नरसिगा तु कायव्वा ।
दव्वे पासवणम्मि य, ठाणे रूवे य सद्दे य ॥५४८॥

उभओ पडिबद्धा णाम दव्वेण य भावेण य, तत्थ पण्णरस भंगा कायव्वा, इमेण पच्छद्धकमेण दव्वत्तो पडिबद्धा, णो भावतो पासवणादिसु, एस ण घडति उभयतो अप्रतिबद्धत्वात्, एवं अण्णे वि सोलस ण घडंति, उभयतो अप्रतिबद्धत्वादेव ॥५४८॥

जे पनरस उभयपडिबद्धा तेसु ठायमाणस्स इमे दोसा –

उभयो पडिबद्धाए, ठायंते आणमादिणो दोसा ।
ते चेव होंति दोसा, तं चेव य होति बितियपदं ॥५४९॥

उभयतो दव्व-भावपडिबद्धाए ठायमाणस्स आणादिणो दोसा । जे य बितियततियभंगेसु दोसा समुदिता ते पढमभंगे दोसा भवंति । जं तेसु बितियततियभंगेसु अववातपदं तं चेव पढमभंगे भवति ॥५४९॥ गओ पढमभंगो । सद्दं वा सोउणं "ति दारं गतं" ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

"अइरित्ताए च उप्पता सद्दे" त्ति दारं प्राप्तं । अस्य व्याख्या –

जुत्तप्पमाण अतिरेग हीणमाणा य तिविध वसधी ।
अप्फुण्णमणप्फुण्णा, संबाधा चेव णायव्वा ॥५५०॥

वसही तिविधा – जुत्तप्पमाणा, अतिरित्तप्पमाणा, हीणप्पमाणा । जा साहूहिं संथारगप्पा गेण्हमाणेहिं अप्फुण्णा वाविय त्ति वुत्तं भवति, सा जुत्तप्पमाणा । जा अणफुण्णा सा अतिरेगा, जत्थ संबाह ठाएंति सा हीणप्पमाणा णायव्वा ॥५५०॥

तीसु वि विज्जंतीसुं, जुत्तप्पमाणाए कप्पती ठाउं ।
तस्स असती हीणाए, अतिरेगाए य तस्सऽसती ॥५५१॥

एतासु तीसु वि विज्जंतीसु पढमं जुत्तप्पमाणाए ठायव्वं । तस्सासती हीणप्पमाणाए । त असती अतिरेगप्पमाणाए ठायव्वं ॥५५१॥

तत्थ जुत्तप्पमाणाए हीणप्पमाणाए य सद्दस्स असंभवो । अइरित्तप्पमाणाए सद्दसंभवो

जतो भणति –

अतिरित्ताए ठिताणं, इत्थी पुरिसो य विसयधम्मट्ठी ।
उज्जुगमणुज्जुगा वा, एज्जाही तत्थिमो उज्जू ॥५५२॥

अइरित्तप्पमाणाए ठिताणं इत्थी पुरिसो य विसयधम्मट्ठी तत्थागच्छेज्जा स्त्रीपरिभोगार्थीत्यर्थ सो पुण पुरिसो दुविहो – उज्जू अणुज्जू वा आगच्छेज्जा, मायावी अमायावि त्ति वुत्तं भवति ॥५५२॥

अतिरित्तवसहिठिताणं जइ इत्थी पुरिसो य आगच्छेज्ज, तो इमा सामायारी –

पुरिसित्थी आगमणे, अवारणे आणमादिणो दोसा ।
उप्पज्जंती जम्हा, तम्हा तु निवारए ते उ ॥५५३॥

अइरित्तवसहीए जइ इत्थी पुरिसो य आगच्छति तो वारेयव्वा । अह न वारेति तो चउगुरुं । आणादिणो य दोसा भवंति । तम्हा दोसपरिहरणत्थं ताणि वारेयव्वाणि ॥५५३॥

"तत्थिमो उज्जु" त्ति अस्य व्याख्या –

अम्हे मो आदेसा, रत्तिं वुच्छा पभाए गच्छामो ।
एसा य मज्झभज्जा पुट्ठो पुट्ठो व सा उज्जू ॥५५४॥

जो इत्थिसहितो पुरिसो आगओ सो एवं भणेज्जा – "अम्हे मो आदेसा" पाहुण त्ति वुत्तं भवति, इह वसहीए रत्तिं वसिउं पभाए गच्छिस्सामो, सा य इत्थिया मज्झं भज्जा भवति । एवं पुच्छितो वा अपुच्छितो वा कहेज्जा उज्जू ॥५५४॥

अहवा इमो उज्जू –

अण्णो वि होइ उज्जू, सब्भावे णेव तस्स सा भगिणी ।
तंपि हु भणंति चित्ते इत्थी वज्जा किमु सचेट्ठा ॥५५५॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

"अण्णो" त्ति अणेण पगारेणं उज्जू भवति। सो वि य पुच्छिम्रो वा भणति एस मे इत्थिगा भगिणी भवति । सा य तस्स परमत्थेणेत्र भगिणो "सब्भावेणे" त्ति वुत्तं भवति । "तं पि हु" त्ति तदिति तं भगिनिवादिनं ब्रुवंति "[1]अम्हं चित्तकम्मे वि लिहिया इत्थी वज्जणिज्जा, किं पुण जा सचेयणा, तो तुमं इम्रो गच्छाहि" अपि पदार्थ संभावने, किं संभावयति ? यदिति भगिनिवादिनं एवं ब्रुवंति किमुत भार्यावादिनं "हु" यस्मादर्थेत्यर्थ ॥५५५॥

स भज्जावादी भणति "ण वट्टए अम्हं सह गिहत्थेहिं वसिउं" ;

किं च –

बंभवतीणं पुरतो, किह मोहिह पुत्तमादिसरिसाणं ।
ण वि भइणी इ जुज्जति, रत्तिं विरहम्मि संवासो ॥५५६॥

बंभव्वतं धरेति जे "बंभवती" ताण पुरम्रो अग्गउ त्ति वुत्तं भवति, "कहं" केणप्पगारेण, "मोहिह" अणायारं पडिसेविस्सह, प्रायसो पिता पुत्रस्याग्रतो न अनाचारं सेवते। माउं वा ।

अहवा "आदि" त्ति आदिसद्दाम्रो भाउं माउं पिउं वा । एवं तुमं पि पुत्तमादिसरिसाणं पुरतो कहं अणायारं पडिसेवसीत्यर्थः । जो भगिणिवादी सो एवं पण्णविज्जति "ण वि" पच्छद्धं । भगिण्या सह रात्रौ "विरहिते" अप्पगासे वसिउं न युज्यतेत्यर्थः ॥५५६॥

इअ अणुलोमण तेसिं, चउक्कभयणा अणिच्छमाणेहिं ।
णिग्गमण पुव्वदिट्ठे ठाणं रुक्खस्स वा हेट्ठा ॥५५७॥

"इय" एवं, "अणुलोमणा" अणुण्णवणा पण्णवण त्ति, तेसिं कीरइ । पण्णविज्जंता वि जति णेच्छंति णिग्गंतुं, तदा "चउक्कभयणा" चउभंगो कज्जति—[2]पुरिसो भद्दगो, इत्थी वि भद्दिया । एवं चउभंगो । जं जत्थ भद्दतरं तं अणुलोमिज्जति । जइ णिग्गच्छंति, तो रमणिज्जं । अह बितिय-ततिय-भंगेसु एगतरग्गाहतो अणिच्छंताणं, चउत्थे उभयम्रो अभद्रत्वात् । अणिग्गच्छंताणं णिग्गमणं साहूणं "पुव्व दिट्ठे त्ति" जं पुव्वदिट्ठं सुण्णघरादि तत्थ ठायंति । सुण्णघरा अभावम्रो गामबहिया रुक्खहेट्ठा वि ठायंति, ण य तत्थ इत्थिसंसत्ताए चिट्ठंति ॥५५७॥

अह बहिया इमे दोसा –

पुढवी ओस सजोती, हरित तसा तेण उवधि वासं वा ।
सावय सरीरतेणग, फरुसादी जाव ववहारो ॥५५८॥

बहिया गामस्स रुक्खहेट्ठाम्रो आगासे वा सचित्तपुढवी ओसा वा पडति, अण्णा वा सजोतिया वसही अत्थि, हरियकाम्रो वा, तसा वा पाणा, तहावि तेसु ठायंति, ण य तेहिं सह वसंति ।

अहवा – बहिया उवहितेणा, वासं वा पडति, सीहाति सावयभयं वा, सरीरतेणा वा अत्थि. अण्णा

१ चित्त भित्तिं न निज्झाए – दश० अ० ८ गा० ५५/१ ।
२ (१) पुरिसो भद्दगो, इत्थी वि भद्दिया ।
(२) पुरिसो भद्दगो, इत्थी अभद्दिया ।
(३) इत्थी भद्दिया, पुरुसो अभद्दगो ।
(४) पुरिसो अभद्दगो, इत्थी वि अभद्दिया ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

य णत्थि वसही, ताहे ण बहिया वसंति, तत्थेवऽच्छंति । फरुसवयणेहिं णिट्ठुरा बेंति, जाव ववहारो वि तेण समाणं कज्जति ॥५५८॥

एवं वा वीहावेंति –

अम्हेदाणि विसेहिमो, इड्ढिमपुत्त बलवं असहमाणो ।
णीहि अणिते बंधण, उवट्ठिते सिरिघराहरणं ॥५५९॥

साहू भणंति—अम्हे खमासीला, इदाणिं विविहं विशिष्टं वा सहेमो विसहिमो, जो तत्थ आगारवं साहू सो दाइज्जति, इमो साहू कुमारपव्वतितो, सहस्सजोही वा, मा ते पंतावेज्ज, इड्ढिपुत्तो वा राजादीत्यर्थः, बलवं सहस्सजोही, असहमाणो रोसा बला णीणेहिति, ततो वरं सयं चेव णिग्गतो । जति णिग्गतो तो लट्ठं, अह ण णीति तो सव्वे वा साहू एगो वा बलवं तं बंधति । इत्थी वि जइ तडफडेति तो सा वि बज्झति । "उवट्ठिए" त्ति गोसे, मुक्काणि राउले करणे उवट्ठिताणि तत्थ कारणियाण ववहारा दिज्जति, सिरिघराहरण-दिट्ठंतेण । जइ रण्णो सिरिघररयणावहारं करेंतो चोरो गहितो तो से तुब्भे कं दंडं पयच्छह ? ते भणंति—सिरं से घेप्पति, सूलाए वा भिज्जए । साहू भणंति—अम्हं वि एस रयणावहारी अव्वावातिओ मुहा मुक्को बंधणेण । ते भणंति—के तुब्भ रतणा ? साहू भणंति—णाणादी, कहं तेसिं अवहारो ? अणायारपडिसेवणातो अपध्यानगमनेत्यर्थः ॥५५९॥ गतो उज्जू ।

इदाणिं अणुज्जू भण्णति –

अम्हे मो आएसा, ममेस भगिणि त्ति वदति तु अणुज्जू ।
वसिया गच्छीहामो, रत्तिं आरद्ध णिच्छुभणं ॥५६०॥

ताए धंघसालाए ठिताणं सइत्थी पुरिसो आगतो भणति – अम्हे मो "आदेसा" – पाहुणा, एषा स्त्री मे भगिनी, न भार्या, एवं ब्रवीति अरिजु, इह वसित्ता रत्तिं पभाए गमिस्सामो । एवं सो अणुकूलछम्मेण ठिओ । "रत्तिं आरद्धे" त्ति रत्तिं सो इत्थियं पडिसेवेउमारद्धो तो वारिज्जति । तह वि अट्ठायमाणे णिच्छुभणं पूर्ववत् ॥५६०॥

णिच्छुब्भंतो वा रुट्ठो –

आवरितो कम्मेहिं, सत्तू इव उवट्ठिओ थरथरिंतो ।
मुंचति अ भिंडियाओ, एक्केक्कं मेऽतिवाएमि ॥५६१॥

"आवरिओ" प्रच्छादितः, क्रियते इति कर्म ज्ञानवरणादि, अहितं करोति, कर्मणा प्रच्छादित्वात् । कहं ? जेण साहूणं उवरिं सत्तू इव उवट्ठितो रोसेण थरथरेंतो कंपयंतो इत्यर्थः, वातितजोगेणं मुंचति [1]भिंडिया-ओ ताणि उ पोवकाउ त्ति वुत्तं भवति, भे युष्माकं एकैकं व्यापादयामीत्यर्थः ॥५६१॥

एवं तंमि विरुद्धे –

णिग्गमणं तह चेव उ, णिद्दोसं सदोसऽणिग्गमे जतणा ।
सज्झाए ज्झाणे वा, आवरणे सद्दकरणे य ॥५६२॥

"णिग्गमणं" ताओ बहीहो, तह चेव जहा [2]पुव्वं भणियं, जति बहिया णिद्दोसं । अह सदोसं अतो अणिग्गमा तत्थेवऽच्छंता जयणाए अच्छंति । का जयणा ? "सज्झाए" पच्छद्धं । [3]पूर्ववत् कण्ठ्यं ॥५६२॥

---

१ पूतकारा । २ गा० ५५७/३ । ३ गा० ५४५/३,४ ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

एवं पि जयंताणं कस्सति कामोदग्रो भवेज्जा, ग्रोइण्णे य इमं कुज्जा

कोउहलं च गमणं, सिंगारे कुड्डछिद्दकरणे य ।
दिट्ठे परिणयकरणे भिक्खुणो मूलं दुवे इतरे ॥५६३॥
लहु गुरु लहुया गुरुगा, छल्लहु छग्गुरुयमेव छेदो य ।
करकम्मस्स तु करणे, भिक्खुणो मूलं दुवे इतरे ॥५६४॥

दो वि गाहाग्रो जुगवं गच्छंति। कोउहलं से उप्पण्णं "कहमणायारं सेवंति ?" त्ति, एत्थ मासलहुं । ग्रह से ग्रभिप्पाग्रो उप्पज्जति "ग्रासण्णे गंतुं सुणेमि"; ग्रचलमाणस्स मासगुरुं; 'गमणं" ति पदभेदे कए चउलहुग्रं । सिंगारसद्दे कुड्डकडंतरे सुणेमाणस्स चउगुरुं । "करणादि" कुड्डछिद्दकरणे छल्लहुं; तेण छिद्देण ग्रणायारं सेवमाणा दिट्ठा छग्गुरुं । करकम्मं करेमि त्ति परिणते छेदो । ग्राढत्तो करकम्मं करेउं मूलं भिक्खुणो भवति । 'दुवे" त्ति ग्रभिसेगायरिया, तेसिं "इयरे" त्ति ग्रणवट्ठपारंचिया ग्रंतपायच्छित्ता भवंति । हेट्ठा एक्केक्कं हुसति ।

ग्रहवा – कोऊग्रादिसु सत्तसु पदेसु मासगुरुविवज्जिता मासलहुगादि जहासंखं देया, सेसं तहेव कंठं ॥५६३–५६४॥

सीसो पुच्छति – कहं साहू जयमाणो एवं ग्रावज्जति ?

ण्णति –

वडपादवउम्मूलण तिक्खमिव विजलम्मि वच्चंतो ।
सद्देहिं हीरमाणो, कम्मस्स समज्जणं कुणति ॥५६५॥

जहा वडपादग्रो ग्रणेगमूलपडिबद्धो गिरिणतिसलिलवेगेणं उम्मूलिज्जति एवं साहू वि णतिपूरेण वा तिक्खेण कयपयत्तो वि जहा हरिज्जति, विगतं जलं "विज्जलं" सिढिलकर्दमेत्यर्थः, तत्थ कयपयत्तो वि वच्चंतो पडति, एवं साहू वि ।

सद्देहिं" पच्छद्धं – विसयसद्देहिं भावे हीरमाणे कम्मोवज्जणं करोतीत्युक्तम् ॥५६५॥ "[1]ग्रतिरित्तवसहीए" त्ति दारं गतं –

इदाणिं बहिया णिग्गतस्स दारं पत्तं –

वेयावच्चस्सट्ठा, भिक्खावियारातिणिग्गते संते ।
भूसणभासासद्दे, सुणेज्ज पडियारणाए वा ॥५६६॥

उवस्सयाग्रो बहिं णिग्गमो इमेहिं कारणेहिं – गिलाणस्स ग्रोसहपत्थभोयणादिनिमित्तं । एवमादि वेयावच्चट्ठा । "णिग्गग्रो", भिक्खायरियं वा णिग्गतो ग्रादिसद्दातो वियार-सज्झायभूमिं वा णिग्गतो समाणो भूसणसद्दं वा, भासासद्दं वा, परियारणासद्दं वा सुणेज्ज । पुरिसेण इत्थी परिभुज्जमाणा जं सद्दं करेति एस परियारणासद्दो भण्णति ॥५६६॥

तत्थ भुत्तऽभुत्ताणं संजमविराहणादोसपरिहरणत्थं इमं भण्णति –

भारो विलवियमेत्तं, [2]सव्वे कामा दुहावधा ।
तिविहम्मि वि सद्दम्मी, तिविह जतणा भवे कमसो ॥५६७॥

---

१ गा० ५१७/२ । २ उत्त० ग्रध्य० १३ गा०१६/४ ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वलयादिभूसणसद्दे भूसणसद्दं वा आभरणभारो त्ति भण्णति। मित-मधुर-गीतादिभासासद्दे विलवियंति भण्णति प्रवसित-मृतभर्तारिगुणानुकीर्तनारोदिनीस्त्रीवत् । परियारसद्दे "सव्वे कामा दुहावह" त्ति दुक्खं आवहंतीति दुक्खावहा दुक्खोपार्जका इत्यर्थः । तिविह भूसणादिसद्दे एस जयणा भणिता जहाकमसो ॥५६७॥ "सद्दं वा सोऊणं" ति दारं गतं।

इदाणिं "दट्ठूणं" ति दारं भण्णत्ति –

आलिंगणावतासण, चुंबण परितारणेतरं वा वि ।
सच्चित्तमचित्ताण व, दट्ठूणं उप्पता मोहो ॥५६८॥

पुरिसेणित्थी स्तनादिषु स्पृष्टा आलिंगता, वाहाहिं अवतासिता, मुखेन चुंबिता, सागारियसेवणं "परियारणं" "इतरं" गुज्झप्पदेसो ; एताणि रूवाणि सचित्ताणि वा अचित्ताणि वा [1]चित्र-कर्मलेप्यादिषु दृष्ट्वा मोहोत्पत्तीत्यर्थः ॥५६८॥ "दट्ठुं" ति दारं गतं।

इदाणिं "[2]सरिउं" त्ति दारं भण्णति –

हासं दप्पं च रतिं, किड्डं सहभुत्त आसिताइं च ।
सरिऊण कस्स इ पुणो, होज्जाही उप्पता मोहे ॥५६९॥

किंचि इत्थियाहि समं हसितं आसी। इत्थीहिं सह हत्थो (रंडा रती) दप्पो ।

अहवा – णिद्धगादि भारियाए परिहासेण बला थणोरुघट्टणं दप्पो । रतीं ति वा कामो भुत्तो. किड्डं पासगादिभिः, एगभायणे सहभुत्तं, आसियं एगासणे णिसण्णाणि तुयट्टाणि वा ठिताणि। एवमादियाणि पुव्वभुत्ताणि सरिऊण कस्स ति साहुस्स मोहोदओ होज्ज ॥५६९॥

जत्थ दट्ठूणं मोहो उप्पज्जति, तत्थिमा जतणा –

दिट्ठीपडिसंहारो, दिट्ठे सरणे विरग्गभावणा भणिता ।
जतणा सणिमित्तम्मी होतऽणिमित्ते इमा जतणा ॥५७०॥

आलिंगणावतासणादिसु दिट्ठीपडिसंहारो कज्जति। दिट्ठेसु हासदप्परइमाइसु पुव्वभुत्तेसु सवणे वेरग्गमादियासु भावणासु अप्पाणं भावेति। भणिया जयणा सणिमित्तम्मि। सनिमित्तमोहोदओ गओ।

इदाणिं अणिमित्तं भण्णति। होइ अणिमित्ते इमा परूवणा जयणा य ॥५७०॥

अणिमित्तस्स तिविहो उदओ – कम्मओ आहारओ सरीरओ य। तत्थ कम्मोदओ इमो –

छायस्स पिवासस्स व, सहाव गेलण्णतो वि किसस्स ।
वाहिरणिमित्तवज्जो. अणिमित्तुदओ हवति मोहे ॥५७१॥

"छाओ" भुक्खिओ, "पिवासितो" तिसितो, सहावतो किसो सरीरेण गेलण्णतो वा किसो, एरिसस्स जो मोहोदओ, बाहिरं सद्दादिगं णिमित्तं, तेण वज्जितो अणिमित्तो एस मोहोदओ ॥५७१॥ कम्मोद-उत्ति गत्तं।

---

१ आचा० श्रुत० २ चू० २ सू० १७१। २ गा० ५१६/२।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इदाणिं [1]"आहारोदओ त्ति भण्णति –

आहारउब्भवो पुण, पणीतमाहारभोयणा होति ।
वाईकरणाऽऽहरणं, कल्लाणपुरोध उज्जाणे ॥५७२॥

आहारपच्चओ मोहुब्भवो "पुण" विसेसणे, "पणीतं" गलंतणेहं, आहार्यते इति आहारः, प्रणीताहारभोजनाद् मोहोद्भवो भवतीत्यर्थः । कथं ? उच्यते "वातीकरण" त्ति । पणीयाहारभोयणाओ रसादि वुड्ढी जाव सुक्कंति ; सुक्कोवचया वायुप्रकोपः, वायुप्रकोपाच्च प्रजननस्य स्तब्धताकरणं, अतो भण्णति वाई० ।

अहवा पणीयाहारो वाजीकरणं दप्पकारकेत्यर्थः ।

इहोदाहरणं –

"कल्लाण पुरोहउज्जाणे" त्ति कंपिल्लपुरं णगरं । ब्रह्मदत्तो राजा । तस्स कल्लाणगं णाम आहारो । सो वरिसेण णिफिज्जति । तं च इत्थिरयणं चक्की य भुंजंति । तव्वइरित्तो अण्णो जइ भुंजति, तो उम्माओ भवति । पुरोहितो य तमाहारमभिलसति । पुणो पुणो रायाणं भणति – चिरस्स ते रज्जं लद्धं, अदिट्ठकल्लाणोसि, जेण सारीरियमाहारं ण देसि कस्स ति । राइणा रूसिएण भणिओ – कल्लं णातित्थिवग्ग सहिओ णिमंतिओ सि । राइणा उज्जाणे जेमाविओ । तेहिं मोहुदओ गोधम्मो समाचरितो । एवं पणीयाहारेण मोहुदओ भवति त्ति ॥५७२॥ "आहारोदउ" त्ति गतं ।

इदाणिं [2]"सरीरोदउ त्ति भणति –

मंसोवचया मेदो, मेदाओ अट्ठि-मिंज-सुक्काणं ।
सुक्कोवचया उदओ, सरीरचयसंभवो मोहे ॥५७३॥

आहारातो रसोवचओ । रसोवचयाओ रुहिरोवचओ । रुहिरोवचया मंसोवचओ । मंसोवचया मेदोवचओ । एवं कमेण "मेदो" वसा "अट्ठी" हड्डं, मिज्जं मेज्जुल्लउ त्ति वुत्तं भवति, ततो सुक्कोवचओ, सुक्कोवच्चयाओ मोहोदओ भवति । एवं सरीरोवचयसंभवो मोहोदओ भवतीत्यर्थः ॥५७३॥ गतं "सरीरोदए" त्ति दारं । एवं सणिमित्तस्स अनिमित्तस्स मोहुदयस्स उप्पण्णस्स झाणज्झयणादीहिं अहियासणा कायव्वा । अट्ठायमाणे –

णिव्वितिगणिब्बले ओमे, तह उद्धट्ठाणमेव उब्भामे ।
वेयावच्चा हिंडण, मंडलि कप्पट्ठियाहरणं ॥५७४॥

णिव्वीतियमाहारं आहारे ति । तह वि अठायमाणे णिव्वलाणि मंडगचणगादी आहारेति । तह वि अठायमाणे ओमोदरियं करेति । तह वि ण ठाति चउत्थादि-जाव-छम्मासियं तवं करेति ; पारणए णिब्बलमाहारमाहारेति । जइ उवसमति तो सुंदरं । अह णोवसमति "ताहे" उद्धट्ठाणं महंतं करेति कायोत्सर्गमित्यर्थः । तह वि अठायमाणे उब्भामे भिक्खायरिए गच्छति ।

अहवा – साहूण 'वीसामणा" ति वेयावच्चं कराविज्जति । तह वि अठायमाणे देसहिंडगाणं सहाओ दिज्जति । एत्थ हेट्ठिल्लपया उवरुवरि दट्ठव्वा, एवं अगीतत्थस्स । गीतत्थो पुण सुत्तत्थमंडलिं दाविज्जति ।

---

१ गा० ५१६ । २ गा० ५१६ ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अहवा – गीतत्थस्स वि णिव्वितिगादि विभासाए दट्ठव्वा ।

नोदक आह – जति तावागीयत्थस्स निव्वीयादि तवविसेसा उवसमो ण भवति तो गीयत्थस्स कहं सीयच्छायादिठियस्स उवसमो भविस्सति ?

आचार्याह – पैशाचिकमाख्यानं श्रुत्वा गोपायनं च कुलवध्वास्संयम योगैरात्मा निरन्तरं व्यापृतः कार्यः

"कुप्पठियाहरणं" ति –

एगस्स कुडुंबिगस्स धूया णिक्कम्मवावारा सुहासणत्था अच्छति । तस्स य अब्भंगुव्वट्टण-ण्हाण-विलेवणादिपरायणाए मोहुब्भवो । अम्मधातिं भणति । आणेहि मे पुरिसं । तीए अम्मधातीए माउए से कहियं । तीए वि पिउणो । पिउणा वाहिरत्ता भणिया । पुत्तिए ! एताओ दासीओ सव्वधणादि अवहरंति, तुमं कोठायारं पडियरसु, तह त्ति पडिवन्नं, सा-जाव-अण्णस्स भत्तयं देति, अण्णस्स वित्ति, अण्णस्स तंदुला, अण्णस्स आयं देक्खति, अण्णस्स वयं, एवमादिकिरियासु वावडाए दिवसो गतो । सा अतीव खिण्णा रयणीए णिवण्णा अम्मधातीते भणिता – आणेमि ते पुरिसं ? सा भणेति – ण मे पुरिसेण कज्जं, णिद्दं लहामि । एवं गीयत्थस्स वि सुत्तपोरिसिं देंतस्स अतीव सुत्तत्थेसु वावडस्स कामसंकप्पो ण जायइ । भणियं च "[1]काम ! जानामि ते मूलं" सिलोगो ॥५७४॥

एवं तु पयतमाणस्स उवसमं होति कस्सइ ण होति ।
जस्स पुण सो ण जायइ, तत्थ इमो होइ दिट्ठंतो ॥५७५॥

"एवं" णिव्वीतियादिप्पगारेण जयमाणस्स य साहुस्स उवसमो वि होति, कस्स वि ण होति । जस्स पुण साहुस्स सो मोहोवसमो ण जायति; तत्थ अणुवसमे इमो दिट्ठंतो कज्जति ॥५७५॥

तिक्खम्मि उदयवेगे, विसमम्मि वि विज्जलम्मि वच्चंतो ।
कुणमाणो वि पयत्तं, अवसो जध पावती पडणं ॥५७६॥

गिरिणईए पुण्णाए कयपयत्तो वि पुरिसो तिक्खेण उदगवेगेण हरिज्जति; एवं निम्नोन्नतं विसमं विगतजलं विज्जलं एतेसु कयपयत्तो वि पडणं पावति ॥५७६॥

अस्य दृष्टान्तस्योपसंहार : क्रियते –

तह समण सुविहियाणं, सव्वपयत्तेण वी जयंताणं ।
कम्मोदयपच्चइया, विराधणा कस्सइ हवेज्जा ॥५७७॥

"तह" तेण प्रकारेण, समो मणो समणो, सोभणं विहियं आचरणमित्यर्थः, सव्वपयत्तेण णिव्वीतियाति वा चणाति जोगेण जयंताणं विं कर्महेतुकचारित्रविराहणा कस्यचित् साधोर्भवेदित्यर्थः । एवं सो उदिण्णमोहो अदढधिती असमत्थो अहियासेउं ताहे हत्थकम्मं करेति ॥५७७॥

पढमाए पोरिसीए, बितिया ततिया तहा चउत्थीए ।
मूलं छेदो छम्मासमेव चत्तारिया गुरुगा ॥५७८॥

---

१ महाभारते ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पढम-बितिय-ततिय-चउत्थीए पोरिसीए य जहक्कमेण हत्थकम्मं करेंतस्स पच्छित्तं – मूलं छेदो छग्गुरु चउग्गुरुगा य ॥५७८॥

अस्या गाथाया व्याख्या –

णिसिपढमपोरिसुब्भव, अदढधिती सेवणे भवे मूलं ।
पोरिसि पोरिसि सहणे, एक्केक्कं ठाणगं हसति ॥५७९॥

रातो पढमपोरिसीए मोहुब्भवो जाओ, तम्मि चेव पोरिसीए अदढधितिस्स हत्थकम्मं करेंतस्स मूलं भवति । अह पढमपोरिसिं सहिउं बितियपोरिसिए हत्थकम्मं करेति छेदो भवति । अह दो पोरिसिए सहिउं ततिए पोरिसिए हत्थकम्मं करेति छग्गुरुगा । अह तिण्णि पोरिसिओ अहियासेउं चउत्थे पहरे हत्थकम्मं करेति ङ्का । एवं पोरिसिहाणीए स्थानह्रासो भवतीत्यर्थः ॥५७९॥

बितियम्मी दिवसम्मि, पडिसेवंतस्स मासितं गुरुगं ।
छट्ठे पच्चक्खाणं सत्तमए होति तेगिच्छं ॥५८०॥

एवं रातीए चउरो पहरे अहियासेउं बितियदिवसे पढमपोरिसीए मासगुरुं । एवं पंचमं पायच्छित्तट्ठाणं ।

एवं पडिसेवित्तां अपडिसेवित्ता वा अण्णस्स साहुस्स कज्जे कहेज्जा । ते य कहिते इमेरिसमुवदिसेज्जा छट्ठे पच्चक्खाणं "पच्छद्धं" ॥५८०॥ (व्याख्या अग्रेतनासु गाथासु)

पडिलाभणऽट्ठमम्मी, णवमे सड्ढी उवस्सए फासे ।
दसमम्मि पिता पुत्ता, एक्कारसम्मि आयरिया ॥५८१॥

"छट्ठे पच्चक्खाणं" एतप्पभितीण इमं पच्छित्तं –

छट्ठो य सत्तमो या, अधसुद्धा तेसु मासियं लहुगं ।
उवरिल्ले जं भणंति, बुड्ढस्सऽवि मासियं गुरुगं ॥५८२॥

छट्ठसत्तमा अहासुद्धा णाम न दोषयुक्तं उपदेशं ददतीत्यर्थः । जे पुण ण गुरूपदेशो सेच्छाए भणति तेण तेसिं मासलहुं पायच्छित्तं । उवरिल्ले त्ति पडिलाभणादि तिण्णि "जं भणंति" त्ति सदोषमुपदेशं ददति तेण तेसिं तिण्ह वि मासगुरुं पच्छित्तं । पिता वुड्ढो तस्स वि मेहुणपल्लिं णयंतस्स मासगुरुं "अवि" संभावणे, अण्णस्स वि ॥५८२॥

"[1]छट्ठे पच्चक्खाणं" त्ति अस्य व्याख्या –

संघाडमादिकधणे, जं कतं तं कतमिदाणि पच्चक्खं ।
अविसुद्धो दुट्ठवणो, ण सुज्झ किरिया से कातव्वा ॥५८३॥

संघाडइल्लसाहुस्स अण्णस्स वा कहियं – जहा मे हत्थकम्मं कतं । सो भणति – जं कतं तं कतमेव, इदाणिं भत्तं पच्चक्खाहि, किं ते भट्ठपइण्णस्स जीविएणं ।

---

१ गा० ५८०/३, उत्तरार्धं ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

"[1]सत्तमतो होइ तेगिच्छं" अस्य व्याख्या –

"अविसुद्धो" पच्छद्धं । जहा अविसुद्धो दुट्ठवणो रप्फगादि, किरियाए विणा ण विसुज्झति ण णप्पति, एवं तुभए जं कयं तं कतमेव इदाणिं णिव्वीतिया तिकिरियं करेहि जेणोवसमो भवति ॥५८३॥

"[2]पडिलाभऽट्ठमे" अस्य व्याख्या –

पडिलाभणा तु सड्ढी, कर सीसे वंद ऊरु दोच्चंगे ।
मूलादि उम्मज्जण, ओकड्ढण मडि्ढमाणेमो ॥५८४॥

तथैवाख्याते इदमाह "सड्ढी" श्राविका, सा पडिलाभाविज्जति । तीए पडिलाभंतीए ऊरुए ठिए पात्रे अहाभावेण अब्भुवेच्च वा चालिते ऊरुअं मज्झेण ओगलति दोच्चंगाती तओ सा सड्ढी करेण फुसति, सीसेण वंदमाणी पादे फुसेज्जा । इत्थीफासेण य बीएणिसग्गो हवेज्जा ततोवसमो स्यात् ।

"[3]णवमे सड्ढी उवस्सए" अस्य व्याख्या "मूलादि" पच्छद्धं । मूलं आदिग्गहणातो गंडं अण्णतरं वा तदणुरूवं रोगमुक्कडं कज्जति, ततो सड्ढी आणिज्जति उवस्सयं, तस्स वा घरे गम्मइ, ततो सा उम्मज्जति-स्पृशति उकड्डुणं गाढतरं, तेण इत्थिसंफासेण बीयणिसग्गो भवे ॥५८४॥

"[4]दसमम्मि पितापुत्त" त्ति अस्य व्याख्या –

सण्णातपल्लि णेहिण, मेहुणि खुड्डंतणिग्गमोवसमो ।
अविधितिगिच्छा एसा, आयरियकहणे विधिक्कारे ॥५८५॥

तथैवाख्याते दसमे ब्रवीति खंतं भणाति – तुब्भे दो वि पितापुत्ता सण्णायपल्लिं गच्छह सण्णायग-गामं ति वुत्तं भवति, तत्थ "मेहुणिया" माउलदुहिया, 'खुड्डंत' त्ति उत्प्रासवयणेहिं भिण्णकहाहि परोप्परं हत्थसंफरिसेण कीडंतस्स बीयणिसग्गो, ततोवसमो भवति । अविधितिगिच्छा एसा भणिया ।

"[5]इक्कारसमंमि आयरिया" अस्य व्याख्या—"आयरियकहणे विधिक्कारो" । तह चेव अक्खाते भणइ तुमं आयरियाणं कहेहि, जं ते भणंति तं करेहि एस एक्कारसमे विहीए उवएसो । तेण सो णिद्दोसो ॥५८५॥

अहवा कोति भणेज्जा – इमेहि हत्थकम्मं कारविज्जति –

[6]सारुवि-सावग-गिहिगे, परतित्थि-णपुंसए य सुयणे य ।
चतुरो य होंति लहुगा, पच्छाकम्मम्मि ते चेव ॥५८६॥

सारूविगेण, सारूविगो सिद्धपुत्तो, सावगेण वा, गिहिणा मिच्छादिट्ठिणा वा, परतित्थिएण वा, "नपुंसए सुयणेय" त्ति अण्णे एए चेव चउरो पुरिसनपुंसया, एतेहिं हत्थकम्मं कारविज्जति । एतेहिं कारवेमाणस्स पत्तेयं चउलहुया भवंति । विसेसिया [7]अंतपदे दोहि वि गुरुगा । (एवं पुरिसनपुंसगेसु वि) । अह ते हत्थकम्मं करेउं उदगेण हत्था धोयंति एयं पच्छाकम्मं । एत्थ से चउलहुयं । ते चेव चउलहुगा ब्रुवतोऽपि भवन्तीत्यर्थः ।

अहवा – "नपुंसए" त्ति काऊं चउगुरुअं । एस अण्णो आदेसो ॥५८६॥

---

१ गा० ५८०/४ । २ गा० ५८१/१ । ३ गा० ५८१/२ । ४ गा० ५८५/३ । ५ गा० ५८५/४ । ६ बृह० उद्दे० ७ भाष्यगाथा ४९३९ । ७ "तपः कालाभ्याम" ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अहवा – कोति भणिओ अभणितो वा इत्थियाहिं हत्थकम्मं कारवेज्ज ।

एसेव कमो णियमा, इत्थीसु वि होति आणुपुव्वीए ।
चउरो य हुंति गुरुगा, पच्छाकम्मंमि ते लहुगा ।।५८७।।

एसेव "कमो" पकारो जो पुरिसाण सारूवियादी भणितो "णियमा" अवस्सं सो चेव पगारो इत्थीसु वि भवति । णवरं – चउगुरुगा भवंति । तह चेव विसेसिता । पच्छद्धंमम्मि ते चेव चउलहुया भवंति ।।५८७।।

इदाणिं जं [1]सुत्ते भणियं "करेंतं वा सातिज्जति" त्ति अस्य व्याख्या –

अणुमोदणकारावण, दुविधा साइज्जणा समासेणं ।
अणुमोदणे तु लहुओ, कारावणे गुरुतरो दोसो ।।५८८।।

सातिज्जति स्वादयति, कर्मबन्धमास्वादयतीत्यर्थः, सा सातिज्जणा दुविहा – अणुमोयणे कारावणे य । "समासो" संक्षेपः ।

सीसो पुच्छत्ति – एतेसिं कारावण अणुमतीणं कयरम्मि गुरुतरो दोसो भवति ?

आचार्याह – "अणु" पच्छद्धं । अणुमोदणे लहुतरो दोसो, कारावणे गुरुतरो दोसेत्यर्थः ।।५८८।।

कारावण अणुमतीणं किं सरूवं ? भण्णति –

कारावणमभियोगो, परस्स इच्छस्स वा अणिच्छस्स ।
काउं सयं परिणते, अणिवारण अणुमती होइ ।।५८९।।

एवं भणति – तुमं अप्पणो य अण्णस्स वा हत्थकम्मं करेहि त्ति, आत्मव्यतिरिक्तस्य परस्यैवं इच्छस्स वा अणिच्छस्स वा बलाभिओगा हत्थकम्मं करावयतो कारावणा भणति त्ति । इमं अणुमतिसरूवं- "काउं" पच्छद्धं जो सयं अप्पणो हत्थकम्मं काउं परिणतो तं अनिवारेंतस्स अणुमती भवति । ५८९।। भणितं साधूणं ।

इदाणिं संजतीणं भण्णति –

एसेव कमो णियमा, णिग्गंथीणं पि होति कायव्वो ।
पुव्वे अवरे य पदे, जो य विसेसो स विण्णेओ ।।५९०।।

एसेव "कमो" पगारो, संजतीण वि "णियमा" अवश्यं निर्ग्रन्थीनां भवतीत्यर्थः । "पुव्वपदं", उस्सग्गपदं, "अवरपदं" अववादपदं तेसु जो विसेसो सो विण्णेयो ।।५९०।।

इमं पच्छित्तं –

दोण्हं पि गुरू मासो, तवकालविसेसितस्स वा लहुओ ।
अंगुलिपादसलांया दिओ विसेसोत्थ पुरिसा य ।।५९१।।

"दोण्हं पि" त्ति – साहु साहुणीणं ।

---

१ प्रथम सूत्रे ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अहवा – कारावणे अणुमतीते य मासगुरू पच्छित्तं ।

अहवा – कारावगस्स मासलहुं तवगुरुगं । अणुमतीते य मासगुरू कालगुरुं । इमो पुण संजतीणं हत्थकम्मकरणं विसेसो, अंगुलीए वा हत्थकम्मं करेइ, पादे वा पण्हियपदेसे, अण्णतरं दोद्धियणालादि बंधिउं करेति । अण्णस्स वा पायंगुट्ठगेण पलंबगेण वा अण्णतराए वा कट्ठसलागाए, एस विसेसो । "पुरिसा य" जहा पुरिसाण इत्थीओ तहा ताण पुरिसा । गुरुगादित्यर्थः ।।५६१।।

जे भिक्खू अंगादाणं कट्ठेण वा कलिंचेण वा अंगुलियाए वा सलागाए वा संचालेइ संचालेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।२।।

"अंगं" सरीरं सिरमादीणि वा अंगाणि, तेसिं आदाणं अंगादाणं प्रभवो प्रसूतिरित्यर्थः । तं पुण अंगादाणं मेढ़ं भणति। तं जो अण्णतरेण कट्ठेण वा "कलिंचो" वंसकप्परी, "अंगुली" पसिद्धा, वेत्रमादि सलागा, एतेहिं जो संचालेति साइज्जति वा तस्स मासगुरुगं पच्छित्तं ।

इदाणिं णिज्जुत्तीए भणति –

अंगाण उवंगाणं, अंगोवंगाण एयमादाणं ।
एतेणंगाताणं, अणातणं वा भवे बितियं ।।५६२।।

अगाणि अट्ठ – सिरादी, "उवंगा" कण्णादी, अंगोवंगा णखपव्वादी, एतेसिं "एयं आदाणं" कारणमिति । एतेण एयं अंगादाणं भण्णति ।

अहवा – अणायतणं वा भवे बितियं णाम ।।५६२।।

"अंगाणं" ति अस्य व्याख्या –

सीसं उरो य उदरं, पट्ठी बाहा य दोण्णि ऊरूओ ।
एते अट्ठंगा खलु, अंगोवंगाणि सेसाणि ।।५६३।।

"सिरं" प्रसिद्धं, "उरो" स्तनप्रदेशः, "उदरं" पेट्टं, "पट्ठी" पसिद्धा, दोण्हि बाहातो, दोण्हि ऊरूओ । एताणि अट्ठगाणि । "खलु" अवधारणे भणितः । अवसेसा जे ते उवंगा अंगोवंगा य ।।५६३।।

ते इमे य –

होंति उवंगा कण्णा, णासऽच्छी जंघ हत्थपाया य ।
णह केस मंसु अंगुलि, तलोवतल अंगुवंगा तु ।।५६४।।

कण्णा, णासिगा, अच्छी, जंघा, हत्था, पादा, य एवमादि सव्वे उवंगा भवंति । णहा वाला श्मश्रु अंगुली हस्ततलं, हत्थतलाओ समंता पासेसु उण्णया उवतलं भण्णति । एते नखादि सव्वे अंगोवंगा इत्यर्थः ।।५६४।।

तस्स संचालणसंभवो इमो –

संचालणा तु तस्सा, सणिमित्तऽणिमित्त एतरा वा वि ।
आत-पर-तदुभए वा, अणंतर परंपरे चेव ।।५६५।।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तस्ये ति मेढ्रस्य संचालणा सणिमित्ते मोहोदए अनिमित्ते वा। सणिमित्ते "सद्दं वा सोउणं, दट्ठं सरिउं व पुव्वभुत्ताइं [1]पूर्वसूत्रे यथा, तथा व्याख्यातव्यमिति। अनिमित्ते "उदयाहारे सरीरे य" इदमपि प्रथमसूत्र एव व्याख्यातव्यम्। "इतरा वा वि" त्ति सणिमित्ता णिमित्तवज्जा। सामण्णेण सव्वावि चालणा तिविधा – अप्पाणेण परेण वा उभएण वा। एक्केक्का दुविधा – अणंतरा परंपरा वा। अणंतरेण हत्थेण, परंपरेण कट्ठादिणा ॥५९५॥

"[2]एतरा वा वि" त्ति अस्य व्याख्या –

उट्ठ-णिवेसुल्लंघण-उव्वत्तण-गमणमादिए इतरा।
ण य घट्टणवोसिरितुं, चिट्ठति ता णिप्पगलं जाव ॥५९६॥

उट्ठेंतस्स, णिसीएंतस्स वा, लंघणीयं वा उल्लंघेंतस्स सुत्तस्स वा, उव्वत्तणादि करेंतस्स गच्छंतस्स वा, आदिसद्दातो पडिलेहणादि किरियासु। एवमादि इतरा संचालणा। सण्णं काइयं वा वोसिरिउं न संचालेति। काइयपडिसाडणणिमित्तं ताव चिट्ठइ जाव सयं चेव णिप्पगलं। अणंतरपरंपरेण संचालेमाणस्स मासगुरू आणादिणो य दोसा भवंति ॥५९६॥

जे भिक्खू अंगादाणं संवाहेज्ज वा पलिमद्देज्ज वा, संवाहेंतं वा पलिमद्देंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३॥

'संवाहति" एक्कसि, "परिमद्दति" पुणो पुणो, सा संवाहणा सणिमित्ता वा अणिमित्ता वा पूर्ववत्। आणादिविराधणा सच्चेव।

जे भिक्खू अंगादाणं तेल्लेण वा घएण वा वसाए वा णवणीए वा [3]अब्भंगेज्ज मक्खेज्ज वा अब्भंगितं वा मक्खेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४॥

"तेल्लघृता" पसिद्धा, वसा अयगर-मच्छ-सूकराणं अब्भंगेति एक्कसि, "मक्ख ति पुणो पुणो।

अहवा – थेवेण अब्भंगणं, बहुणा मक्खणं, उवट्टणासूत्रे धोवणासूत्रे सणिमित्त अणिमित्ता य पूर्ववत्. साइज्जणा तहेव, आणातिविराहणा पूर्ववत्।

जे भिक्खू अंगादाणं कक्केण वा लोद्धेण वा पउमचुण्णेण वा ण्हाणेण वा सिणाणेण वा चुण्णेहिं वा वण्णेहिं वा उव्वट्टेइ परिवट्टेइ वा, उव्वट्टेंतं वा परिवट्टेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५॥

"कक्कं" उव्वलणयं, द्रव्यसंयोगेण वा कक्कं क्रियते, किंचिल्लोद्धं (लोद्रं) हट्टद्रव्यं, तेण वा उव्वट्टेति, पद्मचूर्णेन वा, "ण्हाणं" ण्हाणमेव।

अहवा – उवण्हाणयं भण्णति, तं पुण मापचूर्णादि, सिणाणं-गंधियावणे अंगाघसणयं वुच्चत्ति, वण्णओ जो सुगंधो चंदणादिचूर्णानि जहा वड्ढमाणचुण्णो पडवासवासादि वा, सनिमित्तऽनिमित्ते तहेव उव्वट्टेति एक्कसि, परिवट्टे ति पुणो पुणो।

जे भिक्खू अंगादाणं सीतोदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलेज्ज वा पधोएज्ज वा, उच्छोलेंतं वा पधोवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६॥

१ गा० ५१६/१-२। २ गा० ५९५/२। ३ अभ्यंग=मालिश।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सीतमुदकं सीतोदकं, "वियडं" ववगयजीवियं, उसिणमुदकं उसिणोदकं, 'वियड" च ववगयजीवियं, "उच्छोले ति" सकृत्, "पधोवणा" पुणो पुणो ।

जे भिक्खू अंगादाणं णिच्छल्लेति, णिच्छल्लेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७॥

णिच्छल्ले ति त्वचं अवणेति, महामणि प्रकाशयतीत्यर्थः ।

जे भिक्खू अंगादाणं जिंघति जिंघंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥८॥

जिघ्रति नासिकया आघ्रातीत्यर्थः । हत्थेण वा मलेऊणं लंबणं च जिंघति ।

एतेसिं संचालणादीणं जिंघणावसाणाणं सत्तण्हवि सुत्ताणं इमा सुत्तफासविभासा -

संवाहणमब्भंगण, उव्वट्टण धोवणे य एस कमो ।
णायव्वो णियमा तु, णिच्छलण-जिंघणाए य ॥५६७॥

संवाहणा सूत्रे अब्भंगणासूत्रे उव्वट्टणासूत्रे धोवणासूत्रे एस गमो त्ति – जो संचालणासूत्रे भणिओ सो चेव य प्पगारो णायव्वो "णियमा" अवश्यं णिच्छल्लणजिंघणासूत्रे च ॥५६७॥

एतेसु चेव सत्तसु वि सुत्तेसु इमे दिट्ठंता जहक्कमेण –

सीहाऽऽसीविस-अग्गी, भल्ली वग्घे य अयकर-णरिंदे ।
सत्तसु वि पदेसेते, आहरणा होंति णायव्वा ॥५६८॥

संचालणासुत्ते दिट्ठंतो – सीहो सुत्तो संचालितो जहा जीवियंतकरो भवति । एवं अंगादाणं संचालियं मोहुब्भवं जणयति । ततो चारित्तविराहणा । इमा आयविराहणा – सुक्कक्खएण मरेज्ज । जेण वा कट्ठाइणा संचालेति तं सविसं उमुत्तिल्लयं वा खयं वा कट्ठेण हवेज्जा ।

संवाहणासुत्ते इमो दिट्ठंतो – जो आसीविसं सुहसुत्तं संवाहेति सो विबुद्धो तस्स जीवियंतकरो भवति । एवं अंगादाणं पि परिमद्दमाणस्स मोहुब्भवो, ततो चारित्तजीवियविणासो भवति ।

अब्भंगणासुत्ते इमो दिट्ठंतो – इयरहा वि ताव अग्गी जलति किं पुण घतादिणा सिच्चमाणो । एवं अंगादाणे वि मक्खिज्जमाणे सुट्ठुतर मोहुब्भवो भवति ।

उव्वट्टणासुत्ते इमो दिट्ठंतो "भल्ली" शस्त्रविशेषः, सा सभावेण तिण्हा किमंग पुण णिसिया । एवं अंगादाणसमुत्थो सभावेण मोहो दिप्पति, किमंग पुण उव्वट्टिते ।

उच्छोलणासुत्ते इमो दिट्ठंतो – एगो वग्घो, सो अच्छिरोगेण गहिओ, संबद्धा य अच्छी, तस्स य एगेण वेज्जेण वडियाए अक्खीणि अंजेऊण पउणीकताणि, तेण सो चेव य खद्धो। एवं अंगादाणं पि सो (सुट्ठु) इतर चारित्रविनाशाय भवतीत्यर्थः ।

णिच्छल्लणासुत्ते इमो दिट्ठंतो – जहा अयगरस्स सुहप्पसुत्तस्स मुहं वियडेति, त तस्स अप्पवहाय भवति । एवं अंगादाणं पि णिच्छल्लियं चारित्रविनाशाय भवति ।

जिंघणासुत्ते इमो दिट्ठंतो – "णरिंदे" त्ति । एगो राया तस्स वेज्जपडिसिद्धे अंबए जिंघमाणस्स अंबट्ठी वाही उद्धाइतो, गंधप्रियेण वा कुमारेणं गंधमग्घायमाणेण अप्पा जीवियाओ भंसिओ । एवं अंगादाणं जिंघमाणो संजमजीवियाओ चुओ अणाइयं च संसारं भमिस्सति त्ति । सत्तसु वि पदेसु एते आहरणा भवंतीत्यर्थः ॥५६८॥ भणिओ उस्सग्गो ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इदाणिं अववातो भणति –

बितियपदमणप्पज्झे, अपदंसे मुत्तसक्कर-पमहे ।
सत्तसु वि पदेसेते बितियपदा होति णायव्वा ॥५९९॥

"बितियपदं" अववायपदं अणप्पज्झो अनात्मवशः ग्रहगृहीत इत्यर्थः । सो संचालणादिपदे सव्वे करेज्जा । अपदंसो-पित्तारुग्रं, मुत्तसक्करा पाषाणकः, पमेहो रोगो सततं कायियं ज्झरंतं अच्छति । [1]एतेसु पदेसु सत्तसु वि जहासंभवं भाणियव्वा ॥५९९॥ भणियं संजयाण ।

इदाणिं संजतीण –

एसेव गमो णियमा, संचालगवज्जितो उ अज्जाणं ।
संवाहणमादीसुं, उवरिल्लेसुं छसु पदेसुं ॥६००॥

एसेव प्पगारो सव्वो णियमा संचालणासुत्तविवज्जिओ संवाहणादिसु उवरिल्लेसु छसु वि सुत्तेष्वित्यर्थः ॥६००॥

जे भिक्खू अंगादाणं अण्णयरंसि अचित्तंसि सोयंसि अणुप्पवेसेत्ता सुक्कपोग्गले णिग्घाएति निग्घायंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥९॥

अन्नयरं णाम बहुणं परूवियाणं अण्णतरे अचित्तं नाम जीव-विरहितं, सवतीति सोतं तत्र अंगादाणं पवासऊण सुक्कपोग्गले [2]णिग्घाएति ।

इदाणिं णिज्जुत्ती –

अच्चित्तसोत तं पुण, देहे पडिमाजुतेतरं चेव ।
दुविधं तिविधमणेगे, एक्केक्के तं पुणं कमसो ॥६०१॥

"अच्चित्तं" जीवरहितं "सोतं" छिद्रं, पुणसद्दो भेदप्पदरिसणे, तं अचित्तसोतं तिविहं – देहजुयं पडिमाजुयं चेयरं च । एक्केक्कस्स पुणो इमे भेदा कमसो दट्ठव्वा – देहजुत्तं दुविहं, पडिमाजुत्तं तिविहं, इतरं अणेगहा ॥६०१॥

तत्थ जं देहजुत्रं तं दुविहं इमं –

तिरियमणुस्सित्थीणं, जे खलु देहा हवंति जीवजढा ।
अपरिग्गहेतरा वि य, तं देहजुतं तु णायव्वं ॥६०२॥

तिरियइत्थीणं मणुयइत्थीणं जे देहा जीवजढा भवन्ति, "खलु" अवधारणे, ते पुण सरीरा अपरिग्गहा "इतरा" सपरिग्गहा. सचेतणं सपरिग्गहं अपरिग्गहं उवरि वक्खमाणं भविस्सति । एयं देहजुतं भवतीत्यर्थः ॥६०२॥

इदाणिं पडिमाजुत्तं तिविहं परूविज्जति –

तिरियमणुयदेवीणं, जा य पडिमा – [3]अओ सन्निहिओ ।
अपरिग्गहेतरा वि य, तं पडिमजुतं तु णायव्वं ॥६०३॥

१ पूर्वोक्तेषु । २ गालयतीत्यर्थः । ३ अउ सन्निहितिउ (प्रत्यन्तरे) ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तिरियपडिमा मणुयपडिमा देविपडिमा य असन्निहियाओ [1]सन्निहियाओ। असण्णिहिया दुविहा- अपरिग्गहा, "इतरा" सपरिग्गहा य। जं एयविहाणठियं तं पडिमजुत्तं ति णातव्वं ॥६०३॥

इदाणिं इतरं अणेगविहं परूविज्जति –

जुग-छिड्ड-णालिया-करग गीवेमाति सोतगं जं तु ।
देहच्चाविवरीतं, तु एतरं तं मुणेयव्वं । ६०४॥

जुगं बलिद्दाण खंघे आरोविज्जति लोगपसिद्धं तस्स छिड्डं अण्णतरं वा, णालिया वंस-णलगादीणं छिड्डं, करगो [2]पाणियभंडयं, तरस गीवा छिड्डं वा एवमादि सोतगं। देहं सरीरं, अच्चयंति तामिति अच्चा प्रतिमा, तेसिं विवरीतं अण्णंति वुत्तं भवति। इह पुण असन्निहिय अपरिग्गहेसु अधिकारो। जं एरिसं तं इतरं मुणेयव्वमित्यर्थः ॥६०४॥

एतेसिं सोआणं अण्णतरे जो सुक्कपोग्गले णिग्घाति तस्स पच्छित्तं भण्णति –

मासगुरुगादि छल्लहु, जहण्णए मज्झिमे य उक्कोसे ।
अपरिग्गहितऽच्चित्ते अदिट्ठदिट्ठे य देहजुते ॥६०५॥

देहजुए अपरिग्गहिते अच्चित्ते जहण्णए अदिट्ठे मासगुरुं। दिट्ठे चउलहु। [3]अड्ढोवक्कतीए चारियव्वं। मज्झिमे अदिट्ठे चउलहुअं। दिट्ठे चउगुरुं। उक्कोसते अदिट्ठे चउगुरुं, दिट्ठे छल्लहुअं ॥६०५॥ तिरियमणुयाण सामण्णेण देहजुअं अपरिग्गहियं भणियं।

इदाणिं तिविह-परिग्गहियं भण्णति –

चउलहुगादी मूलं, जहण्णगादिम्मि होति अच्चित्ते ।
तिविहेहिं परिगहिते, अदिट्ठदिट्ठे य देहजुते ॥६०६॥

इमा वि अड्ढोवक्कंती चारणिया देहजुते अचित्ते [4]पायावच्चपरिग्गहे जहण्णए अदिट्ठे चउलहुयं। दिट्ठे चउगुरुयं। कोडंबिय परिग्गहे जहण्णए अदिट्ठे चउगुरुं, दिट्ठे छल्लहुं। दंडियपरिग्गहे जहण्णए अदिट्ठे छल्लहुयं, दिट्ठे छग्गुरुयं। एतेण चेव कमेणं तिपरिग्गहे मज्झिमए चउगुरुगादि छेदे ठाति। एतेण चेव कमेणं तिपरिग्गहे उक्कोसए छल्लहुआदि मूले ठाति ॥६०६॥ भणियं देहजुअं।

इदाणिं पडिमाजुअं भण्णति –

पडिमाजुते वि एवं, अपरिग्गहि एतरे असण्णिहिए ।
अचित्तसोयसुत्ते, एसा भणिता भवे सोधी ॥६०७॥

पडिमाजुयं पि एवं चेव भाणियव्वं। जहा देहजुअं अचित्तं अपरिग्गहं तहा पडिमाजुअं असण्णिहियं अपरिग्गहियं। जहा देहजुअं अचित्तं सपरिग्गहं तह पडिमाजुअं असण्णिहियं सपरिग्गहियं भाणियव्वं। इतरेसु पुण जुगच्छिड्डणालियादिसु मासगुरुं। एत्थ सुत्तनिवातो एसा अचित्तसोयसुत्ते सोही भणिया ॥६०७॥

---

१ अनधिष्ठित-साधिष्ठिता। २ भारी ति भाषायां। ३ प्राजापत्य=लोक। ४ अर्धापक्रांत्या।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

एतेसामण्णतरे, तु सोतए जे उदिण्णमोहो उ ।
सणिमित्तऽणिमित्तं वा, कुज्जा णिग्घातणादीणि ॥६०८॥

एतेसिं अचित्तसोश्राणं सणिमित्ते अणिमित्ते वा मोहुदए (एतेसिं) अण्णतरे अचित्तसोतए सुक्कपोग्गले णिग्घातेति, सो आणादि विराहणं पावइ ॥६०८॥

इमा संजमविराहणा –

रागग्गि संजमिंधण, दाहो अह संजमे विराहणया ।
सुक्कक्खए य मरणं, अकिच्चकारि त्ति उब्बंधे ॥६०९॥

राग एव अग्निः रागाग्निः, संजम एव इंधणं संजमेधनं, अतस्तेन रागाग्निना संयमेन्धनस्य दाहो भवति विनाशेत्यर्थः । "अह" इति एष संयमविराधणा । इमा आतमविराधना पुणो पुणो निग्घायमाणस्स सुक्कक्खए मरणं भवति । ते वा सुक्कपोग्गले णिग्घाएत्ता अकिच्चकारि त्ति काउं अप्पाणं "उब्बंधेति" [1]उल्लंबेति त्ति वुत्तं भवति ॥६०९॥

इयाणिं अववातो भण्णति –

बितियपदं तेगिच्छं, णिव्वीतियमादियं अतिक्कंते ।
अद्धाण-सद्दहत्थं, च पच्छा अचित्त जतणाए ॥६१०॥

"बितियपदं" अववायपयं, तेण कयाति सुत्तपडिसिद्धं करेज्ज । कहं ? णिव्वीतियमादियं तेइच्छं जया अइक्कंतो तह वि अणुवसंतो । "अद्धाण" पच्छद्धं ॥६१०॥

"अद्धाणं" ति अस्य व्याख्या –

उवभुत्तभोगथेरेहिं सद्धिं वेसा दुवस्सए ठाणं
आलिंगणादि दट्ठुं, वीयविवेगो जदि हवेज्जा ॥६११॥

उवभुत्तभोगी भुत्तभोगिणो विगतकौतुकाः निर्विकारा गीतार्था ते य थेरा, तेहिं सद्धिं समाणं वेसिताओ दुवक्खरियाओ वेसस्त्रिया, तेसिं समीवे उवस्सतो घेप्पति । "ठाणं" ति अण्णाओ वा जाओ तक्कम्माओ तत्थ ठातिज्जति, तत्थ ठियस्स आलिंगणा उरु-थणाति फुसणं ति, आदिसद्दातो उवगूहणं चुंबनं वा दट्ठूण, जति णाम बीयणिसग्गो भवे तो सुंदरं ॥६११॥

अह तह वि ण उवसमति तो सद्दपडिबद्धाए ठातिज्जति । तत्थ परियारणादि सद्दं सुणेऊण जति वीर्यणिसग्गो भवति तो सुंदरं ।

तह वि अणुवसंते "हत्थं च" अस्य व्याख्या –

दूमपलासंतरिए, अपडिबद्धं समिल छिड्डमादिसु वा ।
णिसिमादि असागरिए, णिंदण कहणा य पच्छित्तं ॥६१२॥

"दूसं" वत्थं "पलासं" कोमलं वडादिपत्तं, तेण अंतरियं हत्थकम्मं करेति, अप्रतिबद्धं असंततमित्यर्थः । एक दो तिण्णि वा दिवसे ।

१ फांसी लटकना ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

"[१]पच्छा अचित्तं" ति अस्य व्याख्या –

तह वि अठायमाणे समिलं जुगादिछिड्डेसु सुक्कपोग्गले णिग्घातेति असागरिए, तत्थ वि तिण्णिवारे। तत्थ वि अठायमाणे तिरियदेहे अचित्ते पडिमासु वा अपरिग्गहेसु। तह वि अठायमाणे एतेणेव कमेण एतेसु चेव सपरिग्गहेसु। मणुयदेहे अचित्ते पडिमासु वा अपरिग्गहासु। तह वि अठायमाणे एतेणेव क्रमेण एतेसु चेव सपरिग्गहेसु एक्केक्के तिण्णिवारा। "[२]जयणाए त्ति"। एयाए जयणाए काउं अप्पाणं "णिंदति" गरिहति, पच्छा आयरियाणं कहेति, पायच्छित्तं च पडिवज्जति। शेषं उपरिष्टाद्वक्ष्यमाणम् ॥६१२॥ भणितं साधूणं।

इदाणिं साहुणीणं –

एसेव गमो णियमा, णिग्गंथीणं पि होइ णायव्वो।
पुरिस-पडिमाओ तासिं, सविंटगपलंबमादितरं ॥६१३॥

पुव्वद्धं कंठं। पुरिससरीरं अचित्तं तस्स वाउप्पयोगेण सागारियं थद्धं। तत्थ अचित्तपोग्गले णिग्घातेति। पुरिसपडिमाओ वा सागारिएण थद्धेण। "सवेंटपलंबं" सवेंट दोद्धियमादी। आदिसद्दातो कट्ठपासाणादिणा। इतरं णाम देहपडिमावज्जं ॥६१३॥

जे भिक्खू सचित्तपइट्ठियं गंधं जिंघति, जिंघंतं वा सातिज्जति ॥१०॥सू०॥

सचित्ते दव्वे जो गंधो सो सचित्तपइट्ठितो, सो य अइमुत्तगपुप्फातियं, जो जिंघति तस्स मासगुरुं आणादिणो य दोसा।

इदाणिं णिज्जुत्ती –

जो गंधो जीवजुए, दव्वम्मी सो तु होति सच्चित्तो।
संबद्धमसंबद्धा, य जिंघणा तस्स दुविधा तु ॥६१४॥

जीवजुतं दव्वं सचेयणं, तम्मि जो गंधो सो सचित्तपतिट्ठितो भण्णति। तं पुणो दव्वं पुप्फफलाति। तस्स जिंघणा दुविहा—नासग्गे संबद्धा, असंबद्धा वा। नासाग्राऽसंस्पृष्टा दूरे कृत्वा जिघ्रतीत्यर्थः ॥६१४॥

जिंघतस्स इमे दोसा –

जो तं संबद्धं वा, अधवाऽसंबद्ध जिंघते भिक्खू।
सो आणाअणवत्थं, मिच्छत्तविराधणं पावे ॥६१५॥

जो साहू तं गंधं णासाए संबद्धं असंबद्धं वा जिग्घति सो आणाभंगे, अणवत्थाए य वट्टति, अण्णेसिं मिच्छत्तं जणयति, आयसंजमविराहणाए य वट्टति ॥६१५॥

इमा संजमविराहणा –

णासा मुहणिस्सासा, पुप्फजियवधो तदस्सिताणं च।
आयाए विसपुप्फं, तब्भावितमच्च दिट्ठंतो ॥६१६॥

---

१ गा० ६१०/८। २ गा० ६१०/४।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

णीससंतस्स णासामुहेसु जो वायू तेण पुप्फजीवस्स संघट्टणादी भवति। "तदस्सियाणं" ति— तम्मि पुप्फे ये आश्रिता अलिकादयः तेषां च संघट्टणादि संभवति। इमा आयविराहणा "आयए" पच्छद्धं। आयविराहणा कयाइ विसपुप्फं भवति तेण मरति, "तब्भावियं" ति तेण विसेण भावितं तद्भावितं प्रत्यनीकादिना. "अमच्चो" चाणक्को, तदुवलक्खितो दिट्ठंतो, जहा – तेण चाणक्केण जोगविसभाविता गंधा कता सुबुद्धिमंत्रिवधाय। इदमावश्यके गतार्थम्।

इदाणिं अववातो –

बितियपदमणप्पज्झे, अप्पज्झे वा पयागरादिसु।
वाधी हवेज्ज कोयी, विज्जुवदेसा ततो कप्पे ॥६१७॥

अणपज्झो जिघेज्जा, "अणपज्झो" अजाणमाणो जिंघति, "अप्पज्झो" वा जाणमाणो। "पयागरादिसु" त्ति रातो जग्गियव्वं तत्थ किं चि एरिसं पुप्फफलं जेण जिंघिएण णिद्दा ण एति। आदिसद्दातो वा निद्रालाभे वा निद्रालाभनिमित्तं जिंघति। वाही वा को ति जिंघिएण उवसमति। तं विज्जुवदेसा जिंघति ॥६१७॥

इमेण विहिणा –

अचित्तमसंबद्धं, पुव्विं जिंघे ततो य संबद्धं।
अचित्तमसंबद्धं, सचित्तं चेव संबद्धं ॥६१८॥

अचित्तदव्वे गंधं असंबद्धं नासिकाग्रे "पुव्वं" ति पढमं जिंघति, ततो तं चेव अचित्तं संबद्धं, ततो सचित्तं असंबद्धं, ततो सचित्तं संबद्धं जिंघति ॥६१८॥

जे भिक्खू पदमग्गं वा संकमं वा अवलंबणं वा अण्णउत्थिएण वा-
गारत्थिएण वा करेति, करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥११॥

पदं पदाणि, तेसिं मग्गो पदमग्गो सोपाणा, संकमिज्जति जेण सो संकमो काष्टचारेत्यर्थः। अवलंबिज्जति त्ति जं तं अवलंबणं, सो पुण वेतिता मत्तालंबो वा, वागारो समुच्चयवाची, एते अण्णतित्थिएण गिहत्थेण वा करावेति तस्स मासगुरुं आणादिणो य।

इदाणिं णिज्जुत्ती –

पदमग्गसंकमालंबणे य, वसधी संबद्धमेतरा चेव।
विसमे कद्दम उदए, हरिते तसपाणजातिसु वा ॥६१९॥

[1]पयमग्गो त्ति अस्य व्याख्यां –

पदमग्गो सोवाणा, ते तज्जाता व होज्ज इतरे वा।
तज्जाता पुढवीए, इट्टगमादी अतज्जाता ॥६२०॥

---

१ गा० ६१९/१।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पदानां मार्गः पदमार्गः, सो पुण मग्गो सोवाणा, ते दुविहा – तज्जाया 'इतरे" अतज्जाया, तम्मि जाता तज्जाता पुढवि चेव खणिऊण कता, न तम्मि जाया अतजाया इट्टगपासाणादीहिं कता। एक्केक्का वसहीए संबद्धा "इतरा" असंबद्धा। संबद्धा वसहीए लग्गा ठिता, असंबद्धा अंगणए अग्गपवेसदारे वा, तं पुण विसमे कद्दमे वा उदए वा [1]हरिएसु वा जातेसु तसपाणेसु वा घणसंसत्तेसु करेति ॥६१९–६२०॥

[2]इदाणिं "संकमो" त्ति अस्य व्याख्या –

दुविधो य संकमो खलु, अणंतरपतिट्ठितो य वेहासे।
दव्वे एगमणेगो, चलाचलो चेव णायव्वो ॥६२१॥

संकमिज्जति जेण सो संकमो, सो दुविहो – "खलु" अवधारणे, अणंतरपइट्ठितो जो भूमीए चेव पइट्ठितो, वेहासो जो खभेसु वा वेलीसु वा पतिट्ठितो। एक्केक्को दुविहो – एगंगिओ य, अणेगंगिओ य – एकानेकपट्टकृतेत्यर्थः। पुनरप्येकैको चलस्थिरविकल्पेन नेयः। तदपि विषमकर्दमादिषु कुर्वन्तीत्यर्थः ॥६२१॥

'[3]आलंबणेति' अस्य व्याख्या –

आलंबणं तु दुविहं, भूमीए संकमे य णायव्वं।
दुहतो व एगतो वा, वि वेदिया सा तु णायव्वा ॥६२२॥

एतस्स चेव संकमस्स अवलंबणं कज्जति। तं अवलंबणं दुविहं – भूमीए वा संकमे वा भवति। भूमीए विसमे लग्गणणिमित्तं कज्जति। संकमे वि लम्बणनिमित्तं संकज्जति। सो पुण दुहओ एगओ वा भवति। सा पुण "वेइय" त्ति भण्णति मत्तालंबो वा ॥६२२॥

एते सामण्णतरं, पदमग्गं जो तु कारए भिक्खू।
गिहिअण्णातित्थिएण व, सो पावति आणमादीणि ॥६२३॥

"एतेसिं" पयमग्गसंकमावलंबणाणमण्णयरं जो भिक्खू गिहत्थेण वा अन्नतित्थिएण वा कारवेति सो आणादीणि पावति ॥६२३॥

इमे दोसा –

खणमाणे कायवधा, अच्चित्ते वि य वणस्सतितसाणं।
खणणेण तच्छणेण व, अहिदद्दुरमाइआ घाए ॥६२४॥

तम्मि गिहत्थे अन्नतित्थिए वा खणंते छण्हं जीवनिकायाणं विराहणा भवति। जइ वि पुढवी अचित्ता भवति तहा वि वणस्सतितसाणं विराहणा।

अहवा – पुढवीखणणे अहिं दद्दुरं वा घाएज्जा। कट्ठं वा तच्छिंतोऽब्भंतरे अहिं उंदरं वा घाएज्जा ॥६२४॥ एसा संजमविराहणा।

आयाए हत्थं वा पादं वा लूसेज्जा। अहिमादिणा वा खज्जेज्जा। जम्हा एते दोसा तम्हा न तेहिं कारवेज्जा।

---

१ बीलेसु वा प्रत्य०। २ गा० ६१९/१। ३ गा० ६१९/१।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अववाएण कारवेज्जा –

वसही दुल्लभताए, वाघातजुताए अधव सुलभाए ।
एतेहिं कारणेहिं, कप्पति ताहे सयं करणं ॥६२५॥

दुल्लभा वसही मग्गंतेहि वि ण लब्भति ।

ग्रहवा – सुलभा वसही किन्तु वाघातजुता लब्भति। ते य दव्वपडिबद्धा भावपडिबद्धा जोतिपडिबद्धेत्यादि । पच्छद्धं कंठं ॥६२५॥

सयं करणे ताव इमेरिसो साहू करेति –

जिइंदियो घिणी दक्खो, पुव्वं तक्कम्मभावितो ।
उवउत्तो जती कुज्जा, गीयत्थो वा असागरे ॥६२६॥

इंदियजये वट्टमाणो जिइंदिओ, जीवदयालू घिणी, अण्णोण्णकिरियाकरणे दक्खो, "पुव्व" मिति गिहत्थकाले, तक्कम्मभावितो णाम तत्कर्माभिज्ञ स च रहकारघरणिपुत्रेत्यादि, "यती" प्रव्रजितः, स च उपयुक्तः कुर्यात्, मा जीवोपघातो भविष्यति । एवं ताव तक्कम्मभावितो गीयत्थो, तस्स अभावे अगीयत्थो तक्कम्मभावितो, तस्स अभावे तक्कमाऽभावितो गीयत्थो, तस्स अभावे अगीयत्थो अ, एते सव्वे वि असागरे करेंति ॥६२६॥

जया तेहिं पदमग्गसंकमालंबणेहिं कज्जं समत्तं, तदा इमा समाचारी –

कतकज्जे तु मा होज्जा, तओ जीवविराधणा ।
मोत्तुं तज्जाय सोवाणे, सेसे वि करणं करे ॥६२७॥

"कते" परिसमत्ते कज्जे मा जीवविराधणा भवे, "ततो" तस्मात् साधुप्रयोगात्. अतो तज्जाते सोवाणे मोत्तुं सेसे वि "करणं" विणासणं कुज्जा । तज्जाए ण विणासे त्ति, मा पुढविक्काइयविराहणा भविस्सति ।।६२७॥

अववायमुस्सग्गे पत्ते अववाओ भणति –

बितियपदमणिउणे वा, णिउणे वा केणई भवे असहू ।
वाघाओ व सहुस्सा, परकरणं कप्पती ताहे ॥६२८॥

"बितियपदं" अववातो तेण सयं न करेति, गिहिणा कारवेति । कहं ? भणति – सयं अणिउणो, णिउओ वा केणइ य रोगातंकेण असहू, सहुणो वा "वाघातो" विग्घं, तं च आयरियगिलाणादि पओअणं, "परो" गिहत्थो । जता अप्पणा पुव्वभिहियकारणातो असमत्थो ताहे तेण कारावेउं कप्पते ॥६२८॥

तेसिं गिहत्थाण कारावणे इमो कमो –

पच्छाकड साभिग्गह, णिरभिग्गह भद्दए व असण्णी ।
गिहि अण्णतित्थिए वा, गिहि पुव्वं एतरे पच्छा ॥६२९॥

"पच्छाकडो" पुराणो, पढमं ता तेण कराविज्जति । तस्स अभावे साभिग्गहो गिहीयाणव्वती सावगो । ततो णिरभिग्गहो दंसणसावगो । तओ अथाभद्दएण असण्णिगिहिणा मिथ्यादृष्टिना । पच्छा-

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कडादि परतित्थियादि चउरो दट्ठव्वा । एतेसिं पुण पुव्वं गिहिणा कारवेयव्वं । पच्छा परतित्थिणा अप्पतर-पच्छकम्मदोसातो ॥६२६॥

जे भिक्खू दगवीणियं अण्णउत्थिएहिं वा गारत्थिएहिं वा-
करेति करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१२॥

"दगं" पाणी तं "वीणिया" वाहो, दगस्स वीणिया दगवीणिया ।

विकोवणाणिमित्तं णिज्जुत्तिकारो भणति –

वासासु दगवीणिय, वसधी संबद्ध एतरे चेव ।
वसतीसंबद्धा पुण, बहिया अंतोवरि तिविधा ॥६३०॥

वासासु दगवीणिया कज्जति । सा दुविहा – वसहीए संबद्धा, "इतरा" असंबद्धा । वसहीसंबद्धा तिविहा – बहिया अंतो उवरिं च ॥६३०॥

इमं तिविहाए वि वक्खाणं –

णिच्चपरिगले बहिता, उम्मिज्जण अंतो व उदए वा ।
हम्मियतलमाले वा, पणालछिड्डं व उवरित्तु ॥६३१॥

जा सा वसहीसंबद्धा बहिया सा निच्चपरिगलो । जा सा अंतो संबद्धा ता भूमी उम्मज्जति । सिरा वा उप्पिलिगा वा वासोदगं वा छिड्डेहिं पविट्ठं । जा सा उवरिसंबद्धा सा ' हम्मियतले" हम्मतले डायालोवरि. मंडविगाछादितमाले वा वासोदगं पविट्ठं, डायाले वा पणालछिड्डं ॥६३१॥

वसधी य असंबद्धा, उदगागमठाणकद्दमे चेव ।
पढमा वसधिणिमित्तं, मग्गणिमित्तं दुवे इतरा ॥६३२॥

वसहि असंबद्धा तिविहा – उदगस्स आगमो उदगागमो, वसहिं तेण आगच्छति पविसति त्ति । अंगणे वा जत्थ साहुणो अच्छंति । तं "ठाणं" उदगं एति । णिग्गमपहे वा उदगं एति तत्थ कद्दमो भवति । तत्थ पढमा जा वसहि, तेण पविसति तीए अण्णतो दगवाहो कज्जति, मा वसहिविणासो भविस्सति । इयरासु दुसु जा अंगणं एति जा य णिग्गमपहे एता अण्णतो दगवीणिया कज्जति, मा उदगं ठाहि ति तं च संसज्जति । तत्थ अनितणितां तसपाणविराहणा कद्दमो वा होहि ति । मग्गणिमित्तं णाम मग्गो रुज्झिहि ति उदगेण कद्दमेण वा वसहिअसंबद्धासु वि दगवीणिया कज्जति ॥६३२॥

एते सामण्णतरं, दगवीणिय जो उ कारवे भिक्खू ।
गिहि-अण्णतित्थिएण व, अयगोलसमेण आणादी ॥६३३॥

"अयं" लोहं, तस्स "गोलो" पिंडो, सो तत्तो समंता डहति, एवं गिहि अण्णतित्थिओ वा समंततो जीवोवघाती, तम्हा एतेहिं ण कारवे दगवीणिया ॥६३३॥

एगट्ठिया इमे –

दगवीणिय दगवाहो, दगपरिगालो य होंति एगट्ठा ।
विणयति जम्हा उदगं, दगवीणिय भण्णते तम्हा ॥६३४॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पुव्वद्धे एगट्ठिया, पच्छद्धे दगवीणियणिरुत्तं ॥६३४॥

गिहिअण्णतित्थिएहिं दगवीणियं कारवेंतस्स इमे दोसा –

आया तु हत्थ पादं, इंदियजायं व पच्छकम्मं वा ।
फासुगमफासुदेसे सव्वसिणाणे य लहु लहुगा ॥६३५॥

"आय" इति आयविराहणा । तत्थ हत्थं पादं वा लूसेज्जा । इंदियाण अण्णतरं वा लूसेज्जा ।

अहवा – "इंदियजाय" मिति बेइंदियादिया ते विराहेज्जा । पच्छाकम्मं वा करेज्जा । तत्थ फासुएणं देसे मासलहुं, सव्वे चउलहुं । अफासुएणं देसे सव्वे वा चउलहुं ॥६३५॥

अप्पणो करेंतस्स एते चेव दोसा ।

कारणेण करेज्ज वि दगवीणियं । किं कारणं ? इमं –

वसही दुल्लभताए, वाघातजुताए अहव सुलभाए ।
एतेहिं कारणेहिं, कप्पति ताहे सयं करणं ॥
पूर्ववत् कंठा ।

दगवीणियाए अकरणे इमे दोसा –

पणगाति हरितमुच्छण, संजम आता अजीरगेलण्णे ।
वहिता वि आयसंजम, उवधीणासो दुगंछा य ॥६३६॥

"पणगो" उल्ली संमुच्छइ, आदिग्गहणातो बेइंदियादि समुच्छंति, हरियक्काओ उट्ठेति । एसा संजमविराहणा । आयविराहणा सीतलवसहीए भत्तं ण जीरति, ततो गेलण्णं जायति । एते वसहिसंबद्धाए दगवीणियाए अकज्जमाणीए दोसा । वसहि असंबद्धाए बहिया इमे दोसा – उदगागमे ठाणे अगदारे [1]चिलिच्चिले लूसति आयविराहणा, संजमे पणगा हरिता बेइंदिया वा उवहिविणासो, कद्दमेण मलिणवासा दुगुंछिज्जंति ॥६३६॥

कारणे गिहिअण्णतित्थिएहिं वि कारविज्जति –

[2]बितियपदमणिउणे वा, णिउणे वा केणती भवे असहू ।
वाघातो व सहुस्सा, परकरणं कप्पती ताहे ॥६३७॥
पच्छाकड साभिग्गह, णिरभिग्गह भद्दए य असण्णी ।
गिहि-अण्णतित्थिए वा, गिहि पुव्वं एतरे पच्छा ॥६३८॥
दो वि पूर्ववत् कंठाओ ।

जे भिक्खू सिक्कगं वा सिक्कणंतगं वा अण्णउत्थिएण वा-गारत्थिएण वा कारेति, करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१३॥

---

१ मार्द्रं । २ द्वितीयपदं प्रणालवत् गा० ६२८-६२६ ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

"सिक्कगं" पसिद्धं, जारिसं वा परिव्वायगस्स। सिक्कगणतभ्रो उ पोणश्रो उच्छाडणं भणति, जारिसं कावालिस्स [1]भोयगुग्गुलि एस सुत्तत्थो।

इदाणिं णिज्जुत्ति वित्थरो –

सिक्कगकरणं दुविधं, तस-थावर-जीव-देह-णिप्फण्णं ।
अंडग-वाल य कीडग, [2]ण्हारू वज्झादिग तसेसु ॥६३९॥

तं सिक्कगं दुविधं – तसथावरजीवदेहणिप्फण्णं । तत्थ तसणिप्फण्णं अणेगविहं "अंडयं" हंसगब्भादि "वालयं" उण्णियं उट्टियं च, "कीडगं" पट्टकोसिगारादि, "ण्हारू वज्झा" पसिद्धा ॥६३९॥

इदाणिं थावरणिप्फण्णं अणेगविहं –

थावरणिप्फण्णं पुण, पोंडमयं वागयं पयडिमयं ।
मुंजमयं वच्चमयं, कुस-वेत्तमयं च वेलुमयं ॥६४०॥

"पोंडयं" कप्पासो, "वाग" सणमादी 'पयडी". णालिएरि[3]चोदयं, "मुंजं" सरस्स छल्ली, "वच्चगो"–दब्भागिती तणं, "कुसो" दब्भो, 'वेत्तो" पाणियवंसो, "वेणू" थलवंसो ॥६४०॥

एतेसामण्णतरं, तु सिक्कयं जो तु कारवे भिक्खू ।
गिहि-अण्णतित्थितेण व, सो पावति आणमादीणि ॥६४१॥

[4]पूर्ववत् कंठा । तम्हा सिक्कयं ण कारवेज्जा, अणुवकरणमिति काउं ॥६४१॥

बितियपदे कारवेज्ज वि –

सिक्कगकरणे कारणानि –

बितियपद-वूढ-ज्झामित, हरियऽद्धाणे तहेव गेलण्णे ।
असिवादि अण्णलिंगे, पुव्वकताऽसति सयं करणं ॥६४२॥

सव्वोवधी दगवाहेण वूढो ।

अहवा – सव्वो णिब्बुडो उत्तरंतस्स

अहवा – दड्ढो ।

अहवा – सव्वो हरितो तेणएहिं ।

अहवा – अद्धाणे सिक्कयं घेप्पेज्जा, काएण वा पल्लिमादिभिक्खायरियाए गमेज्ज ।

अहवा – परिव्वायगादि परलिंगं करणश्रो करेज्ज, तत्थ सिक्कएण पयोजणं होज्जा, गिलाणस्स ओसहं निक्खवेज्ज, असिवगहितो वा परलिंगं करेज्ज, अतरंता वा वंतरं वा मोहणट्ठं वा ।

एतेहिं कारणेहिं दिट्ठं सिक्कयणग्गहणं । तं पुव्वकयं गेण्हियव्वं, असति पुव्वकतस्स ताहे सयं करेयव्वं ॥६४२॥

---

१ सुगंध द्रव्यम् । २ स्नायु=नस । ३ त्वचा । ४ सू० ११ गा० ६२३ ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

बितियपदमणिउणे वा णिउणे वा केणती भवे असहू ।
वाघातो व सहुस्सा, परकरणं कप्पती ताहे ॥६४३॥
पच्छाकड साभिग्गह, णिरभिग्गह भद्दए य असण्णी ।
गिहि-अण्णतित्थिए वा, गिहि पुव्वं एतरे पच्छा ॥६४४॥

[1]पूर्ववत् ॥५४४॥

अह सिक्कयंतयं पुण, सिक्कतओ पोणओ मुणेयव्वो ।
सो जंग-भंगिओ वा, सण-पोत्त-तिरीडपट्टमओ ॥६४५॥

सिक्कयंतयं णाम तस्सेव पिहणं, मा तत्थ संपातिमा पडिस्संति, सो तु "पूणउ" त्ति देसीभासाते वुच्चति । सो दुविहो – तस-थावरदेहणिप्फण्णो "जंगिओ" अंडगादी, "भंगिओ" अदसिमादी, "सणो" वागो, "पोत्तं" पसिद्धं, "तिरीडपट्टो" रुक्खतया ॥६४६॥

एते सामण्णतरं, उ पोणयं जो तु कारवे भिक्खू ।
गिहि-अण्णतित्थिएण व, कीरंते कीते व छक्काया ॥६४६॥

[2]कंठा ॥६४६॥

सिक्कंतो जे तसा उद्दवेति, अप्पाणं वा विंधेज्जा तत्थ गिलाणारोवणा –

बितियपदवूढज्झामिय, हरियऽद्धाणे तहेव गेलण्णे ।
असिवादी परलिंगे, पुव्वकताऽसति सयं करणं ॥६४७॥

[3]कंठा पूर्ववत् ॥६४७।

बितियपदमणिउणे वा, णिउणे वा केणती भवे असहू ।
वाघातो व सहुस्सा, परकरणं कप्पती ताहे ॥६४८॥
पच्छाकड साभिग्गह, णिरभिग्गह भद्दए य असण्णी ।
गिहि-अण्णतित्थिए वा, गिहि पुव्वं एतरे पच्छा ॥६४६॥
बितिओ वि य आएसो, सिहणंतग-वत्थअंतकम्मं ति ।
तं दुल्लभवत्थम्मी, देसम्मी कप्पती काउं ॥६५०॥

'आदेशः" प्रकारः, सिहणंतगस्स दसावत्थस्स अंते कम्मं अंतकम्मं वत्थंतकम्मदसातो वुणति त्ति वुत्तं भवति । अवव.दतो दुल्लभवत्थे देसे तं करेउं कप्पति ॥६५०॥

जे भिक्खू सोत्तियं वा रज्जुयं वा चिलिमिलिं वा अण्णउत्थिएण वा-
गारत्थिएण वा कारेति, कारेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१४॥

---

१ गा० ६२८–६२६ । २ गा० ६२३ । ३ गा० ६४२ ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सुत्ते भवा सोत्तिया वस्त्रकम्बलयादिका इत्यर्थः । रज्जुए भवा रज्जुग्रा दोरको त्ति वुत्तं भवति ।

सुत्तमयी रज्जुमयी, वागमयी चेव दंड-कडगमयी ।
पंचविध चिलिमिली खलु, उवग्गहकरी भवे गच्छे ॥६५१॥

सुत्तेण कता "सुत्तमयी", तं वत्थं कंबली वा । रज्जुणा कता रज्जुमती, सो पुण दोरो । वागेसु कता वागमयी, बागमयं वत्थं दोरो वा वक्कलं वा वत्थादि । दंडो वंसाती । कडमती वंसकडगादि । एसः पंचविहा चिलिमिणी गच्छस्स उवग्गहकारिया घेप्पति ॥६५१॥

सुत्तमयचिलिमिणीए पमाणप्पमाणं गणणप्पमाणं च इमं –

हत्थ-पणगं तु दीहा, ति-हत्थ-रुंदो (ओ) ण्णिया असती खोमा ।
एय पमाणं गणणे,–क्कमेक्कगच्छं च जा वेढे ॥६५२॥

पंचहत्थाणि "दीहा", "रुंदा" विच्छिण्णा तिण्णि हत्था, उस्सग्गेणं ताव एस उण्णियाए खोम्मियाए, ताए वि एवं चेव प्पमाणं । गणणप्पमाणेणं एक्केक्कस्स साहुस्स । पाडिहारिया वा जा गच्छं वेढिति सा एक्का चेव अणियतप्पमाणा ॥६५२॥

इदाणिं रज्जुमती –

असतुण्णि-खोम-रज्जू, एगपमाणेण जा तु वेढेति ।
कडहू वागादीहि, तु पोत्तऽसति भए व वक्कमयी ॥६५३॥

तत्थ पुव्वं उण्णिओ दोरो । असति खोमिओ । सो दीहत्तणेण पंचहत्थो एक्केकस्स साहुस्स गणावच्छे तिय-हत्थे वा एक्को चेव जो गच्छं वेढेइ । कडभू रुक्खो, तस्स वक्कलं भवति, वागेहिं वा वुतं । खोमियाए असती वागमयी, तस्स वि प्पमाणं [1]पूर्ववत् ॥६५३॥

इदाणिं दंडमती –

देहहिक्को गणणेक्को, दुवारगुत्ती भएउ दंडमयी ।
संचारिमा तु चतुरो, भयमाणे कडगऽसंचारी ॥६५४॥

"देहं" सरीरं, तप्पमाणाओ अधितो दंडतो, सो पुण समए णालिया भण्णति । एक्केक्कस्स साहुस्स सो एक्केक्को भवति । सावयादिभए दुवारगुत्तीकरणं तेहिं देहाहिदंडएहिं [2]किडिया कज्जति । आदिमा चउरो वसहीओ वसहिं, खेत्ताओ वा खेत्तं संचरंति । कडगमती माणे भयणिज्जा असंचारिमा य ॥६५४॥

किं पुण कज्जं चिलिमिणीए ? इमं सुणसु –

[1]सागारिय-[2]सज्झाए [3]पाणदय-[4]गिलाण-[5]सावयभए वा ।
[6]अद्धाण-[7]मरण-[8]वासासु चेव सा कप्पती गच्छे ॥६५५॥
पडिलेहोभयमंडलि, इत्थीसागारिएत्थ सागरिए ।
पाणा-लोगज्झाए, मच्छियडोलादिपाणट्ठा ॥६५६॥

---

१ चिलिमिलीवत् । २ लघुद्वारम् चिलिमिलिओ ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

भए सारोवहिं चिलिमिणिं दाउं पडिलेहज्जति । सागारिए उड्डाहरक्खणत्थं भोयणमंडलीए चिलिमिली दिज्जति । इत्थीरूवपडिबद्धाए चिलिमिली दिज्जति । जग्रो रुधिर वच्चकाति ततो चिलिमिलिं दाउं सज्झाग्रो कज्जति । जं दिसं मुत्तपुरिसाति घाणी ग्रागच्छति तं दिसिं चिलमिलिं काउं सज्झाग्रो कज्जति । जं दिसं मच्छिडोलादि पाणा ग्रागच्छंति ततो चिलिमिली दिज्जति ॥६५६॥

उभग्रो-सह-कज्जे वा, देसी वीसत्थमादि गेलण्णे ।
ग्रद्धाणे छण्णाऽसति, भत्तोवधि सावते तेणे ॥६५७॥

गिलाणो पच्छण्णे उभयं काइयसण्णा वोसिरति । ग्रोसहं वा दिज्जति । "देसि" त्ति—जत्थ देसे डागिणीणमुवद्दवो तत्थ गिलाणो पच्छण्णे धरिज्जति । वीसत्थो वा गिलाणो ग्रच्छइ पच्छण्णे । ग्रद्धाण-पडिवण्णगा य पच्छण्णस्स ग्रसति चिलिमिणिं दाउं भत्तट्ठं करेंति । सारोवहिं वा पडिलेहंति । सावयतेणातिभए दंडमतीए दारं पिहेंति ६५७॥

छण्ण-वह-णट्ठ-मरणे, वासे उज्झंखणीए कडग्रो उ ।
उल्लुवहिं विरल्लेंति, व ग्रंतो बहि कसिण इतरं वा ॥६५८॥

जाव मतग्रो ण परिट्ठविज्जति ताव पच्छण्णे धरिज्जति । ग्रद्धाणे वा जाव थंडिल न लब्भति ताव ऽच्छति तो मतो [1]वुज्झति । जग्रो "उज्झंखणीए" ति तत्तो कडगचिलिमिली दिज्जति । वासासु वा उल्लुवहिं विरल्लेंति दोरे जहासंखं ग्रंत-बहि-कसिण-इतरं वा ॥६५८॥

पंचविधचिलिमिणीए, पुव्वकताए य कप्पती गहणं ।
ग्रसती पुव्वकताए, कप्पति ताहे सयं करणं ॥६५६॥

कंठा ॥६५६॥

वितियपदमणिउणे वा, निउणे वा होज्ज केणई ग्रसहू ।
वाघातो व सहुस्सा, परकरणं कप्पती ताहे ॥६६०॥

पच्छाकड साभिग्गह, णिरभिग्गह भद्दए य ग्रसण्णी ।
गिहि ग्रण्णतित्थिए वा, गिहि पुव्वं एतरे पच्छा ॥६६१॥

पूर्ववत् कंठा ॥६६०-६६१॥

जे भिक्खू सूतीए उत्तरकरणं ग्रण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा- कारेति, कारेंत वा सातिज्जति ॥सू०॥१५॥

जे भिक्खू पिप्पलगस्स उत्तरकरणं ग्रण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा कारेति, कारेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१६॥

जे भिक्खू णहच्छेयगस्सुत्तरकरणं ग्रण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा- कारेति, कारेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१७॥

---

१ ग्राच्छावते ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जे भिक्खू कण्णसोहणगस्सुत्तरकरणं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा-
कारेति, कारेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१८॥

सूतीमादीयाणं, उत्तरकरणं तु जो तु कारेज्जा ।
गिही अण्णतित्थिएण व, सो पावति आणमादीणि ॥६६२॥

कंठा ॥६६२॥

उवग्गहिता सूयादिया, तु एक्केक्क ते गुरुस्सेव ।
गच्छं व समासज्जा, अणायसेक्केक्क सेसेसु ॥६६३॥

सूती पिप्पलओ णहच्छेयणं कण्णसोहणं उवगहितोवकरणं । एते य एक्केक्का गुरुस्स भवंति, सेसा तेहिं चेव कज्जं करेंति । महल्लगच्छं व समासज्ज अणायसा अलोहमया वंससिंगमयी वा सेससाहूणं एक्केक्का भवति ॥६६३॥

किं पुण उत्तरकरणं ? इमं –

पासग-मट्ठिणिसीयण-पज्जण-रिउकरण उत्तरं करणं ।
सुहुमं पि जं तु कीरति, तदुत्तरं मूलणिव्वत्ते ॥६६४॥

"पासगं" बिलं वड्ढिज्जति, लण्हकरणं, "मट्ठिणिसियणं" णिसाणे, "पज्जणं" लोहकारागारे, "रिजु" उज्जुकरणं । एयं सव्वं उत्तरकरणं ।

अहवा – मूलणिवत्ति उवरिं सुहुममवि जं कज्जति तं सव्वं उत्तरकरणं ॥६६४॥

सूतीमादीयाणं णिप्पडिकम्माण कप्पती गहणं ।
असती णिप्पडिकम्मे, कप्पति ताहे सयं करणं ॥६६५॥

बितियपदमणिउणे वा, णिउणे वा सेवती भवे असहू ।
वाघातो व सहुस्सा, परकरणं कप्पती ताहे ॥६६६॥

पच्छाकड साभिग्गह, निरभिग्गह भद्दए य असण्णी ।
गिहि अण्णतित्थिए वा, गिहि पुव्वं एतरे पच्छा ॥६६७॥

पूर्ववत् ॥६६७॥

जे भिक्खू अण्णट्ठाए सूतिं जायति, जायंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१९॥
जे भिक्खू अण्णट्ठाए पिप्पलगं जायति, जायंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२०॥
जे भिक्खू अण्णट्ठाए कण्णसोहणगं जायति, जायंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२१॥
जे भिक्खू अण्णट्ठाए णहच्छेयणगं जायति, जायंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२२॥

सूयिमणट्ठाए तु, जे भिक्खू पाडिहारियं जाते ।
सो आणाअणवत्थं, मिच्छत्तविराधणं पावे ॥६६८॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

"अणट्ठा" णिप्पओयणे, पडिहरणिज्जं "पाडिहारियं" ॥६६८॥

इमे दोसा –

णट्ठे हित विस्सरिते, तदण्ण दव्वस्स होति वोच्छेदो ।
पच्छाकम्मपवहणं, धुवावणं वा तदट्ठस्स ॥६६९॥

हत्थाओ चुता णट्ठा, तेणेहिं [1]हिता, कहिं पि मुक्का ण जाणए वीसरिता । तद्दव्वअण्णदव्वस्स वा तस्स वा अण्णस्स वा साहुस्स वोच्छेयं करेज्जा । पच्छाकम्मं अण्णं घडावेति असुतिसमणेण वा छिक्का धोवति । अवहंतं वा अण्णं वा धोवावेति । धुवावणं दव्वावेति ॥६६९॥

आणाए वोच्छेदे, पवहण किण पच्छकम्म पच्छित्ता ।
गुरुगा गुरुगा लहुगा, लहुगा गुरुगा य जं चऽण्णं ॥६७०॥

आणादी पंचपदा एतेसु जहासंखं । पायच्छित्ता पच्छद्धेणं ॥६७०॥

जे भिक्खू अविहीए सूइं जायइ, जायंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२३॥

जे भिक्खू अविहीए पिप्पलगं जायइ, जायंतं वा सातिज्जति ॥सू१॥२४॥

जे भिक्खू अविहीए णहच्छेयणगं जायइ, जायंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२५॥

जे भिक्खू अविहीए कण्णसोहणयं जायइ, जायंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२६॥

जे भिक्खू पाडिहारियं सूइं जाइत्ता वत्थं सेव्विस्सामि त्ति-
पादं सिव्वति, सिव्वंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२७॥

जे भिक्खू पाडिहारियं पिप्पलयं जाइत्ता वत्थं छिंदिस्सामि त्ति-
पायं छिंदति, छिंदंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२८॥

जे भिक्खू पाडिहारियं णहच्छेयणयं जाइत्ता नखं छिंदामि त्ति-
सल्लुद्धरणं करेड, करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२९॥

जे भिक्खू पाडिहारियं कण्णसोहणगं जाइत्ता कण्णमलं णीहरिस्सामि त्ति-
दंतमलं वा णखमलं वा णीहरेति णीहरावेंतं वा सातिज्जति॥सू०॥३०॥

का अविधी ? इमा –

वत्थं सिव्विस्सामी, ति जाइउं पादसिव्वणं कुणति ।
अहवा वि पादसिव्वण, काहेंतो सिव्वती वत्थं ॥६७१॥

कंठा ॥६७१॥

तं दट्ठूण सयं वा, अहवा अण्णेसिं अंतियं सोच्चा ।
ओभावणमग्गहणं, कुज्जा दुविधं च वोच्छेदं ॥६७२॥

१ हृता ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सूति-सामिणा अविहीएसिव्वंतो सयमेव दिट्ठो अण्णस्स वा समीवे सुतं। "ओभावणा" अण्णस्स पुरओ खिसति, "अग्गहणं" साहूण अणायरं करेति। दुविहो वोच्छेदो – तद्दव्वण्णदव्वाणं; तस्स वा अण्णस्स वा साहुस्स ॥६७२॥

जे भिक्खू अप्पणो एक्कस्स अट्ठाए सूइं जाइत्ता-
अण्णमण्णस्स अणुप्पदेति, अणुप्पदेतं वा सातिज्जति वा ॥सू०॥३१॥

जे भिक्खू अप्पणो एक्कस्स अट्ठाए पिप्पलयं जाइत्ता-
अण्णमण्णस्स अणुप्पदेति, अणुप्पदेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३२॥

जे भिक्खू अप्पणो एक्कस्स अट्ठाए णहच्छेयणयं जाइत्ता-
अण्णमण्णस्स अणुप्पदेति, अणुप्पदेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३३॥

जे भिक्खू अप्पणो एक्कस्स अट्ठाए कण्णसोहणयं जाइत्ता-
अण्णमण्णस्स अणुप्पदेति, अणुप्पदेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३४॥

अहगं सिव्विस्सामीति, जाइउं सो य देति अण्णेसिं।
अण्णो वा सिव्विहिती, सो सिव्वणमप्पणा कुणति ॥६७३॥

अप्पणो अट्ठाए जाएउं अण्णस्स अलद्धियसाहुस्स देति। ताणि वा कुलाणि जस्स साहुस्स उवसमंति तस्स णामेण मग्गिउं अण्णो सिव्वेति ॥६७३॥

को दोसो? इमो –

तं दट्ठूण सयं वा, अहवा अण्णेसि अंतियं सोचा।
ओभावणमग्गहणं, कुज्जा दुविधं च वोच्छेदं ॥६७४॥

कंठा ॥६७४॥

जे भिक्खू सूतिं अविहीए पच्चप्पिणति, पच्चप्पिणंतं वा सातिज्जति॥सू०॥३५॥

सूयिं अविधीए तू, जे भिक्खू पाडिहारियं अप्पे।
तक्कज्जसंघणं वा, कुज्जा छक्कायघातं वा ॥६७५॥

जं ताए सूतीए कज्जं तं "तक्कज्जं," गहणप्पणेण वा छक्कायघायं करेज्जइ ॥६७५॥

इदाणिं[1] चउण्ह वि सुत्ताण विधी भण्णति –

तम्हट्ठा जाएज्जा, जं सिव्वे कस्स कारणा वा वि।
एगतरमुभयतो वा, अणुण्णवेउ तधा भिक्खू ॥६७६॥

"अट्ठाए जाएज्जा", जं वा वत्थादि सिव्वे तदट्ठाए जाएज्जा। जस्स साहुस्स कज्जं तण्णामेण जाएज्जा। अप्पणो परस्सुभयट्ठा वा जाएज्जा। जहा काउकामो तहा अविखउं जातियव्वं। एस परमत्थो ॥६७६॥

---

१ सूचि आदि की याचना अविधियाचना अन्यार्थ याचना और अविधिप्रत्यर्पण ए चारसूत्र।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अप्पणे विधी भण्णति –

गहणंमि गिण्हिऊणं, हत्थे उत्ताणगम्मि वा काउं ।
भूमीए व ठवेतुं, एस विही होती अप्पिणणे ॥६७७॥

गहणं पासओ तम्मि सयं गेण्हिऊण अग्गिएणं (अण्यग्रभागेन) गिहत्यस्स अप्पेति । एवं संजयपओगो ण भवति। उत्ताणगंम्मि वा हत्ये वितिरिच्छं अग्गिएण वा ठवेति। एवं भूमीए वि ठवेति ॥६७७॥

एतेसिं चउण्ह वि सुत्ताणं इमे बितियपदा –

लाभालाभपरिच्छा, दुल्लभ-अचियत्त-सहस अप्पिणणं ।
चउसु वि पदेसु एते, अवरपदा होंति णायव्वा ॥६७८॥

साहू खेत्तपडिलेहगा गता किं सूती मग्गिता लब्भति ण व त्ति अणट्ठाए मग्गेज्जा । पत्तसिवणट्ठाए दुल्लभाओ सूतीओ वत्थसिवणट्ठमवि [1]णीयाए पत्तं सिव्विज्जति, तं पुण जयणाए सिव्वेति जहा ण दीसति । कोइ सभावेण अचियत्तो साहू सो ण लब्भति, तस्स वा णामेण ण लब्भति, ताहे अप्पणो अट्ठाए जाइउं तस्स देज्जा "सहस" अणाभोएण वा अविहीए अप्पिणेज्जा ॥६७८॥

जे भिक्खू अविहीए पिप्पलगं पच्चप्पिणति,
पच्चप्पिणंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३६॥

जे भिक्खू अविहीए णहच्छेयणगं पच्चप्पिणइ,
पच्चप्पिणंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३७॥

जे भिक्खू अविहीए कण्णसोहणयं पच्चप्पिणइ,
पच्चप्पिणंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३८॥

पिप्पलग णहच्छेदण, सोधणए चेव होंति एवं तु ।
णवरं पुण णाणत्तं, परिभोगे होति णातव्वं ॥६७९॥

एवं पिप्पलग-णहच्छेदण-कण्णसोहणे य एक्केक्के चउरो सुत्ता । अत्थो पूर्ववत् ॥६७९॥

परिभोगविसेसो इमो –

वत्थं छिंदिस्सामि त्ति जाइउं पादछिंदणं कुणति ।
अहवा वि पादछिंदण, काहिंतो छिंदती वत्थं ॥६८०॥

[2]ताओ गाहाओ –

णक्खे छिंदिस्सामि त्ति, जाइउं कुणति सल्लमुद्धरणं ।
अहवा सल्लुद्धरणं, काहिंतो छिंदती णक्खे ॥६८१॥

---

[1] आनीतया सूच्या । २ सूचिसूत्रवत्, गाथा – ६७२, ६७३, ६७४, ६७५, ६७६, ६७७ ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पिप्पलग-णक्खच्छेयणाणं अप्पणे इमा विही –

मज्झेव गेण्हिऊण, हत्थे उत्ताणयम्मि वा काउं ।
भूमीए वा ठवेतुं, एस विधी होति अप्पिणणे ॥६८२॥

उभयतो धारणसंभवाओ मज्झे गिण्हिऊण अप्पेति । सेसं कंठं ॥६८२॥

कण्णं सोधिस्सामि त्ति जाइउं दंतसोधणं कुणति ।
अहवा वि दंतसोधण, काहेंतो सोहती कण्णे ॥६८३॥

[1]ताओ चेव गाहाओ –

लाभालाभपरिच्छा, दुल्लभ-अचियत्त-सहस-अप्पिणणे ।
[2]बारससु वि सुत्तेसु अ, अवरपदा होंति णायव्वा ॥६८४॥

कंठा ॥६८४॥

जे भिक्खू लाउय-पादं वा दारु-पादं वा मट्टिया-पादं वा अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा परिघट्टावेइ वा संठवेति वा जमावेइ वा अलमप्पणो करणयाए सुहुममवि नो कप्पइ जाणमाणे सरमाणे अण्णमण्णस्स वियरइ, वियरंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३९॥

दोद्धियकं तु बघटितं, मृन्मयं कपालकादि, परिघट्टणं [3]णिम्मोअणं, संठवणं मुहादीणं, जमावणं विसमाण समीकरणं । "अलं" पज्जत्तं सक्केति अप्पणो काउं ति वुत्तं भवति । "जाणइ" जहा ण वट्टति अण्णउत्थियगारत्थिएहिं कारावेउं जाणाति वा, सुत्तं सरति एस अम्ह उवएसो पच्छित्तं वा सरइ, "अण्णमण्णा" गिहत्थऽण्णउत्थिया, ताण "वितरति" प्रयच्छति कारयतीत्यर्थः ।

अहवा–गुरुः पृष्टः साधुभिर्यथागृहस्थान्यतीर्थिकैर्वा कारापयामः, ततः प्रयच्छते अनुज्ञां ददातीत्यर्थः ।

भणिओ सुत्तत्थो ।

इदाणिं णिज्जुत्तिवित्थरो भण्णति –

लाउयदारुयपाते, मट्टियपादे य तिविधमेक्केक्के ।
बहुयप्पअपरिकम्मे, एक्केक्कं तं भवे कमसो ॥६८५॥

एकैकं त्रिविधं – बहु-अप्प-अपरिकम्ममिति । पुनरप्येकैकं त्रिविधं जघन्यादि ।

अहवा – द्वितीयमेकैकवचनं निगमनवाक्यमाहुः ॥६८५॥

परिकम्मणमुक्कोसं, गुणेहि तु जहण्णतं पढमपातं ।
बितियं दोहि वि मज्झं, पढमेण विवज्जिओ ततिए ॥६८६॥

---

१ सूचि सूत्रवत् । २ याचना के चार, अविधि से याचना के चार, अन्यार्थ याचना के चार, और अविधि से प्रत्यर्पण के चार, एवं बारह । ३ निर्मापण ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पढमं बहुपरिकम्मं, तं गुणेहि जहण्णं, आत्मसंयमोपघातबहुत्वात् । अप्पपरिकम्मं बितियं, तं गुणेहि मज्झिमं, अल्पात्मसंयमोपघातत्वात् । अपरिकम्मं ततियं, तं गुणेहि उक्कोसं, जतो पढमस्स विवज्जए-वट्टति, आत्मनो संयमस्स चानुपघातित्वात् ॥६८६॥

बहुअप्पअहाकडाणं किं सरूवं ? इमं –

अद्धंगुला परेणं, छिज्जंतं होति सपरिकम्मं तु ।
अद्धंगुलमेगं तू , छिज्जंतं अप्पपरिकम्मं ॥६८७॥

अद्धंगुलापरेण छिज्जंतं बहुपरिकम्मं भवति । जाव अद्धंगुलं ताव अप्पपरिकम्मं ॥६८७॥

जं पुव्वकतमुहं वा, कतलेवं वा वि लब्भए पादं ।
तं होति अहाकडयं, तेसि पमाणं इमं होति ॥६८८॥

अहाकडं जं पुव्वकयमुहं, कयलेवं तं कुत्तियावणे लब्भति, णिण्हगो वा देति, पडिमापडिणियत्तो समणोवासगो वा देति, तं पादं दुविहं – पडिग्गहो मत्तओ वा ॥६८८॥

पडिग्गहो इमो –

तिण्णि विहत्थी चउरंगुलं च माणस्स मज्झिमपमाणं ।
एतो हीण जहण्णं, अतिरेगतरं तु उक्कोसं ॥६८९॥

कंठा ॥६८९॥

उक्कोस-तिसा-मासे, दुगाउ अद्धाणमागतो साधू ।
चउरंगुलं तु वज्जे, भत्तपाणपज्जत्तियं हेट्ठा ॥६९०॥

जेट्ठो आसाढो अ उक्कोस-तिसा-मासा भवंति । उवरि चउरंगुलं वज्जेत्तु हेट्ठा भायणं पज्जत्तियं भवति ॥६९०॥

एवं चेव पमाणं, सविसेसतरं अणुग्गहपवत्तं ।
कंतारे दुब्भिक्खे, रोहगमादीसु भइयव्वं ॥६९१॥

"सविसेसतर" बृहत्तरं गच्छानुग्रहाय प्रवर्तते उद्ग्राह्यते इत्यर्थः । "कंतार" मडवी, दुब्भिक्खे रोहगे वा अच्छंताण, "भजना" सेवना परिभोगमित्यर्थः ॥६९१॥

इदाणि मत्तओ –

भत्तस्स व पाणस्स व, एगतरागस्स जो भवे भरितो ।
पज्जो साहुस्स तु एतं किर मत्तअपमाणं ॥६९२॥

[जो मागहओ पत्थो, सविसेसतरं तु मत्तयपमाणं ।
दो सु वि दव्वगहणं, वासा-वासासु अहिगारो ॥

यद्वा –

सूवोदणस्स भरिउं, दुगाउ अद्धाणमागओ साहू ।
भुंजइ एगट्ठाणे, एवं किर मत्तगपमाणं ॥][1]

१ कोष्ठान्तर्गतं गाथाद्वयं पूनासत्कप्रतौ नोपलभ्यते ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कंठा ।।६६२।।

पडिग्गहो मत्तगो वा इमेहिं गुणेहिं जुत्तो –

वट्टं समचउरंसं, होति थिरं थावरं च वण्णं च ।
हुंडं वाताइद्धं, भिण्णं च अधारणिज्जाइं ।।६६३।

आगारेण "वट्टं" उच्छायपृथुत्वेन समं तमेव मिज्जमाणं "समचउरंसं" भण्णति । "थिरं" दृढं अविलियंति, अपाडिहारियं थावरं, वण्णं सलक्खणं धारिणिज्जमेयं । इमं अधारिणिज्जं – उच्छाय पृथुत्वेन असमं हुंडं; वाताइद्धं त्रोप्पडुयं अनिष्पन्नमित्यर्थः, भिण्णं च अधारणेज्जा एते ।।६६३।।

[1]सुत्तफासिया इमे –

परिघट्टण णिम्मोयण, तं पुण अंतो व होज्ज बाहिं वा ।
संठवणं मुहकरणं, जमणं विसमाण समकरणं ।।६६४।।

बाहिं अंतो वा मोयफेडणं परिघट्टणं, सेसं कंठं ।।६६४।।

पढम-बितियाण करणं, सुहुममवी जो तु कारए भिक्खू ।
गिहि-अण्णतित्थिएण व, सो पावति आणमादीणि ।।६६५।।

"पढमं" बहुपरिकम्मं, "बितियं" अप्पपरिकम्मं, सेसं कंठं ।।६६५।।

जम्हा एते दोसा, तम्हा –

घट्टित संठविते वा, पुव्वं जमिते य होति गहणं तु ।
असती पुव्वकतस्स तु, कप्पति ताहे सयंकरणं ।।६६६।।

बितियपदमणिउणे वा, णिउणे वा केणती भवे असहू ।
वाघातो व सहुस्सा, परकरणं कप्पती ताहे ।।६६७।।

पच्छाकड साभिग्गह, णिरभिग्गह भद्दए य असण्णी ।
गिहि अण्णतित्थिए वा, गिहि पुव्वं एतरे पच्छा ।।६६८।।

पूर्ववत् ।

जे भिक्खू दंडयं वा लट्ठियं वा अवलेहणियं वा वेणुसूइयं वा अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा परिघट्टावेति वा संठवेति वा जमावेति वा अलमप्पमणो करणयाए सुहुममवि नो कप्पइ जाणमाणे सरमाणे अण्णमण्णस्स वियरति, वियरंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।४०।।

"दंडो" बाहुप्पमाणो, "लट्ठी" आयप्पमाणा, "अवलेहणिया" वासासु कद्दमफेडिणी क्षुरिकावत्, "वेणू" वंसो, तम्मती सूती, परिघट्टणं अवलिहणं, संठवणं पासयादिकरणं, जमावेति उज्जगकरणं ।

[1] निज्जुत्ति ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इमं णिग्गताण भण्णति –

खर-फरुस-णिट्ठुराइं, अह सो भणितुं अभाणियव्वाइं ।
णिग्गमण कलुसहियए, सगणे अट्ठा परगणे य ।।२८१७।।

"खर-फरुस-निट्ठुराइं" ति अस्य व्याख्या –

उच्चसर-सरोसुत्तं, हिंसयं मम्मवयणं खरं तं तु ।
अक्कोस-निरुवयारुत्तमसब्भं णिट्ठुरं होति ।।२८१८।।

उच्चेण महंतेण सरेण जं सरोसं उक्तं तं खरं । जं पुण हिंसगं मम्मवट्टणं च तं फरुसं । जगारादियं अक्कोसवयणं । ककार-डकारादियं च णिरुवयारं । असभाजोग्गं असब्भं जहा कोलिकः । एरिसं णिट्ठुरं होइ । एरिसाणि अभाणियव्वाणि ।।२८१८।। भणिओ कालुसहियओ, णिग्गतो सगच्छातो सो ।

सगणे अट्ठ फड्डया, परगणियव्वया वि अट्ठफड्डया । जे परगणियव्वा ते संभोइया अट्ठ, असंभोइएसु वि अट्ठ, जे अण्णसंभोतिया ते उज्जयचरणा ओसण्णा । सो एतेसु गतो –

अद्धट्ठ अट्ठमासा, मासा दो होंति अट्ठसु पयारो ।
वासासु असंचरणं, न चेव इयरे वि पेसंति ।।२८१९।।

सगणिच्चएसु अट्ठफड्डएसु पक्खे पक्खे संचरंतस्स अद्धट्ठं मासा भवंति, परगणच्चिएसु फड्डएसु अद्धट्ठ मासा, एते सव्वे वि अट्ठमासा । अट्ठसु उडुबद्धिएसु मासेसु भिक्खूणं विहारो भवति तेण अट्ठगहणं कयं । वासासु चउसु मासेसु तस्स अधिकरणपाहुस्स संचरणं णत्थि, – वासाकालो त्ति काउं । "इअरे वि" त्ति-जम्मि फड्डए सो संकमति तेवि तं पण्णवेत्ता वर्षाकाल-इति कृत्वा न प्रेषयंति । जतो आगतो तत्थ जे तस्स गणे अट्ठफड्डगा तेसु संकमंतस्स तेहिं असज्झाय-भिक्ख-भत्तट्ठणापडिक्कमणवेलासु सो सारेतव्वो, उवसमति त्ति । जति ण सारेति तो मासगुरुं पच्छित्तं, तस्स पुण अणुवसमंतस्स दिवसे दिवसे पंच रातिंदिया छेदो भवति ।।२८१९।।

सगणम्मि पंचराइंदियाइं दस परगणे मणुण्णेसु ।
अण्णेसु होंति पण्णर-वीसा तु गयस्स ओसण्णे ।।२८२०।।

परगणे संभोतिएसु संकंतस्स दसराइंदिओ छेदो, अण्णसंभोतिएसु पण्णरसराइंदिओ छेदो । ओसण्णेसु वीसराइंदिओ छेदो । एवं भिक्खुस्स भणियं ।।२८२०।।

इमं उवज्झायरियाणं –

एमेव उवज्झाए, दसदिवसादी तु भिण्णमासंतो ।
पण्णरसादी उ गणी, चउसु वि ठाणेसु मासंते ।।२८२१।।

एवं उवज्झायस्स वि, णवरं – दसराइंदिओ छेदो आदि, भिण्णमासो छेदो अंते । गुरुस्स आय-रियस्स तस्स चउसु ठाणेसु सगण-परगण-संभोइय परगण-अण्णसंभोतिय ओसण्णेसु य पण्णरसरातिंदिओ छेदो-आदी, मासिओ छेदो अंते ।।२८२१।।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

(आकुतिरिदृक्)

सगणे	परगणसंभोइए	परगण अण्णसंभोइए	ओसण्णे
भि० ५	१०	१५	२०
उ० १०	१५	२०	२५
आ० १५	२०	२५	३०

एयं पुरिसेण सगणादिट्ठाण विभागपच्छित्तं दंसियं ।

इदाणिं एवं चेव ठाणेसु पुरिसविभागठाणं पच्छित्तं दंसिज्जति –

सगणम्मि पंचराइंदियाइं भिक्खुस्स तद्दिवसछेदो ।
ूस होंति उवज्झाए, गणि आयरिए य पण्णरस ॥२८२२॥

सगणे संकंतस्स भिक्खस्स पंचराइंदिओ छेदो, उवज्झायस्स दस. आयरियस्स पण्णरस रातिंदिया छेदो ॥२८२२॥

अण्णगणे भिक्खुस्स, दस तु रातिंदिया भवे छेदो ।
पण्णरस उवज्झाए, गणि आयरिए भवे वीसा ॥२८२३॥

संविग्गमण्णसंभोइएहिं भिक्खुस्स पण्णरसछेदो ।
वीसा य उवज्झाए, गणि आयरिए य पणवीसा ॥२८२४॥

एवं एक्केक्कदिणं, हवेत्तु ठवणादिणे वि एमेव ।
चेइयवंदणसारिते, तम्मि वि काले तिमासगुरू ॥२८२५॥

पासत्थादिगयस्सा, वीसं राइंदियाए भिक्खुस्स ।
पणवीस उवज्झाए, गणि आयरिए भवे मासो ॥२८२६॥

गणस्य गणे वा आचार्यः ।

अहवा – गणित्वमाचार्यत्वं च यस्याऽसौ गणि आयरिओ ॥२८२६॥

इदाणिं सगणादि ठाणे भिक्खुमादिपुरिसपक्खविभागेण य छेदसंकलणा भण्णति –

अड्ढाइज्जा मासा, पक्खे अट्ठहिं मासा हवंति वीसं तु ।
पंच उ मासा पक्खे, अट्ठहि चत्ता उ भिक्खुस्स ॥२८२७॥

अधिकरणं काउं अणुवसंतो भिक्खु सगणं संकंतो तस्स पक्खेणं दिणे दिणे पंचरातिंदिएण छेदणे अड्ढाइज्जमासा परियागस्स छिज्जंति, पन्नरसएण पंचगुणिउं, तीसाए भागे हिते अड्ढाइज्जा मासा हवंति । अट्ठ सगणफड्डया । तेसु तस्सेव पणगच्छेदणं वीसं मासा छिज्जंति, पण्णरस अट्ठहिं गुणितो पुणो पंचहिं गुणिता तीसाए भागे हिते वीसं मासा भवंति ।

परगणसंभोइएसु संकंते पक्खेण (दसएण) छेदेण पंचमासा छिज्जंति । तस्सेव (दसएण) चेव छेदेण परगणे अट्ठहि पक्खेहि चत्तालीसं मासा छिज्जंति । एवं भिक्खुस्स ॥२८२७॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उवज्झायस्स सगणे –

पंच उ मासा पक्खे, अट्ठहि मासा भवंति चत्ता उ ।
अद्धट्ठमासपक्खे, अट्ठहि सट्ठी भवे गणिणो ॥२८२८॥

पुव्वद्धं पूर्ववत् । उवज्झायस्स परगणे पण्णरसेण छेदेण पक्खेण अद्धट्ठमासा छिज्जंति पंचदसहिं गुणिता पंचदसा पंचवीसुत्तरा दोसया भवंति, ते तीसाए भागे हिते अद्धट्ठ मासा भवंति ।

उवज्झायस्स परगणे अट्ठसु फड्डएसु अट्ठहिं पक्खेहिं पण्णरसेण छेदेण सट्ठि मासा छिज्जंति, पण्णरस पण्णरसेहिं गुणिता पुणो अट्ठहिं गुणिता तीसाए भागे हिते सट्ठी भवंति। एवं गणिणो उपाध्यायस्येत्यर्थः ॥२८२८॥

इदाणिं आयरियस्स सगणे –

अद्धट्ठमास पक्खे, अट्ठहि मासा हवंति सट्ठीओ ।
दसमासा पक्खेणं, अट्ठहऽसीती उ आयरिए ॥२८२९॥

पूर्ववत् पुव्वद्धं । आयरियस्स परगणे संकंतस्स पक्खेण वीसएण छेदेण दसमासा छिज्जंति, पण्णरस वीसहिं गुणिता तीसाए भागे हिते दसमासा भवंति । परगणट्ठ फड्डगेसु अट्ठसु आयरियस्स अट्ठपक्खेहि वीसएण छेदेण असीति मासा छिज्जंति । पण्णरस अट्ठहि गुणिता पुणो वीसहि गुणिता तीसाए भागे हिते असीति मासा भवंति ॥२८२९॥

इदाणिं – एतेसिं चेव भिक्खु-उवज्झायायरियाणं संविग्ग-अण्णसंभोतिएसु ओसण्णेसु य संकलिय-छेदो भणति ।

तत्थ भिक्खुस्स अण्णसंभोतियओसण्णेसु –

अद्धट्ठमास पक्खे, अट्ठहि मासा भवंति सट्ठीओ ।
दसमासा पक्खेणं, अट्ठहऽसीती य भिक्खुस्स ॥२८३०॥

गुणगार-भागहारेहिं मासुप्पादणं पूर्ववत् ॥२८३०॥

उवज्झायस्स अण्णसंभोइएसु –

दसमासा पक्खेणं, असि अट्ठहि य हवंति णायव्वा ।
अद्धत्तेरसपक्खे, अट्ठहि य सयं भवे गणिणो ॥२८३१॥

पुव्वद्धं पूर्ववत् । उवज्झायस्स ओसण्णेसु संकंतस्स पक्खेण पणवीसएण छेदेण अद्धतेरसमासा छिज्जंति, पण्णरस पणुवीसाए गुणिता तीसाए भागे हिते अद्धतेरसमासा भवंति । तस्सेव अट्ठसु ओसण्णेसु फड्डएसु अट्ठहिं पक्खेहिं पणुवीसएण छेदेण सतं मासाणं छिज्जति, पण्णरस अट्ठहिं गुणिया पुणो पणुवीसगुणिता तीसाए भागे हिते सयं मासाणं भवति ॥२८३१॥

आयरियस्स अण्णसंभोतिएसु संकंतस्स –

अद्धं तेरस पक्खे, मासाण सयं च अट्ठहिं भवति ।
पण्णरस-मास-पक्खे, अट्ठहि वीसुत्तरं गणिणो ॥२८३२॥

पूर्वार्धं पूर्ववत् । आयरियस्स ओसण्णेसु पक्खेण तीसेण छेदेण पण्णरस मासा छिज्जंति । आयरियस्स ओसण्णफड्डएसु तीसेण छेदेण अट्ठहिं पक्खेहिं वीसुत्तरं माससयं छिज्जति, गुणगार-भागाहारा पूर्ववत् ॥२८३२॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

चोएति रागदोसे, सगण-परगणे इमं तु णाणत्तं।
पंतावण णिच्छुभणं, परकुल घरघाडिए ण गता ॥२८३३॥

सीसो चोदेति – "रागदोसी भवति, जं सगणे थोवं-पच्छित्तं देह परगणादिसु बहुयं, एस सगणे भे रागो, परगणे भे दोसो"।

आयरिश्रो भणति–इमं तु छेदणाणत्तं करेंता दिट्ठंतसामत्थेण ण रागदोसी भवामो सुण, जहा– एगस्स गिहिणो चउरो भज्जाश्रो। ताश्रो य तेण कम्हि एगे अवराहे कते पंतावेत्ता "णीह ममं गिहाश्रो" त्ति णिच्छूढा।

तत्थेगा कम्हि यि परघरम्मि गया।

बितिया कुलघरं।

ततिया भत्तुणो – एगसरीरो, घाडिउ त्ति वयंसो, तस्स घरं गता।

चउत्था णिच्छुभंती वि बारसाहाए लग्गा हम्ममाणी वि ण गच्छति, भणति य– "कतो णं वच्चामि, णत्थि मे अण्णो गतिविसश्रो, जति वि मारेहि तहावि तुमं चेव गतीसरणं ति" तत्थेव ठिता।

तुट्ठेण चउत्थी घरसामिणी कता।

ततियाए घाडियघरं जंतीए सो चेव श्रणुवत्तिश्रो विगयरोसेण खरंटिया श्राणिया य।

बितियाए कुलघरं जंतीए "अवतावेइ" त्ति श्रण्णेहिं भणिएण विगयरोसेण खरंटिया दंडिया य।

पढमा दूरणट्ठ त्ति ण ताए किं चि पश्रोश्रणं, महंतेण वा पच्छित्तं दंडेउं श्राणिज्जति।

एवं उवसंहारो – परघरसंठाणिया श्रोसण्णा, कुलघरसंठाणिया असंभोइश्रा, घाडियसमा संभोइया, श्रणिग्गमे घरसमो सगच्छो। जाव दूरतरं ताव महंततरो दंडो भवति इत्यर्थः ॥२८३३॥ भणियं सपक्खाधिकरणं।

इदाणि परपक्खाधिकरणं भण्णति। तस्स पुण उप्पत्ती कहं हवेज्ज ? श्रतो भण्णति –

अचियत्त-कुलपवेसे, अइभूमि अणेसणिज्ज-पडिसेहे।
अवहारऽमंगलुत्तरस भावअचित्तमिच्छत्ते ॥२८३४॥

कम्मि य कुले साहू पविसंता अचियत्ता, तं च अजाणंता अणाभोगश्रो वा पविट्ठा, तत्थ सो गिहवती श्राउसेज्ज वा हणेज्ज वा। साधू त्ति असहंतो पच्चाउसे, अतो अधिकरणं उप्पज्जति। एवं अतिभूमि-पविट्ठे। भिक्खा वा अणेसणिज्जा पडिसिद्धा, सेहो वा से सण्णाततो अवहडो, जत्ताणिग्गतो वा गिहत्थो साहुं दट्ठु "अमंगलं" ति भण्णति, समयविचारे वा गिही उत्तरदाउमसमत्थो, सहावेण वा कोति साधू अचियत्तो तं दट्ठुं, अभिग्गहीयमिच्छद्दिट्ठी वा ॥२८३४॥

अहिगरण गिहत्थेहिं, ओसरणं कड्ढणा य आगमणं।
आलोयण पेसवणं, अपेसणे होंति चउलहुगा ॥२८३५॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

एवमादिएहिं कारणेहि गिहत्थेण समाणमधिकरणमुप्पज्जति । अधिकरणं करेंतो साधू बितियसाहुणा ओसारेयव्वो, अणोसरंतो बाहाए गहाय कड्ढियव्वो । "आगमणं" ततो च्चिय सन्नियट्टंति, आलोएति य गुरुणो "अधिकरणं कतं" ति, ताहे गुरू वि उवसमणट्ठा तत्थ वसभे पट्ठवेति, जति ण पेसवेति तो गुरुणो चउलहुं पच्छित्तं ।।२८३५।।

आगाइणो य दोसा, विराहणा होति संजमाताए ।
वुग्गाहण सत्थेणं, वारण अगणी विसं उवधी ।।२८३६।।

सो गिही अणुवसमंतो संजमायविराहणं करेज्ज । जति पभू तो उण्णिक्खमावेज्ज, अप्पभू वा पभुणा उण्णिक्खमावेज्ज, एवमादि-संजमविराधणा । कसादिणा घाएज्ज एवमादि आयविराधणा भवेज्ज । गिहत्थो अणुवसमंतो लोगं वुग्गाहेज्ज – णत्थि एतेसिं धम्मो ।

अहवा भणेज्ज – सण्णं वोसिरित्ता एते विक्खिरंति, ण णिल्लेवेंति वा, एसा पवयणविराधणा । खग्गादिणा वा सत्थेण हणेज्ज, भिक्खं वा वारेति, अगणिणा वा उवहिं उवस्सयं वा दहेज्ज, विसगरादि वा देज्ज, उवहिं वा हरावेज्ज ।।२८३६।। एसा संजमायविराहणा दट्ठव्वा ।

तं पुण वारणं इमेसु ठाणेसु करेज्ज –

रज्जे देसे गामे, णिवेसणगिहे य वारणं कुणति ।
जा तेण विणा हाणी, कुल-गण-संघे य पत्थारो ।।२८३७।।

भत्तोवकरणवसहिमादिणा वारिते तेण विणा जा परिहाणी पीडा वा साहूणं तं गुरू वसभे अपेसवेंतो पावति ।

अहवा – पभवेंतो सव्वं चेव कुल-गण-संघं पत्थारेज्ज – विस्तरेण विनाशं कुर्यादित्यर्थः ।।२८३७।।

एयस्स णत्थि दोसो, अपरिक्खगदिक्खगस्स अह दोसो ।
पभु कुज्जा पत्थारं, अपभू वा कारवे पभुणा ।।२८३८।।

गिही चिंतेति एयस्स साहुस्स णत्थि दोसो, जो एयं अणुवसंतं अपरिच्छिउं दिक्खेति तस्स दोसो, तं चेव घायेति । पभू एवं सयमेव पत्थारं करेति, अपभू वा रायवल्लभो अवल्लभो वा अत्थपदाणेण पभुणा कारवेति ।।२८३८।।

जम्हा एते दोसा –

तम्हा खलु पट्ठवणं, पुव्वं वसभा समं च वसभेहिं ।
अणुलोमण पेच्छामो, त्ति णेंति अणिच्छमाणो वि वसभेहिं ।।२८३९।।

गिहिउवसमणट्ठा पुव्विं आयरिओ वसभे पट्ठवेति, ण तं अधिकरणं करेंति, वसभेहिं वा समं सयमेव आयरितो गच्छति, गया अणुलोमवयणेहिं, "अणुलोमणं" त्ति प्रगुणीकरणमित्यर्थः ।

अह सो गिही अणुणिज्जंतो भणेज्ज – "तं ता कलहयितं आणेह, पेच्छामो, पच्छा खमीहामि वा ।" ताहे वसभा तं तस्स अभिप्पायं णाऊण समीवं णेंति ।

अह सो साधू अणिच्छो ताहे वसहेहिं अणिच्छमाणो वि बला णेयव्वो ।।२८३९।।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ते पुण इमेरिसगुणजुत्ता वसभा पुव्विं पट्ठविज्जंति ।

तस्संबंधि सुही वा, पगया ओयस्सिणो गहियवक्का ।
तस्सेव सुही सहिया, गमेंति थेरा तगं पुव्वं ॥२८४०॥

"तस्स" त्ति-गिहिणो जे सयण, मित्ता वा, लोगे वा पगता प्रख्याता, "उय" त्ति तेयस्सिणो खीरासवादि-लद्धिसंपण्णा, मिष्टवाक्या सव्ववहारप्रयोगवशा भणंता गिहियवक्का भवंति, एरिसा वसभा तस्स गिहिणो जे अण्णे गिहीसंबंधे सुहिणो वा तेहिं सहिया गमेंति, पूर्वमिति प्रथमं, पश्चात् साधुं नयिष्यंति, थिरसभा वा थेरा, परिणयवया वा थेरा ॥२८४०॥

तस्सग्गतो इमेरिसं भणंति –

सो णिच्छुभति साधू, आयरिए तं च जुज्जसि गमेतुं ।
नाऊण वत्थुभावं, तस्स जति णंति गिहिसहिता ॥२८४१॥

जेण साहुणा तुमे समं कलहितं सो साधू आयरिएण घाडिज्जति, अम्हं आयरिया ण सुट्ठु सुणेंति, तव च आयरियं जुज्जति गमेउं, जइ आयरियं गमेति खमति य तो लट्ठं ।

"[1]पेच्छामो" त्ति अस्य व्याख्या – 'णाउण वत्थु" पच्छद्धं, कूराकूरं गिहिवत्थुभावं । केण वाऽभिप्पाएण भणति – "आणेहि" त्ति किं हंतुकामो खमेउकामो वा ? एवं णाऊण तस्स जइ णेंति तो जे संबंधी सुही वा गिही तेहिं सहिता तं साहू णेंति ॥२८४१॥

अह सो गिही तिव्वकसाओ उवसामिज्जंतो वि ण उवसमति तो तस्स साहुस्स गच्छस्स य संरक्खणट्ठा इमा विधी –

वीसुं उवस्सते वा, ठवेंति पेसिंति फड्डपतिणो वा ।
देंति सहाते सव्वे, व णिंति गिहिते अणुवसंते ॥२८४२॥

वीसुं पृथक् अण्णम्मि उवस्सयम्मि एत साहुं ठवेति, अण्णगामे वा जे फड्डया तेसु जे आयरिया तं ताण पट्ठवेंति, णितस्स य सहाए देंति, अह मासकप्पो पुण्णो तो सव्वे णिंति, एवं गृहस्थे अनुपशान्ते निर्गच्छन्तीत्यर्थः ॥२८४२॥

अह सो गिही उवसामिज्जंतो उवसमति, साहू णोवसमति तो से भिक्खादिकिरियादिसु इमं पच्छित्तं –

अविओसियम्मि लहुगा, भिक्खवियारे य वसहि गामे य ।
गणसंकमणे भणंते, इहं पि तत्थेव वचाहि ॥२८४३॥

जति अणुवसंतो साहू भिक्खं हिंडति, वियार-विहारभूमिं वा गच्छति, वसहीउप्पायणट्ठा वा गामं पविसति, वसहीओ वा अण्णसाधु-वसहिं गच्छति, तो सव्वेसु चउलहुगा पच्छित्तं ।

अतितिव्वकसायाभिभूतो अण्णं गणं संकंतो तं अण्णगणिच्चया भणंति – "इहं पि गिहीअसहणा अत्थि तुमं पि असहणो, मा तेहिं समाणं अधिकरणं काहिति, तत्थेव वच्चाहि" ॥२८४३॥

---

१ गा० २८३९ ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इह वि गिही अविसहणा, ण य वोच्छिण्णा इहं तुह कसाया ।
अण्णेसिं पायासं, जणइस्ससि वच्च तत्थेव ।।२८४४।। गतार्थाः

सिट्ठम्मि ण संगिज्झइ, संकंतम्मि उ अपेसणे लहुया ।
गरुगा अजयण-कहणे, एगतरपदोसतो जं च ।।२८४५।।

अणुवसंते हि साहुम्मि अण्णं गणं संकंते मूलायरिएण साहुसंघाडगो पट्ठवेयव्वो । तत्थ सो गतो तेण संघाडएण सिट्ठे कहिते सो तेहिं ण संगहियव्वो ।

अह पुण मूलायरिओ तेसिं साहुसंघाडयं ण पट्ठवेति तो चउलहुं, सो साहुसंघाडगो बहुजणमज्झे "एस णिद्धम्मो गिहीहिं समाणं अधिकरणं काउमागओ" एवं अजयणकहणे चउगुरुगा पच्छित्तं । अजयणाते कहिते सो साधू एगतरस्स पदुट्ठो जं कहिति तं ते अजयणाकही पावेंति । "एगतरो" त्ति साहुसंघाडगो गिही य ।

अहवा – साहुसंघाडगो मूलायरिओ य ।

अधवा – मूलायरिओ जस्स समीवं संकंतो य ।।२८४५।।

तम्हा अजयणं वज्जेउं इमा विधी –

उवसामितो गिहत्थो, तुमं पि खामेहि एहि वच्चामो ।
दोसा हु अणुवसंते, ण सुज्झए तुज्झ सामयियं ।।२८४६।।

पुव्वं गुरुणो एगंते कहेउं पच्छा सो साधू एगंते भण्णति – "उवसामितो सो गिहत्थो, एहि वच्चामो, तुमं पि तं खामेह, अणुवसमंतस्स इहलोगपरलोगे य बहु दोसा । समभावो-सामायियं, तं सकसायस्स णो विसुज्झेज्जा" । एवं एगंते भणितो जति णोवसमति तो एवं चेव गणमज्झे भण्णति, एवं भणिए कोति गच्छति, कोति ण गच्छति ।।२८४ ।।

तिव्वकसायपरिणतो य भण्णति – "तस्स गिहिणो णिमित्तेणं इहं पि ठाणं ण लभामि –

तमतिमिरपडलभूओ, पावं चिंतेइ दीहसंसारी ।
पावं ववसितुकामो, पच्छित्ते मग्गणा होति ।।२८४७।।

कण्हचउद्दसीए राओ भासुरदव्वाभावो तमं भण्णति, तम्मि चेव रातो जदा रयरेणुधूमधूमिगा भवति तदा तमतिमिरं भण्णति, जदा पुण ताए चेव रातीए रयायिया मेहदुद्दिणं च भवति तदा तमतिमिर-पडलं भण्णति – सुट्ठुं अंधकारं ण तत्थ पुरिसो किंचि पासति । एवं पुरिसो कसाय-उदएण तिव्वतिव्वतर-तिव्वतमेण तमतिमिरपडलभूतो भण्णति । भूतशब्दः द्रव्यान्धकारसादृश्योपम्यार्थे द्रष्टव्यः ।

अहवा – तम एवं तिमिरं – तमतिमिरं तमतिमिरमेव पडलं – तमतिमिरपडलं, अंधकार-विशेषमित्यर्थः, तेण उवमा कज्जति तेण तमतिमिरपडलभूतो । इहापि भूतशब्दः उपमार्थे । यथा अन्धकारेण ण किंचिदुपलभ्यते एवं तीव्रकषायोदयान्न चारित्रगुणः कश्चिदुपलभ्यते ।

अहवा – पित्तुदयविकारेण य दव्वचक्खिदियस्स सबलीकरणं तिमिरं भण्णति । दव्विंदियसबलभावे य दंसणावरणकम्मोदओ भवति । सिंभुदयविकारेण य दव्वचक्खिदियस्संतरणं पडलं भण्णति, तब्भावे य चक्खु-

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

दंसणावरणोदग्रो । एवं तिमिरपडलेहिं पुरिसस्स तमो भवति – न किंचित् पश्यतीत्यर्थः । तेण उवमा जस्स कज्जति सो भण्णति तमतिमिरपडलभूतो । इहावि भूतशब्दो उपमार्थे, यथाऽसौ पुमान् दर्शनावरणोदयान्न किंचित् पश्यति । एवं चारित्रावरणकषायोदयादिह परलोके हितं न किंचित् पश्यति । ऐश्वर्याज्जीविताद्वा भ्रंसनं पापं तं तस्स गिहत्थस्स चिंतेति । तम्मि पाप-ववसिते पच्छित्ते इमा मग्गणा भण्णति ॥२८४७॥

वच्चामि वच्चमाणे, चतुरो लहुगा य होंति गुरुगा य ।
(पंथे) पहरण मग्गण लद्धे गहणम्मि य छल्लहू गुरुगा ॥२८४८॥

वच्चामि तं गिहत्थं पंतावेमि त्ति संकप्पकरणे चउलहुग्रा, पदभेदातिपंथे वच्चंतस्स चउगुरुगा, पहरणमग्गणे छल्लहुगा, पहरणे लद्धे गहिते य छग्गुरुगा ॥२८४८॥

उग्गिण्णदिण्ण असाये, छेदो तिसु वेगसारणे मूलं ।
दोसु य अणवट्ठप्पो, तप्पभितिं होति पारंची ॥२८४९॥

उग्गिण्णे छेदो, पहरिते मूलं । अण्णे भणंति – उग्गिण्णे पहरिते य अमते छेदो, मते मूलं । "जं जत्थ" त्ति परितावणादियं च जं जत्थ संभवति तं वत्तव्वं ॥२८४९॥

ग्रहवा – तं संजयं गिहत्थवहाए आगतं सो चेव गिहत्थो ।

तं चेव निट्ठवेती, बंधण णिच्छुभण कडगमद्दो वा ।
आयरिए गच्छम्मि य, कुलगणसंघे य पत्थारो ॥२८५०॥

तं संजयं णिट्ठवेति व्यापादयति बंधति वा, वसहि-णिवेसण-गाम-णगर-देस-रज्जातो वा णिच्छुभति धाडयतीत्यर्थः, जंतेण वा पीलति ।

ग्रहवा – कडगमद्दो एगस्स रुट्ठो सव्वं चेव गच्छं व्यापादयति । जहा खंदगगच्छो पालएण ।

ग्रहवा – आयरियाण बंधण-णिच्छुभण-कडगमद्दं करेति, एवं कुलसमवायं दातुं कुलस्स करेति । एवं गणस्स संघस्स एस पत्थारो । ग्रह एगं ग्रणेगे वा गामे णगरे पंथे वा जं जत्थ पासति तं तत्थेव व्यापादयति । एस पत्थारो भण्णति ॥२८५०॥ एवं एगागिणो वच्चंतस्स आरोवणा दोसा य भणिया ।

इदाणि सहायसहियस्स आरोवणा भण्णति –

संजयगणे गिहिगणे, गामे णगरे य देस रज्जे य ।
अहिवति रायकुलम्मि य, जा अहिं आरोवणा भणिता ॥२८५१॥

बहू संजते मेलेत्ता तं संजयगणं सहायं गेण्हति । एवं गिहिगणं । तं पुण गामं णगरं देसं रज्जं, अहिपति त्ति ग्रह एतेसिं चेव ग्रधिवा सहाया, ते गेण्हंति । अण्णं वा किंचि रायकुलं सहायं गेण्हति, जहा-सगा कालगऽज्जेण । एगागिणो जा संकप्पादिगा आरोवणा भणिता इहावि सच्चेव दट्ठव्वा ॥२८५१॥

संजयगुरू तदहिवो, गिही तु गाम पुर देस रज्जे वा ।
एएसिं चिय अहवा, एगतरजुत्रो उभयग्रो वा ॥२८५२॥

संजयाणं जो गुरू सो तदधिवो भण्णति ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अहवा – संजताण अधिवो गुरू । गिहीण तदधिवो गिहत्थो भवति । तुशब्दो विकल्पे, पासंडी चेत्यर्थः। गाम-पुर-देस-रज्जाण जे अधिवा भण्णंति – गामस्स गामउडो व्यापृतक इत्यर्थः। पुरस्स सेट्ठी कोट्टवालो वा, देसस्स देसकुट्टो वा, देसव्यापृतको वा, रज्जस्स महामंत्री, राजा वा, एतेसिं एगतरेण उभएण वा संजुत्तो गच्छति ॥२८५२॥

"[1]जा जहिं आरोवणा भणिता" अस्य व्याख्या – संजयगणेण तदधिवेण वा सहितो वच्चामि त्ति संकप्पे चउलहुं।

तहिं वच्चंते गुरुगा, दोसु उ छल्लहुग गहणे छग्गुरुगा ।
उग्गिण्ण पहरण, छेदो मूलं जत्थ वा पंथे ॥२८५३॥

एगतरोभएण वा संजते पदभेदातिपंथे वच्चंतस्स चउगुरुं, पहरण-मग्गणदिट्ठे य दोसु पदेसु छल्लहुं, गहिए छग्गुरु, उग्गिण्णपहरिएसु दोसु पदेसु जहासंखं छेदो मूलं च, परितोवणादियं पंथे वा पुढवादियं सव्वं दट्ठव्वं । गिहत्थादिएहिं एगतरोभयसहितो गच्छामि त्ति संकप्पेति चउगुरुं, पदभेदादिपंथे पहरणमग्गणे य दोसु वि पदेसु छल्लहुं । शेषं पूर्ववत् । एवं भिक्खुस्स भणियं ॥२८५३॥

एसेव गमो नियमा, गणि आयरिए य होइ णायव्वो ।
नवरं पुण णाणत्तं, अणवट्ठप्पो य पारंची ॥२८५४॥

उवज्झाए आयरिए य एसेव विधी । णवरं – हेट्ठा पदं हुसति उवरिं अणवट्ठ-पारंचिया भवंति ।

अहवा – तवारिहा सारिसा चेव, उवज्झायस्स मूलठाणे अणवट्ठो, आयरियस्स पारंचियं ॥२८५४॥

तवारिहाण इमो विसेसो –

भिक्खुस्स दोहि लहुगा, गणवच्छे गुरुग एगमेगेणं ।
उवज्झाए आयरिए, दोहिं गुरुगं तु णाणत्तं ॥२८५५॥

भिक्खुस्स दोहि वि लहुगा । आयरिये संते उवज्झाओ गणवच्छो वि भण्णति, तस्स तवारिहा अण्णतरेण तवेण वा कालेण वा गुरू आदिज्जंति ।

अण्णे भणंति – तवगुरु चेव । कालगते आयरिए उवज्झाओ जाव अणभिसित्तो आयरियपदं अणुसीलंतो एवं उवज्झाओ आयरिओ भण्णति, आयरियस्स तवारिहा दोहि वि गुरुगा, एवं "णाणत्तं" विसेसो ॥२८५५॥

काऊण अकाऊण व, उवसंत उवट्ठियस्स पच्छित्तं ।
सुत्तेण उ पट्ठवणा, असुते रागो य दोसो वा ॥२८५६॥

गिहत्थस्स अवकारं काउं अकाउं वा जतो उवसंतो गुरुस्स आलोयण-विहाणेण अपुणकरणेण उवट्ठियस्स तस्स पच्छित्तं सुत्तेण पट्ठविजति त्ति, पट्ठाविजति – तस्याग्रतो निगद्यते "इदं ते प्रायश्चित्तमिति"। असुत्तोवदेसेणं पुण पायच्छित्तं अप्पं देंतस्स रागो, बहुं देंतस्स दोसो ॥२८५६॥

थोवं जति आवण्णो, अतिरेगं देति तस्स तं होति ।
सुत्तेण उ पट्ठवणा, सुत्तमणिच्छंते णिज्जुहणा ॥२८५७॥

---

१ गा० २८५१।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जति थोवं आवण्णो तत्थ जति आयरिओ तस्स अतिरेगं देति, ऊणं वा, तो जत्तिएण अहियमूणं वा देति, तमायरियस्स पच्छित्तं भवति। तम्हा सुत्तेण पट्ठवणा। जो पुण सुत्तं णेच्छति सुत्तत्थाभिहियं वा पच्छित्तं णेच्छति, तस्स णिज्जूहणा विसंभोग इत्यर्थः ॥२८५७॥

जेणऽहियं ऊणं वा, ददाति तावतियमप्पणो पावे।
अहवण सुत्तादेसे, पावति चउरो अणुग्घाया ॥२८५८॥

पूर्वार्धं गतार्थम्।

अहवा – आयरिओ ऊणातिरित्तं देंतो सुत्तादेसेण चउगुरुं पावति।

तं च इमं सुत्तं –

"[1]जे भिक्खू उग्घातियं अणुग्घातियं वदति
अणुग्घातियं उग्घातियं वदति
उग्घातियं अणुग्घातियं देइ
अणुग्घातियं उग्घातियं देइ"

तस्स चउगुरु पच्छितं भवतीत्यर्थः ॥२८५८॥

बितियं उप्पाएतुं, सासणपंते असज्झ पंचपदा।
आगाढे कारणम्मी, राया संसारिए जयणा ॥२८५९॥

कोइ पडिणीओ गिहत्थो, तस्स सासणहेतुं, तेण समाणमधिकरणमुप्पादेउं सो सासिज्जति। अप्पणा असमत्थो आगाढे कारणे (संजय-गामं) गामं णगरं देसं रज्जं एतेहिं पंचहिं पदेहिं सहितो सासेति, असमत्थो असहाओ वा रायसंसारियं कुज्जा, अणुसट्ठी धम्मकहा-विज्जा-णिमित्तादिएहिं जइउं। एसा जयणा।

अहवा – पुव्वं गामभोइयस्स, पच्छा तस्सामिणो, एवं उत्तरुत्तरं, पच्छा जाव राया संसारियं कुज्जा। एसा वा जयणा–रायाणे पुण पंते तं रायाणं फेडिउं तव्वंसजं अण्णवंसजं वा भद्दयं ठवेति ॥२८५९॥

जो इमेहिं गुणेहिं जुत्तो फेडेति तस्स –

विज्जा-ओरस्सबली, तेयसलद्धी सहायलद्धी वा।
उप्पाएतु सासति, अतिपंतं कालगऽज्जो वा ॥२८६०॥

जो विज्जाबलेण जुत्तो जहा-अज्ज खउडो।

उरस्सजेण वा बाहुबलेण जुत्तो जहा-बाहुबली।

तेयलद्धीए वा सलद्धी जहा-बंभदत्तो पुव्वभवे संभूतो।

सहायलद्धीए वा जहा-हरिएसबलो।

एरिसो अधिकरणं उप्पाएउं अतिपंतं सासेति। जहा-कालगऽज्जेण गद्दभिल्लो सासिओ।

को उ गद्दभिल्लो? को वा कालगऽज्जो? कम्मि वा कज्जे सासितो?

---

१ अग्रे वर्तमानानीमानि चत्वार्यपि सूत्राणि।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

भण्णति –

उज्जेणी णाम णगरी। तत्थ य 'गद्दभिल्लो'' णाम राया! तत्थ 'कालगज्जा' णाम आयरिया जोतिस-णिमित्त-बलिया। ताण भगिणी रूववती पढमे वए वट्टमाणी गद्दभिल्लेण गहिता। अंते पुरे छूढा। अज्जकालगा विण्णवेंति, संघेण य विण्णत्तो ण मुंचति।

ताहे रुट्ठो अज्जकालगो पइण्णं करेति – ''जइ गद्दभिल्लं रायाणं रज्जाओ ण उम्मूलेमि, तो पवयण-संजमोवग्घायगाणं तमुवेक्खगाण य गतिं गच्छामि''।

ताहे कालगज्जो कयगेण उम्मत्तली भूतो तिग-चउक्क-चच्चर-महाजणट्ठाणेसु इमं पलवंतो हिंडंति – ''जइ गद्दभिल्लो राया तो किमतः परं।

जइ वा अंतेपुरं रम्मं तो किमतः परं।

विसओ जइ वा रम्मो तो किमतः परं।

सुणिवेट्ठा पुरी जइ तो किमतः परं।

जइ वा जणो सुवेसो तो किमतः परं।

जइ वा हिंडामि भिक्खं तो किमतः परं।

जइ सुण्णे देउले वसामि तो किमतः परं''

एवं भावेउं सो कालगज्जो पारसकुलं गतो। तत्थ एगो साहि त्ति राया भण्णति, तं समल्लीणो णिमित्तादिएहिं आउट्टेति। अण्णया तस्स साहाणुसाहिणा परमरायाणेण कम्हि यि कारणे रुट्ठेणं कट्टारिगा मुद्देउं पेसिया सीसं छिंदाहि त्ति, तं आकोप्पमाणं आयातं सोयं विमणो संजातो।

ताहे कालगज्जेण भणितो मा अप्पाणं मारेहि।

साहिणा भणियं – परमसामिणा रुट्ठेण एत्थ अच्छिउं ण तरइ।

कालगज्जेण भणियं – एहि हिंदुगदेसं वच्चामो। रण्णा पडिस्सुयं। तत्तुल्लाण य अण्णेसिं पि पंचाणउतीए साहिणा संअंकेण कट्टारियाओ मुद्देउं पेसियाओ। तेण पुव्विल्लेण दूया पेसिया मा अप्पाणं मारेह। एह वच्चामो हिंदुगदेसं। ते छण्णउतिं पि सुरट्ठमागया। कालो य णवपाउसो वट्टइ वरिसाकाले ण तीरति गंतुं। छण्णउइं मंडलाइं कयाति (णि) विभत्तिऊणं। जं कालगज्जो समल्लीणो सो तत्थ राया अधिवो राया ठवितो, ताहे सगवंसो उप्पण्णो। वत्ते य वरिसाकाले कालगज्जेण भणिओ-गद्दभिल्लं रायाणं रोहेमो। ताहे लाडा रायाणो जे गद्दभिल्लेण अवमाणिता ते मेल्लेउं अण्णे य ततो उज्जेणी रोहिता। तस्स य गद्दभिल्लस्स एक्का विज्जा गद्दहिरूवधारिणी अत्थि। सा य एगम्मि अट्टालगे परवलाभिमुहा ठविया। ताहे परमे आधिकप्पे गद्दभिल्लो राया अट्ठमभत्तोववासी तं अवतारेति। ताहे सा गद्दभी महंतेण सद्देण णादति, तिरिओ मणुओ वा जो परबलिच्चो सद्दं सुणेति स सव्वो रुहिरं वमंतो भयविहलो णट्ठसण्णो धरणितलं णिवडइ।

कालगज्जो य गद्दभिल्लं अट्ठमभत्तोववासिं णाउं सद्दवेहीण दक्खाणं अट्ठसतं ज़ोहाण णिरूवेति – ''जाहे एस गद्दभी मुहं विडंसेति जाव य सद्दं ण करेति ताव जमगसभगं सराण मुहं पूरेज्जेह''।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तेहिं पुरिसेहि तहेव कयं। ताहे सा वाणमंतरी तस्स गद्दभिल्लस्स उवरिं हणिउं मुत्तेउं व लत्ताहि य हंतुं गता। सो वि गद्दभिल्लो अबलो उन्मूलिओ। उहिया उज्जेणी। भगिणी पुणरवि संजमे ठविया।

एवं अधिकरणमुप्पा।एउं अतिपंतं सासेंति। एरिसे वि महारंभे कारणे विधीए सुद्धो अजयणापच्चतियं पुण करेंति पच्छित्तं ॥२८६०॥

जे भिक्खू उग्घातियं अणुग्घातियं वदति, वदंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१५॥

जे भिक्खू अणुग्घातियं उग्घातियं वदति, वदंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१६॥

जे भिक्खू उग्घातियं अणुग्घातियं देति, देंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१७॥

जे भिक्खू अणुग्घातियं उग्घातियं देति, देंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१८॥

उग्घातियं लहुयं भण्णति, अणुग्घाइयं गुरुगं। "वदति" प्ररूपयति, "ददाति" आरोपयति। एवं विवरीएसु परूवणादाणेसु चउगुरुगं पच्छित्तं।

उग्घायमणुग्घायं, वऽणुग्घायं तहा य उग्घायं।
जे भिक्खू पच्छित्तं, वएज्ज दिज्जा व विवरीयं ॥२८६१॥ गतार्था

प्रायश्चित्तस्य न्यूनाधिकदाने आज्ञाभंगादयो दोषाः –

सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त-विराधणं तहा दुविधं।
पावति जम्हा तेणं, अविवरीयं वदे दे वा ॥२८६२॥

विवरीयं परूवेतो देंतो वा तित्थगराणं आणाभंगं करेति, अण्णहा परूवणदाणेसु य अणवत्था कता भवति, अण्णहा परूवणदाणेहि य मिच्छत्तं जणेति, जहा एयं तहा अन्यदपि सर्वमलीकमिति, ऊणे चरणस्स असुद्धी, अधिके साधुपीडा। एवं दुविहा विराहणा भवति, जम्हा एते दोसा तम्हा अविवरीयं वदति देति वा ॥२८६२॥

परितावमणणुकंपा, भयं च लहुगम्मि पत्ते गुरु देंतो।
वीसत्थया ण सुज्झइ, इयरे अलियं वदंते य ॥२८६३॥

लहुगम्मि पत्ते गुरुं देंते साहुस्स परितावणा कता, अणणुकंपा य, भयेण य पुणो णालोयेति। इतरे वि गुरुं पत्ते लहुं देंते वीसत्थताए य पुणो पडिसेवेति, ण य से चारित्तं सुज्झइ। एते देंते दोसा। वदंते पुण दोसु वि सुत्तेसु अलियं भवति ॥२८६३॥

किं चान्यत् –

अप्पच्छित्ते उ पच्छित्तं, पच्छित्ते अइमत्तया।
धम्मस्सासायणा तिव्वा, मग्गस्स य विराधणा ॥२८६४॥

अप्पच्छित्ते अणावत्तीए जो पच्छित्तं देति, पत्ते वा आवत्तीए जो अतिप्पमाणं पच्छित्तं देति, सो सुअचरण धम्मस्स आसादणं गाढं करेति, दर्शनज्ञानचरणात्मकस्य च मार्गस्य विराधणां करोति ॥२८६४॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

"धर्मस्ये" त्ति अस्य व्याख्या –

सुय-चरणे दुहा धम्मो, सुयस्स आसायणऽण्णहा दाणे ।
ऊणं देंते ण सुज्झति, चरणं आसायणा चरणे ॥२८६५॥

अण्णहा वदंतेण सुतं विराहियं । ऊणं देंतेण चरणं विराधितं ॥२८६५॥

मग्गस्ये ति व्याख्या –

नाणाति-तिविहा मग्गो, विराहितो होति अण्णहा दाणे ।
सुयमग्गो वेगट्ठा, मग्गो य सुयं चरणधम्मो ॥२८६६॥

पुव्वद्धं कंठं । सुयं ति वा मग्गो त्ति वा एगट्ठं ।

अहवा – मग्गो सुअं भण्णति. धम्मो चरणं, एते विराहंतेण मोक्खमग्गो विराहितो भवति । एवं संजम-आयविराहणातो असंखडादयो य दोसा, देवया छलेज्ज ॥२८६६॥

बितियं गुरूवएसा, तवबलिए उभयदुब्बल्लेऽबलिते ।
वेयावच्च अणुग्गह, विगिंचणट्ठाए विवरीयं ॥२८६७॥

आयरियपरंपरोवदेसेण आगतं गुरुं लहुं वा वदंतो देंतो वा सुद्धो । "तवबलिय" त्ति चउत्थमादितव करणे बलिओ, सो उग्घातिपायच्छित्ते दिण्णे भणाति – "किं ममेतेण कज्जं ति, अण्ण पि देति ।" ताहे आयरितो अणुग्घातं देति, भणति – "इमं नेव पच्छित्तं, एतं मे अणुवउत्तेण दिण्णं ।"

"उभयदुबलो" णाम धितीए संघयणेण य, तस्स अणुग्घातिए वि उग्घातं दिज्जइ, जहा तरति वोढुं । धितिसंघयणाण एगतरबलिए य तयणुरूवं दिज्जइ ।

"बलिए" त्ति - उभएण वि बलियस्स चियमंससोणियस्स दप्पुद्धरस्स उग्घातिए वि अणुग्घातं दिज्जति । जो आयरियाण वेयावच्चकरणे अब्भुज्जतो तस्सं साणुग्गहं दिज्जति । भणियं च – "वेयावच्चकराणं होति अणुग्घाए वि उग्घातं" । अणुग्गहकसिणेण वा से दिजति, पायच्छित्ते दिण्णे छहिं दिवसेहिं गतेहिं अण्णे छम्मासा जतिउं आवण्णो झोसिय छ आदिल्ला अण्णे छम्मासा दिज्जंति । जो वा विगिंचियव्वो तस्स अपच्छित्ते वि पच्छित्तं दिज्जति, अप्पे वा बहुं दिज्जति, वरं पच्छित्तो मग्गो णस्सिहिति ॥२८६७॥

जे भिक्खू उग्घाइयं सोच्चा णच्चा संभुंजइ, संभुंजंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१९॥

जे भिक्खू उग्घाइय-हेउं सोच्चा णच्चा संभुंजइ,
संभुंजंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२०॥

जे भिक्खू उग्घाइय-संकप्पं सोच्चा णच्चा संभुंजइ,
संभुंजंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२१॥

जे भिक्खू उग्घातियं उग्घातिय-हेउं वा उग्घातिय-संकप्पं वा सोच्चा णच्चा संभुंजइ,
संभुंजंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२२॥

* * *

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जे भिक्खू अणुग्घातियं सोच्चा णच्चा संभुंजइ,
संभुंजंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२३॥

जे भिक्खू अणुग्घाइय-हेउं सोच्चा णच्चा संभुंजइ,
संभुंजंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२४॥

जे भिक्खू अणुग्घाइय-संकप्पं सोच्चा णच्चा संभुंजइ,
संभुंजंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२५॥

जे भिक्खू अणुग्घातियं अणुग्घाइय-हेउं वा अणुग्घाइय-संकप्पं वा सोचा णचा
संभुंजइ, संभुंजंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२६॥

❀ ❀ ❀

जे भिक्खू उग्घाइयं वा अणुग्घाइयं वा सोच्चा णचा संभुंजइ,
संभुंजंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२७॥

जे भिक्खू उग्घाइय-हेउं वा अणुग्घाइय-हेउं वा सोचा णचा संभुंजइ,
संभुंजंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२८॥

जे भिक्खू उग्घाइय-संकप्पं वा अणुग्घाइय-संकप्पं वा सोचा णचा संभुंजइ,
संभुंजंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२९॥

जे भिक्खू उग्घाइयं वा अणुग्घाइयं वा उग्घाइय-हेउं वा अणुग्घाइय-हेउं वा
उग्घाइय-संकप्पं वा अणुग्घाइय-संकप्पं वा सोच्चा णचा संभुंजइ
संभुंजंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३०॥

[1]एते छ सुत्ता । उग्घातियं णाम जं संतरं वहति लघुमित्यर्थः । अणुग्घातियं णाम जं णिरंतरं वहति गुरुमित्यर्थः । "सोच्चं" त्ति अण्णसगासाओ, "णच्चं" ति सयमेव जाणित्ता, "संभुजे" ति एगओ भोजनं ।

उग्घाइयहेउसंकप्पाण उग्घातियाण तिण्ह वि इमं वक्खाणं –

उग्घातियं वहंते, आवण्णुग्घायहेउगे होति ।
उग्घातिय-संकप्पिय, सुद्धे परिहारियतवे य ॥२८६८॥

उग्घातियं ति पायच्छित्तं वहंतस्स – पायच्छित्तमापण्णस्स जाव मणालोइयं ताव हेउं भण्णति, आलोइए "अमुगदिणे तुज्झेयं पच्छित्तं दिज्जिहिति" त्ति संकप्पियं भन्नति । एयं पुण दुविधं पि दुविहं वहति – सुद्धतवेण वा परिहारतवेण वा । हेऊ वि सुद्धस्स तवस्स वा परिहारतवस्स वा । संकप्पियं पि सुद्धतवेण वा परिहारतवेण वा ॥२८६८॥

---

१ 'कानि षड्सूत्राणि' इति सम्यग्विचारणीयम् ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अणुग्घाइयहेउ-संकप्पाण अणुग्घाइयाण तिण्ह वि इमं वक्खाणं –

अणुग्घातियं वहंते, आवण्णऽणुग्घातहेउगं होति ।
अणुग्घातिय-संकप्पिय, सुद्धे परिहारिय तवे य ॥२८६९॥

पूर्ववत् । णवरं – अणुग्घातिए त्ति वत्तव्वं ॥२८६९॥

जे सगच्छे सुद्धपरिहारतवाण आरूढा ते णज्जंति चेव ।

जे परगच्छातो आगता ते पुच्छिज्जंति –

को भंते ! परियाओ, सुत्तत्थ अभिग्गहो तवोकम्मं ।
कक्खडमकक्खडेसु य, सुद्धतवे मंडवा दोन्नि ॥२८७०॥

इमा पढमा पुच्छा –

गीयमगीओ गीओ, महंति कं वत्थु कस्स व सि जोग्गो ? ।
अग्गीउ त्ति य भणिते, थिरमथिर तवे य कयजोग्गो ॥२८७१॥

सो पुच्छिज्जति – किं तुमं गीयत्थो अगीयत्थो ? जति सो भणति – गीतो महं ति ।

तो पुण पुच्छिज्जति – किं आयरिओ ? उवज्झाओ ? पव्वत्तओ ? थेरो ? गणावच्छेतितो ? वसभो ?

एतेसिं एगतरे अक्खाए पुच्छिज्जति – कयमस्स तवस्स जोग्गो – सुद्धस्स, परिहारतवस्स ?

अह सो अगीतोमि त्ति भणिज्जा आपुच्छिज्जति – थिरो अथिरो त्ति। थिरो दृढो, तवकरणे बलवानित्यर्थः । अथिरो अंतरादेव भज्जते, नांतं नयतीत्यर्थः ।

पुणो थिरो अथिरो वा पुच्छिज्जति – तवे कयजोग्गो तवकरणेनाभ्यस्ततवो ॥२८७१॥

सगणम्मि नत्थि पुच्छा, अण्णगणादागयं च जं जाणे ।
परियाओ जम्म दिक्खा, अउणत्तीस वीसकोडी वा ॥२८७२॥

सगणे एयाओ णत्थि पुच्छाओ, जओ सगणवासिणो सव्वे णज्जंति जो जारिसो, अण्णगणागतं पि जं जाणं तं न पुच्छे । "भंते त्ति आमंतणवयणं, "[1]परियाए" त्ति परियाओ दुविहो – जम्मपरियाओ पव्वज्जापरियाओ य । जम्मपरियाओ जहण्णेण जस्स एगूणतीसवासा । कहं ? जम्मट्ठवरिसे पव्वतितो, णवमवरिसे उवट्ठावितो, वीसतिवरिसस्स दिट्ठिवाओ उद्दिट्ठो, वरिसेण जोगसमत्तो एवं एते अउणतीसं वासा । उक्कोसेण देसूणा पुव्वकोडी । पव्वज्जा एगूणवीसस्स दिट्ठिवातो उद्दिट्ठो वरिसेण समत्तो, एते वीसं, उक्कोसेण देसूणा पुव्वकोडी ॥२८७२॥

इदाणिं "[2]सुत्तत्थमि" ति अस्य व्याख्या –

णवमस्स ततियवत्थू, जहण्ण उक्कोस ऊणगा दस उ ।
सुत्तत्थऽभिग्गहे पुण, दव्वादितवो रयणमादी ॥२८७३॥

णवमस्स पुव्वस्स जहण्णेणं ततियं आयारवत्थू, तत्थ कालणाणं वण्णिज्जति, जाहे तं अधीयं ।

---

१ गा० २८७० । २ गा० २८७० ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उक्कोसेण जाहे ऊणगा दस पुव्व अधीता । समत्तदसपुव्विणो परिहारतवो ण दिज्जति । सुत्तत्थस्स एयं पमाणं । "[१]अभिग्गहे" त्ति अभिग्गहा दव्वखेत्तकालभावेहिं । "तवोकम्मं" पुण "रयणमादि" त्ति, रयणावली आदिसद्दातो कणगावली सीहनिक्कीलियं जवमज्झं वइरमज्झं चदाणयं ॥२८७३॥

"[२]कक्खडेसु य पच्छद्धं" अस्य व्याख्या – सुद्धपरिहारतवाणं कतमो कक्खडो ? कयमो वा अकक्खडो ?

[३]एत्थ सेल-एरंड-मंडवेहिं दिट्ठंतो कज्जति –

जं मायति तं छुभति, सेलमए मंडवे ण एरंडे ।
उभयबलियम्मि एवं, परिहारो दुब्बले सुद्धो ॥२८७४॥

सेलमंडवे जं मायइ तं छुभति, ण सो भज्जति । एरंडमए पुण जावतियं सहइ तावतियं छुभति । एवं "उभयबलिए" त्ति धिइसंघयणोवजुत्ते जं आवज्जते तं परिहारतवेण दिज्जति । जो पुण धितिसंघयणेहिं "दुब्बलो" त्ति हीणो तस्स सुद्धतवो वा हीणतरं पि दिज्जति ॥२८७४॥

सीसो पुच्छति – किं सुद्धपरिहारतवाण एगावत्ती उत भिण्णा ?

उच्यते –

अविसिट्ठा आवत्ती, सुद्धतवे चेव तह य परिहारे ।
वत्थुं पुण आसज्जा, दिज्ज ते तत्थ एगतरो ॥२८७५॥

सुद्धपरिहारतवाण अविसेसिया आवत्ती आयरिया दीवन्ति । संघयणोवजुत्तं जाणिऊणं परिहारतवो दिज्जति, इतरो वा सुद्धतवो, एवं एगतरा दिज्जति ॥२८७५॥

इमेरिसाण सव्वकालं सुद्धतवो दिज्जति –

सुद्धतवो अज्जाणं, अगियत्थे दुब्बले असंघयणे ।
धितिबलिए य समण्णागएसु सव्वेसु परिहारो ॥२८७६॥

अज्जाणं अगीयत्थस्स, धितीए दुब्बलस्स, संघयणहीणे, एतेसिं सुद्धतवो दिज्जति । धितिबलजुत्तो संघयणसमण्णिए पुरिसे परिहारतवो दिज्जति ॥२८७६॥

परिहारतवं पडिवज्जंते इमा विही –

विउसग्गो जाणणट्ठा, ठवणाभीएसु दोसु ठवितेसु ।
अगडे णदी य राया, दिट्ठंतो भीय आसत्थे ॥२८७७॥

परिहारतवं पडिवज्जंते दव्वादि अप्पसत्थे वज्जेत्ता पसत्थेसु दव्वादिसु काउसग्गो कीरइ, सेससाहू जाणणट्ठा । आलावणादिपदाण य ठवणा ठविज्जति, तेसु अठविएसु जति भीतो तो आसासो कीरइ ति । इमेहिं म बीहे, पायच्छित्तं, सुज्झइ, महती य णिज्जरा भवति । कप्पट्ठियअणुपरिहारिया य दो सहाया ठविता । इमेहिं अगड-णदी-तीराइदिट्ठंतेहिं भीतस्स आसासो कीरति । अगडे पडियस्स आसासो कीरति – एस जणो धावति, रज्जू आणिज्जति । अचिरा उत्तारेज्जसि, मा विसादं गेण्हसु । एवं जति णाऽऽसासिज्जति तो कया ति भीएण तत्थ चेव मरेज्ज ।

१ गा० २८७० । २ गा० २८७० । ३ गा० २८७० ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अहवा – "छूढेय मीसियं पूतिं" ति । एयस्स इमं वक्खाणं—दीहिचुल्ली, कतासु उक्खासु पढमउक्खाए आहाकम्मं, बितिय-चउत्थादिसु आयट्ठं उवक्खडेति, पढमं दव्वीए घट्टेउं बितियचउत्थासु छोढुं घट्टेति पूतिमीसं भवति, उवकरणाहारसंभवाउ मीसं । उवकरणपूतितं गतं ।

इदाणिं आहारपूतितं –

"डागो" पत्तसागो, सो संघट्टादिकारणा कओ । संघट्टा लवणं वट्टियं, संघट्टा हिंगु पल्लालियं, एताणि थोवं थोवं अप्पणो रद्धमाणे छुभति । एतं आहारपूतियं ।

जत्थाहाकम्मं रद्धं तं संकामेउं अप्पणो रंधेति पूतियं भवति । उवरि धूमणेण धोवितं 'फोडितं" भण्णति । तं संघट्टा तलियं अप्पणो रद्धेमाण छुभति पूतितं । "संधूमे" त्ति संघट्टा अंगाल धूवो कतो अप्पणो वि तम्मि चेव भायणं ठवेति, तत्थंबिलादि छुभति तं पूइतं ॥८०८॥

इदाणिं अविसोधिकोडीए अकप्पकरणविधाणं भण्णति –

लेवेहिं तीहिं पूतिं, कप्पते सुद्ध तिण्ह व परेण ।
तेण परं सेसेसुं, जावतियं फासते पूतिं ॥८०९॥

जत्थुक्खाए आहाकम्मं कयं तत्थेगदिणेण ततो वारा अप्पणट्ठा उवक्खडेति ति-दिणेण वा, तिसु वि लेवेसु पूतितं भवति । तं पूतितं जत्थ भायणे गहियं तं कयकप्पं सुज्झति । कप्पपमाणपदरिसणत्थं तिण्ह उपरेणं चउत्थे कप्पे सुज्झति, सह तेन कल्पोदकेनेत्यर्थः ।

अहवा – "तिण्ह व परेण", वकारो विकप्पदरिसणे, णिरवयवं तिसु, सावयव तिण्ह व परेणेत्यर्थः । "तेण परं" ति चतुर्थकल्पात् परतः, परशब्दोऽत्र आर वाची ति सेसा वि पढमकप्पा, तिसु जं पुट्ठं तं सव्वं पूतियं, ण केवलं आहाकम्मेण पुट्ठं पूतितं, पूतिएण वि पुट्ठं पूइमित्यर्थः ।

अहवा – ततः ततियकप्पापरतो सेसेण चउत्थकप्पेण पुट्ठं जावतियं तं सव्वं पूतितं ण भवतीति वाक्यशेषः । एष एव गतार्थो । रन्धनकल्पेष्वेवं वक्तव्यः ॥८०९॥

इदाणिं उवधिपूतितं –

उवही य पूतियं पुण, वत्थे पादे य होति नायव्वं ।
वत्थे पंचविहं पुण, तिविहं पुण होति पादंमि ॥८१०॥

उवधिपूतितं दुविहं—वत्थे पादे य । वत्थे जंगिताइ पंचविधं । लाउआति पादे तिविधं । वत्थे आहाकम्मकडेण सुत्तेण सिव्वति थिग्गलं वा देति, पाए वि सीवति थिग्गलं वा देति ॥८१०॥

इदाणिं वसहिपूतियं –

वसधीपूतियं पुण, मूलगुणे चेव उत्तरगुणे य ।
एक्केक्कं सत्तविधं, णेतव्वं आणुपुव्वीए ॥८११॥

वसहिपूतितं दुविधं—मूलगुणे उत्तरगुणे य । मूलगुणे सत्तविहं चउरो मूलवेलीओ, दो धारणा, पट्टिवंसो य । उत्तरगुणे सत्तविधा – वंसग कडण ओकंपण-छावण-लेवण-दुवार-भूमिकम्मे य । एत्थ अण्णतमे छ-फासुआ कट्ठा, सत्तमं आहाकम्मियं छुब्भति ॥८११॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

एवं पूतितसंभवो । पूतितं गेण्हंतस्स संजमविराहणा, असुद्धगहणातो देवया पमत्तं छलेज्ज, आयविराहणा अजिण्णे वा गेलण्णं भवेज्ज ।

बितियपदेणं आहारपूतितं गेण्हेज्ज –

असिवे ओमोयरिए, रायदुट्ठे भए व गेलण्णे ।
अद्धाण रोहए वा, गहणं आहारपूतीए ॥८१२॥ पूर्ववत्

उवहिपूतितं इमेहिं कारणेहिं गेण्हेज्जा –

णट्ठे हित विस्सरिते, झामियवूढे तहेव परिजुण्णे ।
असती दुल्लहपडिसेवतो य गहणं तु उवधिस्स ॥८१३॥ कंठा

पातपूतितं इमेहिं कारणेहिं गेण्हेज्जा –

असिवे ओमोयरिए रायदुट्ठे भए व गेलण्णे ।
असती दुल्लहपडिसेवतो य गहणं भवे पादे ॥८१४॥

वसहिपूइते इमे कारणा –

असिवे ओमोयरिए, रायदुट्ठे भए व गेलण्णे ।
वसधी-वाघातो वा, असती वा वसहि गहणं तु ॥८१५॥

असिवगहिता वसहिं ण लब्भंति, पूइए ट्ठाअंति । ओमे पूइतवसहिट्ठिया भत्तं लभंति । रायदुट्ठे णिलुक्का अच्छंति । भए वि एवं गेलण्णे ओसहकारणादि ट्ठिया ण लब्भति वा अण्णा, सुद्धवसहि – वाघाए पूतिताए ठायंति । असति वा सुद्धाए पूइयाए ठायंति । एवमादि असिवादिकारणे वहिता सावतादि भए जाणिऊण अंतो पूतिताए ठायंतीत्यर्थः ॥८१५॥ ग्रंथाग्रं – १०६५ उभयं ५५६५ (५३६५) ।

विसेस-णिसीहचुण्णीए पढमो उद्देसो सम्मत्तो ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

द्वितीय उद्देशकः

भणिओ पढमो उद्देसो। इदाणिं अवसरपत्तो बितिओ भण्णति। पढम-बितित उद्देसगाण-संबंधकारिणी इमा गाहा –

भणिया तु अणुग्धाया, मासा ओघातिया अहेदाणिं।
परकरणं वा भणितं, सयकरणमियाणि बितियम्मि ॥८१६॥

पढमउद्देसए गुरुमासा भणिता। अह इदाणिं बितिए लहुमासा भण्णंति।

अहवा – पढमुद्देसे परकरणं णिवारियं, इह बितिए सयंकरणं निवारिज्जति ॥८१६॥

अहवा ऽयं संबंधः –

अहव [1]ण हेट्ठऽणंतर-सुत्ते घर-धूमसाडणं भाणत।
रयहरणेण पमज्जित, तं केरिसमेस संबंधो ॥८१७॥

बिति-उद्देसगपढमसुत्तातो हेट्ठा जं सुत्तं तं च पूइतं सुत्तं, तस्स अणंतरसुत्ते घर-धूमसाडणं भणियं, तं रओहरणेण साडिज्जति। तं रओहरणं इमं भण्णति ॥८१७॥

अहवा ऽयं संबंधः –

उवकरणपूतियं पुण, भणितं [2]अधमवि होति उवकरणं।
करकम्मादिपदे वा, इहमवि हत्थस्स वावारो ॥८१८॥

पढमुद्देसगस्स अंतसुत्ते उवकरणपूइतं भणितं। इह बितिय आदिसुत्ते उवकरणं चेव भण्णति।

अहवा ऽयं संबंधः –

पढमुद्देसग-आदिसुत्ते "करो" हत्थो, तस्स वावारो भणितो। इहावि दारुदंड-पाय-पुंछणकरणं हस्तव्यापार एव ॥८१८॥

अनेन संम्बन्धेनायातस्य द्वितीयोद्देशकस्येदमादिसूत्रम् –

जे भिक्खू दारुदंडयं पायपुंछणयं करेइ; करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१॥

---

१ वाक्यालंकारे। २ अधः अपि।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

"जे" त्ति णिद्देसे, "भिक्खू" पूर्वोक्त, दारुमग्रो दंडग्रो जस्स तं दारुदंडयं, पादे पुंछति जेण तं पादपुंछणं पट्टय-दुनिसिज्जवज्जियं रग्रोहरणमित्यर्थः । तं जो करेति, करेंतं वा सातिज्जति तस्स मासलहुं पच्छित्तं । एस सुत्तत्थो ।

एयं पुण सुत्तं ग्रववातियं ।

इदाणि णिज्जुत्ति-वित्थरो –

पाउंछणगं दुविधं, उस्सग्गियमाववातियं चेव ।
एक्केक्कं पि य दुविधं, णिव्वाघातं चा वाघातं ॥८१६॥

"पाउंछणं" रग्रोहरणं, तं दुविधं – उस्सग्गियं ग्राववातियं च । उस्सग्गियं दुविधं – णिव्वाघातितं वाघातियं च । ग्राववातितं पि य दुविधं – णिव्वाघातितं वाघातितं च ।।८१६।।

एतेसिं वक्खाणमियाणिं भण्णति –

जं तं णिव्वाघातं, तं एगंगियमुण्णियं तु णायव्वं ।
वाघाते उट्टियं पि य, [1]सणवच्च य मुंज पिच्चं च ॥८२०॥

जं उस्सग्गितं णिव्वाघातितं तं एगंगियं । एगंगि उण्णिय भवति । इदाणिं उस्सग्गे वाघातियं भण्णति – जं तस्सेव ग्रणेगंगाग्रो उण्णिदसाग्रो । ग्रसति तस्सेव उट्टदसाग्रो । ग्रसति तस्सेव सणदसाग्रो । ग्रसति तस्सेव वच्चपिच्चदसाग्रो । वच्चग्रो, तणविसेसो दर्भाकृतिर्भवति । ग्रसति तस्सेव मुंजपिच्चदसा मुंजो पिच्चिउ त्ति वा, विप्पिउ त्ति वा, कुट्टितो त्ति वा एगट्ठं । ग्रसति उण्णियस्स उट्टितपट्टतो एगंगदसो । एगंगासति उण्णिय-उट्ट-सणादिदसा चारेयव्वा । एते उस्सग्गित-वाघातप्रकारा ग्रभिहिता इत्यर्थः ।।८२०।।

इदाणिं ग्रववातिकं दुविधं भण्णति –

ग्रावातं तध चेव य, तं णवरि दारुदंडगं होति ।
वाघाते ग्रतिरेगो, इमो विसेसो तहिं होति ॥८२१॥

जहा उस्सग्गितं णिव्वाघातं उण्णिदसं, वाघातितं च उट्टादिदसं भणितं, ग्राववातितं तथा वक्तव्यमित्यर्थः । रग्रोहरणपट्टयदुण्णिसेज्जवज्जियं दारूदंडयमेव तं भवति । उस्सग्गियग्राववातितवाघाते ग्रइरेगो इमो ग्रण्णो वि दसाविसेसो भवति ।।८२१।।

उवरिं तु मुंजयस्सा, कोसेज्जय-पट्ट-पोत्त-पिंछे य ।
संबंधे वि य तत्तो, एस विसेसो तु वाघाते ॥८२२॥

रग्रोहरणपट्टे दारुदंडे वा मुंजदसा भवंति । मुंजदसाऽसति कोसेज्ज दसा, कोसेज्जा [2]वडग्रो भण्णति, तस्सासति दुगुल्लपट्टदसा, पट्टदसासति पोत्तदसा, पोत्तदसासति मोरंगपिंछदसा । 'संबंधे वि य तत्तो' त्ति ततः कोसेतकादिविकप्पेसु वि संबंधासंबंधविकप्पेण रग्रोहरणविकल्पा कार्या, [3]ग्राद्य भेदानामभावादित्यर्थः।।८२२।।

---

१ बृहत्कल्प उद्दे० २ सू० २५। शरस्तम्भः तं कुट्टयित्वा तदीयो यः क्षोदस्तं कतयन्ति। ततस्तैः वच्चकसूत्रैः मुंजसूत्रैश्च गोपा शवारको व्यूयते प्रावरणास्तरणानि च देशविशेषमासाद्य कुर्वन्ति । ग्रतस्तन्निष्पन्नं रजोहरणं वच्चक-विप्पकं मूंजविप्पकं वा भण्यते । २ टसरः इति भाषायां । ३ पश्य गा० ८२६ चूर्णि ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

चतुर्भंगार्थनिरूपणार्थं गाथाद्वयमाह –

जं तं णिव्वाघातं, तं एगं उण्णियं तु घेत्तव्वं ।
उस्सग्गियवाघातं, उट्टियसणवच्चमुंजं च ॥८२३॥

पूर्वार्धेन प्रथमभंगार्थः पश्चार्धेन द्वितीयभंगार्थः ॥८२३॥

णिव्वाघातववादी, दारुगदंडुण्णियाहिं दसियाहिं ।
अववातियवाघातं, उट्टियसणवच्चमुंजदसं ॥८२४॥

पूर्वार्धेन तृतीयभंगार्थः । पश्चार्धेन चतुर्थभंगार्थः ॥८२४॥

एवमेते चउरो भंगा विशेषार्थप्रदर्शनार्थमन्येनाभिधानप्रकारेण प्रदर्श्यन्ते –

अहवा उस्सग्गुस्सग्गियं च उस्सग्गओ य अववातं ।
अहवादुस्सग्गं वा, अववाओवाइयं चेव ॥८२५॥

उस्सग्गियणिव्वाघातादि चउरो जे भेया त एव चतुरः उत्सर्गोत्सर्गादि द्रष्टव्याः ॥८२५॥

प्रथम - द्वितीयभंगप्रदर्शनार्थं, तृतीय - चतुर्थभंगप्रतिषेधार्थं चेदमाह –

एगंगि उण्णियं खलु, असती तस्स दसिया उ ता चेव ।
तत्तो एगंगोट्टी, उण्णियउट्टियदसा चेव ॥८२६॥

एगंगियउण्णियं संबद्धदसागं जं तं उस्सग्गुस्सग्गितं । इदाणिं उस्सग्गाववातितं भण्णति । असति संबद्धदसागस्स उण्णिय - पट्टए उण्णियदसा लातिज्जंति, तस्सासति एगंगियं उट्टियं, तस्सासति उट्टियपट्टए उण्णियदसा, तस्सासति उट्टियपट्टए उट्टियदसा, तस्सासति उण्णियपट्टए सणादिदसा सव्वा णेया ॥८२६॥

जओ भण्णति –

एवं सण वच्च मुंज चिप्पिते कोस-पट्ट-दुगुले य ।
पोत्ते पेच्छेय तहा, दारुगदंडे बहू दोसा ॥८२७॥

असति उण्णियपट्टयस्स उट्टियपट्टए सणादिदसा सव्वा णेया । उट्टियपट्टासति सणयं एगंगियं । तस्सासति सणपट्टए उण्णियादिदसा णेया । वच्चगे वि एगंगियं उण्णियादिदसा सव्वा चारेयव्वा । एवं मुंजादिसु वि । णवरं – पिंछे पट्टयं ण भवति ।

चोदग आह – णणु सणवच्चगादिपट्टगेसु कोसेज्जपट्टगादिदसा अणाइण्णा ।
[1]आयरियाह – ता एव वरं, ण दारुडंडयं पादपुंछणं ।
कहं ? जतो दारुअदंडे बहू दोसा ॥८२७॥

के ते दोसा ? इमे –

इधरहवि ताव गरुयं, किं पुण भत्तोग्गहे अधव पाणे ।
भारे हत्थुवघातो, पडमाणे संजमायाए ॥८२८॥

१ पश्य गा० ८२४ ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

"इहरह" त्ति विणा भत्तपाणेण स्वभावेन गुरुरित्यर्थः । "किं" मित्यतिशये, "पुनः" विशेषणे । जतो पडिग्गहे भत्तं वा पाणं वा गहितं तदा पुव्वं गुरु ततो गुरुतरं भवतीत्यर्थः । गुरुत्वाद्धस्तोपघातः, पडमाणं गुरुत्वात् जीवोपघातं करोति, पादोवरि आतोवघातं वा, च सद्दा आणादओ दोसा । तम्हा दारुदंडयं पावपुंछणं न गेण्हियव्वं ॥८२८॥ कारणओ गेण्हेज्जा ।

इमे य ते कारणा –

संजमखेत्तचुया वा, अद्धाणादिसु हिते व णट्ठे वा ।
पुव्वकतस्स उ गहणं, उण्णिदसा जाव पिच्छं तु ॥८२९॥

जत्थ आहारोवहिसेज्जा काले वा सति सततं अविरुद्धो उवहि लब्भति, तं संजमखेत्तं, ताओ असिवातिकारणेहिं चुता । सेसं कंठं ॥८२९॥

वेलुमओ वेत्तमओ, दारुमओ वा वि दंडगो तस्स ।
रयणी पमाणमेत्तो, तस्स दसा होंति भइयव्वा ॥८३०॥

दसा तस्स भाज्जा । कथं ? यद्यऽसौ त्रयोविंशांगुल तदा णवांगुल दसा । अथासौ चतुर्विंशांगुल तदा अष्टांगुला दसा । यद्यसौ पंचविंशांगुलः तदा सप्तांगुला दसा । दंडदसाभ्यां अहाकडे एकतमे द्वितीयं भजनीयमित्यर्थः ॥८३०॥

तं दारुदंडयं पादपुंछणं जो करे सयं भिक्खू ।
सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्तविराधणं पावे ॥८३१॥ कंठा

णट्ठे हित विस्सरिते, झामियवूढे तहेव परिजुण्णे ।
असती दुल्लभपडिसेधतो य जतणा इमा तत्थ ॥८३२॥

उस्सग्गियस्स पुव्विं णिव्वाघाते गवेसणं कुज्जा ।
तस्सऽसती वाघाते, तस्सऽसती दारुदंडमए ॥८३३॥

तम्मि वि णिव्वाघाते, पुव्वकते चेव होति वाघाते ।
असती पुव्वकयस्स तु, कप्पति ताहे सयं करणं ॥८३४॥

तम्मि वि आववातिते णि वाघाते पुव्वकए गहणं, पच्छा वाघातपुव्वकए गहणं । असति पुव्वकतस्स पच्छा सयं करणं ॥८३४॥

जे भिक्खू दारुदंडयं पादपुंछणं गेण्हति, गेण्हंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२॥

जे भिक्खू दारुदंडयं पादपुंछणं धरेइ, धरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३॥

गहियं संतं अपरिभोगेन धारयति ।

जे भिक्खू दारुदंडयं पादपुंछणं वितरइ, वितरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४॥

अण्णमण्णस्स साधोर्ग्रहणं पतिपुट्ठे "वियरति" ग्रहणानुज्ञां ददातीत्यर्थः ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जे भिक्खू दारुदंडयं पादपुंछणं परिभाएति, परिभाएंतं वा सातिज्जति।।सू०।।५।।

विभयणं दानमित्यर्थः ।

जे भिक्खू दारुदंडयं पादपुंछणं परिभुंजइ, परिभुंजंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।६।।

परिभोगो तेन कार्यकारणमित्यर्थः ।

एसेव गमो णियमा, गहणे धरणे तहेव य वियारे ।
परिभायण परिभोए, पुव्वे अवरम्मि य पदम्मि ।।८३५।। कंठा

काउं सयं ण कप्पति, पुव्वकतंपि हु ण कप्पती घेत्तुं ।
धरणं तु अपरिभोगो, वितरण पुट्ठे पराणुण्णा ।।८३६।।

परिभायणं तु दाणं, सयं तु परिभुंजणं तदुपभोगो ।
गहणं पुव्वकतस्स उ, सयं परिकप्पते य धरणादी ।।८३७।।

गहणं णियमा पुव्वकयस्स, धारणादिपदा पुण चउरो सयं कते, परकते वा भवंति । सूत्राणि पंच । (उद्दे० २ सू० २ से ६) ।।८३७।।

जे भिक्खू दारुदंडयं पादपुंछणं परं दिवड्ढाओ मासाओ धरेइ,
धरेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।७।।

आणादि, आयसंजमविराहणा, मासलहु पच्छित्तं ।

उस्सग्गित-वाघातं, अहवा तं खलु तहेव दुविधं तु ।
जो भिक्खू परियट्टइ, परं दिवड्ढाउ मासातो ।।८३८।।

उस्सग्गियवाघातादि तिण्णि वि परं दिवड्ढातो मासा उवरि कड्ढंतस्स दोसा इमे –

सो आणा अणवत्थं मिच्छत्तविराधणं तधा दुविधं ।
पावति जम्हा तेणं, अण्णं पाउंछणं मग्गे ।।८३९।।

"अण्णं" ति उस्सग्गियणिव्वाघातियं ।।८३९।।

इतरह वि ताव गरुयं, किं पुण भत्तोग्गहे अहव पाणे ।
भारे हत्थुवघातो जति पडणं संजमाताए ।।८४०।।

पूर्ववत् । तेण गुरुणा दंडपादपुंछणेण हत्थोवघाएहिं घेप्पति, पडंतं वा पायं विराहेज्जा, तत्थ अणागाढाति विराहणा, छक्कायविराहणा वा करेज्ज ।।८४०।।

तम्हा परं दिवड्ढाओ मासातो ण वोढव्वं, अण्णं मग्गियव्वं इमाए जयणाए –

उस्सग्गियवाघाते, सुत्तत्थ करेति मग्गणा होति ।
बितियम्मि सुत्तवज्जं, ततियम्मि तु दो वि वज्जेज्जा ।।८४१।।

"बितियं" अववायुस्सग्गि, "ततियं" अववातावघातितं ।।८४१।।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

चत्तारि अधाकडए, दो मासा होंति अप्पपरिकम्मे ।
तेण पर वि य मग्गेज्जा, दिवड्ढमासं सपरिकम्मं ॥८४२॥

एवं वि मग्गमाणे, जदि अण्णं पादपुंछणं न लभे ।
तं चेवऽणुकड्ढेज्जा, जावऽण्णं लब्भती ताव ॥८४३॥

[1]पूर्ववत् ॥८४३॥

एसेव गमो णियमा, समणीणं पादपुंछणे दुविधे ।
णवरं पुण णाणत्तं, चप्पडओ दडओ तासिं ॥८४४॥

दुविहं—उस्सग्गियं अववातितं च । तासिं दंडए विसेसो हत्थकम्मादिपरिहरणत्थं चप्पडओ कज्जति, न वृत्ताकृतिरित्यर्थः ॥८४४॥

जे भिक्खू दारुदंडयं पादपुंछणयं विसुयावेइ,
विसुयावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥८॥

विसुआवणसुक्कवणं, तं वच्चयमुंजपिच्चसंवद्धे ।
तं कढिण दोसकारण, ण कप्पती सुक्कवेतुं जे ॥८४५॥

तं विसुआवणं पडिसिज्झंति । वच्चयमुंजयचिप्पिएसु तद्दसिएसु वा, ते य सुक्का अतिकढिणा भवंति पमज्जणादिसु य ॥८४५॥

चोदक आह – तद्दोसपरिहारत्थिणा सव्वहा ण कायव्वमेव ?

आचार्याह – न इति उच्यते –

णट्ठे हित विस्सरिते, झामियवूढे तहेव परिजुण्णे ।
असती दुल्लभपडिसेधतो य जतणा इमा तत्थ ॥८४६॥

एयमादिकारणेहिं कायव्वं इमाए जयणाए ॥८४६॥

उस्सग्गियस्स पुव्विं, णिव्वाघाते गवेसणं कुज्जा ।
तस्सऽसती वाघाते, तस्सऽसती दारुदंडमए ॥८४७॥

कंठं ॥८४७॥ मा जीवविराहणा भविस्सति । अतो ण उल्लेति ण वा सुक्कवेति । कारण उल्लेज्जा –

वितियपदे वासासु, उदुवद्धे वा सिय त्ति तिमेज्जा ।
विसुयावण छायाए, अद्धातवमातवे मलणा ॥८४८॥

वासाकाले वग्घारियवुट्ठिकायम्मि सग्गामपरग्गामे भिक्खादिगतस्स उल्लेज्जा । उदुवद्धे "वासिय" त्ति स्यात् कदाचित् ॥८४८॥

---

१ उद्दे० १ गा० ७५२, ७५३ ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कथं ? उच्यते –

उत्तरमाणस्स णदिं, सोधेंतस्स व दवं तु उल्लेज्जा ।
पडिणीयजलक्खेवे, धुवणे फिडिते व्व [1]सिण्हाए ॥८४९॥

पडिणीएण वा जले खित्ते सव्वोवहि कप्पे वा तं धोतुं, पंथातो वा फिडियस्स उप्पहे उत्तरणेसु ओसाए उल्लेज्ज ॥८४९॥

असुक्खवेंतस्स इमे दोसा –

कुच्छणदोसा उल्लेण [2]दावितकज्जपूरणं कुणति ।
उंडा य पमज्जंते, मलो य आऊ ततो विसुवे ॥८५०॥

उल्ले असुक्खवेंतस्स[3] कुहए पमज्जणकज्जं च ण करेति । अह उल्लेण पमज्जति तो दसंतेसु गोलया पडिवज्झंति, मलिणे य वासासु आउवधो भवति। एवं दोसगणं णाउं [4]विसुआवे ति छायाए । जति ण सुक्खेज्ज तो "अद्धायवे" देति, तह वि असुक्खंते "आयवे" सुक्खवेति, अंतरंतरे "मलेउं" पुणो आयवे ठवेति, एवं जाव मुक्खं मृदुकारणत्वात् ॥८५०॥

जे भिक्खू अचित्तपइट्ठियं गंधं जिघति. जिघंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥९॥

णिज्जीवे चंदणादिकट्ठे गंधं जिंघति मासलहुं ।

जो गंधो जीवजढो, दव्वं मीसो य होति अच्चित्तो ।
संबद्धासंबद्धा य, जिंघणा तस्स णातव्वा ॥८५१॥

सर्वा निर्युक्तिः [5]पूर्ववत्-।

जे भिक्खू पदमग्गं वा संकमं वा आलंबणं वा सयमेव करेति;
करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१०॥

पूर्ववत्, णवरं मासलहुं परकरणवज्जणं च । शेषं सनिर्युक्तिकं पूर्ववत्[6] ।

जे भिक्खू दगवीणियं सयमेव करेइ; करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥११॥

सभाष्यं पूर्ववत्[7] ।

जे भिक्खू सिक्कगं वा सिक्कगणंतगं वा सयमेव करेइ,
करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१२॥

सभाष्यं पूर्ववत्[8] ।

जे भिक्खू सोत्तियं वा रज्जुयं वा (चिलिमिलिं वा) सयमेव करेइ,
करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१३॥

---

१ हिम-करा । २ दर्शितकार्यः । ३ कुथिते । ४ गा० ८४८ उत्तरार्धं व्या० । ५ (प्र०उ०सू० १०) । ६ (प्र० उ० सू० ११) । ७ (प्र० उ० सू० १२) । ८ (प्र० उ० सू० १३) ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सभाष्यं पूर्ववत्[1]।

जे भिक्खू सूईए, उत्तरकरणं सयमेव करेइ; करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१४॥

जे भिक्खू पिप्पलयस्स उत्तरकरणं सयमेव करेइ,
करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१५॥

जे भिक्खू णहच्छेयणस्स उत्तरकरणं सयमेव करेइ;
करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१६॥

जे भिक्खू कण्णसोहणयस्स उत्तरकरणं सयमेव करेइ;
करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१७॥

सभाष्यं पूर्ववत्[2]।

जे भिक्खू लहुसगं फरुसं वयति, वयंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१८॥

"लहुसं" ईषदल्पं स्तोकमिति यावत् "फरुसं" णेहवज्जियं अण्णं साहुं वदति भाषतेत्यर्थः।

तं च फरुसं चउव्विहं –

दव्वे खेत्ते काले, भावम्मि य लहुसगं भवे फरुसं।
एतेसिं णाणत्तं, वोच्छामि अहाणुपुव्वीए ॥८५२॥

एतेसिं दव्वखेत्तकालाणं जहासंखं इमं वक्खाणं ॥८५२॥

दव्वम्मि वत्थपत्तादिएसु खेत्ते संथारवसधिमादीसु।
काले तीतमणागत, भावे भेदा इमे होंति ॥८५३॥

वत्थादिमपस्संतो, भणाति को णं सुवती महं तेणं।
खेत्ते को मम ठाए, चिट्ठति मा वा इहं ठाहि ॥८५४॥

आदिग्गहणेणं डगलग-सूतिपिप्पलगादओ वि घेप्पंति। दव्वे वत्थपत्तादिएसु त्ति अस्य व्याख्या – वत्थपत्तसूइगादि अप्पणोच्चिया अपस्संतो एवं भणाति – महं अत्थि त्ति काउं इस्साभावेण को णिद्दं लभति ? इस्साभावेण वा महं तेण[3] हडं एवं दव्वओ लहुसयं फरुसं भासति। खेत्तओ लहुसयं फरुसं तस्स संथारभूमीए कं चिट्ठयं पासित्ता भणति "को ममं संथारभूमीए ठाति अप्पं जाणमाणो"।

अहवा – मा मम संथारभूमीए ठाहि ॥८५४॥

"काले तीतमणागते" त्ति अस्य व्याख्या –

गंतव्वस्स न कालो, सुहसुत्ता केण बोधिता अम्हे।
हीणाहियकालं वा, केण कतमिणं हवति काले ॥८५५॥

---

१ (प्र० उ० सू० १४)। २ (प्र० उ० सु० १५-१६-१७-१८)। ३ हृतम्।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ते साहुणो पए गंतुमणा ततो उट्ठविज्जंतो भणति – गंतव्वस्स ण कालो, अज्ज वि सुहसुत्ता, केण वेरिएण अधण्णेण पडिबोहिया अम्हे।

अहवा – हीणं अधियं वा कालं केण कयमिणं तं च इमं भवति काले "हीणातिरित्ती" ॥८५५॥

गंतव्वोसह-पडिलेह-परिण्णा-सुवण-भिक्ख-सज्झाए ।
हीणाहि वितहकरणे, एमादी चोदितो फरुसं ॥८५६॥

गिलाणस्स ओसहट्ठाए गंतव्वे हीणातिरित्तं।

अहवा – आयरियपेसणादिणिमित्ते गिलाणोसहोवओगे वा पच्चूसावरण्हेसु पडिलेहणं पडुच्च, "परिण्णे" ति जेण पोरिसिमादियपच्चक्खायं तस्स पारिउकामस्स भत्तादीणं वा गंतुकामस्स उग्घाडा णवे त्ति भत्तपच्चक्खायस्स वा समाहिपाणगादि आणेयव्वा हीणाधिकं कतं, पादोसियं वा काउं सुविणे सुविउ कामाणं, भिक्खं वा हिंडिउं कामाणं, सज्झाए पट्ठवणावेलं पडुच्च कालवेलं वा, एवमाइसु कारणेसु हीणाधियं करेंतो चोइओ फरुसं वएज्जा ॥८५६॥

अहवा इमो फरुसवयणुप्पाए प्पगारो –

गच्छसि ण ताव कालो, लभसु धितिं किं तडप्फडस्सेवं ।
अतिपच्छासि विबुद्धो, किं ज्झसितं पएतव्वं ॥७५७॥

गुरुणा पुव्वं संदिट्ठो ओसहातिगमणे अण्णं तत्थेव गंतुकामं साधुं पुच्छति - गच्छसि ? सो पुच्छित-साधु फरुसं वयति – ण ताव कालो, लभसु धिति, किं तडप्फड सेवं।

अहवा – सो चेव पुच्छिओ भणति पच्छद्धं कंठं।

एस गाहत्थो पडिलेहणादिपदेसु जत्थ जत्थ जुज्जते तत्र तत्र सर्वत्र योज्यम् ॥८५७॥

अहवा – दव्वादिणिमित्तं एवं फरुसं भासति –

वत्थं वा पायं वा, गुरूण जोगं तु केणिमं लद्धं ।
किं वा तुमं लभिस्ससि, इति पुट्ठो बेति तं फरुसं ॥८५८॥

एगेण अभिग्गहाणभिग्गहेण साधुणा गुरुपाओग्गं वत्थं पत्तं संथारगादि उग्गमियं, तमण्णेण साहुणा दिट्ठं, तेण सो उग्गमेंतसाहू पुच्छिओ - केणुग्गमितं ? सो भणति – मया, किं वा त्वं क्षमः पाषाणावलद्धो[1] अलद्धिमान् लप्स्यसि, एवं फरुसमाह ॥८५८॥

इदाणिं खेत्तं पडुच्च –

खेत्तमहायणजोग्गं, वसधी संथारगा य पाओग्गा ।
केणुग्गमिता एते, तहेव फरुसं वदे पुट्ठो ॥८५९॥

क्षेत्रेऽप्येवम् ॥८५९॥

---

१ अनादरे।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इदाणिं तीतमणागतकालं पडुच्च –

उडुवास सुहो कालो, तीतो केणेस 'जो इश्रो श्रम्हं ।
जो एस्सति वा एस्से, तहेव फरुसं वदे श्रहवा ॥८६०॥

"उडु" त्ति उडुबद्धकालो, "वास" त्ति वासाकालो ।

श्रहवा – "उडु" त्ति रिउ तस्मिन् वासः सुखेन उडुवाससुखः । शेषं कंठ्यं ॥८६०॥

दव्वादिसु पच्छित्तं भण्णति –

दव्वे खेत्ते काले, मासो लहुश्रो उ तीसु वि पदेसु ।
तवकालविसिट्ठो वा, श्रायरियादी चउण्हं पि ॥८६१॥

दव्वखेत्तकालनिमित्तं फरुसं वयंतस्स पत्तेयं मासलहुं । श्रधवा मासो चेव श्रायरियस्स दोहिं गुरुं । उवज्झायस्स तवगुरु । भिक्खुस्स कालगुरु । खुड्डगस्स दोहिं लहू ॥८६१॥

इदाणिं भाव फरुसं –

भावे पुण कोधादी, कोहादि विणा तु कहं भवे फरुसं ।
उवयारो पुण कीरति, दव्वाति समुप्पती जेणं ॥८६२॥

पुणसद्दो विसेसणे, किं विशेषयति ? भण्णति – दव्वादिएसु वि कोहादिभावो भवति ; इह तु दव्वादिणिरवेक्खो कोहादिभावो घेप्पति । एवं विसेसयति । दव्वादिसु कोहादिणा विणा फरुसं ण भवति ।

चोदग श्राह – तो किमिति दव्वादि फरुसं भन्नति भावफरुसमेव न भन्नइ ?

श्राचार्याह – द्रव्यादीनां उपचारकरणमात्रं, यतस्ते क्रोधादयः द्रव्यादिसमुत्था भवंतीत्यर्थः ॥८६२॥

भावफरुस-उप्पत्तिकारणभेदा इमे –

श्रालत्ते वाहित्ते, वावारित पुच्छिते णिसट्ठे य ।
फरुसवयणम्मि एए, पंचेव गमा मुणेयव्वा ॥८६३॥

"[1]श्रालत्ते वाहित्ते वावारित" एषां त्रयाणां व्याख्या –

श्रालावो देवदत्तादि, किं भो त्ति किं व वंदे त्ति ।
वाहरणं एहि इश्रो, वावारण गच्छ कुण वा वि ॥८६४॥ कंठा

[2]"पुच्छ-णिसट्ठाण" दुवेण्ह वि इमा व्याख्या –

पुच्छा कताकतेसुं, श्रागतवच्चंत श्रातुरादीहिं ।
णिसिरण हिंडसु गेण्हसु, भुंजसु पिश्र वा इमं भंते ॥८६५॥ कंठा

१ गा० ८६३ । २ गा० ८६३ ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पंचसु आलवणादिपदेसु एक्केक्के पदे इमे –

छप्पगारा णेया –

तुसिणीए[1] हुंकारे[2], किं ति[3] च किं चडकरं[4] करेसि त्ति ।
किं णिव्वुती[5] ण देसी, केवतियं[6] वावि रडसि त्ति ॥८६६॥

पुरिसो पुरिसेणालत्तो तुसिणीयादिछण्हपदाण अन्नतरं करेति । एवं वाहितो वि, वावारिओ वि, पुच्छिओ वि, निसिट्ठो वि । ते य पुरिसा इमे – आयरिओ, १ उवज्झाओ, २ भिक्खू, ३ थेरो, ४ खुड्डो य ५ एते आलवंतगा आलप्पा वि एते चेव । संजतीओ वि पंचेव । तं जहा – पवत्तिणी, १ अभिसेया, २ भिक्खुणी, ३ थेरी, ४ खुड्डी य ५ ॥८६६॥

इयाणिं आयरिएण आलवणादिसु जं पच्छित्तं, तं इमाए गाहाए गहितं –

मासो लहुओ गुरुओ, चउरो लहुगा य होंति गुरुगा य ।
छम्मासा लहुगुरुगा, छेदो मूलं तह दुगं च ॥८६७॥

एयं चेव पच्छित्तं चारणप्पओगेण इमाहिं दोहिं गाहाहिं दंसिज्जइ –

आयरिएणालत्तो, आयरिए सोच्च तुसिणीए लहुओ ।
रडसि त्ति छग्गुरुंतं, वाहित्ते गुरुयादि छेदंतं ॥८६८॥

लहुयादी वावारिते, मूलंतं पुच्छिए गुरू णवमं ।
णिस्सट्ठे छसु पदेसु, छल्लहुगादी उ चरमंतं ॥८६९॥

पप्पायरियं सोधी, आयरियस्सेव एस णातव्वा ।
एक्केक्कगपरिहीणा, पप्पभिसेगादि तस्सेव ॥८७०॥

तस्येति आचार्यस्य । तेसिं इमो चारणप्पओगो आयरिएणायरिओ आलत्तो जदि तुसिणीओ अच्छति, तो से मासलहुं । हुंकारं करेइ मासगुरुं । किं त्ति भासति चउलहुं । किं चडगरं करेसि त्ति भासति चउगुरुं । किं णिव्वुत्तिं ण देसि त्ति भासति छल्लहुयं । केवइयं रडसि ति भासति छग्गुरुयं ।

आयरिएणायरिओ वाहित्तो तुसिणीयादिसु मासगुरुगादि छेदे ठाति ।

आयरिएणायरिओ वावारितो तुसिणीयादिसु छसु पदेसु चउलहुगाइ मूले ठायति ।

आयरिएणायरिओ पुच्छिओ तुसिणीयादिसु छसु पदेसु चउगुरुगादि अणवट्ठे ठायति ।

आयरिएणायरिस्स निसिट्ठं तुसिणीयादिसु छसु पदेसु चउलहुगाइ पारंचियं ठायति ।

एवं आयरिओ उवज्झायं आलवति । तत्थ आलवणादिनिमिट्ठं तेसु पंचसु पएसु चारणियापओगेण गुरुभिन्नमासाढत्तं अणवट्ठे ठायति ।

आयरिएण भिक्खु आलत्तो - तत्थ वि पंचसु छसु पएसु तत्थ वि चारणियप्पओगेण लहुअभिन्न-मासाढत्तं मूले ठायति ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आयरिएण थेरा आलत्ता गुरुअवीसराइंदिए आढत्ते छेदे ठायति ।

आयरिएण खुड्डा आलत्ता लहुअवीसराइंदियआढत्तं छग्गुरुए ठायति ।।८७०।।

इयाणिं उवज्झाय-भिक्खू-थेर-खुड्डाणं चारणिया भन्नति ।

तत्थिमा गाहा –

आयरिश्रा अभिसेश्रो, एक्कगहिणो तदेक्किणा भिक्खू ।
थेरे तु तदेक्केणं, थेरा खुड्डा वि एक्केणं ।।८७१।।

इमा चारणिया – उवज्झाओ आयरियं आलवति । एवं उवज्झाओ उवज्झायं, उवज्झाओ भिक्खुं, उवज्झाओ थेरं, उवज्झाओ खुड्डं ।

सव्वचारणप्पओगेण एक्केक्कपदहीणं पण्णरसगुरुयराईदियाढत्तं अणवट्ठे ठायइ ।

भिक्खू वि तदेगपदहीणो सव्वचारणप्पओगेणं लहुपण्णरसराइंदियाढत्तं मूले ठायति ।

थेरो वि तदेक्कपदहीणो सव्वचारणप्पओगेण गुरुदसराइंदियाढत्तं छेदे ठायति ।

खुड्डो वि तदेक्कपदहीणो सव्वचारणप्पओगेण लहुदसराइंदियाढत्त छग्गुरुए ठायति ।।८७१।।

इदाणिं संजतीण पच्छित्तं भन्नति, तत्थिमा गाहा –

भिक्खुसरिसी तु गणिणी, थेरसरिच्छी तु होति अभिसेगा ।
भिक्खुणि खुड्डसरिच्छा, गुरु लहु पणगादि दो इतरे ।।८७२।।

आयरिओ पव्वत्तिणिं आलवति सा तुसिणीयादि पदे करेति; तत्थ से पच्छित्तं भिक्खुसरिसं; तं च उवउज्जिय दट्ठव्वं ।

जहा थेरे आलवंते आयरियादीण पच्छित्तं, तहा आयरिएणालत्ताए अभिसेयाए पच्छित्तं दट्ठव्वं ।

जहा खुड्डायरियाईण पच्छित्तं तहा आयरिय भिक्खुणीए दट्ठव्वं ।

हा आयरिओ थेरिं आलवति सा तुसिणीयादिपदेसु सव्वचारणप्पओगेण गुरुअपचदसराइंदियाढत्तं छल्लहुए ठायति ।

आयरिओ खुड्डिं आलवति तदा सव्वचारणप्पओगेण लहुपंचदसराइंदियाढत्तं चउगुरुए ठायात ।

उवज्झाओ पव्वत्तिणिमाइयासु सव्वचारणप्पओगेण गुरुदसराइंदियाढत्तं छेदे ठायति ।

भिक्खू पव्वत्तिणिमाइयासु लहुदसराइंदियाढत्तं छग्गुरुए ठायति ।

ो पव्वत्तिणिमाइयासु गुरुगपणगाढत्तं छल्लहुए ठायति ।

खुड्डो पव्वत्तिणिमाइयासु लहुगपणगाढत्तं चउगुरुए ठायति । इतरग्गहणा थेरी खुड्डी य दट्ठवा ।

जहा आयरियादओ पव्वत्तिणिमादियासु चारिया तहा पव्वत्तिणिमादियाओ वि आयरियादिसु ारेयव्वा, सव्वचारणप्पओगेण पच्छित्तं तहेव, पव्वत्तिणिमाइया पव्वत्तिणिमाइयासु पच्छित्ता जहायरिय-व्वत्तिणिमादिसु तहा वत्तव्वा । इत्थं पुण जत्थ जत्थ मासलहुं तत्थ तत्थ सुत्तनिवाओ, भिक्खुसदृशी गणिणीरिति वनात् सर्वत्र भिक्षुस्थानात् प्रथमं प्रवर्तते ।।८७२।।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

फरुसवयणे इमे दोसो –

एतेसामण्णयरं, जे भिक्खू लहुसगं वदे फरुसं ।
सो आणा अणवत्थं मिच्छत्तविराधणं पावे ॥८७३॥

(नास्तिचूर्णिः) ॥८७३॥

कारणओ पुण भासेज्जा वि –

बितियपदमणप्पज्झे, अपज्झे वा वइज्ज खरसज्झे ।
अणुसासणाबएसा, वएज्ज व वि किं चि ण ट्ठाए ॥८७४॥

खित्ताइचित्तो भणेज्ज वा, आयरियादि [1]खरसज्झो वा भणेज्जा, अन्नहा न वाइ । मुद्र वि अणुसासणं पडुच्च भणेज्ज, टक्क-मालव-सिंधुदेसिया सभावेण फरुसभासी पंडगादि वा वि किं चि तीव्वो फरुसवयणेण सो य फरुसावितो असहमाणो गच्छइ ॥८७४॥

जे भिक्खू लहुसगं मुसं वएति; वएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१६॥

"मुसं" अलियं, ' लहुसं-अल्पं, तं वदओ मासलहुं ।

तं पुण मुसं चउव्विहं –

दव्वे खेत्ते काले, भावे य लहुसगं मुसं होति ।
एतेसिं णाणत्तं, वोच्छामि अहाणुपुव्वीए ॥८७५॥

णत्तं" विसेसो, "आणुपुव्वीए" दव्वादिउवन्नासकमेण वक्खाणं ॥८७५॥

इमे दव्वादि उदाहरणा –

दव्वम्मि वत्थपत्तादिएसु खेत्ते संथारवसधिमादिसु ।
काले तीतमणागत, भावे भेदा इमे होंति ॥८७६॥

पढमपादस्स वक्खाणं –

पज्झ पडो णेस तुहं, ण यावि सोतस्स दव्वतो अलियं ।
गोरस्सं व भणंते, दव्वभूतो व जं भणति ॥८७७॥

वत्थं पादं च सहसा भणेज्जा, मज्झेस ण तुज्झं, सहसा गोरश्वं ब्रुवते, द्रव्यभूतो वा अनुपयुक्त इत्यर्थः ॥८७७॥

अहवा दव्वालियं इमं –

वत्थं वा पादं वा, अण्णेणुप्पाइयं तु सो पुट्ठो ।
भणति मए उप्पाइयं, दव्वे अलियं भवे अहवा ॥८७८॥

---

१ खरसाध्यः ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वत्थपादादि अण्णेणुग्गमिश्रा अण्णो भणइ मए उप्पाइया ॥८७८॥ दव्वश्रो अलियं गयं।

खेत्तश्रो [1]"संथारवसतिमादीसु" अस्य व्याख्या –

णिसिमादीसम्मूढो, परसंथारं भणाति मज्भेसो।
खेत्तवसधी व अण्णेणुग्गमिता बेति तु मए त्ति ॥८७९॥

"णिसि" त्ति राईए अंधकारे सम्मूढो परसंथारभूमि अप्पणो भणइ; मासकप्पपाउग्गं वा वासावासपाओग्गं वा खित्तं वसही रिउखमा, अण्णेणुग्गमिया भणाति मए ति ॥ ८७९ ॥ खित्तश्रो मुसावाश्रो गश्रो।

[2]"काले तीतमणागए" त्ति अस्य व्याख्या –

केणुवसमिश्रो सड्ढो, मए त्ति ण या सो तु तेण इति तीए।
को णु हु तं उवसामे, अणातिसेसी अहं वस्सं ॥८८०॥

एक्को अभिग्गहमिच्छो एगेण साहुणा उवसामिश्रो। अन्नो साहू पुच्छिश्रो केणेस सड्ढो उवसामिश्रो? अन्नया विहरंतेण मए त्ति। एवं 'तीए" एगो अभिग्गहमिच्छो अरिहंतसाहुपडिणीश्रो, साहूण य [3]समुल्लावे को णु तं उवसामेज्ज। तत्थ एको साहू अणातिसतो भणति – सो य अवस्सं मया उवस्सं मया उवसामियव्वो एवं एष्यकालं प्रति मृषावादः ॥८८०॥

अहवा कालं पडुच्च इमो मुसावादो –

तीतम्मि य अद्धम्मी, पच्चुप्पण्णे यऽणागते चेव।
विधिसुत्ते जं भणितं, अण्णातणिस्संकितं भावे ॥८८१॥

तीतमणागतपडुप्पन्नेसु कालेसु जं अपरिन्नायं तं निस्संकियं भासंतस्स मुसावातो भवति। "विधिसुत्तं" दसवेयालियं, तत्थ वि वक्कसुद्धी, तत्थ जे कालं पडुच्च मुसावादसुत्ता ते इह दट्ठव्वा ॥८८१॥

"[4]भावे भेदो इमो" त्ति अस्य व्याख्या –

पयला[1] उल्ले[2] मरुए[3], पच्चक्खाणे[4] य गमण[5] परियाए[6]।
समुद्देस[7] संखडीश्रो[8] खुड्डग[9] परिहारिय[10] मुहीश्रो[11] ॥८८२॥

अवस्सगमणं[12] दिस्सासू[13], एगकुले[14] चेव एगदव्वे[15] य।
पडियाक्खित्ता गमणं[16], पडियाखित्ता य भुंजणं[17] ॥८८३॥

दोऽवि गाहा जहा पेढे [5]पूर्ववत् ॥८३॥

दव्वादिमुसावायं भासंतस्स किं भवइ?

---

१ गा० ८७६। २ गा० ८७६। ३ संबंधि मृषा। ४ गा० ८७६। ५, २९९-२९९ द्वा०।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आयरियाह –

एतेसामण्णयरं, जो भिक्खू लहुसयं मुसं वयति ।
सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्तविराधणं पावे ॥८८४॥

कंठा ॥८८४॥

कारणओ भासेज्जा वि –

वितियपदं[1] उड्डाहे, संजमहेउं[2] व बोहिए[3] तेणे[4] ।
खेत्ते[5] वा पडिणीए,[6] सेहे[7] वा वादमादीसु[8] ॥८८५॥

१—उड्डाहरक्खणट्ठं, जहा केण ति पुट्ठो – तुब्भं लाउएसु समुद्देसी ? ण च त्ति वत्तव्वं ।

२—"संजमहेउं" अत्थि ते केति मिया दिट्ठा ? दिट्ठेसु वि न दिट्ठ त्ति वत्तव्वं ।

३—"बोधिता" मिच्छा, तेसिं भीओ भणिज्ज – "एसो खंधावारो एति" त्ति ।

४—तेणेसु "एस सत्थो एति" त्ति, "अवसरह" ।

५—"खेत्ते" धीयार (जाइ) भाविए "बंभणो अहमि" त्ति भासए, जत्थ वा साहू न नज्जंति तत्थ पुच्छितो भणति सेय परिव्वायगा मो ।

६—कोइ कस्सइ साहुस्स पदुट्ठो, सो च तं न जाणति, ताहे भणेज्जा "नाहं सो, ण वा जाणे, परदेसं वा गओ" त्ति भणेज्जा ।

७—सेहं वा सण्णायगा पुच्छंति – तत्थ भणिज्जा "नत्थेरिसो ण जाणे, गतो वा परदेसं" ।

८—वादे असंतेणा वि परवादिं निगिण्हिज्जा ॥८८५॥

जे भिक्खू लहुसगं अदत्तमादियइ, आदियंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२०॥

"लहुसं" थोवं, "अदत्तं" तेण्णं, "आदियणं" गहणं, "साइज्जणा" अणुमोयणा, मासलहु पच्छित्तं ।

अदत्तं दव्वादि चउव्विहं –

दव्वे खेत्ते काले, भावे य लहूसगं अदत्तं तु ।
एतेसिं णाणत्तं, वोच्छामि अहाणुपुव्वीए ॥८८६॥

दव्व-खेत्त-कालाणं इमं वक्खाणं –

दव्वे इक्कडकढिणादिएसु खेत्ते उच्चारभूमिमादीसु ।
काले इत्तरियमत्री अजाइत्तु चिट्ठमाईसु ॥८८७॥

वणस्सतिभेदो "इक्कडा" लाडाणं पसिद्धा । कढिणो वंसो आदिग्गहणातो अवलेहणिया दारुदंडय-पादपुंछणमादि एते अणणुन्नाते गिन्हति ।

खेतओ अदत्तं गिन्हति उच्चारभूमि आदि, आदिग्गहणाओ पासवणलाउअणिल्लेवणभूमीए अणणुन्नवित्ता उच्चारातो आयइ । खित्तओ अदत्तं गतं ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

काले "इत्वरं" स्तोकं अणणुन्नवित्ता चिट्ठति । भिक्खादि हिंडतो जाव वासं वासति [1]वितिच्छं वा पडिच्छति, अद्धाणे वा, अणणुण्णवेत्ता रुक्खहेट्ठासु चिट्ठति, निसियति, तुयट्टति वा । दव्वातिसु तिसु वि मासलहुं ॥८८७॥

इदाणिं भावे अदत्तं –

भावे पाउग्गस्सा, अणणुण्णवणाइ तप्पढमताए ।
ठायंते उडुबद्धे, वासाणं वुड्ढवासे य ॥८८८॥

उडुबद्धे वासासु वा वुड्ढावासे वा [2]तप्पढमयाए पायोग्गाऽणणुन्नवणभावेण परिणयस्स दव्वादिसु चेव भावओ लहुसं अदत्तं । उडुवासवुड्ढेसु जं जोग्गं तं पाउग्गं भण्णति ॥८८८।

लहुसमदत्तं गेण्हंतस्स को दोसो ? इमो –

एतेसामण्णयरं, लहुसमदत्तं तु जो तु आतियइ ।
सो आणा अणवत्थं मिच्छत्तविराधणं पावे ॥८८९॥

कारणतो गेण्हतो अपच्छित्ती अदोसो य –

अद्धाणे गेलण्णे, ओमसिवे गामाणुगामिमतिवेला ।
तेणा सावय मसगा, सीतं वासं दुरहियासं ॥८९०॥

अद्धाणाओ निग्गतो पविसंतो गामं वियाले पत्तो ताहे अणणुण्णवितं इक्कडाति गेण्हेज्ज, वसहीए वि अणणुण्णवियाए ठाएज्ज । आगाढगेलण्णे तुरियकज्जे खिप्पामेव अणणुण्णवितं गेण्हेज्ज । ओमोयरियाए भत्तादि अदिण्णं सयमेव गेण्हेज्ज । असिवगहिताणं न कोति देति ताहे अदिण्णं तणसंथारगादि गेण्हेज्ज । गामाणुगामं दूइज्जमाणा वियाले गामं पत्ता जइ य वसही ण लब्भति ताहे बाहिं वसंतु, मा अदत्तं गेण्हंतु, अह बाहिं दुविधा तेणा – सिंघाति वा सावया, मसगेहिं वा खज्जिजति, सीयं वा दुरहियासं, जहा उत्तरावहे अणवरतं वा वासं पडति ॥८९०॥

एतेहिं कारणेहिं, पुव्वं उ घेत्तु पच्छणुण्णवणा ।
अद्धाणणिग्गतादी, दिट्ठमदिट्ठे इमं होति ॥८९१॥

एतेहिं तेणातिकारणेहिं वसहिसामिए दिट्ठे अणुण्णवणा, अदिट्ठे अद्धाण निग्गयादि [3]सयणसमोसिगाइ अणुण्णवेत्तुं घरसामिगा अदिण्णं उ घेत्तुं पच्छा घरसामियमणुण्णवेंति ॥८९१॥

इमेण विहाणेण –

पडिलेहणऽणुण्णवणा, अणुलोमण फरुसणा य अधियासे ।
अतिरिच्चणंमि दायण, णिग्गमणे वा दुविध-भेदो ॥८९२॥

"पडिलेह" त्ति अस्य व्याख्या –

अब्भासत्थं गंतूण पुच्छणा दूरयत्तिमा जतणा ।
तद्दिसमेत्तपडिच्छण, पत्तम्मि कहिं ति सब्भावं ॥८९३॥

१ वा तिगिच्छं प्रतीक्षते । २ परिणाम । ३ पडोसी ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सो घरसामी जदि खेत्तं खलगं वा गतो जति अब्भासे तो गंतुं अणुण्णविज्जति। अह दूरं गतो ताहे संघाडओ णामचिंधेहिं आगमेउं तं दिसं अदूरं गंतुं पडिक्खति जाहे सहू (साहू) समीवं ती ताहे सब्भावो कहिज्जति । जहा तुज्झ वसहीए ठियामो त्ति ॥८९३॥

इदाणिं तुमं अणुजाणसु । जति दिट्ठदिण्णा तो लट्ठं । अह से सुविरत्तं न देति वा ताहे अणुलोमवयणेहिं पण्णविज्जति –

अणुसासणं सजाती, सजातिमेवेति तह वि तु अट्ठंते ।
अभियोगणिमित्तं वा, बंधण गोसे य ववहारो ॥८९४॥

जहा गोजाती गोजातिमंडलच्चुतो गोजातिमेव जाति ; आसण्णे वि णो महिस्सादिसु ठिर्ति करेति एवं वयं पि माणुसमेवेमो । जति तहवि ण देति फरुसाणि वा भणति, ताहे सो फरुसं ण भण्णति; अधिया सिज्जइ । जइ तह वि णिच्छुब्भेज्ज ततो विज्जाए चुण्णेहिं वा वसी कज्जति, णिमित्तेण वा आउंटाविज्जति । तस्सासति रुक्खमातिसु बाहिं वसंतु; मा य तेण समं कलहेंतु ।

अह बाहिं दुविहभेओ – आय – संजमाण, उवकरण – सरीराण वा, संजम – चरित्ताण वा, पण्णवगं च [1]अतिरिच्चते लंघतेत्यर्थः । ताहे भण्णति – अम्हे सहामो, जो एस आगतिमंतो एस रायपुत्तो ण सहिस्सति एस वा सहस्सजोही सोवि कयकरणो किं चि करणं दाएति; जहा "विस्सभूतिणा मुट्ठिप्पहारेण खंधम्मि कविट्ठा पाडिया" । एस [2]दायणा । तह वि अट्ठायमाणे बंधिउं ठवेंति जाव पभायं । सो य जइ रायकुलं गच्छति तत्थ तेण समाणं ववहारो कज्जति । कारणियाणं अग्गतो भणति – अम्हेहिं रायहियं आचिट्ठंतेहिं बद्धो । जइ अम्हे बाहिं मुसिता सावएहिं वा खज्जंता तो रण्णो अहियं अयसो य भवंतो । परकृतनिलयाश्च तपस्विनः, रायरक्खियाणि य तवोधणाणि, ण दोषेत्यर्थः ॥८९४॥

जे भिक्खू लहुसएण सीतोदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा हत्थाणि वा पादाणि वा कण्णाणि वा अच्छीणि वा दंताणि वा नहाणि वा मुहं वा उच्छोल्लेज्ज वा पधोवेज्ज वा; उच्छोल्लेंतं वा पधोवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२१॥

"लहुसं" स्तोकं याव तिण्णि पसती सीतोदगं सीतलं, उसिणोदगं उण्हं "वियडं" ववगतजीवं । एत्थ सीतोदगवियडेहिं सपडिवक्खेहिं चउभंगो । सुत्ते य पढम - ततियभंगा गहिया । दो हत्था हत्थाणि वा, दो पादा पादाणि वा, बत्तीसं दंता दंताणि वा, आसए, पोसए य, अण्णे य इंदियमुहा, मुहाणि वा, "उच्छोलणं" धोवणं, तं पुण देसे सव्वे य । णिज्जुत्तिवित्थरो इमो –

तिण्णि पसती य लहुसं, वियडं पुण होति विगतजीवं तु ।
उच्छोलणा तु तेणं, देसे सव्वे य णातव्वा ॥८९५॥

गतार्थाः ॥८९५॥

आइण्णमणाइण्णा, दुविधा देसम्मि होति णायव्वा ।
आइण्णा वि य दुविधा, णिक्कारणओ य कारणओ ॥८९६॥

---

१ गा० ८९२ । २ गा० ८९२ ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

देसे उच्छोलणा दुविहा - आइण्णा अणाइण्णा य। साधुभिराचर्यते या सा आचिर्णा, इतरा तद्विपरीता। आइण्णा दुविधा – कारणे णिक्कारणे य ॥८९६॥

जा कारणे सा दुविधा –

भत्तामासे लेवे, कारणणिक्कारणे य विवरीयं।
मणिबंधादिकरेसुं, जेत्तियमेत्तं तु लेवेणं ॥८९७॥

तत्थ भत्तामासे "मणिबंधादिकरेसु" ति असणाइणा लेवाडेण हत्था लेवाडिया ते मणिबंधातो जव धोवति, एसा भत्तामासे। इमा लेवे "जेत्तियमेत्तं तु लेवेणं" ति असज्झातिय मुत्तपुरीसादिणा जति सरीराव-यवेण चलणादि गातं लेवाडितं तस्स तत्तियमेत्तं धोवे। एसा कारणओ भणिता। णिक्कारणे तव्विवरीय त्ति॥८९७॥

एतं खलु आइण्णं, तव्विवरीतं भवे अणाइण्णं।
चलणादी जाव सीरं, सव्वम्मि होतऽणाइण्णं ॥८९८॥

भत्तमासे लेवे य इमं आइण्णं, तव्विवरीयं - देसे सव्वे वा, सव्वं अणाइण्णं ॥८९८॥

तत्थ देसे इमं आइण्णं –

मुह-णयण-चलण-दंता, णक्क-सिरा-बाहु बत्थिदेसो य।
परिडाह दुगुंछावत्तियं च उच्छोलणा देसे ॥८९९॥

मुह-णयणादियाण केसि चि दुगुंछाप्रत्ययं परिदाघप्रत्ययं वा देसे सव्वे वा उच्छोलणं करोतीत्यर्थः॥८९९॥

वक्ष्यमाणषोडशभंगमध्यात् अमी अष्टौ घटमाना; शेषा अघटमाना :

आइण्ण लहुसएणं, कारणणिक्कारणे वऽणाइण्णे।
देसे सव्वे य तधा, बहुएणेमेव अट्ठपदा ॥९००॥

आइण्णलहुसकारणदेसे एष प्रथमः। एष एव णिक्कारणसहितः द्वितीयः। अनाचीर्णग्रहणात् तृतीय - चतुर्थौ गृहीतौ। लहुसणिक्कारण देसेत्यनुवर्तते, चतुर्थे विशेषः सर्वमिति वक्तव्यम्। जहा लहुसपए चउरो भंगा तहा बहुएण वि चउरो सव्वे अट्ठ। एव-शब्दग्रहणात् तृतीय चतुर्थ पंचम षष्ठ भंगविपर्यासः प्रदर्शितः ॥९००॥

वक्ष्यमाणषोडशभंगक्रमेण घटमानाघटमानभंगप्रदर्शनार्थं लक्षणम् –

जत्थाइण्णं सव्वं, जत्थ व कारणे अणाइण्णं।
भंगाण सोलसण्हं, ते वज्जा सेसगा गेज्झा ॥९०१॥

यस्मिन् भंगे आचीर्णग्रहणं दृश्यते तत्रैव यदि सर्वग्रहणं दृश्यते ततः पूर्वापरविरोधान्न घटते असौ भंगः। यत्र वा कारणग्रहणे दृष्टे अनाचीर्णं दृश्यते असावपि न घटते। एते वर्जयित्वा शेषा ग्राह्याः ॥९०१॥

सोलसभंगरयणगाहा इमा –

आइण्णे लहुसकारण, देसेतरे भंग सोलस हवंति।
एत्थं पुण जे गेज्झा, ते वोच्छं सुण समासेण ॥९०२॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इतरग्रहणात् अणाइण्णबहुसणिक्कारणसव्वमिति एते पदा दट्ठव्वा ॥९०२॥

अमी ग्राह्या – पढमो –

पढमो ततिओ एक्कारो बारो तह पंचमो य सत्तमओ ।
पण्णर सोलसमो वि य, परिवाडी होति अट्ठण्हं ॥९०३॥

पढमो, ततिओ, एक्कारसो, बारसो, पंचमो, सत्तमो य, दो चरिमा य यथोद्दिष्टक्रमेण स्थापयितव्या इमं ग्रंथमनुसरेज्ज ॥९०३॥

आइण्णलहुसएणं, कारणणिक्कारणे वि तत्थेव ।
णाइण्ण देससव्वे, लहुसे तहिं कारणं णत्थि ॥९०४॥

आइण्ण लहुसएणं कारणे इति प्रथमः । णिक्कारणे तत्थेव त्ति आइण्ण लहुसे अनुवर्तमाने णिक्कारणं द्रष्टव्यम् । द्वितीयो भंगः । पढम-बितिएसु देसमिति अर्थाद् द्रष्टव्यम् । पश्चार्द्धेन तृतीयचतुर्थभंगौ गृहीतौ । अणाइण्णं तृतीये देसे, चतुर्थे सर्वं । लहुसमित्यनुवर्तते । ततियचउत्थेसु कारणं णत्थि ॥९०४॥

इदाणिं पंचमादि भंग प्रदर्शनार्थं गाथा –

आइण्णे बहुएणं, कारणणिक्कारणे वि तत्थेव ।
णाइण्णदेससव्वे, [1]बहुणा तहि कारणं णत्थि ॥९०५॥

पंचमे बहुएणं आइण्णं कारणं । "तत्थेव" त्ति आइण्णबहुएसु अणुवट्टमाणेसु छट्ठे निक्कारणं द्रष्टव्यमिति । पंचमछट्ठेसु देसमिति अर्थादिद्रष्टव्यमिति । सत्तमाष्टमेसु अणाइण्णं । सप्तमे देसं । अष्टमे सव्वं । बहुसमित्यनुवर्तते, कारणं नास्त्येवेत्यर्थः ॥९०५॥

प्रथमभंगानुज्ञार्थं शेषभंगप्रतिषेधार्थं च इदमाह –

आइण्णलहुसएणं, कारणतो देसे तं अणुण्णातं ।
सेसा णाणुण्णाया, उवरिल्ला सत्त वि पदा उ ॥९०६॥

आइण्णलहुसएणं कारणे देसे । एस भंगो अणुन्नातो । उवरिमा सत्त वि पडिसिद्धा भंगा ॥९०६॥

द्वितीयादिभंगप्रदर्शनार्थं इदमाह –

आइण्ण लहुसएणं, णिक्कारण देसओ भवे बितिओ ।
णाइण्ण लहुसएणं, णिक्कारण देसओ तइओ ॥९०७॥
णाइण्ण लहुसएणं, णिक्कारण सव्वतो चउत्थो उ ।
एवं बहुणा वि अण्णे, भंगा चत्तारि णायव्वा ॥९०८॥

आइण्णे लहुसएणं णिक्कारणे देसे एस बितियभंगो । अणाइण्णे लहुसे णिक्कारणे देसे ततियभंगो । अणाइण्णे लहुसे णिक्कारणे सव्वतो चउत्थभंगो । एवं बहुणा वि अण्णे चउरो भंगा कायव्वा ॥९०८॥

---

१ बहुसे ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पढमभंगो सुद्धो, सेसेसु इमं पच्छित्तं –

सुद्धो लहुगा तिसु दुसु, लहुओ चउलहू य अट्ठमए ।
पच्छित्ते परिवाडी, अट्ठसु भंगेसु एएसु ॥६०६॥
[1]सुत्तणिवातो बितिए, ततिए य पदम्मि पंचमे चेव ।
छट्ठे य सत्तमे वि य, तं सेवंताऽऽणमादीणि ॥६१०॥

बितिय-ततिय-पंचम-छट्ठ-सत्तमेसु भंगेसु सुत्तणिवातो मासलहुं । चउत्थऽट्ठमेसु चउलहुं । तमिति देसस्नानं वा सेवंतस्स आणा अणवत्थ मिच्छत्तविराधणा भवति ॥६१०॥

ण्हाणे इमे दोसा –

छक्कायाण विराधण, तप्पडिबंधो य गारव विभूसा ।
परिसहभीरुत्तं पि य, अविस्सासो चेव ण्हाणम्मि ॥६११॥

ण्हायंतो छज्जीवणिकाए वहेति । ण्हाणे पडिबंधो भवति – पुनः पुनः स्नायतीत्यर्थः अस्नानसाधु-शरीरेभ्यः निर्मलशरीरो अहमिति गारवं कुरुते, स्नान एव विभूषा अलंकारेत्यर्थः । अण्हाणपरीसहाओ बीहति तं न [3]जिनातीत्यर्थः । लोकस्याविश्रम्भणीयो भवति ॥६११॥ एते सस्नानदोषा उक्ता ।

इदाणिं कप्पिया –

बितियपदं गेलण्णे अद्धाणे वा तवादिआयरिए ।
मोहतिगिच्छभिओगे, ओमे जतणा य जा जत्थ ॥६१२॥

गिलाणस्स सिंचणादि अंते वा सर्वस्नानं कर्तव्यं । अद्धाणे श्रान्तस्य पादादि देसस्नानं सर्वस्नानं वा कर्तव्यं । वादिनो वादिपर्षदं गच्छतो पादादि देसस्नानं सर्वस्नानं वा आचार्यस्य अतिशयमिति कृत्वा देसस्नानं सर्वस्नानं वा । मोहतिगिच्छाए किढियादि सड्ढियाभिगमे वा देसादिस्नानं – सर्वस्नानं वा करोति । रायाभियोगे सुट्ठुल्लसियातिकारणेसु रायंतेउरादि अभिगमे देशादिस्नानं कर्तव्यम् । ओमे उज्जलवेसस्स भिक्खा लब्भति रंको वा मा भण्णिहिति । जा जतणा, जत्थ पाणए ण्हाणपाणे वा, सा सर्वा कुज्जा ॥६१२॥

जे भिक्खू कसिणाइं चम्माइं धरेति; धरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२२॥

कसिणमत्र प्रधानभावे गृह्यते । तं च कसिणं इमं चउव्विहं –

सकल-प्पमाण-वण्णं, बंधण-कसिणं चतुत्थमजिणं तु ।
अकसिणमट्ठादसगं, दोसु वि पादेसु दो खंडा ॥६१३॥

कसिणं चउव्विहं – सकलकसिणं, पमाणकसिणं, वण्णकसिणं, बंधणकसिणं णातव्वं भवति । एयं चउव्विहं वि न कप्पइ पडिग्गहिउं ।

चोदग आह – जइ एवं तो जं अकसिणं चम्मं तं अट्ठदसखंडं काउं दोसु वि पादेसु परिहाअव्वं । एस दारगाधा अत्थो ॥६१३॥

---

१ नास्तीमा गाथा चूर्णौ २ सूत्रोक्तम् । । ३ जयति ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सकलकसिणाए वक्खाणं –

एगपुड-सगल-कसिणं, दुपडादीयं पमाणग्रो कसिणं ।
कोसग खल्लग वग्गुरी, खपुसा जंघऽद्धजंघा य ॥९१४॥

एगपुडं-एगतलं ग्रखंडियं सकलकसिणं भण्णति । दोमादि तला जीए उवाहणाए, एसा पमाणतो कसिणा । पमाणकसिणाधिकारे इमे वि ग्रण्णे कसिणा तलपडिबद्धा-ग्रद्धं जाव खल्लया जीए उवाहणाए सा [1]ग्रद्धखल्ला, एवं समत्तखल्ला[2] । खवुसा[3] पदाणि चक्कपादिगा च, [4]वग्गुरी छिण्णपुडी, सुक्कजंघाए ग्रद्धं जाव [5]कोसो ग्रद्धजंघा, जाणुयं जाव समत्तजंघा ॥९१४॥

पादस्स जं पमाणं, तेण पमाणेण जा भवे कसणी ।
मज्झम्मि तु अक्खंडा, अण्णत्थ य सकलकसिणं तु ॥९१५॥ कंठा

पमाण-वण्ण-बंध-कसिणाण वक्खाणं

वण्णड्ढ-वण्णकसिणं, तं पंचविधं तु होति णातव्वं ।
बहुबंधणकसिणं पुण, परेण जं तिण्ह बंधाणं ॥९१६॥

यच्चर्म वर्णेनाऽढ्यमुज्ज्वलमित्यर्थः तद्वर्णकृत्स्नं । स कृष्णादि पंचविधः ॥९१६॥

वग्गुरि-खवुस-ग्रद्धजंघा-समत्तजंघाए ग्र वक्खाणं इमं –

दुगपुड-तिगपुडादी, खल्लग-खपुस-द्धजंघ-जंघा य ।
लहुओ लहुया गुरुगा, वग्गुरि गुरुगा य जति वारे ॥९१७॥

उवरिं तु अंगुलीओ, जा छाए सा तु वग्गुरी होति ।
खवुसा उ खलुगमेत्तं, अद्धं सव्वं च दो इतरा ॥९१८॥

"दो इतरा" ग्रद्धजंघ-समत्तजंघा य ॥९१८॥

इदाणिं पच्छित्तं भणति

सकलकसिणं । गाहा ॥

लहुओ लहुया दुपडादिएसु गुरुगा य खल्लगादीसु ।
आणादिणो य दोसा, विराहणा संजमायाए ॥९१९॥

सकलकसिणे मासलहुं । दुपडादिसु चउलहुग्रा । चउगुरुगा इमेसु ग्रद्धखल्ला समत्तखल्ला खवुसा वग्गुरी ग्रद्धजंघा समत्तजंघा य; सव्वेसु चउगुरुगा ॥९१९॥

---

१ या पादार्धमाच्छादयति सा ग्रर्धखल्लका । २ या च सम्पूर्णपादमाच्छादयति सा समस्तखल्लका । ३ या घुटकं पिदधाति सा खपुसा । ४ या पुनरंगुलिं च्छादित्वा पादावुपरिच्छादयति सा वागुरा । ५ यत्र तु पाषाणादिषु प्रतिस्खलिताः पादनखा मा भज्यन्तामितिबुद्धयाङ्गुलिरंगुष्ठो वा प्रक्षिप्यते स कोशकः ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

(आणाइग्रा य दोसा, संयमविराहणा आयविराहणा य । तत्थ कमणीहिं परिहिआहिं पीपीलिआ-दिअविराहणा संयमविराहणा वद्धे छिन्ने पक्खलणा आयविराहणा पमत्तं वा देवया छलेज्जा ।) ॥६१९॥

उवाणहाधिकारे इमेसु पच्छित्तं भण्णति –

अंगुलिकोसे पणगं, सकले सुक्के य खल्लए लहुओ ।
बंधणवण्णपमाणे, लहुगा तह पूर पुण्णे य ॥६२०॥

अंगुट्ठंगुलिकोसे पणगं । उवाणहाए अपडिबद्धे सुक्कखल्लाए मासलहुं । पूरपुण्णाए चउलहुं । वण्णड्ढे चउलहुं । बंधणकसिणे य चउलहुं अद्धखल्लादिसु चउगुरुगमभिहितं ॥६२०।

तद्विशेषणार्थमिदमाह –

अद्धे समत्तखल्लग, वग्गुरि खपुसा य अद्धजंघा य ।
गुरुगा दोहि विसिट्ठा, वग्गुरिए अण्णतर एवं ॥६२१॥

अद्धखल्ला, समत्तखल्ला, खवुसा, अद्धसंमत्तजंघा य दो वि एक्कं चेव ट्ठाणं, एतेसु चउसु तवकालविसिट्ठं चउगुरुगं । वग्गुरिए तवकालाणं अण्णतरं गुरुअं दायव्वं ॥६२१॥

इदाणिं प्रायश्चित्तवृद्धिप्रदर्शनार्थं इदमाह –

जत्तियमित्ता वारा, तु बंधए मुंचए तु जतिवारा ।
सट्ठाणं ततिवारे, होति विवड्ढी य पच्छित्ते ॥६२२॥

अंगुलिकोसगं जत्तिया वारा बंधति मुयति वा तत्तिया चेव पंचरातिदिया भवंति । एवमन्यत्रापि सट्ठाणं तत्तिया वारा भवति । "होति विवड्ढी य पच्छित्ते' त्ति एक्कं पणगादि सट्ठाणं, बितियं आणाभंग-प्रत्ययं ङ्क=४ गुरु; । तइयमनवस्था प्रत्ययं ङ्का । चतुर्थं मिथ्यात्वजननप्रत्ययं ङ्का । डंकणादि आयविराहणादि प्रत्ययं - ङ्का । संजमे कायविराहणा णिप्फण्णं च एवं पच्छित्तस्स वुड्ढी ।

अहवा – अभिक्खपडिसेवणातो उवरि ट्ठाणंतरवुड्ढी भवति ॥६२२॥

सुत्तनिवातप्रदर्शनार्थं इदमाह –

सुत्तणिवातो सगलकसिणं मितं जो तु गेण्हती भिक्खू ।
सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्तविराधणं पावे ॥६२३॥ कंठा

इदाणिं, उपानत्क दोषप्रदर्शनार्थं इदमाह –

गव्वो[१] णिम्मद्दवता[२], णिरवेक्खो[३] णिद्दओ[४] णिरंतरता[५] ।
भूताणं[६] उवघातो, कसिणे चम्मंमि छ दोसा ॥६२४॥ द्वा० गा०

"गव्वो णिमद्दवे" त्ति दो दारा ।

आसगतो हत्थिगतो, गव्विज्जति भूमितो तु कमणिल्लो ।
पादो तु समाउक्को, कमणी तु खरा अधियभारा ॥६२५॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जहा पदचारिल्लं पडुच्च आसगतो गव्विज्जति, तं पडुच्च हस्त्यारूढो गव्विज्जति, एवं [1]अणुवाहतो कमणिल्लो गविज्जति। पादो मृदुत्वान्न तथा जीवोपघाताय यथा उपानत्का कठिणा अधिकभाराक्रान्ता जीवोपघाताय भवंति ॥९२५॥

इदाणिं "[2]णिरवेक्ख" त्ति दारं –

कंटादी पेहंतो, जीवे वि हु सो तहे पेहेज्जा।
अत्थि महं ति य कमणी, णावेक्खति कंटए ण जिए ॥९२६॥

अणुवाहणो कंटादी पेहंतो जीवा वि पेहेज्जा। स – उवाहणो पुण निरपायत्वादात्मनो न कंटकाद्यपेक्षते, अतो जीवेष्वपि निरपेक्षः ॥९२६॥

इदाणिं "[3]णिद्दए" त्ति दारं –

पुव्वं अदता भूतेसु, होति बंधति कमेसु तो कमणी।
जायति हु तदब्भासा, सुदआलुस्सा वि णिद्दयता ॥९२७॥

"पुव्वं" आदौ "अदया" निर्दयत्वं यदा आत्मनो मनसि कृतं भवति। तदा कमेसु कमणीओ बंधति। "तदब्भासा" सुदयालुस्स वि पुरिसस्स एवं निद्दयता जायति ॥९२७॥

इदाणिं "[4]निरंतर" त्ति दारं –

अवि अंबखुज्ज पादेण पेल्लितो अंतरंगुलगओ वा।
मुच्चेज्ज कुलिंगादी, न य कमणीपेल्लिओ जियइ ॥९२८॥

"अवि" संभावणत्थे, "अंबकुज्जं" पादतलमध्यं, तेन "पेल्लितो" आक्रान्तः, अंगुष्ठांगुल्यंतरं अंतरंगुलं अपि च, अणुवाहणस्स एतेसु पदेसु ठितो न मारिज्जति, ण य उवाहणाहिं णिरंतरं भूमिफुसणाहिं अक्कंतो जीवति ॥९२८॥

इदाणिं "[5]भूयाणं उवघातं" त्ति दारं –

किंह भूताणुवघातो, ण होहिति पगतिदुब्बलतणूणं।
सभराहि पेल्लिताणं, कक्खलफासाहिं कमणीहिं ? ॥९२९॥

"किह" त्ति केन प्रकारेण, "भूता" जीवा, "उपघातो" पीडा व्यापादनं वा पगति सभावं, दुब्बलं अदढं "तनुः" शरीरं, "सभराहि" पुरुषभाराक्रान्ताभिः, "पेल्लितो" आक्रान्तः कठिनस्पर्शन[6]देहाभिः उपानत्काभिः। शिष्यो वक्तव्यः "त्वरितं आख्यायतां", "कथं उपघातो न भविष्यतीत्यर्थः ?" ॥९२९॥

अववादे पुण कारणे घेत्तव्वा, जतो भणणति –

अद्धाणे[1] गेलण्णे[2], अरिसा[3] असहू[4] य चक्खुभिण्णे[5]यं[6]।
दुब्बलचक्खू[7] बाले[8], अज्जाणं[9] कारणज्जाए[10] ॥९३०॥

---

१ अनुपानहं पुरुषं विलोक्य। २ गा० ९२४। ३ गा० ९२४। ४ गा० ९२४। ५ गा० ९२४। ६ "देहाहिं" प्रत्यन्तरे।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

"अद्धाणे गेलण्णे" त्ति वक्खाणेति –

कंटाहिसीतरक्खट्ठता विहे खउमसमादि जा गहणं।
ओसह-पाण गिलाणे, अहुणुट्ठित भेसयट्ठा वा ॥६३१॥

अद्धाणपडिवण्ण कंटक - अहि - सीय - रक्खट्ठता कोस जाव खवुसअद्धजंघसमत्तजंघातो वि घेतव्वातो।

अहवा-अणाणुपुव्वीए खवुसं आदिकाउं सव्वे वि भेदा घेत्तव्वा। गिलाणोसहं पाउं पुढवीए ण ठवेति पाए, मा सीताणुभावा तो जीरेज्ज, अहुणुट्ठितो गिलाणो, अग्गिबलणिमित्तं, गिलाणट्ठा वा तुरियं ओसहट्ठं गंतव्वं ॥६३१॥

इदाणिं "अरिसिल्लादीणि" तिण्णि दाराणि –

अरिसिल्लस्स व अरिसा, मा खुब्भे तेण बंधए कमणी।
असहुमवंताहरणं, पाओ घट्टो य गिरिदेसे ॥६३२॥

अरिसिलस्स मा पादतलदौर्वल्यादर्शक्षोभो भवेदिति। असहिष्णुः राजादि दीक्षितः सुकुमारपादः असक्तः उपानत्काभिर्विना गंतुं।

एत्थ दिट्ठंतो — उज्जेणीए अवंतिसोमालो। गिरिदेसे चंकमओ तलाइं घट्टयंति गिरिदेसे वा ण संक्कति विणा उवाणहाहिं चंकमिउं ॥६३२॥

"भिएण" कुट्ठाति तिण्णि दारा युगवं वक्खाणेति –

कुट्ठिस्स सक्करादीहि वा विभिण्णो कमो तु मधुला वा।
बालो असंवुडो पुण, अज्जा विह दोच्च पासादी ॥६३३॥

भिण्णकुट्ठियस्स पादा कट्ठसक्करकंटगादीहिं दुक्खविज्जंति, पादे गंडं "महुला" भण्णति, सा वा उट्ठिता। बालो असंवुडो जत्थ तत्थ वा पादे छुब्भति। विह अद्धाणं तत्थ जता अज्जाओ णिज्जंति, दोच्चं चोरातिभयं तत्थ वसभा कमणीओ कमेसु काउं पंथं मोत्तूणं पासट्ठिता गच्छन्ति। सव्वाणि वा उप्पहेण गच्छंति। आइसहाओ सव्वे वि उम्मग्गेण गच्छंति। जो चक्खुस्सा दुब्बलो सो वेज्जोवएसेण कमेसु कमणीओ पिणद्धि। जं पाएसु अब्भंगणोवाहणाइ परिकम्मं कज्जति तं चक्खूवगारगं भवति। जओ उत्तं –

"दंताना मंजनं श्रेष्ठं, कर्णानां दन्तधावनम्।
शिरोऽभ्यंगश्च पादानां, पादाभ्यङ्गश्च चक्षुषाम् ॥"

इदाणिं कारणजाए त्ति दारं –

कुलमादिकज्ज दंडिय, पासादी तुरियधावणट्ठा वा।
कारणजाते वण्णे, सागारमसागरे जतणा ॥६३४॥

कुल - गण - संघकज्जेसु, दंडिया वा ओलग्गणे, तुरियधावणे स्मरणाचारभृतवत् कमणी कमेसु बंधतिं, अन्यत्र वा कारणे आयरियपेसणे वा, तुरिए वा सद्दाओ दारगाहत्थ। चसद्दसूइए सम्मद्ददारे उदगागणि - चोर-

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सावयभएसु वा णस्संतो, जत्थ सागारियदोसो णत्थि तत्थ जयणा। जत्थ पुण सागारिया उड्डाहंति तत्थ अवणउं गामादिसु पविसंति।

अहवा – मोरंगादि चित्तियाओ सागारियाउ त्ति काउं ण गेण्हति, उणुब्भडातो गेण्हति ॥६३४॥

एवं अद्धाणादिकारणेसु गेण्हमाणस्स वण्णकसिणे कमो भण्णति –

पंचविह - वण्ण - कसिणे, किण्हं गहणं तु पढमओ कुज्जा।
किण्हम्मि असंतम्मी, विवन्नकसिणं तहिं कुज्जा ॥६३५॥

पंचविहे वण्णकसिणे पुव्वं कण्हं गेण्हति। तम्मि असंते लोहियादि गेण्हति। तस्स वि असते तेल्लमादीहिं विवण्णकरणं करेति, मा उड्डाहिस्सति लोगो रागो वा भविस्सति ॥६३५॥

सगलप्पमाणबंधणकसिणेसु विही भण्णति –

[1]कसिणं पि गेण्हमाणो, झुसिरगहणं तु वज्जए साहू।
बहुबंधणकसिणं पुण, वज्जेयव्वं पयत्तेणं ॥६३६॥

सकलकसिणं पमाणकसिणं गेण्हमाणो झुसिरं वज्जते। बहुबंधणकसिणं पयओ वज्जते ॥६३६॥

तं बंधणमिमं –

दोरेहि व वज्झेहि व, दुविहं तिविहं च बंधणं तस्स।
कित-कारित-अणुमोदित, पुव्वकतम्मी अहिकारो ॥६३७॥

दोरेण वा वध्रेण वा दो तिण्णि वा बंधे करेति। कसिणं वा अकसिणं वा सयं ण करेति, अण्णेण वा ण कारवेति, कीरंतं णाणुमोदति। "पुव्वकत" अहाकडए अधिकारो ग्रहणमित्यर्थः ॥६३७॥

ते पुण दो तिण्णि वा बंधा भवंति –

खलुगे एक्को बंधो, एक्को पंचंगुलस्स दोण्णेते।
खलुगे एक्को अंगुट्ठे, वितिओ चउरंगुले ततिओ ॥६३८॥

खलुगे [2]गले वध्रबंधो एगो, अंगुट्ठअंगुलीणं च एगो, एते दोण्णि। खलुहए एगो, अंगुट्ठे बितिओ, चउरंगुलीए ततिओ ॥६३८॥

जो पुण सयं करेति कारवेति अणुमोदेति वा तत्थ पच्छित्तं –

सयकरणे चउलहुआ, परकरणे मासियं अणुग्घायं।
अणुमोदणे वि लहुओ, तत्थ वि आणादिणो दोसा ॥६३९॥

आणादिणो य दोसा, सयंकरणे अ उड्डाहो [3]पदकरः संभाव्यते ॥६३९॥

अकसिणसगलग्गहणे, लहुओ मासो तु दोस आणादी।
बितियपदघेप्पमाणे, अट्ठारस जाव उक्कोसा ॥६४०॥

---

१ "किण्हंमि" कृष्णवर्णमपि गृण्हन् शुषिरग्रहणं साधुः प्रयत्नतो वर्जयेत् इति बृहत्कल्पे उद्दे० ३ सू० ५–६ भाष्यगाथा ३८६८। २ घुंटके। ३ चर्मकरः।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सकलादिचउप्पएसु सोलसभंगा । तत्थेस अट्ठमो भंगो पमाण-वण्ण-बंधणेहिं अकसिणं सगलकसिणं पुण । एत्थ से मासलहुं । स्पष्टः सूत्रनिपातः । गेण्हंतस्स आणादिणो दोसा । अद्धाणकारणेसु बितियपदेण घेप्पमाणे सोलसभंगो ग्रहीतव्वो, मध्ये खंडिता इत्यर्थः ।

अत्राह चोदक – दुखंडादि उक्कोसेणं जाव णव खण्डा एगा, दोसु वि अट्ठारस ॥९४०॥

इदमेवाभिप्रायं चोदकः व्याख्यानयति –

जदि दोसा भवंतेते, जहुत्ता कसिणाऽजिणे ।
अत्थावत्तीए सूएमो, एरिसं दाइ कप्पति ॥९४१॥

"अजिनं" चर्म, तम्मि कसिणे धरिज्जमाणे जदि एवं दोसा भवंति, तो अत्थावत्तीए "सूएमो"- जाणामो, "दाइ" त्ति अभिप्रायदर्शनं, ईदृशं कल्पते ॥९४१॥

अकसिणमट्ठारसगं, एगपुडविवण्ण एगबंधं च ।
तं कारणंमि कप्पति, णिक्कारणधारणे लहुओ ॥९४२॥

एष षोडशभंगो गृहीतः पूर्वाधेन, तदपि कारणे णिक्कारणधरणे लहू ॥९४२॥

चोदग एवाह –

जति अकसिणस्स गहणं, भागे [1]काउं कमे तु अट्ठरसा ।
एग पुड विवण्णेहि य, तेहिं तहिं बंधए कज्जे ॥९४३॥

जति अकसिणं घेप्पति तो जहाहं भणामि तहा घेप्पउ । दो उवाहणाओ अट्ठारसखंडे काउं एगपुडविवण्णं च जत्थ जत्थ पाद-पदेसे आबाहा तहिं तहिं कज्जे एगदुगादिखण्डे बंधति ॥९४३॥

कहं पुण अट्ठारसखण्डा भवंति, भण्णति –

पंचंगुलपत्तेयं, अंगुट्ठमहे य छट्ठखंडं तु ।
सत्तममग्गतलम्मी, मज्झट्ठमपण्हिगा णवमं ॥९४४॥

पंचंगुलपत्तेयं पंचखंडा । अंगुट्ठगस्स अहो छट्ठं खंडं । अग्गतले सत्तमं खडं । मज्झतले अट्ठमं खंडं । पण्हियाए णवमं खंडं । एवं बितिउवाहणाए वि णव । एवं सव्वे वि अट्ठारसखण्डा भवंति ॥९४४॥

एवं चोदकेनोक्ते आचार्याह –

[2]एवंतियाण गहणे, मुंचंते वा वि होति पलिमंथो ।
बितियपदघिप्पमाणे, दो खंडा मज्झपडिबद्धा ॥९४५॥

एवंतियाण खंडाणं गहणमोयणे सुत्तत्थाणं पलिमंथो भवति ॥९४५॥

पुव्वद्धस्स वक्खाणं –

पडिलेहा पलिमंथो, णदिमादुदए य मुंच बंधंते ।
सत्थ - फिट्टण तेणा, अंतरबंधे य डंकणता ॥९४६॥

---

१ उं कमेण अट्ठदस इति प्रत्यन्तरे । २ एवंतीयाण गहणे होति पलिमंथो, पाठान्तरं – एतावतां खण्डानां ग्रहणे मासलघुप्रायश्चित्तमसमाचारीनिष्पन्नमित्यर्थः ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जाव अट्ठारसखंडा दुसंभं पडिलेहेति ताव सुत्तत्थे पलिमंथो, णदिमादिउदगेण उत्तरंतो जाव मुयति उत्तिण्णो य जाव बंधति ताव सत्थातो फिट्टति। तम्रो तेणेहि म्रोदुब्भति, अदेसिको वा अडविपहेण गच्छति, तत्थ वि तरच्छ-वग्घ-अत्थभिल्लादिभयं[1] बहुखंडंतरेसु वा कंटगेसु विज्झड्डितं किज्जति वा। बहुबन्धघस्सेण वा डंको होज्जा।

चोदगाह – ता कहं खंडिज्जति ?

आचार्याह – पच्छद्धे - बितियपदे जता घेप्पति तदा मज्झतो दो खंडा कीरति। एवं अधिकरणादि-दोसा जढा ॥६४६॥

तम्मज्झे बंधणं दुविधं :–

तज्जातमतज्जातं, दुविधं तिविधं च बंधणं तस्स।
तज्जातम्मि व लहुओ, तत्थ वि आणादिणो दोसा ॥६४७॥

तं पुण तलबंधणं पादबंधणं वा दुविधं – तज्जातमतज्जातं। तज्जातं वद्धेहिं, अतज्जातं दोरेहिं। अतज्जाएण बंधमाणे मासलहुं, णिक्कारणे तज्जाएण वि मासलहुं, आणादिणो य दोसा भवंति ॥६४७॥

जे भिक्खू कसिणाइं वत्थाइं धरेइ, धरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२३॥

सदसं प्रमाणातिरिक्तं कृत्स्नं भवति। एष सूत्रार्थः।

इदाणिं निर्युक्तिविस्तरः –

दव्वे खेत्ते काले, भावे कसिणं चउव्विहं वत्थं।
दव्वकसिणं तु दुविधं, सगलं च पमाणकसिणं च ॥६४८॥

दव्वकसिणं दुविहं – सगलकसिणं पमाणकसिणं च ॥६४८॥

तत्थ सगलकसिणं इमं –

घण-मसिणं निरुवहतं, जं वत्थं लब्भए सदसियागं।
एगं तु सगलकसिणं, जहण्णयं मज्झिमुक्कोसं ॥६४९॥

"घणं" तंतुहिं समं, "[2]मसिणं" कलं मोडियं वा, "णिरुवहतं" ण अंजणखंजणोवलित्तं वा अग्गिविदड्ढं मूसगखइयं वा। जं एरिसं सदसं लब्भति तं सगलकसिणं। तं पुण "जहण्णं" मुहपोत्तियाइ, "मज्झिमं" पडलादि, 'उक्कोसं" कप्पादि ॥६४९॥

इदाणिं पमाणकसिणं –

वित्थारायामेणं, जं वत्थं लब्भते समतिरेगं।
एयं पमाणकसिणं, जहण्णियं मज्झिमुक्कोसं ॥६५०॥

"वित्थारो" पोहच्चं, "आयामो" देघत्तं, जं वत्थं जहाभिहियपमाणओ समतिरेगं लब्भति तं पमाणकसिणं भण्णति। तं पि तिविहं जहण्णाइ ॥६५०॥

---

१ शस्त्रम्। २ कोमलम्।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इदाणिं खेत्तकसिणं –

जं वत्थं जंमि देसम्मि, दुल्लभं अग्घियं च जं जत्थ ।
तं खेत्तजुअं कसिणं, जहण्णयं मज्झिमुक्कोसं ॥६५१॥

जं वत्थं जम्मि खेत्ते दुल्लभं, जत्थ वा खेत्ते गतं अग्घितं भवति, अग्घियं णाम बहुमोल्लं, तं तेण कसिणं भवति । यथा पूर्वदेशजं वस्त्रं लाटविषयं प्राप्य दुर्लभं अर्घितं च । तदपि त्रिविधं जघन्यादि ॥६५१॥

इदाणिं कालकसिणं –

जं वत्थं जम्मि कालम्मि, अग्घियं दुल्लभं च जं जम्मि ।
तं कालजुअं कसिणं, जहण्णगं मज्झिमुक्कोसं ॥६५२॥

जं वत्थं जम्मि काले अग्घितं, जम्मि काले दुल्लभं, तम्मि चेव काले कालकसिणं भवति । तदपि त्रिविधं – जघन्यादि । गिम्हे जहा कासाइ, सिसिरे पावारादि, वासासु कुंकुमादि खचितं ॥६५२॥

इदाणिं भावकसिणं –

दुविधं च भावकसिणं, वण्णजुअं चेव होति मोल्लजुअं ।
वण्णजुअं पंचविधं, तिविधं पुण होति मोल्लजुअं ॥६५३॥

भावकसिणं दुविधं – वण्णतो मोल्लतो य । वण्णेण पंचविधं । मोल्लओ जहण्णमज्झिमुक्कोसं ॥६५३॥

तत्थ वण्णतो इमं –

पंचण्हं वण्णाणं, अण्णतराण जं तु वण्णड्ढं ।
तं वण्णजुअं कसिणं, जहण्णयं मज्झिमुक्कोसं ॥६५४॥

वर्णाढ्यं यथा – कृष्णं मयूरग्रीवसन्निभं, नीलं सुकपिच्छसन्निभं, रक्तं इन्द्रगोपसन्निभं, पीतं सुवर्णवत् शुक्लं शंखेंदुसन्निभं । तमेवंविधं वण्णकसिणं । तदपि त्रिविधं जघन्यादि ॥६५४॥

इदाणिं दव्व-खेत्त-कालकसिणेसु पच्छित्तं भण्णति –

चाउम्मासुक्कोसे, [1]मासिय मज्झम्मि पंच य जहण्णे ।
तिविधम्मि वि वत्थम्मि, तिविधा आरोवणा भणिता ॥६५५॥

उक्कोसेसु, दव्व-खेत्त-काल-कसिणेसु पत्तेयं चउलहुआ । मज्झिम - दव्व - खेत्त - काल - कसिणेसु पत्तेयं मासलहुं । जहण्णेसु दव्व-खेत्त-काल-कसिणेसु पत्तेयं पणगं, तिविहे जहण्णादिगे, तिविधा दव्वादिगा आरोवणा भणिया ॥६५५॥

अहवा – तिविधा आरोवणा चउलहुमासो पणगं ।

दव्वादि तिविहकसिणे, एसा आरोवणा भवे तिविधा ।
एसेव वण्णकसिणे, चउरो लहुगा व तिविधे वि ॥६५६॥

पूर्वार्धं गतार्थम् । एसेव वण्णकसिणे भणिता ।

---

१ मासो प्र० ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अहवा – वण्णकसिणे जहण्णमज्झिमुक्कोसए तिविधे वि रागमिति कृत्वा चउलहुग्रं चेव ।

अहवा – विसेसो एत्थ कज्जति । उक्कोसे दोहिं गुरु, चउलहुं । [1]मज्झिमे तवगुरु जहण्णे दोहिं लहुं ॥९५६॥

इदाणिं मुल्लकसिणं –

मोल्लजुतं पुण तिविधं, जहण्णयं मज्झिमं च उक्कोसं ।
जहण्णे अट्ठारसगं, सतसाहस्सं च उक्कोसं ॥९५७॥

मुल्लभावकसिणं तिविधं – जहण्ण-मज्झिमुक्कोसं । जस्स अट्ठारस रूवया मुल्लं तं जहण्ण-कसिणं । सतसहस्समुल्लं उक्कोस-कसिणं । सेसं वि मज्झं मज्झिमकसिणं ॥९५७॥

इमं पुण कतमेण रूवएण पमाणं ? भणणति –

दोसाभरगा दीविच्चगाउ सो उत्तरापधे एक्को ।
दो उत्तरापधा पुण, पाडलपुत्ते हवति एक्को ॥९५८॥

"साहरको" णाम रूपकः, सो य दीविच्चिको । तं च दीवं सुरट्ठाए दक्खिणेण जोयणमेत्तं समुद्दमवगाहित्ता भवति, तेहिं दोहिं दिव्विच्चगेहिं एक्को उत्तरापहको भवति, तेहिं एक्को पाडलिपुत्तगो भवति ॥९५८॥

अहवा –

दो दक्खिणापहावा, कंचीए णेलओस दुगुणो उ ।
एक्को कुसुमणगरओ, तेण पमाणं इमं होति ॥९५९॥

दक्खिणापहगा दो रूपगा कंचिपुरीए एक्को णेलओ भवति, "नेलको" रूपकः, स नेलओ दुगुणो एगो "कुसुमपुरगो" भवति, कुसुमपुरं "पाडलिपुत्तं", अनेन रूपकप्रमाणेन अष्टादशकादिप्रमाणं ग्रहीतव्यम् । मूलवड्ढीओ पच्छित्तवड्ढी भवति ॥९५९॥

अट्ठारसवीसा य, अउणपण्णा य पंच य सयाइं ।
एगूणगं सहस्सं, दसपण्णासा सतसहस्सं ॥९६०॥

चत्तारि छच्चलहुगुरु, छेदो मूलं च होति बोधव्वं ।
अणवठप्पो य तहा, पावति पारंचियं ठाणं ॥९६१॥

अट्ठारसवीसा य, सतमड्ढातिज्जा य पंच य सयाइं ।
सहसं च दस सहस्सा, पण्णास तहा सतसहस्सं ॥९६२॥

एतेसु जहासंखेण पच्छित्तं -

लहुओ लहुया गुरुगा छम्मासा होंति लहुगगुरुगा य ।
छेदो मूलं च तहा, अणवट्ठप्पो य पारंची ॥९६३॥ कंठा

१ मध्यमे अन्यतरगुरुकमिति बृहत्कल्पे उद्दे० ३ भाष्यगाथा ३८८९ ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अहवा –

अट्ठारसवीसा य, पण्णास तधा सयं सहस्सं च ।
पण्णासं च सहस्सा, तत्तो य भवे सयसहस्सं ॥९६४॥
चउगुरुग छच्च लहु, गुरु छेदो मूलं च होति बोद्धव्वं ।
अणवट्ठप्पो य तहा, पावति पारंचियं ठाणं ॥९६५॥

अष्टादशक रूपकमूल्ये चतुर्गुरवः, विंशतिमूल्ये षट्लघवः, पंचाशत् मूल्ये षट्गुरवः, शतमूल्ये छेदः, सहस्रमूल्ये मूलं, पंचाशत् सहस्रमूल्ये अनवस्थाप्यं । शतसहस्रमूल्ये पारांचिकं ।

एयं तु भावकसिणं, केण विसेसो उ दव्वभावाणं ।
भण्णति सुणसु विसेसं, इणमो फुडपागडं एत्थं ॥९६६॥

एयं मुल्लकसिणं ।

एवं दव्वादिकसिणे वक्खाए चोदगाह – द्रव्यभाववस्त्रयोर्विशेषं नोपलभामहे कुतः ?

उच्यते – यो द्रव्यस्य वर्णः स भाव उच्यते, न च भावमन्तरेण अन्यद् द्रव्यमस्तीति, अतो नास्ति विशेषः ॥९६६॥

आचार्याह –

कज्जकारणसंबंधो, दव्ववत्थं तु आहितं ।
भावतो वण्णमायुत्तं, लक्खणादी य जे गुणा ॥९६७॥

कार्यं पटः, कारणं तन्तवः तयोः संबंधः, यत् तंतुभिरातानवितानत्वं, तद् द्रव्यवस्त्रमुच्यते ।

कृष्णादिवर्णमृदुत्वश्लक्षणादयश्च गुणा भाववस्त्रमुच्यते । इदं द्रव्यनयाभिप्रायादुच्यते द्रव्ये आधारभूते वर्णादयो गुणा भवन्तीत्यर्थः ॥९६७॥

इमं वा भाववत्थं –

अहवा रागसहगतो, वत्थं धारेति दोससहितो वा ।
एवं तु भावकसिणं, तिविधं परिणामणिप्फण्णं ॥९६८॥

रागेण वा धरेति दोसेण वा तं भावकसिणं, परिणामतो तिविधं – रागदोसेहिं जहण्णेहिं जहण्णं, मज्झिमेहिं मज्झिमं, उक्कोसेहिं उक्कोसं । इहापि पच्छित्तं पूर्ववत् ॥९६८॥

सुत्तणिवातप्रदर्शनार्थम् –

सुत्तणिवातो कसिणे, चतुव्विधे मज्झिमम्मि वत्थम्मो ।
जहण्णे य मोल्लकसिणे, तं सेवंतम्मि आणादी ॥९६९॥

चउव्विहे मज्झिमे दव्व-खेत्त-कालवण्ण-भावकसिणे य जहण्णे य मुल्लकसिणे मासलहुं चेव ॥९६९॥

सकल-कसिणं य प्रमाणातिरित्ते य इमे दोसा –

भारो भयपरियावण, मारणमधिकरण अधियकसिणम्मि ।
पडिलेहाणालोवे, मणसंतावो उवादाणं ॥९७०॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

भारो भवति पमाण-कसिणेण । श्रद्धाण पवण्णस्स श्रप्पणो चेव भयं भवति, भारेण वा परिताविज्जति। पमाणकसिणे य वत्थणिमित्ते मारिज्जति । हरिए श्रहिकरणं भवति । श्रधिकसिणे एते दोसा । सगलकसिणे य एते चेव । इमे श्रण्णे सागारियभया ण पडिलेहिज्जति तया तित्थकराणाए लोवं करेति, हरिते मणसंतावो, सेहस्स उण्णिक्खमंतस्स उवादाणं भवति ॥९७०॥

गोमियगहणं श्रण्णे, सिरुंभणं धुव्वणकम्मबंधो य ।
ते चेव हुंति तेणा, तण्णिस्साए श्रहव श्रण्णे ॥९७१॥

गोमिया [1]सुंकिया, कसिण-वत्थ-णिमित्तं तेहिं घेप्पंति । एतेसिं पि श्रत्थि त्ति श्रण्णे वि साहुणो रुब्भंति । धुवणकाले य महंतो श्रायासो तत्थ परितावणादि दोसा । बहुणाऽतिद्रवेण धोव्वति, श्रणुवएसकारिणो कम्मबंधो य । एते चेव गोम्मियादि श्रण्णपहेण गंतु, तेणा भवंति । तण्णिस्साए-तेहिं वा पेरिया श्रण्णे भवंति । श्रधवऽण्णे चेव तेणया सगलकसिणस्स भवंति ॥९७१॥

एत्थ दिट्ठंतो –

एगो राया श्रायरिएण उवसमितो । सो सव्वं गच्छं कंबलरयणेहिं पडिलाभिउं उवट्ठितो । श्रायरिएहिं णिसिद्धो "ण वट्टति" त्ति । श्रतिणिबंधा एगं गहितं । भणाति पाउएणं हट्टमग्गेण गच्छह । तहा कयं । तेणगेण दिट्ठा । रातिं श्रागंतु तेणगेण भणियं - जति ण देह वत्थं रायदिण्णं तो भे सिरच्छेयं करेमि । श्रायरिएण भणियं – खंडियं । दंसेह । दंसियं । रुट्ठो भणेति – सिव्विउं देह । श्रण्णहा भे मारेमि । तं च सिव्विउं दिण्णं ।

विधिप्रदर्शनार्थं इदमाह –

कसिणे चतुव्विधम्मी, इति दोसा एवमादिणो होंति ।
उप्पज्जंते तम्हा, श्रकसिणगहणं ततो भणितं ॥९७२॥

दव्वादिगे चउव्विहे कसिणे जतो एवमादिदोसा उप्पज्जंति तम्हा ण घेत्तव्वं, श्रकसिणं गहियव्वं ॥९७२॥

तं च इमं –

भिण्णं गणणाजुत्तं, च दव्वतो खेत्त-कालतो उचियं ।
मोल्ललहुवण्णहीणं, च भावतो तं श्रणुण्णातं ॥९७३॥

"भिण्ण" मिति श्रदसागं । गणाए तश्रो कप्पा । जं च जस्स गणणापमाणं वुत्तं तं तेण जुत्तं गेण्हति ।

श्रहवा – जुत्तमिति स्वप्रमाणेन दव्वतो [2]थूरं श्रगरहियं, खेत्तकालाश्रो जणे उचियं सव्वजणभोग्गं । मुल्लश्रो श्रप्पमुल्लं । वण्णहीणं भावतो एरिसं श्रणुण्णायं ॥९७३॥

कारणे कसिणं पि गेण्हेज्जा –

बितियपदे जावोग्गहो, गणचिंतगउचियदेस गेलण्णे ।
तब्भाविए य तत्तो, पत्तेयं चउसु वि पदेसु ॥९७४॥

---

१ शुल्कपालाः । २ श्रदशाकम् ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

"बितियपदे" त्ति अववादपदेण, "जावुग्गहो" त्ति चिरा चरियाए णिग्गतो आयरिओ जाव णियत्तति ता दसाओ ण छिज्जंति। गणचिंतगो वा धरेति, ओमादिसु [1]केवडियहेउं घनादि घेप्पति। दव्वतो अववातो गतो। **इदाणिं खेत्तओ** "उचितदेसे" तस्मिं देसे उचित कसिणं, सव्वजणो तारिसं परिभुंजति। कालओ अववाओ "गेलण्णे" जाव गिलाणो ताव कसिणं धरेति तं पाउणिज्जंतं [2]ण ण्हसति। भावतो अववाओ 'तब्भाविए य तत्तो" रायादि दिक्खिओ, ओढण-परिहाणेसु कसिणवत्थभाविओ ण तस्स खंडिज्जति। दव्वादिएसु चउसु वि पदेसु पत्तेयं अववाओ भणिओ ॥६७४॥

[3]जे भिक्खू अभिण्णाइं वत्थाइं धरेति, धरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२४॥

जे भिक्खू लाउयपायं वा दारुयपायं वा मट्टियापायं वा सयमेव परिघट्टेइ वा संठवेइ वा जमावेइ वा परिघट्टेंतं वा संठवेंतं वा जमावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२५॥

भाष्यं यथा प्रथमोद्देशके तथाऽत्रापि। तत्र परकरणं प्रतिषिद्धं। इह तु स्वयं करणं प्रतिषिध्यते।

[4]लाउय-दारुय-पादे, मट्टिय-पादे य तिविधमेक्केक्के।
बहु-अप्प-अपरिकम्मे, एक्केक्कं तं भवे कमसो ॥६७५॥

[5]परिकम्म० १ (६८६) अद्धं० २ (६८७) जं पुव्व० ३ (६८८) तिण्णि वि० ४ (६८९) उक्कोस० ५ (६९०) एवं चेव० ६ (६९१) भत्त० ७ (६९२) वट्टं० ८ (६९३) परिघट्ट० ९ (६९४) पढम० १० (६९५) एता गाहा दस।

घट्टितसंठविताणं, पुव्विं जमिताण होतु गहणं तु।
असती पुव्वकताणं, कप्पति ताहे सयं करणं ॥६७६॥

बीतिय० (६९७) पच्छा० (६९८) एताओ चेव गाहाओ।

जे भिक्खू दंडगं वा लट्ठियं वा अवलेहणं वा वेणुसूइयं वा सयमेव परिघट्टेइ वा, संठवेइ वा, जमावेइ वा, परिघट्टेंतं वा, संठवेंतं वा, जमावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२६॥

इदमपि प्रथमोद्देशकवद् वक्तव्यम्।

डंडग विडंडए वा, लट्ठि विलट्ठी य तिविध तिविधा तु।
वेलुमय वेत्त-दारुग, बहु-अप्प-अहाकडे चेव ॥६७७॥

---

१ केणतियहेतुना। २ न सरति। ३ एतदनन्तरकं सूत्रं नास्ति चूर्णौ। ४ "लाउय०" इत्यारभ्य "एताओ चेव गाहाओ" इत्यन्तं नास्ति चूर्णौ। ५ प्रथमोद्देशके एकोनचत्वारिंशत् सूत्रे।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तिन्नि उ हत्थे०	(प्र. उ. ७००)	अद्धं गु०	(७०१)	जे पुव्व०	(७०२)
दुपय०	(,, ७०३)	पढम०	(७०४)	घट्टिय०	(७०५)
परिघ०	(,, ७०६)	बितिय०	(७०७)	पच्छा०	(७०८)
उडुबद्धे०	(,, ७०९)	बारस०	(७१०)	एक्केक्का	(७११)
अद्धंगुल०	(,, ७१२)	जा पुव्व०	(७१३)	पढम०	(७१४)
घट्टिय०	(,, ७१५)	बितियपद०	(७१६)	पच्छा०	(७१७)
वेणुमयी०	(,, ७१८)	एक्केक्का०	(७१९)	अद्धंगु०	(७२०)
जा पुव्व०	(,, ७२१)	पढम०	(७२२)	घट्टिय०	(७२३)
बितिय०	(,, ७२४)	पच्छा०	(७२५)		

जे भिक्खू णियग-गवेसियं पडिग्गहगं धरेइ; धरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२७॥

नियकः स्वजनः, स साधुवचनाद् गवेषयति, तेनान्विष्टं याचितं गवेसियं गृण्हातीत्यर्थः एस सुत्तत्थो।

अधुना निर्युक्तिविस्तरः।

संजतणिए गिहिणिए, उभयणिए चेव होइ बोधव्वे।
एते तिण्णि विकप्पा, णियगम्मी होंति णायव्वा ॥६७८॥

जो गिहत्थो पादं गवेसाविज्जति सो निजत्वेनान्विष्यते। साधोर्यस्य तत् पात्रमस्ति गृहिणः (वा) संजतणिए णो गिहि-णीए, एवं ठाणक्कमेण चउभंगो कायव्वो। चतुर्थः शून्यः। ततियभंगे जइ वि संजयस्स णिओ तहावि गिहिणा मग्गावेति ॥६७८॥

इमेहिं कारणेहिं –

आसण्णतरो भयमायतीतकारोवकारिता चेव।
इति णीयपरे वा वी णीएण गवेसए कोयी ॥६७९॥

स्वजनत्वेनासन्नतरो भजस्वितरो वा भाति, वा आयतिं सयस्स करेति, उपकारेण प्रत्युपकारेण वा प्रतिबद्धः इति कारणोपप्रदर्शने, परशब्द एष्यत्सूत्रस्पर्शने आद्यत्रयभंगप्रदर्शनार्थः ॥६७९॥

एत्तो एगतरेणं, णितिएणं जो गवेसणं कारे।
भिक्खू पडिग्गहम्मी, सो पावति आणमादीणि ॥६८०॥

तिण्हं भंगाणं एगतरेणावि जो पडिग्गहं गवेसइ सो पावति आणमादीणि ॥६८०॥

दाउमप्रियं तथाप्येवं ददाति –

लज्जाए गोरवेण व, देइ णं समूहपेल्लितो वा वि।
मित्तेहि दावितो वा, णिस्सो लुद्धो विमं कुज्जा ॥६८१॥

बहुजणमज्झे मग्गितो लज्जाए ददाति। जेण मग्गितो तस्स गोरवेण देति। बहुजणमज्झे मग्गितो बहुजणेण वुत्तो देति। मित्ताण पुरओ मग्गिओ मित्तेहिं भणिओ देति। "णिस्सो" दरिद्रः, तम्मि वा भायणे लुद्धो इमं कुज्जा ॥६८१॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पच्छाकम्मपवहणे, अचियत्ता संखडे य दोसे य ।
एगतरमुभयतो वा, कुज्जा पत्थारतो वा वि ॥९८२॥

तं दाउं अप्पणा विसूरंतो अण्णस्स भायणस्स मुहकरणं कोरणाति पच्छाकम्मं करेति । अण्णं वा अपरिभोगं पवाहेज्जा, संजए गिहत्थे वा अचियत्तं करेज्ज, अचियत्तेण जहासंभवं वित्तिवोच्छेदं करेज्ज, साहुणा गिहत्थेण वा सद्धिं दाविउ त्ति तो असंखडं करेज्ज, साहुस्स गिहत्थस्स वा उभओ वा पउसेज्ज, पत्थारओ वा सव्वसाहूणं पदुसेज्ज । पत्थारओ वा डहण-घाय-मारणादि सयं करेज्ज कारवेज्ज वा ॥९८२॥

कारणओ पुण गिहिणा मग्गावेउं कप्पेज्ज –

संतासंतसतीए, अथिर अपज्जत्तलब्भमाणे वा ।
पडिसेधऽणेसणिज्जे, असिवादी संततो असती ॥९८३॥

"संतं" विज्जमानं, "असंतं" अविज्जमानं । संतेसु चेव विसूरति, असंतेसु वा विसूरेइ । तत्थ संतासंती इमा अथिरं हुंडं अपज्जत्तं वा अत्थि गिहकुलेसु वा ण लब्भंति, रायादिणा वा पडिसेधिए ण लब्भंति, अणेसणिज्जा वा लब्भंति, असिवादीहिं वा, संततो असती ॥९८३॥

असिवादी इमं –

असिवे ओमोयरिए, रायदुट्ठे भए व गेलण्णे ।
असती दुल्लहपडिसेवतो य गहणं भवे पादो ॥९८४॥

भाणभूमीए अंतरा वा असिवं, एवं ओमरायदुट्ठभया वि, गिलाणो ण सक्केति पादभूमिं गंतुं, दुल्लभपत्ते वा देसे, राइणा वा पडिसिद्धा, एरिसाए संतासंतीए गिहिगविट्ठस्स गहणं भवे ॥९८४॥

असंतासंती इमा –

भिण्णे व ज्झामिते वा, पडिणीए साणतेणमादीसु ।
एएहिं कारणेहिं, णायव्वाऽसंततो असती ॥९८५॥

भिण्णं, "झामियं" दड्ढं, पडिणीयसाणतेणमादीहिं हडं, अण्णं व णत्थि, एवं असतो असंतासंती गया ॥९८५॥

दुविहा ऽसतीए इमं विधिं कुज्जा –

संतासंतसतीए, गवेसणं पुव्वमप्पणा कुज्जा ।
तो पच्छा जतणाए, णीएण गवेसणं कारे ॥९८६॥

दुविहा ऽसतीए पुव्वमप्पणा गवसेणं कुज्जा, सयमलब्भमाणे पच्छा जयणाए णितेण गवेसावते ॥९८६॥

अहवा गविट्ठे अलद्धे इमा विही –

पुव्वोवट्ठमलद्धे, णीयमपरं वा वि पट्ठवे तूणं ।
पच्छा गंतुं जायति, समणुव्वूहंति य गिही वि ॥९८७॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पुव्वं संजएण गविट्ठं ण लद्धं ताहे संजतो नियं परं वा पुव्वं तत्थ पट्ठवेति, गच्छ तुमं तो पच्छा अम्हे गमिस्सामो, तुज्झयपुरओ तं मग्गिस्सामो, तुमं उववूहेज्जासि-"जतीणं पत्तदाणेण महंतो पुण्णखंधो बज्झति," उववूहिते जति ण लब्भति पच्छा भणेज्जासु वि "देहि" त्ति एवं पदोसादयो दोसा परिहारिया भवंति ॥६८७॥

जे भिक्खू पर-गवेसियं पडिग्गहगं धरेइ, धरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२८॥

"परः" अस्वजनः भंगचतुष्कादि शेषं पूर्वसूत्रवत् द्रष्टव्यम् ।

संजयपरे गिहिपरे उभयपरे, चेव होंति बोद्धव्वे ।
एते तिन्नि विकप्पा, नायव्वा होंति उ परंमि ॥६८८॥

(६८० - ६८१ - ६८७ - १६४ - १६५ - १६६ - १६७ - १६८ - १६६ - १७० ताओ चेव गाहाओ)

जे भिक्खू वर-गवेसियं पडिग्गहगं धरेइ; धरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२६॥

"वर" शब्दप्रतिपादनार्थमाह –

जो जत्थ अचित्तो खलु, पमाणपुरिसो पधाणपुरिसो वा ।
तम्मी वरसद्दो खलुं, सो गामियरट्ठितादी तु ॥६८६॥

जो पुरिसो जत्थ गामणगरादिसु अर्च्यते, अचितो वा, खलुशब्दः अवधारणाथ, गामणगरादि-कारणेसु पमाणीकतो, तेसु वा गामादिसु धणकुलादिणा पहाणो, एरिसे पुरिसे वरशब्दप्रयोगः । सो य इमो हवेज्ज "गामिए" त्ति गाममहत्तरः "रट्ठिए" त्ति - राष्ट्रमहत्तरः । आदिसद्दातो भोइयपुरिसो वा शेषं पूर्ववत् ॥६८६॥ एत्तो० (६८०) पच्छा० (६८२) संता० (६८३) असिवादि० (६८४) भिन्नेव० (६८५) ताओ चेव गाहाओ ।

संतासंतसतीए, गवेसणं पुव्वमप्पणो कुज्जा ।
एत्तो पच्छा जयणाए, वरं गविट्ठं पि कारेज्जा ॥६६०॥

जे भिक्खू बल-गवेसियं पडिग्गहगं धरेइ; धरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३०॥

"बलं" सारीरं जनपदादि वा –

जो जस्सुवरिं तु पभू, बलियतरो वा वि जस्स जो उवरिं ।
एसो बलवं भणितो, सो गहवति सामि तेणादि ॥६६१॥

"जो" त्ति यः पुरुषः यस्य पुरुषस्योपरि प्रभुत्वं करोति सो बलवं भण्णति ।

अहवा – अप्रभू वि जो बलवं सो वि बलवं भण्णति । सो पुण गृहपतिः गामसामिगो वा तेणगादि वा । शेषं पूर्ववत ॥६६१॥

एत्तो० (६८०) पच्छा० (६८२) संता० (६८३) असिवे० (६८४) भिन्नेव० (६८५) ।

संतासंतसतीए, गवेसणं पुव्वमप्पणो कुज्जा ।
तो पच्छा उ बलवता, जयणाए गवेसणं कारे ॥६६२॥

जे भिक्खू लव-गवेसियं पडिग्गहगं धरेइ, धरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३१॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

दाणफलं लविऊणं पडिग्गहं मग्गति –

दाणफलं लवितूणं, लावावेतु गिहिअण्णतित्थीहिं ।
जो पादं उप्पाए, लव-गविट्ठं तु तं होति ॥३६३॥

दाणफलं अप्पणा कहेति । गिहिअण्णतित्थिएहिं वा कहावेत्ता जो पादं उप्पादेति एयं लव-गविट्ठं भण्णति ॥६६३॥

तस्सिमे विहाणा –

लोइय-लोउत्तरियं, दाणफलं तु दुविधं समासेणं ।
लोइयणेगविधं पुण, लोउत्तरियं इमं तत्थ ॥६६४॥

समासतो दुविधं दाणफलं – लोइयं लोउत्तरियं च । लोइयं अणेगविहं – गोदानं भूमीदानं भक्तप्रदानादि ।

लोउत्तरियं इमं ॥६६४॥

अण्णे पाणे भेसज्ज-पत्त-वत्थे य सेज्ज संथारे ।
भोज्जविधे पाणरागे, भायण भूसा गिहा सयणा ॥६६५॥

अण्णपाणादियाण सत्तण्हं पच्छद्धेण जहासंखं फला – अण्णदाणे भोज्जविही भवति, पानकदाने द्राक्षापानकविधी, भेसजदाणे आरोग्यविधी, पत्तदाणेण भायणविधी, वत्थदाणेण विभूसणविधी, सेजादाणेण विविहा गिहा, संथारगदाणेण भोगंगादि सेजाविहाणा भवंति ॥६६५॥

संखेवओ वा फलं इमं –

अधवा वि समासेणं, साधूणं पीति-कारओ पुरिसो ।
इह य परत्थ य पावति, पीतीओ पीवरतरीओ ॥६६६॥

अहवासद्दो विकप्पवायगो, "समासो" संखेवो, साधूणं भत्तपाणेहि पीतीमुप्पाएंतो इहलोए परलोए य पीवरातो पीतीओ पावति । "पीवरं" प्रधानं, 'तर' शब्दः आधिक्यतरवाचकः, सर्वजनाधिक्यतरा-प्रीतीः प्राप्नोतीत्यर्थः ॥६६६॥ शेषं पूर्ववत् । एत्तो एगतरेणं० (६८०) पच्छाकम्मेय० (६८२) संतासंत० (६८३) असि० (६८४) भिन्ने० (६८५) ताओ चेव माहाओ ।

संतासंतसतीए, गवेसणं पुव्वमप्पणो कुज्जा ।
एतो पच्छा जयणाए, लवं-गविट्ठं पि कारेज्जा ॥६६७॥

णवरं –

एसेव गमो णियमा, दुविधे उवहिम्मि होति णायव्वो ।
पुव्वे अवरे य पदे, सेज्जाहारे वि य तहेव ॥६६८॥

दुविहे उवकरणे – ओहिए उवग्गहिए य । उस्सग्गववाएहिं एसेव गमो । सेज्ज-आहारेसु एसेव विही भाणियव्वो ॥६६८॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जे भिक्खू णितियं अग्गपिंडं भुंजइ; भुंजंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३२॥

"णितियं" धुवं सासयमित्यर्थः, "अग्गं" वरं प्रधानं ।

अहवा – जं पढमं दिज्जति सो पुण भत्तट्ठो वा भिक्खामेत्तं वा होज्जा, एस सुत्तत्थो ।

अधुना निर्युक्तिविस्तरः –

णितिए उ अग्गपिंडे, णिमंतणोवीलणा य परिमाणे ।
साभाविए य एत्तो, तिण्णि य कप्पंति तु कमेणं ॥९९९॥

णितिग्गऽग्गा सुत्ते वक्खाया । गिहत्थो णिमंतेति, साहू उपीलण्णं करेति, साहू चेव परिमाणं करेति, साभावियं गिहत्थो देति । तिण्णि आइल्ला ण कप्पंति, साभावियं कप्पति ॥९९९॥

णिमंतणोवीलणपरिमाणाणं इमाओ तिण्णि वक्खाणगाहाओ –

भगवं ! अणुग्गहंता, करेहि मज्झं ति भणति आमं ति ।
किं दाहिसि जेणट्ठो, गतस्स तं दाहि ति ण वत्ति ॥१०००॥

दाहामि त्ति य भणिते, तं केवतियं व केच्चिरं वा वि ।
दाहिसि तुमं ण दाहिसि, दिण्णादिण्णे य किं तेण ॥१००१॥

जावतिएणट्ठो मे, जच्चिय कालं च रोयए तुब्भं ।
तं तावतियं तच्चिर, दाहामि अहं अपरिहीणं ॥१००२॥

गिही णिमंतेति "भगवं ! अणुग्गहं करेह, मज्झ घरे भत्तं गेण्हह" । साहू भणति "करेमिणुग्गहं, किं दाहिसि ?" गिही भणति 'जेण भे अट्ठो' । साहू उवीलणं करेमाणो भणति – घरं गयस्स तं दाहिसि ण वा । गिहिणा "दाहामि" त्ति य भणिते साहू परिमाणं कारवेंतो भणति "तं परिमाणओ केवतियं केवचिरं वा कालं दाहिसि ? प्रथमपादोत्तरं आह" दाहिसि तुमं, ण दाहिसि ?" दत्तमपि तत् अदत्तवद् द्रष्टव्यम्, स्वल्पत्वात् । गृहस्थः द्वितीयपादोत्तरमाह "जावतिएण भत्तेण अट्ठो भे जावतियं वा कालं तुब्भट्ठो ।" गिही पुणो भणति – किं बहुणा भणिएणं जं तुब्भं रोयते दव्वं जावतियं जत्तियं वा कालं तमहमपरिहीणं अपरिसंतो दाहामि त्ति ॥१००२॥

णिमंतणोप्पीलणपरिमाणेसु वि मासलहुं पच्छित्तं ।

चोदग आह –

साभावितं च उचियं, चोदगपुच्छाण पेच्छमो कोयि ।
दोसो चतुव्विधम्मी, णितियम्मि अग्गपिंडम्मि ॥१००३॥

साभावियं जं अप्पणो अट्ठा रद्धं, उचितं दिणे दिणे जनियं रज्झंतं ।

चोदको भणति – एरिसे साभाविए णिमंतणोपीलणपरिमाणे य चउव्विहे वि अग्गपिंडे दोसं ण पेच्छामो ॥१००३॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आचार्याह –

साभावि णितियकप्पत्ति, अणिमंतणोवीलअपरिमाणे य ।
जं वा वि सामुदाणी, तं भिक्खं दिज्ज साधूणं ॥१००४॥

साभावियं अत्तट्ठा रद्धं, तं नितितं दिणे दिणे अनिमंतियस्स अणोपीलियं अपरिमाणकडं च । जं वा वि सामुदाणीसामान्यं गृहपाकपक्वं तं णिमंतणोपीलणादीहि भिक्खामेत्तमवि अकप्पं, अण्णहा साहूणं कप्पं ॥१००४॥

साभावियउचिए वि णिमंतणाकप्पंतिएहिं इमे दोसा –

णिप्फण्णो वि सअट्ठा, उग्गमदोसा उ ठवितगादिया ।
उप्पज्जंते जम्हा, तम्हा सो वज्जणिज्जो उ ॥१००५॥

अप्पट्ठा वि णिप्फण्णे ठवियगादि उग्गमादि दोसा भवंति । निकाचितोऽहमिति अवश्यं दातव्यं, कुंडगादिसु स्थापयति । तस्मान्निमंत्रणादि पिण्डो वर्ज्यः ॥१००५॥

ओसक्कण अहिसक्कण, अज्झोयरए तहेव णेक्कंती ।
अण्णत्थ भोयणम्मि य, कीते पामिच्चकम्मे य ॥१००६॥

अवरसं दायव्वे अतिप्पए साहुणो आगच्छंति, रंवियपुव्वस्स उसक्कणं करेज्ज, उस्सूरे आगच्छंति त्ति अहिसक्कणं करेज्ज । अज्झोयरयं वा करेज्ज । णिक्काउ त्ति काउं जति ते अण्णत्य णिमंतिया तहा वि तदट्ठाए किणेज्ज वा पामिच्चेज्ज वा आहाकम्मं वा करेज्ज ॥१००६॥

कारणे पुण णिकायणापिंडं गेण्हेज्ज ।

इमे कारणा –

असिवे ओमोयरिए, रायदुट्ठे भये व गेलण्णे ।
अद्धाण रोहए वा, जयणा गहणं तु गीतत्थे ॥१००७॥

असिवग्गहितो ण लब्भति, णिमंतणाइएसु वि गेण्हेज्ज ।

अधवा – असिवे कारणठितो असिवग्गहिय कुलाणि परिहरंतो असिवाओ असंथरंतो अगहियकुलेसु अपावंतो, निमंतणा वीलणादिसु वि गेण्हेज्ज । ओमे वि अप्फचंतो । एवं रायदुट्ठे भएसु अच्छंतो गच्छंतो वा गिलाणपाउग्गं वा णिमंतणादिएसु गेण्हेज्जा । अद्धाणे रोहए वा अप्फच्चंतो गीतत्थो पणगपरिहाणीए जाहे मासलहुं पत्ते ताहे णीयग्गपिंडं गेण्हति ॥१००७॥

जे भिक्खू णितियं पिंडं भुंजइ; भुंजंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३३॥
जे भिक्खू णितियं अवड्ढभागं भुंजइ; भुंजंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३४॥
जे भिक्खू णितियं भागं भुंजइ, भुंजंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३५॥
जे भिक्खू णितियं अवड्ढभागं भुंजइ, भुंजंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३६॥

"पिंडो" भत्तट्ठो, "अवड्ढो" तस्सद्धं, "भागो" त्रिभागः, त्रिभागद्धं "अवड्ढ" भागो ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

एसेव गमो णियमा, णिइते पिंडम्मि होतऽवड्ढे य ।
भागे य तस्सुवड्ढे, पुव्वे अवरम्मि य पदम्मि ॥१००८॥

पिंडो खलु भत्तट्ठो, अवड्ढपिंडो उ तस्स जं अद्धं ।
भागो तिभागमादी, तस्सद्धमुवड्ढभागो य ॥१००९॥

गतार्था एव ॥१००९॥

जे भिक्खू णितियं वासं वसति; वसंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३७॥

उडुबद्ध वासासु अतिरिक्तं वसतः णितियवासो भवति ।

इदानिं निर्युक्तिमाह –

दव्वे खेत्ते काले, भावे णितियं चउव्विहं होति ।
एतेसिं णाणत्तं, वोच्छामि अहाणुपुव्वीए ॥१०१०॥

दव्व-खेत्त-काल-भावेसु णितियं चउव्विहं। एतेसिं "नानात्वं" विशेषं, तमानुपूर्व्या वक्ष्ये ॥१०१०॥

संजोगचतुष्कभंगप्रदर्शनार्थमाह –

दव्वेण य भावेण य, णितियाणितिए चतुक्कभयणा उ ।
एमेव कालभावे, दुयस्स व दुए समोतारो ॥१०११॥

दव्वतो णितिए, खेत्ततो णितिए, एवं चउभंगो कायव्वो ।

तत्थ पढमभंगभावणा –

संथारगाइ दव्वाणि कालदुगातीताणि तम्मि चेव खेत्ते परिभुंजंतो णितितो भवति, पढमभंगो ।

संथारगाति दव्वाणि कालदुगातीताणि अण्णम्मि खेत्ते णेउं परिभुंजति, बितियभंगो ।

तम्मि चेव खेत्ते अण्णे संथारगादि गेण्हति, ततियभंगो ।

नितियं पडुच्च चउत्थभंगो सुण्णो । एवं कालभावेसु वि चउभंगो कायव्वो ।

कालओ वि णियए भावओ वि णियए । ङ्क । तत्थ पढमभंगो कालदुगातीतं वसति सड्ढादिसु भावपडिबद्धो पढमभंगो । कालदुगातीतं वसति ण सड्ढादिसु रागपडिबद्धो बितियभंगो । कालदुगणिग्गतस्स वि सड्ढातिसु भावपडिबद्धो, ततियभंगो । चतुर्थः शून्यः । "दुयस्स व दुवे समोयारो" त्ति – कालभाव – दुगस्स दव्व - खेत्तदुए समोतारः ॥१०११॥

कालो दव्वऽवतरती, जम्हा दव्वस्स सो तु पज्जाओ ।
भावो खेत्ते जम्हा, ओवासादीसु य ममत्तं ॥१०१२॥

कालो दव्वे समोतरति, जम्हा सो दव्वपज्जातो । एत्थ दव्वकालेसु चउभंगो भावेयव्वो । भावो खेत्ते समोतरति, जम्हा ओवासाइसु भावपडिबंधो भवति । एत्थ वि खेत्तभावेसु चउभंगो भावेयव्वो ।

खेत्तकालचउभंगे इमा भावणा –

तम्मि य खेत्ते मासातीतं वसति; पढमभंगो ;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

चरिमं उडुबद्धितं जत्थ मासकप्पं ठिया तत्थेव वासं ठियाणं बितियभंगो ।

अन्यकाल (ला) प्राप्तेरिति । अण्णं भागं पडिवसभं वा संकमंतस्स [1]सच्चेव भिक्खायरिया ततियभंगो । चतुर्थः शून्यः ॥१०१२॥

जो दव्वणितितो सो इमे पडुच्च –

परिसाडिमपरिसाडी, संथाराहारदुविहमुवधिम्मि ।
डगलग-सरक्ख-मल्लग, मत्तगमादीसु दव्वम्मि ॥१०१३॥

संथारो दुविहो – परिसाडी अपरिसाडी य, आहारेंतेसु चेव कुलेसु गेण्हति, दुविहो य उवही – ओहितो उवग्गहितो य, पासवण-खेल-सण्णाणं तिण्णि मत्तया ॥१०१३॥

कालदुगातीतादीणि, संथारादीणि सेवमाणा उ ।
एसो तु दव्वणितिओ, पुण्णेवंतो वहिं णेंतो ॥१०१४॥

एते संथारगादिदव्वे कालदुगातीते अपरिहरंतो णितितो भवति । सबाहिरियंसि वा खेत्ते अंतो मासकप्पे पुण्णे ते चेव संथारगादि बहिं णितो दव्वणितितो भण्णति ॥१०१४॥

इदाणिं खेत्तणितितो –

ओवासे संथारे, विहार-उच्चार-वसधि-कुल-गामे ।
णगरादि देसरज्जे, वसमाणो खित्ततो णितिए ॥१०१५॥

ंथारगो वासे ।

अहवा – संथारो पृथक् परिगृह्यते, विहारो सज्झायभूमी, उच्चारो सन्नाभूमि, (वसति) कुलगामादी ण मुच्चति, पुनः पुनः तेष्वेव विहरति । एस खेत्ते णितिओ ॥१०१५॥

इदाणिं कालणितिओ –

चाउम्मासातीतं, वासाणुबुद्ध मासतीतं वा ।
वुड्ढावासातीतं, वसमाणे कालतोऽणितिते ॥१०१६॥

उदुवासकालातीतं वसंतो कालणितिओ, वुड्डणिमित्तं बहुकालेण वि णितिओ ण भवति वुड्ढकार्य-परिसमाप्तौ उपरिष्टाद्वसन् नितिओ भवति ॥१०१६॥

इदाणिं भावणितिओ –

ओवासे संथारे, भत्ते पाणे परिग्गहे सड्ढे ।
सेहेसु संथुएसु य, पडिबद्धे भावतो णितिए ॥१०१७॥

जे सेहा ण तावत् प्रव्रजंति पूर्वापरेण संथवेण संथुताओ वासादिसु सव्वेसु रागं करेंतो भावपडिबद्धो भवति ॥१०१७॥

---

[1] तत्थे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वसधी ण एरिसा खलु, होहिति अण्णत्थ णेव संथारे ।
ण य भत्त मणुन्नविधि (विही) सड्ढा सेहादि वऽण्णत्थ ॥१०१८॥

अण्णत्थ एरिसा वसधी णत्थि त्ति रागं करेति । एवं संथारगभत्तपाणसड्ढसेहादिसु वि ॥१०१८॥

इदाणिं दव्व-खेत्त-काल-भावेसु पच्छित्तं भण्णति –

उक्कोसोवधिफलए, देसे रज्जे य वुड्ढवासे य ।
लहुगा गुरुगा भावे, सेसे पणगं च लहुगो तु ॥१०१९॥

दव्वं पडुच्च उक्कोसोवहीए फलए य चउलहुआ । खेत्तं पडुच्च देसरज्जेसु चउलहुआ । कालं पडुच्च वासातीते वुड्ढवासातीते य चउलहुआ । रागेण भावे सव्वत्थ चउगुरुगा । संथारगवज्जेसु तणेसु डगल-छार-मल्लएसु य पणगं । सेसेसु दव्वादिएसु प्रायसो मासलहुयं ॥१०१९॥

सुत्तणिवातो णितिए, चतुव्विधे मासियं जहिं लहुगं ।
उच्चारितसरिसाइं, सेसाइं विगोवणट्ठाए ॥१०२०॥

चउव्विहे दव्वादिणियते जत्थ मासलहुं तत्थ सुत्तणिवातो । सेसा पच्छित्ता शिष्यस्य विकोवणट्ठा भणिता ॥१०२०॥

कारणओ पुण दव्वादि चउव्विहं पि णितियं वसेज्ज ।

ते इमे कारणा –

असिवे ओमोयरिए, रायदुट्ठे भए व आगाढे ।
गेलण्ण उत्तमट्ठे, चरित्तसज्झाइए असती ॥१०२१॥

बाहिं असिवं वट्टति अतो कालदुगातीतं पि एगखेत्ते वसेज्ज, बहिं ओमरायदुट्ठबोहियभए वा आगाढे वसेज्ज । उत्तिमट्ठपडियरगा वा वसेज्ज, बहिया चरगादिसु चरित्तदोसा अतो वसेज्ज, बहिं वा सज्झातो ण सुज्झति, अतो सज्झायणिमित्तं वसेज्ज । असति वा बहिं मासकप्पपायोग्गाणं खित्ताणं तत्थेव वसे ॥१०२१॥

चोदगाह – एगखित्ते कालदुगातीतं वसमाणा कहं सुद्धचरणा ?

आचार्याह –

एगक्खेत्तणिवासी, कालातिक्कंतचारिणो जति वि ।
तह वि य विसुद्धचरणा, विसुद्धमालंबणं जेणं ॥१०२२॥

एगखेत्ते कालदुगातिक्कंतं पि वसमाणा तहावि णिरइयारा जतो विसुद्धालंबणावलंबी, ज्ञानचरणाद्यं वाऽऽलंबनम् ॥१०२२॥ किंच –

आणाए ऽमुक्कधुरा, गुणवड्ढी जेण णिज्जरा तेणं ।
मुक्कधुरस्स मुणिणो, ण सोधी संविज्जति चरित्ते ॥१०२३॥

आण त्ति – तित्थकरवयणं, जहा तित्थकरवयणातो णिितितं ण वसति, तहा तित्थकरवयणाओ चेव कारणा णियतं वसति । स एवं आणाए संजमे अमुक्कधुरो चेव । अमुक्कधुरस्स य णियमा णाणादिगुणपरिवुड्ढी,

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जेण य तस्स गुणपरिवुड्ढी तेण णिज्जरा विउला भवति । जो पुण तप्पडिपक्खे वट्टति तस्स सोही चरित्तस्स ण विज्जति ।।१०२३।।

इदाणिं गतोऽयर्थः स्फुटतरः क्रियते –

गुणपरिवुड्ढिणिमित्तं, कालातीते ण होंति दोसा तु ।
जत्थ तु बहिता हाणी, हविज्ज तहियं न विहरेज्जा ।।१०२४।।

कालदुगातिक्रान्तं ज्ञानादिगुणपरिवृद्धिणिमित्तं वसतो न दोषः । जत्थ पुण बहिं विहरतो णाणादीणं हाणी हवेज्ज ण तत्थ विहरेज्ज इत्यर्थः ।।१०२४।।

जे भिक्खू पुरे संथवं पच्छा संथवं वा करेइ; करेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।३८।।

"संथवो" थुती, अदत्ते दाणे पुव्वसंथवो, दिण्णे पच्छासंथवो । जो तं करेति सातिज्जति वा तस्स मासलहुं ।

अहवा – सयणे पुव्वपच्छसंथवं करेइ ।

अत्र निर्युक्तिमाह –

दव्वे खेत्ते काले, भावम्मि य संथवो मुणेयव्वो ।
आत-पर-तदुभए वा, एक्केक्के सो पुणो दुविधो ।।१०२५।।

साहू आत्मसंस्तवं करोति, साहू परस्य संस्तवं करोति, साहू उभयस्यापि संस्तवं करोति ।

अहवा – आत्मना संस्तवं करोती ति आत्मसंस्तवः । साहू गिहत्थं थुणति, एष आत्मस्तवः । गिहत्थो साधू थुणति एष परस्तवः । दो वि परोप्परं एष उभयस्तवः । एतेसिं एक्केक्को पुण दुविहो – संतासंतो य ।।१०२५।।

दव्वे खेत्ते काले संथवो इमो –

दव्वे पुट्ठमपुट्ठो, परिहीणधणा तु पव्वयंती उ ।
खेत्ते कतरा खेत्ता, कम्मि वए ते दिक्खितो काले ।।१०२६।।

दव्वसंथवो परेण पुच्छितो "तुमं सो ईसरो ?" आमं ति भणाति । सो पुण तहा संतो वा असंतो वा पुच्छितो भणाति "अमुकणामधेयं तुमं इस्सरं ण याणसि तो एवं भणसि" परिहीणधणा "पव्वयंति" त्ति । परिहीणधणो दरिद्रेत्यर्थः । एवं परेण णिंदितो [1]समुत्तइतो परं णिभं काउं अप्पाणं पि थुणाति यथा भवानैश्वर्ययुक्तः तथा अहमप्यासी ।

खेत्तसंथवो –"कतरातो तुमं खेत्ततो पव्वनितो" एवं पुट्ठो भणाति तुज्झ चेव सहदेसी, कुरुक्षेत्राद्वा ।

इदाणिं कालतो – कम्मि [2]वदे दिक्खितो । भणाति तुमं चेव सरिसव्वतोऽहं ।

अहवा – प्रथम वयंसि णिविट्ठो[3] णिविस्समाणो[4] वा ।।१०२६।।

---

१ गविंतो (दे०) । २ वयसि । ३ उद्वाहिते सति प्रव्रजितः । ४ स्थापितविवाहदिने सति प्रव्रजितः ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

भावे संथवो दुविधो – सयणे वयणे य, सयणे ताव इमो ।

सयणे तस्स सरिसओ, आमं तुसिणीए पुच्छितो को वा ।
आउट्टणा णिमित्तं, वयणे आउट्टिओ वा वि ॥१०२७॥

केणइ पुच्छिओ "जो सो इंददत्तभाया पव्वइतो सो तुमं सरिसो दीससि ।" सो भणाति – आमं, तुसिणीओ वा अच्छति । भणति वा – को एरिसाणि पुच्छति ।

इदाणिं वयणसंथवो – अदत्ते दाणे पुव्वं करेति, आउट्टणाणिमित्तं वरं मे [1]आउट्टिता इट्ठदाणं देहिति । दाणेण वा दत्तेण आराहितो पच्छा वयणसंथवं करेति ॥१०२७॥ एस संखेवो भणितो ।

इदाणिं वित्थरो, संखेवभणियस्स वा इमं वक्खाणं ।

तत्थ दव्वसंथवो इमो चउसट्ठिप्पगारो –

धण्णाइं रतणथावर, दुपद चतुप्पद तहेव कुवियं च ।
चउवीसं चउवीसं, तिय दुग दसहा अणेगविधं ॥१०२८॥

धण्णादियाणं कुविय-पज्जवसाणाणं छण्हं पच्छद्धेण जहासंखं संखा भणिता ॥१०२८॥

धण्णाइ चउव्वीसं, जव-गोहुम-सालि-वीहि-सट्ठिया ।
कोद्दव-अणया-कंगू, रालग-तिल-मुग्ग-मासा य ॥१०२६॥

बृहच्छिरा कंगू, अल्पतरशिरा रालकः ॥१०२६॥

अतसि हिरिमंथ तिपुड, णिप्फाव अलसिंदरा य मासा य ।
इक्खू मसूर तुवरी, कुलत्थ तह धाणग-कला य ॥१०३०॥

"अतसि" मालवे पसिद्धा, "हिरिमंथा" वट्टचणगा, "त्रिपुडा" लंगवलगा, "णिप्फाव" चावल्ला अलिसिंदा" चवलगारा य, "मासा" पंडरचवलगा, "धाणगा" कुथुंभरी, "कला" वट्टचणगा ॥१०३०॥

रयणाइ चतुव्वीसं, सुव्वण्ण-तवु-तंब-रयत-लोहाइं ।
सीसग-हिरण्ण-पासाण-वेरमणि-मोत्तिय-पवाले ॥१०३१॥

"रयतं" रूप्पं, "हिरण्णं" रूपका, "पाषाणः" स्फटिकादयः, "मणी" सूरचन्द्रकान्तादयः ॥१०३१॥

संख-तिणिसागुलु चंदणाइं वत्थामिलाइं कट्ठाइं ।
तह दंत-चम्म-वाला, गंधा दव्वोसहाइं च ॥१०३२॥

"तिणिस" रुक्खकट्ठा, "अगलु" अगरु, यानि न म्लायन्ते शीघ्रं तानि अम्लातानि वस्त्राणि, "कट्ठा" शाकादिस्तंभा, "दन्ता" हस्त्यादीनां, "चम्मा" वग्घादीणं, "वाला" चमरीणं, गंधयुक्तिकृता गंधा, एकांगं औषधं द्रव्यं । बहुद्रव्यसमुदायादौषधं ॥१०३२॥

---

१ आराधिताः ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तिविधं थावरं –

भूमि-घर-तरुगणादि, तिविधं पुण थावरं समासेणं ।
चक्कारबद्धमाणुसदुविधं पुण होति दुपयं तु ॥१०३३॥

भूमी पक्खेल्ला, घरं खात्तोसियमुभयं, "तरुगणा" आम्रवणारामादि तिविधं, दुपदं दुविधं, रहादि अरगवद्धं, मानुषं च । दसविधं चउप्पदं ॥१०३२॥

गावी उट्टी महिसी, अय एलग आस आसतरगा य ।
घोडग गद्दभ हत्थी, चतुप्पदा होंति दसधा तु ॥१०३४॥

कुप्पोक्करणं णाणाविहं आसतरगा वेसरा –

णाणाविहं उवकरणलक्खण कुप्पं समासतो होति ।
चतुसट्ठिपडोगारा, एवं भणितो भवे अत्थो ॥१०३५॥

कुप्पोवकरणं 'णाणाविहं' अणेगलक्खणं । तच्च कंसभंडं लोहभांडं ताम्रमयं मृन्मयादि च । २ ङ्क २ ङ्क, ३, २, १०, १ = एष सर्वोऽपि संपिडितो चतुः षष्टिप्रकारोऽभिहितः ॥१०३५॥

आत्म-पर-संथवोपसंहार - णिमित्तमाह –

चउसट्ठिपगारेणं, जधेव अट्टेण उवचितो सि त्ति ।
किं अप्पसंथवेणं, कतेण एमेव अह यं पि ॥१०३६॥

यथा त्वं चतुःषष्टिप्रकारेणोपपेतः तथाऽहमप्यासम्, किं चात्मसंस्तवेनेति ॥१०३६॥

इदाणिं खेत्तसंथवो –

तं अम्ह सहदेसी, एगग्गामेग-णगरवत्थव्वो ।
पुण्णाओ खेत्ताओ, अम्हे मो वच्चिमो व त्ति ॥१०३७॥

गिहिणा पुच्छितो, कम्मि देसे अज्जो ! उप्पण्णो ?, साहू भणति - कुरुखेत्ते । गिही भणाति अम्ह सहदेसी, एगगाम - णगर - उप्पंण्णो । गिहिणा पुच्छिओ कहिं गम्मति - साहू भणति - कुरुखेत्ते ।।१०३७।।

जइ भणति लोइयं तू, पुण्णं खेत्तं तहिं भवे गुरुगा ।
अह आरुहतं अम्ह वि, जणजम्मादी तहिं लहुओ ॥१०३८॥

एवं जइ लोइयं पुण्णखेत्तं भणाति तो चउगुरुं । लोउत्तरे लहुओ ॥१०३८॥

इदाणिं कालसंथवो गिहिणा पुच्छिओ - कम्मि वए पव्वतिओ ? भणाति –

एवइयं मे जम्मं, परियाओ वा वि मज्झ एवतिओ ।
मयणसमत्थो णिविट्ठो, णिविस्समाणो पसूतो वा ॥१०३९॥

एवइओ मे जम्मो, पव्वज्जाए वा एवतितो, मयणसमत्थो वा पव्वइतो, "णिविट्ठो" परिणीओ "णिव्विसमाणो" विवाहदिणे ठविए, "पसूओ" पुत्तो जाओ ।।१०३९।।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इदाणिं भावसंथवो –

दुविधो उ भावसंथवो, संबंधी वयणसंथवो चेव ।
एक्केक्को वि य दुविधो, पुव्विं पच्छा व णातव्वो ॥१०४०॥

दुविहो भावसंथवो – वयणे सयणे य । पुण एक्केक्को दुविहो – पुव्वि पच्छा य ॥१०४०॥

सयणसंथवो इमो –

[1]मातपिता पुव्वसंथवो, सासू ससुरादियाण पच्छा तु ।
गिहिसंथवो संबंधं, करेति पुव्विं व पच्छा वा ॥१०४१॥

एतं पुव्वावरसंथवं दाणकालाश्रो पुव्विं वा पच्छा वा करेज्जा ॥१०४१॥

तं सयणसंथवं [2]वयणाणुरूवं करेति ।

आतवयं च परवयं, णातुं संबंधए तदणुरूवं ।
मम एरिसया माया, ससा व सुण्हा व णत्तादी ॥१०४२॥

श्रायवयं परवयं च णाऊणं घडमाणं तदणुरूवं करेति । जारिसी तुमं, एरिसी मम माया 'ससा" – भगिणी, पुत्तस्स पुत्तो णतुश्रो ॥१०४२॥

एत्थ इमे दोसा –

अद्धिति दिट्ठी पण्हय, पुच्छा कहणं ममेरिसी जणणी ।
थणखेवो संबंधो, विधवा सुण्हा य दाणं च ॥१०४३॥

साहू गहियभिक्खो वि अद्धितिं पुणो वि पण्हुत-णयणो श्रगारिं णिरिक्खमाणो पुच्छिश्रो भणति तुमे सरिसी मे माता, सा तुमे दट्ठुं सुमरिया" । सा भणाति – अहं ते माता । एस मातीसंबंधो । तीसे य सुण्हा घरे विहवा श्रच्छति । ताहे संबंधं करेज्ज । गिहत्थी वा साहुं दट्ठुं श्रधितिं करेति, साहुणा पुच्छिता भणति – तुमे सरिसश्रो मे पुत्तो घराश्रो णिग्गश्रो, तुमं दट्ठुं मे सुमरितो" साहू भणति – अहं ते पुत्तो ; अहं वा सो । एवं सव्वसयणसंथवेसु वत्तव्वं ॥१०४३॥

पच्छा संथवदोसा, सासू विधवादि धूतदाणं च ।
भज्जा ममेरिसि त्ति य, सज्जं घातो व भंगो वा ॥१०४४॥

सासूसंथवे विधवं धूतं ददाति । भज्जासंथवे सज्जघातं लभति । चरित्तभंगो वा भवति ॥१०४४॥

सयणसंथवे इमे श्रण्णे दोसा भवंति –

मायावी चडुयारो, अम्हं श्रोभावणं कुणति एसो ।
णिच्छुभणाती पंतो, करेज्ज भद्देसु पडिबंधो ॥१०४५॥

१ मातिपिति २० । २ वयाणु ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अमायं मायमिति भणमाणो मायावी, भिक्खणिमित्तं वा चाडुं करेति, ण णज्जति को वि दासादी मातिसंबंधं करेमाणो लोगे अम्हं ओभावणं करेति। पंतो रुट्ठो णिच्छुभणाति करेज्ज। भद्दो पुण पडिबंधं करेज्ज ॥१०४५॥

इदाणिं वयणसंथवो –

गुणसंथवेण पुव्विं, संतासंतेण जो थुणेज्जाहि।
दातारमदिण्णम्मी, सो पुव्वो संथवो होति ॥१०४६॥

संतेण असंतेण वा गुणेण जो दाणे अदिण्णे थुणति सो पुव्वसंथवो ॥१०४६॥

सो पुण इमो –

सो एसो जस्स गुणा, वियरंति अवारिया दसदिसासु।
इहरा कहासु सुणिमो, पच्चक्खं अज्जदिट्ठो सि ॥१०४७॥

जाणंतो अजाणंतो य तस्समक्खं अण्णं पुच्छति सो एसो इंददत्तो। गिहत्थो भणति जो कयमो ? साहू भणति – जस्स दाणादिगुणा अणिवारिया वियरंति। "इहरा" इति अन्नाहनि प्रत्यक्षभावमुक्का कहासु सुणिमो अज्जं पुण जणवयस्स देंतो पच्चक्खं दिट्ठोसि ॥१०४७॥

पच्छासंथवो पुण इमो –

गुणसंथरेण पच्छा, संतासंतेण जो थुणिज्जाहि।
दातारं दिण्णम्मी, सो पच्छासंथवो होति ॥१०४८॥ कंठा

दाणदिण्णे इमो गुणसंथवो –

विमलीकतऽम्ह चक्खू, जधत्थतो विसरिता गुणा तुज्झं।
आसि पुरा णे संका, [1]संपति णिस्संकितं जातं ॥१०४९॥

अज्ज तुमे दिट्ठे विमलीकयं चक्खू। जहत्थया य दाणादिगुणा विसरिया तुज्झं, पुरा दाणादिगुणेसु संका आसि, इदाणिं णिस्संकियं जायं ॥१०४९॥

पच्छित्तमियाणिं एतेसु –

सुत्तणिवातो णियमा, चतुव्विधे संथवम्मि संतम्मि।
मोत्तूण सयणसंथव, तं सेवंतंमि आणादी ॥१०५०॥

सुत्तणिवातो दव्वादि चउव्विहे संथवे संतम्मि मासलहुं, मोत्तूण सयणसंथवं। सयणसंथवे पुण इमं पुरिस-संथवे चउलहुं, इत्थी-संथवे चउगुरुं। चउव्विहे वि दव्वातिए संथवे आणादिया दोसा ॥१०५०॥

कारणे पुण संथवं करेज्जा वि –

अधिकरणरायदुट्ठे, गेलण्णऽद्धाणसंभमभए वा।
पुरिसित्थी संबंधे, समणाणं संजतीणं च ॥१०५१॥

---

१ इदाणिं।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

गिहत्थेण समं अहिकरणं उप्पण्णं तस्स उवसमणट्ठताए, पुण पुव्वं चउव्विहं पि दव्वातियं संतं करेति, पच्छा असंतं पि। एवं रायदुट्ठे वि उवसमणट्ठता। गिलाणोसहणिमित्तं वा, अद्धाणसंभमभएसु [1]संताणट्ठया वा, "पुरिसित्थि" त्ति एएहिं कारणेहिं संजताण संजतीण वा पुरिसित्थिसंबंधो भवेज ॥१०५१॥

वय-सयणक्रमप्रदर्शनार्थं इदमाह –

वयसंथवसंतेणं, पुव्व थुणे पुरिससंथवेण ततो।
तो णातित्थिगतेण व, भोइयवज्जं च इतरेणं ॥१०५२॥

पुव्विं वयसंथवेण संतेणं, पच्छा पुरिससंथवेण पुव्वावरेण संतेणं, तो पच्छा णातित्थिगतेणं संतेणं, ततो भोइयवज्जं इतरेण पच्छासंथवेणं संतेण, ततो पच्छा वयणादि असंतेण ॥१०५२॥

पुव्वे अवरे य पदे, एसेव गमो उ होइ समणीणं।
जह समणाणं गरुई, इत्थी तह तासिं पुरिसा तु ॥१०५३॥

संजतीणं एसेव गमो। जहा समणाणं इत्थी गरुगी तहा समणीणं पुरिसा [2]गुरुगा ॥१०५३॥

जे भिक्खू समाणे वा वसमाणे वा गामाणुगामं वा दुइज्जमाणे पुरे संथुयाणि वा पच्छा संथुयाणि वा कुलाइं पुव्वामेव भिक्खायरियाय अणुपविसइ, अणुपविसंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३९॥

भिक्षुः पूर्ववत् समाणो नाम समधीनः अप्रवसितः। कोऽसौ वुड्ढावासः? वसमाणो उदुबद्धिए अट्ठमासे वासावासं च णवमं, एयं णवविहं विहारं विहरंतो वसमाणो भण्णति। अनु पश्चाद्भावे गामातो अण्णो गामो अणुगामो दोसु पाएसु सिसिरगिम्हेसु वा रीइज्जति त्ति। पुरे संथुता मातापितादी, पच्छासंथुता ससुराती, कुलशब्दः प्रत्येकं, भिक्खाकालातो पुव्विं, अप्राप्ते भिक्खाकालेत्यर्थः। अनुप्रवेशो पच्छा, भिक्खाकाले अतिक्रान्तेइत्यर्थः। एवं अप्राप्ते अतिक्रान्ते च पविसंतं साइज्जति अनुमोदते, मासलहुं से पच्छित्तं। एस सुत्तत्थो।

इदाणिं णिज्जुत्तिवित्थरो –

समाणे वुड्ढवासी, वसमाणे णवविकप्पविहारी।
दूतिज्जंता दुविधा, णिक्कारणिया य कारणिया ॥१०५४॥

कारण-निक्कारणे वक्ष्यति। शेषं गतार्थमेव ॥१०५४॥

इमे णिक्कारणिया –

आयरियसाधुवंदण, चेतिय णीयल्लगा तहासण्णी।
गमणं च देसदंसण, णिक्कारणिए य वइगादि ॥१०५५॥

आयरियसाहुचेइयाण च वंदणणिमित्तं गच्छंति, सण्णीणं दंसणत्थं, भोयणवत्थाणि वा लभिस्संति गच्छति, अपुव्वदेसदंसणत्थं गच्छंति, वजितादिसु वा खीराद्यं लभिस्सामि त्ति गच्छति ॥१०५५॥

---

१ संतानार्थं दीक्षार्हपुत्रदानार्थम्। २ चतुर्गुरुस्थानीयं प्रायश्चित्तम्।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आयरियमाह –

अप्पुव्व-विचित्त-बहुस्सुता य परिवारवं च आयरिया ।
परिवारवज्जसाहू, चेतियऽपुव्वा अभिणवा वा ॥१०५६॥

अपुव्वा मे आयरिया विचित्ता णिरतिचारचरित्ता बहुस्सुया विचित्तसुया य बहुसाहु - परिवुडा य, एरिसे आयरिए वंदामि । साहुस्स वि एते चेव गुणा । णवरं - परिवारो वज्जिज्जति । चेतिया चिरायतणा अपुव्वा य । अहवा अभिणवा कया ॥१०५६॥

दत्थी हामि व णीए, सण्णीसु य भोयणादि लब्भामो ।
देसो व मे अपुव्वो, वइगादिसु खीरमादीणि ॥१०५७॥ कंठा

णिक्कारणे विहरंतस्स इमे दोसा –

अद्धाणे उव्वाता, भिक्खूवहि तेण साण पडिणीए ।
[1]ओमाण अभोज्जघरे, थंडिल्लऽसती य जे जं च ॥१०५८॥

अद्धाणे समो भवति, भिक्खा वसहिं ण लब्भंति । उवहिसरीरतेणा भवंति । साणपडिणीएसु खज्जए(अ) हंमए वा हिंडंतांणं सपक्खपरपक्खोमाणं भवति । अभोज्जघरे पवयण - हीलणा भवति । असति थंडिल्लस्स पुढवी मादिजीवे विराहेति । जे दोसा, जं च एतेसु परितावणादिणिप्फण्णं पच्छित्तं, सव्वं उवउज्जिउं वक्तव्यम् ॥१०५८॥

संजमतो छक्काया, आत कंटट्ठिवातखुलगा य ।
उवधि अपेह हरावण, परिहाणी जा य तेण विणा ॥१०५९॥

णिक्कारणओ अडंतो छक्कायविराहणं कुणति । एस संजमविराधणा । कंटट्ठिहिं वा विज्झति, वा-खुला वा भवंति, एस आयविराहणा सागारियभया परिस्संतो वा पमादेण वा उवहिं न पडिलेहेति, हरावेइ वा । उवहिम्मि अवहरिए य जातेण विणा परिहाणी तणअग्गिगहणसेवणादि जं करिस्सति तं सव्वं पच्छित्तं वत्तव्वं ॥१०५९॥

वेलातिक्कमपत्ता, अणेसणादातुरा तु जं सेवे ।
पडिणीयसाणमादी, पच्छाकम्मं च वेलम्मि ॥ १०६०

भिक्खावेला अतिक्कंतपत्ता अप्फवंता अणेसणं पि लेज्जा, तं णिप्फण्णं पच्छित्तं । पढमबितिएसु वा परीसहेसु आउरा जं सेवे तं णिप्फण्णं । पडिणीतेण हते साणेण वा खतिए आयविराहणाणिप्फण्णं । अवेले भिक्खं हिंडंतस्स पच्छाकम्मदोसा भवंति । संकातिया य दोसा तेणट्ठे मेहुणट्ठे वा भवंति ॥१०६०॥

इदाणिं कारणिया भण्णंति –

कारणिए वि य दुविधे, णिव्वाघाते तहेव वाघाते ।
निव्वाघाते खेत्ता, संकंती दुविधकालम्मि ॥१०६१॥

कारणिओ दुविहो – णिव्वाघाते वाघाते य । तत्थ णिव्वाघाते इमो – उदुवासकप्पे वा वासा कप्पे वा समत्ते खेत्तातो खेत्तसंकंती ॥१०६१॥

---

१ ओमाण=अपमान ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इदमेवार्थं दर्शयन्नाह –

दोण्णेगतरे काले, जं खेत्ता खेत्तणंतरं गमणं ।
एतं णिव्वाघातं, जति खेत्तातिक्कमे लहुगा ॥१०६२॥

"जति खेत्तातिक्कमे" ति णिक्कारणे जत्तिया मासकप्पपायोग्गा खेत्ता लंघेति तत्तिया चउलहुआ भवंति ॥१०६२॥

इदाणिं वाघातेण मासकप्पपाओग्गं वोलेउं अण्णं खेत्तं संकमइ, ण य दोसो, इमे य ते वाघायकारणा –

वाघाते असिवाती, उवधिस्स व कारणा व लेवस्स ।
बहुगुणतरं च गच्छे, आयरियादी व आगाढे ॥१०६३॥

असिवगहियं खेत्तं वोलंति । आदिसद्दाओ वा सज्झाओ तत्थ ण सुज्झति, उवही वा तत्थ ण लब्भति लेवो वा, अण्णतो अण्णम्मि लब्भति त्ति वोलंति । गच्छे वा बहुगुणतरं, साणपडिणीया णत्थि, तिण्णि वा भिक्खावेलाओ अत्थित्ति, अतो वोलंति । आयरियादीण वा इह पाउग्गं णत्थि, अतो वोलंति । आगाढेहिं वा कारणेहिं वोलंति ॥१०६३॥

ते च आगाढकारणा इमे –

दव्वे खेत्ते काले, भावे पुरिसे तिगिच्छ असहाए ।
सत्तविहं आगाढं, णायव्वं आणुपुव्वीए ॥१०६४॥

दव्वं जोग्गं ण लब्भति, खेत्ते खलु खेत्तपडिणिमादीया ।
कालम्मि ण रितुक्खमं, भावे गिलाणादीण णवि जोग्गं ॥१०६५॥

पुरिसो आयरियादी, तेसिं अजोग्गं तिगिच्छिगा णत्थि ।
णत्थि सहाया व तहिं, आगाढं एव णातव्वं ॥१०६६॥

दव्वं स्वतन्त्रं अविरुद्धं जोग्गं ण लब्भति, खेत्ततो तं अतीव खुल्लखेत्तं, कालतो तं अरितुक्खमं, भावे गिलाणादिजोग्गं ण लब्भति । पुरिसा आयरियमाती तेसिं तं अकारगं खेत्तं । तिगिच्छा तत्थ वेज्जा णत्थि । 'असहाय" त्ति सहाया तत्थ णत्थि । सत्तविह आगाढकारणेण वोलेउं मासकप्पजोग्गं अण्णं गच्छंतीत्यर्थः ॥१०६६॥

एतेहिं कारणेहिं, एगदुगंतर-तिगंतरं वा वि ।
संकममाणो खेत्तं, पुट्ठो वि जती ण ऽतिक्कमति ॥१०६७॥

कारणेण संकंतो पुट्ठो वि दोसेहिं ण दोसिल्लो भवति, यतो यस्मात् तीर्थंकराज्ञां नातिक्रामंतीत्यर्थः ॥१०६७॥

णिक्कारणगमणंमि, जे च्चिय आलंबणा तु पडिकुट्ठा ।
कज्जम्मि संकमंतो, तेहिं चिय सुद्धो जतणाए ॥१०६८॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

णिक्कारणगमणे जे आलंबणा आयरियादी पडिसिद्धा, कज्जे तेहिं चेव जयणाए संकमंतो सुज्झति - अपच्छित्ति भवति ॥१०६८॥

एत्थ जे कारणिया तेहिं अधिकारो, णिक्कारणिया गच्छंता चेव लग्गंति ।

एवं विहरंताणं संथवो इमो –

कुलसंथवो तु तेसिं, गिहत्थधम्मे तहेव सामण्णे ।
एक्केक्को वि य दुविहो, पुव्विं पच्छा य णातव्वो ॥१०६९॥

तं कुलं संथुतं, संथुयं णाम लोगजत्ता परिचियं । गिहिधम्मे वा ठितस्स, सामण्णे वा ठितस्स । एक्केक्को दुविहो— गिहिधम्मे ठितस्स पुव्विं पच्छा वा, सामण्णे ठितस्स पुव्विं पच्छा वा ॥१०६९॥

अस्यैव व्याख्या –

अम्मा पितुमादी उ, पुव्वं गिहिसंथवो य णायव्वो ।
सासूसुसरादीओ, पच्छा गिहसंथवो होति ॥१०७०॥ कंठा

सामण्णे ठियस्स पुव्विं पच्छा संथुता इमे –

सामण्णे जे पुव्विं, दिट्ठा भट्ठा व परिचिता वा वि ।
ते हुंति पुव्वसंथुय, जे पच्छा एतरा होंति ॥१०७१॥

सामण्णप्रतिपत्तिकालात् पूर्वपश्चाद्वा ॥१०७१॥

अहवा सामण्णकाले चेव चितिज्जंति ॥

अण्णया विहरंतेणं, संथुता पुव्वसंथुता ।
संपदं विहरंतेणं, संथुता पच्छसंथुता ॥१०७२॥

अतीतवर्तमानकालं प्रतीत्य भावयितव्यम् ॥१०७२॥

एतेसामण्णतरं, कुलम्मि जो पविसति अकालम्मि ।
अप्पत्तमतिक्कंते, सो पावति आणमादीणि ॥१०७३॥

एतेसिं पुव्वपच्छसंथुयकुलाणं अण्णतरं कुलं अपत्ते भिक्खाकाले, अतिक्कंते वा भिक्खाकाले पविसति, सो आणादि दोसे पावति ॥१०७३॥

दुविहविराहणा य। तत्थ संजमे इमा –

सड्ढी गिहि अण्णतित्थी, करेज्ज तं पासितुं अकालम्मि ।
उग्गमदोसेगतरं, खिप्पं से संजतट्ठाए ॥१०७४॥

सड्ढी श्रावकः, गिही अथाभद्रकः, रत्तपडादि, पुव्वपच्छसंथुतो वा । एते अपर्याप्त काले पर्यटन्तं दृष्ट्वा उग्गमदोसेगतरं खिप्पं संजयट्ठाए करेज्ज ॥१०७४॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कहं पुण उग्गमदोसा भवे ?

पुव्वपयावितमुदए, चाउलछुभणोदणो व पेज्जा वा ।
आसण्णपूवि सत्तुअ, कयण उच्छिण्ण समिमादी ॥१०७५॥

साधू आगमणकालातो पुव्वं तत्तमुदगं साहुणो आगते दट्ठुं तम्मि चेव तत्तोदए चाउले छुभेज्ज सिग्घं ओदणं पेज्जं वा, एवं कम्मं करेज्ज । आसण्ण पूवियघराओ वा पूवे किणेज्ज, सत्तू कूरं वा किणेज्जा । सव्वाणि वा उच्छिंदेज्जा पुव्वो सुग्रकणिकाए वा समितिमे करेज्ज ॥१०७५॥

कम्मं इमं । अतिक्कंते –

एमेव अतिक्कंते, उग्गमादी तु संजमे दोसा ।
संकाइ दुविधकाले, कोई पदुट्ठो व ववरोवे ॥१०७६॥

पुव्वद्धं कंठं । दुविहकाले अपत्तमवकंते अकालेत्ति काउं संकति । तेणं चारियं मेहुणट्ठे वा दूतित्तणेण वा, पदुट्ठो ववरोवेज्ज वा हणेज्ज वा भत्तोवहिसेज्जाण वा वोच्छेयं करेज्ज ॥१०७६॥

इदाणिं उपनयनिमित्तमाह –

अप्पत्तमइक्कंते, काले दोसा हवंति जम्हेते ।
तम्हा पत्ते काले, पविसिज्ज कुलं तहारूवं ॥१०७७॥

अप्पत्तमतिक्कंते जम्हा पविसंते एते दोसे पावति तम्हा पत्ते भिक्खाकाले तहारूवं कुलं पविसेज्ज । एए वि पत्तो तेसिं दरसावं ण देति, अन्नत्थ ठायति ॥१०७७॥

भवे कारणं अवेलाए वि पविसेज्ज ।

बितियपदमणाभोगे, अतिक्कमंते तहेव गेलण्णे ।
असिवे ओमोदरिते, रायदुट्ठे भए व आगाढे ॥१०७८॥

अणाभोगो अज्ञानं । सो साधू ण जाणइ एत्थ गामे मम पुव्वसंथुता अत्थि, अतो पविसति । अहवा – सो वोलेउमणो सिग्घं दोसिणातिणिमित्तं पविसेज्ज । गिलाणस्स वा तेसु परं लब्भति तं च खीराति अतो पविसति । ओमे अपत्ते दोसीणणिमित्तं अप्पफच्चितो वा अइक्कंते संथुयकुलेसु हिंडति । रायदुट्ठे मा दीसिहि ति तेण अकाले हिंडति । बोहिगादिभए वा दोसीणातिघेत्तुं णस्सति, णट्ठो वा उस्सूरमागतो गेण्हति ॥१०७८॥

अण्णत्थ वा आगाढे अणाभोगपविट्ठो इमं विहाणं करेति –

संथरमाणमजाणंतपविट्ठो कुणति तत्थ उवओगं ।
मा पुव्वुत्ते दोसे करेज्ज इहरा उ तुसिणीओ ॥१०७९॥

जति अजाणंतो संथुयकुले पविट्ठो, जति य संथरति तो उवओगं करेति । पुव्वुत्तदोसपरिहणट्ठताए सजयट्ठा कीरंतं वारेति परिहरति वा । इहरा असंथरंतो संजयट्ठा कीरंतं दट्ठुं पि ण वारेति, तुसिणीओ अच्छति ॥१०७९॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा परिहारिए वा अपरिहारिएण सद्धिं गाहावतिकुलं पिंडवायपडियाए णिक्खमति वा अणुपविसति वा णिक्खमंतं वा अणुपविसंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।४०।।

अण्णतीर्थिकाश्चरक-परिव्राजक-शाक्याजीवक-वृद्धश्रावकप्रभृतयः, गृहस्था-मरुगादि भिक्खायरा, परिहारिओ मूलुत्तरदोसे परिहरति ।

अहवा – मूलुत्तरगुणे धरेति आचरतीत्यर्थः । तत्प्रतिपक्षभूतो अपरिहारी ते य अण्णतित्थियगिहत्था ।

णो कप्पति भिक्खुस्सा गिहिणा अहवा वि अण्णतित्थीणं ।
परिहारियस्स अपरिहारिएण सद्धिं पविसिउं जे ।।१०८०।।

"सद्धिं" समानं युगपत् एकत्र ।।१०८०।।

आधाकम्मादीणिकाए सावज्जजोगकरणं च ।
परिहारित्तपरिहरं, अपरिहरंतो अपरिहारी ।।१०८१।।

षड्जीवनिकाए सावज्जं मनादियोगत्रयं करणत्रयं च ।।१०८१।।

गाहावतिकुलं अस्य व्याख्या –

गाह गिहं तस्स पती, उ गहपत्ती सुत्तपादे जधा वणिओ ।
पिंडपादे वि तधा, उभए सण्णातु सामयिगी ।।१०८२।।

गाह त्ति वा गिहं ति वा एगट्ठं, तस्येति गृहस्य पतिः प्रभुः स्वामी गृहपतीत्यर्थः । दारमपत्यादि समुदाओ "कुलं पिंडवायपडियाए" त्ति अस्य व्याख्या "पिंडो" असणादी, गिहिणा दीयमाणस्स पिंडस्य पात्रे पातः अनया प्रज्ञया ।।१०८२।।

एत्थ दिट्ठंतो –

जहा बालंजुअ वणिउ बलंजं घेत्तुं गामं पविट्ठो । अण्णेण पुच्छियं किं णिमित्तं गामं पविट्ठोसि ? भणाति – सुत्तपायपडियाए धण्णपायपडियाए त्ति । तहेव पिंडवायपडियाए त्ति । किं च–इदं सूत्रं लोग-लोगोत्तर उभयसंज्ञाप्रतिवद्धं किंचित् स्वसमयसंज्ञाप्रतिवद्धं भवति ।

"अणुपविसति" अस्य व्याख्या –

चरगादिणियट्टेसुं, पागेव कते तु पविसणं जं तु ।
तं होतणुप्पविसणं, अणुपच्छा जोगतो सिद्धं ।।१०८३।।

"अनु" पश्चाद्भावे, चरगादिसु सण्णियट्टेसु पच्छा पागकरणकालतो वा पच्छा । एवं अनुशब्दः पश्चाद्योगे सिद्धः ।।१०८३।।

एत्तो एगतरेणं, सहितो जो पविसती तु भिक्खस्स ।
सो आणाअणवत्थं, मिच्छत्तविराधणं पावे ।।१०८४।।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

एत्तो एगतरेण गिहत्थेण वा अण्णतित्थिएण वा समं पविसंतस्स आणातिया दोसा आयसंजम-विराहणा ।।१०८४।।

ओभावणा पवयणे, अलद्धिमंता अदिण्णदाणा य ।
जाणंति च अप्पाणं, वसंति वा सीसगणिवासं ।।१०८५।।

पंडरंगादिएसु सद्धि हिंडंतस्स पवयणोभावणा भवति । लोगो वयति पंडरंगादिपसायओ लभंति । सयं न लभंति । असारप्रवचनप्रपन्नत्वात् ।

अधवा लोगो वदति – अलद्धिमंता य परलोगे वा अदिण्णदाणा आत्मानं न विदंति । सूद्रा इति पंडरंगादिशिष्यत्वमभ्युपगता वसंति, अतो एभिः सार्द्धं पर्यटन्ते । किं चान्यत् ।।१०८५।।

अधिकरणमंतराए, अचियत्ता संखडे पदोसे य ।
एगस्सऽट्ठा दोण्हं, दोण्ह व अट्ठाए एगस्स ।।१०८६।।

गिही अयगोलसमाणो ण वट्टति भणितुं एहि, णिसीद, तुयट्ट, वयाहि वा । भणतो अधिकरणं । गिहत्थो अलद्धी साहू लद्धी तो साहुस्स अंतरायं, अह संजतो अलद्धी तो गिहत्थस्स अंतरायं जेण समं हिंडति, दातारस्स वा अच्चियत्तं । किं मया समं हिंडसि त्ति अधिकरणं भवे । असंखडे उण पदुट्ठो अवस्सं अगणिणा हिंडेज, पंतावणादि वा करेज, एगस्स गिहिणा णीणिओ दोण्ह वि देज्ज, तं चेव अंतरायं अचियत्ताए संखडाती य साहुस्स करेज, दातारस्स वा करेज, उभयस्स वा कुज्जा । दोण्ह वा अट्ठा णीणियं एगस्स देज्ज, साहुस्स गिहत्थस्स वा ते चेव अंतराताती दोसा । १०८६।। '

जतो भण्णति –

संजयपदोसगहवति, उभयपदोसे अणेगधा वा वि ।
णट्ठे हित विस्सरिते, संकेगतरे उभयतो वा ।।१०८७।।

संजयगिहिउभयदोसा इति गतार्थ एव । 'अणेगहा व" त्ति अस्य व्याख्या – णट्ठे दुपदचतुप्पद अपए वा एतेसु चेव हडेसु वत्थादिएसु वा विसुमरिएसु साधुं गिहिं वा एगतरं संकेज्ज उभयं वा । किह पुणाति संकेज्ज ? एते समणमाहणा परोप्परं विरुद्धा एगतो अडंति, ण एते जे वा ते वा, णूणं एते चोरा चारिया वा कामी वा, दुपयादि वा अवहडमेएहिं । जम्हा एते दोसा तम्हा गिहत्यऽण्णतित्थीहिं समं भिक्खाए ण पविसियव्वं ।।१०८ ।।

बितियपदेण कारणे पविसेज्जा वि जतो –

बितियपदमंचियंगी, रायदुट्ठो सहत्थगेलण्णे ।
उवधीसरीरतेणग, पडिणीते साणमादीसु ।।१०८८।।

'अचियं'' दुब्भिक्खं । एतेसु अचियादिसु एतेहिं गिहत्थण्णतित्थीहिं समं भिक्खा लब्भति अन्नहा न लब्भति, अतो तेहिं समाणं अडे । सो य जति अहाभद्दो णिमंतेइ वा अहाभद्दएण पुण समाणं दो तिण्णि घरा अण्णहा ते चेव संखडादी । रायदुट्ठे सो रायवल्लभो गिलाणस्सोसह-पत्थभोयण ति सो दव्वावेति अण्णहा ण लब्भति । भिक्खायरियं वा वच्चंतस्स उवहिसरीरतेणारक्खपडिणीयसाणे वा वारेति । साणादिसद्दातो गोणसूयराती ।।१०८८।।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पविसतो पुण इमा विही –

पुव्वगते पुरओ वा, समगपविट्ठो व अण्णभावेणं ।
पच्छाकडादि मरुगादिणाति पच्छा कुलिंगीणं ॥१०८९॥

गिहत्थ अण्णतित्थिएसु पुव्वपविट्ठे सयं वा पुव्व पविट्ठो "अण्णभावे" त्ति एरिसं भावं दरिसति जेण ण णज्जति, जहा एतेण समाणं हिंडंति ।

अडंतस्स य इमो विही –

पुव्वं पच्छाकड-मरुएसु, तओ पच्छाकड-अण्णलिंगीसु, तओ अहाभद्दमरुएसु, तओ अहाभद्दमण्णलिंगिणा । अहाभद्दए वि एस चेव कमो ॥१०८९॥

जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा परिहारिए वा अपरिहारिएण सद्धिं बहिया विहारभूमिं वा वियारभूमिं वा णिक्खमइ वा पविसइ वा; णिक्खमंतं वा पविसंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४१॥

सण्णावोसिरणं वियारभूमी, असज्झाए सज्झायभूमी जा सा विहारभूमी, सा उब्भामगपोरिसी भण्णति ।

णो कप्पति भिक्खुस्सा गिहिणा अधवा वि अण्णतित्थीणं ।
परिहारियस्स ऽपरिहारिएण गंतुं वियाराए ॥१०९०॥ कंठा
एत्तो एगतरेणं सहितो जो गच्छती वियाराए ।
सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्तविराधणं पावे ॥१०९१॥ कंठा
वीयारभूमिदोसा, संका अपवत्तणं कुरुकुयाय ।
दव अप्पकलुसगंधे, असती व करेज्ज उड्डाहं ॥१०९२॥

वियारभूमीए पुरिसापातसंलोअदोसा । संकाए वा ण पवत्तति । अपवत्तंते य । [1]मुत्तणिरोहो०– गाहा । [2]त्रयः शल्या० श्लोकः । मट्टियाए बहुदवेण य कुरुकुया कारेयव्वा । एत्थ उच्छोलणउप्पीलणादीदोसा । अह कुरुकुयं ण करेति उड्डाहो । अप्पेण वा दवेणं कलुसेण वा दवेणं णिल्लेवेंतं दट्ठुं चउत्थ रसियादिणा वा गंधिल्लेण अभावे वा दवस्स अणिल्लेविते जणपुरओ उड्डाहं करेज्ज ॥१०९२॥

जम्हा एते दोसा तम्हा तेहिं सद्धिं ण गंतव्वं । अववादपए पत्ते वच्चेज्ज –

वीयारभूमि असती, पडिणीए तेणसावतभए वा ।
रायदुट्ठे रोधग-जतणाए कप्पते गंतुं ॥१०९३॥

अण्णओ वियारभूमीए असति जतो ते गिहत्थअण्णत्थिया वट्टंति ततो वएज्जा जतो अणावातमसंलोअं तओ पडिनीततेणसावयबोधितदोसा अंतरे तत्थ वा थंडिल्ले गतस्स, अतो गिहत्थेहिं समं गच्छे, ते निवारेंति । रायदुट्ठे रायवल्लभेण समाणं गम्मइ । रोहए एगा चेव सण्णाभूमी, एरिसेहिं कारणेहिं जयणाए गम्मति ॥१०९३॥

---

१ बृह० उद्दे० ३ भा० गा० ४३८० ।
२ त्रयः शल्या महाराज !, अस्मिन् देहे प्रतिष्ठिताः । वायु-मूत्र-पुरीषाणां, प्राप्तं वेगं न धारयेत् ॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सा य इमा जयणा –

पच्छाकड-वत-दंसण-असंणि-गिहिए तहेव लिंगीसु ।
पुव्वमसोए सोए, पउरदवे मत्तकुरुया य ॥१०६४॥

पुव्वं पच्छाकडेसु गिहियाणुव्वएसु तेसु चेव दंसणसावएसु, ततो एसु चेव कुतित्थिएसु, ततो असण्णि-गिहत्थेसु, ततो कुलिंगिएसु अगणणीसु सव्वासु, सव्वेसु पुव्वं असोयवादिसु, पच्छा सोयवादीसु, दूरं दूरेण परम्मुहो वेलं वज्जंतो पउरदवेणं मट्टियाए य कुरुकुयं करेंतो अदोसो ॥१०६४॥

एमेव विहारम्मी, दोसा उड्डुंचगादिया बहुधा ।
असती पडिणीयादिसु, बितियं आगाढ-जोगिस्स ॥१०६५॥

विहारभूमीए वि प्रायसः एत एव दोषा, उड्डुंचकादयश्च अधिकतरा, बहवः अन्ये उड्डुंचका कुट्टिदा उड्डाहंति वा वंदनादिसु । प्रत्यनीकादि द्वितीयपदं पूर्ववत् ।

चोदगो भणति – जत्थेत्तिया दोसा तत्थ तेहिं समाणं गंतुं बितियपदेण वि सज्झाओ मा कीरउ ।

आयरियो भणति – आगाढजोगिस्स उद्देससमुद्देसादओ अवस्सं कायव्वा उवस्सए य असज्झाइयं बहिं पडिणीयादि अतो तेण समाणं गंतुं करेंतो सुद्धो ॥१०६५॥

जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा परिहारिओ अपरिहारिएहिं सद्धिं गामाणुगामं दूइज्जति; दूइज्जंतं वा सातिज्जइ ॥सू०॥४२॥

ग्रामादन्यो ग्रामः ग्रामानुग्रामं । शेषः सूत्रार्थः पूर्ववत् ।

णो कप्पति भिक्खुस्सा, परिहारिस्सा तु अपरिहारीणं ।
गिहिअण्णतित्थिएण व, गामणुगामं तु विहरित्ता ॥१०६६॥ कंठा

एत्तो एगतरेणं, सहितो दूइज्जति तु जे भिक्खू ।
सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्तविराधणं पावे ॥१०६७॥

दुडु गतौ, "दूइज्जति" त्ति रीयति गच्छतीत्यर्थः । रीयमाणो तित्थकराणं आणं भंजेति । अणवत्थं करेति । मिच्छत्तं अण्णेसिं जणयति । आयसंजमविराधणं पावति ॥१०६७॥

इमं च पुरिसविभागेण पच्छित्तं –

मासादी जा गुरुगा, मासो व विसेसिओ चउण्हं पि ।
एवं सुत्ते सुत्ते, आरुवणा होति सट्ठाणे ॥१०६८॥

अगीयत्थभिक्खुणो गीयत्थभिक्खुणो उवज्झायस्स आयरियस्स एतेसिं चउण्ह वि मासादि गुरुगंतं

अहवा – मासलहुं चेव कालविसेसियं ।

अहवा – अविसेसियं चेव मासलहुं ।

चोदगाह – किं णिमित्तमिह सुत्ते पुरिसविभागेण पच्छित्तं दिण्णं ?

आचार्याह – सर्वसूत्रप्रदर्शनार्थं । सुत्ते सुत्ते पुरिसाण सट्ठाणपच्छित्तं दट्ठव्वं ॥१०६८॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इमा संजमविराहणा –

संजतगतीए गमणं, ठाण-णिसीयणा तुअट्टणं वा वि ।
वीसमणादि यणेसु य, उच्चारादी अवीसत्था ॥१०९९॥

जहा संजओ सिग्घगतीए मंदगतीए वा वच्चति तहा गिहत्थो वि तो अधिकरणं भवति । तण्हाछुहाए वा परिताविज्जति तं णिप्फण्णं । वीसमंतो सचित्तपुढवीकाए उद्धट्ठाणं निसीयणं तुयट्टणं वा करेति । भत्तपाणादियणे उच्चारपासवणेसु य सागारिउ त्ति काउ अवीसत्थो ॥१०९९॥

साहु-णिस्साए वा गच्छंतो फलादि खाएज्जा अहिकरणं । साहू वा तस्स पुरओ बितियपदेण गेण्हेज्जा, परितावणाणिप्फण्णं पादपमज्जणादि वा करेज्जा, तत्थ वि सट्ठाणं ।

अह करेति उड्डाहो । भाष्यकारेणैवायमर्थोउच्यते –

मासादी जा गुरुगा, भिक्खु वसभाभिसेग आयरिए ।
मासो विसेसिओ वा, चउण्ह वि चतुसु सुत्तेसु ॥११००॥

अत्थंडिलमेगतरे, ठाणादी खद्ध उवहि उड्डाहो ।
धरणणिसग्गे वातोभयस्स दोसा ऽपमज्जरओ ॥११०१॥

साहुणिस्साए गिहत्थो गिहत्थणिस्साए वा साहू अथंडिल्ले ठाएज्ज, खद्धोवहिणा भारदुदुहु त्ति उड्डाहं करेति, धरणणिसग्गे वायकाइयसण्णाएण उभयहा दोसो, पमज्जंतस्स उड्डाहो अपमज्जंताण य विराहणा । जम्हा एते दोसा तम्हा ण गच्छेज्जा ॥११०१॥

बितियपदं अद्धाणे, मूढमयाणंतदुट्ठणट्ठे वा ।
उवधी सरीरतेणग, सावतभय दुल्लभपवेसो ॥११०२॥

अद्धाणे सत्थिएहिं समं वच्चति, पंथाओ वा मूढो दिसातो वा मूढो साहू-जाव-पंथे उयरंति । पंथमयाणंतो वा जाणगेहिं समं गच्छेज्ज, रायदुट्ठे वा रायपुरिसेहिं समं गच्छे, बोथिकादिभया णट्ठो वा तेहिं समाणं णिद्दोसो हवेज्ज, तेणगभए वा गच्छे, सावयभए वा अणम्मि वा गरदेसरज्जे दुल्लभपवेसे तेहिं समं पविसेज्ज, अण्णहा ण लब्भति ॥११०२॥

जत्थ पुण नगरादिसु विहरति तत्थ अच्छंतो णितितो भवति ।

तेहिं समाणं गच्छतो इमा जयणा –

णिब्भए पिट्ठतो गमणं, वीसमणादी पदा तु अण्णत्थ ।
सावत-सरीर-तेणग-भएसु तिट्ठाणभयणा तु ॥११०३॥

णिब्भए पिट्ठओ गच्छंति, पिट्ठतो ठिता सव्वं पमज्जणाति सामायारि पउंजंति, वीसमणाती पदा जति असंजतो थंडिले करेति तो संजया अण्णथंडिले ठायंति, तेण सावयभयं जइ पिट्ठतो तो मज्झतो पुरतो वा गच्छंति ॥११०३॥

जे भिक्खू अन्नयरं पाणगजायं पडिगाहित्ता पुप्फगं पुप्फगं आइयइ, कसायं कसायं परिट्ठवेइ; परिट्ठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४३॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अन्यतरग्रहणात् अनेके पानकाः प्रदर्शिता भवंति, खंड-पानक-गुल-सक्करा-दालिम-मुद्दिता-[1]चिंचा-दिपाने जातग्रहणात् प्रासुकं, पडीत्युपसर्ग । ग्रह आदाने, विधिपूर्वकं गृहीत्वा, पुष्पं णाम अच्छं वण्णगंधरसफासेहिं पधाणं, कसायं स्पर्शादिप्रतिलोममप्रधानं कषायं कलुषं बहलमित्यर्थः । स्वसमयसंज्ञाप्रतिबद्धं इदं सूत्रम् । एवं करेंतस्स मासलहुं । एस सुत्तत्थो ।

अहुणा णिज्जुत्ती –

जं गंधरसोवेतं, अच्छं व दवं तु तं भवे पुप्फं ।
जं दुब्भिगंधमरसं, कलुसं वा तं भवे कसायं ॥११०४॥ कंठा

घेत्तूण दोण्णि वि दवे, पत्तेयं अहव एक्कतो चेव ।
जे पुप्फमादिइत्ता, कुज्ज कसाए विगिंचणतं ॥११०५॥

दोण्णि वि पुप्फं कसायं च एगम्मि व भायणे पत्तेगेसु वा भायणेसु [2]पुप्फमाइत्ता कसाय-परिट्ठवणं करेज्ज तस्स मासलहुं ॥११०५॥

इमे दोसे पावेज्ज –

सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्तविराधणं तहा दुविधं ।
पावति जम्हा तेणं, पुव्व कसाए तरं पच्छा ॥११०६॥

आयसंजमविराहणा-पुव्वं कसायं पिवे, इतरं पुप्फं पच्छा ॥११०६॥

जो पुप्फं पुव्विं पिवे कसायं परिट्ठवेति तस्सिमे दोसा –

तम्मि य गिद्धो अण्णं, णेच्छे अलभंतो एसणं पेल्ले ।
परिठाविंते य [3]कूडं, तसाण संगामदिट्ठंतो ॥११०७॥

अच्छदवे गिद्धो अण्णं कसायं णेच्छति पातुं, तं कसायं परिट्ठवेतुं पुणो हिंडंतस्स सुत्तादिपलिमंथो । अच्छं अलभंतो वा एसणं पेल्लेज्ज आयविराहणातिता य बहुदोसा, कलुसे य परिट्ठविए कूडदोसो, जहा कूडे पाणिणो वज्झंति तहा तत्थ वि मच्छिगाती पडिवज्झंति, अण्णे य तत्थ बहवे पयंगाणि पतंति । पिपीलिगाहि य संसज्जति । एवं बहु तसघातो दीसति ।

एत्थ संगामदिट्ठंतो – तत्थ कलुसे परिट्ठविए मच्छियाओ लग्गंति, तेसिं घरकोइला धावति, तीए वि मज्जारी, मज्जारीए सुणगो, सुणगस्स वि अण्णो सुणगो, सुणगणिमित्तं सुणगसामिणो कलहेंति । एवं पक्खापक्खीए संगामो भवति ।

जम्हा एते दोसा तम्हा णो पुप्फं आदिए कसायं परिट्ठवेति ।

इमा सामायारी – वसहिपालो अच्छंतो भिक्खागयसाहु आगमणं णाउं गच्छमासज्ज एक्कं दो तिण्णि वा भायणे उग्गाहति तो जो जहा साधुसंघाडगो आगच्छति तस्स तहा पाणभायणाउ अच्छंतेसु भायणेसु परिग्गालेति । एवं अच्छं पुढो कज्जति कलुसं पि पुढो कज्जति । तं कसायं भुत्ते वा अभुत्ते वा पुव्वं पिवंति तम्मि णिट्ठिते पच्छा पुप्फं पिवंति ॥११०७॥

---

१ चिंचा=इमली । २ भक्षयित्वा । ३ जाल ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पुप्फस्स इमे कारणा –

आयरियअभावित पाणगट्ठता पादपोसधुवणट्ठा ।
होति य सुहं विवेगो, सुह आयमणं च सागरिए ॥११०८॥

आयरियस्स पाण-यतणा । एवं अभावियसेहस्स वि उत्तरकालं पाणट्ठता पायुपोसं अपानद्वारम्, एतेसिं धुवणट्ठा । उच्चरियस्स य सुहं विवेगो कज्जति । ण कूडाति दोसा भवंति । सागारिए य आयमणादि सुहं कज्जति ॥११०८॥

भाणस्स कप्पकरणं, दट्ठूणं वहि आयमंता वा ।
ओभावणमग्गहणं, कुज्जा दुविधं च वोच्छेदं ॥११०९॥

अच्छं भायणकप्पकरणं भवति । बहले पुण इमे दोसा – वसहीए वहिं चंकमणभूमीए वा वहिं आयमंते दट्ठुं सागारिओ लोगमज्झे ओभावणं करेज्ज, सव्वपासंडीणं इमे अहम्मतरा, असुचित्वात् । अग्गहणं वा करेज्ज सर्वलोगपाखंडधर्मातीता एते अग्राह्याः । अणादरो वा अग्गहणं । दुविहं वोच्छेदं करेज्ज–तद्द्रव्यान्य-द्रव्ययोः । तद्द्रव्यं पानकं, अन्यद्रव्यं भक्तवस्त्रादि ।

अहवा – तस्य साधोः, अन्यस्य वा साधोः, ॥११०९॥

अववाएणं पुण परिट्ठवेंतो वि सुद्धो, जतो –

बितियपद दोण्णि वि बहू, मीसे व विगिंचणारिहं होज्जा ।
अविगिंचणारिहे वा, जवणिज्ज गिलाणमायरिए ॥१११०॥

दो वि बहू पुप्फं [1]कसायं वा णज्जति जहा अवस्सकायं परिट्ठविज्जति । जइ वि तं पिज्जति ताहे तं ण पिवति, पुप्फं पिवति । एस पत्तेयगहियाणं विही ।

अह मीसं गहियं, तत्थ गालिए पुप्फं बहुयं कसायं थोवं, ताहे तं परिट्ठविज्जति पुप्फं पिवति ।

अहवा – कसायं विगिंचणारिहं होज्जा अणेसणिज्जति, ताहे परिट्ठविज्जति ।

अहवा – अविगिंचणारिहं पि जं आयरियातीणं जा(ज)वणिज्जं ण लभति । एवं परिट्ठवेंतो सुद्धो ॥१११०॥

विगिंचणारिहस्स वक्खाणं इमं –

जं होति अपेज्जं जं वऽणेसियं तं विगिंचणरिहं तु ।
विसकतमंतकतं वा, दव्वविरुद्धं कतं वा वि ॥११११॥

"अपेयं" मज्जमांसरसादि, "अणेसणियं" उग्गमादि दोसजुत्तं ।

अहवा – अपेयं इमं पच्छद्धेण विससंजुत्तं, वसीकरणादिमंतेण वा अभिमंतियं । दव्वविरुद्धं - जहा खीरंबिलाणं ॥११११॥

---

१ विंचितुं ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

[1]जे भिक्खू अन्नयरं भोयणजायं पडिगाहित्ता सुब्भिं सुब्भिं भुंजइ, दुब्भिं - दुब्भिं परिट्ठवेइ, परिट्ठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४४॥

सुभं - सुब्भी, असुभं - दुब्भी, शेषं पूर्ववत् ।

वण्णेण य गंधेण य, रसेण फासेण जं तु उववेतं ।
तं भोयणं तु सुब्भिं, तव्विवरीयं भवे दुब्भिं ॥१११२॥

जं भोयणं वण्णगंधरसफासेहिं सुभेहिं उववेतं तं सुब्भिं भण्णति, इतरं दुब्भिं ॥१११२॥

अहवा –

रसालमवि दुग्गंधिं, भोयणं तु न पूइतं ।
सुगंधमरसालं पि, पूइयं तेण सुब्भि तु ॥१११३॥

रसेण उववेयं पि भोयणं दुब्भिगंधं ण पूज्जितं दुब्भिमित्यर्थः । अरसालं पि भोयणं सुभगंधजुत्तं पूजितमित्यर्थः ॥१११३॥

घेत्तूण भोयणदुगं, पत्तेयं अहव एक्कतो चेव ।
जे सुब्भिं भुंजित्ता, दुब्भिं तु विगंचणे कुज्जा ॥१११४॥

सुब्भिं दुब्भिं च भोयणं एक्कतो, पत्तेय वा घेत्तुं जो साहू सुब्भिं भोच्चा दुब्भिं परिट्ठवेति तस्स मासलहुं ॥१११४॥

इमे य दोसा –

सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्तविराधणं तधा दुविधं ।
पावति जम्हा तेणं, दुब्भिं पुव्वेतरं पच्छा ॥१११५॥ कंठा

इमे य दोसा –

रसगेहि अधिकखाए, अविधि सइंगालपक्कमे माया ।
लोभे एसणघातो, दिट्ठंतो अज्जमंगूहिं ॥१११६॥

रसेसु गेही भवति । अण्णसाहूहि तो अहिगं खायति । भोयण-पमाणतो अहिगं खायति । एगओ गहियस्स उद्धरित्तुं सुखं खायति इतरं छड्डेति । कागसियालअखइयं० [2]कारग गाहा । एवं अविही भवति । इंगालदोसो य भवति । रसगिद्धो गच्छे अ धितिं अलभतो गच्छाओ पक्कमति अपक्रमतीत्यर्थः । मायी मंडलीए रसालं अलभंतो भिक्खागओ रसालं भोत्तुमागच्छति । "[3]भद्दकं-भद्दकं भोच्चा विवण्णं विरसमाहारेत्यादि" । रसभोयणे लुद्धो एसणं पि पेल्लेति ।

एत्थ दिट्ठंतो –

अज्जमंगू आयरिया बहुरसुया बहुपरिवारा मथुरं आगता । तत्थ सड्ढेहिं धरिज्जंति ता कालंतरेण ओसण्णा जाता । कालं काऊण भवणवासी उववण्णो साहुपडिबोहणट्ठा आगओ । सरीरमहिमाए अद्धकताए

---

१ एतत् सूत्रम् (२-४४) मुद्रितसूत्रप्रतौ, (२-४३) सूत्रस्यांके वर्तते, च (२-४३) अंकृतमं सूत्रं (२-४४) सूत्रस्यांकेऽस्ति । २ नास्तीमा गाथा भाष्ये । ३ दश० अ० ५ उ० २ ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जीहं णिल्लालेति । पुच्छिश्रो को भवं ? भणाति - अज्जमंगू हं । साधू सड्ढा य अणुसासिउं गतो । एते दोसा ।

पडिपक्खे अज्जसमुद्दा ।

ते रसगिद्धीए भीता एक्कतो सव्वं मेलेउं भुंजंति, तं च "[1]अरसं विरसं वा वि, सव्वं भुंजे ण छड्डए" । सूत्राभिहितं च कृतं भवति ।।१११६।।

"[2]रसगिहि" त्ति अस्य व्याख्या –

सुब्भी दढग्गजीहो, णेच्छति [3]छातो वि भुंजिउं इतरं ।
आवस्सयपरिहाणी, गोयरदीहो उ उज्झिमिया ।।१११७।।

"इतरं" दुब्भिं, तं लभंतो वि सुब्भिं भत्तणिमित्तं दीहं भिक्खायरियं अड ५ । सुत्तत्थमादिएसु-आवस्सएसु परिहाणी भवति । दुब्भियस्स "उज्झिमिया" परिट्ठावणिया ।।१११७।।

अधिक्खाए" त्ति अस्य व्याख्या–

मणुण्णं भोयणज्जायं, भुंजंताण तु एकतो ।
अधियं खायते जो उ, अहिक्खाए स वुच्चति ।।१११८।।

मनसो रुचितं मनोज्ञं, "भोअणं" असणं, जातमिति प्रकार – वाचकः, साधुभिः सार्द्धं भुंजतः जो अधिकतरं खाए सो अधिक्खाओ भण्णए ।।१११८।।

जम्हा एते दोसा –

तम्हा विधीए भुंजे, दिण्णम्मि गुरूण सेस रातिणितो ।
भुयति करंबेऊणं, एवं समता तु सव्वेसिं ।।१११९।।

का पुण विही ? जाहे आयरियगिलाणबालवुड्ढआदेसमादियाणं उक्कड्ढियं पत्तेयगहियं वा दिण्णं सेसं मंडलिरातिणिओ सुब्भि दुब्भि दव्वाविरोहेण करंबेउं मंडलीए भुंजति । एवं सव्वेसिं समता भवति । एवं पुव्वुत्ता दोसा परिहरिया भवंति ।।१११९।।

कारणओ परिट्ठवेज्जा –

बितियपदे दोण्णि वि बहू, मीसे व विगिंचणारिहं होज्जा ।
अविगिंचणारिहे वा जवणिज्जगिलाणमायरिए ।।११२०।।

[4]पूर्ववत् कण्ठा ।।११२०।।

जं होज्ज अभोज्जं जं, चऽणेसियं तं विगिंचणरिहं तु ।
विसकयमंतकयं वा, दव्वविरुद्धं कतं वा वि ।।११२१।।

[5]पूर्ववत् । ११२१।।

जे भिक्खू मणुण्णं भोयणजायं पडिगाहेत्ता बहुपरियावन्नं सिया, अदूरे तत्थ साहम्मिया संभोइया समणुन्ना अपरिहारिया संता परिवसंति, ते

---

१ दश० अ० ५ उ० १-२ । २ भा० गा० १११६ । ३ छातो=बुभुक्षितः । ४ भा० गा० १११० । ५ भा० गा० ११११ ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अणापुच्छिया अणिमंतिया परिट्ठवेति, परिट्ठवेंतं वा साति-ज्जति ।।सू०।।४५।।

जं चेव सुब्भिसुत्ते सुब्भिभोयणं वुत्तं तं चेव मणुण्णं ।

अहवा – भुक्खत्तस्स पंतं पि मणुण्णं भवति। अट्ठम - छट्ठ - चउत्थ - आयंबिलेगासणियाण [1]ओमच्छग परिहाणीए हिंडंताणं असहू, सहूण जहाविधीए [2]दिण्णुच्चरियं । बहुणा प्रकारेण परित्यागमावन्नं बहुपरियावन्नं भणति । ण दूरे अदूरे आसण्णमित्यर्थः । "तत्थ" त्ति स्ववसधीए स्वग्रामे वा [3]संभुंजंते संभोइया, समणुण्णा उज्जयविहारी ।

चोदगाह – संभोइयगहणातो चेव अपरिहारिगहणं सिद्धं, किं पुणो अपरिहारिगहणं ?

आचार्याह – चउभंगे द्वितीयभंगे सातिचारपरिहरणार्थं । "संत" इति विद्यमानः ।

जं चेव सुब्भिसुत्ते, वुत्तं तं भोयणं मणुण्णं तु ।
अहवा वि [4]परिब्भुसितस्स मणुण्णं होति पंतं पि ।।११२२।।

"[5]परिब्भुसितो" बुभुक्षितः । शेषं गतार्थम् ।।११२२।।

आचार्यो विधिमाह –

जावतियं उवयुज्जति, तत्तियमेत्ते तु भोयणे गहणं ।
अतिरेगमणट्ठाए, गहणे आणादिणो दोसा ।।११२३।।

परिमाणतो जावतितं उवउज्जति तप्पमाणमेव घेत्तव्वं । अतिरेगं गेण्हंते लोभदोसो, परिट्ठावणिय-दोसो य, आणाइणो य दोसा, संजमे पिपीलियादी मरंती, आयाए अतिबहुए भुत्ते विसूचियादी, तम्हा अतिप्पमाणं ण घेत्तव्वं ।।११२३।।

चोदग आह –

तम्हा पमाणगहणे, परियावण्णं णिरत्थयं होती ।
अधवा परियावण्णं, पमाणगहणं ततो अजुतं ।।११२४।।

तस्मादिति जति प्पमाणजुत्तं घेत्तव्वं तो परियावण्णगहणं णो भवति, सुत्तं णिरत्थयं । अह परियावण्णगहणं तो पमाणगहणमजुत्तं अत्थो णिरत्थतो ।।११२४।।

अह दोण्ह वि गहणं

एवं उभयविरोधे, दो वि पया तू णिरत्थया होंति ।
जह हुंति ते सयत्था, तह सुण वोच्छं समासेणं ११२५।।

अहवा – दो वि पदा णिरत्थया ।

---

१ दे० = अधोमुख । २ दिण्णं सत् उच्चरितं णाम उत्तीर्णं स्यात् । ३ तो जे ते(प्र०) । ४ कोषे परिब्भुसित । ५ परिज्झुसित (प्र०) परिज्झुसित (सा०) ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आचार्याह – पच्छद्धं ॥११२५॥

आयरिए य गिलाणे, पाहुणए दुल्लभे सहसदाणे ।
पुव्वगहिते व पच्छा, अभत्तछंदो भवेज्जाहि ॥११२६॥

जत्थ सड्ढाइठवणा कुला णत्थि तत्थ पत्तेयं सव्वसंधाडया आयरियस्स गेण्हंति । तत्थ य आयरिओ एगएगसंघाडगाणीतं गेण्हति, सेसं परिट्ठावणियं भवति । एवं गिलाणस्स वि सव्वे संदिट्ठा सव्वेहिं गहियं । एवं पाहुणे वि ।

अहवा – को इ संघाडतो दुल्लभ-दव्वखीरातणा णिमंतितो सहसा दातारेण भायणं महंतं भरियं । एवं अतिरित्तं ।

अहवा – भत्ते गहिए पच्छा अभत्तछंदो जातो । एवं वा अतिरेगं होज्ज ॥११२६॥

एतेहिं कारणेहिं, अतिरेगं होज्ज पज्जयावण्णं ।
तमणालोएत्ताणं, परिट्ठवेंताण आणादी ॥११२७॥

जं तुमे चोइयं पज्जतावण्णं तमेतेहिं कारणेहिं हवेज्ज । तमेवं पज्जत्तावण्णं अणालोएत्ता अणिमंतेत्ता परिट्ठवेति तस्स आणादी मासलहुं च पच्छित्तं ॥११२७॥

इमे य परिचत्ता –

बाला वुड्ढा सेहा, खमग-गिलाणा महोदरा एसा ।
सव्वे वि परिच्चत्ता, परिट्ठवेंतेण ऽणापुच्छा ॥११२८॥

बाला वुड्ढा ऽभिक्खछुहा पुणो वि जेमेज्ज, सेहा वा अभाविता पुणो वि जेमेज्जा, खमगो वा पारणगे पुणो जेमेज्ज, गिलाणस्स वा तं पाउग्गं, महोदरा वा मंडलीएण [1]उवउट्टा जेमेज्जा, आदेसा वा तेहि आगता होज्ज, अद्धाणखिन्ना वा ण जिमिता पुणो जेमेज्ज । तत्थ अणापुच्छित्तुणं परिट्ठवेंतो एते सव्वे परिच्चत्ता ॥११०२८॥

इमं पच्छित्तं –

आयरिए य गिलाणे, गुरुगा लहुगा य खमग-पाहुणए ।
गुरुगो य बाल-वुड्ढे, सेहे य महोयरे लहुओ ॥११२९॥

जति तेण भत्तेण विणा आयरिय-गिलाण-विराघणा भवति तो आणितस्स अणापुच्छा परिट्ठवेंतस्स चउगुरुगा, खमए पाहुणए य चउलहुगा, बाले वुड्ढे गुरुगो, सेहे महोदरे लहुओ ॥११२९॥

चोदग आह –

जदि तेसिं तेण विणा, आबाधा होज्ज तो भवे चत्ता ।
णीते वि हु परिभोगो, भइतो तम्हा अणेगंतो ॥११३०॥

---

१ उट्ठा (प्र०) ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

"जति तेसिं" आयरियादीणं तेण भत्तेण विणा परितावणाती पीला हवेज्ज तो ते चत्ता हवेज्ज, जति णीए [1]परिभोगः स्यात्[2], तस्मादनेकान्तत्वात् तेषामानीयमानेनावश्यं दोष इत्यर्थः ॥११३०॥

आचार्याह –

भुंजंतु मा व समणा, आतविसुद्धीए णिज्जरा विउला ।
तम्हा छउमत्थेणं, णेयं अतिसेसिए भयणा ॥११३१॥

अभुक्तेऽपि साधुभिः आत्मविसुद्धया नयतः विपुलो निर्जरालाभो भवत्येव । छद्मनि स्थितः – छद्मस्थ अनतिशयी तेनावश्यं नेयं । सातिसतो पुण जाणित्ता "भुंजइ" तो णेति, अण्णहा ण णेति ॥११३१॥

चोदग आह – आयविसुद्धीए अपरिभुंजंते कहं निर्जरा ?

आचार्यो दृष्टान्तमाह –

आतविसुद्धीए जती, अविहिंसा-परिणतो सति वहे वि ।
सुज्झति जतणाजुत्तो, अवहे वि हु लग्गति पमत्तो ॥११३२॥

यथा आत्मविशुद्धया यतिः प्रव्रजितः न हिंसा अहिंसा तद्भावपरिणतः यद्यपि प्राणिनं बाधयति तथापि प्राणातिपातफलेन न युज्यते, यतनायुक्तत्वात् । पमत्तो पुण भावस्य अविशुद्धत्वात् अवहेंतो वि पाणातिपातफले लग्गति त्ति ॥११३२॥

दिट्ठंतोवसंहारमाह –

एमेव अगहितम्मि वि, णिज्जरलाभो तु होति समणस्स ।
अलसस्स सो ण जायति, तम्हा णेज्जा सति बलम्मि ॥११३३॥

अगहिते वि भत्तपाणे आयविसुद्धीओ णेंतस्स णिज्जरा विउला भवति । जो पुण अलसदोसजुत्तो तस्स सो णिज्जरालाभो ण भवति । तस्मान्निर्जरालाभार्थिना सति बले नेयं ॥११३३॥

तत्थिमो कमो भणति –

तम्हा आलोएज्जा, सक्खेते सालए इतरे पच्छा ।
खेत्तंतो अण्णगामे, खेत्तबहिं वा अवोच्चत्थं ॥११३४॥

"आलोएति" कहयति, "सक्खेते" स्वग्रामे, "सालए" स्वप्रतिश्रये जेट्ठिया संभोतिया ते भणाति – इमं भत्तं जइ अट्ठो मे तो घेप्पउ । जइ ते णेच्छंति ताहे अण्णे भणाति । "इतरे पच्छा" स्वग्रामे वा अण्णप्रतिश्रये, जति ते वि णेच्छंति ताहे सखेत्ते अण्णगामे, जति ते पि णेच्छंति ताहे खेत्तबहि अण्णगामे कारणतो णिज्जति । एवं [3]अवोच्चत्थं णेति । कारणे अण्णसंभोतिएसु वि एस चेव कमो ॥११३४॥

उवक्कमकरणप्रतिषेधार्थम् –

आसण्णुवस्सए मोत्तुं, दूरत्थाणं तु जो णए ।
तस्स सव्वे व बालादी, परिच्चायविराधणा ॥११३५॥

१ भजितः स्यात् । २ तो प्रायश्चितमपि स्यात् प्र० । ३ अवोच्चत्थ=अव्यत्यय=अविपरीत ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आसण्णे मोत्तुं जो दूरत्थाणं पक्खवाएण णेति तस्स सा चेव बालातिविराहणा पुव्वुत्ता ॥११३५॥

स्वजनममीकारप्रतिषेधार्थम् –

ण पमाणं गणो एत्थं, ण सीसो णेव णातती ।
समणुण्णता पमाणं तु, कारणे वा विवज्जओ ॥११३६॥

मूलभेदो गणो, गच्छो वा गणो, सो अत्र प्रमाणं न भवति । मम सीसो मम स्वजनः इदमपि प्रमाणं न भवति । समणुण्णता संभोगो सोऽत्र प्रमाणं । कारणे पुण आसण्णे मोत्तुं दूरे णेति, संभोतिए वा मोत्तुं अण्णसंभोतियाण वि णेति । तं पुण गिलाणाति कारणं बहुविहं ॥११३६॥

अववाएण अणेंतो सुद्धो –

बितियपद होज्जमणं, दूरद्धाणे सपच्चवाए य ।
कालो वाऽतिक्कमता, सुब्भी लंभे व तं दुब्भिं ॥११३७॥

"अप्पं" स्तोकं अणेंतो विसुद्धो, दूरं वा अद्धाणं दूरे आसण्णे वा सपच्चवाए ण णेति, जाव आदिच्चो अत्थमेति, तेहिं वा सुब्भिं लद्धं, तं च पारिट्ठावणियं दुब्भिं, एवमादिकारणेहिं अणेंतो विसुद्धो अपच्छित्ती ॥११३७॥

जे भिक्खू सागारियं पिंडं भुंजति, भुंजंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४५॥

जे भिक्खू सागारियं पिंडं गिण्हइ, गिण्हंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४६॥

सागारिओ सेज्जातरो, तस्सपिंडो ण भोत्तव्वो । जो भुंजति तस्स मासलहुं ।

सागारिउ त्ति को पुण, काहे वा कतिविधो व सो पिंडो ।
असेज्जतरो व काहे, परिहरितव्वो व सो कस्सा ॥११३८॥
दोसा वा के तस्सा, कारणजाते व कप्पते कम्हि ।
जतणाए वा काए, एगमणेगेसु घेत्तव्वो ॥११३९॥

एताओ दारगाहाओ

"[1]सागारिउ" त्ति अस्य व्याख्या –

सागारियस्स णामा, एगट्ठा णाणवंजणा पंच ।
सागारिय सेज्जायर, दाता य[2] घरे तरे वा वि ॥११४०॥

एगट्ठा एकार्य-प्रतिपादका शक्रेन्द्रपुरन्दरादिवत् । "वंजणा" अक्खरा ते णाणाप्पगारा जेसिं अभिधाणाणं ते अभिधाणा णाणावंजणा, जहा – घडो पडो । एते पंच पश्चार्द्धेनाभिहिता ॥११४०॥

(१) कः पुनः सागारिको भवतीति चिन्तनीयम् ।

(२) कदा वा स शय्यातरो भवति ।

(३) कतिविधो वा "से" तस्स पिंडः ।

---

१ सागारिकपदमेकार्थिकनामभिः प्ररूपणीयम् । २ तरे घरे चेव – बृहत्कल्पे उद्दे० २ भाष्यगाथा ३५२१

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

(४) अशय्यातरो वा कदा भवति ।

(५) कस्य वा संयतस्य संबंधी स सागारिकः परिहर्तव्यः ।

(६) के वा तस्य सागारिकपिण्डस्य ग्रहणे दोषाः ।

(७) कस्मिन् वा कारणे जाते असौ कल्पते ।

(८) कया वा यतनया सपिण्डः ।

(९) एकस्मिन् वा सागारिके अनेकेषु द्वित्र्यादिषु सागारिकेषु ग्रहीतव्यः ।

इति द्वारगाथाद्वयसमासार्थः ।

सागारिय – सेज्जाकर-दातारा तिण्णि वि जुगवं वक्खाणेति –

अगमकरणादगारं, तस्स हु जोगेण होति सागारी ।
सेज्जा करणा सेज्जाकरो उ दाता तु तद्दाणा ॥११४१॥

"अगमा" रुक्खा, तेहिं कतं "अगारं" घरं, तेण सह जस्स जोगो सो सागारिउ त्ति भण्णति । जम्हा सो सिज्जं करेति तम्हा सो सिज्जाकरो भण्णति । जम्हा सो साहूणं सेज्जं ददाति तेण भण्णति सेज्जादाता ॥११४१॥

इदाणिं "धरेति" त्ति –

जम्हा धरेति सेज्जं, पडमाणीं छज्ज-लेप्पमादीहिं ।
जं वा तीए धरेती, णरगा आयं धरो तेणं ॥११४२॥

जम्हा सेज्जं पडमाणिं छज्ज-लेप्पमादीहिं धरेति तम्हा सेज्जाधरो ।

अहवा – सेज्जादाणपाहण्णतो अप्पाणं णरकादिसु पडंतं धरेति त्ति तम्हा सेज्जाधरो ॥११४२॥

इदाणिं "तरे" त्ति–

गोवाइतूणं वसधिं, तत्थ ठिते यावि रक्खितुं तरती ।
तद्दाणेण भवोघं, तरति सेज्जातरो तम्हा ॥११४३॥

सेज्जाए संरक्खणं संगोवणं, जेण तरति काउं तेण सेज्जातरो ।

अहवा – तत्थ वसहीए साहुणो ठिता ते वि सारक्खिउं तरति, तेण सेज्जादाणेण भवसमुद्दं तरति त्ति सिज्जातरो ॥११४३॥ सेज्जातरो त्ति दारं गतं।

इदाणिं "[1]को पुण त्ति" दारं –

सेज्जातरो पभू वा, पभुसंदिट्ठो व होति कातव्वो ।
एगमणेगो व पभू, पहुसंदिट्ठो वि एमेव ॥११४४॥

को सेज्जातरो पहू, सो दुविहो–पभू वा पभुसंदिट्ठो वा । पहू एगो अणेगे वा । पहुसंदिट्ठो एगो अणेगा वा ॥११४४॥

---

१ भा० गा० ११३८ ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सागारियसंदिट्ठे, एगमणेगे चतुक्कभयणा तु ।
एगमणेगा वज्जा, णेगेसु तु ठावए एक्कं ॥११४५॥

एत्थ सादिस्संतए य संदिट्ठेसु य चउरो भंगा । १ एक्को पहू एक्कं संदिसति । २ एगो पहू अणेगे संदिसति । एवं चउभंगो । एगो वा सेज्जातरो अणेगा वा सेज्जातरा वज्जेयव्वा । अववाए अणेगेसु ठावए एगं । एतं उवरि वक्खमाणं ॥११४५॥ "को पुण" त्ति दारं गतं ।

इदाणिं "[1]काहे त्ति" –

१ २ ३ ४ ५ ६
अणुण्णवितउग्गहंऽगण - पाउग्गाणुण्ण अइगए ठविए ।
७ ८ ९ १० ११
सिज्जाय भिक्ख भुत्ते, णिक्खित्ताऽऽवासए एक्के ॥११४६॥

एत्थ णेगमणय - पक्खासिता आहु ।

एक्को भणति – अणुण्णविए उवस्सए सागारिओ भवति ।

अण्णो भणति – जता सागारियस्स उग्गहं पविट्ठा ।

अण्णो भणति – जता अंगणं पविट्ठा ।

अण्णो भणति – जता पाउग्गं तणडगलादि अणुण्णवितं ।

अण्णो भणति – जता वसहिं [2]पविट्ठा

अण्णो भणति – जदा दोद्धियादिभंडयं दाणाति कुलट्ठवणाए वा ठवियाए ।

अण्णो भणति – जता सज्झायं आढत्ता काउं ।

अण्णो भणति – जता उवओगं काउं भिक्खाए गता ।

अण्णो भणति – जता भुंजिउमारद्धा ।

अण्णो भणति – भायणेसु निक्खित्तेसु ।

अण्णो भणति – जता देवसियं आवस्सयं कतं । एकशब्दः प्रत्येकं योज्यः ॥११४६॥

पढमे बितिए ततिए, चउत्थ जामम्मि होति वाघातो ।
णिव्वाघाते भयणा, सो वा इतरो व उभयं वा ॥११४७॥

अण्णो भणति – रातीए पढमे जामे गते ।

अण्णो भणति – बितिए ।

अण्णो भणति – ततिए ।

अण्णो भणति – चउत्थे ।

आयरियो भणति – सव्वे एते अणादेसा एव होंति । "वाघातो" त्ति "अणुण्णवितउग्गहं ऽगणादिसु जाव-णिक्खित्तेसु" दिवसतो चेव । वाघाएण अण्णं वसहिं अण्णं वा खेत्तं गताणं सो कस्स सागारिओ भवति ?

१ गा० ११३८ । २ अइगया ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आवस्सगादिएसु रातो पढम-बितिय-ततिय चउत्थजामेसु तव्वसहिवाघाएण बोहितातित भएसु य तत्थ अवसतो ण सागारिओ भवतीत्यतः सर्वे अनादेशा इत्यर्थः। "णिव्वाघाए भएण" त्ति जति ण गता णिव्वाघाएण, रत्ति तत्थेव वुत्था, तो भयणा, सो वा सेज्जायरो, इतरो वा अण्णो उभयं वा ।।११४७।।

"[1]सो वा इतरो व" त्ति अस्य व्याख्या –

जति जग्गंति सुविहिता, करेंति आवासगं तु अण्णत्थ ।
सेज्जातरो ण होति, सुत्ते व कते व सो होति ।।११४८।।

'यदि" इत्यभ्युपगमे, रातीए चउरो वि, पहरे जग्गंति, सोभणविहिता "सुविहिता" साधव इत्यर्थः। अहोरत्तस्स चरमावस्सगं अण्णत्थ गंतुं करेंति स सेज्जातरो न भवति। जत्थ राउ ट्ठिता तत्थेव सुत्ता तत्थेव चरिमावस्सयं कयं तो सेज्जातरो भवति ।।११४८।।

"[2]उभयं वा" अस्य व्याख्या –

अण्णत्थ वसीऊणं, आवासग चरिममण्णहिं तु करे ।
दोण्णि वि तरा भवंती, सत्थादिसु अण्णहा भयणा ।।११४९।।

अण्णत्थ वसिउं चरिउं आवस्सयं जदि करेंति अण्णत्थ तो दो वि सेज्जातरा भवंति। इदं च प्रायसः सार्थादिषु संभवति "अण्णह" त्ति गामादिसु वसंतस्स भयणा ।।११४९।।

सेज्जायरस्स सा य भयणा इमा –

असति वसधी य वीसुं, वसमाणाणं तरा तु भइतव्वा ।
तत्थ ऽण्णत्थ व वासे, छत्तच्छायं च वज्जेंति ।।११५०।।

जत्थ संकुडा वसही ण सव्वे साहवो मायंति तत्थ वीसुं अण्णवसहीए अद्धतिभागादि आगच्छंति। एवं वसमाणाणं सेज्जातरा भइयव्वा। सा य भयणा इमा – जे [3]सुए आगता ते जति तत्थेव कल्लदिणे सुत्तपोरिसिं काउं आगच्छति तो दो वि सेज्जायरा। अह मूलवसहिं आगम्म करेंति तो सेज्जातरो ण भवति। लाटाचार्याभिप्रायात् तत्थ वा अण्णत्थ वा वसंतु। "छत्तो" आयरिओ, तस्स छायं वज्जेंति – जत्थायरिओ वसति स सेज्जायरो वज्जो। सेसा असेज्जातरा ।।११५०।। "काहे" त्ति दारं गतं।

इदाणिं "कतिविहो व सो पिंडो त्ति"–

दुविह चउव्विह छउव्विह, अट्ठविहो होति बारसविधो वा ।
सेज्जातरस्स पिंडो, तव्वतिरित्तो अपिंडो उ ।।११५१।।

दुविहं चउव्विहं छव्विहं च एगगाहाए वक्खाणेति –

आधारोवधि दुविधो, विदु अण्ण पाण ओहुवग्गहिओ ।
असणादि चउरो ओहे, उवग्गहे छव्विधो एसो ।।११५२।।

आहारो उवकरणं च एस दुविहो। बे दुया चउरो त्ति, सो इमो – अण्णं पाणं ओहियं उवग्गहियं च। असणादि चउरो ओहिए उवग्गहिए य, एसो छव्विहो ।।११५२।।

---

१ गा० ११४७। २ गा० ११४७। ३ श्व दिने। ४ गा० ११३८।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इमो अट्ठविहो –

असणे पाणे वत्थे, पाते सूयादिगा य चउरट्ठा ।
असणादी वत्थादी, सूयादि चउक्कगा तिण्णि ॥११५३॥

असणे पाणे वत्थे पादे, सुती आदि जेसिं ते सूतीयादिगा – सूती पिप्पलगो नखरदनी कण्णसोहणयं । इमो बारसविहो – असणाइया चत्तारि, वत्थाइया चत्तारि, सूतियादिया चत्तारि, एते तिण्णि चउक्का बारस भवंति ॥११५३॥

इमो पुणो अपिंडो –

तण-डगल-छार-मल्लग, सेज्जा-संथार-पीढ-लेवादी ।
सेज्जातरपिंडेसो, ण होति सेहोव सोवधि उ ॥११५४॥

लेवादी, आदिसद्दातो कुडमुहादी, एमो सव्वो सेज्जातरपिंडो ण भवति । जति सेजायस्स पुत्तो धूया वा वत्थपायसहिता पव्वएज्जा सो सेज्जातरपिंडो ण भवति ॥११५४॥

इदाणि "असेज्जातरो व काहे" त्ति दारं –

आपुच्छित-उग्गाहित, वसधीतो णिग्गहोग्गहे एगो ।
पढमादी जा दिवसं, वुच्छे वज्जेज्जऽहोरत्तं ॥११५५॥

एत्थ नैगमनय-पक्षाश्रिता आहुः ।

एगो भणति – जदा खेत्तपडिलेहएसु गएसु आयरिएणं अण्णोवदेसेण पुच्छितो भवति ।

[1]उच्छू वोलंति त्ति गाहा ।

तदा असेज्जातरो भवति ।

अण्णो भणति – णिग्गंतुकामेहि उग्गाहिएहिं असेज्जातरो ।

अण्णो भणति – वसहीओ जाहे णिग्गता ।

अण्णो भणति – सेज्जायरोग्गहातो जाहे णिग्गता । एगशब्दः प्रत्येकं । "पढमाति जाव दिवसं" ति – अणुग्गए सूरिए णिग्गता सूरोदयाओ असेज्जातरं मच्छंति ।

अण्णो भणति – सूरुग्गमे णिग्गताण जाव पढमपहरो ताव सेज्जातरो बितियाइसु असेज्जातरो ।

अण्णो भणति – जाव दो जामा ताव सेज्जातरो, परतो असज्जातरो ।

अण्णो भणति – जाव तिण्णि जामा ताव सेज्जातरो परतो असेज्जातरो ।

अण्णो भणति – जाव दिवसं ताव सेजातरो परतो असेज्जातरो भवति ।

पढमाति जाव दिवसं अस्य व्याख्या "वुच्छे वज्जेज्जा" येनोक्तं "पढमपोरिसीए सूरोदयाओ आरब्भ-जाव-चउत्थो पहरो ताव ण कप्पति परतो रातीए अचिंता" ।

अस्माकं आचार्याह – कुत एतत् ?

---

१ उच्छू वोलंति वइं, तुंबीओ जायपुत्तभंडाओ ।
वसभा जायत्थामा, गामा पव्वाय चिक्खल्ला ॥ बृह० उ० १ भा० गा० १५३६ ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

चोदगाह –

अग्गहणं जेण णिसिं, अणंतरेगंतरा दुहिं च ततो ।
गहणं तु पोरिसीहिं, चोदग ! एते अणाएसा ॥११५६॥

यस्मात् रात्रौ अग्रहणं अस्माकं तस्मादचिंता । अणंतर-एगंतर-दुअंतरपोरिसीहिं जे गहणमिच्छंति एते सव्वे एवंवादी ।

अहवा – अन्यथाऽभिधीयते "आपुच्छिय उग्गाहिय वसहीओ णिग्गतोग्गहे" जंति गमणविग्घमुप्पण्णं ठिएसु य कहं असेज्जातरो भवति ? जे पुण पढमादि पहरविहागेण असेज्जातरमिच्छंति तेसिं सूरत्थमणविणिग्गयाण ।

आचार्याह – चोदक ! एते सव्वे अणाएसा, इमो आदेसो वुच्छे – वज्जेज्जऽहोरत्तं, ण पहरविभाग-परिकप्पणाए विसेसो को वि अत्थि ।

जतो भण्णति "[1]अग्गह" –

आचार्याह – अतो जेण अणंतर-एगंतर-दुअंतराहिं पोरिसीहिं गहणमिच्छंति । हे चोदक ! अस्मात् कारणा एते सर्वे अनादेशा । एतं आयरियवयणं ।

इमो आएसो – जावतिएणं असेज्जातरो भवति । जहण्णेण चउजामेहिं गतेहिं उक्कोसेणं बारसहिं । कहं चउरो जामा ? सूरत्थमणवेलाए दिवसतो णिग्गताणं रयणीए चउरो जामा । सूरुग्गमे असेज्जातरो गतं ॥११५६॥

सूरत्थमणम्मि तु णिग्गताण दोण्ह रयणीण अट्ठ भवे ।
देवसिय मज्झ चउरो, दिणणिग्गत बितिय सा वेला ॥११५७॥

उक्कोसेणं इमं – ण सूरत्थमणे राओ णिग्गता रातीए चउरो जामा, पभाए दिवसस्स चत्तारि जामा, बीयरातिए चत्तारि, एवं बारसण्हं जामाणं अंते उक्कोसेण असेज्जातरो । एस एक्को आदेसो ।

इमो बितिओ "वुच्छे वज्जेज्ज अहोरत्तं" ति अस्य व्याख्या – "दिणणिग्गय बितिय सा वेला" । सूरुदए दिवसतो णिग्गता बितिय – दिवसे ताए चेव वेलाए असेज्जातरो, एवं अहोरत्तं वज्जियं भवति । असेज्जातरो व काहे त्ति दारं गयं ॥११५७॥

इदाणिं "[2]परिहरियव्वो व सो कस्से" ति दारं –

लिंगत्थस तु वज्जो, तं परिहरतो व भुंजतो वा वि ।
जुत्तस्स अजुत्तस्स व, रसावणो तत्थ दिट्ठंतो ॥११५८॥

साधुगुणवज्जिओ जो लिंगं धरेति तस्स जो सेज्जातरो तस्स पिंडं सो भुंजउ, मा वा भुंजउ तहावि वज्जो ।

चोदगो भणति – साहुगुणेहि अजुत्तस्स कम्हा परिहरिज्जिइ ?

आयरिओ भणइ – साहुगुणेहिं जुत्तस्स वा अजुत्तस्स वा वज्जणिज्जो ।

---

१ भा० गा० ११५६ । २ गा० ११३८ ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

एत्थ दिट्ठंतो "रसावणो" रसावणो नाम मज्जावणो। मरहट्टविसए रसावणे मज्जं भवतु मा वा भवतु तहावि तत्थ ज्झयो बज्झति, तं ज्झयं दट्ठुं सव्वे भिक्खायरियादी परिहरंत्ति "अभोज्जमि" त्ति काउं। एवं अम्ह वि साधुगुणेहिं जुत्तो वा अजुत्तो वा भवति, रयहरण ज्झओ जतो दीसति त्ति काउं परिहरंति दारं ॥११५८॥

"[1]दोसा वा के तस्स" त्ति दारं –

तित्थंकरपडिकुट्ठो, आणा-अण्णाय-उग्गमो ण सुज्झे।
अविमुत्ति अलाघवता, दुल्लभ सेज्जा य वोच्छेदो ॥११५९॥

"तित्थकरपडिकुट्ठो त्ति" अस्य व्याख्या - तित्थगरा ऋषभादयः तेहिं पडिकुट्ठो प्रतिषिद्धः ॥११५९॥

पुर-पच्छिमवज्जेहिं, अवि कम्मं जिणवरेहिं लेसेणं।
भुत्तं विदेहएहि य, ण य सागरियस्स पिंडो तु ॥११६०॥

"पुरिमो" रिसभो, "पच्छिमो" वद्धमाणो, एते दो वि मोत्तुं, "अवि" संभावणे, तेसिं मज्झिमेगाणं बावीसाए जिणिंदाणं आहाकम्मं भुत्तं "लेसेणं" ति सुत्तादेसेणं, महाविदेहे खेत्ते जे साहू तेहि अ सुत्तादेसेण कम्मं भुत्तं, ण य सागारियस्स पिंडो। एवमसौ प्रतिषिद्धः।

"[2]आणाए" व्याख्या –

सव्वेसिं तेसिं आणा, तप्परिहारीण गेण्हता ण कया।
अण्णातं च ण जुज्जति, जहिं ठिता तत्थ गिण्हतो ॥११६१॥

तं सेज्जातरपिंडं परिहरंति जे ते तप्परिहारी। ते य [3]तित्थकरा। तेसिं सव्वेसिं सेज्जायरपिंडं गेण्हता आणा ण कता भवति।

"[4]अण्णाय उंच्छंति" अस्य व्याख्या – पच्छद्धं जेसिं चेव घरे ठितो तेहिं चेव घरे ठितो तहिं चेव गेण्हंतस्स अण्णायउंछं ण घडतीत्यर्थः ॥११६१॥

"[5]उग्गमो ण सुज्झति" अस्य व्याख्या –

बाहुल्ला गच्छस्स तु, पढमालियपाणगादिकज्जेसु।
सज्झायकरणआउट्टिया करे उग्गमेगतरं ॥११६२॥

गच्छाणं बहुत्तणं बाहुल्ला, गच्छे साहु-बहुत्तणेण वा बाहुल्ला, पढमालियपाणमट्ठता पुणो पुणो पविसंतेसु उग्गमदोसेगतरं करेज्ज।

अहवा स्वाध्यायमंता साधवो करणचरित्तमंता साहवो एवं आउट्टिया उग्गमदोसे करेज्ज ॥११६२॥

"[6]अविमो त्ति" व्याख्या – अविमो त्ति भावः अविमुक्तिः गृद्धिरित्यर्थः।

दव्वे भावेऽविमुत्ती, दव्वे वीरल्ल ण्हारुबंधणता।
सउणग्गहणाकड्ढण पड्डुमुक्के वि आणेति ॥११६३॥

---

१ गा० ११३९। २ गा० ११५९। ३ पढमचरमतित्थयरसाहूणं। ४ गा० ११५९। ५ गा० ११५९। ६ गा० ११५९।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अविमुक्तिः दुविधा – दव्वे भावे य। दव्वे वीरल्लसउणिदिट्ठंतो [1]वीरल्लो ओलायगो सो ण्हारु तंतीति पायबद्धो जत्थ तित्तिराति सउणो दीसति तत्थ मुंचति, तम्मि सउणे गहिते जदा उप्पत्तिओ तदा तंतीउ आगड्ढियागयस्स हत्थतले मंसं दिज्जति। एवं सुभाविओ मंसपरिद्धो[2] वि णावि ण्हारुणीए सउणं नेत्तुं आगच्छति। ॥११६३॥

इयाणिं भावाविमोत्ती –

भावे उक्कोस-पणीत-गेहितो तं कुलं ण छड्डेति।
ण्हाणादी कज्जेसु वि, गतो वि दूरं पुणो एति ॥११६४॥

"भावे" त्ति भावअविमुत्ती उक्कोसदव्वे खीरातिए "पणीतं" घृतं जेसु कुलेसु लब्भइ ते कुले न छड्डेइ गेहिओ।

अहवा – तित्थगर-पडिमाणं ण्हवणपूया रहजत्ताइसु कुलाइकज्जेसु वा दूरं पि गओ पुणो ते कुले एति गेहिओ ॥११६४॥

इयाणिं "अलाघवे" त्ति अस्य व्याख्या – लघुभावो लाघवं, न लाघवं अलाघवं, बहूपकरण-मित्यर्थः। तं अलाघवं इमं दुविहं –

उवधी-सरीरमलाघव, देहे णिद्धादिविहितसरीरो।
संघंसण सासभया, ण विहरति विहारकामो वि ॥११६५॥

उवही सरीरे य अलाघवशब्दः प्रत्येकं योज्यः। "देहे" त्ति सरीरालाघवं भण्णति–घयखीरातिणिद्ध-ज्झवहारेणं अविहरेंतो परिवूढसरीरो णिसज्जणसंघंसणभया सासभया वा ण विहरति विहरणकामो वि ॥११६५॥

उवकरणालाघवं इमं –

सागारिपुत्त-भाउग-णत्तुग-दाणमतिखद्ध भारभया।
ण विहरति ओम सावत णिय-ऽगणि-भाणए दोत्ति ॥११६६॥

सागारिओ सेज्जातरो, पुत्त भाय पुत्तस्स पुत्तो णत्तुओ, "दाणं" ति एतेहिं बहु सूवकरणं दत्तं, तब्भारभया तेणभया वा वोढुमसमत्थो य ण विहरति विहारकामो वि। "ओमं" ति अणया दुब्भिक्खं जातं, सो य साहू ण विहरति।

सावगेण चिंतियं "अम्हे ता वहुपुत्तणत्तुयादिपडिवद्धा ण विहरामो एस साहू किं ण विहरति ?" णूणं बहूवकरणपडिवद्धो तेन न विहरइ। तओ तेण सावएण साहुस्स भिक्खादिविणिग्गयस्स सव्वोवकरणं संगोवेउं मायाविणा होउं उवस्सओ अगणिणा पलीविओ। साहू आगओ हा कट्ठं करेति, बहूवकरणं दड्ढं।

सावगं पुच्छति – किं चि अवणीयं ?

सो भणति – ण सविकयं, परं दो भायणे अवणीते।

बितियदिणे साहू भणइ – गच्छामि णं जओ सुभिक्खं।

सावएण भणियं – अवस्सं सुभिक्खीभूते पुणो एज्जसु। पडिवण्णो।

पुणो आगयस्स सब्भावो कहिओ। उवकरणं च से दिण्णं। एते दोसा अलाघवे ॥११६६॥

१ श्येनपक्षी। २ पगिद्धो प्र०। ३ गा० ११५९।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इदाणिं "[1]दुल्लभसेज्ज" त्ति अस्य व्याख्या –

वासा पयरणगहणे, दोगच्चं अण्ण आगते ण देमो ।
पयरण णत्थिं ण कप्पइ, असाधु तुच्छे य पण्णवणा ॥११६७॥

एगम्मि णगरे सेट्ठिघरे एगनिवेसणे पंचसइओ गच्छो वासासु ठितो । सो य सेज्जातरो अपण्णविओ पण्णविओ वा घरे भणाति – जति साहू घरातो भिक्खकाले पढमं तुच्छेण रिक्केण भायणेण निग्गच्छंति तो अमंगलं भवति। ततो सव्वसाहूणं दिणे दिणे भिक्खं देज्जाहि। ते साधवो ओमकारणे तम्मि सेट्ठिसेज्जायरकुले दिणे दिणे एक्केक्को साहुसंघाडओ पढमं पयरणं भिक्खं गेण्हति । ते साहु पुण्णे वासाकाले गता । तस्स य कालेण दोगच्चं दरिद्दता जाता । अण्णे साहवो आगया वसहिं मग्गंति । सो भणाति अत्थि वसही, ण पुण देमो ।

साधुहि भणियं – किं कारणं ण देसि ?

सो भणाति – पयरणं णत्थि, तेण ण देमो । साहू भणति ण कप्पति अम्हं पयरणं घेत्तुं ।

सो भणाति – जइ साहू मम घराओ तुच्छेण रिक्केण भायणेणं णिग्गच्छंति अमंगलं भवति । ताहे सो पण्णविओ, वसही य दिण्णा । एते दोसा ॥११७७॥

इदाणिं "[2]वोच्छेदे" त्ति अस्य व्याख्या –

थल-देउलियट्ठाणं, सति कालं दट्ठु दट्ठु तहिं गमणं ।
णिग्गते वसही भुंजण, अण्णे उब्भामगा ऽऽउट्टा ॥११६८॥

एगो गामो तस्स मज्झे थलं । तम्मि थले गामेण मिलित्तु देउलं कतं । तत्थ साहू ठिता, सो सव्वो गामो सेज्जातरो । ते य साहू भिक्खाकालं पडियरंता जत्थ जत्थ घरे सति कालं देक्खंति तत्थ तत्थ गच्छंति । एवं ण किं चि कुलं दिणे दिणे छुट्टति । एवं ते गिहत्था णिव्विण्णा । गतेसु तेसु साहुसु देवकुलिया भग्गा । मा अण्णो वि कोवि ठाहिति । एवं सेज्जाविच्छेदो भवति ।

अण्णम्मि एरिसे थलग्गामे अण्णे साहू ठिता । ते सग्गामे ण हिंडंति, बहिं भिक्खायरियं करेंति सज्झायपरा य अच्छति । आउट्टो लोगो, णिमंतेति, साहू भणंति – बालादीण कज्जे य घेच्छामो । एवं कज्जे सुलभं भवति, ण य वसहि - वोच्छेओ ॥११६८॥ "दोसा वा के तस्स" त्ति दारं गतं ।

इदाणिं [3]कारणजाते च कप्पति कम्हिं" त्ति अस्य व्याख्या –

दुविधे गेलण्णम्मि, णिमंतणा दव्वदुल्लभे असिवे ।
ओमोयरियपदोसे, भए य गहणं अणुण्णायं ॥११६९॥

दुविधं आगाढाणागाढं गेलण्णं ॥११६९॥

तत्थ –

तिपरिरयमणागाढे, आगाढे खिप्पमेव गहणं तु ।
कज्जम्मि छंदिया घेच्छिमो त्ति ण य वेंति उ अकप्पं ॥११७०॥

१ गा० ११५९ । २ गा० ११५९ । ३ गा० ११३९ ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अणागाढे तिन्निवारा आहिंडिउं जति न लद्धं गिलाणपाउग्गं ततो चउत्थवाराए सेज्जातरपिंडं गेण्हंति। आगाढे पुण गेलण्णे – खिप्पमेव सेज्जातरपिंडगहणं करेंति।

"णिमंतणे" त्ति दारं –"छंदिता" नाम णिमंतिता भणंति "जया कज्जं तया घिच्छामो" ण य साहू भणंति – जहा तुम्ह पिंडो अम्हं ण कप्पति ॥११७०॥

अहवा – छंदिया एवं भणंति।

जं वा असहीणं तं, भणंति तं देहि तेण णे कज्जं।
अतिणिब्बंधे व सतिं (सइं), घेत्तूण पसंग वारेंति ॥११७१॥

जं द्रव्यं, वा विकल्पप्रदर्शने, "असहीणं" ति घरे णत्थि तं, साहू भणंति – अमुगं दव्वं देहि तेण दव्वेण अम्ह [2]भारियं कज्जं।

अहवा – सेज्जातरस्स ग्राहं प्रति अतिणिबंधे "सइं" तु सकृद्ग्रहणं कुर्वन्ति। तमेवं कारणे सकृद् गृहीत्वा प्रसंगं णिवारयंतीत्यर्थः ॥११७१॥

"[3]दव्वदुल्लभे" त्ति अस्य व्याख्या –

दुल्लभदव्वे च सिया, संभारघयादि घेप्पते तं तु।
असिवोमे पणगादिसु, जति ऊणमसंथरे गहणं ॥११७२॥

दुल्लभदव्वं अण्णत्थ ण लब्भति, स्याद् अवधारणार्थे, बहुदव्व-संभारेण कतं घृतं तेल्लं वा खीरादि वा गिलाणट्ठा सेज्जातरघरे घेप्पज्ज। "असिवे[4] ओमे[5] य" अण्णओ पणगादि जतिऊण जाहे न संथरेति ताहे सेज्जातरकुले गहणं करेति ॥११७२॥

"[6]पदोसे" त्ति रायदुट्ठे अस्य व्याख्या –

उवसमणट्ठ पउट्ठे सत्थो वा जाव ण लभते ताव।
अच्छंता पच्छण्णं गेण्हंति भये[4] वि एमेव ॥११७३॥

पउट्ठस्स रण्णो उवसमणट्ठा अच्छता भत्तपडिसेहे सेज्जातरपिंडं गेण्हंति। णिव्विसताण वा जाव सत्थो ण लब्भति ताव पच्छन्ना अच्छंता मा अडंते राया रायपुरिसा वा दच्छिंति, अतो अंतो सेज्जातरकुले गेण्हंति। बोधियतेणेसु सग्गामे अलब्भंते भिक्खायरियं च गंतुं ण सक्कंति अतो सेज्जातरकुले गेण्हंति ॥११७३॥

"[7]जयणाए वा काए" त्ति अस्य व्याख्या –

तिक्खुत्तो सक्खेत्ते, चउदिसिं मग्गिऊण कडजोगी।
दव्वस्स तदुल्लभया, सागारि णिसेवणा दव्वे ॥११७४॥

सक्कोसजोयणब्भंतरे सग्गामपरग्गामेसु ततो वारा तिक्खुत्तो मग्गिऊणं एवं समंततो कए जोगे जाहे ण लब्भति भिक्खं दुल्लभदव्वं वा ताहे सागारियदव्वं णिसेविज्जति भुज्जते इत्यर्थः ॥११७४॥ एगस्स सेज्जातरस्स विहाणं गतं।

---

१ गा० ११६६। २ अत्यावश्यकम्। ३ गा० ११६६। ४ गा० ११६६। ५ गा० ११६६। ६ गा० ११६६। ७ गा० ११३६।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

"[1]इदाणिं एगमणेगेसु घेत्तव्वो" त्ति अस्य व्याख्या –

णेगेसु पिता-पुत्ता, सवत्ति वणिए घडा वए चेव ।
एतेसिं णाणत्तं, वोच्छामि अहाणुपुव्वीए ॥११७५॥

अणेगसेज्जातरेसु इमे विहाणा – पितापुत्ताणं सामण्णं घरं देवकुलं वा तम्मि पउत्थे, [2]सवित्तिणी-सामण्णं वा, बहुवणीयसामण्णं वा, एगम्मि वा अणेगहा ठिते त्ति । घडा गोट्ठी सामण्णं, वए गोकुले गोवालग-धणियसामण्णं खीरादी, एतेसिं पियापुत्तादियाण सरूपं, वक्ष्ये ॥११७५॥

पितापुत्त त्ति एते दोवि दारा जुगवं वच्चंति ।

एतेसिं इमे दारा –

पियपुत्तथेरए वा, अप्पभुदोसा य तम्मि तु पउत्थे ।
जेट्ठादि अणुण्णवणा, पाहुणए जं विहिग्गहणं ॥११७६॥

[3]पियपुत्तथेरए वा अस्य व्याख्या –

दुप्पभिति पितापुत्ता, जहिं होंति पभू ततो भणति सव्वे ।
णातिक्कमंति जं वा, अपभुं व पभुं व तं पुव्वं ॥११७७॥

दुप्पभिति पितापुत्ताणं जे पभू दो तिण्णि वा ते सव्वे अणुण्णवेंति, जं वा पभुं वा णातिक्कमंति तं पुव्वं अणुण्णवेंति ॥११७७॥

"[4]अप्पभुदोसा य" अस्य व्याख्या –

अप्पभु लहुओ दिय णिसि चउ णिच्छूढे विणास गरहा य ।
असधीणम्मि पभुम्मि तु, सधीण जेट्ठादणुण्णवणा ॥११७८॥

जइ अप्पभुं अणुण्णवेंति मासलहुं, दिया जइ पभू णिच्छुभति चउलहुं, राओ चउगुरुं, राओ णिच्छूढा तेण सावएहिं विणासं पावेज्जा, दिया रातो वा णिच्छूढा अण्णतो वसहिं मग्गंता लोगेण गरहिज्जंति किं वो सुभेहिं कम्मेहिं घाडिया । अम्हे वि ण देमो ।

"[5]तम्मि उ पउत्थे जेट्ठादि अणुण्णवणा" अस्य व्याख्या – पश्चार्द्धं । पभू पिता जदि असहीणो पविसितो जो जेट्ठो पुत्तो सो अणुण्णविज्जति । ततो अणुजेट्ठादि सव्वे वा पभू तो जुगवं । जं वा णातिक्कमंति तं पुव्वं । एवं बहु-भेदे तहा अणुण्णवेति जहा दोसो ण भवति ॥११७८॥

"[6]पाहुणए" त्ति अस्य व्याख्या –

पाहुणयं च पउत्थे, भणंति मित्तं व णातगं वासे ।
तं पि य आगतमेत्तं, भणंति अमुगेण णे दिण्णं ॥११७९॥

---

१ गा० ११३९ । २ गृहे सपत्नि । ३ गा० ११७५ । ४ गा० ११७६ । ५ गा० ११७६ । ६ गा० ११७६ ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पभुम्मि [1]पउत्थे तस्स य "[2]अब्भरहितो पाहुणओ आगओ सो अणुण्णविज्जति ।

अहवा – मित्तो अणुण्णविज्जति । स्वजनो वा मे अणुण्णविज्जइ । तं पि य पभुं आगयमेत्तं एवं भणंति – अम्हट्ठा [3]गो अमुगेण दिण्णो । सो य इट्ठणामग्गहणे कते ण घाडेति ॥११७६॥

अप्पभुम्मि इमा विधी –

अप्पभुणा तु विदिण्णे, भणंति अच्छामु जा पभू एति ।
पत्ते तु तस्स कहणं, सो तु पमाणं ण ते इतरे ॥११८०॥

अप्पभू अणुण्णविओ भणति – अहं ण याणामि, ताहे साहू भणंति – जा पभू एति ता अम्हं ठाणं पयच्छ । एवं अप्पभुणावि दिण्णे अच्छंति आगते पहुम्मि तस्स जहाभूतं कहेंति, कहिए तो सो घाडेति वा देति वा स तत्र प्रमाणं भवति, ण ते इतरे – अप्पभुणो प्रमाणमित्यर्थः ॥११८०॥

"[4]जं विहिगहणं" ति – जं विहीते गहण तं अणुण्णातं अविहि-गहणं णाणुण्णायं ।

इति एस अणुण्णवणा, जतणा पिंडो पभुस्स वज्जो तु ।
सेसाणं तु अपिंडो, सो चिय वज्जो दुविधदोसा ॥११८१॥

एस अणुण्णवणा, जयणा भणिया ।

इदाणिं सेज्जातरपिंडजयणा – जो पभू तस्स सेज्जातरो त्ति काउं घरे भिक्खापिंडो वज्जो । सेसाणं अपहूण घरे ण सेज्जातरपिंडो तो वि सो वज्जो, भद्द-पंत-दोसपरिहरणत्थं ॥११८१॥ "पियापुत्त" त्ति गयं ।

इदाणिं "[5]सवित्तिणि" त्ति दारं –

एगे महाणसम्मी, एगतो उक्खित्त सेसपडिणीए ।
जेट्ठादि अणूण्णवणा, पउत्थे सुतजेट्ठ जाव पभू ॥११८२॥

अस्या पश्चार्धस्य तावत् पूर्वं व्याख्या – पभुम्मि पउत्थे जा जेट्ठतरी भज्जा तमणुण्णवेंति । तस्सासति अणुजेट्ठाती । जस्स वा सुतो जेट्ठो । अपुत्तमाया वि जा पभू तं वा अणुण्णवेंति ॥११८२॥

इणमेवत्थं किंचि विसेसियं भण्णति –

तम्मि असधीणे जेट्ठा, पुत्तमाता व जाव से इट्ठा ।
अध पुत्तमायसव्वा, जीसे जेट्ठो पभू वा वि ॥११८३॥

तम्मि घरसामिए असहीणे पवसिते जा जेट्ठा पुतमाता सा अणुण्णविज्जति ।

अह दो वि जेट्ठा पुत्तमाताओ य जा इट्ठतरा सा अणुण्णविज्जति ।

अह सव्वातो जेट्ठाओ, सपुत्ताओ, इट्ठाओ य तो जीसे पुत्तो जेट्ठो सा अणुण्णविज्जति ।

अह जेट्ठो वि अप्पभू तो कणिट्ठयपभू माता वि अणुण्णविज्जति ।

अहवा जेट्ठा वा अजेट्ठा वा पुत्तमाता इतरा वा जीए दिण्णं णातिक्कमति तमणुण्णवेंति । एसा अणुण्णवणा ॥११८३॥

१ प्रोषिते । २ पूज्यः । ३ भूमि । ४ गा० ११७६ । ५ गा० ११७५ ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इमा पिंडगहणे विही –

असधीणे पभुपिंडं, वज्जंती सेसएसु भद्दादी ।

साधीणे जहिं भुंजति, सेसेसु व भद्दपंतेहिं ॥११८४॥

[1]असहीणे सेज्जातरे जा पभुसवित्तिणी तीए पिंडं वज्जेंति । सेस-सवित्तिणि-घरेसु ण सेज्जातरपिंडो, भद्द-पंतदोसणिमित्तं तेसु वि परिहरंति ।

अहवा – साहिणो सेज्जातरो तो जत्थ भुंजति तत्थ वज्जणिज्जो, सेसेसु ण पिंडो, दु-दोसाय परिहरंति ।

एवं [2]पच्छद्धं गाहाते वक्खाणियं ।

इदाणिं पुव्वद्धं वक्खाणिज्जति "एगे महाणसम्मि एगतो उक्खित्त सेसपडिणीए" त्ति ।

इमा भंगरयणा –

एगत्थ रद्धं, एगत्थ भुत्तं । एगत्थ रद्धं, वीसुं भुत्तं ।

वीसुं रद्धं, एगत्थ भुत्तं । वीसुं रद्धं, वीसुं भुत्तं ।

एक्के महाणसम्मि एक्कतो त्ति एगओ रद्धं, एगओ त्ति भुत्तं, एस पढमभंगो ।

उक्खित्तसेसपडिणीते त्ति उक्खित्तं अतिणीयं भोजनभूमीए वीसु रद्धं । एस ततियभंगो ।

बितिय-चउत्था भंगा अवज्जणिज्ज त्ति काउं ण गहीता ।११८४।

एतेसु भंगेसु इमा गहणविधी –

एगत्थ रंधणे भुंजणे य वज्जंति भुत्तसेसं पि ।

एमेव विसू रद्धे भुंजंति जहिं तु एगट्ठा ॥११८५॥

पढमभंगे भुत्तसेसं घरं पडिणीयं तं पि वज्जेंति, "एमेव विसू रद्धे" त्ति ततियभंगे वि एवं चेव । एयं असहीणे भत्तारे ।।११८५।।

साहीणे पुण इमो विही –

णिययं च अणिययं वा, जहिं तरो भुंजती तु तं वज्जं ।

सेसेसु न गेण्हंती, संखोभगमादि पंता वा ॥११८६॥

णितियं एगभज्जाए घरे दिणे दिणे भुंजति, अणितियं वारएण भुंजति । एवं णितियं अणितिय वा जहिं सेज्जातरो भुंजति तं वज्जणिज्जं, सेसभज्जाघरेसु ण सेज्जातरपिंडो । तहावि ण गेण्हंति, मा भद्दपंतदोसा होज्जा । भद्दो संखोभगाती करेज्ज, पंतो दुद्दिट्ठधम्मा णिच्छुभेज्ज ॥११८६॥ सवत्तिणि त्ति गतं ।

इदाणिं "[3]वणिए" त्ति दारं –

दोसु वि अव्वोच्छिण्णे, सव्वं जंतम्मि जं तु पायोग्गं ।

खंधे संखडि अडवी, असती य घरम्मि सो चेव ॥११८७॥

---

१ विदेशं प्रयाते । २ गा० ११८२ । ३ गा० ११७५ ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

एस पुरातणा दारत्थगाहा। सेज्जातरो [1]वणिज्जेणं गंतुकामो सकोस-जोयणखेत्तस्स अंतो बहिं वा णिग्गमएण ठिओ, दोसु वि घरेसु जत्थ वा ठितो भत्तादी अव्वोच्छिन्नं आणिज्जति णिज्जती य तदा सेज्जातरपिंडो त्ति ण घेत्तव्वं। "जंतम्मि" पट्ठिते तद्दिणमण्णदिण-णीयं वा सव्वं घेप्पति, सर्वशब्दस्यातिप्रसंगा-द्यत्रायोग्यमित्यर्थः ॥११८७॥

इणमेवत्थं विसेसियमाह –

णिग्गमणादि बहिठिते, अंतो खेत्तस्स वज्जए सव्वं।
बाहिं तद्दिणणीतं, सेसेसु पसंगदोसेणं ॥११८८॥

"[2]दोसु वि" त्ति अस्य व्याख्या – सेज्जातरो णिग्गमएण खेत्तस्स अंतो बहिं ताव ठितो, अंतो ठियस्स तद्दिणणीअमण्णदिणणीयं वा सव्वं सेज्जातरपिंडउ त्ति वजते। खेत्तबहिं ठियस्स सेज्जायरो त्ति काउं तद्दिणणीयं सेज्जातरपिंडो। सेसदिणणीयं जं परियासियं तत्थ वा उवसाहियं ण सेज्जायरपिंडो, ण पुण गेण्हंति, भद्दातिदोसनिवृत्यर्थम् ॥११८८॥

"[3]अव्वोच्छिन्न" त्ति अस्य व्याख्या :-

ठितो जदा खेत्तबहिं सगारो, असणादियं तत्थ दिणे दिणे य।
अच्छिण्णमाणिज्जति निज्जते वा, गिहा तदा होति तहिं विवज्जं ॥११८९॥

खेत्तबहिठियस्स सेज्जायरस्स असणादी तं दिणे दिणे अव्वोच्छिण्णं आणिज्जति घराओ, ततो य घरं णिज्जति तदा सव्वं वज्जणिज्जं ॥११८९॥

"[4]सव्वं जंतम्मि" अस्य व्याख्या –

बाहिठितपट्ठितस्स तु, सयं च संपत्थिता तु गेण्हंति।
तत्थ तु भद्दगदोसा, ण होंति ण य पंतदोसा तु ॥११९०॥

खेत्तबहिट्ठतो जाए वेलाए संपट्ठितो तद्दिणमण्णदिणणीतं वा देंतस्स सव्वं घेप्पति, सयं वा साहुणो [5]पट्ठिता सव्वं गेण्हंति, ण य तत्थ भद्दपंतदोसा भवंति, पुनर्ग्रहणाभावादित्यर्थः ॥११९०॥

[6]खंधे - संखडि - अडवी तिण्णि वि एगगाहाते वक्खाणेति –

अंतो बहि कच्छ-पुडादि ववहरंते पसंगदोसा तु।
देउल जण्णगमादी, कट्ठादऽडविं च वच्चंते ॥११९१॥

सेज्जातरो खेत्तस्स अंतो बहिं वा गहियलंजो कच्छपुडओ होउं - कक्खपदेसे पुडा जस्स स कच्छपुडओ - "गहिओभयमुत्तोलि" त्ति वुत्तं भवति, संबलं जेण ववहरंतो साहूणं जइ दधिखीरादि दवावेति, जइ खेत्तंतो बहिं वा जणवदसामण्णं पत्तेयं वा संखडि वा करेज्जा; देवउलजण्णग-तलागजण्णगादि एत्थ वा देज्ज. अडविं वा कट्ठुच्छेदणादि णिमित्तं गहिय - [7]पच्छयणो गच्छंतो अंतो बहिं वा खेत्तस्स देज्ज. एतेसु तिसु वि सेज्जातरपिंडणिद्धारणत्थं भण्णति ॥११९१॥

---

१ वाणिज्येन। २ गा० ११८७। ३ गा० ११८७। ४ गा० ११८७। ५ पूर्णे मासकल्पे संप्रस्थिताः बृह० क० उद्दे० २ भा० गा० ३५७१। ६ गा० ११८७। ७ पच्छदन=पाथेय।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तद्दिणमण्णदिणं वा, अंतो सागारियस्स पिंडो तु ।
सव्वेसु बाहि तद्दिण, सेसेसु पसंगदोसेणं ॥११६२॥

तिसु वि खेत्तब्भंतरे तद्दिणमण्णदिणं वा णीयं सव्वं सेज्जातरपिंडो भवति । 'सव्वेसु" त्ति खंध-संखडिप्रडविद्दारेसु बाहिं खेत्तस्स तद्दिणसंतयं सेज्जायरपिंडो, सेसदिणसंतयं ण पिंडो । पसंगदोसा पुण ण घेप्पति ।

[1]"असती य घरम्मि सो चेव" त्ति अस्य व्याख्या –

"असति" त्ति सयं सपुत्तबंधवो घरे णत्थि त्ति अण्णविसयट्ठितो वि सो चेव सेज्जातरो "अण्णविसयट्ठितस्स वा सो चेव घरे पिंडो" एसेवत्थो भण्णति ॥११६२॥

[2]दाऊण गेहं तु सपुत्तदारो, वाणिज्जमादी जदि कारणेहिं ।
तं चेव अण्णं च वदेज्ज देसं, सेज्जातरो तत्थ स एव होति ॥११६३॥

घरं साहूण दाउं सपुत्तपसुदारो वाणिज्जमादिकारणे तं वा देसं अण्णं वा देसं गतो तत्थ वि ठितो, जति तस्स घरस्स सो सामी तया सो चेव सेज्जातरो ॥११६३॥

इदाणिं "[3]घड" त्ति दारं –

महतरअणुमहयरए, ललितासण-कुडुग-दंडपतिए य ।
एतेहिं परिगहिता, होंति घटाओ तया कालं ॥११६४॥

"महत्तरअणुमहत्तरे[4]" त्ति अस्य व्याख्या –

सव्वत्थपुच्छणिज्जो, तु महत्तरो जेट्ठमासणधुरे य ।
तहियं तु असण्णिहिते, अणुमहतरतो धुरे ठाति ॥११६५॥

सव्वेसु उप्पज्जमाणेसु गोट्ठिकज्जेसु पुच्छणिज्जो, गोट्ठिभत्त-भोयणकाले जस्स जेट्ठमासणं धुरे ठविजति सो महत्तरो भण्णति । मूलमहत्तरे असण्णिहिते जो पुच्छणिज्जो धुरे ठायति सो अणुमहत्तरो ॥११६५॥

[5]ललिय-कडुय-दंडपतिए य इमं वक्खाणं –

भोयणमासणमिट्ठं, ललिते परिवेसिता दुगुणभागो ।
कडुओ उ दंडकारी, दंडपती उग्गमे तं तु ॥११६६॥

ललियासणियस्स आसणं ललियं इट्ठं कज्जति, परिवेसिया इत्थिया कज्जति, इट्ठभोयणस्स दुगुणो भागो दिज्जति । दोसावण्णस्स गोट्ठियस्स दंडपरिच्छेदकारी कडुगो भण्णति । तं दंडं उग्गमेति जो सो दंडपती भण्णति, सो चेव दंडओ भण्णति ॥११६६॥ एतेहिं पंचहिं परिग्गहिता तदा पुव्वकाले घडातो आसि ।

घडाए अणुण्णविही भण्णति –

उल्लोमाणुण्णवणा, अप्पभुदोसा य एक्कओ पढमं ।
जेट्ठादि अणुण्णवणा, पाहुणए जं त्रिधिग्गहणं ॥११६७॥

---

१ गा० ११८७ । २ उपेन्द्रवज्रा । ३ घडा = गोष्ठयः (बृ० क० उद्दे० २ भा० गा० ३५७४) । ४ गा० ११६४ । ५ गा० ११६४ ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

दंडग-कडुय-ललियासणियादिप्पडिलोमं अणुण्णवेंतस्स अप्पभुदोसा भवंति, तम्हा सव्वे एक्कतो मिलिया अणुण्णविज्जंति, महत्तरादि वा पंच। एवं चत्तारि तिण्णि दो जति मिलिया ण लब्भंति तो पढमं जेट्ठमहत्तरं, पच्छा अणुमहत्तरादि अणुण्णविज्जति। महत्तरादिसु घरे असंतेसु जो वा जस्स पाहुणओ अब्भरहितो मित्तो ण यगो वा सो अणुण्णविज्जति। जं विहीए गहियं, तं अणुण्णायं, अविधीए णो ॥११९७॥

अस्यैवार्थस्य व्याख्या –

उल्लोम लहु दीय णिसि तेणेक्क-पिंडिते अणुण्णवणा।
असहीणे जिट्ठादि व जति व समाणा महत्तरं वा ॥११९८॥

जति पडिलोमं अणुण्णवेति तो मासलहुं, पहू जति दिवसतो णिच्छुब्भति तो चउलहू, रातो चउगुरु, जम्हा एते दोसा तम्हा ते सव्वे एक्कतो मिलिए अणुण्णवए। असहीणे त्ति – सव्वपिंडियाणं [1]असतीए जेट्ठमहत्तरादिगिहेसु अणुण्णवेइ, तिप्पभिति वा मिलिया अणुण्णवए, महत्तरं वा एक्कं ॥११९८॥

इदाणिं "[2]वए" त्ति दारं –

बाहिं दोहणवाडग, दुद्ध-दही-सप्पि-तक्क-णवणीते।
आसण्णम्मि न कप्पति, पंचपदे [3]बाहिरे वोच्छं ॥११९९॥

जति सेज्जातरस्स गामतो वहिं वाडगे गावीओ जत्थ दुज्भंति सो दोहण-वाडगो तत्थ दोहणवाडए दुद्धं दहियं णवणीयं सप्पि तक्कं च एते पंच दव्वा आसण्णखेत्तब्भंतरे सेज्जायरपिंडो त्ति न कप्पंति ॥११९९॥

एते चेव खीरातीपंचपदे गहणविधी भण्णति –

णिज्जंतं मोत्तूणं, बारग भति दिवसए भवे गहणं।
छिण्णो भतीय कप्पति, असती य घरम्मि सो चेव ॥१२००॥

णिज्जंतं सेज्जातरगोउलातो दुद्धातीणि पंच दव्वाणि घरं णिज्जंताणि ताणि मोत्तुं सेज्जातरपिंडो त्ति काउं, जं अण्णं तत्थेव गोउले परिभुज्जति तं ण होति सेज्जातरपिंडो, न पुण कप्पति, भद्दातिदोसा उ। जद्दिवसं पुण भयगस्स वारगो तद्दिवसं सेज्जातरपिंडो ण भवति, तहावि सेज्जातरस्स अवेक्खातो अग्गहणं। गोवालग "भती" वृत्तिः, ताए छिन्नो विभागो गोवसत्तो त्ति काउं कप्पति। "असती य घरे" त्ति जइ णगराइसु साहूण सेज्जं दाऊण सेज्जातरो अप्पणो घरं मोत्तुं सपुत्तदारो वइयाए अच्छेज्ज तहावि सो चेव सेज्जातरो ॥१२००॥

पूर्वगाथार्थोच्यते –

बाहिरखेत्ते छिण्णे, वारगदिवसे भतीय छिण्णे य।
सोऊण सागरिपिंडो, वज्जे पुण भद्दपंतेहिं ॥१२०१॥

खेत्तस्स बाहिरओ जो छिण्णो-विभागो सेज्जातरघरे ण णिज्जति, गोवालगवारगदिवसे वा सव्वो दोहो प्रतिदिवसं वा वृत्तिभागो छिण्णो। एते सेज्जातरपिंडा ण भवंति, भद्दपंतेहिं पुण वज्जो ॥१२०१॥

---

१ अस्वाधीनेत्यर्थः बृहत्कल्पे उद्दे० २ भा० गा० ३५७८। २ "बाहिरतो वोच्छं", क्वचित् "उवरिं वोच्छं"।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अणेगेसु जइ णिक्कारणे एगं [1]कप्पागं ठवेंति तो इमे दोसा -

एगं ठवे णिव्विसए, दोसा पुण भद्दए य पंते य ।
णीसाए वा छुभणं, विणास-गरिहं व पावेंति ॥१२०२॥

णिक्कारणे एगं कप्पागं ठवेत्तु सेसे जति पविसंति तो भद्दपंतदोसा । भद्दो णिस्साए छुभेज्ज, पंतो वज्जितोमि त्ति वसहीओ वा गरहेज्ज ॥१२०२॥

सड्ढेहिं वा वि भणिता, एग ठवेत्ताण णिव्विसे सेसे ।
गण-देउलमादीसु वा, दुक्खं खु विगिंचितुं बहुआ ॥१२०३॥

जे सड्ढा साहु-सामायारिं जाणंति तेहिं भणिया "एक्कं सेज्जातरं ठवेह मा सव्वे परिहरह" ताहे एक्कं ठवेत्तु, सेसेसु णिव्विसंति । गणदेउलमादिसु वा ठिता अवुत्ता वि सयमेव एक्कं कप्पागं ठवेज्ज । कहं ? असंथरंता दुक्खं बहुया वज्जिउं सक्किज्जंति ॥१२०३॥

अहवा बहुएसु इमो गहणविही -

गेण्हंति वारएणं, अणुग्गहत्थीसु जह रुयी तेसिं ।
पक्कण्णे परिमाणं, संतमसंतयरे दव्वे ॥१२०४॥

दोसु सेज्जातरेसु एगंतरेण वारओ भवति । तिसु ततिए दिणे सेज्जातरत्तं भवति । चउसु चउत्थे एवं वारएणं गेण्हंति । अणुग्गहत्थीसु जहा तेसु रुती तहा गेण्हंति । पक्के अण्णे जाणति परिमाणं, तदपि संतं, जहा सुरट्ठाए कंगु, असंतं तत्थेव साली, जति पुव्वपरिमाणेण संतं धरंति तो कप्पं अण्णहा भयणिज्जं । एवं सेज्जातरदव्वे [2]उवज्जिऊण भयणा, अणुवउत्तस्स उग्गमातिदोसा भवंति ॥१२०४॥

जे भिक्खू सागारियं कुलं अजाणिय अपुच्छिय अगवेसिय पुव्वामेव पिंडवाय-पडियाए अणुप्पविसति; अणुप्पविसंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४८॥

सागारिओ पुव्ववण्णिओ, कुलं कुटुंबं, भिक्खाकालाओ पुव्वं, पुव्वदिट्ठे पुच्छा, अपुव्वे गवेसणं, तं साहुसमीवे अपुच्छिऊण पविसंतस्स मासलहुं ।

गवेसणे इमो कमो -

सक्खेत्ते सउवस्सए, सक्खेत्ते परउवस्सए चेव ।
खेत्तंतो अण्णगामे, खेत्तबहि सगच्छ परगच्छे ॥१२०५॥

सखेत्तगहणा स्वग्रामो गृहीतः, ।
सगामे सउवस्सए सगच्छे गवेसति । सगामे सउवस्सए परगच्छे गवेसति । पढमपादे दो भंगा ।
सगामे अण्णुवस्सए सगच्छे, सगामे परउवस्सए परगच्छे । बितीयपादे दो भंगा ।
खेत्तंतो सकोसजोयणब्भंतरे। खित्तंतो अण्णगामे सगच्छे, खित्तंतो अण्णगामे परगच्छे। ततीयपाए वि दो भंगा।
खेत्त-बहि अण्णगामे सगच्छे, खेत्तबहि अण्णगामे परगच्छे । एवं चउत्थपाए वि दो भंगा इति शेषः ॥१२०५॥

---

१ शय्यातर । २ उपयुज्य ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सागारियं अपुच्छिय, पुव्वे अगवेसितूण जे भिक्खू ।
पविसति भिक्खस्सट्ठा, सो पावति आणमादीणि ॥१२०६॥

सागारियं पुव्वामेव अपुच्छिय अगवेसिय जे भिक्खट्ठाए पविसइ तस्स आणाती, उग्गमादी, भद्दपंतदोसा य भवंति ।।१२०६।।

जम्हा एते दोसा –

तम्हा वसधीदाता, सपरियणो णाम-गोत्त-वयगो य ।
वण्णेण य चिंधेण य, गवेसियव्वो पयत्तेणं ॥१२०७॥

तस्मात् कारणात् वसहीए दाता परिजनः स्वजनः, नामं इन्द्रदत्तादि, गोत्रं गोतमादि, वतत्तो तरुण-मज्झिमं-थेरो, वण्णओ गोरादि, चिंधं व्रणादि, एवं प्रयत्नेन गवेसियव्वो ।।१२०७।।

को णामेकमणेगा, पुच्छा चिंधं तु होति वणमादी ।
अहव [1]ण पुव्वं दिट्ठो, पुच्छा उ गवेसणा इतरे ॥१२०८॥

णामतो किमेगणामो, अणेगणामो, एगोणेगा वा सेज्जातरा, एवमादि पुच्छति । तस्यैवान्वेषणा गवेसणा ।

अहवा – पुव्वदिट्ठे पुच्छा, अपुव्वदिट्ठे गवेसणा ।।१२०८।।

कारणओ ण पुच्छेज्जा –

बितियपदमणाभोगे, गेलण्णद्धाण संभमभए वा ।
सत्थवसगे व अवसे, परव्वसे वा वि ण गवेसे ॥१२०९॥

अणाभोगओ विस्सरिएणं, गिलाणट्ठा वा, तुरियकज्जे अद्धाणपडिवण्णा वा तुरियं वोलेउमणा [2]उच्चाओ वा, ण गवेसति । उदगागणिसंभमे किं चि साहम्मियं अपासंतो, बोधियभए वा, सत्थवसगो वा, अडविं पविसंतो वा, अवसो वा रायदुट्ठे रायपुरिसेहिं णिज्जंतो, परव्वसो खित्तचित्तादि, ण गवेसे ।।१२०९।।

जे भिक्खू सागारियणीसाए असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा ओभासिय ओभासिय जायति; जायंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४९॥

सेज्जायरं परघरे दट्ठुं दाविस्सति त्ति असणाति ओभासति एसा णिस्सा । एवं ओभासंतस्स मासलहुं ।

सागारियसण्णातग पगते सागारितं तहिं दट्ठुं ।
दावेहिति एस महंति, एवं ओभासए कोई ॥१२१०॥

सागारियस्स जो सयणो तस्स पगरणे तत्थ सेज्जातरं दट्ठुं एस ममं एत्तो दावेहि त्ति एवं सागारियणिस्साए कोति साहू तं संखडिय त्ति ओभासेज्ज ।।१२१०।।

---

१ "ण" वाक्यालंकारे । २ उच्चाटः ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सागारियणिस्साए, सागारियसंथुते व सागारी ।
जो भिक्खू ओभासति, असणादाणादिणो दोसा ॥१२११॥

सागारियणिस्साए त्ति गतार्थं । सागारियं पुव्वपच्छासंथुते गतं दट्ठुं तमेव सागारियं ओभासति, दवावेहि एत्तातो अम्हं सागारियस्स वा पुव्वपच्छासंथुयस्स णिस्साए ओभासति एतस्स गोरवेणं दाहिति त्ति, पुव्वपच्छसंथुयं वा ओभासति, मम णियस्स घरट्ठियस्स दावेहि त्ति । एतेसिं चउण्हं पगाराणं जे भिक्खू असणादि ओभासति तस्स आणादओ दोसा भवंति ॥१२११॥

इमे य दोसा –

पक्खेवयमादीया, सेज्जावोच्छेदमादिग तरम्मि ।
उग्गमदोसादीया, अचियत्तादी इतरम्मि ॥१२१२॥

भद्दो पक्खेवयं करेज्ज, पंतो सेज्जातिवोच्छेदं करेज्ज । "तरम्मि" त्ति सेज्जातरम्मि एते दोसा । इतरम्मि पुव्वपच्छसंथुते उग्गमदोसा, अचियत्तादिदोसा य । उग्गमअचियत्तादिया एते सेज्जातरे वि भवंति ॥१२१२॥

सेज्जातरदोसे इमे –

सण्णातसंखडीसू, भद्दो पक्खेवयं तु कारेज्जा ।
ओभासंति महाणे, ममं ति पंतो व छेज्जाहि ॥१२१३॥

भद्दो सेज्जातरो संथुयसंखडीसु अप्पणए तंडुलादि छुभेज्जा, रद्धं वा पक्खेवेज्ज । पंतो महाजण मज्झे ओभावंति. किं ममेतं घरे णत्थि । अहो अहं एतेहिं घरसितो, जत्थ जत्थ वच्चामि तत्थ तत्थ पिट्ठओ एते आगता ओभासंति, एवं पदुट्ठो दिवा रातो वा णिच्छुभेज, एगमणेगाण वा वोच्छेयं करेज्ज ॥१२१३॥

पुव्व-पच्छसंथुयदोसा इमे –

णीयस्स अम्ह गेहे, एते ठिता उग्गमादि भद्दो तु ।
वोच्छेदपदोसं वा, दातुं पच्छा करे पंतो ॥१२१४॥

सेज्जायरस्स जे पुव्वपच्छसंथुता ते परघरेसु ओभासिज्जमाणा एवं करेज्ज – 'णीयस्स अम्ह गेहे ठिय" त्ति । जे भद्दा ते उग्गमादि दोसा करेज्ज । पंतो पुण दाउमदाउं वा वोच्छेय-पदोसं वा करेज्ज । वा विकप्पे । पंतावेज्ज वा, ओभासेज्ज वा, उक्कोसेज्ज वा फरुसेज्ज वा । जम्हा एते दोसा तम्हा सागारियस्स वा सागारियसंथुयाण वा णिस्साए ण ओभासेज्ज ॥१२१४॥

वितियपयं गेलण्णे, णिमंतणा दव्वदुल्लभे असिवे ।
ओमोयरिय-पदोसे, भए व गहणं अणुण्णायं ॥१२१५॥

एतेहिं कारणेहिं, विसेसतो छिंदिता तु तं विंति ।
सण्णातगस्स पगते, दावेज्जा जं तुमे दिण्णं ॥१२१६॥

एतेहिं गिलाणातिकारणेहिं णिस्साए ओभासेज्ज । विसेसओ छंदिया णाम णिमंतिया । जता सेज्जातरो णिमंतेति तया भण्णति सण्णातपगते दावेहि तं तुमे चेव दिण्णं भवति । एवं जयणाए गेण्हति ॥१२१६॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जे भिक्खू उडुबद्धियं सेज्जा-संथारयं परं पज्जोसवणाओ उवातिणाति, उवातिणंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।५०।!

उडुबद्धगहितं सेज्जासंथारयं पज्जोसवणरातीओ परं उवातिणावेति तस्स मासलहुं पच्छित्तं ।।१२१६।।

सेज्जासंथारविशेषज्ञापनार्थमाह –

सव्वंगिया उ सेज्जा, बेहत्थद्धं च होति संथारो ।
अहसंथडा व सेज्जा, तप्पुरिसो वा समासो तु ।।१२१७।।

सव्वंगिया सेज्जा, अड्ढाइयहत्थो संथारो ।

अहवा–अहासंथडा सेज्जा [1]अचला इत्यर्थ: । चलो संथारतो । अहवा तप्पुरिसो समासो कज्जति - शय्यैव संस्तारक: शय्यासंस्तारक; ।।१२१७।।

संस्तारो दुविधो –

परिसाडिमपरिसाडी, दुविधो संथारतो उ णायव्वो ।
परिसाडी वि य दुविधो, अज्झुसिर-ज्झुसिरो य णातव्वो ।।१२१८।।

जत्थ परिभुज्जमाणो किं चि परिसडति सो परिसाडी, इतरो अपरिसाडी । जो परिसाडी सो ;विहो - अज्झुसिरो ज्झुसिरो य ।।१२१ ।।

सालितणादि ज्झुसिरो, कुसतिणमादी उ अज्झुसिरो होति
एगंगिओ अणेगंगिओ य दुविधो अपरिसाडी।।१२१६।।

सालितणादी -भुसिरो, कुसवप्पगतणादी अज्झुसिरो । जो अपरिसाडी सो दुविहो – एगंगिओ अणेगंगितो य ।।१२१६।।

एगंगितो उ दुविधो, संघातिय एतरो तु नायव्वो ।
दोमादी नियमा तू, होति अणेगंगिओ एत्थ ।।१२२०।।

एगंगिओ दुविघो-संघातिमो असंघातिमो य । दुगाति पट्टाच्चारेण संघातिता कपाटवत्, एस संघातिमो। एगं चेव पृथुफलकं असंघातिमो। दुगानिफलहा असंघातिता, वंसकंबियाओ वा अणेगंगिओ ।।१२२०।।

एते सामण्णयरं, संथारुदुबद्धे गेण्हती जो तु ।
सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्तं विराधणं पावे ।।१२२१।।

एतेसि संथारगाणं अण्णतरं जो उडुबद्धे गेण्हति सो अतिक्कमे वट्टति, अणवत्थं करेति, मिच्छत्तं जणेति, आयसंजमविराधणं पावति, इमे दोसा ।।१२२१।।

सज्झाए पलिमंथो गवेसणाणयणमप्पिणंते य ।
झामित-हित-वक्खेवो, संघट्टणमादि पलिमंथो ।।१२२२।।

उडुबद्धे काले णिक्कारणे संथारगं गवेसमाणस्स आणेंतस्स पुणो पच्चप्पिणंतस्स सज्झाए पलिमंथो भवति । कहंचि झ'मितो हितो वा संथारगसामी अणुण्णवेंतस्स सुत्थत्थेसु वक्खेवो, संसत्ते - तससंघट्टणाति -

१ पटपाट ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

णिप्फण्णं, संजमे पलिमंथो य । ग्रह सामी भणेज्जा – "जग्रो जाणह ततो मे ग्रण्णं देह" ताहे ग्रण्णं मग्गंताणं सो चेव पलिमंथो ।

पच्छित्तं दाउकामो भेदानाह –

भुसिरेतर (४०२) एतेसु इमे पच्छित्तं । परिसाडिमे (४०३) परिसाडियग्रज्भुसिरे मासलहुं भुसिरे, परिसाडी, एगंगिए, संघातिमे, ग्रसंघाइमे, ग्रणेगंगिते य, एतेसु चउसु वि चउलहुग्र, ज्भामिते हिते वा ग्रण्णं दव्वाविंजति, वहंतं साहूण दाउं ग्रवहंतयं [1]पवाहेज, ग्रोभासियो वा साहूग्रट्ठाए ग्राहाकम्मं करेति, ग्रादिसद्दाग्रो कीयकडादिवक्खेत्तो ॥१२२२॥

[2]सुत्तादिम गाहा – गतार्था रिवकेन दधिमंथनवत् –

चोदगोह –

एवं सुत्तणिबंधो, णिरत्थग्रो चोदग्रो य चोदेति ।
जह होति सो सग्रत्थो, तं सुण वोच्छं समासेणं ॥१२२३॥

संथारग्गहणं उडुबद्धे ग्रत्थेणं णिसिद्धं, एवं सुत्तं णिरत्थयं, जतो सुत्ते पज्जोसवणरातिग्रतिक्कमणं पडिसिद्धं, तं गहिते संभवति ।

एवं चोदकेनोक्ते ग्राचार्याह – जहा सुत्तत्थो सार्थको भवति तहाऽहं समासतो वोच्छे ॥१२२३॥

सुत्तणिवातो तणेसु, देसे गिलाणे य उत्तमट्ठे य ।
चिक्खल्ल-पाण-हरिते, फलगाणि ग्र कारणज्जाए ॥१२२४॥

उद्धारगाहा । देसं पडुच्च तणा घेप्पेज्ज ॥१२२४॥

ग्रसिवादिकारणगता, उवधी-कुच्छण-ग्रजीरग-भये वा ।
ग्रभुसिरमसंधबीए, एक्कमुहे भंगसोलसगं ॥१२२५॥

जो विसग्रो वरिसारत्ते पाणिएण प्लावितो सो उडुबद्धे उब्भिज्जति, जहा सिंधुविसए ऊसभूमी वा जहा [3]रिणकंठं, तं ग्रसिवातिकारणेहिं गता "मा उवही कुच्छिसति" त्ति ग्रजीरणभया वा तत्थ तणा घेप्पेज्जा ।

ग्रभुसिरा, ग्रसंधिया, ग्रबीया, एगतो मुहा, एतेसु चउसु पदेसु सोलसभंगा कायव्वा । पढमो भंगो सुद्धो । सेसेसु जत्थ भुसिरं तत्थ चउलहुं । बीएसु परित्ताणंतेसु लहुगुरुपणगं । सेसेसु मासलहुं । ग्रसंधिया-पोरवज्जिता । जेसिं एक्कग्रो णालाण मुहा ते एक्कतो मुहा ॥१२२५॥

कुसमादि ग्रभुसिराइं, ग्रसंधिबीयाइं एक्कग्रो मुहाइं ।
देसीपोरपमाणा, पडिलेहा तिण्णि वेहासे ॥१२२६॥

पूर्वार्धं गतार्थम्

---

१ पीढाकरे । २ गाथात्रयमन्यदीयम्" इति भाष्यप्रत्योरन्तरे । ३ पानी का किनारा ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

"[1]देसीपोरपमाणा" अस्य व्याख्या –

अंगुट्ठ पोरमेत्ता, जिणाण थेराण होंति संडासो ।
भूमीए विरल्लेत्ता, पमज्जभूमी समुक्खेत्तुं ॥१२२७॥

पदेसिणीए अंगुट्ठपोरट्ठिताए जे घेप्पंति तत्तिया जिणकप्पिया [ण] घेप्पंति । पदेसिणिअंगुट्ठ अग्गमिलिएसु संडासो । थेराण संडासमेत्ता घेप्पंति ।

"[2]पडिलेहा तिण्णि" त्ति अस्य व्याख्या –

भूमीए विरल्लेत्ता तणे उक्खिवेत्ता भूमी पमज्जिज्जति, एवं तिण्णि वारा कज्जंति ।

अहवा – तिण्णि पडिलेहा पए । मज्झण्हे ऽवरण्हे, भिक्खादि वच्चंता वेहासे करेंति ॥१२२७॥

इदाणिं "[3]गिलाणउत्तिमट्ठे" य अस्य व्याख्या –

भत्तपरिण्णगिलाणे, अपरिमितसइं तु वट्ट जयणाए ।
णिक्कारणमगिलाणे, दोसा ते चेव य विकप्पे ॥१२२८॥

गिलाणभत्तपरिण्णीणं [4]अत्थुरणट्ठता तणा घेप्पंति । सति त्ति एक्कसिं चेव पत्थरिय अच्छंति, असतिं तु वट्टो वा अच्छति ॥१२२८॥

"[5]जयणाए" त्ति अस्य व्याख्या –

उभयस्स निसिरणट्ठा, चंकमणं वा य वेज्जकज्जेसु ।
उट्ठिते अण्णो चिट्ठति, पाणदयत्था व हत्थो वा ॥१२२९॥

"उभयं" ति काइय सण्णा य तं णिसिरणट्ठताए जति उट्ठेति, कुडिउ वा चंकमणट्ठता उट्ठेति, वातविसरणकज्जेण वा उट्ठेति, वेज्ज-कज्जेण वा, एवमाइसु कज्जेसु उट्ठेति, अण्णो तत्थ संथारए चिट्ठति । किमर्थम् ? प्राणिदयार्थम् ।

अहवा – सो गिलाणो, गुरुतो हत्थो संथारे दिज्जति जाव पडिएति, मा आसायणा भविस्सति । एतेहिं कारणेहिं उडुबद्धे संथारओ घेप्पेज्ज । एय वज्जं जइ गेण्हति तो पुव्वुत्ता ते चेव दोसा विकल्पश्च भवति । विकल्पग्रहणा कल्पो प्रकल्पश्च सूचितः ॥१२२९॥

संथारुत्तरपट्टो, पकप्प कप्पो तु अत्थुरणवज्जो ।
तिप्पभिति च विकप्पो, णिक्कारणतो य तणभोगो ॥१२३०॥

थेरकप्पिया संथारुत्तरपट्टेसु सुवंति एस पकप्पो, जिणकप्पियाण अत्थुरणवज्जो कप्पो, ते ण सुवंति । उक्कुडुया चेव अच्छंति । थेरकप्पिया जति तिण्णि अत्थुरंति, णिक्कारणतो वा तणभोगं करेंति, तो विकप्पो भवति ॥१२३०॥

अहवा इमा व्याख्या –

अहवा अझुसिरगहणे, कप्पो पकप्पो तु कज्जे झुसिरे वि ।
झुसिरे व अझुसिरे वा, होति विकप्पो अकज्जम्मि ॥१२३१॥

---

१ पोर=ग्रंथी । २ गा० १२२६ । ३ गा० १२२४ । ४ दे० बिछाने के लिए । ५ गा० १२२८ ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जिणकप्प थेरकप्पिएसु कज्जेसु अज्झुसिरगहणे कप्पो भवति । थेर-कप्पियाण कज्जे झुसिरगहणे पकप्पो भवति । झुसिराण वा अझुसिराण वा अकज्जे विकप्पो भवति ।।१२३१।।

एवं ता उडुबद्धे, कारणगहणे तणाण जतणेसा ।
अधुणा उडुबद्धे चिय, चिक्खल्लादिसु फलगगहो ।।१२३२।।

एवं ता उडुबद्धे कारणगहिताण तणाण जतणाए परिभोगो भणिओ ।

इदाणिं तु उडुबद्धे चेव चिक्खल्लाइसु कारणेसु फलगगहो भणति –

[1]अझुसिरम[2]विद्धम[3]फुडित, [4]अगरु-[5]अणिसिट्ठ वीणगहणेणं ।
आता संजमगरुए, सेसाणं संजमे दोसा ।।१२३३।।

अज्झुसिरो जत्थ कोट्टरं णत्थि, जो पुण कीडएहिं ण विद्धो । जस्स दालीउ ण फुडिया । अगरुउ त्ति लहुओ । न निसृष्टः अनिसृष्टः परिहारिकमित्यर्थः ।

एतेहिं पंचहिं पदेहिं बत्तीसं भंगा कायव्वा । पढमो अणुण्णातो, सेसा एक्कत्तीसं णाणुण्णाता ।

पढमभंगो अणुण्णातो सो एरिसो हलुओ जहा वीणा दाहिणहत्थेण घेत्तुं णिज्जति । एवं सो वि । गरुए आयविराहणा संजमविराहणा य । सेसेसु झुसिरेसु प्रायशः संजमविराधनैव भवति ।।१२३३।।

अझुसिरमादीएहिं, जा अणिसिट्ठं तु पंचियाभयणा ।
अहसंथड पासुद्धे, वोच्चत्थे चतुलहू हुंति ।।१२३४।।

पूर्वार्धं गतार्थं । णवरं - भंगेसु पच्छित्तं इमं – जत्थ झुषिरं तत्थ आयविराहणं ति काउं चउगुरुयं । सेसेसु उवहिणिप्फण्णं चउलहुअं । जतो पढमभंगादिएसु गेण्हति तया वसहीए चेव अहासंथडं गेण्हति । तस्सासति [1]पासल्लियं । तस्सासति उद्धकयं । अतो वोच्चत्थं गेण्हंतस्स चउलहुअं ।।१२३४।।

एरिसं जति अंतो न लभेज्ज –

अंतोवस्सय बाहिं, णिवेसणे वाड साहितो गामे ।
खेत्ते तु अण्णगामे, खेत्तबहिं वा अवोच्चत्थं ।।१२३५।।

अंतोवस्सयस्स अलब्भमाणे वाहिं अलिंदातिसु गेण्हति । असति णिवेसणे, असति वाडगाउ, असति सग्गामे गेण्हति । असति खेत्तब्भंतरे अण्णगामे गेण्हति । असति खेत्तबहियादि आणेति । अवोच्चत्थं गेण्हति । [2]वोच्चत्थं गेण्हमाणस्स चउलहुआ ।।१२३५।।

मग्गणे वेला-णियमो भण्णति –

सुत्तं व अत्थं च दुवे वि काउं, भिक्खं अडंतो उ दुए वि एसे ।
लंभे सहू एति दुवे वि घेत्तुं, लंभासती एग-दुए व हावे ।। १२३६।।

सुत्तत्थपोरिसीए काउं भिक्खाए अडंतो [3]दुए वि एसति – भत्तं संथारगं च । लद्धे संथारए जो सहू सो दुवे वि भत्तं संथारगं घेत्तुमागच्छति । एवं अलभंतो अत्थपोरिसिं हावेउं गवेसति । एवं पि अलभंतो दुवे वि सुत्तत्थपोरिसीओ हावेति ।।१२३६।।

---

१ पार्श्वस्थितं । २ विपरीत । ३ भक्त और संथारा ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

एवं अलब्भमाणे, काउं जोगं दिणे दिणे ।
कारणे उडुबद्धम्मि, खेत्तकालं विभासए ॥१२३७॥

एवं सखेत्ते दिणे दिणे जोगं करेंतस्स अलब्भमाणे उडुबद्धे अवस्सं घेत्तव्वं, कारणे खेत्तओ जाव बत्तीसं जोयणा, कालतो पंचाहं जाव वा लद्धो ताव गवेसति ॥१२३७॥

उडुबद्धिगमेगतरं, संथारं जे उवातिणे भिक्खू ।
पज्जोसवणातो परं, सो पावति आणमादीणि ॥१२३८॥

उडुबद्धे परिसाडेतरं वा कारणगहितं जो एगतरं संथारगं उवातिणावेति पज्जोसवणरातीतो परं सो आणादी दोसे पावति ॥१२३८॥

अज्झुसिरं परिसाडी उवातिणावेति मासलहुं । सेसेसु चउलहुं ।

इमे दोसा –

मायामोसमदत्तं, अप्पच्चय खिंसणा उवालंभो ।
वोच्छेदपदोसादी, दोसाति [1]उवातिणं तस्स ॥१२३९॥

अमग्गितो कहं णिज्जति त्ति । एवं धरेंतस्स माया भवति। उडुबद्धिउं मग्गिऊणं वासासु पडिभुंजति मोसं अदत्तं च भवति। जहा भासियं अकरेंतो अप्पच्चओ, अण्णेसि पि न देति। धीरत्थुते भो समणा ! एरिसस्स ते पव्वज्जा । एवं णिप्पिवासं भणंतस्स खिंसा जुत्तं णाम ते अलियं वोत्तुं, सप्पिवासं भणंतस्स उवालंभो । तस्स वा अण्णस्स वा साहुस्स तं दव्वं अण्णं वा दव्वं ण देति । एस वोच्छेओ तस्स वा अण्णस्स वा पदोसं गच्छति । एवमादि उवातिणावेंतस्स दोसा ॥१२३९॥

कारणे उवातिणाविज्ज

बितियं पभुणिव्विसए, णट्ठुट्ठितसुण्णमयमणप्पज्झे ।
असहू संसत्ते या, तक्कज्जमणिट्ठिते दोच्चं ॥१२४०॥

संथारगपभू रण्णा णिव्विसतो कतो, णट्ठो सामी, उट्ठितो गामो, सुण्णो, पवसितो, मतो वा संथारग-सामी, साघू वा मतो, संथारगसामी अणप्पज्झो, साघू वा खित्तादिचित्तो, असहू अप्पणा वा जाव्रो ण तरति णेउं, संथारतो वा संसत्तो, तिण्णि पडिलेहणकाला धरिज्जइ । तिण्णि वा दिणे जाव पाउस्सं सज्जति । जेण वा कज्जेण गहितं तं कज्जं णो समप्पइ : एत्थं दोच्चं अणुण्णविज्जति ॥१२४०॥

एतेसु कारणेसु इमा जयणा –

मय णिव्विसते णट्ठुट्ठिते व कज्जे समत्ते उज्झति ।
वच्चंता वा दट्ठुं, भणंति कस्सऽप्पिणेज्जामो ॥१२४१॥

मुए णिव्विसए णट्ठे उट्ठिते एतेसु चउसु वि पदेसु अप्पणो कज्जे समत्ते उज्झति ।

अहवा – णिव्विसयादिसु तिसु जइ वच्चंतं पेक्खति तो णं भणति –"अम्हे तुब्भं संथारतो गहितो तं कस्स अप्पिणेज्जामो" एवं भणितो जं संदिसति तस्स अप्पियव्वो ॥१२४१॥

---

[1] अतिक्रामतः ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सुण्णे एंतं पडिच्छए, वच्चंता वासएज्ज णीयाणं ।
असहू जाव ण हट्ठो, संसत्ते पोरिसी तिण्णि ।।१२४२।।

पवासिते एंतं पडिक्खति जाव सो एति । अह ते साहुणो गंतुकामा तरंति ताहे समोसितगाण तस्स वा णीयल्लगाण अप्पेंति, भणंति य तम्मि आगते अप्पेज्जसु। असहू जाव ण हट्ठो ताव णप्पेति । हट्ठीभूतो अप्पेति । कारणं च दीवेंति । संसत्ते तिण्णि पोरुसिओ घरेति ।।१२४२।।

"[1]तक्कज्जमणिट्ठिते दोच्चं" अस्य व्याख्या –

पुणरवि पडिते वासे, तम्मि व सुक्खंते दोच्चणुण्णवणा ।
अब्भागमे व अण्णे, अलद्धे तस्सेवऽणुण्णवणा ।।१२४३।।

जति पज्जोसवणकाले पुणो वासं पडति तम्मि वा पुव्वपडिते असुक्खंते, अण्णो य संथरओ ण लब्भति ताहे तमेव दोच्चं अणुण्णवेंति ।

अहवा – "तम्मि वा" त्ति तम्मि संथारए उल्लभूमीए असुक्खमाणीए जाव सुक्खइ ताव अणुण्णवेंति "सुक्खे आणेहामो" त्ति भणंति । "अब्भागमे" आसण्णवासे अण्णो संथारगो ण लब्भति ताहे तमेव अणुण्णवेंति ।

अहवा – अप्पणो लद्धो, [2]अब्भागमिगा अण्णे साहवो आगया, ते सड्ढाय अण्णम्मि अलब्भमाणे तमेव अणुण्णवेंति ।।१२४३।।

जे भिक्खू वासावासितं सेज्जा-संथारयं परं दसरायकप्पाओ उवातिणाति;
उवातिणंतं वा सातिज्जति ।।सू०५१।।

दसरायकप्पगहणं जहाववायतो वासातीतं वसंति, तहा संथारगं पि घ रेंति । उक्कोसं तिण्णि दसरातिया, ततो परं मासलहुं ।

वासासु अपडिसाडी, संथारो सो अवस्स घेत्तव्वो ।
मणिकुट्टिमभूमी अवि, अगेण्हणे गुरुग आणादी ।।१२४४।।

वासावासे अपरिसाडी संथारओ अवस्सं घेत्तव्वो, जति वि मणिकोट्टिमभूमी । अह ण गेण्हति चउगुरुं, आणादि य दोसा ।।१२४४।।

इमे य दोसा –

पाणा सीतलकुंथू, उप्पातग-दीह-गोम्हि सुसुणाए ।
पणए य उवधिकुच्छण, मलउदगवधो अजीरादी ।।१२४५।।

सीयलाए भूमीए कुंथुमादि पाणा समुच्छंति, सीयलाए वा भूमीए अजीरणादी दोसा भवंति । उप्पायगा भूमीए उप्पज्जंति, एसा संजमविराहणा ।

इमा आयविराधणा – दीहो डसति, गोम्ही कण्णसियालीया कण्णे पविसति, सुसुणागो अलसो, सो वावातिज्जति, पणतो समुच्छति, सन्नेहभूमीए उवही कुच्छंति, सन्नेहभूमीए वा सुवंतस्स उवही मलेण

१ गा० १२४०। २ प्राघुणकाः ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

घेप्पति, ताहे भिक्खातिगस्स वासे पडंते उदगविराहणा भवति। मलिणोवहीए छप्पया भवंति। सीयले छप्पयासु य णिद्दा ण लभति, ततो अजिण्णं भवति, ततो गेलण्णं, एवमादी दोसा ॥१२४५॥

तम्हा खलु घेत्तव्वो, भेदा गहणे तु तस्सिमा पंच।
गहणे[1] य अणुण्णवणे[2], एगंगिय[3] अकुय[4] पाउग्गे[5] ॥१२४६॥

जम्हा एते दोसा तस्मात् कारणात् खलु अवधारणे अवश्यमेव गृहीतव्यं। तस्य ग्रहणे इमे पंच भेदा भवंति। गहणं अणुण्णवणं एगंगियं अकुय पाउग्गे त्ति एते पंच पदा ॥१२४६॥

तत्थ [1]गहणे त्ति दारं –

गहणं च जाणएणं, जतणुण्णवणा य गहिते जतणा य।
मम एत्थ पास तत्थेव, उक्खित्ते जं जहिं णेति ॥१२४७॥

पूर्वार्धस्य व्याख्या –

सेज्जा-कप्प-विहिण्णू, गेण्हति परिसाडिवेज्जमप्पेहं।
छण्णपहम्मि य ठवणं, कस्सप्पिणणं च पुच्छंति ॥१२४८॥

आयारग्गेसु सेज्जाए संथारग्गहणं भणितं। जेण सा सुत्तओ ऽधीया अत्थओ सुआ सो सेज्जाकप्पविहिण्णू। तेण संथारगो घेत्तव्वो।

इयाणिं "[2]जयणाणुण्णवणे" त्ति जयणाए अणुण्णवेयव्वो।

कहं? जाहे लद्धो ताहे भण्णति – "परिभुज्जमाणे" जं परिसडति, तं वज्जेसु अप्पिणिस्सामो, पाडिहारियं च गेण्हामो, णिव्वाघाएणं एवतियकालेणं अप्पिणिस्सामो जति एवं पडिवज्जति तो घेप्पति। अह णो पडिवज्जति ताहे अण्णं मग्गंति। जइ अण्णो मग्गिज्जमाणो ण लब्भति ताहे तं चेव गेण्हति।

"इदाणिं [3]गहिते जतण" त्ति गहियसंथारगो जति णेउं ण तरति ताहे छन्ने प्रदेशे ठवेति, मा वरिसंते उवरि सेज्जति मे।

इमं पुच्छंति – "सम्मत्ते कज्जे अम्हेहिं कस्स अप्पेतव्वो"।

सो भणाति "मम चेव अप्पेयव्वो"।

ततो भण्णति "जइ कहंचि तुब्भे घरे ण दीसह ताहे कस्स अप्पेयव्वो"।

सो भणाति – एत्थेव घरे आणेज्जह, ताहे भाणियव्वो "कतरम्मि ओगासे ठवेज्जामो,"।

अहवा भणेज्जा "एत्थेव घरे छण्णपदेसे ठाएज्ज।"

अहवा भणेज्ज "जतो गहितो ठाणातो एयस्स पासे ठवेज्ज।

अहवा भणेज्ज "जतो गहितो ठाणातो तत्थेव ठवेज्ज"।

अहवा भणेज्ज "[4]उक्खित्ते" त्ति वेहासे ठवेज्जह,"।

अहवा – जं संथारयं जहिं घरे भण्णति तं तहिं संथारयं णेति। एवं अभिग्गहितेसु भणितं ॥१२९८॥

१ गा० १२४६। २ गा० १२४७। ३ गा० १२४७। ४ गा० १२४७।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आभिग्गहियस्सासति, वीमुं गहणं पडिच्छिउं सव्वे ।
दाऊण तिण्णि गुरुणो, गेण्हंतणे जहा वुड्ढा ॥१२४६॥

आभिग्गहियसंघाडयस्स असति सव्वे संघाडया वीसुं गेण्हंति । वंदेण वा सव्वे गेण्हंति एत्थ वि सव्वाए सेव जयणाणुण्णवणा जाव कस्सप्पिगणंति दट्ठव्वं । जो जहा आणेति सो तहा गणावच्छेतियस्स अप्पेति । साधुप्पमाणाओ य अतिरित्ता [1]तओ गेण्हंति जे गुरुणो दायव्वा । एवं अभिग्गहितेतरेसु वा आणीता सव्वे जता गणावच्छेतिएण पडिच्छिता ताहे जे सुहा सेज्जा ते तिण्णि गुरुणो दिज्जंति, सेसा गणावच्छेइओ अहारातिणियाए भाए त्ति गेण्हति वा । एयं सगणे भणितं ॥१२४६॥

णेगाण उ णाणत्तं, सगणेतरऽभिग्गहीण वण्णगणो ।
दिट्ठोभासण-लद्धे, सण्णायग-उड्ढ-पभू चेव ॥१२५०॥

णेगाण गणाण एगखेत्तट्ठियाण "णाणत्तं" विशेषः तं सगणिच्चयाणं, इतरे य परगणिच्चा, सगणे अभिग्गही अणभिग्गही वा, अण्णगणे वि अभिग्गही अणभिग्गही वा, सगणे परगणे वा संघाडएण वा वंदेण वा अडंताणं आरुव्वं तव्ववहारो भण्णति। इमेहिं दारेहिं – दिट्ठे ओभासण लद्धे सण्णायग - उड्ढ - पभू चेव ॥१२५०॥

तत्थ दिट्ठ त्ति दारं । एयस्स इमाणि दाराणि –

दट्ठूण व हिंडतेण वा, णिउं तस्स वा वि वयणेणं ।
विप्परिणामणकहणे, वोच्छिण्णे जस्स वा देति ॥१२५१॥

एसा चिरंतणगाहा ॥१२५१॥

[2]दट्ठूणदारस्स वक्खाणं –

संथारो दिट्ठो ण य, तस्स जो पभू तओ अकहणे गुरूणं ।
कहिते व अकहिते वा, अण्णेण वि याणिओ तस्स ॥१२५२॥

साधुसंघाडएण हिंडतेण संथारओ दिट्ठो । पुच्छितोऽणेण "कस्सेस संथारतो ?" ताहे केण ति भणितं- "णत्थेत्थ सो जस्सेस संथारओ।" ताहे सो साधुसंघाडओ चिंतेति "जाहे संथारगसामी एहिति ताहे मग्गिहामो।" तेण संघाडएण गुरूण आलोयव्वं "मए अमुगगिहे संथारगो दिट्ठो ण य तस्स जो पभू" । एवं अणालोयंतस्स मासलहुं । तं जाणित्ता अण्णेण संघाडएण चिंतियं "जाव एस ण जायति तावऽहं मग्गामि ।" मग्गितो लद्धो य । कस्स भवति ? पुव्वसंघाडएण गुरूण कहिए वा अकहिए वा तस्सेवाभवति । ण जेण पच्छा मग्गितो लद्धो य ॥१२५२॥ "दट्ठूण व" त्ति दारं गतं ।

इदाणिं "[3]हिंडतेण वा णिउ" त्ति अस्य व्याख्या –

संथारं देहंतं, असहीण पभू तु पासए पढमो ।
बितितो उ अण्णदिट्ठं, असढो आणेतणाभोगा ॥१२५३॥

पूर्वार्धं पूर्ववत् । तथाप्युच्यते एक्केण साधुसंघाडएण संथारतो दिट्ठो, ण तस्स पभू । "पढमो" त्ति बितियसंघाडावेक्खाए पढमो भण्णति । अण्णहा एस बितियप्पगारो बितिओ साहुसंघाडओ अण्णदिट्ठं

१ त्रयः । २ गा० १२५१ । ३ गा० १२५१ ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

संथारयं। "असढभावो" – अमायावी अणाभोगादज्ञानात् ण याणति "जहा अण्णेण साहुसंघाडएण एस दिट्ठो" एवं मग्गितो लद्धो आणिओ य कस्साभवति ? पुरिमस्स चेव ण जेण आणिओ। अण्णे भणंति – साहारणो ॥१२५३॥

"[1]तस्स वा वि वयणेणं" ति अस्य व्याख्या –

ततिओ उ गुरुसगासे, विगडिज्जंतं सुणेत्तु संथारं।
अमुयत्थ मए दिट्ठो, हिंडंतो वण्णसीसंतं ॥१२५४॥

"ततिओ" त्ति ततियप्पगारो तह चेव (अ) दिट्ठे सामिम्मि मग्गीहामो : आगतो गुरुस्स आलोएति- "अमुअत्थ मए संथारओ दिट्ठो" त्ति।

अहवा – भिक्खं हिंडंतेण चेव अण्णसंघाडस्स "सीसंतं" कथ्यमानमित्यर्थः, तमेवं दोण्हं पगाराणं अण्णतरेणं सुणेत्तु "विप्परिणामेणं" ति एवं विप्परिणामंतो मग्गति ॥१२५४॥

दिट्ठोवण्णेणम्हं, ण कप्पती दच्छिवे तमसुगो तु।
मा दिज्जसि तस्सेतं, पडिसिद्धे तम्मि मज्झेसो ॥१२५५॥

मग्गणट्ठाए संथारगसामि भणति – "अम्हं एरिसो सिद्धंतो दिट्ठो अण्णेण ओभासिस्सामि त्ति सो संथारओ अण्णस्स ण कप्पति, "दच्छिवे तमसुगो" त्ति दृष्टवत्सो तं मग्गंतं तुमं पडिसेहेज्जासि, मा तस्स एतं देज्जसि, पडिसिद्धे तम्मि य मज्झे सो भविस्सति।" सो य तस्सादिण्णो। कस्स आभवति ? पुरिमस्स, ण जेण लद्धो ॥१२५५॥

"[2]कहणे" त्ति अस्य व्याख्या–

अधवा सो तु विगडणं, धम्मकथा पणियलोभितं भणति।
अमुगं पडिसेवेत्तुं, तो दिज्जसि मज्झ मा अज्ज ॥१२५६॥

तहेव आलोएंतस्स सोउं तत्थ गंतुं तस्स धम्मं कहेति। जाहे आक्खित्तो धम्मकहाए ताहे भणाति- जेण सो दिट्ठो संथारओ तस्स य णामं घेत्तूण भणाति – "जाहे सो मग्गति ताहे तं पडिसेहिउं, अज्ज दिणं वोलावेउं अण्णदिणे मज्झं देज्जसि"। सो एवं आणितो। कस्स आभवति ? पुरिमस्स, ण जेण लद्धो। एवं विप्परिणामेंतस्स जइ सगच्छेल्लओ विप्परिणामेति तो चउलहुं, अह परगच्छेल्लओ तो चउगुरुं ॥१२५६॥

"[3]वोच्छिण्णे जस्स वा देइति" त्ति अस्य व्याख्या -

विप्परिणतम्मि भावे, तिक्खुत्तो वा वि जाइतमलद्धे।
अण्णो लभेज्ज फलगं, तस्सेव य सो ण पुरिमस्स ॥१२५७॥

जेण दिट्ठो तस्स जति तम्मि संथारए भावो विप्परिणामितो। एवं वोच्छिण्णे साहुस्स भावे सो संथारगसामी जस्स चेव देति तस्सेव सो, ण जेण पुरा दिट्ठो।

अधवा – जेण पुरा दिट्ठो तेण तिण्णि वारा मग्गितो, ण लद्धो। तस्स वोच्छिण्णे वा अवोच्छिण्णे

---

१ गा० १२५१। २ गा० १२५१। ३ गा० १२५१।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वा भावे अतो परं अण्णो जति लभेज्ज मग्गितं फलगं तस्सेव तं, ण जेण पुरा दिट्ठं ॥१२५७॥ "दिट्ठे" त्ति दारं गतं ।

इदाणिं "[1]ओभासणे" त्ति दारं भण्णति । जहा दिट्ठदारं दट्ठूण एवमादिएहिं छहिं दारेहिं वक्खाणियं, तहा ओभासणदारं पिं छहिं दारेहिं वक्खाणेयव्वं । ते य इमे दारा –

सोउं[1] हिंडण[2]-कहणं[3], वोच्छिण्णे[4] जस्स अण्णोअण्णं[5] वा[6] ।
विगडिंतो भासंतं, च सोतुमोभासति तहेव ॥१२५८॥

सोउं हिंडण विपरिणामण कहण वोच्छिण्णे जस्स अण्णोण्णं वा । एत्थ विप्परिणामण – गाहाए ण गहियं ।

एगेण साधुसंघाडएणं संथारओ दिट्ठो । संथारगसामी ओभट्ठो, ण लद्धो । तस्स साहुसंघाडगस्स तम्मि संथारगे भावो ण वोच्छिज्जति । आगतेहिं य गुरूणं आलोइयं । अण्णो साहुसंघाडओ विगडिज्जंतं – ओभासिज्जंतं वा सोउं ओभासइ तहेव जहा दिट्ठदारे । दुट्ठभावः स तेण मग्गितो लद्धो आणिओ । कस्स आभवति ? जेण पुरा ओभासितो, ण जेण पच्छा णीतो । सोउं गतं ।

एक्केणं साहुसंघाडएणं संथारओ दिट्ठो, ओभासितो, ण लद्धो । अच्छिण्णभावे अण्णो संघाडओ अहा भावेण अदुट्ठभावो हिंडंतो आणेति । कस्स आभवति ? पुरिमस्स, पच्छिमस्स ण । अण्णे साहारणं भणंति ।

एवं विप्परिणामण - कहण - वोच्छिण्णदारा वि जहा दिट्ठद्दारे ।

णवरं – एत्थ "ओभासण" त्ति वत्तव्वं ॥१२५८॥

अण्णोण्णं वा अस्य व्याख्या –

अण्णो वा ओभट्ठो, अण्णं से देति सो व अण्णं तु ।
कप्पति जो तु पणइतो, तेण व अण्णेण व ण कप्पे ॥१२५९॥

एक्केण साहुसंघाडएण एक्कंसि घरे संथारओ दिट्ठो, पणइओ, ण लद्धो । अव्वोच्छिण्णे भावे अण्णेण साहुसंघाडएण तम्मि घरे अण्णो पुरिसो ओहट्ठो, अण्णं से संथारं देति, कप्पति । सो वा पुरिसो जो पुव्वसंघाडएण पणतिओ अण्णसंथारयं देति, कप्पति । जो पुण पुव्वसंघाडएण पणतितो संथारगो सो तेण वा पुरिसेण अण्णेण वा पुरिसेण दिज्जमाणो पुव्वसंघाडगस्स अव्वोच्छिण्णे भावे अण्णस्स न कप्पति । ॥१२५३॥ "ओभासण" त्ति गतं ।

इदाणिं "[2]लद्धेति" – इक्केण साहुसंघाडएण संथारओ दिट्ठो ओभट्ठो लद्धो य, ण पुण आणिओ

इमेहिं कारणेहिं –

काले वा घेच्छामो, वियावडा वा वि ण तरिमो णेत्तुं ।
लद्धे वि कहण विपरिणामण वोच्छिण्णे जस्स वा देति ॥१२६०॥

---

१ गा० १२५० । २ गा० १२५० ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जेण लद्धो सो चिंतेति – ण ताव एयस्स् संथारगस्स परिभोगे कालो । अच्छउ लद्धो, पज्जोसवणकाले चेव घेच्छामो । छत्तं

अधवा – भत्तपाणभरिया वियावडा ण तरामो णेउं । एवं लद्धे वि णो आणेति । तत्थेक्को गुरुसमीवे वियडिज्जंतं सोउं गंतुं मग्गति । संथारगसामिणा भणितो – स एस मए अण्णस्स दिण्णो, तहा वि तुमं गेण्ह, अण्णो वा देति । बितिओ अहाभावेण आणेति, तस्स पुण तेण संथारगसामिणा विस्सरिएणं दिण्णो । ततितो धम्मकह काउं आणेति । चउत्थो विप्परिणामेउं आणेति । पंचमो वोच्छिण्णे भावे । छट्ठो अण्णेणं वा । व्याख्या व्यवहारश्च पूर्ववत् । णवरं – सामी कहेति – "मय अण्णस्स दिण्णो" त्ति ॥१२६०॥

इयाणिं "[1]सण्णायए" त्ति –

सण्णातगे वि तध चेव कह विपरिणामणासु तु विभासा ।
अब्भासतरो गेण्हति, मित्तो वण्णो विमं वोत्तुं ॥१२६१॥

केण इ साहुणा सण्णायगधरे संथारओ दिट्ठो, सो य मग्गितो । तेहि दिण्णो, भणिओ य – "गेण्ह" । साहुणा भणियं – "जदा कज्जं तदा गेण्हिस्सामि, ताव एत्थेव अच्छउ" । तेण गंतूण गुरूण आलोइयं । अण्णो तं सोउं तत्थ गंतु मग्गिउं आणेति । बितिओ अहाभावेण आणेति, न जाणेति – "एस साहुणा मग्गितो, सण्णायगा वा एते साधुस्स" । अण्णो तह च्चेव धम्मकहविप्परिणामणासु आणेति । अण्णो वोच्छिण्णे भावे आणेति । अण्णो सण्णायगेण भणितो – "अहं ते संथारगं देमि" । एतेसु द्वारेसु विभासा व्यवहारश्च पूर्ववत् । जो विप्परिणामेति साहू सो तस्स गिहत्थस्स आसण्णतरो, सो विप्परिणामेत्तु गेण्हति, अब्भरहिओ मित्तो वा । अण्णो इमं वोत्तुं गेण्हति ॥१२६१॥

अण्णे वि तस्स णीया, देहिह अण्णं पि तस्स मम दातुं ।
दुल्लभलाभमणातुंछियम्मि दाणं हवति सुद्धं ॥१२६२॥

जेण एस संथारगो गहितो तस्स अण्णे वि णिया मित्ता वा अत्थि, सो तओ लभिस्सति । मम पुण तुब्भे चेव, अण्णतो ण लभामि ।

अहवा – सो तुब्भं आसण्णो अहं पुण दूरेण तो मम दाउं पि तस्स लज्जाए अण्णं देहिह । किं चान्यत् - जे अण्णायउंछिओ दुल्लभ-लाभो साहू तत्थ दाणं दिण्णं भवति सुद्धं - बहुफलमित्यर्थः ॥१२६२॥

इमा सण्णायग-कुल-सामायारी –

सण्णातगिहे अण्णो, ण गेण्हती तेण असमणुण्णातो ।
सति विभवे सत्ती य व, सो वि हु ण तेण णिव्विसती ॥१२६३॥

जत्थ गामे साहुणो ठिता तम्मि गामे जस्स साहुस्स सण्णायगा तेण साहुणा अणुण्णाया, अण्णे साहुणो ण किंचि संथारगादि गेण्हंति । "सो वि सति विभवे", विभवो णाम अण्णतो संथारगादि लद्धं, 'सत्ती" णाम अहमन्यत्रापि उत्पादयितुं समर्थः । सो एवमप्पाणं जाणिऊण "ण णिव्विसति" द्वि प्रतिषेधः प्रकृतं गमयति - विशत्येव - न वारयतीत्यर्थः ॥१२६३॥

---

[1] गा० १२५० ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इदाणिं "[1]उड्ढे" त्ति दारं। संघाडएण संथारओो दिट्ठो, ओभट्ठो, लद्धो य, काले वा-घेच्छामो, भत्तादि वियावडा वा णेउं असमत्था, इमं वक्ष्यमाणं चिंतेंति –

वरिसेज्ज मा हु छण्णे, ठवेति अण्णो य मा वि मग्गेज्जा।
तं चेव उड्ढकरणे, णवरिं पुच्छाए णाणत्तं ॥१२६४॥

वरिसेज्ज मा हु. तम्मि वरिसमाणे उवरि सिज्जिहिति तेण छण्णे [2]अवारादिसु उड्ढं ठवेति, अण्णो वा साधू मा विमग्गिहिति उड्ढं करेति। तेण गंतुं गुरुणो आलोइयं जं दिट्ठादिसु द्दारेसु भणितं सोउं अहाभावविप्परिणामादिएहिं तं चेव उढ्ढकरणे वि, णवरि पुच्छाए 'णाणत्तं"– विशेषः ॥१२६४॥

छण्णे उड्ढो व कतो, संथारो होज्ज सो अधाभावा।
तत्थ वि सामायारी, पुच्छिज्जति इयरहा लहुओ ॥१२६५॥

केण इ साहुणा छण्णे कतो संथारओो दिट्ठो। सो चिंतेति – एस संथारओो संजयकरणे ठिओो। किं मण्णे ण साहुणा उड्ढं कतो संथारओो होज्ज उय गिहिणा अहाभावेण कओो होज्ज ? एत्थ इमा सामायारी – पुच्छिज्जति, इयरहा मासलहुं पच्छित्तं। एवं संदिद्धभावे पुच्छिज्जति ॥१२६५॥

उड्ढे केण कतमिणं, आसंका पुच्छितम्मि तु अ सिट्ठे।
अण्णा असढमाणीतं, पुरिल्ले के ति साधारं ॥१२६६॥

उड्ढं संथारगो एस केण कतो ? आसंकाए पुच्छियम्मि गिहत्थेण कहितो सड्ढेण आणितो, पुरिल्ले अह गिहत्थेण असिद्धे अण्णेण असढमाणितो पुरिल्ले भवंति। के ति पुण साहारणं भणंति। उढ्ढेत्ति गतं।

इदाणिं "[3]पभु" त्ति –

एगेण संघाडएण पहू जातितो संथारगं। तं णाऊण एगो सढभावेण आणेति। बितिओ अहाभावेण। ततिओ विप्परिणामेउं। चउत्थो धम्मकहाए लोभेउं। पंचमो वोच्छिण्णे भावे। छट्ठो सो व ऽण्णो व तं व ऽण्णं वा। व्याख्या व्यवहारश्च पूर्ववत्। णवरं – पभू भणाति ॥१२६६॥

पुत्तो पिता व जाइतो, दोहिं वि दिण्णं पभूहिं (ण) वा जस्स।
अपभुम्मि लहू आणा, एगतरपदोसओ जं च ॥१२६७॥

एगेण साहुणा पुत्तो जाइतो, अण्णेण पिता जाइओो। तेहिं दोहिं वि एगो संथारगो दिण्णो। जति ते दो पभू दोण्ह वि साहारणो, जेण वा पुव्वमग्गितो तस्स आभवति। अह एगो पभू एगो अपभू तो पहुणा जस्स दिण्णो तस्स आभवति। जो अपहुं अणुण्णवेति तस्स मासलहुं। आणादिणो य दोसा। एगतरस्स देंतस्स साहुस्स वा पदोसं गच्छति, जं च रुट्ठो तालणाति करेस्सति तं पावति साहू ॥१२६७॥

"[4]दिट्ठादिएसु पदेसु जाव पहू" सव्वेसु इमं पच्छित्तं –

अण्णेण अणुण्णविते, अण्णो जति गेण्हती तहिं फलगं।
गच्छम्मि सए लहुया, गुरुगा चत्तारि परगच्छे ॥१२६८॥

१ गा० १२५०। २ दे० आपण हाटकादि। ३ गा० १२५०। ४ गा० १२५०।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इक्केण साहुसंघाडएण एगम्मि घरे एगो संथारगो अणुण्णवितो, तं जति अण्णो गेण्हति तहि घरे तमेव फलगं, सगच्छिल्लगाण चउलहुगा, गुरुगा परगच्छे। एसा संघाडगविही भणिया ॥१२६८॥

एगासति लंभे वा, णेगाण वि होति एस चेव गमो।
दिट्ठादीसु पदेसुं, णवरमप्पिणणम्मि णाणत्तं ॥१२६९॥

जदि एगेगो संघाडगो न लभति तो णेगाण वि वंदेण अडंताणं एसेव गमो। दिट्ठादिएसु पएसु-जाव-पभू परूवणा आभवं तव्ववहारो य पूर्ववत्। णवरं – अप्पिणणे णाणत्तं ॥१२६९॥

जाहे लद्धो ताहे तेहिं इमं वत्तव्वं –

सव्वे वि दिट्ठरूवे, करेहि पुण्णम्मि अम्ह एगतरो।
अन्नो वा वाघाते, अप्पेहिति जं भणसि तस्स ॥१२७०॥

सव्वे अम्हे वण्ण-वण-तिलगातिएहिं दिट्ठरूवे करेह, पुण्णे काले अम्हं एगतरो अप्पेहिति। अह अम्हं कोति वाघातो होज्ज तो अण्णो वि अप्पेहिति। तुमम्मि [1]असहीणे अम्हे वा अण्णे वा जं भणसि तस्स अप्पेहामो ॥१२७०॥

संघाडगेण वंदेण वा गेण्हंताणं इमो कमो –

सज्झायं काऊणं, भिक्खं काउं अदिट्ठे वसितूणं।
खेत्तम्मि उ असंतं, आणयणं खेत्तबहियातो ॥१२७१॥

सुत्तत्थपोरिसीओ काउं भिक्खं हिंडंता मग्गंति। जे पुण वंदेण [2]ते णियमा अत्थपोरिसिं वज्जेत्ता मग्गंति। पहु दिट्ठे त्ति पहु त्ति गतं।

इदाणिं "अदिट्ठे" त्ति दारं।

जति सग्गामे न लभेज्ज ताहे अण्णगामे मग्गिज्जति। तत्थ संथारगो दिट्ठो, ण संथारगसामी, जओ खेत्तमादी गतो। एवं अदिट्ठे वसिऊण गोसे संथारगं घेत्तुमागच्छंति। जति सो खेत्ते अण्णगामे वि ण लब्भति ताहे आणयणं खेत्तबहितातो वि ॥१२७१॥ "गहणे" त्ति मूलदारं गतं।

इदाणिं "[3]अणुण्णवणे" त्ति –

सव्वेसु वि गहिएसु, संथारो वासगे अणुण्णवणा।
जो जस्स तु पाउग्गो, सो तस्स तहिं तु दातव्वो ॥१२७२॥

जता सव्वेसु साहुसु संथारगा पडिपुण्णा गहिआ तदा जत्थ संथारगे ठविज्जहिति, ते संथारोवासगा अहारातिणियाए अणुण्णविज्जंति ॥१२७२॥

अववातो भणति।

"[4]जो जस्स उ" पच्छद्धं अस्य व्याख्या –

खेल-पवात-णिवाते, काले गिलाणे य सेह-पडियरए।
सम-विसमे पडिपुच्छा, आसंखडीए अणुण्णवणा ॥१२७३॥

१ परदेशंगते। २ "दो वि वा परिहरेत्तु मग्गंति" क्वचित् पाठो। ३ गा० १२४६। ४ गा० १२७२।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जस्स खेलो संदति तस्स मज्झे ठातो आगतो, ततो तेण जो अंते साहू सो अणुण्णवेयव्वो – इच्छाकारेण मम खेलो संदति, अहं तुब्भच्चए ठागे ठामि, "तुमं [1]ममच्चए गाहि" त्ति । एवं अहं पित्तलो पवाते, वातलो णिवाते, कालग्राही कालग्रहणभूमीसमीवे, गिलाणपडियरगो गिलाणसमीवे, सेहो तप्पडियरग-समीवे, जो सामायारिं गाहेति । जस्स विसमा संथारगभूमी सो अणधियासेमाणो पासाणि वा जस्स दुक्खंति सो जस्स समा संथारगभूमी तं अणुण्णवेति अधियासगं । आसंखडीओ सूरगस्स मूले रुविज्जति जो वा जं – सुत्तत्थे पुच्छति सो तस्स पासे ठागं अणुण्णवेति ॥१२७३॥

इदाणिं "[2]एगगिए" त्ति "अकुए" त्ति दो दारा एगगाहाते वक्खाणेति –

एगंगियस्स असती, दोमादी संतरंतु णममाणे ।
कुयबंधणंमि लहुगा, तत्थ वि आणादिणो दोसा ॥१२७४॥

एगंगितं फलगं असंघातिमं घेत्तव्वं । असति एगंगियस्स दो पच्चरा संघातिगा गहेयव्वा । असति तिगादी संघातिगा गहेयव्वा । एगंगियस्स असति अणेगंगियो दोमादिफलगेहिं घेत्तव्वो । फलगासति कंबियमयो वि पुव्वसंघातितो, असति असंघातितो वि संतरंतु । "णममाणि" त्ति जे णमंति संतराओ कंविओ वज्झंति मा पाणजातिविराहणा भविस्सति ।

अहवा – णममाणे "अंतरा" अडुया कंबिया बज्झंति ।

इदाणिं "[3]अकुए" त्ति दारं पच्छद्धं ।

"कुच" परिस्पंदने, अकुचो वंधेयव्वो निश्चलेत्यर्थः । इतश्चेतश्च जस्स कंविओ चलंति स कुचः । तादृग्बंधने चतुलहुं । आणादिणो य दोसा भवंति । चले वा पडंति, पडंते वा आयसंजमविराहणा ॥१२७४॥

इदाणिं "[4]पाउग्गे" त्ति दारं –

उग्गममादी सुद्धो, गहणादी जाव वण्णिओ एसो ।
एसो खलु पायोग्गो, गुरुमादीणं च जो जोग्गो ॥१२७५॥

जो उग्गमउप्पादणएसणाहिं सुद्धो सो पाउग्गो ।

अहवा – गहणादिदारेहिं जो एस वण्णिओ एस पाउग्गो ।

अहवा – जो गुरुमादीपुरिसविभागेण जोग्गो सो पाउग्गो भवति ॥११७५॥

एवं गहियस्स परिभोगसामायारी भण्णति –

तद्दिवसं पडिलेहा, बंधा पक्खस्स सव्व मोत्तूणं ।
लहुगा अणुमुयंते, ते चेव य अपडिलेहाए ॥१२७६॥

जहा उवकरणस्स तहा संथारगस्स वि । "तद्दिवस" दिवसे उभयसंज्झं पडिलेहा, पक्खिए सव्वे बंधे मोत्तुं पडिलेहंति । जति पक्खिए बंधणा न मुयति तो चउलहुं । दिणे दिणे अपडिलेहंतस्स, ते चेव चउलहू भवंति ॥१२७६।

---

१ मदीयं । २ गा० १२४६ । ३ गा० १२४६ । ४ गा० १२४६ ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तस्स पुण इमा पडिलेहणविधी –

अंकम्मि व भूमीए व, कातूणं भंडगं तु संथारं ।
रयहरणेण पमज्जे, ईसि समुक्खेत्तु हेट्ठुवरिं ॥१२७७॥

मुहपोत्तियादिसव्वोवकरणं पडिलेहेउं ताहे तं उवकरणं अंकम्मि वा ठवेंति, भूमीए वा ठवेंति । ताहे संथारगं रयहरणेण पमज्जंति, हेट्ठुवरिं ईसि समुक्खविय ॥१२७७॥

वासाण एगतरं, संथारं जो उवादिणे भिक्खू ।
दसरातातो परेणं, सो पावति आणमादीणि ॥१२७८॥

वासाकाले जो गहितो एगतरो परिसाडी वा अपरिसाडी वा जो तं भिक्खू मग्गसिरदसराईतो परं वोलावेति । पुणो कारणे उप्पण्णे वा जाव तिण्णि दसराई । इयरहा कत्तियचाउम्मासियपाडिवरा अप्पेयव्वे । जो ण पच्चप्पिणइ तस्स आणादयो दोसा ॥१२७८॥

इमे य –

माया मोसमदत्तं, अप्पच्चयो खिंसणा उवालंभो ।
वोच्छेदपदोसादी, दोसा तु अणप्पिणंतम्मि ॥१२७९॥

बितियं पभुणिव्विसए, णट्ठुद्धितसुण्णमतमणप्पज्झे ।
असहू संसत्ते वा, [1]रट्ठुट्ठाणे य हितदड्ढे[2] ॥१२८०॥

[3]पूर्ववत्

जे भिक्खू उदुबद्धियं वा वासावासियं वा सेज्जासंथारगं उवरि सिज्जमाणं पेहाए न ओसारेइ, न ओसारेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५२॥

जो वासेणोवरि सेज्जमाणं न तस्मात् प्रदेशात् अपनयति तस्य मासलहुं ।

परिसाडिमऽपरिसाडी, अंतो बहिता व दुविधकालम्मि ।
उवरिसिंतं पासिय, जो तं ण ऽवसारे आणादी ॥१२८१॥

अंतो वसहीए बहिता वा वसहीए दुविधकाले उडुबद्धे वासाकाले वा उवरि सिज्जंतं सिच्चमाणं जो साहू पेक्खंतो अच्छति "णावसारे त्ति" अणोवरिसे ण करेति तस्स आणादी ॥१२८५॥

इमं च पच्छित्तं –

उवरिसंते लहुगं, अवस्स वरिसेस्सति त्ति लहुओ उ ।
लहुया लहुओ व कते, णिक्कारण-कारणे बाहिं ॥१२८२॥

उवरि सिज्जमाणे चउलहुअं, "अवस्सयं वरिसिस्सति" त्ति णो अणोवरिसे मासलहुं, अवस्स वरिसिस्सति नि तहावि णिक्कारणे बाहिं करेति चउलहुं, आसण्णं वासं णाऊण कारणे वि बाहिं णीणेति मासलहुं ।

१ रद्धं । २ ड्डे । ३ गा० १२३६-१२४० ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

किं पुण तं कारणं जेग बाहिं णीणिज्जति ?

पडिलेहणट्ठा असंसत्तो वा आतावणट्ठा ।।१२८२।।

उवरि सिज्जमाणे इमे दोसा –

तं दट्ठूण सयं वा, अधवा अण्णे वि अंतिए सोच्चा ।
ओहावणमग्गहणं, कुज्जा दुविधं च वोच्छेदं ।।१२८३।।

तं उवरि सिज्जमाणं "सयं" संथारगसामी दट्ठुं ।

अधवा – अण्णेसिं "अंतिए" अब्भासे सोच्चा ओभावणं अग्गहणं दुविधं वोच्छेयं वा कुब्बा ।।१२८३।।

अण्णे वि होंति दोसा संजम पणए य जीव आताए ।
बंधाण य कुच्छणता, उल्लक्कमणे य तब्भंगो ।।१२८४।।

उल्ले पणओ कुंथू वा समुच्छंति, संजमविराहणा । सीयले वा भत्तं ण जीरति, गेलण्णं, आतविराहणा । बंधा वा कुहंति, ते कुहिया तुट्टंति, उल्लो वा अक्कंतो भजति ।।१२८४।।

बितियपदे वसधीए, ठिए व उच्छेदओ भवे अंतो ।
पडिलेहणमप्पिणणे, गिलाणमादीसुविहिया ? तु ।।१२८५।।

वरिसते वि अणोवरिसे ण कज्जति, वसही समंततो गलति त्ति अंतो वि ठवितो वसहीए तिम्मइ त्ति णावसारेइ, पडिलेहणट्ठा वा णीणितो, अप्पिणणट्ठा वा णीणितो ।।१२८५।।

एवं ता णीहरणं, हवेज्ज अध णीणियं पि ण विसारे ।
गेलण्ण-वसहीपडणे, संभम-पडिणीय-सागरिए ।।१२८६।।

एवमादिसु कारणेसु, वसहि-णीहरणं हवेज्ज । अह णीणियं उवरि सिज्जमाणं णावसारेति इमेहिं कारणेहिं । "गिलाणमादिसुविहिया उ" अस्य व्याख्या "गेलण्ण" पच्छद्धं । गिलाणकारणे वावडो, सयं वा गिलाणो णावसारे । वसहिपडणे वा अंतो ण प्पवेसति । उदगागणिमादिएसु संभमेसु णावसारेति. अतिव्याकुलत्वात् । पडिणीओ वा बाहिं पडिक्खति जति एस समणो णिग्गच्छति तो णं पंतावेमि, सेहस्स बाहिं सागारियं । एतेहिं कारणेहिं अणोवरिसे अकरेंतो सुद्धो ।।१२८६।।

जे भिक्खू पाडिहारियं सेज्जासंथारयं अणणुण्णवेत्ता बाहिं णीणेति,
णीणेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।५३।।

भिक्खू पूर्ववत् । पाडिहारको प्रत्यर्पणीयो । असेज्जातरस्स सेज्जातरस्स वा संतितो जति पुण्णे मासकप्पे दोच्चं अणणुण्णवेत्ता अंतोहिंतो बाहिं णीणेति, बाहिंतो वा अतो अतिणेति तहा वि मासलहुं । एस सुत्तत्थो ।

इमा णिज्जुत्ती –

परिसाडिमपरिसाडी, सागरियसंतियं च पडिहारि ।
दोच्चंअणुण्णवेत्ता, अंतो बहि णेति आणादी ।।१२८७।।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कुसातितणसंथारए परिभुज्जमाणे जस्स किंचि परिसडति सो परिसाडी। वंसकंबिमादी अपरिसाडी। दोच्चं अणणुण्णवेत्ता जो णेति तस्स आणा अणवत्थादि दोसा भवंति ॥१२८७॥

चोदगाह – णणु सुत्ते अणणुण्णवेंतस्स वि मासलहुं वुत्तं णिक्कारणे ?

आचार्याह – णिक्कारणे सुत्तं । अत्थो तु कारणे विधि दरिसेति ।

अविधीए इमे दोसा –

ताइं तणफलगाइं, तेणाहडगाणि अप्पणो वा वि ।
णिज्जंता गहियाइं, सिट्ठाणि तहा असिट्ठाणि ॥१२८८॥

ते तणफलया तस्स तेणाहडा वा, अप्पणो वा । तेणाहडेसु णिज्जंतेसु अंतरे पुव्वसामीं दट्ठुं गहितेसु साधू पुच्छितो जति कहेति जस्स ते ण कहेति वा तो उभयहा वि दोसा, तम्हा दोसपरिहरणत्थं विही भण्णति – सपरिक्खेवे ठिताणं अंतो मासो बहिं मासो । अंतो मासकप्पं काऊण बहिं णिगच्छंतो तत्थेव तणफलगा गेण्हंतु, अह ण लब्भंति अण्णगामं वयंतु । अह तेसु असिवातिकारणा अत्थि तो ते सव्वे तणफलया-णीणंतु ॥१२८८॥

इमा विही –

अण्णउवस्सयगमणे, अणपुच्छा णत्थि किंचि णेतव्वं ।
जो णेति अणापुच्छा, तत्थ उ दोसा इमे होति ॥१२८९॥

सपरिक्खेवे अण्णउवस्सयं वयंता अणापुच्छाए न किं चि णेयव्वं । "णत्थि" त्ति अनापृच्छ्य नास्ति किंचिन्नेयमिति । जो पुण अणापुच्छाए णेति तस्सिमे दोसा –

कस्सेते तणफलगा, सिट्ठे अमुगस्स तस्स गहणादी ।
णिण्हवति व सो भीओ, पच्चंगिरलोगमुड्डाहो ॥१२९०॥

तेणाहडा अणापुच्छाए णिज्जंता पुव्वसामिणा दिट्ठा, साहू पुच्छितो, कस्सेते तणफलगा ? साहू भण्णति – अमुगस्स । तस्स गेण्हण-कड्ढणादिया दोसा । अह णिण्हवेति सो भीतो संतो साहू तो पच्चंगिरदोसो [1]पदोषः तस्मिन् संभाव्यत इति, प्रत्यंगिरा । लोगे वि उड्डाहो-"साधवो वि परदव्वावहारिणो" त्ति ॥१२९०॥

[2]गहणादिपदस्स इमा वक्खा –

णयणे दिट्ठे सिट्ठे, कड्ढण ववहार ववहरितपच्छकत्ते ।
उड्डाहे य विरुंभण, उद्दवणे चेव णिव्विसिए ॥१२९१॥

तणफलया अणापुच्छाए णेति । तेणाहडा णिज्जमाणो पुव्वसामिणा दिट्ठा पुच्छिएण साहुणा सिट्ठं - अमुगस्स । सो रायपुरिसेहिं हत्थे गहिउं कड्ढिओ । 'ववहारमेव' त्ति पुव्वसामिणा सद्धिं ववहारो त्ति वुत्तं भवति । "ववहारिए" त्ति ववहरितुमारद्धे पच्छाकडे ति जिते । "उड्डाहविरुंभणे" एक्कं पदं । "उद्दविते णिव्विसए" एक्कं पदं ॥१२९१॥

---

१ परिमन्थदोषः । २ गा० १२९० ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

एतेसु [1]नवसु पदेसु इमं पच्छित्तं –

मासगुरु वज्जिता, पच्छित्तं होइ नवसु एवं तु ।
लहुओ लहुगा गरुगा, छल्लहु छग्गुरुग छेदमूलदुगं ॥१२९२॥

"[2]णिण्हवति त्ति पच्छद्धस्स इमा वक्खा –

अहवा वि असिद्धम्मि य एसेव उ तेण संकणे लहुया ।
[3]निस्संकियम्मि गुरुगा, एगमणेगे य गहणाई ॥१२९३॥

अहवेत्ययं निपातः अविशब्दः प्रकारवाची, "असिद्धे" अनाख्याते, एसेव तु तेणो त्ति संकिते लहुआ, णिस्संकिते एस तेणो त्ति चउगुरुगा, तस्सेवेगस्स ।

अणेगाणं - अणेगेसिं साहूणं गहणादी इमे दोसा –

णयणे दिट्ठे गहिते, कड्ढ विकड्ढे ववहार विवहरिए ।
[4]उड्डाहे य विरुंभण, उद्दवणे चेव णिव्विसए ॥१२९४॥

तेणाहडादीण तणफलयाणं अणापुच्छाए नयणे पुव्वसामिणा दट्ठु तणफलयाणि साहुस्स वा गहणं कयं, विकोपयित्वा कड्ढणं, त्वं चोर इति विकोवणं, साहुस्स रायपुरिसेहिं कड्ढणं कतं, साहू ते रायपुरिसे प्रतीपं कड्ढति त्ति विकड्ढणं । सेसा ते चेव पदा तं चेव पच्छित्तं ॥१२९४॥

शिष्यः प्राह – किमस्तीदृशस्य संभवः ?

आचार्याह –

दंतपुरे आहरणं, तेणाहडवप्पगादिसु तणेसु ।
छावणमीराकरणे, [5]पत्थरण फला तु चंपादी ॥१२९५॥

"दंतपुरे" दंतवक्के आख्यानकं पसिद्धं । तत् यथा तत्र तेणाहडवप्पगादिसु तणेसु संभवो भवे । तानि पुनः किमर्थं साधवो नयंति ? उच्यते - छावणनिमित्तं वा, मीराकरणं वा । मीरा मेराकडणमित्यर्थः। पत्थरणत्थं वा । फलगा वि मीराकरण पत्थरणनिमित्तं । ते पुण चंपगपट्टादी भवंति ॥१२९५॥

इदाणिं अतेणाहडगाहा भाणियव्वा –

अतेणाहडाण-णयणे, लहुओ लहुगा य होंति सिद्धम्मि ।
अप्पत्तियम्मि गुरुगा, वोच्छेद पसज्जणा सेसे ॥ १२९६॥

अतेणाहडतणाइं जदि णेति अणापुच्छाए तणेसु लहुगो। अण्णेण से सिठ्ठं – तुज्झच्चया तणा फलया साधूहिं वाहिं नीणिता एत्थ लहुगा । अणुग्गहो त्ति एतम्मि वि चउलहुगा । अप्पत्तियम्मि गुरुगा । वोच्छेदं वा करेज्जा । तस्स साधुस्स तद्दव्वस्स वा पसजणा । सेसेत्ति अण्णेसिं पि साधूणं असणादियाण य दव्वाणं वोच्छेदो ॥१२९६॥

---

१ गा० ४७४ । २ गा० १२९० । ३ अणवट्ठप्पो दोसु य, दोसु य पारंचिओ होति । इति पाठान्तरम् ।
४ लहुओ लहुआ गुरुआ, छम्मासा छेदमूलदुगं । इति पाठान्तरम् । ५ अत्थरण । इति पा० ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तणफलगविशेषज्ञापनार्थमाह –

एसेव गमो णियमा, फलएसु वि होति आणुपुव्वीए ।
णवरं पुण णाणत्तं, चउरो लहुगा जहण्णपदे ॥१२९७॥

जो तणेसु विधी भणितो फलगेसु वि एसो चेव विधी । नवरि णाणत्तं – चउरो लहुगा जहण्णपदे । जत्थ तणेसु मासलहुं । तत्थ फलगेसु चउलहू भवंतीत्यर्थः ॥१२९७॥

बितियं पहुणिव्विसए, णट्ठुट्ठितसुण्णमतमणप्पज्झे ।
खंधारअगणिभंगा, दुल्लभसंथारए जतणा ॥१२९८॥

अणापुच्छाए वि नेज्ज । संथारगपभू निव्विसतो कतो, नट्ठो वा, उट्ठितो उव्वसितो वा, सुण्णो - पवसितो, मतो वा, अणप्पज्झो वा जातो, खंधावारभया वा बहितो अंतो अतिनेति, अग्गिभये वा नेति, विसय - भंगे वा नेति दुल्लभसंथारए वा जतणाए नेति ॥१२९८॥

इमा सा जतणा –

तम्मि तु असधीणे वा, पडिचरितुं वा सहीण वक्खित्ते ।
पुव्वावरसंझासु य, णयंति अंतो व बाहिं वा ॥१२९९॥

गिहे संथारगसामी जदा असहीणो तदा नयंति, सहीणे वा पडिचरितुं जदा वक्खित्तचित्तो तदा णयंति, पुव्वसंझाए अवरसंझाए वा अंतातो बाहिं, बाहितो वा अंतो नयंति ॥१२९९॥

जे भिक्खू सागारियसंतियं सेज्जा-संथारयं अणुण्णवेत्ता बाहिं णीणेति; णीणेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५४॥

जे भिक्खू पाडिहारियं सागारिय-संतियं वा सेज्जा-संथारयं दोच्चं पि अणणुण्णवेत्ता बाहिं णीणेति; णीणेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५५॥

[नास्तीमे द्वे सूत्रे उपलब्ध भाष्यचूर्णिप्रतषु]

जे भिक्खू पाडिहारियं सेज्जा-संथारयं आताय अपडिहट्टु संपव्वयइ; संपव्वयंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५६॥

आदाय गृहीत्वा, अप्पडिहट्टु नाम अणप्पिणित्ता, सम्मं एगीभावेण प्रव्रजति संप्रव्रजति तस्स मासलहुं । एस सुत्तत्थो ।

इदाणिं णिज्जुत्ती अत्थं वित्थरेति –

पडिहरिणीओ पडिहारिओ य आताय तं गहेऊणं ।
अप्पडिहट्टमणप्पित्तु संपव्वए सम्मगमणं तु ॥१३००॥

मासकप्पे पुण्णे जम्मि कुले गहितो संथारयो तस्स पच्चप्पिणंतस्स त्ति जं धारणं सो पाडिहारितो भण्णति । एरिसीए कडाए तं आदायगृहीत्वा पुण्णे मासकप्पे अपडिहट्टुमणप्पिणित्तु न प्रतीपं अर्पयतीत्यर्थः । सं एगीभावे व्रज । "व्रज" गतौ सम्यक् प्रव्रजनं संप्रव्रजनं ॥१३००॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

संथारगो दुविहो –

सेज्जासंथारो ऊ, परिसाडि अपरिसाडिमो होति ।
परिसाडि कारणम्मि, अणप्पिणणे मासो आणादी ॥१३०१॥

सव्वंगी सेज्जा, अड्ढातियहत्थो संथारो ।

अहवा – सेज्जा एव संथारगो सेज्जासंथारगो । एक्केक्को दुविहो – परिसाडी अपरिसाडी । उडुबद्धे परिसाडी कारणे घेप्पति, तं मासकप्पे पुण्णे अणप्पेतुं वयंतस्स मासलहुं आणादयो दोसा ॥१३०१॥

इमे य अन्ने दोसा –

सोच्चा गत त्ति लहुगा, अप्पत्तिय गुरुग जं च वोच्छेदो ।
कप्पट्ठखेलणे णयण डहण लहु लहुग जे जं जत्थ ॥१३०२॥

सुतं तेण संथारगसामिणा जहा ते संजता संथारगं अणप्पिणितुं गता, चउलहुगा पच्छित्तं । परियणो य से भणति – "किं च संजताण दिण्णेण" । सो भणति – "अणप्पिते वि अणुग्गहो अम्हं" । एवं पत्तिए वि चउलहुं । अह अप्पत्तियं करेति । तणा मे सुण्णा हारिता विणासिता वा चउगुरुगं । जं च वोच्छेदं करेति तस्स वा अण्णस्स वा साहुस्स, तद्दव्वस्स वा अण्णदव्वस्स वा, एत्थ वि चउगुरुगं ।

अहवा – तम्मि संथारये सुण्णे कप्पट्ठाणि खेलंति, मासलहुं । अह तुयट्टंति मासगुरुं । अह अण्णतो णयंति मासलहुं । अह दहंति चउलहुं । डज्झंतेसु य – अण्णपाणजातिविराहणा, जातिणिप्फण्णं च ॥१३०२॥

कप्पट्ठ-खेल्लण-तुयट्टणे य लहुओ य होति गुरुगा य ।
इत्थी-पुरिस-तुयट्टे, लहुगा गुरुगा य अणायारे ॥१३०३॥

पुव्वद्धं गतार्थम् । तम्मि सुण्णे संथारगे पुरिसित्थिसु तुयट्टेसु चउलहुं । अणायारमायरंतेसु चउगुरुगं । अहवा – सोउं गते इमं फरुसवयणं भणेज्ज ॥१३०३॥

दिज्जंते वि तदा णेच्छित्तणं अप्पेसु ति त्ति भणिऊणं ।
कतकज्जा जणभोगं, कातूण कहिं मणे जत्थ ॥१३०४॥

गहणकाले ण देज्जंतं पि दिज्जमाणं नेच्छिऊणं पुण्णे मासकप्पे "अप्पेसु" त्ति एवं भणित्ता णेऊण अप्पणो कते कज्जे सुण्णे जणभोगं करेऊण "कहिं" त्ति कं गामं नगरं वा "मण्णे" ति-पुनः शब्दो द्रष्टव्यः, यथेत्ति-निट्ठुरं, किं पुण गामं नगरं वा गतेत्यर्थः ॥१३०४॥

संथारगस्स गहणकाले इमा विही –

संथारेगमणेगे, भयणट्ठविधा तु होति कायव्वा ।
पुरिसे घर-संथारे, एगमणेगे य पत्तेगे ॥१३०५॥

संथारो घेप्पमाणो एगाणेगवयणे अट्ठविहभंगरयणा कायव्वा । सा इमेसु तिसु पदेसु पुरिस-घर-संथारयेसु । एगेण साधुणा – एगातो घरातो एगो संथारो । पढमो भंगो । एवं अट्ठ भंगा कातव्वा । "एगमणेगे" त्ति-एग-गणे अणेगगणेसु वा ॥१३०५॥ साधारणपत्तेगेसु खेत्तेसु एस विधी भणितो ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इमो अप्पिणंतेसु विधी "आणयणे" गाहा भणियव्वा –

आणयणे जा भयणा, सा भयणा होति अप्पिणंते वि ।
वोच्चत्थ मायसहिते, दोसा य अप्पिणंतम्मि ॥१३०६॥

आणयणे जा अट्ठिया भंगभयणा कता अप्पिणंते वि सा चेव अट्ठिया भंगभयणा कातव्वा । अह विवरीतं अप्पेति, मायं वा करेति; न वा अप्पेति वोच्छेदादयो दोसा भवंति । जे पढमा चत्तारि भंगा तेसु जह चेव गहणं तह चेव अप्पिणं ति । पंचमभंगे गहणकाले "अम्ह अण्णतरो अप्पेहिति" त्ति । एस विधी न कतो, एगप्पणे वोच्चत्थं भवति । छट्ठभंगे एगो साधू पच्चप्पिणिउं पिट्ठतो अवरो साहू चिंतेति "मज्भया वि तणकंबीओ तत्थेव नेयव्वा, तस्स च्चयाणं मज्झे छुभति । अयाणंतस्स, नेच्छति नेउं ति, एवं माया भवति । सत्तमभंगे ततियभंगे वा ओहारकंबीओ तणा वा एगघरे समप्पेत्तस्स अणप्पिणणं संभवति । जम्हा एते दोसा तम्हा सव्वेहिं सव्वे वीसुं अप्पेयत्तव्वा ॥१३०६॥

कारणे पुण विवरीतं अप्पेति, न अप्पेति वा ।

इमे य ते कारणा –

वितियपदज्झामिते वा देसुट्ठाणे व बोधिगादीसु ।
अद्धाणसीसए वा, सत्थो व्व पधावितो तुरितं ॥१३०७॥

सो संथारगो ज्झामितो, देसुट्ठाणेसु वा सो संथारगसामी कतो वि गतो, बोहियभए संथारगसामी साधू वा नट्ठा, अद्धाणसीसए वा सत्थो लद्धो तुरितं पहावितो, जाव ऽप्पिणंति ताव सत्थातो फिट्टंति ताव अण्णो दुल्लभो सत्थो ॥१३०७॥

एतेहिं कारणेहिं, वच्चंते को वि तस्स तु णिवेदे ।
अप्पाहेंति सागारियादि असतऽण्णसाधूणं ॥१३०८॥

न पच्चप्पिणंति, विकरणं पुण करेंति । अण्णे साधू सत्थेण वयंति । एगो साधु तस्सेव निवेदयति · सत्थो तुरितं पधावितो, तेण न आनीओ, तुब्भे इयं संथारयं आणेज्जह । अण्णे वा साधू भणंति – तुब्भे इम संथारयं अमुगे कुले अप्पेज्जह । असति साहूण सागारियादिण अप्पाहेंति । इमं संथारयं अप्पेज्जाह, णिवेदण वा करेज्जह । एस तणकंबीणं विधी भणिता ॥१३०८॥

पयेय गमो णियमा, फलगाण वि होति आणुपुव्वीए ।
चतुरो लहुया माया अ णत्थि एतत्थ णाणत्तं ॥१३०९॥

फलगेसु सव्वो एसेव विधी, "णवरं" - विसेसो, पच्छित्तं चउलहुगा । माया य णत्थि - जहा तणेः कंबीसु वा अण्णे तणा कंबीओ वा पक्खिवंति तहा फलगाण णत्थि पक्खेवो ॥१३०९॥

जे भिक्खू सागारियं संतियं सेज्जा-संथारयं आयाए अविगरणं -
कट्टु अणप्पिणित्ता संपव्वयति; संपव्वयंतं वा सातिज्जति ॥सू०५७

अविकरणं णाम जं संजतेण कयं, तणाण वा संथरणं, कंबीण वा बंधो, फलगस्स वा ठवणं । ए अफोडित्ता अणप्पिणित्ता वयति मासलहुं ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इमा णिज्जुत्ती:–

परिसाडिमपरिसाडि य, सागारिय संतियं तु संथारं ।
अविकरणं कातूणं, दूतिज्जंतम्मि आणादी ॥१३१०॥

दोसु सिसिर-गिम्हासु रीइज्जति, दूइज्जति वा, दोसु वा पदेसु रीइज्जति ॥१३१०॥

अविकरणे इमे दोसा –

किड्ड तुयट्ट अणाचार णयणे डहणे य होति तह चेव ।
विगरण पासुड्ढं वा, फलगतणेसुं तु साहरणं ॥१३११॥

कप्पट्ठगाणं किड्डुणं, तुअट्टणं, थीपुरिसाणं तुयट्टणे अणायारसेवणं वा, अण्णत्थ वा णयणं, डहणं वा, एतेसु चेव जे दोसा पच्छित्तं च पूर्ववत् । फलगस्स विकरणं पासल्लियं करेति, उड्ढं वा करेइ. तणेसु साहरणं, कंबीसु बंधण छोडणं वा ॥१३११॥

किं च –

पुंजा पासा गहितं, तु जं जहिं तं तहिं ठवेतव्वं ।
फलगं जुत्तो गहितं, वाघाते विकरणं कुज्जा ॥१३१२॥

जे तणा पुंजातो गहिता ते पुंजे ठवेयव्वा । जे पासातो गहिता ते तहिं ठवेयव्वा । जं वा जत्तो गहियं तं तहियं ठवेयव्वं ति । कंबीमादी फलगं जतो पदेसातो गहितं तं तहिं ठवेयव्वं । मासकप्पे वा-पुण्णे अन्तरा वाघाते उप्पण्णे णियमा विकरणं कायव्वं, ण करेज्जा वि विकरणं, ण य पावेज्जा पच्छित्तं ॥१३१२॥

बितियपदमधासंथड देसुट्ठाणे व बोहिगादीसु ।
अद्धाणसीसए वा, सत्थो व पधावितो तुरितं ॥१३१३॥

अहासंथडं नाम णिप्पकंपं पट्टादि । शेषं पूर्ववत् ॥१३१३॥

जे भिक्खू पाडिहारियं वा सागारिय-संतियं वा सेज्जा-संथारयं विप्पणट्ठं ण गवेसति, ण गवेसंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५८॥

वि इति विधीए, प इति प्रकारेण, रक्खिज्जमाणो णट्ठो विप्पणट्ठो । शेषं पूर्ववत् ।

संथारविप्पणासे, वसधीपालस्स मग्गणा होति ।
सुण्णे[1] बाल[2]-गिलाणे[3], अव्वत्ता[4]रोवणा भणिता ॥१३१४॥

सुत्ते संथारविप्पणासो दिट्ठो । सो पुण णासो अरक्खिते संभवति, कुरक्खिते वा । अतो वसही-पालगस्स मग्गणा कज्जति, सुण्णं वा वसहिं करेति, बालं वा वसहीपालं ठवेति ॥१३१४॥

एतेसु पदेसु गणाधिपतिणो आरोवणा भणति –

पढमम्मि य चतुलहुगा, सेसाणं मासिगं तु णाणत्तं ।
दोहि गुरू एगेणं, चउत्थपदे दोहि वी लहुओ ॥१३१५॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पढमं सुण्णपदं, तत्थ चउलहुगा। सेसेसु तिसु बाल-गिलाण-अव्वत्तेसु मासलहुं। "णाणत्त" मिति-विसेसितं तवकालेहिं चउलहुअं, तवकालेहिं गुरुगं, बाले तवगुरुं, गिलाणे कालगुरुं, अव्वत्ते दोहिं वि लहुं ॥१३१५॥

सुण्णे इमे दोसा -

मिच्छत्त-वडुय-चारण-भडे य मरणं च तिरियमणुयाणं।
आदेस-वाल-णिक्केयणे य सुण्णे भवे दोसा ॥१३१६॥

मिच्छत्तदारस्स वक्खाणं -

सुण्णं वसही करेंताणं सेज्जायरो मिच्छत्तं वएज्ज ॥१३१६॥

सोच्चाऽपत्तिमपत्तिय, अकतण्णु अदक्खिणा दुविधछेदो।
भतिभरागमधाडण, गरहा ण लब्भंति वऽण्णत्थ ॥१३१७॥

ते साहू सुण्णं वसहिं काउं गया सव्वभंडगमादाय। सागारिएणं सुण्णा वसही दिट्ठा-सो पुच्छति कहिं गता साहू ? अण्णेहिं से कहियं - ण याणामो।

अहवा भणंति - सव्वभंडगमाताय गता। ते संतिए सोच्चा जति तस्सऽप्पत्तियं अप्पीतिमुप्पण्णा तो साहूण चउलहुं। अह से अप्पत्तियं जातं, अप्पत्तिओ य भणाति - अहो! अकयण्णू साधवो, अदक्खिण्णा, णिण्णेहा, अणापुच्छाए गया, लोगोवयारं पि ण जाणंति, लोगोवयारविरहितेसु वा कुतो धम्मो। एवं अप्पत्तिए चउगुरुं। दुविध-वोच्छेदं वा करेज्जा। तस्स वा साहुस्स। अण्णस्स वा तद्दव्वस्स वा अन्नदव्वस्स वा। एवं सो रुट्ठो। ते य भिक्खायरियाय गता भत्तपाणभरियभायणा आगता। कसातितो धाडेति। दिवसतो चउलहुं। ते य भत्तपाणोवगरणभारक्कंता पगलंते य अन्नवसहिं मग्गमाणा गाढं परिताविज्जंति। तण्णिप्फण्णं च पच्छित्तं। गरहिज्जंते य लोगेण - णूणं तुब्भे असाधुकिरियट्ठिता, तेण धाडिया, अण्णत्थ वि ठागं ण लभंति। ते य वसहिमलभमाणा अण्णं खेत्तं वएज्ज। एवं मासकप्पे भेदो भवति ॥१३१७॥

जतो भण्णति -

भेदो य मासकप्पे, जमलंभे विहाति निग्गतावण्णे।
बहि-भुत्त णिसागमणे, गरह-विणासा य सविसेसा ॥१३१८॥

मासकप्पे भेदे य जा विराहणा, जं च ते अद्धाणे खुहपिवासासीउण्ह वा सश्रमं वसहिमलभंता पावंति तण्णिप्फण्णं। जं च सो उ दुरूहो विहाति णिग्गयाणं अण्णसाहूणं ण देज्ज वसहिं। वसहि-अभावे य जं च ते पाविहिंति सावयतेणाति। एतेहिंतो तण्णिप्फण्णं। एते भिक्खं हिंडिउं आगताण दोसा। अध बाहिं भोत्तुं सुत्तपोरिसिं काउं वियाले आगता ण लभंति तो चउगुरुगं। राओ धाडिता राओ चेव अण्णं वसहिं मग्गमाणा सविसेसं गरहं पाविंति। राओ य अडंता तेण-सावय-वाल-कंटक-आरक्खिएहिं तो सविसेसं विणासं पावेंति।

अहवा - सो सम्मत्तं पडिवण्णो अणापुच्छाए णिग्गता। "आलोइय" त्ति काउं मिच्छत्तं वएज्जा ॥१३१८॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इदाणिं "[1]वड्डुय" त्ति दारं –

सुण्णं दट्ठुं वडुगा, ओभासण ठाह जति गता समणा ।
आगमपवेसऽसंखड सागरि दिण्णं मए दियाणं ॥१३१९॥

सुण्णं वसहिं दट्ठुं वडुएहिं सागारिओ ओभट्ठो । सो सागारिओ भणाति – समणा ठिता ? ते भणंति – गता, सुण्णा वसही चिट्ठति । सो भणाति – ठाह, जति गता साहू । ते एवं ठिता साहू य आगया वसहिं पविसंता बडुएहिं णिरुद्धा । एवं तेसिं असंखडं नायं । साहू भणंति – "अम्ह दिण्णा" । इतरे भणंति – "अम्ह दिण्णा" । साहू सागारिसमीवे गता भणति – वडुएहिं णिरुद्धा वसही । सो भणति – तुब्भे वसहिं सुण्णं काउं णिग्गया, अतो मए सुण्ण त्ति काउं वड्डुयाण दत्ता ॥१३१९॥

सेज्जायरो भणति –

संभिच्चेणं व अच्छह, अलियं न करे महं तु अप्पाणं ।
उड्डंचग अधिकरणं, उभयपदोसं च णिच्छूढा ॥१३२०॥

संभिच्चेण अच्छह एगट्ठा चेव, अलियवादी अप्पाणं अहं ण करेमि, अतो अहं ण धाडेमि । तत्थ संभिच्चेणं अच्छंताणं सज्झाय - पडिलेहण-पच्चक्खाण - वंदणादिसु उड्डंचये करेज्ज । कुट्टियाओ करेज्ज । तत्थ कोइ असहणसाहू तेहिं सद्धिं अधिकरणं करेज्ज । ते साहूहिं वा णिच्छूढा, अहाभद्दसेज्जायरेण वा णिच्छूढा, साहुस्स सेज्जायरस्स वा उभयस्स वा पदोसं गच्छेज्ज ॥१३२०॥

सागारिसंजताणं, णिच्छूढा तेण अगणिमादीसु ।
जं काहिंति पउट्ठा, सुण्णं करेंते तमावज्जे ॥१३२१॥

पदुट्ठो [2]आउसेज्ज वा हणेज्ज वा गिहाति वा डहेज्ज वा हरेज्ज वा किंचि । अण्णं च असंजएहिं सद्धिं वसंताणं आउज्जोवण वणियादिदोसा भवंति ।

साहूहिं सेज्जातरेण वा णिच्छूढा पदोसं गता, जहा वड्डुया तेणागणिमादिदोसे करेज्जा । एत्थ उवकरणववहारादिसु जं पच्छित्तं तं सव्वं, सुण्णं करेंतो पावति ॥१३२१॥

"[3]चारण-भडे" दो दारे एगगाहाए वक्खाणेति –

एमेव चारणभडे, चारण उड्डंचगा तु अधियतरो ।
णिच्छूढा व पदोसं, तेणागणिमादि जध बहुगा ॥१३२२॥

"चार - भडे" त्ति दो दारा गता ॥१३२२॥

"इदाणिं मरणं तिरियमणुयाणं [4]आतेसा य" एते तिण्णि दारा एगट्ठे भणाति –

छड्डणे काउड्डाहो, णासारिसा सुत्तऽवण्णे अच्छंते ।
इति उभयमरणदोसा, आदेस जधा वडुयमादी ॥१३२३॥

सुण्णवसहीए तिरिक्खजोणिया गोणसुणगमादी, मणुओ रंको छेवडितो वा, पविसित्ता मरेज्ज । तत्थ जति असंजतेगं छड्डावेंति तो असंजतो कायाण उवरिं छड्डेति छक्कायाण विराहणा ।

१ गा० १३१६ । २ आक्रोशयेत् । ३ गा० १३१६ । ४ गा० १३१६ ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अहवा – संजमभीतो असंजएण ण छड्डावेति, णेच्छति वा असंजतो, ततो अप्पणा चेव छड्डेति। "गरहिय" त्ति काउं उड्डाहो भवति। अह एसि दोसाणं भीया ण परेण अप्पणा वा छड्डेति तो तत्थ अच्छंते कुहियगंधेणं णामारिसाओ जायंति, तं चेव असज्झायं ति काउं सुत्तपोरिसिं अत्थ पोरिसिं वा ण करेंति, तण्णिप्फण्णं पच्छित्तं च भवति। लोगो य अवण्णं गेण्हति – असुइया सुसाणेऽच्छंति। तम्मि कलेवरे अच्छंते एते दोसा। इति उपप्रदर्शने। उभयं तिरियमणुग। आएसा णाम पाहुणगा। तेसु जे वड्डुय-चार-भडाग दोसा ते णिरवसेसा ॥१३२३॥ तिण्णि य दारा गता।

इदाणिं "[1]वाल-निक्केयणे" य दो दारा एगट्ठा वक्खाणेति –

अधिकरणमारणाणी, णितम्मि अच्छंते वाले आतवधो।
तिरियी य जहा वाले, मणुस्ससूयी य उड्डाहो ॥१३२४॥

वालो नाम अहिरूपं सप्पादि, सुण्णवसहीए पविसेज्ज। जति साधवो आगया तण्णिक्कालेंति तो अधिकरणं भवति। कहं ? हरितादिमज्झेण गच्छेज्जा, मंडुगादि वा डसेज्जा, मारिज्जंति वा णीणिज्जंतो लोगेण। अह एतद्दोसभीता ण छड्डेति तो अच्छंते वाले आयवधो, तेण डक्को साहू मरेज्ज, तण्णिप्फण्णं च पच्छित्तं भवति। णिक्केयणं दुविधं – तिरक्खीणं मणुस्सीण य। तिरक्खीण जहा वाले अधिकरणं मारणं आयवहो य। मणुस्सी जति सुण्णाए वसहीए पवेसेज्जा तो लोगो भणेज्ज – एतेहिं चेव तं जणियं, एतीए उड्डाहो। अह णीणिज्ज ति तो अधिकरणं, णिरणुकंप त्ति वा उड्डाहो, तं वा चेडरूवं, सा वा वातातवेहिं मरेज्जा।

अधवा – सा णीणिज्जंती पदुट्ठा [2]छोभ छुभेज्ज – जहा एतेहिं मे जणियं।

इदाणिं णिच्छुभंति त्ति उड्डाहो ॥१३२४॥

अधवा –

छड्डेऊण जति गता, उज्झमणुज्झंते होंति दोसा तु।
एवं ता सुण्णाए, वाले ठविंते इमे दोसा ॥१३२५॥

काती अणाहित्थी बंभचारिणी वा साधुवसहीए सुण्णाए पविसित्ता तं चेडरूवं छड्डेत्ता गया। ते साधवो णिरणुकंपा जइ उज्झंति तया सिगालादिसु वा खज्जति, वातातवेसु वा मरेज्जा। अणुज्झंतेसु तम्मि रुअंते असज्झाओ, लोगो वा भणेज्ज – कुतो एवं ? जइ वसहीए सुण्णाए पविसित्ता चेडरूवं छड्डित्तं, रायपुरिसा वा गवेसेज्ज। एवं वित्थारे उड्डाहोऽभओ भवे ॥१३२५॥ एते सुण्णवसही दोसा।

सुण्णवसहीदोसभीता बालं ठवेज्ज, तत्थिमे दोसा –

[1]बलि [2]धम्मकहा [3]किड्डा, [4]पमज्जणा [5]वरिसणा य [6]पाहुडिया।
खंधार अगणिभंगे, मालवतेणा व णातीया ॥१३२६॥ दा० गा०

अण्णवसतीए असती, देवकुलादी ठिता तु होज्जा हि।
बलिया वरिसादीणं, तारिसए संभवो होज्जा ॥१३२७॥

१ गा० १३१६। २ कलंकं।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तत्थ पढमं दारं बलि त्ति । उवदोसो सपाहुडियाए वसहीए ण ठायव्वं, ते य साहुणो कारणेण देवकुलमादिसु सपाहुडियाए वसहीए ठिता होज्जा, ते पुण बलिकारया सभावेण वएज्जा, [1]कयगेण वा ॥१३२७॥

तत्थ सभाविगेण भण्णति –

साभावियणिस्साए, व आगतो भंडगं अवहरंति ।
णीणाविंति व बाहिं, जा पविसति ता हरंतऽण्णे ॥१३२८॥

साभाविगा बली ण साहूण कारणा अवहारणिमित्तं आणिज्जति । अप्पणो देवयपूयणट्ठताए आगया, ण हरण बुद्धीए । तेसिं बलि करेमाणाणं विरहं पासित्ता हरणबुद्धी जाता, ताहे हरंति तण्णीस्साए । अण्णे पुण धुत्ता बलिकारगणीस्साए आगता। जता एते बलिं करिस्संति तदा सो बालो वसहीपालो बाहिं णिक्कलिस्सति बहुजणत्तणेण वा वक्खितो भविस्सति, तदा अम्हे अवहरिस्सामो त्ति अवहरंति । अवहरणट्ठताए भणंति ते धुत्ता – अरे खुड्डगा भंडगं तुब्भे बाहिं णीणितेल्लयं करेहि, मा विणस्सिहि । ताहे सो बालो तं कज्जं अयाणंतो बहुं च उवकरणं एक्कवाराए अचाएंतो थेवं थेवं घेत्तुं णीणेति, जाव अण्णस्स पविसति तावऽण्णं हरंति अण्णे धुत्ता ॥१३२८॥

एमेव कतिवियाए, णिच्छोढुं तं हरंति से उवधिं ।
बाहिं व तुमं चिट्ठसु, अवणे उवधिं च जा कुणिमो ॥१३२९॥

[2]केयवबली साहूवकरणस्स हरणट्ठताए जणाउले वक्खित्तस्स हरिस्सामो त्ति करेंति । जहा साभावियाए तण्णिस्सागता धुत्ता बालं णिच्छोढुं हरंति । एवं कइयवेण वि ।

अथवा – तं बालं भणंति – बाहिं तुमं चिट्ठसु, जाव अम्हे उवालेवणादि करेमो, उवकरण वा बाहिं णीणेहि ॥१३२९॥ बलि त्ति दारं गतं ।

इदाणिं "[3]धम्मकहे" त्ति दारं भण्णति –

कतगेण सभावेण व, कहा पमत्ते हरंति से अण्णे ।
किड्डइ तहेव रिक्खा, पास त्ति व तहेव किड्डदुगं ॥१३३०॥

धम्मं पि कयगेण वा सभावेण वा सुणेज्ज । साभावियधम्म-सवणे पमत्तस्स धम्मकहाए अण्णे से उवकरणं हरंति । कइतव - धम्मसवणे अण्णे पुच्छति, अण्णे हरंति । धम्मकहे त्ति दारं गतं ।

"किड्डु" त्ति दारं भण्णति – तहेव "किड्डुदुग" त्ति । जहा बलीए सभावेण कइतवेण वा एंति तहा किड्डाणिमित्तमवि तत्थ सो बालो सयं वा किड्डेज्ज, तेहिं वा भणिओ किड्डेज्ज । रिक्ख त्ति रेखा को कतिवारे जिप्पति, सयं रेहा कड्ढति, तेहिं वा भणिओ कड्ढति ।

अधवा – बालत्तणेण ते किड्डंते पासंतो अच्छति । एवं वक्खित्तस्स अवहरंति ते भुयंगा ॥१३३०॥ किड्डु त्ति दारं गतं ।

इदाणिं "[4]पमज्जणा वरिसण" त्ति दो दारा –

जो चेव बलियगमो, पमज्जणा वरिसणे वि सो चेव ।
पाहुडियं वा गिण्हसु, पडिसाडणियं व जा कुणिमो ॥१३३१॥

---

१ कैतवेन वा । २ कैतवबली । ३ गा० १३२६ । ४ गा० १३२६ ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जो बलीए गमो प्रकार: स । एवसद्दो-अवधारणे, सम्मज्जणं, प्रमार्जनं, आवरिसणं पाणिएणं उप्फोसणं, इह्वावि स एव प्रकारार्थ: ।

इदाणिं "पाहुडि" त्ति दारं भण्णति – पच्छद्धं । पाहुडिय त्ति भिक्खा-बलि-कूर-परिसाडणं वा। तं पि दुविधं – कईतवेण वा, सब्भातेण वा । कोति भणेज्ज – एहि घरे, भिक्खं गेण्हाहि ।

अहवा भणेज्ज – जावच्चणियं करेमो ताव दुवारे चिट्ठस । एवं भिक्खागयस्स बाहिरे ठियस्स वा अवहरंति ।।१३३१।। "पाहुडिय" त्ति दारं गतं ।

इदाणि "[1]खंधावार-गणि" त्ति दो दारा भण्णंति –

खंधारभया णासति, सो वा एति त्ति कतितवे णासे ।
अगणिभया व पलायति, णस्सुसु अगणी व एसेति ।।१३३२।।

खंधारे पत्ते बालत्तणेण तब्भया णासति, णासंतो हीरेज्जा । सुण्णवसहीए वा से उवकरणं हीरेज्ज । कयगेण सभावेण वा भणेज्ज सो वा एति त्ति, स इति खंधावार इत्यर्थ: । एवं स्वभावेन, कृतकेन वा तद् भयान्नस्यमानस्य आत्मोपकरणापहारसंभव इत्यर्थ: । साभावियअगणीते वि तब्भया णासति, कोति कइतवेण भणेज्ज – डहमाणो अगणीए से इज्जसु, गच्छेत्यर्थ: । एवं नष्टे उवकरणं अवहीरति ।।१३३५।।

इमे य अण्णे दोसा भवंति –

उवधी लोभ-भया वा, ण णीति ण य तत्थ किंचि णीणेति ।
गुत्तो व सयं डज्झति, उवधी य विणा तु जा हाणी ।।१३३३।।

उवहीए लुद्धो आयरियादि वा जुरीहिति तब्भया ण णीति । ण य बालत्तणेण किंचि उवकरणं णीणेति, गुत्तो प्रविष्ट: उवकरणणिमित्तं अगणिभया वा पविट्ठो सयं डज्झति, उवहिं विणा जा परिहाणी तण्णिप्फण्णं । अगणि त्ति दारं गतं ।।१३३३।।

डंडियखोभादीओ, भंगो अधवा वि बोहिगादिभया ।
तत्थ वि हीरेज्ज सयं, उवधी वा तेण जं तु विणा ।।१३३४।।

[2]भंगशब्द: खंधावार-अगणीसु योज्य: ।

अहवा – "भंगे" त्ति दंडिते मते भंगो भवति ।

अहवा – बोहिगभये भंगो भवेज्ज । एत्थ वि सयं हीरेज्ज उवही वा । तेण विणा जं पावति तण्णिप्फण्णं ।।१३३४।।

इदाणिं "[3]मालवतेणे" त्ति दारं –

मालवतेणा पडिता, इतरे वा णासते जणेण समं ।
ण गेण्हति सारुवधी, तप्पडिबद्धो व हीरेज्जा ।।१३३५।।

मालवगो पव्वतो, तस्सुवरिं विसमंते तेणया वसंति, ते मालवतेणा । तेसु पडिएसु णासते जणेण समं इतरे वि त्ति । कइतवेण कोई भणेति मालवतेणा पडिया । सो बालो णासंतो ण गेण्हति सारुवहिं, तम्मि वा उवकरणे पडिबद्धो स एव बालो हीरेज्ज ।।१३३५।। मालवतेणे त्ति दारं गतं ।

१ गा० १३२६ । २ गा० १३२६ । ३ गा० १३२६ ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इदाणिं "[1]णाइ" त्ति दारं। तं पि सभावेण कतितवेण वा –

सण्णाततेहि णीते, एंति व णीतं ति णट्ठे जं तुवधिं।
केहि णीयंति कइतवे, कहिए अण्णस्स सो कधए ॥१३३६॥

सण्णायएहिं आगएहिं वसहीए एक्कतो दिट्ठो णीतो य। तम्मि णीते अण्णा उवहिं हरेज्ज, तण्णिप्फण्णं।

अहवा – अण्णेण ते तस्स [2]णीताएंता दिट्ठा, तेण से कहियं – णीया एए एंति, आगया वा, ताहे सो भया दलाएज्ज। एवं ता सभावेणं। अह कइतवेण केइ जणा दो धुत्ता भरिता। ताण एक्को चेल्लय-समीवं गतो, पुच्छति – तुज्झ किं णामं? तेण से कहियं – अमुगं ति। काह वा तुमं जाओ उप्पण्णो? माउपिउभगिणिमाउगाणं णाम गोयाति वयो वण्णो ॥१३३६॥

चिंधेहिं आगमेत्तुं, सो वि य साहति से तुह णिया पत्ता।
णट्ठे उवधि गहणं, तेहिं वहि पेसितो हरती ॥१३३७॥

चिंधेहिं आगमेउं अण्णस्स साहति। सो खुड्डुगसमीवं गतो भणइ – अहो इंदसम्म! किं ते वट्टति? खुड्डगो भणाति – मज्झ णामं कहं जाणासि? सो भणति – ण तुज्झ केवलं, सव्वस्स वि ते पिउमादियस्स सव्वस्स सयणस्स जाणामि। सव्वम्मि कहिए संवदिए य धुत्तो भणाति – ते तुज्झ सयणा आगता। तव कएण, अमुगत्थ मए दिट्ठ त्ति, इदाणिं मुहुत्तमेत्तेण पविसंति। ताहे सो पलायति। ते य उवहिं हरंति।

अधवा भणेज्जा – अहं ते तेहि व तावतो पेसितो, सो वि तस्स विसंभेज्जा। वीसत्थस्स य उवहिं हरेज्ज।

अहवा सो भणेज्जा – अहं तव कएण पेसिओ, एहि गच्छामो। ताहे सो पलाएज्ज। सो वि से उवधिं हरेज्ज। अह इच्छइ खुड्डगो गंतुं तं चेव हरति ॥१३३७॥

बलादियाण तिण्ह वि एते दारा संभवति। आह –

एते पदे ण रक्खति, बालगिलाणे तधेव अव्वत्ते।
णिद्दा-कधा-पमत्ते, वत्ते वि हुजे भवे भिक्खू ॥१३३८॥

एते सिच्छत्तादि मालवतेण-णाइ-पज्जवसाणा पदा ण रक्खति बालो, गिलाणो य [3]बालगिलाणे, तहा अव्वत्तो वि ण रक्खति, एते पदे अज्ञत्वान्न रक्षति। जो पुण वत्तो भिक्खू सो णिद्दा-विकथा-प्रमादत्वात् ॥१३३८॥ बाल इति दारं गतं।

इदाणिं "[4]गिलाण अव्वत्त" दो दारा –

एमेव गिलाणे वी, सयकिड्डकधापलायणे मोत्तुं।
अव्वत्तो तु अगीतो, रक्खणकप्पे परोक्खो तु ॥१३३९॥

एवमेव त्ति जे बालदोसा ते गिलाणे वि। णवरं – तस्स जो आयसमुत्थो किड्डादोसो धम्म-कहादिदोसो वा, भया पलायणदोसा य, एते ण संभवंति। असमर्थत्वात्। गिलाणो वा परिभूतो त्ति काउं-वसहिपालो त्ति ण ठविज्जति। एगागी वा अच्छंतो कुवति। लोगो वा भणति – अहो णिरणुकंपा छड्डेउं गया,

---

१ गा० १३२६। २ नीना इति पाठान्तरम्। ३ जहा य बाल – गिलाणा प्र०। ४ गा० १३२३।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उड्डाहो भवति। अपत्थं वा अकप्पिअं वा एगागी अच्छंतो भुंजेज्जा। अव्वत्तो णाम अगीयत्थो, सो रक्खणकप्पे "परोक्खो" बलिधम्मकहादिसु साभावियकृतकेसु वा अज्ञ इत्यर्थः ॥१३३६॥

जम्हा एते दोसा बालाइयाणं –

तम्हा खलु अबाले, अगिलाणे वत्तमप्पमत्ते य।
कप्पति वसधीपाले, धितिमं तह वीरियसमत्थे ॥१३४०॥

तम्हेति कारणा, खलु इति अवधारणे, अबाल इति अष्टवर्ष-प्रतिषेधार्थं। असावपि अग्लान, अबालो वि य। वत्तो, दव्वतो वंजण जातो, भावओ गीतत्थो। सो वि अप्पमत्तो "कप्पति" त्ति। एरिसो वसहिपालो ठवेउं। किं "धितिमं" सो वसहिपालो तण्हाए वा छुहाए वा परिगतो ण सुण्णं वसहिं काउं भत्ताए वा पाणाए वा गच्छति, धितिबलसंपन्नो होउं। "तधे" ति यथा धृतिबलेन युक्तः तथा वीर्येणापि। वीरियस्स सामत्थं वीरियसामत्थं। समत्थसद्दो वा युवतवाचकः, वीर्ययुक्त इत्यर्थः। ण तेण पडिणीएहिं परब्भंतो वि जिणकप्पतिगो व उदासिण्णं भावेति, सव्वावतीसु वीरियसामत्थं दरिसेति ॥१३४०॥

ते पुण केत्तिया वसहिपाला ठवेयव्वा? उच्यते –

सइ लाभम्मि अणियता, पणगं जा ताव होतऽवोच्छित्ती।
जहण्णेण गुरु अच्छति, संदिट्ठो वा इमा जतणा ॥१३४१॥

सति भत्तपाणलंभे जावतिएहिं भिक्खाए गच्छंतेहिं गच्छस्स पज्जत्तं भवति, तावतिया अभिग्गहिय-अणभिग्गहीया वा गच्छंति। सेसा अणियया अच्छंति।

अहवा – पणगं वा आयरियो उवज्झाओ पवत्ती थेरो गणावच्छेतितो य एते पंच।

अहवा – आयरिओ उवज्झाओ थेरो खुड्डो सेहो एते पंच।

अहवा – जो सुतत्थाण अव्वोच्छित्तिं काहिनि सो आयरियस्स सहातो अच्छति। अह ण संथरति तो जहण्णेण गुरु चिट्ठति।

अहवा – आयरियस्स कुलादिकज्जेहिं णिग्गमगं होज्ज, ताहे जो आयरिएण संदिट्ठो – "मया णिग्गते अमुगस्स सव्वं आलोयणादि करेज्जह" सो वा अच्छतु। तस्स य वत्तस्स वसहिपालस्स [1]बलिधम्मकहा-दिएसु सभावकतगेसु पडुप्पण्णेसु इमा जयणा ॥१३४१॥

अप्पुव्वमतिहिकरणे, गाहा ण य अण्णभंडगं छिविमो।
भणति य अठायमाणे, जं णासति तुज्झ तं उवरिं ॥१३४२॥

अपुव्वा बलिकारया जे तम्मि देवकुले पडिचरगा, ते ण भवंति। एत्थ ऽट्ठमि-चउद्दसादिसु बली कज्जति। ते पुण अतिही ते चेव उवट्ठिता।

कतगेण तेणग त्ति णाऊणं गाहं भणति –

"ण वि लोणं लोणिज्जति, ण वि तुप्पिज्जति घतं व तेल्लं वा।
किह णाम लोगडंभग! वट्टम्मि ठविज्जते वट्टो" ॥
[1]अन्नं भंडेहि वणं, वणकुट्टग! जत्थ ते वहइ चंचू।
भंगुर वण वुग्गाहित!, इमे हु खदिरा वइरसारा ॥

---

१ बृहत्कल्पपीठिकाटीकायां पूर्वोक्त-चूर्णि-निर्दिष्ट-गाथया सह एषा अन्याऽपि गाथा समुपलभ्यते।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

एवं वुत्ते अम्हे णाय त्ति णासंति ।

अहवा – ते भणिज्ज – इमं उवहिं अवणेहि, अम्हे बलिं करेमो।

ताहे साहू भणति –

भिक्खादिगताणं अण्णसाहूणं अम्हे उवकरणं ण च्छिवामो ।

अह ते धुत्ता बोलेण हरिउकामा एक्के कोणादिसु सयमेव काउमारद्धो ।

ताहे साहू भणाति –

वसहीए बाहिं ठिच्चा अण्णजणं सुणावेंतो – अहो ! इमे केति मम बलामोडीए उवकरणं विलोवेंति ।

एवं च भणाति – "जं णासति तं तुज्झं उवरिं ॥१३४२॥

कारणे सपाहुडि-ठिता, वासासु करेंति एगमायोगं ।
साभावियदिट्ठे वा, भणंति जा सारवेमुवहिं ॥१३४३॥

सपाहुडियाए वसहीए ण ठातव्वं । ते पुण साहवो अण्ण-वसहि-अभावे कारणे ठिता । तत्थ वासासु उवकरणं एगमायोगं एगबंधणं करेंति । अह बलिकरा साभावियतिथीए करेंति । दिट्ठपुव्वा य बलिकारका । ताहे साधू भणति – जाव अम्हे एगकोणे सारवेमो उवहिं ताव ठिता होइ ॥१३४३॥

उव्वरगे कोणे वा, काऊण भणाति मा हु लेवाडे ।
बहुबल-पेल्लण ऽसारवणे, तहेव जं णासती तुज्झं ॥१३४४॥

सव्वोवगरणं उव्वरगे छुभंति । अह णत्थि उव्वरगो तो सव्वोवकरणं एगकोणे करेंति । अण्णत्थ वा काऊणं भणंति – सणियं उवलेवणं करेज्जाह, मा लेवाडेहिह । अह ते वहु बला य पेल्लंति, सारविज्जंतं ण पडिक्खंति । एत्थ वि तहेव भणाति – "जं णासति तं तुज्झं उवरिं" ॥१३४४॥

कतगेण, सभावेण वा धम्मसवणोवट्ठिते भणाति –

णत्थि कहालद्धी मे, दिट्ठो व भणाति दुक्खती किं चि ।
दाणादि असंकणिया, अभिक्खमुवओगकरणं तु ॥१३४५॥

णत्थि मे धम्मकहा लद्धी, ण वा जाणामि । ते भणंति – दिट्ठो पुरा अम्हेहिं कहेंतो धम्मं । ताहे भणाति – सिरं गलगो वा दुक्खति, विस्सरितं वा तं पुव्वाधीतं । अह ते दाणादिसड्ढा असंकणिया, तेसिं कहेंतो पुणो-पुणो उवकरणे उवउज्जति, मा तण्णिस्साए अण्णे अवहरेज्ज । आदिसद्दातो अभिगमसम्मत्तादिण घेप्पंति ॥१३४५॥

[1]किड्डाए इमा जयणा –

दट्ठुं पि णेण लज्भा, मा किड्डह मा हरेज्ज को तत्थ ।
सम्मज्जणाऽऽवरिसण, पाहुडिया चेव बलि सरेसा ॥१३४६॥

दट्ठुं पि अम्हं ण कप्पति, मा तुज्झे किड्डह, मा तुज्झं णिरसाए अम्हं उवकरणं हरेज्ज, [2]संमज्जणे [3]आवरिसाणे [4]पाहुडियाए य जहा बलीए जयणा तहेव दट्ठव्वा ॥१३४६॥

---

१ गा० १३२६ । २, ३, ४,– गा० १३२६ ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

भिक्खाणिमंतितो इमं भणाति –

अंतर णिमंतिओ वा, खंधारे कइतवे इमं भणति ।
किण्णे निरागसाणं, गुत्तिकरो काहिती राया ॥१३४७॥

भिक्खाणिमंतितो भणाति – अज्ज अम्हाण "अंतर" त्ति उववासो । कइतव-खंधावारे इमं भणति – "किम" ति परप्रश्ने, न इत्यात्मनिर्देशे, आकृष्यत इति आगसणं, तं च दविणं, तं जस्स णत्थि सो णिरागसो । गुत्तिं करोती ति गुत्तिकरो, गुत्ती रक्खा भणाति । स गुत्तिकरो राया अम्हं णिरागसाणं किं काहिति ॥१३४८॥

साभावित-खंधावारे इमं भणाति –

पभु-अणु-पभुणो आवेदणं तु पेल्लिंति जाव णीणेमि ।
तह वि हु अठायमाणे, पासे जं वा तरति णेतुं ॥१३४८॥

पभू णाम राया, अणुप्पभु जुवराया, सेणावतिमादिणो वा, आवेदणं तेसिं जाणावणं, अम्हं उवकरणं खंधावारिएहिं घेप्पति पेल्लंति वा ते वसहिं । रायरक्खिया य तवोवणवासिणो भवंति । तं रक्खह अम्हं । ताहे रायपुरिसेहिं जति रक्खावेंति तो लट्ठं । अध ण रक्खंति ण वा रायाणं विण्णवेउं अवगासो, ते य पेल्लंति, ताहे भणाति – जावोवकरणं णिप्फिडेमि ता होह । तह वि अट्ठायमाणेसु वसहिनिमित्तं व पेल्लंतेसु एगपस्से उवकरणं काउं रक्खति । अह ण सक्केति रक्खिउं [1]वमालीभूतं, ताहे कप्पं पत्थरेत्ता सव्वोकरणं बंधति, बंधेत्ता णीणेति । अह ण चएति णेउं बहुं उवकरणं, ताहे दोसु तिसु वा कप्पेसु बंधेत्ता कोल्लगपरंपरएण णीणेति । अह बहू मिलित्ता हरिउमारद्धा, ताहे जं तरति णेउं जं वा पासे आयत्तं ततियं णेति ॥१३४८॥

जत्थ [2]अग्गी साहाविओ तत्थ –

कोल्लपरंपरसंकलियाऽऽगासं णेति वातपडिलोमं ।
अच्चल्लीणे जलणे, अक्खादीसारभंडं तु ॥१३४९॥

कोल्लुगा णाम सिगाला । जहा ते पुत्तभंडाति [3]थामातो थामं संचारेंता एगं पुत्तभंडं थोवं भूमिं णेउं जत्थ तं च ते अपच्छिमे पेल्ले पलोएति तत्थ मुंचति, ताहे पच्छिमे सव्वे तत्थ संचारेउं पुणो अग्गतो संचारेति । एवं चेव ण अति दूरत्थे अग्गिम्मि कोल्लगपरंपरसंकलिया दिट्ठंतेणं, संकलियं वा दोरेण बद्धं जतो आगासं वा तप्पडिलोमं वा ततो णयति । अतीव अच्चत्थं लीणो अच्चल्लीणो आसण्णमित्यर्थः ।

अहवा – अतीव रूढो अच्चल्लूढो, एवं अतीव प्रज्वलितेत्यर्थः । प्रदीप्ते ज्वलने किं करोती ति जावतितं तरति तावतियं सारभंडं णीणाति ॥१३४९॥

जत्थ [1]मालवतेणा तत्थ –

असरीरतेणभंगे, जणो पलायते तु जं तरति णेतुं ।
ण वि धूमो ण वि बोलं, ण दुवति जणो कइतवेणं ॥१३५०॥

असरीरे त्ति जे माणुसं ण हरंति तारिसे तेणभयभंगे बहुजणे य पलायणे जावतियं उवकरणं नेउं

१ पुंजीभूतं । २ गा० १३२६ । ३ दे० स्थानान्तरम् ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तरति सक्कति तं णेति । कृतकाग्नौ कृतकचारेषु च पश्चार्धेण ण वि धूमो दीसति, ण या वि जणवोलः, ण य जणे द्रवति, शीघ्रं व्रजति । एवं कइतवेणं ति णायव्वं ॥१३५०॥

[२]सण्णायगद्दारे इमं भणति –

अण्ण-कुल-गोत्त-कहणं, पत्तेसु व भीतपुरिसो पेल्लेति ।

पुव्वं अभीतपुरिसो, भणाति लज्जाए ण गतो मि ॥१३५१॥

अण्णायमदिट्ठपुव्वेसु, अण्णं णामं अण्णं गोयं अण्णं कुलं सव्वमण्णमाइक्खति । जत्थ पुण ते चव संजयणिया पत्ता तत्थ जइ पुव्वं भीतपुरिसो आसी तो णं ते पेल्लेति, सुट्ठु धाडेति । एरिसं तुब्भेहिं तया ममावहारियं, इदाणिं से राउले बंधावेमि । अह पुव्वं भीत-पुरिसो भणाति – अहमवि पव्वज्जाए पराभग्गो, लज्जमाणो तुब्भे ण भणामि जहा उण्णिक्खमामि त्ति, लज्जमाणो य घरं ण गतोमि । तुब्भेहिं सुंदरं कतं जं मम अट्ठाए आगया, एत्ताहे गमिस्सामि ॥१३५१॥

जा ताव ठवेमि वए य, पत्ते कुड्डादिछेद संगारो ।

मा सिं हीरेज्जुवधिं, अच्छध जा णं णिवेदेमि ॥१३५२॥

किं तु अच्छह जा साहुणो एंति, जे मए वते गहिते तरसंतिते तेसिं चेव पडिणिक्खिवामि, वा सुण्णे तेसिं उवकरणहारो भविस्सति । एवं उवाएण धरेति जाव साहुणो पत्ता । अह ते अणागतेसु साहुसु बला णेउमारद्धा । ताहे भणाति – अंतो उवस्सयस्स जाव ते ठवेमि ताव ठिया होह, ताहे पविसित्ता बारं ठवेति । पत्तेसु साहुसु पडिस्सयसंधि छेत्ता संगारं च काउं णासति ।

अहवा भणेज्जा – मा तेसिं सुण्णे उवही हीरेज्ज, तुम्हे रक्खमाणा अच्छह, जाव अहं तेसिं णिवेएमि, एवं वोत्तु णिग्गच्छति । ते य साहू भणाति – मए अमुगे गवेसेज्जह ॥१३५२॥

खंधाराती णातुं, इतरे वि दुयं तहिं समहिल्लेंति ।

अप्पाहेति व सोधी, अमुगं कज्जं दुयं एह ॥१३५३॥

इतरे वि साधवो भिक्खाइगया । इतरे वि साधू खंधार-अगणि-तेणगमादी णाउं द्रुत शीघ्र तहिंति ईदृशे समुप्पण्णे वसहीए समभिलंति वसहिमागच्छंति ।

अहवा – समं ति तत्क्षणात् स्कन्धावारादप्रयोजने उत्पन्नमात्रे एवाभिमुखेन वसहिं गिलयंति । सो वि वसहिपालो भिक्खादिगताणं संदिसति – अमुगं कज्जं, द्रुतं शीघ्रमागच्छये ति ॥१३५३॥

चोदक आह –

संथारविप्पणासो, एवं खु ण विज्जए कधंचिदवि ।

णासे अविज्जमाणे, सुत्त अफलं सुण जधा सफलं ॥१३५४॥

संथारविप्पणासो एवं सुरक्खिते न विद्यते । एवं नासे अविद्यमाने जं वदह सुत्तं 'संथारविप्पणासो' त्ति तं प्रयुत्तं, अयुक्तत्वात् । सूत्रमफलं प्राप्तं । अथ चेत् सूत्रं सफलं तो जं वदह "एरिसो वसहिपालो" एत्र ण घटति । एवं ते उभयहा दोसा ।

---

१ गा० १३२६ । २ गा० १३२६ ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

एवमुक्ते आचार्याह – सुणह जहा सफलं ।।१३५४।।

पडिलेहणमाणयणे, अप्पिणाऽऽतावणणा बहिं रहिते ।
तेण-अगणीयाओ, संभम-भय-रट्ठ-उट्ठाणे ।।१३५५।।

पडिलेहणट्ठा बाहिं णीणितो साधू पाद-पुंछणस्स जाव ठितो जहिं सो संथारओ आसि तत्थ जाव बंधे मुयति ताव ओगासं जाव पविसति । "आणयणे" त्ति आणिज्जंतो अंतरा ठवितो वा आणेउं बाहिं, एवं अप्पिणणट्ठाए बाहिं ठविओ णिज्जंतो वा । अंतरा रायपुरिसेहिं रायबलेण वा । आतावणट्ठा बाहिं ठवितो बाहिं साहुरहिते शून्येत्यर्थः ।

अहवा – तेणगअगणीयाओ एगतरसंभमे अवहितो, बोहितभए वा रट्ठुट्ठाणे वा अवहितो।।१३५५।।

एत्तो एगतरेणं, कारणजातेण विप्पणट्ठं तु ।
जे भिक्खू ण गवेसति, सो पावति आणमादीणि ।।१३५६।।

जे एते पडिलेहणादि कारणा भणिता, एत्तो एगतरेणं संथार-विप्पणासो रक्खिज्जंते वि हवेज्जा । तमेवं संथारगं विप्पणट्ठं जति ण गवेसति तो तणेसु मासलहुं, कंबिफलगे य चउलहुं, आणादिणो य दोसा ।।१३५६।।

अप्पच्चओ अकित्ती, मग्गंते सुत्तअत्थपरिहाणी ।
वोच्छेद-धुआवणे वा, तेण विणा जे य दोसा तु ।।१३५७।।

पाडिहारिगे अणप्पिणिज्जमाणे अप्पच्चओ भवति, पच्चप्पिणीहामि त्ति अणप्पिणंते मुसावादिणो त्ति अकित्ती, अण्णं च संथारयं मग्गंताण सुत्तत्थाणं परिहाणी, वोच्छेदो तस्स वा अण्णस्स वा, धुआवणं णाम दवावणं, तेण वा संथारगेण विणा जा परिहाणी तण्णिप्फण्णं ।।१३५७।।

जम्हा एते दोसा –

तम्हा गवेसियव्वो, सव्वपयत्तेण जेण सो गहितो ।
अणुसट्ठी धम्मकहा, रायवल्लभो वा णिमित्तेणं ।।१३५८।।

तम्हा कारणा एतद्दोसपरिहरणत्थं सो संथारगो गवेसियव्वो सव्वपयत्तेण । णीते समाणे जेण सो गहितो सो मग्गेयव्वो । अह मग्गितो ण देति ताहे से अणुसट्ठि कुज्जा । तहावि अदेंते धम्मकहाए आउट्टेउं दावेयव्वो। तहावि अदेंते दमगे भेसणं कीरते। रायवल्लभो विज्जामंतचुण्णजोगादिएहिं वसीकरेउं दाविज्जति। णिमित्तेण वा तीतपडुप्पण्णागतेणं आउट्टेउं दाविज्जति ।।१३५८।।

इमा [1]अणुसट्ठी –

दिण्णो भवव्विधेण व, एस णारिहसि णे ण दातुं जे ।
अण्णो वि ताव देयो, देज्जाणमजाणताऽऽणीतं ।।१३५९।।

एस जो तुमे संथारओ गहितो एष भवद्विधेनैव साधूनां दत्तः, ततो तुमं एस णारिहसि दाउं, अण्णो वि ताव भवता संथारगो देयो, किं पुण जो अण्णदत्तो जाणंतेण अजाणंतेण वा आणीतो ।।१३५९।।

---

[1] गा० १३६२ ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मंतणिमित्तं पुण रायवल्लभे दमग भेसणमदेंते ।
धम्मकहा पुण दोसु वि, जति-अवहारो दुहा वि अहितो ॥१३६०॥

मंतणिमित्ता रायवल्लभे पयुंजंति । दमगे बीहावणं पयुंजंति । अदेंते धम्मकहा पुण दोसु वि दमग-रायवल्लभेसु पयुंजंति । जति त्ति यतयः ताण जं उवकरणं तस्स अवहारो इहलोगे परलोगे य दुहा वि अहितो भवति ॥१३६०॥

किं चान्यत् –

अण्णं पि ताव तेण्णं, इह परलोए य हारिणामहितं ।
परतो जाइतलद्धं, किं पुण मंन्नप्पहरणेसुं ॥१३६१॥

अण्णमिति पागतजणस्स वि जं अवहरिज्जति तं पि ताव इहलोगपरलोगेसु हरंताण अहितं भवति । किं पुण जतीहिं परतो जातितं लद्धं तं हरिज्जंतं । किमिति क्षेपे । पुनर्विशेषणे । मन्नुः क्रोधः प्रहरणा ऋषयः, तेसि हिरिज्जंत इहलोगे परलोगे अहितं भवति ॥१३६१॥

एवं पि मग्गिज्जतो जति ण देज्ज –

खंते व भूणते वा, भोइय-जामातुगे असति साहे ।
सिट्ठम्मी जं कुणती, सो मग्गण-दाण-ववहारो ॥१३६२॥

खंतेणं ति पितरिगहिते भूणगस्स साहिज्जति, वुच्चइ य जहा - दव्वावेहि । एवं भोइयजामाउगेण वा दव्वावेंति । भूणगगहिए वि खंतगादिएहिं भणावेंति । जो वि से वियत्तो जस्स वा वयणं णातिकमति तेण भणावेति दिज्जइ त्ति । "असति" त्ति सव्वहा अदेमाणे "साहे" ति महत्तरमादियाण साहिज्जति । तस्स कहिते जं सो करिस्सति तं प्रमाणं । एवं पणट्ठो संथारगो मग्गिज्जति । "दाणं" ति संथार-गवेसगं दिज्जति, ववहारो वा करणमिति क्रज्जति ॥१३६२॥

इदमेवार्थमाह –

भूणगगहिते खंतं, भणाति खंतगहिते य से पुत्तं ।
असति त्ति ण देमाणे, कुणति दवावेति व ण वा तू ॥१३६३॥

भूणगेण गहिते खंतगेण मग्गाविज्जति । खंतगेण गहिते पुत्तो भणाविज्जति । "असति" त्ति ण देमाणे व्याख्यातं । भोतियमादियाण कहिए जं ते कुणंति बंधणरुंधणादि, दवावेति वा, अतः परं ते प्रमाणं ॥१३६३॥

[1]साहे पदस्य व्याख्या –

भोइत-उत्तर-उत्तर, णेतव्वं जाव अपच्छिमो राया ।
दावण-विसज्जणं वा, दिट्ठमदिट्ठे इमे होंति ॥१३६४॥

भोइकस्स भोइको, तस्स वि जो अण्णो उत्तरोत्तरेण जाणाविज्जति जाव पच्छिमो राय त्ति । "दावणं" ति तेणगसमीवातो भोइगमादिणां संथारगं घेत्तुं देज्ज साधूण, "विसज्जणं" च त्ति ।

१ गा० ५४६ ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अहवा – ते भोइयमादिणो भणेज्ज – गच्छह भो तुब्भे। अम्हे तं संथारयं, संथारयसामिणो अप्पेहामो त्ति। एस विही दिट्ठे संथारगे, णाते वा तेणगे ॥१३६४॥

"उत्तरउत्तरे" त्ति अस्य व्याख्या -

खंतादिसिट्ठऽदेंते, महयर किच्चकर भोइए वा वि।
देसारक्खियऽमच्चे, करण णिवे मा गुरू दंडो ॥१३६५॥

भूणगादिगहिए खंतादिसिट्ठे ण देंते भोइगातीण साहिज्जति। भोइगोत्तरस्य व्याख्या – महत्तरो ग्रामकूटः ग्रामे महत्तर इत्यर्थः। "किच्चकरे" ति ग्राम-कृत्ये नियुक्तः, ग्रामव्यापृतक इत्यर्थः। तस्य स्वामी भोतिकः, देसारक्खिओ विषयारक्षकः महाबलाधिकृतेति। अमच्चो मंत्री। "कर" त्ति एषां पूर्वं निवेद्यते, न राज्ञः, मा गुरुदंडो भविष्यति ॥१३६५॥

"[1]दावण-विसज्जण" त्ति अस्य व्याख्या –

एते तु दवावेंति, अहवा भणंते स कस्स दातव्वो।
अमुगस्स त्ति व भणिते, वच्चह तस्सप्पिणिस्सामो ॥१३६६॥

एते त्ति भोत्तिगमादिकहिते जइ दवावेंति तो लट्ठं। अध भणेज्जा – संथारगो कस्स दायव्वो ? साहू भणति – अमुकस्स त्ति। ततो भोतिगातिणो भणंति – वच्चह तुब्भे, अम्हे तस्स संथारगसामिणो अप्पिणिस्सामो ॥१३६६॥

इदाणिं साधु-विधि –

जति सिं कज्जसमत्ती, वए ति इधरा तु घेत्तु संथारं।
दिट्ठे णाते चेवं, अदिट्ठऽणाते इमा जतणा ॥१३६७॥

जइ तेसिं साहूणं तेण संथारगेण कज्जं सम्मत्तं, पुण्णो य मासकप्पो, ततो ते भोइगादीहिं विसज्जिता वयंति। इहरहा तु संथारकज्जे असमत्ते, अपुण्णे मासकप्पे संथारगं तं चऽण्णं वा संथारगं घेत्तु भुंजंति। दिट्ठे संथारगे णाते वा संथारगतेणे एसा विधी भणिता। "अदिट्ठे इमं होइ" अदिट्ठे संथारगे अण्णाए वा तेणे इमा जयणा ॥१३६७॥

विज्जादीहि गवेसण, अदिट्ठे भोइयस्स व कहेंति।
जो भद्दओ गवेसति, पंते अणुसट्ठिमादीणि ॥१३६८॥

"[2]विज्जादीहिं गवेसण" त्ति अस्य व्याख्या –

आभोगिणीय पसिणेण, देवताए णिमित्तओ वा वि।
एवं णाते जतणा, सच्चिय खंतादि जा राया ॥१३६९॥

आभोगिणि त्ति जा विज्जा जविता माणसं परिच्छेदमुप्पादयति सा आभोगिणी। जति अत्थि तो ताए आभोइज्जति – जेण सो गहितो संथारो।

१ गा० १३६४। २ गा० १३६८।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अहवा – अंगुट्ठपसिणा किज्जति, सुविण-पसिणा वा । खवगो वा देवतं आउट्टेउं पुच्छति । अवितहणिमित्तेण वा जाणंति । एवं आभोगिणिमादीहिं णाते मग्गियव्वे जयणा । सा चेव "जा खंतादिग्गहिए भणिया भोतिगातादि जा अपच्छिमो राय" त्ति, णिवेयणे वि सच्चेव जयण त्ति ॥१३६९॥

"[1]अदिट्ठे भोइगस्स व कहेंती" ति अस्य व्याख्या –

विज्जादसती भोयादिकहण केण गहितो ण याणामो ।
दीहो हु रायहत्थो, भद्दो आमं गवेसति य ॥१३७०॥

अदिट्ठे त्ति आभोइणिविज्जादीण असति ण णज्जति ताहे भोइगादीण कहेंति – संथारगो णट्ठो गवेसह त्ति ।

भोइगो भणाति – केण गहिते ।

साहू भणंति – ण जाणामो ।

भोइगो भणति – अणज्जमाणं संथारगं कहिं गवेसामि ।

साहू भणंति – दीहो रायहत्थो ।

जो भोइतो भद्दगो भवति सो भणाति – सव्वं गवेसामि त्ति भणति, गवेसति य ॥१३७०॥

"[2]पंते अणुसट्ठि" त्ति अस्य व्याख्या –

जाणह जेण हडो सो, कत्थ व मग्गामि णं अजाणंतो ।
इति पंते अणुसट्ठी-धम्म-णिमित्तादिसु तहेव ॥१३७१॥

जो पंतो सो भणइ – जाणह जेण हडो ताहे मग्गामि । अहं पुण अजाणंतो कुतो मग्गंतो दुल्लुदुल्लेमि अदेशिकारथवत् इति । एवं भोतिगे भणंते पंते अणुसट्ठी धम्मकहा विज्जा मंता य प्रयोक्तव्यानि पूर्ववत् ॥१३७१॥

असती य भेसणं वा, भीता भोइतस्स व भएणं ।
साहित्थदारमूले, पडिणीए इमेहि य छुहेज्जा ॥१३७२॥

[3]असती य अस्य व्याख्या –

भोइयमादीणऽसती, अदवावेंते व भणंति जणपुरतो ।
बुज्झीहामु मकज्जे, किह लोगमताणि जाणंता ॥१३७३॥

भोतिगमादीणऽसतीते वा भोतिगमादीणऽदवावेंति ।

"[4]भेसणं व" त्ति अस्य व्याख्या –

साधू जणं पुरतो भणंति – अम्हे लोगस्स णट्ठं विणट्ठं पब्भट्ठं जाणामो । अप्पणो कहं ण जाणिस्सामो । जति अम्हं ण अप्पहे तं संथारगं तो जणपुरतो हत्थे घेत्तुं दवावेमो ॥१३७३॥

अह तुम्हे ण पत्तियह ता पेच्छह –

"[5]पेहुण तंदुल पच्चय, भीता साहंति भोइयस्सेते ।
साहत्थि साहरंति व, दोण्ह वि मा होतु पडिणीओ ॥१३७४॥

१ गा० १३६८ । २ गा० १३६८ । ३ गा० १३७२ । ४ गा० १३७२ । ५ मोरपुच्छ ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तंदुला दुविधा कज्जंति – [1]मोरगगिरमिस्सा इतरे य। ताहे साधुमज्झातो एगो साधू अपसरति। गिहिणो पणीयो – तुब्भं एगो किं चि गेण्हतु। गिहिते य आगतो साधू भणाति – पंतीए ठाह, ठितेसु सो णिमित्तिय साधू उदगं अंजलीए ददाति। जेण य तं दिट्ठं साहुणो घेप्पमाणं साधू तंदुले दाति। जेण गहितं तस्स गेहुणं तंदुलवतिमिस्से ददाति। इतरेसु सुद्धा। सो व णेमित्तियसाहू ते पेहुणे दट्ठुं भणाति – इमिणा गहियं ति। एवं पच्चए उप्पण्णे भीता चिंतेंति – भोतियस्स एते साहिस्संति, तो अम्हे साहूणं साधामो अप्पेमो वा।

अहवा – पडिणीतो "दोण्ह वि मा होउ" ॥१३७४॥

इमेसु पक्खिवति –

पुढवी आउक्काते, अगडवणस्सइ-तसेसु साहरई।
घेत्तूण व दातव्वो, अदिट्ठदड्ढे व दोच्चं पि ॥१३७५॥

कश्चित् प्रत्यनीकः साधुचर्याभिज्ञः सचित्तपुढवीए आउ-वणस्सति-तसेसु पक्खित्तं ण गेण्हहंति त्ति पक्खिवति, कूवे वा पक्खिवति। जति वि एतेसु पक्खित्तो तहावि एत्ततो घेत्तुं दायव्वो।

सव्वहा – "अदिट्ठे दड्ढेव दोच्चंपि" ति-कप्पस्स तइतोद्दे सेऽभिहितं।

इह खलु निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा पाडिहारिए वा सागारियसंतिए वा सेज्जासंथारए विप्पणसेज्जा से य अणुगवेसियव्वे, सिया से अ अणुगवेस्समाणे लभेज्जा तस्सेव अणुपदातव्वे सिया तं अणुगवेसमाणो नो लभेज्जा एव से कप्पती से दोच्चं पि उग्गहं अणुण्णवेत्ता परिहारं परहरित्तए। दोच्चोग्गहो त्ति ॥१३७५॥

चोदग आह – ण तस्स किं चि आइक्खिजति – जहा णट्ठो। गंतुं भणाति – "पुव्वं पडिहारितो दत्तो इदाणिं णिद्देज्जं देहि" त्ति एस दोच्चोग्गहो।

आयरिय आह –

दिट्ठंत पडिहणित्ता, जतणाए भद्दओ विसज्जेति।
मग्गंते जतणाए, उवधिऽग्गहणे ततो विवातो ॥१३७६॥

दिट्ठंत इति चोयगाभिप्रायं, तं पडिहणित्ता जयणाए संथारसामिणो कहिज्जंति। कहिते भद्दतो विसज्जेति – गच्छह ण भणामहं किं चि। अह पंतो संथारगं मग्गति ताहे अणुसट्ठादी कज्जति। अणिच्छंते जयणाए पंतोवधी दिज्जति, उवकरणं वा। अणिच्छते बला वा सारुवहिं गेण्हमाणे ततो णसमाणं (?) करणे विवाओ कज्जति ॥१३७६॥

अस्यैव गाथार्थस्य व्याख्या –

परवयणाऽऽउट्टेउं, संथारं देहि तं तु गुरु एवं।
आणेह भणति पंतो, तो णं दाहं ण वा दाहं ॥१३७७॥

"परः" चोदकः तस्य वचनं धम्मकहाए आउट्टेउं मग्गिज्जति – "तं संथारगं देहि" त्ति। "गुरु" आचार्य, स आह – एवं मायाते पणए तस्स चउगुरुअं पच्छित्तं।

---

१ मोरपुच्छ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अहवा – पणएंतस्स "गुरुं" त्ति पच्छित्तं । भद्दपंतदोसा य । पंतो आह – आणेह तं संथारगं ततो दाहामि वा ण वा ॥१३७७॥

पंतो भद्दो वा इमं चिंतेति –

दिज्जंतो वि ण गहितो, किं सुहसेज्जो इदाणिं संजातो !
हित णट्ठो वा णूणं, अथक्कजायाइ सूएमो ॥१३७८॥

पुव्वाणुण्णवणकाले दिज्जंतो वि तदा णिदेज्जो ण गहितो। किं सो संथारगो सुहसेज्जो जातो? जेण इदाणिं "अथक्क" त्ति अकाले याचयंति। सूचयामीति - जाने हितो णट्ठो व त्ति । णूणमिति वितर्कार्थे ॥१३७८॥

इमे भद्दे दोसा –

भद्दो पुण अग्गहणं, जाणंतो वा वि विप्परिणमेज्जा ।
किं फुडमेव ण सिस्सइ, इमे हु अण्णे हु संथारा ॥१३७९॥

अग्गहणमिति साहूसु अणादरो सो संथारगो हितो णट्ठो वा । इमे पुण मायाए पणएत्ति । एवं जाणंतो सम्मदंसणपव्वज्जाभिमुहो वा विप्परिणमेज्जा । विप्परिणओ य भणेज्ज – फुडमेवऽम्हं किण्ण कहिज्जति - जहा संथारगो णट्ठो हडो दड्ढो वा । किं मायाए जायह ? अण्णे वि बहू संथारगा अत्थि । "हु" शब्दः प्रत्यक्षावधारणे ॥१३७९॥

इति चोदगदिट्ठंतं, पडिहंतु कहिज्ज तेसि सब्भावो ।
भद्दो सो मम नट्ठो, मग्गामि ण तो पुणो दाहं ॥१३८०॥

इति उवदंसणे, किं उवदंसयति ? भद्दपंतदोसा ।

अहवा – इति शब्दो एवकारार्थो दट्ठव्वो । एवं भद्दपंतदोसदरिसणेण चोदगाभिप्पायं पडिहंतुं सब्भावो से जयणाए परिकहिज्जति । सब्भावकहणे भद्दगो भणाति – सो मम णट्ठो ण तुब्भं, अज्जप्पभिति मग्गामि, तं लद्धं "पुणो" पुणो तुब्भं दाहामि ॥१३८०॥

तुब्भे वि ताव गवेसह, अहं पि जाएमि गवेसए अन्नं ।
णट्ठो वि तुज्झ अणट्ठो, वयंति पंतेऽणुसट्ठादी ॥१३८१॥

तुब्भे वि तं संथारगं गवेसह, अहं पि जाएमि त्ति गवेषयामि इत्यर्थः । अह तुब्भं संथारएण पओयणं तुरियं तो जाव सो लब्भति ताव अण्णं मग्गह । जयणाए वि सब्भावे कहिते, पंतो भणाति – णट्ठे वि संथारगे तुब्भे मम अणट्ठो । जतो जाणह, ततो संथारगं मोल्लं वा देह। एवं पंते भणमाणे अणुसट्ठी - धम्मकहा- विज्जा - मंतादयो पओत्तव्वा ॥१३८१॥

अणुसट्ठादीहिं अट्ठंते विज्जादीहिं अभावे य मोल्लं मग्गंते इमा जयणा –

णत्थि ण मोल्लं उवधिं, देह मे तस्संतपंतदावणता ।
अण्णं व देंति फलगं, जतणाए विमग्गिउं तस्स ॥ १३८२॥

अहिरण्ण-सोवण्णिया समणं ति, णत्थि मे मोल्लं । अह सो भणाति – उवहिं देह, ताहे जेण सो संथारगो आणितो तेण साहुणा तस्स संतियं अंतं पंतं उवकरणं दाविज्जति । ण सारोवही दाविज्जति ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अहवा – अण्णं से फलगं जयणाए मग्गिउं देति । तस्स एत्थ जयणासुद्धं मग्गिज्जति, अलब्भमाणे पणगपरिहाणीए मग्गिउं देंति ॥१३८२॥

मुल्लोवकरणाभावे वा –

सव्वे वि तत्थ रुंभति, भद्दग मोल्लेण जाव अवरण्हो ।
एगं ठवेत्तु गमणं, सो वि य जावऽट्ठमं काउं ॥१३८३॥

कोइ रायवल्लभादि सव्वे साहुणो रुंभेज्जा, जति तत्थ कोइ अहाभद्दओ मोल्लेण मोएज्जा ताहे ण सो पडिसेहियव्वो । अह पडिसेहं करेति तो चउगुरुं पच्छित्तं । असति मोएमाणस्स जाव अवरण्हो ताव सव्वे सबालवुड्ढा अच्छंति । ताहे अमुंचमाणे एगं खमगादि ठवेऊण सेसा सव्वे गच्छंति । सो वि य एरिसो ठविज्जति - जो अट्ठमादि काउं समत्थो । अह असमत्थं ठवेंति तो चउगुरुगं भवति ॥१३८३॥

लद्धे तीरित कज्जं, तस्सेवाप्पेंति अहव भुंजंति ।
पभुलद्धे यऽसमत्ते, दोच्चोग्गहो तस्स मूलातो ॥१३८४॥

एवं गवेसंतेहिं लद्धे, जइ तेण तीरियं समत्तं कज्जं तो तस्सेव संथारयसामिणो अप्पेंति । अह कज्ज नो परिभुंजंति । अह संथारयसामिणा लद्धो, साहूण य कज्जं ण समत्तं, ताहे तस्स समीवातो - दोच्चोग्गहो भवति । एवं सुत्ते दोच्चोग्गहो ति भणियं ॥१३८४॥

णट्ठं पि कारणे अगवेसंतो अपच्छित्ती ।

ताणि इमाणि कारणाणि –

बिइयं पहुणिव्विसए, णट्ठुट्ठितसुण्णमतमणप्पज्झे ।
असहू य रायदुट्ठे बोहिय-भय सत्थ सीसे वा ॥१३८५॥

साहुस्स कज्जं सम्मत्तं, जो वि संथारगमामी एसो रायकुलेण णिव्विसतो कओ, विसयभंगे वा णट्ठो, दुब्भिक्खेण वा उट्ठितो उव्वसिउ त्ति वुत्तं भवति । "सुण्ण" त्ति सपुत्तदारो आमंतणादिसु गतो, मृतो वा, अणप्पज्झो वा जातो । एए गिहत्थकारणा । इमे संजयकारणा असहु साहू, रायदुट्ठो, बोहिय भये वा ण गवेसति, अद्धाण-सीसे वा सत्थवसगो गतो ॥१३८५॥

अज्झयणम्मि पकप्पे, बितिओद्देसम्मि जत्तिया सुत्ता ।
संथारगं पडुच्चा, ते परिसाडम्मि णिवतंति ॥१३८६॥

पकप्पज्झयणस्स बितिओद्देसके जत्तिया संथारगसुत्ता ते मासलहु अहिकारो त्ति काउं सव्वे परिसाडिसंथारगेसु णिवडंति । संथारगाहिकारे अपरिसाडी अत्थतो भणिया इति ॥१३८७॥

जे भिक्खू इत्तरियं पि उवहिं ण पडिलेहेति, ण पडिलेहेंतं वा सातिज्जति ।
तं सेवमाणे आवज्जति मासितं परिहारट्ठाणं उग्घातियं ॥सू०॥५८॥

भिक्खू पूर्ववत्. "इत्वरः" स्वल्पः, सो पुण जहण्णो मज्झिमो वा । "ण पडिलेहेति" चक्खुणा ण निरक्खति । पडिलेहणाए पप्फोडणपमज्जणाओ सूइताओ । मज्झिमे मासलहुं ति काउं एत्थ सुत्तणिवातो । अत्थओ ताव पडिलेहणा । इत्तरियगहणेण सव्वोवकरणगहणं कयं । अतो उवकरणं ताव वण्णेति पच्छा पडिलेहणा ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अतो उवकरणं भण्णति, सो दुविहो –

ओहे उवग्गहम्मि य, दुविधो उवधी समासतो होति ।
एक्केक्को वि य तिविधो, जहण्णश्रो मज्झिमुक्कोसो ॥१३८७॥

ओहोवधि त्ति ओघः संक्षेपः स्तोकः, लिंगकारकः । अवश्यं ग्राह्यः अवग्गहोवही, औत्पत्तिकं कारणमपेक्ष्य संजमोपकरणमिति गृह्यते । एस संखेवतो दुविधोवही । ओघिओ उवग्गहिओ य । तिविधो – जहण्णो मज्झिमो उक्कोसो ॥१३८७॥

ओहोवही गणणपमाणेण पमाणपमाणेण य जुत्तो भवति ।

इमं गणणप्पमाणं –

बारस चोद्दस पणुवीसओ य ओघोवधी मुणेयव्वो ।
जिणकप्पे थेराण य, अज्जाणं चेव कप्पम्मि ॥१३८८॥

बारसविहो चोद्दसविहो पणवीसविहो ओहोवही । एअं गणणप्पमाणं यथासंख्यं जिणाण थेराण अज्जाण य । कल्पशब्दो पि प्रत्येकं योज्यः ॥१३८८॥

ओघोवधी जिणाणं, थेराणोहे उवग्गहे चेव ।
ओहोवधिमज्जाणं, अवग्गहिओ य णातव्वो ॥१३८९॥

जिणाणं एगविहो ओहोवधी भवति । थेराणं अज्जाण य ओहियो उवग्गहिओ य दुविहो भवति ॥१३८९॥

जिणकप्पियनिरूपणार्थमाह –

जिणकप्पिया उ दुविधा, पाणीपाता पडिग्गहधरा य ।
पाउरणमपाउरणा, एक्केक्का ते भवे दुविधा ॥१३९०॥

जिणकप्पिया दुविधा भवंति – पाणिपात्रभोजिनः प्रतिग्रह-धारिणश्च । एकैका दुविधा दट्ठव्वा – सपाउरणा इयरे य ॥१३९०॥

जिणकप्पे उवहीविभागो इमो –

दुग-तिग-चउक्क-पणगं, णव दस एक्कारस एव बारसगं ।
एते अट्ठ विकप्पा, जिणकप्पे होंति उवहिस्स ॥१३९१॥

पाणिपडिगहियस्स पाउरणवज्जियस्स जहण्णोवही दुविधो – रयहरणं मुहपोत्तिया य । तस्सेव सपाउरणस्स एगकप्पग्गहणे तिविहो, दुकप्पग्गहणे चउव्विहो, तिकप्पग्गहणे पंचविहो । पडिग्गहधारिस्स अपाउरणस्स मुहपोत्तिय-रओहरण-पादणिज्जोगसहितो णवविहो जहण्णओ । तस्सेव एगकप्पग्गहणे दसविहो । दुकप्पग्गहणे एक्कारसविघो । तिकप्पग्गहणे बारसविधो । पच्छद्धं कंठं ॥१३९१॥

अहवा दुगं य णवगं, उवकरणे होंति दुण्णि तु विकप्पा ।
पाउरणं वज्जित्ताणं विसुद्धजिणकप्पियाणं तु ॥१३९२॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जे पावरणवज्जिया ते विसुद्धजिणकप्पिया भवंति। तेसिं दुविध एव उवही भवति। दुविधो णवविधो वा ॥१३९२॥

अविसुद्ध-जिणकप्पियाणं इमो –

पत्तं पत्ताबंधो, पायट्ठवणं च पादकेसरिया।
पडलाइं रयत्ताणं, च गोच्छओ पायणिज्जोगो ॥१३९३॥ कंठा

तिण्णेव य पच्छागा, रयहरणं चेव होति मुहपोत्ती।
एसो दुवालसविधो, उवधी जिणकप्पियाणं तु ॥१३९४॥ कंठा

जिणकप्पियाणं गणणप्पमाणमभिहितं। इदाणि थेराण –

एते चेव दुवालस, मत्तग अतिरंगचोलपट्टो उ।
एसो चोद्दसरूवो, उवधी पुण थेरकप्पम्मि ॥१३९५॥ कंठा

इदाणि अज्जाणं गणणप्पाणं भण्णति –

पत्तं पत्ताबंधो, पादट्ठवणं च पादकेसरिया।
पडलाइं रयत्तणं, च गोच्छउ पायणिज्जोगो ॥१३९६॥ कंठा

तिण्णेव य पच्छागा, रयहरणं चेव होति मुहपोत्ती।
तत्तो य मत्तओ खलु चोद्दसमे कमढए होति ॥१३९७॥

[1]उ(अ)ट्ठगमयं कंसभायणसंठाणसंठियं कमढयं चोलपट्टठाणे चोद्दसमं मत्तयं भवति ॥१३९७॥

अण्णो देहलग्गो ओहिओ इमो –

[1]उग्गहणंतगपट्टे, [2]अड्ढोरुग [3]चलणिया य [4]बोधव्वा।
[5]अब्भिंतर-[6]बाहि-णियंसणीय तह [7]कंचुए चेव ॥१३९८॥

ओकच्छिय-वेकच्छिय, संघाडी चेव खंधकरणी य।
ओघोवहिम्मि एते, अज्जाणं पण्णवीसं तु ॥१३९९॥

एतातो दो दार-गाहाओ ॥१३९९॥

इयं व्याख्या –

अह उग्गहणंतग णाव-संठियं गुज्झदेसरक्खट्ठा।
तं तु प्पमाणेणेक्कं, घणमसिणं देहमासज्ज ॥१४००॥

अहेत्यानन्तर्ये, द्वारोपन्याससमनन्तरं व्याख्याग्रन्थ इति, यथा चोलस्स पट्टगो चोलपट्टगो एवं उग्गहस्स णंतगो उग्गहणंतगो इति। उग्गह इति जोणिदुवारस्स सामइकी संज्ञा।

---

१ काष्ठमयं।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अहवा – [1]उदुयं उगिण्हतीति उग्गहणंतगं, तच्च तनु पर्यन्ते मध्ये विशालं नौवत्। ब्रह्मचर्यसंरक्षणार्थं गृह्यते। गणणाप्रमाणेनैकं। आर्तवबीजपातसंरक्षणार्थं घने वस्त्रे क्रियते, पुरुषसमानस्पर्शपरिहरणार्थं समानस्पर्शत्वाच्च मसिणे वस्त्रे क्रियते। प्रमाणतः स्त्रीशरीरापेक्ष्यम् ॥१४००॥

पट्टो वि होति एगो, देहपमाणेण सो तु भइयव्वो।
छादंतोग्गहणंतं, कडिबंधो मल्लकच्छा वा ॥१४०१॥

क्षुरिकापट्टिकावत् पट्टो दट्ठव्वो, अंते बीडगबद्धो, पुहुत्तेण चउरंगुलप्पमाणो समइरित्तो वा, दीहत्तणेण इत्थिकडिप्पमाणो, पिहुलकडीए दीहो, किसकडीए हस्सतरो, एतदेव भाज्जं, उग्गहणंतगस्स पुरपिट्ठतो दो वि तोडेच्छाएंतो कडीए बज्झति। तम्मि बद्धे मल्लकच्छावद् भवति ॥१४०१॥

अड्ढोरुगो तु ते दो वि, गेण्हितुं छायए कडीभागं।
जाणुप्पमाण चलणी, असिव्विता लंखियाए व ॥१४०२॥

अड्ढो-उरुकार्धं भजतीति अड्ढोरुगो। उपरिष्टा उग्गहणंतगं पट्टं च एते दो वि गिण्हिउ त्ति, सव्वं कडीभागं छादयति, मल्लचलणाकृति। नवरं – ऊरुगान्तरे ऊरुगेसु च योणिबंधः। चलणिगा वि एरिसा चेव, णवरं – अहे जाणुप्पमाणा योत्रकनिबद्धा, लंखिया-परिधानवत् ॥१४०२॥

अंतो णियंसणी पुण, लीणा कडि जाव अद्धजंघातो।
बाहिरगा जा खलुगो, कडी य दोरेण पडिबद्धा ॥१४०३॥

पुणो त्ति सरूवावधारणे पडिहरणकाले लीणा परिहरिज्जति, मा उब्भूता जणहासं भविस्सति। उवरिं कडीओ आरद्धा अहो जाव अद्धजंघा। बाहिरणियंसणी उवरि कडीओ आरद्धा जाव अहो [2]खलुगो, उवरिं कडीए दोरेण बज्झति ॥१४०३॥

अधो सरीरस्स षड्विधमुपकरणं, दवरकसप्तममाहितं।

अतः ऊर्ध्वं कायस्स –

छादेति अणुकुइए, गंडे पुण कंचुओ असिव्वियओ।
एमेव य उक्कच्छिय, सा णवरं दाहिणे पासे ॥१४०४॥

प्रच्छादयति "अणुकुए" त्ति अनुकुंचिता, अनुक्षिप्ता इत्यर्थः, गंड-इति स्तना।

अधवा – "अणुकुंचित" त्ति – अनुः स्वल्पं, कुंच स्पन्दने, कंचुकाभ्यन्तरे सप्रवीचारा, ण गाढमित्यर्थः। गाढ-परिहरणे प्रतिविभागविभक्ता जनहार्या भवन्ति, तस्मात् कंचुकस्य प्रसिढिलं परिधानमित्यर्थः। स च कंचुको दीहत्तणेण सहत्थेणं अड्ढाइज्जहत्थो, पुहुत्तेणं हत्थो, असिव्वितो, कापालिककंचुकवत्, उभओ कडिदेसे जोत्तयपडिबद्धो।

अहवा – प्रमाणं सरीरात् णिष्पादयितव्यमित्यर्थः। कच्छाए समीवं उवकच्छं, वकारलोपं काउं तं छादयतीति उक्कच्छिया पाययसीलीए उक्कच्छिया। एमेव य उक्कच्छियाए प्रमाणं वक्तव्यम्। सा य समचउरंसा। सहत्थेण दिवड्ढ हत्था। उरं दाहिणपासं पट्टिं च च्छादेंति परिहिज्जति। खंधे वामपासे य जोत्तपडिबद्धा भवति ॥१४०४॥

---

१ ऋतुकं। २ पैरके टखने तक।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

[1]वेकच्छिता तु पट्टो, कंचुगमुक्कच्छितं व छाडेंतो।
संघाडीतो चतुरो, तत्थ दुहत्था उवस्सयम्मि ॥१४०५॥

उक्कच्छियं प्रति विपरीते उवग्रत्थे परिहिज्जति, सा वंवाणुलोमा पाययसीलीए वेयच्छिया भण्णति, तु सद्दो उक्कच्छियसादृश्यावधारणे द्रष्टव्यः। वामपार्श्वपरिधानविशेषे वा द्रष्टव्यः। सो य वेयच्छियापट्टो कंचुयं उक्कच्छियं व च्छाएंतो परिहिज्जति। उवरि परिभोगाओ संघाडीओ चत्वार, पुहुत्तेण दुहत्थवित्थडा, दीहत्तणेण कप्पपमाणा चउहत्था वा। एवं सेसासु वि तिसु संघाडीएसु दीहत्तणं पहुत्तं पुण गंथसिद्धं ॥१४०५॥

परिभोगमाह –

दोण्णि तिहत्थायामा, भिक्खट्ठा एग एग उच्चारे।
ओसरणे चउहत्था, अणिसण्णपच्छादणमसिणा ॥१४०६॥

दो तिहत्थ वित्थडा जा ताण एक्का भिक्खट्ठा, एगा उच्चारे भवति। समोसरणं गच्छंती चउहत्थ पाउणति। तत्थ अणिसण्णाए खंधाओ आरद्धं जाव पाते वि पच्छातेति। वण्णसंजलणार्थं मसिणा। एता चउरो वि गणणप्पमाणेण एकं रूवं, युगपत् परिभोगाभावात् ॥१४०६॥

खंधकरणी चउहत्थवित्थरा वातविधुतरक्खट्ठा।
खुज्जकरणी वि कीरति, रूववतीए कडुह हेउं ॥१४०७॥

चउहत्थवित्थडा चउहत्थदीहा समचउरंसा पाउरणस्स वायविहुयरक्खणट्ठा चउफला खंधे कीरइ। सा चेव खंधकरणी, रूववतीए खुज्जकरणत्थं पट्ठिखंधखवगंतरे संवत्तियाए मसिणवत्थपट्टगेण उकच्छिवेयच्छिण्णि-वकाइयाए कडुभं कज्जति ॥१४०७॥

संघातिएतरो वा, सव्वो वेसा समासतो उवधी।
पासगबद्धमझुसिरे, जं वाऽऽइण्णं तयं णेयं ॥१४०८॥

सव्वो वेस उवही प्रमाणप्रमाणेन दुगादिसंघातितो एगगिओ वा भवति। पासगबंधो कीरति-पासगबंधत्ता वेव अज्झुसिरोवहि सिव्वणाहिं वा झुसिरे, पडिथिग्गलं वा न दायव्वं, [2]विरलिमादि वज्जितो वा अज्झुसिरो जं च दव्वखित्तकालभावेसु तं णेयं ग्राह्यमित्यर्थः ॥१४०८॥

ओहावहारणत्थं ओहावग्गहप्रदर्शनार्थं चाह –

जिणा बारसरूवाइं, थेरा चोद्दसरूविणो।
[1]ओहेण उवधिमिच्छंति, अओ उड्ढं उवग्गहो ॥१४०९॥

उक्कोसओ जिणाणं, चतुव्विहो मज्झिमो वि य तहेव।
जहण्णो चउव्विहो खलु, एत्तो वोच्छामि थेराणं ॥१४१०॥

पडिग्गहो तिण्णि य कप्पा एस चउव्विहो उक्कोसो। रयहरणं पडलाइं पत्तगबंधो रयत्ताणं एए चउरो मज्झिमो। मुहपोत्ति पादकेसरिया गोच्छओ पादट्ठवणं च एस चउव्विहो जहण्णो।

१ वैकक्षिका।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अतो परं थेराणं भण्णति ॥१४१०॥

उक्कोसो थेराणं, चउव्विधो छव्विधो य मज्झिमओ ।
जहण्णो य चउव्विधो, खलु एत्तो अज्जाण वोच्छामि ॥१४११॥

एत्थ वि तहच्चेव, णवरं–मज्झिमो छव्विधो। ते य पुव्वुत्ता चउरो मत्तग्र-चोलपट्टसहिता ॥१४११॥

इतो अज्जाणं –

उक्कोसो अट्ठविधो, मज्झिमओ होति तेरसविधो उ ।
जहण्णो चतुव्विधो खलु, एत्तो उ उवग्गहं वोच्छं ॥१४१२॥

पुव्वुत्ता चउरो अब्भंतर-णियंसणी बाहिं णियंसणी संघाडी खंधकरणी य, एते उक्कोसया अट्ठ । मज्झिमो तेरसविहो, – पुव्वुता चउरो मतग्रो कमढयं उग्गहणंतयं पट्टो अद्धोरुग्रो चलणिया कंचुग्रो उक्कच्छिया वेकच्छिया ।

जहण्णो पुव्वुत्तो । अतो परं उवग्गहो जहण्ण मज्झिमो उक्कोसो भण्णति ॥१४१२॥

पीढग-णिसज्ज-दंडग-पमज्जणी घट्टए डगलमादी ।
पिप्पल-सूयि-णहहरणि, सोधणगदुगं जहण्णो उ ॥१४१३॥

छगणं पीढगं मिसिया वा णिसज्जा उण्णिया खोमिया । डंडगमज्जणी य अववाउस्सग्गियं अववातोवादियं वा रयोहरणं । आदिग्गहणा उच्छारो छगणादि वा । सोहणगं दुगं दंते कण्णे य ॥१४१३॥

एस जहण्णो । इमो मज्झिमो –

वासत्ताणे पणगं, चिलिमिणि पणगं दुगं च संथारे ।
दंडादी पणगं पुण, मत्तगतिग पादलेहणिया ॥१४१४॥

वासत्ताणे पणगं वाले सुत्ते सूती-पलास-कुडसीसगच्छत्तए य । चिलिमिणिपणगं – पोत्ते वाले रज्जु कडग डंडमती । संथारग्रो दुगं – झुसिरो अज्झुसिरो य । डंडपणगं – डंडए विदंडए लट्ठी विलट्ठी णालिया य । मत्तयतिगं – खेल - काइय-सण्णा ॥१४१४॥

चम्मतिगं पट्टदुगं, णातव्वो मज्झिमो उवधि एसो ।
अज्जाण वारए पुण, मज्झिमए होति अतिरित्तो ॥१४१५॥

चम्मतिगं – पत्थरणं पाउरणं उवविसणं ।

अहवा – कत्ती तलिया वज्झा । पट्टदुगं-संथारोत्तरपट्टो य ।

अहवा – पल्लत्थिया सण्णाहणपट्टो य । अज्जाण वि एस चेव णवरं – उड्डाहपच्छादणवारए अतिरित्ते भवति ॥१४१५॥

---

१ भज्जागं पणवीसंतु (सा)

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इदाणिं उक्कोसो –

अक्खा संथारो य, एगमणेगंगिओ य उक्कोसो ।
पोत्थगपणगं फलगं, बितियपदे होति उक्कोसो ।।१४१६।।

समोसरण अक्खा । संथारुगो एगंगिओऽणेगंगिओ य । पोत्यगपणगं गंडी कच्छभी मुट्ठी च्छिवाडी य संपुडयं च । फलगं जत्थ पढिज्जति । मंगलफलहं वा जं वुड्ढवासिणो भणियं । एस उवग्गहिओ सबितियपदेण उक्कोसओ भणिओ ।।१४१६।।

इदाणिं पडिलेहणा –

पडिलेहणा[1] तु तस्सा, काल[2]मकाले[3] सदोस[4]-णिद्दोसा[5] ।
हीणतिरित्ता[6] य तधा, उक्कम[7]-कमतो य णायव्वा ।।१४१७।।

पडिलेहण पप्फोडण, पमज्जणा चेव जा जहिं कमति ।
तिविहम्मि वि उवहिम्मि, तमहं वोच्छं समासेणं ।।१४१८।।

चक्खुणा पडिलेहणा, अक्खोडगप्पदाणं पप्फोडणा, मुहपोत्तिय-रयहरण-गोच्छगेहिं पमज्जणा । एताओ तिविहोपकरणे जहण्णमज्झिमुक्कोसे जा जत्थ संभवति तं समासतो भणामि ।।१४१८।।

पडिलेहणा य पप्फोडणा य वत्थे कमंति दो भेया ।
पडिलेहण पाणिम्मि, पमज्जणा चेव णायव्वा ।।१४१९।।

वत्थे पडिलेहण-पप्फोडणाओ दो भवंति । पाणि त्ति हत्थो, तत्थ पडिलेहण-पमजणाओ दो भवंति । अहणिव्वेडेति त्ति पप्फोडणा, सा अविधि त्ति काउं ण भवति ।।१४१९।।

पडिलेहणा पमज्जणा, पादम्मि कमंति दो वि एताओ ।
दंडगमादीसु तहा, दिय-रातो अओ परं वोच्छं ।।१४२०।।

पडिलेहितम्मि पादे, के यी पप्फोडणं पि इच्छंति ।
गोच्छगकेसरियाहि य, वत्थेऽवि पमज्जणा णियमा ।।१४२१।।

पाददंडगे आदिसद्दातो-पीढ-फलग-संथारग-सेज्जाए पडिलेहण-पमज्जणा दो भवंति ।

पाद-वत्थेसु पप्फोडणा प्रदर्शनार्थमाह ।

केति आयरिया भणंति –

पडिलेहिए पादे जमंगुलीहिं आहम्मति सा पप्फोडणा । पादवत्थेसु गोच्छगपादकेसरियाहिं णियमा पमज्जणा संभवति, तत्केचिन्मतमित्यर्थः ।।१४२१।।

इदाणिं पडिलेहण-पमज्जण-पप्फोडणा दिवसतो का कत्थ संभवति त्ति भण्णति ।

पडिलेहण पप्फोडण, पमज्जणा चेव दिवसतो होंति ।
पप्फोडणा पमज्जण, रत्तिं पडिलेहणा णत्थि ।।१४२२।।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पादादिए उवकरणे जहासंभवं दिवसतो तिण्णि वि संभवंति । राम्रो य पप्फोडण पमज्जणा य दो संभवंति, पडिलेहणा ण संभवति अचक्खुविसयाम्रो ॥१४२२॥

पडिलेहणा पमज्जण, पायादीयाण दिवसम्रो होइ ।
रत्तिं पमज्जणा पुण, भणिया पडिलेहणा नत्थी ॥१४२३॥

पडिलेहण त्ति दारं गतं ।

इदाणिं "[1]काले" त्ति दारं -

सूरुग्गते जिणाणं, पडिलेहणियाए आढवणकालो ।
थेराणऽणुग्गतम्मी, उवधिणा सो तुलेत्तव्वो ॥१४२४॥

जिणा इति जिणकप्पिया, तेसिं उग्गए सूरिए पडिलेहणाऽऽढवणकालो भवति । थेरा-गच्छवासी, तेसिं अणुग्गए सूरिए पडिलेहणा ।

सीसो पुच्छति – अणुग्गए सूरिए का वेला ?

आयरिम्रो आह – उवहिणा सो तुलेयव्वो । तुलणा परिच्छेदः, जहा इमेहिं दसहिं अंगेहिं पडिलेहिएहिं सूरिम्रो उद्देति तहा तं कालं तुलेंति ॥१४२४॥

मुहपोत्तिय-रयहरणे, कप्पतिग-णिसेज्ज-चोलपट्टे य ।
संथारुत्तरपट्टे य, पेक्खिते जधुग्गमे सूरे ॥१४२५॥

मुहपोत्तिय, रयहरणं, कप्पतियं, दो णिसेज्जाम्रो, चोलपट्टो, संथारुत्तरपट्टो अ । एतेसु "पेक्खिए" त्ति प्रत्युपेक्षितेसु सूर्यं उदेति ।

अण्णे भणंति – एक्कारसमो दंडम्रो । सेसं वसहिमादि उदिते सूरिए य पडिलेहंति ततो सज्झायं पट्ठवेंति ॥१४२५॥

इमो भाण-पडिलेहणकालो –

चउभागवसेसाए, पढमाए पोरिसीए भाण-दुगं ।
पडिलेहणधारणता, भयिता चरिमाए निक्खवणे ॥१४२६॥

पढमपहरचउभागावसेसा य चरिमत्ति भण्णति, तत्थ काले भाण-दुगं पडिलेहिज्जति । सो भत्तट्ठी इतरो वा । जति भत्तट्ठी तो अणिक्खित्तेहिं चेव पढति सुणेति वा । अहाभत्तट्ठी तो णिक्खिवति, एस भयणा । एस उदुबद्धे वासासु वा विही ।

अण्णे भणंति – वासासु दोवि णिक्खिवंति । चरमपोरिसीए पुण म्रोगाहंतीए चेव पडिलेहेउं णिक्खिवंति । ततो सेसोवकरणं, ततो सज्झायं पट्ठवेंति ॥१४२६॥

पढमचरमाहिं तु पोरिसीहि पडिलेहणाए कालेसो ।
तव्विवरीम्रो उ पुणो, णातव्वो होति तु अकालो ॥१४२७॥

---

१ गा० १४१७ ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

एस पढमचरमपोरिसीसु कालो। काले त्ति दारं गतं। तव्विवरीतो अकालो पडिलेहणाए। जति पुण अद्धाणे वा अण्णेण वा वाघायकारणेण पढमाए ण पडिलेहियं, ताहे अकाले वि जाव चउत्थी ण उग्गाहेति ताव पडिलेहियव्वं। जति व पडिलिहियमेत्ते चेव चउत्थी ओगाहेति, तह वि पडिलेहियव्वं ॥१४२७॥ अकालेत्ति दारं गतं।

इदाणिं [1]सदोसात्ति दारं -

आरभडा सम्मद्दा, वज्जेतव्वा य मोसली ततिया।
पप्फोडणा चउत्था, वक्खित्ता वेइया छट्ठा ॥१४२८॥

आरभडं - जहाभिहितविधाणतो विपरीयं।

अहवा - तुरियं अण्णम्मि वा दरपडिलेहिते, अण्णं आढवेंति। [2]सम्मद्दणावेंटियमज्झतो जत्थ वा णिसण्णो बला कड्ढिउं पडिलेहेति। उड्ढमुहो तिरियं वा कुड्डादिसु आमुसंतं पडिलेहेति मोसली। रेणुगुंडियं वा पप्फोडेति, पप्फोडणा विधि खिवित्ता।

अहवा - दूरत्थं वत्थं अण्णं भणाति - "खित्ताहि आरतो जा पडिलेहेमि" त्ति विक्खित्तं। छट्ठो वेतिया दोसो, ता य पंच - जाणुवरि कोप्परा काउं पडिलेहेति, उड्ढवेतिआ। एगजाणुं दुवाहंतो काउं पडिलेहेति, एगतोवेतिता। दो वि जाणू बाहंतो काउं पडिलेहेति, दुहितोवेतिता। जाणू हेट्ठाओ हितेसु हत्थेसु पडिलेहेति, अहोवेइआ। दोण्ह वि ऊरुआण अंतठितासु बाहासु पडिलेहेति, अंतोवेइया ॥१४२८॥

अहवा इमे छद्दोसा -

पसिढिल-पलंब-लोला, एगामोसा अणेगरूवधुणा।
कुणति पमाणपमादं, संकियगणणोवगं कुज्जा ॥१४२९॥

पसिढिलं गेण्हति। एगपासाओ पलंबं गेण्हति। महीए लोलंतं पडिलेहेति। "[3]एगा मोस" त्ति - तिभागे घेत्तुं अविच्छेदामोसेणताणेति जा बितियतिभागो। अणेगाणि रूवाणि जुगवं पडिलेहेति। अक्खो - डगादिप्पमाणे प्पमायं करेति। जस्स जं संकियं भवति स गणंतो पडिलेहेति ॥१४२९॥

सदोसपडिलेहणाए इमं पच्छित्तं -

मासो य भिण्णमासो, पणगं उक्कोस-मज्झिम-जहण्णे।
दुप्पडिलेहित-दुपमज्जितम्मि उवधिम्मि पच्छित्तं ॥१४३०॥

दुप्पडिलेहिए दुप्पमज्जिते दोसेहिं वा आरभडादिएहिं पडिलेहंतस्स उक्कोसे मासलहुं, मज्झिमे भिण्णमासो, जहण्णे पणगं ॥१४३०॥ सदोसत्ति दारं गतं।

इदाणिं [4]णिद्दोसे त्ति -

उड्ढं थिरं अतुरितं, सव्वंऽता वत्थ पुव्व पडिलेहे।
तो बितियं पप्फोडे, ततियं च पुणो पमज्जेज्जा ॥१४३१॥

---

१ गा० १४१७। २ मध्यप्रदेशे वस्त्रस्य संवलिताः कोणा यत्र भवन्ति सा संमर्दा उच्यते। (ओ० नि० पृ० १०९) ३ ओ० नि० गा० १६१ पृ० १०९। ४ गा० १४१७।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उड्ढमिति उक्कडुओ णिविट्ठो, थिरमिति, दढं गेण्हति । अतुरितं - [1]परिसंथियं, सव्वं वत्थं अंतातो पढमं पडिलेहेति । ततो वितिया पप्फोडणा पउंजति, अक्खोडगा ददातीत्यर्थः, ततो ततिया पमज्जणा पउंजति ॥१४३१॥

अणच्चावितं अवलियं, अणाणुबंधी अमोसलिं चेव ।
छप्पुरिमा णवखोडा, पाणी पाण य पमज्जणं ॥१४३२॥

णच्चणं सरीरे, वत्थे वा । सरीरे उक्कंपणं, वत्थेवि विकारा करेंति । ण णच्चावियं अणच्चावियं । वलियं पि सरीरे वत्थे य, ण वलियं अवलियं । णिरंतर अक्खोडपमज्जणा अकरणं अणाणुबंधी । कड्ढादिसु अमोसली । तिरियट्ठिते वत्थे तिण्णि दाउं अवखोडा परावत्तेउं पुणो तिण्णि एते छप्पुरिममिति पुव्वं दायव्वं । ततो णव अक्खोडा पमज्जणंतरिआ दायव्वा । दाहिणहत्थकणिट्ठ - अणामियाहिं पढमतिभागमज्झे घेत्तु, अणामिय - मज्झिमाहिं मज्झ - तिभागमज्झे घेत्तुं, पदेसिणीहिं ततियतिभागमज्झे घेत्तुं, अहो वामहत्थकरतल-पसारियस्सोवरि अतुरियादयो अक्खोडगा दायव्वा, ततो प्राणिविसोधणत्थं अहो पाणी तेणे व वत्थेण ततो वारा पमज्जियव्वा, पुणो तिण्णि अक्खोडगा तिण्णि पमज्जणातो ततियवाराए पुणो तिण्णि । एवं णव अक्खोडा पमज्जणातो य ॥१४३२॥ णिद्दोसेत्ति दारं गतं ।

इदार्णि [2]हीणातिरित्ते त्ति दारं –

पडिलेहण-पप्फोडण, पमज्जणे वि य अहीणमतिरित्ता ।
उवधिम्मि य पुरिसेसु य, उक्कमकमतो य णातव्वा ॥१४३३॥

पडिलेहण-पप्फोडण-पमज्जणा य एतातो अहीणमतिरित्ता कायव्वा । हीणातिरित्ते त्ति दारं गतं ।

[3]उक्कमकमतो त्ति दारं – "उवधि - पुरिसेसु" । उवधिम्मि पच्चूसे पुव्वं मुहपोत्ती, ततो रयहरणं, ततो अंतो - णिसिज्जा, ततो बाहिर - णिसिज्जा, चोलपट्टो, कप्प, उत्तरपट्टं संथारपट्टं, दंडगो य । एस कमो अण्णहा उक्कमो । पुरिसेसु पुव्वं आयरियस्स, पच्छा परिण्णी, ततो गिलाण, सेहादियाण । अण्णहा उक्कमो ॥१४३३॥

उक्कमे अपडिलेहणाए य पच्छित्तं –

चाउम्मासुक्कोसे, मासियमज्झे य पंच य जहण्णे ।
तिविधम्मि उवधिम्मि, तिविधा आरोवणा भणिता ॥१४३४॥

उक्कोसे चाउम्मासो, मज्झिमे मासो, जहण्णे पणगं ।

तिविधे – जहण्णमज्झिमुक्कोसे ॥१४३४॥

इत्तरिओ पुण उवधी, जहण्णओ मज्झिमो य णातव्वो ।
सुत्तणिवातो मज्झिमे तमपडिलेहेंते आणादी ॥१४३५॥

इत्तरगहणातो जहण्णमज्झिमे सुत्तणिवातो । मज्झिमे तमपडिलेहंतस्स आणादिया य दोसा । १४३५॥

---

१ स्थित । २ गा० १४१७ । ३ गा० १४१७ ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इमे संजमदोसा –

घरसंताणग-पणगे, घरकोइलियादिपसवणं चेव ।
हित-णट्ठजाणणट्ठा, विच्छुय तह सेडुकारी य ॥१४३६॥

घरसंताणगो त्ति अपेहिए लूतापुडगं संबज्झति । पणओ उल्ली अपेहिते भवति । गिहिकोइला पसवति । हियं णट्ठं वाऽसंभारियं भवति । गुम्हि विच्छुग – सप्पादिया पविसंति । अप्पेहिते तेहिं वि आयविराहणा भवति । सेडुयारिया, घण्णारिया गिहं करेज्जा । जम्हा एते दोसा तम्हा सव्वोवही दुसंझं पडिलेहियव्वो ।।१४३६।।

कारणे पुण अपेहंतो वि अदोसो । इमे य ते कारणा –

असिवे ओमोयरिए गेलण्णद्धाणसंभमभये वा ।
तेणयपउरे सागारे संजमहेतुं व बितियपदं ॥१४३७॥

असिवगहितो ण तरति, तप्पडियरगा वा वाउलत्तणओ । ओमे [1]पए च्चिय आरद्धा हिंडिउं पडिलेहणाए णत्थि कालो । गिलाणो ण तरति एगागी । अद्धाणे सत्थवसो ण पेहे । अगणिमादि [2]संभवा ण पेहे । बोहिगादिभये वा । तेणयपउरे सारोवही य मा पस्सिहिति, ण पेहे कसिणोवहि त्ति । सागारिए ण पेहेति, [3]पावासगाण वा अग्गतो ण पेहेति । संजमहेउं वा – महियाभिण्णवाससचित्तरएसु बितिय – पदेण अपेहितो वि सुद्धो ।।१४३७।।

।। विसेस-णिसीहचुण्णीए बितिओ उद्देसओ समत्तो ।।

---

१ प्रगे प्रभाते एव । २ संभमादद्रक्ष्यती ति । ३ प्राघुर्णकानाम् ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तृतीय उद्देशकः

भणितो बितिओ ।

इदाणि ततिओ । तत्थ संबंधमाह –

उवधी पडिलेहेत्ता, भिक्खग्गहणं तु तं कहिं कुज्जा ।
सट्ठाणे अणोभट्ठं, अधवा उवधी उ आहारो ॥१४३८॥

उवहि त्ति पडिग्गहो, तं भिक्खावेलाए पेहेत्ता तत्थ भिक्खग्गहणं कायव्वं । तं पुण भिक्खग्गहणं कहिं कायव्वं ? सट्ठाणे ।

अहवा – जत्थ बितियजामे भिक्खावेला तत्थ चरिमाए पडिग्गहं पेहेत्ता भिक्खग्गहणं करेंति ।

अहवा – चरिमाए पेहेत्ता भिक्खग्गहणं काहिति, ण णिक्खिवंति । अत्थपोरिसिं काउं तत्थ भिक्खं हिंडंति । तं कहिं कुज्जा ? "सट्ठाणे" त्ति सट्ठाणं मूलवसहिगामो, घरं वा । "अणोहंट्टं" [1]अजाणियं ।

अहवा – [2]कोंटलादिउवकरणविरहियं एस संबंधो ।

अहवा – उवही वुत्तो, इहं आहारो । द्वितीयोऽयं सम्बन्धः ॥१४३८॥

जे भिक्खू आगंतारेसु वा आरामागारेसु वा गाहावतिकुलेसु वा परियावसहेसु वा, अण्णउत्थियं वा गारत्थियं वा असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा ओभासिय ओभासिय जायइ; जायंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१॥

भिक्खू पूर्ववत्, आगंतारो जत्थ आगारी आगंतु चिट्ठंति तं आगंतागारं । गामपरिसट्ठाणं ति वुत्तं भवति । आगंतुगाण वा कयं आगार आगंतागारं बहियावासे त्ति । आरामे आगारं आरामागारं । गिहस्स पती गिहपती, तस्स कुलं गिहपतिकुलं, अन्यगृहमित्यर्थः । गिहपज्जायं मोत्तुं पव्वज्जापरियाए ठिता तेसिं आवसहो परियावसहो । एतेसु ठाणेसु ठितं अण्णउत्थियं वा असणाइ ओभासति साइज्जति वा तस्स मासलहुं । एस सुत्तत्थो ।

इमा सुत्तफासिया –

आगंतारादीसुं, असणादोभासती तु जो भिक्खू ।
[3]सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त-विराधणं पावे ॥१४३९॥

---

१ मायारहित । २ दे । ३ गिहि अन्नउत्थियं वा, सो पावति आणमादीणि ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आगंतारादिसु गिहत्थमन्नतित्थियं वा जो भिक्खू असणाती ओभासति सो पावति आणा - अणवत्थ-मिच्छत्त - विराहणं च ।।१४३९।।

अगमेहि कतमगारं, आगंतू जत्थ चिट्ठति अगारो ।
परिगमणं पज्जाओ, सो चरगादी तु णेगविधो ।।१४४०।।

"अगमा" रुक्खा, तेहिं कतं अगारं । आगंतु जत्थ चिट्ठंति आगारा तं आगंतागारं । परि-समंता गमणं गिहिभावगतेत्यर्थः । पज्जाओ पव्वज्जा, सो य चरग-परिव्वाय-सक्क-आजीवगमादिणेगविधो ।।१४४०।।

भद्देतरा तु दोसा, हवेज्ज ओभासिते अ ठाणम्मि ।
अचियत्तोभावणता, पंते भद्दे इमे होंति ।।१४४१।।

अट्ठाणठितोभासिते पंतभद्दोसा । पंतस्स अचियत्तं भवति, ओभावणं वा, अहो इमे –

दमगपव्वइया जेण एगमेगं अट्ठाणेसु असणादि ओभासंति, न वा एतेसिं कोइ भद्दे त्ति काउं देति । ।।१४४१।।

इमे भद्द दोसा –

जध आतरोसे दीसइ, जध य विमग्गंति मं अठाणम्मि ।
दंतेंदिया तवस्सी, तो देमि णं भारितं कज्जं ।।१४४२।।

जहा एयस्स साहुस्सातरो दीसति, जह य मं अट्ठाण - ट्ठियं विमग्गंति । दंतेंदिया तवस्सी, तो देमि अहं एतेसिं णूणं 'भारितं कज्जं' आपत्कल्पमित्यर्थः ।।१४४२।।

सड्ढि गिही अण्णतित्थी, करिज्ज ओभासिते तु सो असंते ।
उग्गमदोसेगतरं, खिप्पं से संजतट्ठाए ।।१४४३।।

श्रद्धाऽस्यास्तीति श्रद्धी, सो य गिही अण्णतित्थिओ वा, ओभासिए समाणे से इति स गिही अण्णतित्थिओ वा खिप्पं तुरियं सोलसण्हं उग्गमदोसाणं अण्णतरं करेज्जा संजयट्ठाए ।।१४४३।।

एवं खलु जिणकप्पे, गच्छे णिक्कारणम्मि तह चेव ।
कप्पति य कारणम्मी, जतणा ओभासितुं गच्छे ।।१४४४।।

एवं ता जिणकप्पे भणियं । गच्छवासिणो वि णिक्कारणे । एवं चेव कारणजाते पुण कप्पति थेरकप्पियाणं ओभासिउं ।।१४४४।।

किं ते कारणा ? इमे –

गेलण्ण-रायदुट्ठे, रोहग-अद्धाणमंचिते ओमे ।
एतेहिं कारणेहिं, असती लंभम्मि ओभासे ।।१४४५।।

गिलाणट्ठा, रायदुट्ठे वा, रोहगे वा अंतो अफच्चंता, अंचिते-वा अंचियणं णाम दात्र(उ)संधी तत्थ त(भ)वणीओ खंचि(ध)याओ ण वा णिप्फण्णं, णिप्फण्णे वा ण लब्भति । ओमं दुर्भिक्षं । एवं अंचिए ओमे दीर्घ-दुर्भिक्षमित्यर्थः । एतेहिं कारणेहिं अलब्भंते ओभासेज्जा ।।१४४५।।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

भिण्णं समतिक्कंतो, पुव्वं जति उण पणगपणगेहिं ।
तो मासिएसु पयतंति, ओभासणमादिसू असढो ॥१४४६॥

इमा जयणा – पढमं पणगदोसेण गेण्हति, पच्छा दस-पण्णरस-वीस-भिण्णमास-दोसेण य । एवं पणगभेदेहिं जाहे [1]भिण्णं समतिक्कंतो ताहे मासिश्रट्ठाणेसु ओभासणादिसु जतति असढो ॥१४४६॥

तत्थ ओभासणे इमा जयणा –

तिगुणगतेहिं ण दिट्ठो, णीया वुत्ता तु तस्स उ कहेह ।
पुट्ठाऽपुट्ठा चेते, तो करेंति जं सुत्तपडिकुट्ठं ॥१४४७॥

पढमं घरे ओभासिज्जति । अदिट्ठे एवं तयो वारा घरे गवेसियव्वो । तत्थ भज्जाति णीया वत्तव्वा-तस्स आगयस्स कहेज्जाह "साधू तव सगासं आगया कज्जेणं" घरे अदिट्ठे पच्छा आगंतारादिसु दिट्ठस्स घरगमणाति सव्वं कहेउं, तेण वंदिते अवंदिते वा तेण य पुट्ठे अपुट्ठे वा जं सुत्ते पडिसिद्धं तं कुव्वंति ओभासंति इत्यर्थः ॥१४४७॥

एवं अण्णउत्थिया वा गारत्थिया वा; ॥सू०॥२॥

अण्णउत्थिणी वा गारत्थिणी वा; ॥सू०॥३॥

अण्णउत्थिणीओ वा गारत्थिणीओ वा;

असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा ओभासिय ओभासिय जायति,
जायंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४॥

पढमम्मी जो तु गमो, सुत्ते बितियम्मि होति सो चेव ।
ततिय-चउत्थे वि तहा, एगत्त-पुहुत्त-संजुत्ते ॥१४४८॥

पढमे सुत्ते जो गमो बितिये वि पुरिसपोहत्तियसुत्ते सो चेव गमो, ततिय-चउत्थेसु वि इत्थिसुत्तेसु सो चेव गमो ॥१४४८॥

जे भिक्खू आगंतारेसु वा आरामागारेसु वा गाहावइकुलेसु वा परियावसहेसु वा
कोउहल्लपडियाए पडियागयं समाणं-
अन्नउत्थियं वा गारत्थियं वा ॥सू०॥५॥
अन्नउत्थिया वा गारत्थिया वा ॥सू०॥६॥
अण्णउत्थिणी वा गारत्थिणी वा, ॥सू०॥७॥
अण्णउत्थिणीओ वा गारत्थिणीओ वा
असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा ओभासिय ओभासिय जायति,
जायंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥८॥

---

१ भिन्नमासं ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कोऊहल्ल-पडियाए कोऊहलप्रतिज्ञया, कोतुकेणेत्यर्थः । तमागतं जे असणं ती ओभासन्ति तस्स मासलहुं ।

आगंतागारेसुं, आरामागारे तधा गिहावसहे ।
पुव्वट्ठिताण पच्छा, एज्ज गिही अण्णतित्थी वा ॥१४४६॥

आगंतादिसु साहू पुव्वट्ठिता पच्छा गिही अण्णउत्थी वा एज्ज ॥१४४६॥

एसिं आगमणकारणं –

केयि अहाभावेणं, कोऊहल केइ वंदण-णिमित्तं ।
पुच्छिस्सामो केयी, धम्मं दुविधं व घेच्छामो ॥१४५०॥

केति अहापवत्तिभावेणं, केति कोऊएणं, केइ वंदण-णिमित्तं, केइ संसयं पुच्छिस्सामो, केति दुविधं धम्मं – साहुधम्मं सावगधम्मं वा घेच्छामो ॥१४५०॥

एत्तो एगतरेणं, कारणजातेण आगतं संतं ।
जे भिक्खू ओभासति, असणादी तस्सिमे दोसा ॥१४५१॥

तस्सिमे भद्द-पंतदोसा –

आत-परोभावणता, अदिण्णदिण्णे व तस्स अचियत्तं ।
पुरिसोभावणदोसा, सविसेसतरा य इत्थीसु ॥१४५२॥

अलद्धे अप्पणो ओभावणा "सुद्दा ण लभंति" त्ति । अदिण्णे परस्स ओभावणा "किवणो" त्ति [अ] दिण्णे वा अचियत्तं भवति । महायणमज्झे वा पणइतो "देमि" त्ति पच्छा अचियत्तं भवति दाउं । पुरिसे ओभावण दोसा एव केवला । इत्थिआसु ओभावणदोसा संकादोसा य, आय - परसमुत्था य दोसा ॥१४५२॥

भद्दो उग्गमदोसे, करेज्ज पच्छण्ण अभिहडादीणि ।
पंतो पेलवगहणं, पुणरावत्तिं तधा दुविधं ॥१४५३॥

भद्दओ उग्गमेगतरदोसं कुज्जा, पच्छण्णाभिहडं पागडाभिहडं वा आणिज्ज । पंतो साहुसु पेलवगहणं करेज्ज – अहो इमे अदिण्णदाणा जो आगच्छति तमोभासंति । साहु - सावगधम्मं वा पडिवज्जामि त्ति ओभासति । ओभासिओ दुरूढो पडियणित्तो त्ति जाहे सावगो होहामि ताहे ण मुइहिति जइ पव्वज्जं गेच्छामि त्ति एगो विपरिणमति तो मूलं, दोसु णवमं, तिसु चरिमं, [1]सावगवतेसु चरिमं, जं च ते विपरिणया असंजमं काहिति तमावज्जंति ।

अहवा – णिण्हएसु वच्चंति । जम्हा एते दोसा तम्हा ण ओभासियव्वो ॥१४५३॥

आगओ एवं पच्छित्तं – परिहरियं, आणा अणुपालिया, अणवत्था मिच्छत्तं च परिहरियं । दुविहविराहणा परिहरिता । कारणे पुण ओभासति ।

इमे य कारणा –

असिवे ओमोदरिए, रायदुट्ठे भए व गेलण्णे ।
अद्धाण रोहए वा, जतणा ओभासितुं कप्पे ॥१४५४॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तिगुणगतेहिं ण दिट्ठो, णीया वुत्ता तु तस्स तु कहेह ।
पुट्ठाऽपुट्ठा व ततो, करेंतिमं सुत्त-पडिकुट्ठं ॥१४५५॥
एगत्ते जो तु गमो, णियमा पोहत्तियम्मि सो चेव ।
एगत्तातो दोसा, सविसेसतरा पुहुत्तम्मि ॥१४५६॥

असिवे जता मासं पत्तो ताहे घरं गंतुं ओभासिज्जति ।

अदिट्ठे महिला से भणति – अक्खेज्जासि सावगस्स साधुणो दट्ठुमागता ते आसि ।

सो [1]अविरइयसमीवे सोउं अहभावेण वा आगतो सव्वं से घरगमणं कहिज्जति, कारणं च से दीविज्जिति, ततो जयणाए ओभासिज्जति ।

जइ सो भणति – घरं एज्जह, ताहे तेणेव समं गंतव्वं, मा अभिहडं काहि त्ति असुद्धं वा । एवं रायदुट्ठादिसु वि ॥१४५६॥

एगत्तियसुत्तातो पोहत्तिएसु सविसेसतरा दोसा –

पुरिसाणं जो तु गमो, णियमा सो चेव होइ इत्थीसु ।
आहारे जो उ गमो, णियमा सो चेव उवधिम्मि ॥१४५७॥

जो पुरिसाणं गमो दोसु सुत्तेसु, इत्थीण वि सो चेव दोसु सुत्तेसु वत्तव्वो । जो आहारे गमो सो चेव अविसेसिओ उवकरणे दट्ठव्वो ॥१४५७॥

जे भिक्खू आगंतारेसु वा आरामागारेसु वा गहावइकुलेसु वा परियावसहेसु वा
अन्नउत्थिएण वा गारत्थिएण वा ॥सू०॥९॥
अन्नउत्थिएहि वा गारत्थिएहि वा ॥सू०॥१०॥
अन्नउत्थिणी वा गारत्थिणी वा ॥सू०॥११॥
अन्नउत्थिणीहि वा गारत्थिणीहि वा
असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा अभिहडं आहट्टु दिज्जमाणं पडिसेहेत्ता तमेव अणुवत्तिय अणुवत्तिय, परिवेढिय परिवेढिय, परिजविय परिजविय, ओभासिय ओभासिय जायइ, जायंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१२॥

आगंतागाराइसु ठियाण साहूणं अणतित्थी गारत्थिओ वा अभिहडं आमुखेन हुतं, अभिहृतं, पारणादिसु कोइ सड्ढी सयमेव आहट्टु दलएज्ज । तं पडिसेहेत्ता "तमेव" त्ति तं दायारं, अणुवत्ति य त्ति सत्तपदाइं गंता, परिवेढिय त्ति पुरतो पिट्ठतो पासतो ठिच्चा, "परिजविय" त्ति परिजल्प्य, तुब्भेहि एयं अम्हट्ठा आणियं, मा तुब्भ अफलो परिस्समो भवतु, मा वा अधितिं करेस्सह, तो गेण्हामो एवं ओभासंतस्स मासलहुं । सुद्धे वि असुद्धे । पुण जेण असुद्धं तमावज्जे ।

---

[1] स्वीया अविरतिका स्त्री ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आगंतागारेसुं, आरामागारे तहा गिहावसहे ।
गिहि अण्णतित्थिए वा, आणेज्जा अभिहडं असणं ॥१४५८॥ कंठा

ओलग्गणमणुवयणं, परिवेढण पासपुरउ ठातुं वा ।
परिजवणं पुण जंपइ, गेण्हामो मा तुमं रुस्स ॥१४५९॥

"अणुवयणं" त्ति ओलग्गिउं अणुव्रजितुं, परिवेढणं पुरतो पासओ ठाउं, परिजल्पनं परिजल्पः, इमं जंपइ – गेण्हामो, मा तुमं रुसिहिसि ॥१४५९॥

तं पडिसेवेतूणं, दोच्चं अणुवतिय गेण्हती जो उ ।
सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त-विराधणं पावे ॥१४६०॥

तमाहडमेव पडिसेहेउं एकः प्रतिषेधः । द्वितीयो अणुवइय त्ति ओलग्गिउं अणुवज्जितु अहा जो एवं गेण्हति तस्स आणादी दोसा, भद्दपंतदोसा य, आणाए भंगो, अणवत्था कता, अण्णहा कारंतेण मिच्छत्तं जणियं ॥१४६०॥

इमो संजमविराहणादोसो भद्दपंतदोसो य –

एतेण उवातेणं, गेण्हंती भद्दओ करे पसंगं ।
अलियाभिरता माई, कवडायारा व ते पंतो ॥१४६१॥

भद्दो चिंतेइ – एतेण उवाएण गेण्हंति, आहडे पुणो पसंगं करेति । पंतो पेलवगहणं करे, भणेज्ज – व अलियं अनृतं तम्मि अभिरया अलियाभिरया, ण गेण्हामो त्ति भणित्ता पच्छा गेण्हंति । मायाविणो तत्थ वसहीए ण गेण्हंति, इह पडिणीयंतस्स गेण्हंति, कवडं कृतकाचारा, कवडेण सव्वं पव्वज्जं आयरंति, ण एतेसिं कोइ सब्भावो अत्थि ।

अहवा – सब्भावेण माइकिरियाजुत्तो कवडायारमाती भण्णति, एवं पंतो वयति । जम्हा एते दोसा तम्हा ण एवं घेत्तव्वं ॥१४६१॥

कारणे पुण गहणं कुव्वंति –

असिवे ओमोयरिए रायदुट्ठे भये व गेलण्णे ।
अद्धाण रोधए वा, जतणा पडिसेवणा गहणं ॥१४६२॥

पडिसेहेउं जतणाए गेण्हंति ॥१४६२॥

का य जयणा ? इमा –

जति सव्वे गीतत्था, गहणं तत्थेव होति तु अलंभे ।
मीसेसणुवा इतूणं, मा य पुणो तत्थ एहामो ॥१४६३॥

जाहे पणगाइजयणाए मासलहुयं पत्तो ताहे जइ सव्वे साधू गीतत्था ताहे तत्थेव वसहीए गेण्हंति, पसंगणिवारणत्थं च भणति – अम्हं घरगयाणं चेव दिज्जति, ण आणिज्जति । ताणि भणंति – "अज्जेक्कं गेण्ह ण पुणो आणेमो" ताहे घेप्पति । अलंभेति अभावेंता अगीतमीसे पुण तेसिं । अगीताण पुरतो पडिसेहेउं पच्छतो तस्स अणुवतिऊण भणाति – मा पुणो आणेह, तत्थेव अम्हे हिंडंता एहामो ॥१४६३॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

णिमंतेज्ज – अहवा – जइ अण्णदोसवज्जितं भद्दपंतदोसा वा ण भवंति ताहे गिण्हति ।

इमं च भणति –

तया दूराहडं एतं, आदरेण सुसंभितं ।
मुहवण्णो य ते आसी, विवण्णो तेण गेण्हिमो ।।१४६४।।

तुमे दूराओ आणियं, आयरेण य आणीयं, [1]वेसवाराइणा य संभिय कयं, तुज्झ पडिसेहिते मुहवण्णो विवण्णो आसि तेण गेण्हामो । एवं जयणाए गेण्हति । पसंगो णिवारितो, अगीता य वंचिया, आहडप्रतिनिवृत्त-भावात्मीकृतत्वात् । एवं इत्थियासु वि एवं पुहत्त - मुत्ते वि ।।१४६४।।

जे भिक्खू गाहावति-कुलं पिंडवाय-पडियाए पविट्ठे पडियाइक्खिए समाणे दोच्चं तमेव कुलं अणुप्पविसति, अणुप्पविसंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।१३।।

पडियाइक्खिए त्ति प्रत्याख्यातः, प्रतिषिद्धे त्ति भणियं भवति, दोच्चं पुनरपि तमेव प्रविशति, तस्स मासलहुं, आणाइणो य दोसा ।

णिज्जुत्ती –

जे भिक्खू गिहवतिकुलं, अतिगते पिंडवात-पडियाए ।
पच्चक्खिते समाणे, तं चेव कुलं पुणो पविसे ।।१४६५।।

जे त्ति निद्देसे, भिक्खू पूर्ववत्, गिहस्स पती गिहपती, तस्स कुलं गृहमित्यर्थः, अतिगतः – प्रविष्टः, पिंडपात - प्रतिज्ञया, पच्चक्खातो प्रतिषिद्ध, प्रत्याख्यानेन समः समाणे त्ति प्रत्याख्यानेत्यर्थः ।

अहवा – समाणे त्ति पच्चक्खाउ होउ तमेव पुणो प्रविसे ।।१४६५।।

सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्तविराधणं तधा दुविधं ।
पावति जम्हा तेणं, पच्चक्खाते तु ण प्पविसे ।।१४६६।।

दुविहा विराहणा – आयसंजमे । जम्हा एते दोसा पावति तम्हा ण तं पुणो कुलं पविसे ।।१४६६।।

अह पविसति इमे दोसा –

दुपय-चतुप्पदणासे, हरणोहरणं य डहण खण्णे य ।
चारियकामी दोच्चादीएसु संका भवे तत्थ ।।१४६७।।

तम्मि कुले दुप्पदा दुपक्खरिया ति, चउप्पद अधादि णट्ठ हरितं वा, सो संकिज्जति । एवं उद्दविते य घरादि डाहे, खते य क्खए, चारिउ त्ति भंडिउ त्ति कामी उब्भमगो, पहुलादिपाण वा इइत्तणं करेइ एवं संकिते निस्संकिते वा जं तमावज्जे, सहिहि परं चारियं ति रायकुले कहेज्ज, एव गेण्हणादयो दोसा ।।१४६७।।

कारणओ पुण दोच्चं पि पविसति –

वितियपदमणाभोगे, अंचित-गेलण्ण-पगत-पाहुणए ।
रायदुट्ठे रोधग, अद्धाणे वा वि निविकप्पं ।।१४६८।।

[1] मसालों से परिष्कृत ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अणाभोगेण दोच्चं पि पविसे तमणीओ खच्चियाओ जत्थ तं अंचियं दाउं संधिमादी दुभिक्खं वा गिलाणकारणेण वा भुज्जो पविसति; अण्णत्थ ण लभति पगतं संखडी, भिक्खावेला पविट्ठस्स ण देसकालो आसि, अपज्जत्ते भुज्जो पविस त्ति एवं पाहुणगातिएसु वि, अद्धाणे वा वि। तिविकप्पे त्ति आदि मज्झे अवसाणे य।

अहवा – गेलण्णादिएसु कज्जेसु एसणिज्जे अलब्भमाणे तिपरियल्ल विकप्पे पुणो तेसु चेव गिहेसु दोच्चं वारं पविसति ॥१४६८॥

एतं तं चेव घरं, अपुव्वघरसंकडेण वा मूढो।
पुट्ठो पुण सेसेसु, कहेति कज्जं अपुट्ठो वा ॥१४६९॥

अणाभोगपविट्ठो गिहीण सुर्णेत णं भणति – एयं तं चेव घरं ति।

अहवा – अपुव्वघरसंकडेण वा पविट्ठो, भणाति – "एयं तं चेव घरं" ति। 'सेसेसु" त्ति – गिलाणादिसु कारणेसु गिहीसु पुच्छितो अपुच्छितो वा गिलाणट्ठो वा दोच्चं पि आगत त्ति कज्जं कहेति ॥१४६९॥

भावितकुलाणि पविसति, अदेसकालो व जेसु से आसी।
सुण्णे पुणरागतेसू, भद्दगऽसुण्णं च जं आसी ॥१४७०॥

अहवा – जे साहू साहूणीहिं पविसंतेहिं भाविता कुला ण संकातिता दोसा भवंति, तेसु दोच्चं पि कारणे पविसति। अदेसकालो वि जेसु कुलेसु आसि पुणो तेसु देसकालेसु पविसति। जं वा भिक्खाकालेसु सुण्णं आसि तेसु पुणो पविसति। भद्दगकुलं वा असुण्णं जं आसि तत्थ केणइ कारणेण भिक्खा ण दत्ता तं पुणो पविसति ॥१४७०॥

जे भिक्खू संखडि-पलोयणाए असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१४॥

संखडि त्ति-आउआणि जम्मि जीवाण संखडिज्जंति सा संखडी। संखडिसामिणा अणुण्णातो तो तम्मि रसवतीए पविसित्ता ओमगात्ति पलोइउं भणाति – 'इतो य इतो पयच्छाहि" त्ति, एस पलोयणा। जो एवं गेण्हति असणाति तस्स मासलहुं।

आइण्णमणाइण्णा, दुविधा पुण संखडी समासेणं।
जा सा तु अणाइण्णा, तीए विहाणा इमे होंति ॥१४७१॥

सा संखडी समासेण दुविधा-आइण्णा अणाइण्णा य। साधूण कप्पणिज्जा आइण्णा, इतरा अणाइण्णा, तीसे इमे विहाणा। तुसद्दोऽवधारणे ॥१४७१॥

जावंतिया पगणिया, सखेत्ताखेत्त बाहिराऽऽइण्णं।
अविसुद्धपंथगमणा, सपच्चवाता य भेदा य ॥१४७२॥

आचंडाला पढमा, बितिया पासंड-जाति-णामेसु।
सक्खेत्ते जा सकोसे, अक्खेत्ते पुढविमादीसु ॥१४७३॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पढमा ति जावतिगा ताए सव्वेसिं तडियकप्पडिगाणं आचंडालेसु दिज्जति । "वितिय" त्ति पगणिता, प्रकर्षेण गण्या प्रगण्या, पासंडीणं चेव तेसिं पगणियाणं, दस ससरक्खा, दस शाक्या, दश परिव्राट्, दस-श्वेतपटा एवमादि । सखेत्ते जा सकोसं जोयणब्भंतरे, क्षेत्रावग्रहाभ्यन्तरेत्यर्थः । अखित्ते जा सचित्तपुढवीए, सचित्तवणस्सतिकायादिएसु वा ठिता ॥१४७३॥

एतासु चउसु वि इमं पच्छित्तं –

जावंतिगाए लहुगा, चतुगुरु पगणीए लहुग सक्खेत्ते ।
मीसग सचित्त-ऽणंतर-परंपरे कायपच्छित्तं ॥१४७४॥

जावंतियाए अत्थतो चउलहुं, सुत्तादेसतो मासलहुं । पगतियाए चउगुरु । सक्खित्ते संखडिगमणे चउलहुं, परित्तमीसेणंतरे मासलहुं, अणंतमीसे अणंतरे मासगुरुं । दोसु वि मीसेसु परंपरे लहुगुरु पणगं, सचिते परित्तअणंतरे चउलहुं, परंपरे मासलहुं, अणंते एते चेव गुरुगा । एयं कायपच्छित्तं ॥१४७४॥

"[1]बाहिर" त्तिस्य व्याख्या –

बहि वुड्ढी अद्धजोयण, लहुगादी अट्ठहिं भवे सपयं ।
चरगादी आइण्णा, चतुगुरु हत्थादि भंगो य ॥१४७५॥

बहिखेत्तस्स जाव अद्धजोयणे चउलहुं, ततो परंपरवड्ढिए अद्धजोयणे चउगुरुगं, दिवड्ढजोयणे छलहुं, दुसु छगुरु, चउसु छेओ, अट्ठसु जोयणेसु मूलं, भिक्खुणो सपदं । उवज्झायस्स चउगुरुगातो अट्ठसु य अणवट्ठो । आयरियस्स छल्लहुयातो अट्ठसु चरिमं ।

अहवा – खेत्तबहि त्ति पढमं ठाणं, ततो परं अद्धजोयणवड्ढीए अट्ठेसु चउलहुगाति अट्ठसु पदेसु । "सपतं" ति पारंचियं भवति ।

अहवा – खेत्तबहिअद्धद्धजोणवुड्ढीए चउलहुगादि चउसु जोयणेसु पारंचियं । अभिक्खसेवाते अट्ठसु सपदं पावति ।

[2]आतिण्ण ति अस्य व्याख्या – चरग-परिव्वायग-हड्डसरक्खादिएहिं तडियकप्पडिएहिं य जा आइण्णा आकुला तं गच्छतो चउगुरु, तत्थ अतिजणसमद्देण हत्थपायपत्तादियाणं भंगो भवति । च सद्दाओ उवकरण सेहातियाण अवहारो भवति ॥१४७५॥

[3]अविसुद्धपह त्ति अस्य व्याख्या –

कायेहऽविसुद्धपहा, सावत तेणेहि पच्चवाता तु ।
दंसणवंभे आता, तिविध अवाता बहि तहिं वा ॥१४७६॥

संखडिं गच्छतो अंतरा काएहिं पुढवीआउवणस्सतितसातिएहिं पहो अविसुद्धो-संसक्तेत्यर्थः । "सपच्चवाय" त्ति जत्थ पच्चवाओ अत्थि सा सपच्चवाता । ते य पच्चवाया अंतरा बहिं वा, सीहादि-सावयतेणाहिमादिया । ते तु अणभिगयधम्मा तत्थ चरगादिएहिं वुग्गाहिज्जंति, एस दंसणावातो ।

चरियादियाहिं अण्णाहिं वा इत्थीहिं मत्तप्रमत्ताहिं आतपरसमुत्थेहिं दोसेहिं बंभविराहणा, एस चरणावायो । आयावातो वुत्तो । एतेहिं तिविधा अवाया भवंति ॥१४७६॥

१ गा० १४७२ । २ गा० १४७२ । ३ गा० १४७२ ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इमं पच्छित्तं –

दंसणवाये लहुगा, सेसावाएसु चउगुरु होंति ।
जीवित-चरित्तभेदा, विसचरिगादीसु गुरुगा तु ॥१४७७॥

दंसणावाये चउलहुं, सेसावाओ वंभावायो आयविराहणा य एतेसु चउगुरुं ।

इदाणिं "[1]भेदा य" त्ति अस्य व्याख्या –

जीवित पश्चार्धम् । तत्थ कनाति पडिणीओ उवासगादि विसं गरं वा देज्ज, जीवितभेदो भवति । चरिगाओ अण्णतराओ वा कुलटाओ चरित्तभेतो हवेज्ज । जीवित-चरणभेदेसु चउगुरुगं चेव पच्छित्तं ॥१४७७॥

एसमणाइण्णा खलु, तव्विवरीता तु होंति आइण्णा ।
आइण्णाए कायी, भत्तेण पलोयणं कारे ॥१४७८॥

एस जावंतियादिदोसदुट्ठा अणाइण्णा । जावंतियादिदोसविप्पमुक्का आइण्णा । कोइ सड्ढी आइण्णाए भणाति – तुब्भे पलोएह, जं एत्थ रुच्चति तं अच्छउ, सेसं मरुगादीआणं पयच्छामि ॥१४७८॥

तं जो उ पलोएज्जा, गेण्हेज्जा आयइज्ज वा भिक्खू ।
सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त-विराधणं पावे ॥१४७९॥

एवं भणितो जो तं पलोएज्ज गेण्हेज्ज वा, सादिएज्ज वा सो आणाभंगे वट्टति, अणवत्थं करेति, मिच्छत्तं जणयति । आयसंजमविराहणं च पावति ॥१४७९॥

पुव्वं पलोविते गहिते वा इमे दोसा –

पडिणीय विसक्खेवो, तत्थ व अण्णत्थ वा वि तण्णिस्सा ।
मरुगादीण पओसो, अधिकरणुप्फोस वित्तवयो ॥१४८०॥

साधुणा जं पलोइयं भत्तजाणग तत्थ पडिणीओ उवासगादि विसं खिवेज्ज ।

साधुणीसाए वा पविट्ठो अण्णत्थ वा को ति विसं पक्खिवेज्जा । अच्छंते य ठवणादोसा, मरुगादयः संखडिसामियस्स पदुट्ठा भोत्तुं गेच्छते, समणाण पुव्वं दत्तं उक्कोसं वा ठविय त्ति अगारदाहं वा करेज्ज, साहुं वा पदुट्ठो हणेज्ज, समुइएहिं वा छिक्कंति । उप्फोसेज्ज अहिगरणं भवति, सो वा संखडिसामिओ बीयारेसु अभुंजंतेसु संजयाणं पदुसेज्ज । रिक्को मे वित्तवयो जाओ होज्जति ।

अथवा – धिज्जाइयाणं दाणं दाउं भुजावेउ, एताणट्ठा वित्तवओ अधिगो जाओ त्ति ॥१४८०॥

भवे कारणं जेण पलोएज्ज ।

असिवे ओमोयरिए, रायदुट्ठे भए व गेलण्णं ।
अद्धाणरोधए वा, जतणाए पलोयणं कुज्जा ॥१४८१॥

इमा जयणा –

हत्थेण अदंसिंते (तो) अणावडंतो मणो (णे) ण मंतो य ।
दिस्सण्णतो मुहो भणति होज्ज ण कज्जममुएणं ॥१४८२॥

[1] गा० १४७२ ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

हत्थेण ण दाएति, इमो इम्रो त्ति, अणावडंतो अणाभिडंतो उ फासणादोसपरिहरणत्थं (णउणतो प्र.) णतो अण्णतो मुहं पलोएत्तो [1]सणियं भणाति "अमुगेण दहिमादिणा कज्जं होज्ज", तं च गच्छुवग्गहकरं पणीयं [2]पलिट्टं पज्जत्तं दव्वं पलोएति ॥१४८२॥

जे भिक्खू गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे परं ति-घरंतराओ असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा अभिहडं आहट्टु दिज्जमाणं पडिग्गाहेति; पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१५॥

तिण्णि गिहाणि तिघरं, तिघरमेव अंतरं तिघरंतरं, किमुक्तं भवति गृहत्रयात् परत इत्यर्थः।

अहवा – तिण्णि दो अंतरात् तृतीयअंतरात् परत इत्यर्थः। आयाए गृहीत्वा किंचित् असणाती अभिहडदोसेण जुत्तं आहट्टु साहुस्स देज्ज जो अणाइण्णं, तिघरंतरा परेणं आइण्णे वा अणुवउत्तो गेण्हति तस्स मासलहुं।

इमो णिज्जुत्ति-वित्थरो –

आइण्णमणाइण्णं, णिसिहाभिहडं व णो णिसीहं वा।
णिसीहाभिहडं ठप्पं, णो णिसीहं तु वोच्छामि ॥१४८३॥

आहडं दुविधं – आइण्णमणाइण्णं च। अणाइण्णं दुविधं–णिसीहाभिहडं, नो णिसीहाभिहडं च। णिसीहं णाम अप्रकाशं, णो णिसीहं णाम प्रकाशं। णिसीहाभिहडं चिट्ठउ ताव, णो णिसीहं ताव वोच्छामि ॥१४८३॥

सग्गाम-परग्गामे, घरंतरे णो घरंतरे चेव।
तिघरंतरा परेणं, घरंतरं तं मुणेयव्वं ॥१४८४॥

सग्गामाहडं दुविहं – घरतरं, णो घरंतरं च। तिघरंतराओ परेणं जं तं घरंतरं भण्णति॥१४८४॥

बाडग-साहि-णिवेसण, सग्गामे णो घरंतरं तिविहं।
परगामे वि य दुविधं, जलथल नावाए जंघाए ॥१४८५॥

बाडगाओ, साहितो, णिवेसणातो – वाडगस्स पाडगेति संज्ञा, घरपंती साही भण्णति, महाघरस्स परिवारघरा णिवेसणं भण्णति। जं परगामाहडं तं दुविहं – सदेसगामाओ, "इयरे" त्ति परदेसगामाओ वा। एवं दुविधं पि जलेण वा थलेण वा आणिज्जति। जं जलेण, तं नावा तारिमेण वा, जंघातारिमेण वा ॥१४८५॥

जं थलेण तं –

भंडी बहिलग काए सीसेण चतुव्विधं थले होति।
एक्केक्कं तं दुविधं, सपच्चवातेयरं चेव ॥१४८६॥

"भंडी" गड्डी भण्णति। "बहिलगो" त्ति गोणातिपिट्ठीए लगड्डादिएसु आणिज्जति "काए" त्ति कावोडीसंकातिएण आणिज्जति, सिरेण वा, एयं चउव्विधं थलेण भवति। एवं जल-थलेसु दुविधं पि-

१ सयं पा०। २ वलियं प्र०।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सपच्चवायं, "इतरं" वा अपच्चवायं। पच्चवाओ पुण जले गाहा-मगर-मच्छादि, थले चोर-सावत-वालातितो अणेगविहो ॥१४८६॥

एतं सदेसाभिहडं, भणितं एमेव होति परदेसे।
जल-थलमादी भेया, सपच्चवातेतरा णेया ॥१४८७॥

परदेसाभिहडे वि जल-थलादिभेदा सपच्चवाया इतरा सव्वे भाणियव्वा ॥१४८७॥

एयं णो णिसीहं भणियं।

णिसीहं भण्णति –

एसेव गमो णियमा, णिसीहाभिहडे वि होति णायव्वो।
आइण्णं पि य दुविधं, देसे तह देसदेसे य ॥१४८८॥

णिसीहाभिहडे वि एसेव गमो णेयव्वो। एयं सव्वं अणाइण्णं भणियं।

इदाणिं आइण्णं तं दुविधं – देसे देसदेसे य। देसो हत्थसयं, तस्स संभवो परिभुज्जमाणीए दीहाए घंघसालाए, संखडीए वा परिएसणपंतीए। हत्थसता आरतो देसदेसो भण्णति ॥१४८८॥

सुत्तनिवातो सग्गामाभिहडे तं तु गेण्हे जे भिक्खू।
सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त-विराधणं पावे ॥१४८९॥

सग्गामाभिहडे सुत्तणिवातो, सेसं कंठं ॥१४८९॥

अणाइण्णं पि कारणे गेण्हेज्जा, ण दोसो –

असिवे ओमोयरिए, रायदुट्ठे भये व गेलण्णे।
अद्धाण रोधए वा, जतणा गहणं तु गीतत्थे ॥१४९०॥

पणगपरिहाणी जयणाए जतिऊण जाहे मासियं पत्तो ताहे गेण्हति। गीयत्थ-गहणात्। गीयत्थो तं गेण्हंतो वि संविग्गो भवति।

अहवा – जयणं जाणति त्ति गीयत्थो गेण्हति स णिद्दोसो। अगीयत्थे पुण णत्थि जयणा, तेण तस्स जहा तहा गेण्हतो सदोसतेत्यर्थः ॥१४९०॥

जे भिक्खू अप्पणो पाए आमज्जेज वा पमज्जेज्ज वा,
आमज्जंतं वा पमज्जंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१६॥

अप्पणो पाए आमज्जति एक्कसि, पमज्जति पुणो पुणो।

अहवा हत्थेण आमज्जणं, रयहरणेण पमज्जणं। तस्स मासलहुं।

इमा णिज्जुत्ती –

आइण्णमणाइण्णा, दुविहा पादे पमज्जणा होति।
संसत्ते पंथे वा, भिक्ख-वियारे विहारे य ॥१४९१॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पुव्वद्धं कंठं । जा सा आइण्णा सा इमा – अणेगविहा, संसत्तो पादो आमज्जितव्वो, पंथे वा अथंडिलातो थंडिलं, थंडिलाओ वा अथंडिलं, अथंडिलातो वा थंडिले विलक्खणे, सकायसत्थे ति काउं संकमंतो कण्हभोमातीसु पमज्जति, भिक्खातो वा पडिणियत्तो, वियारे त्ति सण्णाभूमीओ वा आगतो, विहारे त्ति सज्झायभूमीए, गामंतराओ वा कुल-गणादिसु कज्जेसु पडिआगओ पमज्जति । मा उवकरणोवघातो भविस्सति त्ति ॥१४६१॥

एसा आइण्णा खलु तव्विवरीता भवे अणाइण्णा ।
सुत्तमणाएण्णाइं, तं सेवंतम्मि आणादी ॥१४६२॥

खलु अवधारणे, एयमातिकारणवतिरित्ता अणातिण्णा, सुत्तणिवातो अणाइण्णासु, तं अणाइण्णपमज्जणं णिसेवंतस्स आणादीया दोसा ॥१४६२॥

इमा संजमविराहणा –

संघट्टणा तु वाते, सुहुमे यऽण्णे विराधए पाणे ।
बाउसदोसविभूसा, तम्हा ण पमज्जए पादे ॥१४६३॥

पमज्जणे वाता संघट्टिज्जति, अण्णे य पयंगादी सुहुमे बादरे वा विराहेति, बाउसदोसो अ बंभचेरे अगुत्ती, तम्हा पादे ण पमज्जते ॥१४६३॥

वितियपदमणप्पज्झे, अप्पज्झुव्वातखज्जमाणे वा ।
पुव्वं पमज्जिऊणं वीसामे कंडुएज्जा वा ॥१४६४॥

अणप्पज्झो अनात्मवशः, खित्तचित्तादिएसु पमज्जणाइ करेज्ज । अप्पज्झो वा उव्वातो श्रान्तः सपमज्जिउं विसामिज्जति, खज्जमाणो वा पादो पमज्जिउं कंडुइज्जति । उक्तार्थं च पश्चार्धम् ॥१४६४॥

जे भिक्खू अप्पणो पाए संवाहेज्ज वा पलिमद्देज्ज वा,
संवाहेंतं वा पलिमद्देंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१७॥

"सं" इति प्रशंसा । शोभना बाहा संबाहा ।

सा चउव्विहा - अट्ठि सुहाए, मंस - रोम - तया, सा गुरुमाइयाण वियाले संबाधा भवति । जो पुण अड्ढरत्ते पच्छिमरत्ते वि दिवसतो वा अणेगसो संबाधेति सा परिमद्दा भण्णति ।

जे भिक्खू अप्पणो पाए तेल्लेण वा घएण वा वसाए वा णवणीए ण वा [1]मक्खेज्ज वा
भिलिंगेज्ज वा मक्खेंतं वा भिलिंगेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१८॥

जे भिक्खू अप्पणो पाए लोद्धेण वा कक्केण वा उल्लोलेज्ज वा उव्वट्टेज्ज वा
उल्लोलेंतं वा उव्वट्टेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१९॥

जे भिक्खू अप्पणो पाए सीयोदग-वियडेण वा उसिणोदग-वियडेण वा
उच्छोल्लेज्ज वा पधोएज्ज वा, उच्छोलेंतं वा पधोवंतं वा सातिज्जति
॥सू०॥२०॥

---

१ अब्भंगेज्ज वा प्र० ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सीतमुदगं सीतोदगं, "वियड" त्ति व्यपगतजीवं, उसिणमुदगं उसिणोदगं, तेण अप्पणो पादे एक्कसि उच्छोलणा, पुणो पुणो पधोवणा। एवं सव्वे सुत्ता उच्चारेयव्वा। [1]अब्भंगो थोवेण, बहुणा मक्खणं। अहवा – एक्कसिं बहुसो वा। [2]कक्कादि प्रथमोद्देशके अंगादाण गमेण णेयं।

जे भिक्खू अप्पणो पाए फुमेज्ज वा रएज्ज वा,
फुमेंतं वा रएतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२१॥

अलत्तयरंगं पादेसु लाएउं पच्छा फुमति। तं जो रयति वा, फुमति वा।

एतेसिं पंचण्हं सुत्ताणं संगहगाहा –

संबाहणा पधोवण कक्कादीणुव्वलण मक्खणं वा वि।
फुमणं वा [3]राइल्लं वा जो कुज्जा अप्पणो पादे ॥१४६५॥

संबाहण त्ति विस्सामणं, सीतोदगाइणा पधोवणं, कक्काइणा उव्वलणं, तेल्लाइणा मक्खणं, अलत्तगाइणा रंगणं, करेति तस्स आणाइया दोसा ॥१४६५॥

एतेसिं पढमपदा, सइं तु वितिया तु बहुसो बहुणा वा।
संबाहणा तु चतुधा, फूमंते लग्गते रागो ॥१४६६॥

एतेसिं सुत्ताणं पढमपदा संबाहणादि सकृत् करणे द्रष्टव्या, बितियपदा परिमद्दणाति बहुवारकरणे बहुणा वा करणे दट्ठव्वा। संबाहणा चउव्विहा उक्ता। अलक्तकरंगो फुमिज्जंतो लग्गति ॥१४६६॥

सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त-विराधणं तधा दुविधं।
पावति जम्हा तम्हा, एते तु पदे विवज्जेज्जा ॥१४६७॥

सव्वेसु जहासंभवं विराहणा भणियव्वा। गाढसंबाहणा चम्मं अवणेज्ज, अट्ठिभंगं वा करेज्ज। एवं उव्वलणे वि। पधोवणे एव चेव, उप्पिलावणादि वगे वि दोसा य। अब्भंगे वि मच्छिगाति-संपातिम-वहो। ॥१४६७॥

आत-पर-मोहुदीरण, बाउसदोसा य सुत्तपरिहाणी।
संपातिमाति घातो, विवज्जयो लोगपरिवायो ॥१४६८॥

रंगे पधोवणातिसु य आय-पर-मोहोदीरणं करेति, बाउसदोसो (सा) य भवति (भवंति), सुत्तत्थाणं च परिहाणी भवति। साधुक्रियायाः साधोरपरस्य वा विपर्ययो विपरीतता भवति। साधु-श्रावक-मिथ्यादृष्टिलोके परिवादो "पादाभ्यङ्गकरणेन परिज्ञायते न साधुरिति" ॥१४६८॥

कारणतो करेज्ज –

बितियपदं गेलण्णे, अद्धाणुव्वात - वाय - वासासु।
आदी पंचपदाऊ, मोह-तिगिच्छाए दोण्णितरे ॥१४६९॥

---

१ प्रथमोद्देशके चतुर्थसूत्रे। २ प्रथमोद्देशके पंचमसूत्रे। ३ रागयुक्तः।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

गिलाणस्स अद्धाणे वा, 'उव्वायस्स' वातेण वा गहियस्स, वासासु वा। "आइ" त्ति गिलाणपयं तम्मि संबाहाती पंच वि पया पउत्तव्वा। वेज्जोवदेसेण पायतलरोगिणो मगदंतियातिलेवेण अण्णेण वा रंगो कायव्वो। सेसेसु अद्धाणातिसु जहासंभवं। मोह-तिगिच्छाए रयणं फुमणं वा दो य कायव्वा।

अहवा – संबाहातियाण पंचण्ह पदाणं आइल्ला चउरो पता गिलाणाइसु संभवंति। दो फुमण रयण पता मोह-तिगिच्छाए संभवंति।

चोदगाह – णणु फुमण-रयणे मोहवुड्ढी भवति ?

आयरियाह – सातिसतोवदेसेण जस्स तहा कज्जंते य उवसमो भवति तस्स तहा कज्जति। किढिगाति आसेवणे वा। अद्धाणसंबाहणाति जहा संभवं। एवं वाते वि संबाह-सेय-अब्भंगणाति। वासासु वा कद्दमलित्ताण धोवणेति। अंगुलिमंतरा य कुहिया, कोद्दव-पलालधूमेण रज्जंति ॥१४९९॥

एवं कायाभिलावेण छ सुत्ता भाणियव्वा –

जे भिक्खू अप्पणो कायं आमज्जेज्ज वा पमज्जेज्ज वा,
आमज्जंतं वा पमज्जंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२२॥

जे भिक्खू अप्पणो कायं संबाहेज्ज वा पलिमद्देज्ज वा,
संबाहेंतं वा पलिमद्देंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२३॥

जे भिक्खू अप्पणो कायं तेल्लेण वा घएण वा वसाए वा णवणीएण वा मक्खेज्ज वा भिलिंगेज्ज वा, मक्खेतं वा भिलिंगेंतं वा सातिज्जति। ॥सू०॥२४॥

जे भिक्खू अप्पणो कायं लोद्धेण वा कक्केण वा उल्लोलेज्ज वा उव्वट्टेज्ज वा,
उल्लोलेंतं वा उवट्टेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२५॥

जे भिक्खू अप्पणो कायं सीयोदग-वियडेण वा उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा पधोएज्ज वा, उच्छोलेंतं वा पधोवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२६॥

जे भिक्खू अप्पणो कायं फुमेज्ज वा रएज्ज वा,
फुमेतं वा रएतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२७॥ एए छ सुत्ता पूर्ववत्।

इमो अइदेसगाहत्थो –

पादेसु जो तु गमो, णियमा कायम्मि होति स च्चेव।
णायव्वो तु मतिमता, पुव्वे अवरम्मि य पदम्मि ॥१५००॥

जो पायसुत्तेसु गमो कायसुत्तेसु वि छसु सो चेव दट्ठव्वो। केण नायव्वो ? मतिमता। मतिरस्यास्तीति मतिमं। पुव्वं उस्सग्गपदं, अवरं अववातपदं ॥१५००॥

एवं वणाभिलावेण ते चेव छ सुत्ता वत्तव्वा –

जे भिक्खू अप्पणो कायंसि वणं आमज्जेज्ज वा पमज्जेज्ज वा,
आमज्जंतं वा पमज्जंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२८॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जे भिक्खू अप्पणो कायंसि वणं संबाहेज्ज वा पलिमद्देज्ज वा
संबाहेंतं वा पलिमद्देंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२९॥

जे भिक्खू अप्पणो कायंसि वणं तेल्लेण वा घएण वा वसाए वा नवणीएण वा मक्खेज्ज वा भिलिंगेज्ज वा, मक्खेज्जंतं वा भिलिंगेज्जंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३०॥

जे भिक्खू अप्पणो कायंसि वणं लोद्धेण वा कक्केण वा उल्लोलेज्ज वा उव्वट्टेज्ज वा उल्लोलेंतं वा उव्वट्टेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३१॥

जेभिक्खू अप्पणो कायंसि वणं सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा पधोएज्ज वा उच्छोलेंतं वा पधोएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३२॥

जे भिक्खू अप्पणो कायंसि वणं फुमेज्ज वा रएज्ज वा,
फुमेतं वा रएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३३॥

दुविधो कायम्मि वणो, तदुब्भवागंतुगो तु णातव्वो ।
तद्दोसो व तदुब्भवो, सत्थादागंतुओ भणिओ ॥१५०१

कायव्वणो दुविधो – तत्थेव काये उब्भवो जस्स दोसो य तब्भवो, आगंतुएण सत्थातिणा कओ जो सो आगंतुगो । इमो तब्भवो तद्दोसो – कुट्ठं, किडिमं, दद्दू, विकिच्चिका, पामा, गंडातिया य । आगंतुगो-सत्थेण खग्गातिणा, कंटगेण वा, खाणूनो वा, सिरोवेधो वा, दीहेण वा, सुणह-डक्को वा ॥१५०१॥

एतेसामण्णतरं, जो तु वणंमि सयं करे भिक्खू ।
पमज्जणमादी तु पदे, सो पावति आणमादीणि ॥१५०२॥

एतेसिं अण्णतरे व्रणे जो पमज्जणातिपदे करेज्ज तस्स आणाती दोसा मासलहुं च पच्छित्तं ॥१५०२॥

सीस आह – वेयणट्टेण किं कायव्वं ?

आयरिय आह –

णच्चुप्पतितं दुक्खं, अभिभूतो वेयणाए तिव्वाए ।
अद्दीणो अव्वहितो, तं दुक्खऽहियासए सम्मं ॥१५०३॥

"णच्च" त्ति ज्ञात्वा दुःखमुत्पन्नं, वेद्यत इति वेदना, तिव्वाए वेयणाए सव्वं सरीरं व्याप्तमित्यर्थः । ण दीणो अदीणो पसण्णमणो स्वभावस्थ इत्यर्थः, ण वा ओहयमणसंकप्पे ।

अहवा – हा माते ! हा पिते ! एवमादि ण भासते । जो सो अदीणो ण वेयणट्टो अप्पणो सिरोरुकुट्टणादि करेति ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अहवा - ण वेयणट्टो चिंतेति - "अप्पाणं मारेमि" त्ति तं दुक्खमुप्पन्नं सम्मं अहियासेयव्वं इत्यर्थः ॥१५०३॥

कारणे पुण आमज्जणाति करेज्ज -

अव्वोच्छित्तिणिमित्तं, जीयट्ठी वा समाहिहेतुं वा ।
पमज्जणमादी तु पदे, जयणाए समायरे भिक्खू ॥१५०४॥

सुत्तत्थाणं अवोच्छित्ति करिस्सामि, जीवितट्ठी वा जीवंतो संजमं करिस्सामो, चउत्थाइणा वा तवेण अप्पाणं भाविस्सामि, णाण-दंसण-चरित्त-समाहि-साहणट्ठा वा ।

अहवा - समाहिमरणेण वा मरिस्सामि त्ति आमज्जणादिपदे जयणाए समायरेज्ज । जयणा जहा जीवोवघातो ण भवतीत्यर्थः ॥१५०४॥

जे भिक्खू अप्पणो कायंसि गंडं वा पिलगं वा अरइयं वा असियं वा भगंदलं वा अन्नयरेणं तिक्खेणं सत्थ-जाएणं अच्छिंदेज्ज वा विच्छिंदेज्ज वा अच्छिंदंतं वा विच्छिंदंतं वा सातिज्जति॥सू०॥३४॥

गच्छती ति गंडं, तं च गंडमाला, जं च अण्णं पिलगं तु पादगतं गंडं "अरतितं वा" अरतितो जं ण पच्चति, असी अरिसा ता य अहिट्ठाणे णासाते व्रणेसु वा भवंति । पिलिगा (पिलगा) सियलिया, भगंदरं अप्पण्णतो अधिट्ठाणे क्षतं किमियजालसंपण्णं भवति । बहुसत्थसंभवे अण्णतरेण तिक्खं स (अ) हिणाधारं जातमिति प्रकारप्रदर्शनार्थम् । एक्कसि ईषद् वा आच्छिंदणं, बहुवारं सुट्ठु वा छिंदणं विच्छिंदणं ।

गंडं च अरतियंसि, विग्गलं च भगंदलं च कायंसि ।
सत्थेणऽण्णतरेणं, जो तं अच्छिंदए भिक्खू ॥१५०५॥

गतार्था ।

जे भिक्खू अप्पणो कायंसि वा गंडं वा पिलगं वा अरइयं वा असियं वा भगंदलं वा अन्नयरेणं तिक्खेणं सत्थ-जाएणं अच्छिंदित्ता विच्छिंदित्ता पूयं वा सोणियं वा णीहरेज्ज वा विसोहेज्ज वा, णीहरेंतं वा विसोहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३५॥

पुव्वं सुत्तं सव्वं उच्चारेऊण इमे अइरित्ता आलावगा । "पूयं वा" पक्कं सोणियं पुतं भण्णति । रुहिरं सभावत्थं सोणियं भण्णति । णीहरति णाम णिग्गलति । अवसेसावयवा फेडणं विसोहणं भण्णति ।

जे भिक्खू अप्पणो कायंसि गंडं वा पिलगं वा अरइयं वा असियं वा भगंदलं वा अन्नतरेणं तिक्खेणं सत्थ-जाएणं अच्छिंदित्ता विच्छिंदित्ता णीहरित्ता विसोहेत्ता सीओदग-वियडेण वा उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा पधोवेज्ज वा उच्छोलेंतं वा पधोवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३६॥

जे भिक्खू दो वि पुव्व सुत्तालावगे भणिओ । इमे तइयसुत्तालावगा सीयोदगवियड-गतार्थम् ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जे भिक्खू अप्पणो कायंसि गंडं वा पिलगं वा अरइयं वा असियं वा भगंदलं वा अण्णयरेणं तिक्खेणं सत्थ-जाएणं अच्छिंदिता विच्छिंदित्ता णीहरित्ता विसोहेत्ता उच्छोलित्ता पधोइत्ता अन्नयरेणं आलेवण-जाएणं आलिंपेज्ज वा विलिंपेज्ज वा आलिंपंतं वा विलिंपंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।३७।।

जे भिक्खू तिण्हं वि सुत्ताणं आलावए वोत्तुं चउत्थसुत्ताइरित्ता इमे आलावगा बहु आलेवसंभवे। अण्णतरगहणं। आलिप्यते अनेनेति आलेपः जातग्गहणं प्रकारप्रदर्शनार्थं। सो आलेवो तिविधो–वेदण पसमकारी, पाककारी, पुतादि णीहरणकारी।

जे भिक्खू अप्पणो कायंसि गंडं वा पिलगं वा अरइयं वा असियं वा भगंदलं वा अण्णयरेणं तिक्खेणं सत्थ-जाएणं अच्छिंदित्ता विच्छिंदित्ता णीहरित्ता विसोहेत्ता पधोइत्ता विलिंपित्ता तेल्लेण वा घएण वा वसाए वा णवणीएण वा अब्भंगेज्ज वा मक्खेज्ज वा अब्भंगेंतं वा मक्खेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।३८।।

जे भिक्खू अप्पणो कायंसि गंडं वा इत्यादि चउरो वि सुत्तालावगे वोत्तु इमे पंचमसुत्तारिता आलावगा तेल्लेण वा गतार्थम्।

जे भिक्खू अप्पणो कायंसि गंडं वा पिलगं वा अरइयं वा असियं वा भगंदलं वा अण्णयरेणं तिक्खेणं सत्थ-जाएणं अच्छिंदित्ता विच्छिंदित्ता नीहरित्ता विसोहेत्ता पधोइत्ता विलिंपित्ता मक्खेत्ता अण्णयरेणं धूवणजाएणं धूवेज्ज वा पधूवेज्ज वा, धूवेंतं वा पधूवेंतं वा सातिज्जति।।सू०।।३९।।

एतेसिं इमा संगहणि-गाहा –

णीणेज्ज पूय-रुधिरं, तु उच्छोले सीत-वियड-उसिणेणं।
लेवेण व आलिंपति, मक्खे धूवे व आणादी ।।१५०६।।

णीणेज्ज पूयाती ततो उच्छोलेति, ततो आलिंपति, ततो मक्खेति, ततो धूवेति। एवं जो करेति सो आणातिदोसे पावति। आयविराहणा मुच्छाती भवति। सजमे आउक्कायातिविराहणा ।।१५०।

एवं ता जिणकप्पे, गच्छवासीण वि णिक्कारणे एवं चेव। जतो भण्णति –

णिक्कारणे ण कप्पति, गंडादीएसु छेअ-धुवणादी।
आसज्ज कारणं पुण, सो चेव गमो हवति तत्थ ।।१५०७।।

पुव्वद्धं कंठं। कारणे पुण आसज्ज, एसेव कमो – सत्थादिणा अ छिंदति, जइ ण पण्णपइ तो पूयाति णीहारेति। एवं अप्पणप्पंते उत्तरोत्तरपयकरणं ।।१५०७।।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

णच्चुप्पति तं दुक्खं, अभिभूतो वेयणाए तिव्वाए ।
अद्दीणो [1]अव्वहितो तं दुक्खऽहियासए सम्मं ॥१५०८॥

अव्वोच्छित्ति-णिमित्तं, जीतट्ठीए समाहिहेतुं वा ।
पमज्जणमादी तु पदे, जयणाए समायरे भिक्खू ॥१५०९॥

पूर्ववत् ।

जे भिक्खू अप्पणो पालु-किमियं वा कुच्छि-किमियं वा, अंगुलीए
निवेसिय निवेसिय णीहरति, णीहरंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४०॥

पालु अपानं, तम्मि किमिया समुच्छंति । कुक्खीए किमिया कुच्छि-किमिया, ते य जूआ भवंति । ते जति सण्णं वोसिरिउ अपाणब्भंतरे थक्केज्जंतो ते पालुकिमिये अंगुलीए णिवेसिय प्रवेश्य पुणो पुणो णीहरति परित्यजतीत्यर्थः ।

इमा णिज्जुत्ती –

गंडादिएसु किमिए, पालु-किमिते च कुच्छि-किमिते वा ।
जो भिक्खू णीहरती, सो पावति आणमादीणि ॥१५१०॥

गंडादिएसु व्रणेसु पालुओ वा, कुच्छि-किमिए वा, जो भिक्खू णीहरति सो आणातिदोसे पावति ।

णीहरणकप्पोवदरिसणत्थं भण्णति –

णिक्कारणे सकारणे, अविधि विधी कट्ठमादिगा अविधी ।
अंगुलमादी तु विधी, कारणे अविधीए सुत्तं तु ॥१५११॥

णिक्कारणे अविधीए, कारणे विधीए । कट्ठमादिएहिं जति णीहरति तो अविधी, अंगुलमादिएहिं विधी भवति । ततियभंगे सुत्तं, चरिमे सुद्धो । दोसु आइल्लेसु चउलहुं ।

उस्सग्गेणं विधीए अविधीए वा ण णीहरियव्वा । तेसु विराहिज्जंतेसु संजमविराहणा, खते आयविराहणा, तत्थ गिलाणादि आरोवणा तम्हा अहियासेयव्वं ॥१५११॥

णच्चुप्पइ तं दुक्खं, अभिभूतो वेदणाए तिव्वाए ।
अद्दीणो अव्वहितो, तं दुक्खऽधियासए सम्मं ॥१५१२॥

अव्वोच्छित्ति-णिमित्तं, जीतट्ठीए समाधिहेतुं वा ।
गंडादीसु किमिए, जतणाए णीहरे भिक्खू ॥१५१३॥

तेसिं णीहरणे का जयणा ? पउमे वा, अल्लचम्मे वा । सेसं पूर्ववत् ॥१५१३॥

जे भिक्खू अप्पणो दीहाओ णह-सिहाओ कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा,
कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४१॥

---

१ निश्चलः ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जे भिक्खू अप्पणो दीहाइं जंघ-रोमाइं कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा,
कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।४२।।

जे भिक्खू अप्पणो दीहाइं कक्ख-रोमाइं कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा,
कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।४३।।

जे भिक्खू अप्पणो दीहाइं मंसु-रोमाइं कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा,
कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।४४।।

जे भिक्खू अप्पणो दीहाइं वत्थि-रोमाइं कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा,
कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जिति ।।सू०।।४५।।

जे भिक्खू अप्पणो दीहाइं चक्खु-रोमाइं कप्पेज्ज वा, संठवेज्ज वा,
कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।४६।।

जे भिक्खू अप्पणो दंते आघंसेज्ज वा पघंसेज्ज वा,
आघंसंतं वा पघंसंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।४७

जे भिक्खू अप्पणो दंते उच्छोलेज्ज वा पधोएज्ज वा,
उच्छोलेंतं वा पधोवेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।४८।।

जे भिक्खू अप्पणो दंते फुमेज्ज वा रएज्ज वा,
फुमेंतं वा रएंतं वा सातिज्जति ।।सू०। ४९।।

जे भिक्खू अप्पणो उट्ठे आमज्जेज्ज वा पमज्जेज्ज वा,
आमज्जंतं वा पमज्जंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।५०।।

जे भिक्खू अप्पणो उट्ठे संवाहेज्ज वा पलिमद्देज्ज वा,
संवाहेंतं वा पलिमद्देंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।५१।।

जे भिक्खू अप्पणो उट्ठे तेल्लेण वा घएण वा वसाए वा णवणीएण वा मक्खेज्ज वा
भिलिंगेज्ज वा, मक्खेंतं वा भिलिंगेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।५२।।

जे भिक्खू अप्पणो उट्ठे लोद्धेण वा कक्केण वा उल्लोलेज्ज वा उव्वट्टेज्ज वा,
उल्लोलेंतं वा उव्वट्टेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।५३।।

जे भिक्खू अप्पणो उट्ठे सीओदग-वियडेण वा उसिणोदग-वियडेण वा
उच्छोलेज्ज वा पधोवेज्ज वा, उच्छोलेंतं वा पधोवेंतं वा
सातिज्जति ।।सू०।।५४।।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जे भिक्खू अप्पणो उट्ठे फुमेज्ज वा रएज्ज वा,
फुमेंतं वा रयंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५५॥

जे भिक्खू अप्पणो दीहाइं उत्तरोट्ठ-रोमाइं कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा,
कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५६॥

जे भिक्खू अप्पणो दीहाइं अच्छि-पत्ताइं कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा,
कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५७॥

जे भिक्खू अप्पणो अच्छीणि आमज्जेज्ज वा पमज्जेज्ज वा,
आमज्जंतं वा पमज्जंतं वा सातिज्जति ॥सू०५८॥

जे भिक्खू अप्पणो अच्छीणि संवाहेज्ज वा पलिमद्देज्ज वा
संवाहेंतं वा पलिमद्देंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५९॥

जे भिक्खू अप्पणो अच्छीणि तेल्लेण वा घएण वा वसाए वा णवणीएण वा
मक्खेज्ज वा भिलिंगेज्ज वा, मक्खेंतं वा भिलिंगेंतं वा
सातिज्जति ॥सू०॥६०॥

जे भिक्खू अप्पणो अच्छीणि लोद्धेण वा कक्केण वा उल्लोलेज्ज वा
उव्वट्टेज्ज वा, उल्लोलेंतं वा उव्वट्टेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६१॥

जे भिक्खू अप्पणो अच्छीणि सीओदग-वियडेण वा उसिणोदग-वियडेण वा
उच्छोलेज्ज वा पधोएज्ज वा, उच्छोलेंतं वा पधोएंतं वा
सातिज्जति ॥सू०॥६२॥

जे भिक्खू अप्पणो अच्छीणि फुमेज्ज वा रएज्ज वा,
फुमेंतं वा रएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६३॥

जे भिक्खू अप्पणो दीहाइं भुमग-रोमाइं कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा,
कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६४॥

जे भिक्खू अप्पणो दीहाइं पास-रोमाइं कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा,
कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६५॥

जे भिक्खू अप्पणो दीहाइं केसाइं कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा,
कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६६॥

जे भिक्खू दीहाओ अप्पणो णहा इत्यादि - जाव - अप्पणो दीहे केसे कप्पेइ इत्यादि छवीसं सुत्

१ उच्चारेयव्वा ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सुत्तत्थो णिज्जुत्ती य लाघवत्थं जुगवं वक्खाणिज्जंति –

जे भिक्खु णह-सिहाओ, कप्पेज्जा अधव संठवेज्जा वा ।
दीहं च रोमराई, मंसू केसूत्तरोट्ठं वा ॥१५१४॥

णहाणं सिहा णहसिहा, नखाग्रा इत्यर्थः । कप्पयति छिनत्ति, संठवेति तीक्ष्णे करोति, चंद्रार्धे सुकतुंडे वा करोति । रोमराती पोट्टे भवति, ते दीह कप्पेति, संठवेति, सुविहत्ते अधोमुहे ओ (उ) लिहति । मंसु- चिबुके, जंघासु, गुह्यदेसे वा, छिंदति, संठवेति वा । केसे त्ति सिरजे, ते छिंदति संठवेति वा । उत्तरोट्ठे रोमा दाढियाओ वा, ता छिंदति संठवेति वा ॥१५१४॥

भमुहाओ दंतसोधण, अच्छीण पमज्जणणाइगाइं वा ।
सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त-विराधणं पावे ॥१५१५॥

एवं णासिगा-भमुग-रोमे वि । दंतेसु अंगुलीए सकृदामज्जणं, पुणो पुणो पमज्जणं । दंतधोवणं दंतकट्टं, अचित्ते सुत्तं । तेण एक्कदिणं आघंसणं, दिणे दिणे पघंसणं । दंते फूमति रयति वा पादसूत्रवत् । अच्छीणि वा आमज्जति णाम अविखपत्तरोमे संठवेति, पुणो पुणो करेंतस्स पमज्जणा ।

अहवा – बीयकणुगादीणं सकृत् अवणयणे आमज्जणा, पुणो पुणो पमज्जणा । आदिसद्दातो जे अच्छीणि पधोवति । उसिणाइणा पउंछति णाम अंजणेणं अंजेति । अच्छीणि फुमणरयणा पूर्ववत् । विसेसो कणुगादिसु फुमणं संभवति । एवं करेंतस्स आणातिविराहणातिया दोसा ॥१५१५॥

आमज्जणा पमज्जणं, सइ असइ धोवणं तु णेगविधं ।
चीपादीण पमज्जण, फुमणपसंतं जणे रागो ॥१५१६॥

उक्तार्थः । पसयमिति पसती, चुलुगो भण्णति, दव्वसंभारकयं पाणीयं । तं चुलुगे छोढुं, तत्थ णिवुड्डं अच्छिं धरेति, ततो उच्छुड्डुं फुमति रागो लग्गति, अंजियं वा फुमति रागो लग्गति ।

अहवा – पसयमिति दोहिं तिहिं वा णावापूरेहिं अच्छिं धोवति, ततो अंजेति, ततो फुमति- रागो लग्गति ॥१५१६॥

इमे दोसा –

आत-पर-मोहुदीरण, बाउसदोसा य सुत्तपरिहाणी ।
संपातिमातिघातो, विवज्जते लोगपरिवाओ ॥१५१७॥

पूर्ववत्

बितियपदं सामण्णं, सव्वेसु पदेसु होज्ज ऽणाभोगो ।
मोह-तिगिच्छाए पुण, एतो विसेसियं वोच्छं ॥१५१८॥

णहसिहातितो सव्वे सुत्तपडिसिद्धे अत्थे अणाभोगतो करेज्ज, मोह-तिगिच्छाए वा करेज्ज । अतो परं [1]तेरसपयाण पइ अवसेसियं बितियपदं भण्णति ॥१५१८॥

१ छत्तीस ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

चंकमणमावडणे, लेवो देह-खत असुइ णक्खेसु ।
वण-गंड-रतिअंसिय, भगंदलादीसु रोमाइं ॥१५१६॥

चंक्रमतो पायणहा उपल-खाणुगादिसु अप्फिडंति। पडिलोमो वा भज्जति। हत्थणहा वा भायणे लेवं विणासेंति । देहं सरीरं, तत्थ खयं करेज्ज । ताहे लोगो भणेज्ज-एस कामी, अविरइयाए से णहपया दिण्ण त्ति । एयदोसपरिहरणत्थं छिंदंतो सुद्धो । संठवणं क्रमतादिणा घसति । लोगो य भणति – दीहणहंतरे सण्णा चिट्ठति त्ति असुइणो एते । अवि य पायणहेसु दीहेसु अंतरंतरे रेणू चिट्ठति, तीए चक्खु उवहम्मति । व्रण-गंड-अरइयंसि-भगंदरादिसु रोमा उवघायं करेंति, लेवं वा अंतरेंति, अतो छिंदति संठवेति वा ॥१५१६॥

दंतामय दंतेसु, णयणाणं आमया तु णायणेसु ।
भुमया अच्छि-णिमित्तं, केसा पुण पव्वयंतस्स ॥१५२०॥

दंतेसु दंतामयो दंतरोगो, तत्थ दंतवणातिणा आघसंति । एवं णयणामये वि णयणे धोवति, रयति, फुमति वा। भमुगरोमा वा अतिदीहा, अइमहल्लत्तणेण य अच्छीसु पडंते छिंदति संठवेति वा। पव्वयंतस्स अतिदीहा केसा, लोओ काउं ण सक्केति, सिररोगिणो वा केसे कप्पिज्जंति ॥१५२०॥

जे भिक्खू अप्पणो कायाओ सेयं वा जल्लं वा पंकं वा मलं वा नीहरेज्ज वा विसोहेज्ज वा, नीहरेंतं वा विसोहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६७॥

जे भिक्खू अप्पणो अच्छिमलं वा कण्णमलं वा दंतमलं वा नहमलं वा णीहरेज्ज वा विसोहेज्ज वा, णीहरेंतं वा विसोहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६८॥

सेयो प्रस्वेदः स्वत्यः (च्छ) मले (ल) छि (थि) गलं जल्लो भणति । एस एव प्रस्वेद उल्लिउतो पंको भण्णति, अण्णो वा जो कद्दमो लग्गो । मलो पुण उत्तरमाणो, अच्छो रेणू वा । सकृत् उवट्टणं, पुणो पुणो पव्वट्टणं कक्काइणा वा ।

जे भिक्खू अच्छिमलं वा इत्यादि अच्छिमलो दूसिकादि। कण्णमलो कण्णगूधा (ला) ति । दंतकिणो दंतमलो । णहमलो णहविच्चरेणू । णीहरति अवणेति, असेस विसोहणं ।

सेयं वा जल्लं वा, जे भिक्खू णिहरेज्ज कायातो ।
कण्ण-ऽच्छि-दंत-णह-मल, सो पावति आणमादीणि ॥१५२१॥

पढमसुत्तत्थो पुव्वद्धेण, बितियसुत्तत्थो पच्छद्धेण । आणादिया दोसा, आयविराहणा, पमत्तं देवता छलेज्ज, अप्परुतीए वा बाउसदोसा भवंति । सुत्तत्थेसु य पलिमंथो ॥१५२१॥

जल्लो तु होति कमढं, मलो तु हत्थादि घट्टितो सडति ।
पंको पुण सेउल्लो, चिक्खलो वा वि जो लग्गो ॥१५२२॥

खरंटो उ जो मलो तं कमढं भण्णति। सेसं कंठं ॥१५२२॥

बितियपदमणप्पज्झे, णयणवणे ओस धामए चेव ।
मोह-तिगिच्छाए पुण, णीहरमाणो णतिक्कमति ॥१५२३॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अणप्पज्झो खित्तचित्तादि, सव्वे उव्वट्टणादि अववाय पदे करेज्ज। णयणे वा दूसिओ, बद्धो अच्छिरोगेण वा किंचि अच्छीओ उद्धरियव्वं। सरीरे वा घूणो, तस्स अब्भासे मलादि फेडिज्जति, मा तेण वणो दज्झिहिति।

अहवा – कच्छू दद्दू किडभं अण्णो वा कोति आमयो, स ओसहेहिं उव्वट्टिज्जति। मोह - तिगिच्छाए वा, पुणो विसेसणे अण्णहा मोहो णोवसमति त्ति एवं विसेमेइ त्ति। एवं करेंतो धम्ममेरं आणं वा णातिकम्मति ॥१५२३॥

जे भिक्खू गामाणुगामं दूइज्जमाणे अप्पणो सीसदुवारियं करेति, करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६८॥

मासकप्पो जत्थ कतो ततो जं गम्मइ तं गामाणुगामं। एत्थ अणुसद्दो पच्छाभावे।

अधवा – गच्छतो अग्गतो अणुकूलो गामो गामाणुगामो। दोसु सिसिर-गिम्हेसु रीइज्जति दूइज्जति, दोसु वा पदेसु रीइज्जति। सीसस्स आवरणं सीस दुवारं।

अहवा – सीसस्स एगं दुवारं [1]सीसदुवारिया। अप्पणो अप्पणा जो करेति तस्स मासलहुं।

भिक्ख-वियार-विहारे, दूतिज्जंतो व गामणुग्गामिं।
सीसदुवारं भिक्खू, जो कुज्जा आणमादीणि ॥१५२४॥

भिक्खं हिंडंतो वियारं सण्णभूमिं गच्छंतो, एएसु जो सीसदुवारियं करेति सो आणातिदोसे पावति। सीसदुवारियाए उवकरणभोगविवच्चासो। विवच्चासभोगे इमे पगारा पच्छित्तं च ॥१५२४॥

खंधे दुवार संजति, गरुलऽद्धंसो य पट्ट लिंगदुवे।
लहुओ लहुओ लहुया, तिसु चउगुरु दोसु मूलं तु ॥१५२५॥

चउप्फलं मोक्कलं वा खंधे करेति, दुवार इति सीसदुवारिया करेति, दो वि बाहाओ छाएंतो संजतिपाउरणेण पाउणति, एगतो दुहतो वा कप्पअंच्चला खंधारोविया गरुलपक्खं पाउणति, अद्धंसो उत्तरासंगो, पट्ट इति चोलपट्टं बंधति, लिंगदुगं – गिहीलिंगं अण्णउत्थियलिंगं वा करेइ। एतेसु जहासंखं इमं पच्छित्तं – लहुगो वा पच्छद्धं। अकारणे भोगविवच्चासं करेंतस्स एयं पच्छित्तं ॥१५२५॥

अहवा –

परिभोगविवच्चासो, लिंगविवेगे य छत्तए तिविधे।
गिहिपंत-तक्करेसु य, पच्चवाता भवे दुविहा ॥१५२६॥

सीसदुवारे परिभोगविवच्चासो भवति। उवकरणणिप्फण्णं साहुलिंगविवेगो भवति। छत्तयकरणं च भवति। गिहिपंता साहुभद्दगा जे तक्करा गिहि त्ति काउं मुसंति। इहलोइय-परलोइया दुविधा पच्चवाया भवंति।

अहवा – आय-संजमविराहणा। गिहि-पंत-तक्करेहिं आहम्मति आयविराहणा। विवच्चासभोगे संजमविराधणा ॥१५२६॥

---

१ दे० मस्तक-अवगुण्ठन अथवा घूंघट।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

छत्तए तिविघे त्ति –

चउफल पोत्तिं सीसे, बहु पाउरणं तु बितियगं छत्तं ।
हत्थुक्खित्तं वत्थं, ततियं छत्तं च पिंछादी ॥१५२७॥

चउप्फलं कप्पं सिरे करेति । बहुपाउरणं णाम अंगुट्ठिं करेति, एयं बितियं छत्तं । हत्थुक्खित्तदंडए वा काउं धरेति, तइअयं छत्तयं ।

अहवा – दो पुव्वुत्ता, ततियं पिच्छातिछत्तयं धरेति । जम्हा एते दोसा तम्हा णो सीसदुवारियं करे ॥१५२७॥

कारणे करेज्ज वि –

बितियपदं गेलण्णे, असहू सागारसेधमादीसु ।
अद्धाणे तेणेसु य, संजत-पंतेसु जतणाए ॥१५२८॥

गिलाणो उण्हं ण सहति । कण्णा वा से तस्स भरिज्जंति । रायाति दिक्खितो वा असहू धारयति । सेहस्स वा सागारियं ति काउं अंगुट्ठिं करोति । आदिसद्दातो असेहो वि पडिणीयस्स अण्णस्स वा संकंतो जातिमाति जुंगितो करेति । अद्धाणे वा उण्हं ण सेहेज्ज । तिसिओ वा, संजयपंतेसु वा तेणेसु अंगुट्ठिं करेति । जयणाए त्ति सलिंगोवहिणा सीसदुवारे कए णज्जति तो गिहि-कासायमादिवत्थं घेत्तुं करेति । एवं जहा ण णज्जति तहा तहा करेति । एस जयणा ॥१५२८॥

जे भिक्खू सण-कप्पासओ वा उण्ण-कप्पासओ वा पोंड-कप्पासओ वा अमिल-कप्पासओ वा वसीकरण-सोत्तियं करेति, करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७०॥

सणो वणस्सतिजाती, तस्स वागो कच्चणिज्जो कप्पासो भण्णति, "उण्ण" त्ति लाडाणं गड्डुरा भण्णंति, तस्स रोमा कच्चणिज्जा कप्पासो भण्णति ।

अहवा – उण्णा एव कप्पासो उण्णा कप्पासो । पोंडा वमणी तस्स फलं, तस्स पम्हा कच्चणिज्जा कप्पासो भण्णति । अवसा वसे कीरंति जेणं तं वसीकरणसुत्तयं, सो पुण दोरो जेण वासे कीरइ उवकरणं बज्झति त्ति वुत्तं भवति ।

वसिकरण-सुत्तगस्सा, अंछणयं वट्टणं व जो कुज्जा ।
बंधण-सिव्वणहेतुं, सो पावति आणमादीणि ॥१५२९॥

सचित्ताचित्तदव्वा जेण वसीकीरते तं वसीकरणसुत्तयं जो करेति । अंछणं णाम – पण्ह (म्ह) पसिरणं, वट्टणं णाम दो तंतू एक्कतो वलेति, जहा सिव्वणदोरो, सिक्कगदोरो वलणं वा वट्टणं, पम्हए वा भंगो वट्टणं, उवकरणाति बंधणहेउं फट्टस्स वा सिव्वणहेउं । सो आणाती दोसे पावति ॥१५२९॥

अवसा वसम्मि कीरंति, जेण पसवो वसंति व जता ऊ ।
अंछणता तु पसिरणा, वट्टण सुत्ते व रज्जू वा ॥१५३०॥

पसवो गवाती, संजया ण तडप्फडे, जया वसंति, पसरणं पण्हाए, वट्टणं सुत्ते वा रज्जुए वा ॥१५३०॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अंछणतवट्टणं वा, करेंति जीवाण होति अविघातो।
ऊरु य हत्थ छोडण, गिलाण आरोवणायाए ॥१५३१॥

अंछणयवट्टणासु संपातिमातिपाणा अइवाइज्जंति, ऊरं वा छोडिज्जति, छणिज्जति त्ति वुत्तं भवति, हत्था वा छणिज्जंति, फोडगा वा भवंति, तत्थ आयविराहणा गिलाणारोवणा य ॥१५३१॥

कारणा करेज्ज –

अद्धाण-णिग्गतादी, झामिय वूढे व तेणमादीसु।
दुल्लभसुत्ते असती, जतणाए कप्पती कातुं ॥१५३२॥

अद्धाणणिग्गताती, आदिसद्दातो – पवेसे अद्धाणे ठिया वा, आदिसद्दाओ असिवओमा, दुव्वलोव-करण-संधण-सिव्वण-सिक्कगादिहेउं वा, एवं झामिते उवकरणे, णतीपूरेण वा वूढे, तेणेसु वा हरिते, आदिसद्दाओ पडिणीएण वा, एतेहिं कारणेहिं अहाकडं घेत्तव्वं। दुल्लभसुत्ते देसे अरण्णातिसु वा असती णत्थि सुत्तं जयणाए अप्पणा काउं कप्पति। पुव्वं पेलू पिंजतो रूअं कप्पासो एस जयणा।

अहवा – पणगहाणी जाहे मासियं पत्तो ताहे पसिरणाति करेति ॥१५३२॥

जे भिक्खू गिहंसि वा गिह-मुहंसि वा गिह-दुवारियंसि वा गिह-पडिदुवारियंसि वा गिहेलुयंसि वा गिहंगणंसि वा गिह-वच्चंसि वा उच्चारं वा पासवणं वा परिट्ठवेति, परिट्ठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७१॥

थंडिल-तिविहुवघातिं, गिह तस-अगणी य पुढविसंबद्धं।
आऊवसतीए, विभासितव्वं जधा सुत्ते ॥१५३३॥

थंडिलं तिविहोवघातियं – आय-पवयण-संजमं। गिहे आउवघाओ, तस-अगणि-पुढवि-आउ-वणस्सति संबद्धं संजमोवघातितं। विभापा, वित्थारेण कर्तव्या। जहा सुत्ते आयारबितियसुत्तखंधे थंडिलसत्तिक्कए ॥१५३३॥

इमो सुत्तत्थो –

अंतो गिहं खलु गिहं, कोट्ठगसुविधी य गिहमुहं होति।
अंगणं मंडवथाणं, अग्गदारं दुवारं तु ॥१५३४॥

घरस्स अंतो गिहब्भंतरं गिहं भण्णति। गिह-गहणेण वा सव्वं चेव घरं घेप्पति। कोट्ठओ – अग्गिमालिंदओ, सुविही-व (छ) द्दारुआलिंदो, एते दो वि गिहमुहं। गिहस्स अग्गतो अब्भावगासं मंडवथाणं अंगणं भण्णति। अग्गदारं पवेसितं तं गिहदुवारं भण्णति ॥१५३४॥

गिहवच्चं पेरंता, पुरोहडं वा वि जत्थ वा वच्चं।

गाहद्धं गिहस्स समंततो वच्चं भण्णति। पुरोहडं वा वच्चं पत्थं ति वुत्तं भवति। जत्था वा वच्चं करेंति, तं वच्चं सण्णाभूमी भण्णति।

जे भिक्खू मडग-गिहंसि वा मडग-च्छारियंसि वा मडग-थूभियंसि वा मडग-आसयंसि वा मडग-लेणंसि वा मडग-थंडिलंसि वा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मडग-वच्चंसि वा उच्चारं पासवणं परिट्ठवेइ, परिट्ठवेंतं वा
सातिज्जति ।।सू०।।७२।।

इमो सुत्तत्थो:

मडगगिहा मेच्छाणं, थूभा पुण विच्चगा होंति ।।१५३५।।

छारो तु अपुंजकडो, छारचिता विरहितं तु थंडिल्लं ।
वच्चं पुण पेरंता, सीताणं वा वि सव्वं तु ।।१५३६।।

मडगगिहं णाम मेच्छाणं घरब्भंतरे मतयं छोढुं विज्जति, न डज्झति, तं मडग-गिहं । अभिणव-दड्ढं अपुंजकयं छारो भण्णति । इट्टगादिचिया विच्चा थूभो भण्णति । मडाणं आश्रयो मडाश्रय स्थानमित्यर्थः । मसाणासण्णे आणेत्तुं मडयं जत्थ मुच्चति तं मडासयं । मडयस्स उवरिं जं देवकुलं तं लेणं भण्णति । छारचितिवज्जितं केवलं मडयदड्ढट्ठाणं थंडिलं भण्णति । मडयपेरंतं वच्चं भण्णति । सव्वं वा [1]सीताणं सीताणस्स वा पेरंतं वच्चं भण्णति ।।१५३६।।

जे भिक्खू इंगाल-दाहंसि वा खार-दाहंसि वा गात-दाहंसि वा तुस-दाहंसि वा
ऊस-दाहंसि वा उच्चारं वा पासवणं वा परिट्ठवेइ
परिट्ठवेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।७३।।

इमो सुत्तत्थो –

इंगाल-खार-डाहो, खदिगदी वत्थुलादिया ।
गोमादिरोगसमणो, दहंति गत्ते तहिं जासि ।।१५३७।।

खइराती इंगाला, वत्थुलमाती खारो, जरातिरोगमरंताणं गोरूआणं रोगपसवणत्थं जत्थ गाता डज्झंति तं गात-दाहं भण्णति । कुंभकारा जत्थ बाहिरओ तुसे डहंति तं तुसडाहठाणं । प्रतिवर्षं खलगट्ठाणे [2]ऊसणं जत्थ भुसं डहंति तं भुसडाहठाणं भण्णति ।।१५३७।।

जे भिक्खू अभिणवियासु वा गोलेहणियासु अभिणवियासु वा मट्टियाखाणिसु वा
परिभुज्जमाणियासु वा अपरिभुज्जमाणियासु वा
उच्चारं वा पासवणं वा परिट्ठवेति,
परिट्ठवेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।७४।।

इमो सुत्तत्थो –

ऊसत्थाणे गाओ, लिहंति भुंजंति अभिणवा सा तु ।
अचियत्तमणलेहण, एमेव य मट्टियाखाणी ।।१५३८।।

जत्थ गावो ऊसत्थाणा लिहंति, सा भुजमाणी णिरुद्धा ण वा भण्णति । तत्थ दोसा – सचित्तमीसो

---

१ स्मशान । २ प्रायः ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पुढविकायो, अचियत्तं गोसामियस्स वा। ण वा तत्थ गावो लेहवंति अंतरायदोसो, अण्णत्थ वा लेहवेति पुढविवहो। मट्टियाखाणीए वि सच्चित्तमीसा पुढवि, जणवयस्स वा अचियत्तं, अण्णं वा खाणीं पवत्तेति ॥१५३८॥

जे भिक्खू सेयाययणंसि वा पंकंसि वा पणगंसि वा उच्चारं वा
पासवणं वा परिट्ठवेइ, परिट्ठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७५॥

इमो सुत्तत्थो –

पंको पुण चिक्खल्लो, पणओ पुण जत्थ मुच्छते ठाणे।
सेयणपहो तु णिक्का, सु(मु)क्कंति फला जहिं वच्चं ॥१५३९॥

सचित्ताचित्तविसेसणे पुण सद्दो। आयतनमिति स्थानं। पणओ उल्ली। सो जत्थ ठाणे समुच्छंति तं पणगट्ठाणं। कद्दमबहुलं पाणीयं सेओ भण्णति, तस्स आययणं णिक्का ॥१५३९॥

जे भिक्खू उंबर-वच्चंसि वा णग्गोह-वच्चंसि वा असत्थ-वच्चंसि वा
उच्चारं वा पासवणं वा परिट्ठवेइ, परिट्ठवेंतं वा सातिज्जति॥सू०॥७६॥

जे भिक्खू [1]डाग-वच्चंसि वा साग-वच्चंसि वा मूलय-वच्चंसि वा
कोत्थुंबरि-वच्चंसि वा खार-वच्चंसि वा जीरय-वच्चंसि वा
दमण (ग) वच्चंसि वा मरुग-वच्चंसि वा
उच्चारं वा पासवणं वा परिट्ठवेइ,परिट्ठवेंतं वा सातिज्जति॥सू०॥७७॥

जे भिक्खू इक्खु-वणंसि वा सालि-वणंसि वा कुसुंभ-वणंसि वा कप्पास-वणंसि वा
उच्चारं वा पासवणं वा परिट्ठवेइ, परिट्ठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७८॥

जे भिक्खू असोग-वणंसि वा सत्तिवण्ण-वणंसि वा चंपग-वणंसि वा
चूय-वणंसि वा अन्नयरेसु वा [2]तरुप्पगारेसु वा पत्तोवएसु पुप्फोवएसु
फलोवएसु बीओवएसु उच्चारं वा पासवणं वा परिट्ठवेइ,
परिट्ठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७९॥

उंबरस्स फला जत्थ गिरिउडे उच्चविज्जंति तं उंबरवच्चं भण्णति। एवं णग्गोहो वडो, असत्थो-पिप्पलो, पिलक्खू पिप्पलभेदो, सो पुण इत्थयाभिहाणा पिप्पली भण्णति ॥१५३९॥

एतेसामण्णतरं, थंडिल्ले जो तु वोसिरे भिक्खू।
पासवणुच्चारं वा, सो पावति आणमादीणि ॥१५४०॥ कंठा

एते पुण सव्वे वि थंडिला देशाऽऽहिडकेन जनददप्रसिद्धा ज्ञेया। तिविघे उवघाए पाडंति।

आया संजम पवयण, तिविधं उवघाइयं तु णातव्वं।
गिहमादिंगालादी, सुसाणमादी जहा कमसो ॥१५४१॥

१ डागो, पत्रसागो। २ तहप्पगारेसु।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

गिहे आउवाघातो। तं गिहं अपरिग्गहेतरं वा। अपरिग्गहे मासलहुं, सपरिग्गहे चउलहुं, गेण्हण-कड्ढणादयो दोसा। एवं मडगातिसु वि सुसाणमातिएसु पवयणोवघातो, असुतिठाणासेविणो एते कापालिका इव। चउलहुं अवसेसा प्रायसो संजमोवघातिणो उवउज्ज अप्पणा जो जत्थ उवघातो सो तत्थ वत्तव्वो ।।१५४१।।

इमे दोसा –

छड्डावण पंतावण, तत्थेव य पाडणादयो दिट्ठे ।
अदिट्ठे अण्णकरणे, कायाकायाण वा उवरिं ।।१५४२।।

गिहातिविरुद्धठाणे वोसिरंतो छड्डाविज्जति, पंताविज्जति वा, तत्थ वा पाडेइ, एते दिट्ठे दोसा। अदिट्ठे पुण अण्णं इंगालातिदाहट्ठाणं करेंति, कायविराहणा भवंति, तं वा सण्णं कायाण उवरिं छड्डेंति।।१५४२।।

बितियपदमणप्पज्झे, ओसण्णाइण्ण-रोहगद्धाणे ।
दुब्बल-गहणी गिलाणे, जयणाए वोसिरेज्जाहिं ।।१५४३।।

अणप्पज्झे खित्ताती, ओसण्णमिति चिरायणं अपरिभोगट्ठाणं, आइण्णं आयरियं सव्वो जणो जत्थ वोसिरति। रोहगे वा अण्णं थंडिलं णत्थि, अद्धाण पडिवण्णो वा वोसिरति, दुब्बलगहणी वा अण्ण थंडिलं गंतुं न सक्केति, गिलाणो वा जं अप्पदोसतरं तत्थ वोसिरति। एस जयणा।

अघवा – अण्णो अवलोएति, अण्णो वोसिरति। पउर-दवेणं कुरुकुयं करेति ।।१५४३।।

जे भिक्खू सपायंसि वा परपायंसि वा दिया वा राओ वा वियाले वा उब्बाहिज्जमाणे सपायं गहाय परपायं वा जाइत्ता उच्चारं पासवणं वा परिट्ठवेत्ता अणुग्गए सूरिए एडेइ; एडंतं वा सातिज्जति; तं सेवमाणे आवज्जति मासियं परिहारट्ठाणं उग्घातियं ।।सू०।।८०

राउ त्ति संझा, वियाले त्ति संझावगमो, तत्प्राबल्येन बाधा उब्बाहा, अप्पणिज्जो सण्णामत्तओ सगपायं भण्णति। अप्पणिज्जस्स अभावे परपाते वा जाइत्ता वोसिरइ। परं अजाइउं वोसिरंतस्स मासलहुं, अणुग्गए सूरिए छड्डेति मासलहुं, मत्तगे णिक्कारणे वोसिरति मासलहुं।

णिज्जुत्ती –

णो कप्पति भिक्खुस्सा, णियमत्ते तह परायए वा वि ।
वोसिरिऊणुच्चारं, वोसिरमाणे इमे दोसा ।।१५४४।।

णियमत्तए परायत्तए वा णो कप्पति भिक्खुस्स वोसिरिउं ।।१५४४।।

जो वोसिरति तस्स इमे दोसा –

सेहादीण दुगुंछा, णिसिरिज्जंतं व दिस्सगारी णं ।
उड्डाह भाण-भेदण, विसुया वणमादिपलिमंथो ।।१५४५।।

सेहो गंधेणं वा दट्ठूण वा विपरिणमेज्ज, दुगुंछं वा करेज्ज, इमेहिं हड्डसरक्खा वि जिता। अगारिणो वा णिसिरिज्जंतं दट्ठुं उड्डाहं करेज्ज – अहो इमे असुइणो सव्वलोगं विट्टालेंति। भाणभेयं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

करेज्ज। उदिते आइच्चे जाव परिट्ठवेति। विसुआवेति त्ति-जाव-उव्ववेति वा ताव सुत्तत्थे पलिमंथो भवति। आदिसद्दातो परेण दिट्ठे संका, भोतिगादिपसंगो ॥१५४५॥

चोदगाह –

एयं सुत्तं अफलं, अत्थो वा दो वि वा विरोधेणं।
चोदग! दो वि अ सत्था, जह होंति तह णिसामेह ॥१५४६॥

सुत्ते वोसिरणं न पडिसिद्धं, तुमं पुण अत्थेण पडिसेहेसि। एवं एगतरेण अफलेण भवितव्वं। दोवि परोप्परं विरोघेण ठिता।

आयरियाह – "चोदग", पच्छद्धं। कंठं ॥१५४६॥ सुत्तं कारणिय।

के ते कारणा? इमे –

गेलण्णमुत्तमट्ठे, रोहग-अद्धाण-सावते तेणे।
दीहे दुविध रुयादे (ए), कहग दुग अभिग्गहा सण्णो ॥१५४७॥

गिलाणा काइयसण्णाभूमी गंतुं ण तरंति, अणासगमुत्तमट्ठं तं पडिवण्णो ण तरति गतुं, रोघगे काइयसण्णाभूमी णत्थि सागारियपडिबद्धा वा, अद्धाणे सचित्ताती पुढवी, राओ वा वसहीओ णिग्गच्छंतस्स सावयभयं। एवं तेण-दीह-जाइयभयं पि। पमेहे मुत्त-सक्कराए य एयाते दुविह-रुयाए पुणो पुणो वोसिरति। अणिओगकरणे धम्मकहणे य। अभिग्गहे-मोयपडिमं पडिवण्णो। भावसण्णो वा काइयसण्णाभूमी गंतु ण तरति ॥१५४७॥

अप्पे संसत्तम्मि य, सागरऽचियत्तमेव पडिबद्धे।
पाणदयाऽऽयमणे वा, वोसिरणं मत्तए भणितं ॥१५४८॥

अप्पा काइयभूमी, संसत्ता वा काइयभूमी, साधुस्स वा बाहिरे सण्णायगादि सागारियं, सेज्जायरस्स वा अंतो वोसिरिज्जमाणे अचियत्तं, इत्थीहिं वा समं भावपडिबद्धा काइयभूमी, पाणदयट्ठा वा, वासमहियासु पडंतीसु। विज्जाए उवयारो, काइयाए आयमियव्वं काउं। एतेहिं कारणेहि मत्तए वोसिरिउं बाहिं जयणाए उतिते सूरिए पट्ठवेंति ॥१५४८॥

[1]अभिग्गह-[2]अप्प-दाराणं इमा दोण्ह वि व्याख्या –

आभिग्गहिय त्ति कए, कहणं पुण होति मोयपडिमाए।
अप्पो त्ति अप्पमोदं, मोदभूमी वा भवति अप्पा ॥१५४९॥

पुव्वद्धं कंठं। अप्पमिति मोत्तं, अप्पं पुणो पुणो भवति काइयभूमी वा अप्पा तेण मत्तए वोसिरति ॥१५४९॥

एतेहिं कारणेहिं, वोसिरणं दिवसतो व रत्ती वा।
पगतं तु ण होति दिवा, अधिकारो रत्ति वोसट्ठे ॥१५५०॥

इह सूत्रे दिवसतो णाधिकारो, रातो वोसिरितेणाहिकारो १५५०॥

---

१ गा० १५४७। २ गा० १५४८।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सग-पायम्मि य गतो, अधवा पर-पायगंसि जो भिक्खू ।
उच्चारमायरित्ता, सूरम्मि अणुग्गए एडे ॥१५५१॥

कंठा। उच्चारो सण्णा, पासवणं कातिया। जो रात्रो वोसिरिउं अणुग्गए सूरिए परिट्ठवेति तस्सेयं सुत्तं ॥१५५१॥

सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त-विराधणं तहा दुविधं ।
पावति जम्हा तेणं, सूरम्मि अणुग्गए एडे ॥१५५२॥ कंठा

रातो परिट्ठवेंतस्स इमे दोसा –

तेणारक्खियसावय-पडिणीय-णपुंस-इत्थि-तेरिच्छा ।
ओहाणपेहि वेहाणसे य वाले य मुच्छा य ॥१५५३॥

रात्रो णिग्गम्रो तेणारक्खिएहिं घेप्पेज्ज, सीहमाइणा वा सावतेहिं खज्जेज्जा, पडिणीम्रो वा पडियरिउं रात्रो अप्पसागारिते पंतावेज्ज, पडिणीम्रो वा भणेज्ज – एस चोर पारदारिम्रो त्ति जेण रात्रो णिग्गच्छति। णपुंसगो वा रातो बला गेण्हेज्ज, इत्थी वा गेण्हेज्जा।

अहवा – अहाभावेणं साधू इत्थी य जुगवं णिग्गता तत्थ संकाइया दोसा। एवं महासद्दिया-दितिरिक्खिए वि संकेज्ज।

अधवा – णपुंस-इत्थी-तिरिच्छीए वा कोति अणायारं सेवेज्जा। ओहाणपेही वा दिवसतो छिद्दं अलभमाणो रातो समाहिपरिट्ठवणलक्खेण - ओहावेज्जा। एवं वेहाणसं पि करेज्जा। सप्पातिणा वा वालेण - खइतो ण तरति अक्खाउं, मुच्छा वा से होज्ज। जम्हा एते दोसा तम्हा ण परिट्ठवेयव्वो समाहिमत्तम्रो अणुग्गए सूरिए। कारणे पुण अणुग्गते ति परिट्ठवेति ॥१५५३॥

बितियपदे सागारे, संसत्तप्पेव्व णाणहेतु वा ।
एतेहिं कारणेहिं, सूरम्मि अणुग्गए एडे ॥१५५४॥

उग्गए सूरिए परिट्ठवेज्जमाणे सागारियं भवति, अंतो काईयभूमी अप्पा, संसत्ता वा, ताहे दिवसतो वि मत्तए वोसिरिउं रात्रो अप्पसागारिते बाहिं परिट्ठविज्जति। उग्गते सूरिते जाव परिट्ठवेति विसुवावेति वा ताव सुत्तपलिमंथो महंतो भवति त्ति अणुग्गए सूरिए परिट्ठवेति, परिट्ठवेंतो सुद्धो भवतीत्यर्थः ॥१५५४॥

॥ इति विसेस-निसीहचुण्णीए ततिओ उद्देसओ समत्तो ॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

चतुर्थ उद्देशकः

उक्तस्तृतीयोद्देशक इदाणिं चतुर्थः । तस्यायं संबंधः –

पासवण-पडण णिसिकज्ज-णिग्गतो गोमियादि गहितम्मि ।
तं मोयणट्ठताए, रायं अत्तीकरणमादी ॥१५५५॥

पासवणं काइया, तस्स पडणं ति वा उज्झणं ति वा एगट्ठं, णिसी रात्री, एतेण कारणेणं रात्रो णिग्गतो, गोमिया दंडवासिया तेहिं खेप्पेज्ज, तदित्यनेन साधु संबध्यते, तस्स मोयणट्ठताए रायाणं आत्मीकरोति । आदिसद्दातो अच्चीकरणमादिसूत्ता सूइया ॥१५५५॥

जे भिक्खू रायं अत्तीकरेइ करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१॥

अत्तीकरणं रण्णो, साभावित कइतवं च णायव्वं ।
पुव्वावरसंबद्धं, पच्चक्ख-परोक्खमेक्केक्कं ॥१५५६॥

तं पुण अत्तीकरणं दुविधं – साभावियं कतितवियं च । साभावितं संतं सच्चं चेव, सो तस्स सयणिज्जओ । कैतवं पुण अलियं । तं पुणो एक्केक्कं दुविधं – पुव्व[1]संथुता वा, अवरमिति पच्छासंबद्धं वा । तं पुणो दुविधं – पच्चक्खं परोक्खं च । पच्चक्खं सयमेव करेति, परोक्खं अण्णेण कारवेति ।

अहवा – राज्ञः समक्षं प्रत्यक्षं, अन्यथा परोक्षं भवति ॥१५५६॥

संते पच्चक्ख-परोक्खे इमं भण्णति –

रायमरणम्मि कुल-घर-गताए जातोमि अवहिताए वा ।
निव्वासियपुत्तो व मि, अमुगत्थ गतेण जातो वा ॥१५५७॥

रायाण मते देवी आवण्णसत्ता कुलघरं गया, तीसे अहं पुत्तो जहा खुड्डगकुमारो । अवहियाए य जहा पउमावतीए करकंडू कोइ रायपुत्तो णिच्छूढो । अण्णत्थगतेणं तेणाहं जातो, जहा अभयकुमारो । अमुगत्थ गएण रण्णा अहं जातो, जहा वसुदेवेण जराकुमारः । उत्तरमहुरावणिएण वा अण्णियपुत्तो ॥१५५७॥

संतं परकरणं कहं संभवति ?

दुल्लभपवेस लज्जालुगो व एमेवऽमच्चमादीहिं ।
पच्चक्ख-परोक्खं वा, कारेज्जा संथवं कोयी ॥१५५८॥

[1] बद्धं ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तत्थ रायकुले दुल्लभो पवेसो, लज्जालुओ वा सो साधू, अप्पणो असत्तो अत्तीकरणं काउं ताहे अमच्चमातीहिं कारवेति । "एमेव गहणातो असंतं संवज्झति ।" एते चेव कुलघरातिकारणा कोति जहा-विजाणंतो पच्चक्खं परोक्खं संथवं करेज्ज, अमच्चमादीहिं वा कारवेज्ज ॥१५५८॥

एत्तो एगतरेणं, अत्तीकरणं तु संतऽसंतेणं ।
अत्तीकरेति रायं, लहु लहुगा आणमादीणि ॥१५५६॥

संते पच्चक्खे परोक्खे वा मासलहुं, असंते पच्चक्खे परोक्खे वा चउलहुं, आणाइणो य दोसा, अणुलोमे पडिलोमे वा उवसग्गे करेज्ज ॥१५५९॥

राया रायसुही वा, राया मित्ता अमित्तसुहिणो वा ।
भिक्खुस्स व संबंधी, संबंधिसुही व तं सोच्चा ॥१५६०॥

सयमेव राया, राज्ञः सुहृदः, ते पुनः स्वजना मित्रा वा राज्ञो, अमित्रा ते स्वजना दायादा अस्वजना वा केनचित् कारणेन विरुद्धा, अमित्ताण वा जे सुहिणो साधुस्स वा जे संबंधिणो, ताण वा संबंधीण जे सुही, ते तं सोच्चा दुविहे उवसग्गे करेज्ज ॥१५६०॥

संजमविग्घकरे वा, सरीरबाहा करे व भिक्खुस्स ।
अणुलोमे पडिलोमे, कुज्जा दुविधे व उवसग्गे ॥१५६१॥

संजमविग्घकरे वा उवसग्गे सरीरबाहाकारके वा करेज्ज । जे संजमविग्घकरा ते अणुकूला, इतरे पडिकूला । एते दुविहे उवसग्गे करेज्ज ॥१५६१॥

तत्थिमे अणुकूला –

सातिज्जसु रज्जसिरिं, जुवरायत्तं व गेण्हसु व भोगे ।
इति राय तस्सुहीसु व, उद्देज्जितरे य तं घेत्तुं ॥१५६२॥

राया भणति – रज्जसिरिं साइज्जसु, अहं ते पयच्छामि, जुवराइत्तं, विसिट्ठे वा भोगे गेण्हसु, "इति".उपप्रदर्शने । राया एवमाह, तस्य सुहृदः तेप्येवमेव आहुः । "इतरे" त्ति जे रण्णो पडिणीया पडिणीयाण वा जे सुहिणो, ते तं उप्पव्वावेउं घेत्तुं वि उत्थाणं करेज्जा उड्डमरं करेंतीत्यर्थः ॥१५६२॥

सुहिणो व तस्स वीरियपरक्कमे णातु साहए रण्णो ।
तोसेही एस णिवं, अम्हे तु ण सुट्ठु पगणेति ॥१५६३॥

जे पुण भिक्खुसुहिणो ते तस्स साहुस्स वीरियबलपरिक्कमं णाउं उप्पव्वावेंति साहेंति वा रण्णो, सो तं उप्पव्वावेइ । ते पुण किं उप्पव्वावेंति ? एस रायाणं तोसेहिति त्ति, अम्हे राया ण सुट्ठु पगणेति ॥१५६३॥

इमे सरीरबाहाकरा पडिकूला उवसग्गा –

ओभामिओ मि धिग्मुंडिएण कुज्जा व रज्जविग्घं मे ।
एमेव सुही दरिसते, णिग्घप्पदोसेतरे मारे ॥१५६४॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

राया भणति-अहो इमेण समणेण महायणमज्झे ओभामिओ ,धिक् मुंडितेन दुरात्मना य एवं भाषते।

अहवा – एष भोगाभिलाषी मम परिसं भिंदिउं रज्जविग्घं करेज्ज । तं सो राया हणेज्ज वा, विंधेज्ज वा, मारेज्ज वा, रण्णो जे सुही तेहिं आणेउं रण्णो दरिसिते राया तहेव पडिकूलं उवसग्गं करेज्ज । इतरे णाम जे रण्णो अमित्ता अमित्तसुहिणो वा ते रण्णो पडिणीयत्ताए तं मारेज्ज भिक्खुस्स, णीया वा पडिलोमे उवसग्गे करेज्ज ॥१५६४॥

उद्धंसियामो लोगंसि, भागहारी व होहिती मा णे ।
इति दायिगादिणीता, करेज्ज पडिलोममुवसग्गे ॥१५६५॥

"उद्धंसिय" त्ति ओभासिया अम्हे एतेण लोगमज्झे, ओभासिओ वा एस अम्ह भागहारी होहिति त्ति मा वा अम्हं अधिकतरो एत्थ रायकुले होहिति त्ति। दुव्वयण - घाय - बंधाइएहिं उत्तावेंति मारेंति वा । जम्हा एते दोसा तम्हा ण कप्पति रण्णो अत्तीकरणं काउं ॥१५६५॥

कारणे पुण कप्पति –

गेलण्ण रायदुट्ठे, वेरज्ज विरुद्ध रोहगद्धाणे ।
ओमुब्भावण सासण, णिक्खमणुवदेसकज्जेसु ॥१५६६॥

गिलाणस्स वेज्जेण उवदिट्ठं हंसतेल्लं कल्लाणघयं तित्तगं महातित्तगं वा कलम - सालि - ओदणो वा, ताणि परं रण्णो हवेज्ज, ताहे जयणाए अत्तीकरणं करेति ॥१५६६॥

इमा जयणा –

पणगातिमतिक्कंतो, पारोक्खं ताहे संतसंतेणं ।
एमेव य पच्चक्खं, भावं णातुं व उवजूओ ॥१५६७॥

पणगपरिहाणीए जाहे मासलहुं पत्तो ताहे संतं परोक्खं रण्णो अत्तीकरणं करेंति, पच्छा असंत-परोक्खं । एमेव य पच्चक्खं संतासंतेहिं णायव्वं । अण्णादेसेण संतं परोक्खं, ततो संतं पच्चक्खं । एवं असंतं-परोक्खं पच्चक्खं । रण्णो य भावो जाणियव्वो – प्रियाप्रियेति । जो य लक्खणजुत्तो उ यो दर्शनीयः तेजस्वी वा स अत्तीकरणं करेति । [1]रायदुट्ठे वा उवसमणट्ठा, वेरज्जे वा आत्मसंरक्षणार्थे, विरुद्धरज्जे वा संकमणट्ठा, रोहगे वा णिग्गमणट्ठा, अप्फवंता वा भत्तट्ठा, रण्णा वा सद्धिं अद्धाणं गच्छंता, एवं बहुसु उप्पत्तिएसु कारणेसु, ओमे वा [2]भत्तट्ठा, वादकाले वा पवयणउब्भावणट्ठा, पडिणीयस्स वा सासणट्ठा, अत्तीकतो वा जो णिक्खमेज्ज तवट्ठा, धम्मं वा पडिवज्जिउक्कामस्स धम्पोवएसदाणट्ठा कुल - गणातिकज्जेसु वा अणेगेसु ॥१५६७॥

जे भिक्खू रायारक्खियं अत्तीकरेति, अत्तीकरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२॥

जे भिक्खू णगरारक्खियं अत्तीकरेति अत्तीकरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३॥

जे भिक्खू णिगमारक्खियं अत्तीकरेति, अत्तीकरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४॥

जे भिक्खू देसारक्खियं अत्तीकरेत्ति अत्तीकरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५॥

जे भिक्खू सव्वारक्खियं अत्तीकरेति, अत्तीकरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६॥

---

१ गा० १५६६ व्याख्या । २ अप्फचंता ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

एतेहिं कारणेहिं, अत्तीकरणं तु होति नायव्वं ।
रायारक्खिय-नागरणेगमसव्वे वि एस गमो ॥१५६८॥

एतेहिं उत्तरकरणेहिं रण्णो अत्तीकरणं करेज्ज । रायाणं जो रक्खति सो रायारक्खिओ-सिरोरक्षः तत्थ वि सो चेव गमो । णगरं रक्खति जो सो णगररक्खिओ कोट्टपाल । सव्वपगइओ जो रक्खति णिगमारक्खिओ, सो सेट्ठी । देसो विसतो, तं जो रक्खति सो देसारक्खिओ, चोरोद्धरणिकः । एताणि सव्वाणि जो रक्खति सो सव्वारक्खिओ, एतेषु सर्वकार्येषु आपृच्छनीयः स च महाबलाधिकृतेत्यर्थः ।

एतेसिं पंचण्हं सुत्ताणं इमं पच्छद्धं अइदेसं करोति । रायारक्खिय-णागरणेगमसव्वे वि । अपि शब्दाद् देशारक्षको द्रष्टव्यः । एतेसु वि एमेव उस्सग्गववायगमो दट्ठव्वो ॥१५६८॥

जे भिक्खू रायं अच्चीकरेति, अच्चीकरेंतं वा सातिज्जति ।।सू०॥७॥

जे भिक्खू रायारक्खियं अच्चीकरेति, अच्चीकरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥८॥

जे भिक्खू णगरारक्खियं अच्चीकरेति, अच्चीकरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥९॥

जे भिक्खू णिगमारक्खियं अच्चीकरेति, अच्चीकरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१०॥

जे भिक्खू देसारक्खियं अच्चीकरेति, अच्चीकरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥११॥

जे भिक्खू सव्वारक्खियं अच्चीकरेति अच्चीकरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१२॥

अर्चनं अर्चा, अर्चायाः करणं अर्चाकरणं ।

अच्चीकरणं रण्णो, गुणवयणं तं समासओ दुविधं ।
संतमसंतं च तथा, पच्चक्ख-परोक्खमेक्केक्कं ॥१५६९॥

रण्णो अच्चीकरणं किं ? गुणवयणं सौर्यादि, तं दुविधं – संतमसंतं, एक्केक्कं पच्चक्खं परोक्खं ॥१५६९॥

एत्तो एगतरेणं, अच्चीकरणेण जो तु रायाणं ।
अच्चीकरेति भिक्खू, सो पावति आणमादीणि ॥१५७०॥ कंठा

इमं गुणवयणं –

एक्कतो हिमवंतो, अण्णतो सालवाहणो राया ।
समभारभरक्कंता, तेण ण पल्हत्थए पुहई ॥१५७१॥

राया रायसुही वा, रायामित्ता अमित्तसुहिणो वा ।
भिक्खुस्स व संबंधी, संबंधि-सुही व तं सोच्चा ॥१५७२॥

संजमविग्घकरे वा, सरीरबाधाकरे व भिक्खुस्स ।
अणुलोमे पडिलोमे, कुज्जा दुविधे व उवसग्गे ॥१५७३॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

गेलण्ण रायदुट्ठे, वेरज्ज विरुद्ध रोहगद्धाणे ।
ओमुब्भावण सासण, णिक्खमणुवएसकज्जेसु ॥१५७४॥
एतेहिं कारणेहिं, अच्चीकरणं तु होति कातव्वं ।
रायारक्खियणागर-णेगमसव्वे वि एस गमो ॥१५७५॥

पूर्ववत् ।

जे भिक्खू रायं अत्थीकरेति, अत्थीकरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१३॥

जे भिक्खू रायारक्खियं अत्थीकरेति, अत्थीकरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१४॥

जे भिक्खू णगरारक्खियं अत्थीकरेति, अत्थीकरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१५॥

जे भिक्खू णिगमारक्खियं अत्थीकरेति, अत्थीकरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१६॥

जे भिक्खू देसारक्खियं अत्थीकरेति, अत्थीकरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१७॥

जे भिक्खू सव्वारक्खियं अत्थीकरेति, अत्थीकरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१८॥

अत्थयते अत्थी वा, करेति अत्थं व जणयते जम्हा ।
अत्थीकरणं तम्हा, तं विज्जणिमित्तमादीहिं ॥१५७६॥

साहू रायाणं अत्थेति प्रार्थयति । साधू वा तहा करेति जहा सो राया तस्स साहुस्स अत्थी-भवति प्रार्थयतीत्यर्थः । साधू वा तस्य राज्ञः अर्थं जनयति, धातुवादादिना करोतीत्यर्थः । जम्हा एवं करेति तम्हा अत्थीकरणं भण्णति ।

साधू रायाणं भणाति – मम अत्थि विज्जाणिमित्तं वा तीताणागतं नाणं,ताहे सो राया अत्थीभवति। आदिसद्दातो रसायणादिजोगा ॥१५७६॥

इमं अत्थीकरणं –

धातुनिधीण दरिसणे, जणयंते तत्थ होति सट्ठाणं ।
अत्ती - अच्ची - अत्थेण, संतमसंतेण लहुलहुया ॥१५७७॥

धातुव्वातेण वा से अत्थं करेति, महाकालमंतेण वा से णिहिं दरिसेति, एवं अत्थं जणयतो सट्ठाणपच्छित्तं ।

"[1]छक्कायचउसु लहु" गाहा । सीहावलोयणेण गतोऽप्यर्थः-पुनरुच्यते-अत्ती अच्ची अत्थी, एतेसु संतेसु मासलहुं, असंतेसु चउलहुं ॥१५७७॥

एत्तो एगतरेणं, अत्थीकरणेण जो तु रायाणं ।
अत्थीकरेति भिक्खू, सो पावति आणमादीणि ॥१५७८॥
राया रायसुही वा, रायामित्ता अमित्तसुहिणो वा ।
भिक्खुस्स व संबंधी, संबंधिसुही व तं सोच्चा ॥१५७९॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

संजमविग्घकरे वा, सरीरबाधाकरे व भिक्खुस्स ।
अणुलोमे पडिलोमे, कुज्जा दुविधे व उवसग्गे ॥१५८०॥
गेलण्ण-रायदुट्ठे, वेरज्ज विरुद्ध रोहगद्धाणे ।
ओसुब्भावण सासण, णिक्खमणुवएसकज्जेसु ॥१५८१॥
एतेहिं कारणेहिं, अत्थीकरणं तु होति कातव्वं ।
रायारक्खिय णागर-णेगमसव्वे वि एस गमो ॥१५८२॥

पूर्ववत्

जे भिक्खू कसिणाओ ओसहीओ आहारेति
आहारेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१९॥

कसिणा संपुण्णा, दव्वतो अभिण्णा, ओसहिओ सालिमातियाओ, आहारेति भुंजति, तस्स मासलहुं ।

कसिणत्तमोसहीणं, दव्वे भावे चउक्कभयणा तु ।
दव्वेण जा सगला, जीवजुत्ता भावतो कसिणा ॥१५८३॥

कसिणत्ते ओसहीण दव्वभावेहिं चउभंगो कायव्वो । दव्वतो कसिणा सतुसा अखंडिता अफुडिता भावकसिणा जा सचेयणा ॥१५८३॥

सतुसा सचेतणा वि य, पढमभंगो तु ओसहीणं तु ।
बितिओ सचेतणऽतुसा खंडितगाधा अतिच्छडिता ॥१५८४॥

जा सतुसा दव्वतो अभिण्णा सचेयणा य, एस पढमभंगो । जा सचेयणा अतुसा चेयणा तंदुला सतुसा वा खंडिता "अतिच्छडिता" एगदुच्छडा व कता ॥१५८४॥ एस बितियभंगो ।

णियगट्ठितिमतिक्कंता, सतुसा बीया तु ततियओ भंगो ।
पढमं पति विवरीओ, चउत्थभंगो मुणेतव्वो ॥१५८५॥

णियगा आत्मीयस्थिति, तमतिक्कंता अचेतना इत्यर्थः, दव्वतो पुण सतुसा अखंडिता अफुडिता, एरिसा जा ओसहीओ । एस ततियभंगो । भावतो णियगठितिमतिक्कंता दव्वतो भिण्णा । एस पढमभंगं पति विवरीतो चतुर्थभंगो भवतीति ॥१५८५॥

एतेसु चउभंगेसु इमं पच्छित्तं –

दो लहुया दोसु लहुओ, तवकालविसेसिता जधा कमसो ।
परित्तोसधीण सोधी, एसेव गुरू अणंताणं ॥१५८६॥

आइल्लेसु दोसु भंगेसु चउलहुगं, पच्छिमेसु दोसु भंगेसु मासलहुं, जहाकमं आतिल्लातो समारब्भ तवकालविसेसिया । पढमे दोहिं वि गुरू, बितिए तवगुरु, ततिए कालगुरुं, चउत्थे दोहिं वि लहुं । एत परित्ते भणियं । अणंतबीएसु एयं चेव पच्छित्तं गुरुगं दट्ठव्वं ॥१५८६॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

चोदगाह -

अण्णोण्णेण विरुद्धं तु, सोधिं सुत्तं च मा भण।
सा तु संघट्टणे सोही, पंचाहा भुंजतो सुत्तं ॥१५८७॥

सुत्तग्गहणातो इह सुत्ते वितिएसु मासलहुं, सोधिग्गहणातो इहेव पेढिगाए अत्थे बीएसु पणगं दत्तं, एए दो वि अण्णोण्ण-विरुद्धा।

मा एवं भणाहि आचार्याह -

"सा तु संघट्टणे" पच्छद्धं। पंचराइंदिया अत्थेण जे बीएसु भणिता ते संघट्टणे इमं। पुण भुंजंतो सुत्ते मासलहुं, अतो भणियं तम्हा नो अण्णोण्णविरुद्धं ॥१५८७॥

अण्णे आयरिया वक्खाणेंति अत्थतो चोइए।

आचार्य उत्तरमाह -

"अण्णोण्णेण" गाहा — शेषं पूर्ववत्। पुणरवि चोयग -

जं च बीएसु पंचाहो, कुंडरोट्टेसु मासियं।
तत्थ पाती तु सो बीयं, कुंडरोट्टातु णिच्चसो ॥१५८८॥

चोदको भणति - बीएसु संघट्टिएसु पणगं, कुंडरोट्टेसु संघट्टिएसु मासलहुं। एत्थ किं कारणं? तुसमुहीकणिया कुक्कस-मीसा कुडग भण्णति, असत्थोवहतो आमो चेयणं तंदुललोट्टो रोट्टो भण्णति।

आयरिओ भण्णति - 'तत्थ पाती तु" पच्छद्धं। चोइते तत्थेव च उत्तरं भण्णति "पाति" रक्खति सो तुसो तं बीयं तेण तत्थ पणगं, कुंडरोट्टो पुण णितुसा तेण तत्थ महंततरी पीडा, अतो तत्थ-मासितं ॥१५८८॥

एतेसामण्णतरं, कसिणं जो ओसधिं तु आहारे।
सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त-विराधणं पावे ॥१५८९॥

तिल-मुग्ग-मास-चवलग-गोधूम-चणय-सालि-कंगुमातियाणं अण्णतरं कसिणं भुंजति, सो आणातिदोसे पावति ॥१५८९॥

इमे दोसा -

पलिमंथो अणाइण्णं, जो णिग्घातो य संजमे।
अतिभुत्ते य आयाए, पत्थारम्मि पसज्जणा ॥१५९०॥

चवलयमातियासु सेंगासु सचित्तासु अचित्तासु वा पलिमंथोपगरिसेण संजमो मंथिज्जति जेण सो पलिमंथो, स'हूण वा ताओ अणाइण्णा, जोणीभूते बीए जोणीघातो भवति त्ति सचित्ते असंजमो भवति। रसाले वा अतिभुत्ते वीसूइयाति आयविराहणा। अण्णतरे वा दीहे रोगायंके भवति। तत्थ पत्थारपसंगो - प्रस्तरणं प्रस्तारः, प्रस्तारे उत्तरोत्तरदुःखसंभव इत्यर्थः ॥१५९०॥

तत्थ परितावमहादुःखे गहा -

वितियपदं गेलण्णे, अद्धाणे चेव तह य ओमम्मि।
कसिणोसहीण गहणे, जतणाए पकप्पती काउं ॥१५९१॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वेज्जुवदेसा गिलाणो भुंजति, भत्तालंभे अद्धाणे अफव्वता वा ओमे कसिणोसहीगहणं करेज्जा। तं पि जयणाए पणगातिमासपत्तो, पच्छा चरिमभंगेण, ततो ततियभंगे, ततो बितियभंगे, ततो पढमेण, एवं गहणं काउं कप्पति ॥१५६१॥

जे भिक्खू आयरिएहिं अदिन्नं आहारेति,
आहारेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२०॥

जे भिक्खू आयरिओवज्झाएहिं अविदिण्णं विगतिं आहारेति,
आहारेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२१॥

आचार्येव उपाध्याय आचार्योपाध्यायः, असहीणे वा आयरिए उवज्झायो पुच्छिज्जइ।

अहवा – उवज्झायगहणेणं जो जं पुरतो काउं विहरति सो पुण पुच्छियव्वो। अविदिण्णं अदत्तं अणुण्णायं, अण्णतरग्गहणातो णवविगईओ जो आहारेइ तस्स मासलहुं। एस सुत्तत्थो।

णिज्जुत्ति वित्थरेति –

इच्छामो नाउं का विगतीं ? केवतियाओ वा ? –

तेल्ले घत णवणीते, दधिविगतीओ य होंति चत्तारि।
फाणिय-विगडे दो दो, खीरम्मि य होंति पंचेव ॥१५६२॥

महुपोग्गलम्मि तिण्णि व, चलचल ओगाहिमं च जं पक्कं।
एतासिं अविदिण्णं, जोगमजोगे य संवरणे ॥१५६३॥

सव्वे तेल्ला एगविगती।

अण्णे भणंति – खारतेल्लं एक्कं विगती, सेसा पुण तेल्ला वि विगइया। लेवाडा पुण सव्वे घता, एक्का य विगती। एवं णवणीयादि। दहिविगतीओ वि चत्तारि, गाव-महिसी-अय-एलगाणं च। फाणिओ गुलो भण्णति, सो दुविहो - छिड्डुगुडो खडहडो य। वियडं मज्जं, तस्स दो भेदा – पिट्ठकडं गुलकडं च। खीराणि पंच गावी महिसी अय एलय उट्टीणं च।

महूणि तिण्णि – कोंतिय, मक्खियं, भामरं च। पोग्गले तिण्णि—जलयं थलयं खहयरं च। चलचलेति - तवए पढमं जं घयं खित्तं तत्थ अण्णं घयं अपक्खिवंती आदिमे जे तिण्णि घाणा पयतिते चलचले त्ति तेण ते चलचलओगाहिमं भण्णति। तत्थेव घते जे सेसा पच्चंति तेण चले त्ति, अतो तेण आतिल्ला तिण्णि घाणा मोत्तु सेसा पच्चक्खाणिस्स कप्पंति, जति अण्णं घयं ण पक्खिवति। जोगवाहिस्स पुण सेसगा विगती। एतेसिं विगतीणं जो अण्णतरं विगतिं आहारेति जोगवाही वा अजोगवाही वा संवरणे वा ॥१५६३॥

आगाढमणागाढे, दुविधे जोगे य समासतो होति।
आगाढे णवग-वज्जण, भयणा पुण होतऽणागाढे ॥१५६४॥

जोगो दुविहो – आगाढो अणागाढो य। आगाढतरा जम्मि जोगे जंतणा सो आगाढो यथा भगवतीत्यादि। इतरो अणागाढो यथा उत्तराध्ययनादि। आगाढे ओगाहिमवज्जा णव विगतीओ वज्जिज्जंति, दसमाए भयणा। सव्वा ओगाहिम-विगती पण्णत्तीए कप्पति। महाकप्पसुत्ते एक्का परं मोदगविगती

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कप्पति, सेसा आगाढेसु सव्वविगतीतो ण कप्पंति । अणागाढे पुण दसविगतीतो भतिताओ । जओ गुरुअणुण्णातो कप्पंति, अणुण्णाए विणा ण कप्पंति, एस भयणा ॥१५९४॥

अणुण्णातो वा अविधीए तो जोगभंगो भवति । जोगभंगो दुविधो – सव्वभंगो, देसभंगो य ।

विगतिमणट्ठा भुंजति, ण कुणति आयंबिलं ण सद्दहती ।
एसो तु सव्वभंगो, देसे भंगो इमो तत्थ ॥१५९५॥

विगती णिक्कारणे अणुण्णाओ भुंजति, आयंबिलवारए आयबिलं ण करेति, सव्वरसे य भुंजति, ण सद्दहति वा, एस सव्वभंगो । आगाढे सव्वभंगे चउगुरुं, अणागाढे सव्वभंगे चउलहुं, इमो देसभंगो ॥१५९५॥

काउस्सग्गमकातुं, भुंजति भोत्तूण कुणति वा पच्छा ।
सय काऊण वा भुंजति, तत्थ लहू तिण्णि उ विसिट्ठा ॥१५९६॥

जदि कारणे काउस्सग्गमकाउं भुंजति, भोत्तूण वा पच्छा काउस्सग्गं करेति, सयं वा काउस्सग्गं काउं भुंजइ, [1]अवरो गुरुं भणति – मम विगतिं विसज्जेह, एएसु वि चउसु वि मासलहुं तवकालविसिट्ठं । चउत्थे दोहिं वि लहुं । जो पुण कारणे अणुण्णातो काउस्सग्गं काउं भुंजति सो सुद्धो । आगाढजोगे वि देसभगे एवं चेव, णवरं-मासगुरुं । अणागाढागाढजोगाण देसभंगे इमं पच्छित्तं ॥१५९६॥

ण करेति भुंजितूणं, करेति काऊण भुंजति सयं तु ।
वीसज्जेह ममं ति य, तवकालविसेसिओ मासो ॥१५९७॥

उक्तार्थाः ।

इमो विगतिविवज्जणे गुणो –

जागरंतमजीरादी, ण फुसे लूहवित्तिणं ।
जोगी ऽहं ति सुहं लद्धे, विगतिं परिहरिस्सति ॥१५९८॥

सुत्तत्थज्झवणहेउं रातो जागरंतं अजीरातिया दोसा ण फुसंति लूहवित्तिणं । किं चान्यत् ? जोगीऽहमिति लद्धे वि सुहेणं विगतिं वज्जेति ॥१५९८॥

कारणे जोगी वि विगतिं आहारेति –

बितियपदमणागाढे, गेलण्ण-वए-महामहऽद्धाणे ।
ओमे य रायदुट्ठे, अणगाढागाढजतणाए ॥१५९९॥

अणागाढगेलण्णगहणातो गाढं पि गहियं, "वइगे" त्ति गोउलं, महामहो इंदमहादि, अद्धाणे वा, ओमे दुब्भिक्खे, रायदुट्ठे वा, एतेहिं कारणेहिं अणागाढजोगी आगाढजोगी वा जयणाए विगतिं भुंजति ॥१५९९॥

जोगे गेलण्णम्मि य, आगाढितरे य होति चतुभंगो ।
पढमो उभयागाढे, बितिओ ततिओ य एक्केणं ॥१६००॥

---

१ गा० १५९७ ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जोग-गेलण्णेसु, आगाढ अणागाढेसु चउभंगो कायव्वो। पढमे उभयमवि आगाढं, बितिए जोगो आगाढो, ण गेलण्णं। तइए न जोगो, गेलण्णं आगाढं। चउत्थे दो वि अणागाढा ॥१६००॥

उभयम्मि व आगाढे, दड्ढेल्लयपक्कएहि तिण्णि दिणे।
मक्खेंति अठायंते, पज्जेंतियरे दिणे तिण्णि ॥१६०१॥

उभयागाढेति पढमभंगे "दड्ढेल्लगं" ओगाहिमणिग्गालो, जं वा दोहिं तिहिं वा दव्वेहि णिदड्ढं पक्केल्लगं, हंसतेल्लमातीएहिं पति-दिणे तिण्णि दिणे मक्खेति। "अठायंते" त्ति जइ रोगो न उवसमति ताहे अवरे तिण्णि दिणे उवरुवरिं चेव दड्ढेल्लगातिए पमज्जंति ॥१६०१॥

जत्तियमेत्ते दिवसे, विगतिं सेवति ण उद्दिसे ते तु।
तह वि य अठायमाणे, णिक्खवणं सव्वधा जोगे ॥१६०२॥

जत्तिए दिवसे तं दड्ढेल्लगातिविगतिं पमज्जति तत्तियाणि दिवसाणि ण उद्दिसति, जति तह वि रोगो न उवसमति ताहे से सव्वहा जोगो णिक्खिप्पति ॥१६०२॥

जति णिक्खवती दिवसे, भूमीओ तत्तिए उवरि वड्ढे।
अपरिमियं उद्देसो, भूमीओ परं तधा कमसो ॥१६०३॥

जत्तिए दिवसे णिक्खित्तजोगो अच्छति पुणो उक्खित्तजोगे जोगभूमीओ तत्तिए दिवसे उवरिं वड्ढिज्जति। जोगभूमीए चिरायणजोगभूमीए वि जे केति दिवसा सेसा जोगभूम्यंतो भण्णति। तत्थ मेहाविणो कमट्ठगस्स अपरिमिओ उद्देसो चिरायणजोगभूमीए परओ वड्ढिदिवसेसु कमेण उद्देसो कज्जति। अण्णे भणंति-जत्तिए दिवसे ण उद्दिट्ठं तत्तिए दिवसे अपरिमित्तो उद्देसो कायव्वो, ततो परं कमेण उद्देसो ॥१६०३॥

इयाणिं बितियभंगो –

गेलण्णमणागाढे, रसवति णेहोव्वरे असति पक्को।
तह वि य अठायमाणे, मा वड्ढे णिक्खिवे तहेव ॥१६०४॥

जोगे आगाढे गेलण्णे अणागाढे णेहावगाढभत्तरसो तीए छुब्भति णेहोवरते वा ते णेहावयवपोग्गला सरीरमणुपविट्ठा रोगोवसमा भवंति, ततो वड्ढेल्लग-पक्केल्लगेहिं मक्खेंति, दिणे ३ अट्ठिए पज्जेंति, दिणे ३ तहावि अट्ठिते रोगे मा अतीवरोगवुड्ढी भविस्सति, तम्हा जोगणिक्खेवो तहेव जहा पढमभंगे ॥१६०४॥

इदाणिं ततियभंगो – अणागाढजोगे आगाढगेलण्णे तिण्णि दिणा दड्ढेल्ल-पक्केल्लगेहिं मक्खेंति।

अवरे तिण्णि दिणे पज्जेंति, ततो पर –

तिण्णि-तिगेगंतरिते, गेलण्णागाढपरतो णिक्खिवणा।
तिण्णि व तिग अंतरिता, चउत्थ ऽठंते वि णिक्खिवणा ॥१६०५॥

तिण्णि तिया णव, तेसिं एक्केक्को तिगो एगा णिव्वितियंतरिओ कायव्वो, तिण्णि दिणे काउस्सग काउं विगतिं आहारेत्ता चउत्थदिवसे णिव्वीयं आहारेति, ताहे पंचम-छट्ठ-सत्तमाणि दिवसाणि विगतिं आहारेति अट्ठमे दिवसे णिव्वीयं करेति, नवमे दिणे विगतिं आहारेति, ताहे जति णोवसमति ताहे दसमे दिवसे जोगो णिक्खिप्पति ॥१६०५॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इदाणिं चउत्थ-भंगो ।

एत्थ वि रसवतिणेहोव्वरमक्खणगमज्जणं तहेव । अतो परं "तिण्णि वि" पच्छद्धं तिण्णि वि तिया णव, एते एगंतरएण णिव्वीतितेण णायव्वा । विगती. णिव्वीतितं ।

वि ०१, नि० १ । वि० १, नि० १ । वि० १, नि० १ ।

अतो परं अट्ठायंतो सव्वहा जोगणिक्खेवो । पतिदिवसमलब्भंते परिव्वसा वेतव्वगकट्ठियव्वगे वा जोगणिक्खेवो ।

अहवा – अजोग गिलाणस्स वि खीरातिणा होज्ज कज्जं, ताहे य सग्गामे मग्गियव्वं, असति सवखेत्ते परगामे, सक्खेत्ते असति खेत्तवहियातो वि आणियव्वं, सव्वहा अलब्भंते गिलाणो वतितं णिज्जेज्ज।।१६०५।।

"[1]वतिए" त्ति दारं, तत्थिमा जयणा –

वइगा अयोग-योगी, व अदढ-अतरंतगस्स दिज्जंति ।
णिव्वीतियमाहारोऽसति अंतरविगती व णिक्खिवणा ।।१६०६।।

'अतरंतगो" गिलाणो, अदढो विणा वि गेलण्णएण जो दुब्बलो, एते जया वइयं णिज्जंति तता एतेसिं सहाया अजोगवाही दिज्जंति । असति अजोगवाहीणं अणागाढजोगवाही वितिज्जगा दिज्जंति ।

अहवा – 'अदढ" त्ति अजोगवाहिणो जे अदढसरीरा ते अतरंतस्स घितिज्जगा दिज्जंति । ते पि तत्र बलिनो भविष्यंतीत्यर्थः । जे जोगवाहिणो ते तत्थ वइआए णिव्वीयिमाहारं गेण्हंति; असति णिव्वीतियस्स अपज्जंतं वा लब्भति ताहे अंतरंतरा काउसग्गं करेत्तु विगतिं भुंजंतु । आयरणा पुण ततियभंगविकप्पेण सपयं सव्वहा वा णिव्वीतीए अलब्भंते णिक्खिवणा जोगस्स ।।१६०६।।

आयंबिलस्सऽलंभे, चउत्थ एगंगिए व तक्कादी ।
असतेतरमागाढे, णिक्खवणुद्देस तध चेव ।।१६०७।।

तत्थ वतिताए आयंबिलवारए आयंबिलस्स अलंभे अभत्तट्ठं करेज्ज, जति उववासस्स असहू ताहे तक्काति एवेगंगियं भुंजति । आदिसद्दातो वल्ल-चणग-मुग्ग-मासप्पणियं विलेवी वा कंजियं सागं वा एवमाति–जं णिव्वीतियं अलवणं, तं वा भुंजति। सलवणं पुण एगंगियं न भवतीत्यर्थः ।

अणागाढे जोगवाहीण असति इतरे णाम आगाढजोगी ते गिलाणस्स वितिज्जगा दिज्जंति, एक्को दो वा अजोगी, तेसिं कप्पियारो दिज्जति, तेसिं जति णिव्वीतियं अत्थि तो वहंति, अलब्भंते पुण आगाढ जोग-णिक्खेवो । आगाढणागाढाण पुणो उक्खित्तो उद्देसो तहेव जहा गिलाणदारे । एवं वइयाए ।।१६०७।।

इदाणिं "[2]महामहे" त्ति दारं –

सक्कमहादीएसु, पमत्तदेवा छलेज्ज तेण ठवे ।
पीणिज्जंति व अदढा, इतरे उ वहंति ण पढंति ।।१६०८।।

'सक्कमहो" इंदमहो, आदिसद्दाओ सुगिम्हादी, जो व जत्थ महामहो, एतेसु मा पमत्तं देवया छलेज्ज । तेण "ठवे", ठवणे त्ति आणागाढजोगणिक्खेवो । किं चान्यत् ? तेसु य सक्कमहादिदिवसेसु विगतिलाभो

१ गा० १५६६ । २ गा० १५६६ ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

भवति, ताओ दुब्बलसरीरा भुंजंति, ताहे पीणिज्जंति । बलिनो भवंतीत्यर्थः । इतरे णाम आगाढजोगवाही ते जोगं वहंति, जोगखंधा अच्छंति, ण तेसु उद्देसो, ण वा पुव्वुद्दिट्ठं पढंति ॥१६०८॥

इदाणिं "[1]अद्धाण-ओम-रायदुट्ठं च तिण्णि वि दारे जुगवं वक्खाणेति –

अद्धाण-ओम-दुट्ठे, एसिं जोगीण सेस पणगादी ।
असती य अणागाढे, णिक्खिव सव्वासती इतरे ॥१६०९॥

अद्धाणे गामाणुग्गामिए छिण्णद्धाणे वा जोगं वहंति, ताहे जं एसणिज्जं तं जोगीण देज्जति, "सेस" त्ति अजोगवाही ते पणगपरिहाणीए जयंति । फासुएसणिज्जस्स असति जइ सव्वे जोगवाहिणो ण संथरंति ताहे अणागाढ-जोगवाहीणं जोगो णिक्खिप्पइ । 'सव्वासति" णाम सव्वहा एसणिज्जे अलब्भमाणे इयराण वि आगाढजोगो णिक्खिप्पइ । चउभाग-तिभागट्ठाणे वा असंथरणे णिक्खेवो । एवं ओमोयरियाराय-दुट्ठेसु वि ॥१६०९॥ "जोग" त्ति गयं ।

इदाणिं "[2]अजोग" त्ति –

जे भिक्खु अजोगी तु, णिक्कारणकारणा अणापुच्छा ।
आपुच्छिता व पुणो, अविदिण्णं आतिए विगतिं ॥१६१०॥

जे भिक्खू अजोगवाही णिक्कारणे विगतिं भुंजति, कारणे वा अणापुच्छाए भुंजति, कारणे वा अपुच्छिते गुरूहिं अदिण्णं भुंजति, तिण्ह वि मासलहुं ॥१६१०॥

सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त-विराधणं तहा दुविधं ।
पावति जम्हा तेणं, कप्पति आपुच्छितुं पुव्विं ॥१६११॥

णिक्कारणे भुजंतस्स इमे दोसा –

विगति विगतिब्भीओ, विगतिगतं जो तु भुंजते भिक्खू ।
विगती विगतिसहावो, विगती विगतिं बला नेइ ॥१६१२॥

घृतादिविगति, बितियविगतिगहणेण कुवाति विगती, एकं तं विगतिकयं जहा विस्संदणं, विगती बागता जम्मि दव्वे तं दव्वं विगतिगतं, जहा दध्योदना । विगतीए भुत्ताए साहू विगयस्सभावो भवति, सा य विगती भुत्ता बितियं णरगातियं बला णेति ॥१६१२॥

"[3]कप्पति आपुच्छिउं पुव्विं" ति अस्य व्याख्या –

इच्छामि कारणेणं, इमेण विगइं इमं तु भोत्तुं जे ।
एवतियं वा वि पुणो, एवतिकाल विदिण्णंमि ॥१६१३॥

विणयपुव्वं गुरुं वंदिऊण भणाति– इमेण कारणेण इमं विगतिं एवतियं पमाणेणं एवतियं कालं तुब्भेहिं अणुण्णातो भोत्तुमिच्छामि । एवं पुव्वं पुच्छिए अणुण्णाए पच्छा भिक्खं पविट्ठो गहणं करोतीत्यर्थः ॥१६१३॥

बितियपदे आहारो, हवेज्ज सो चेव कम्मिइ देसे ।
असिवायी वेगागी, विगतीओ थूर लेभेज्जा ॥१६१४॥

---

१ गा० १५६६ । २ गा १५६३ । ३ गा० १६११ ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कम्हि य देसे गामे वा सो चेव दहिखीराति आहारो हवेज, तत्थ विणा कारणेण आहारेज, असिवादीहिं वा कारणेहिं एगागी बिगतीओ थूर लंभेज्जा, आयरियउवज्झाएहिं अणणुण्णाओ विगतिं भुंजेज्जा ॥१६१४॥

इदाणिं "पच्चक्खाणे" ति दारं –

पच्चक्खाते संते, पारमगंतूण अंतरा जो तु।
आहारेज्जा विगतिं, सो पावति आणमादीणि ॥१६१५॥

दिवसे देवसियं अणागारपच्चक्खाए अभिग्गहपच्चक्खाए वा पारं पज्जवसाणं अगंतूण अंतरा जो विगतिं आहारेति सो आणादि दोसे पावति ॥१६१५॥

बितिय गिलाणागारे, वंजण-खलिते व काल-संमूढे।
एतेहिं कारणेहिं, पच्चक्खाते वि आहारो ॥१६१६॥

अपुणगे पच्चक्खाणे अंतरा गेलण्णं भवेज, वंजणखलिएण वा पच्चक्खायं, पुण्णो त्ति पच्चक्खाण-कालो कालसम्मूढो, अंतरा भुंजेज। एवं भुंजंतो सुद्धो ॥१६१६॥

जे भिक्खू ठवण-कुलाइं अजाणिय अपुच्छिय अगवेसिय पुव्वमेव पिंडवाय-पडियाए अणुप्पविसति, अणुप्पविसंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२२॥

ठप्पा कुला ठवणाकुला अभोज इत्यर्थः, साधुठवणाए वा ठविज्जंति त्ति ठवणकुला सेज्जातरादित्यर्थः। पुव्विं दिट्ठे पच्छा अदिट्ठे गवेसणा।

अधवा – णामेण वा गोत्तेण वा दिसाए वा पुच्छा, अभियाईचिधेहिं गवेसणा। पूर्वं प्रथमं आदावेव जो पुण पुच्छणगवेसणं करेति तस्य पूर्वं न भवतीत्यर्थः।

ठवणाकुला तु दुविधा, लोइयलोउत्तरा समासेणं।
इत्तरिय आवकहिया, दुविधा पुण लोइया हुंति ॥१६१७॥

समासो संखेवो, लोइया दुविहा – इत्तरिया, आवकहिया य ॥१६१७॥

इमे इत्तरिया –

सूयग-मतग-कुलाइं, इत्तरिया जे य होंति णिज्जूढा।
जे जत्थ जुंगिता खलु, ते होंति आवकहिया तु ॥१६१८॥

कालावधीए जे ठप्पा कया ते णिज्जूढा, "जे" त्ति कुला जत्थ विसते जुंगिता दुगुंछिता, अभोजा इत्यर्थः। कम्मेण वा सिप्पेण वा जातीए वा। कम्मे – ण्हाणिया, सोहका, मोर-पोसका। सिप्पे – हेट्ठण्हाविता, तेरिमा, पयकरा, णिल्लेवा। जातीए – पाणा, डोंबा, मोरत्तिया य। खलुसद्दोऽवधारणे, ते चेव अण्णत्थ अजुंगिता, जहा सिंधूए णिल्लेवगा ॥१६१९॥

इमे लोगुत्तरा –

दुविहा लोउत्तरिया, वसधी संबद्ध एतरा चेव।
सत्तघरंतर जाव तु, वसधीतो वसधिसंबद्धा ॥१६२०॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वसहीए संबद्धा य, असंबद्धा य। वसहीए मोत्तुं सत्तघरावसहीसंबद्धा, तेसु भत्तं वा पाणं वा ण घेत्तव्वं ॥१६१९॥

इमा असंबद्धा –

दाणे अभिगमसड्ढे, सम्मत्ते खलु तहेव मिच्छत्ते ।
मामाए अचियत्ते य एतरा होंति णायव्वा ॥१६२०॥

अहाभद्दो दाणरुई दाणसड्ढो, सम्मद्दिट्ठी गिहीताणुव्वओ अभिगमसड्ढो, सम्मत्ते त्ति अविरय-सम्मद्दिट्ठी, एतेसु एसणादोसा। खलुसद्दो पादपूरणे। अभिगहियमिच्छे साहुपडिणीए ईसालुअत्तणेणं मा मम घरं अदीहि समण त्ति भणाइ, अण्णस्स ईसालुअत्तणेण चेव साहू घरं पविसंता अचियत्ता वायाए भणाति – "न किं चि।" एतेसु विसगर-पंतावणाति दोसा। "इयरे" त्ति असंबद्धा ॥१६२०॥

एतेसामण्णतरं, ठवण-कुलं जो तु पविसती भिक्खू ।
पुव्वं अपुच्छितूणं, सो पावति आणमादीणि ॥१६२१॥ कंठा

चोदग आह – लोउत्तरठियाणं लोइयठवणापरिहारेण किं चि अम्हं ?

आचार्याह –

लोउत्तरम्मि ठविता, लोगणिव्वाहिरत्तमिच्छंति ।
लोगजढे परिहरता, तित्थ-विवड्ढी य वण्णो य ॥१६२२॥

पुव्वद्धं कंठं। लोगे दुगुंछिया जे, ते परिहरंतेण तित्थस्स वुड्ढी कता भवति, "वण्णो"त्ति जसो पभावितो भवति ॥१६२२॥

लोइय-ठवणकुलेसु गेण्हंतस्स इमे दोसा –

अयसो पवयणहाणी, विप्परिणामो तहेव य दुगुंछा ।
लोइय-ठवणकुलेसुं, गहणे आहारमादीणं ॥१६२३॥

"अयसो" त्ति अवण्णो, "पवयणहाणी" न कश्चित् प्रव्रजति, सम्मत्तचरित्ताभिमुहा विप्परिणमंति, कावलिया इव लोए दुगुंछिता भवंति, अस्पृश्या इत्यर्थः। पच्छद्धं कंठं ॥१६२३॥

लोउत्तरिएसु दाणाइसड्ढकुलेसु पविसंतस्स इमे दोसा –

आयरिय बालवुड्ढा, खमग-गिलाणा महोदरा सेहा ।
सव्वे वि परिच्चत्ता, जो ठवण-कुलाइं णिव्विसती ॥१६२४॥

महोदरोऽयं बह्वासी, आएस प्राघूर्णकः, णि आधिक्केण विशति निविशति प्रविशतीत्यर्थः ॥१६२४॥

इमं पच्छित्तं –

आयरिए य गिलाणे, गुरुगा लहुगा य खमग पाहुणए ।
गुरुगो य बाल-वुड्ढे, सेहे य महोदरे लहुओ ॥१६२५॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जो एते ठवणाकुले ण णिव्विसति तस्सिमे गुणा –

गच्छो महाणुभागो, सबाल-वुड्ढोऽणुकंपिओ तेणं ।
उग्गमदोसा य जढा, जो ठवण-कुलाइं परिहरइ ॥१६२६॥

जिनकल्पिकादिरत्नानामागरत्वात् समुद्रवत् महानुभागः। बाल - वृद्ध - गिलानादीनां च साधारणत्वात् महानुभागः। जो तेसु ण णिव्विसति तेण सो गच्छो अणुकंपितो, उद्गमदोषाश्च परित्यक्ता भवंति ॥१६२६॥

गच्छवासीणं इमा सामाचारी –

गच्छम्मि एस कप्पो, वासावासे तहेव उडुबद्धे ।
गाम-णगरागरेसुं, अतिसेसी ठावते सड्ढी ॥१६२७॥

कप्पो विधी। एस विधी वासावासे उदुबद्धे वा गाम-णगरातिसु विहरंताणं। "अतिसेसि" त्ति अतिसयदव्वा उक्कोसा ते जेसु कुलेसु लब्भंति ते ठावियव्वा, ण सव्वसंघाडगा तेसु पविसंति। "सड्ढि" त्ति संजमे सद्धा जस्स अत्थि सो सड्ढी आयरिओ ॥१६२७॥

मज्जादाणं ठवगा, पवत्तगा सव्वखेत्ते आयरिया ।
जो तु अमज्जातिल्लो, आवज्जति मासियं लहुयं ॥१६२८॥

मज्जाया मेरा, ताणं ठवगा पव्वत्तगा य सव्वखेत्तेसु आयरिया भवंति, जो पुण आयरियो मज्जायं ण ठवेति, ण पवत्तेति सो अमज्जाइल्लो असामायारि-णिप्फण्णं मासलहुं पावति ॥१६२८॥

जे वत्थव्वा खेत्त-पडिलेहगा वा तेसिं इमा समायारी –

दाणे अभिगमसड्ढे, सम्मत्ते खलु तहेव मिच्छत्ते ।
मामाए य चियत्ते, कुलाइं साहिंति गीतत्था ॥१६२९॥

दाणे अभिगमसड्ढे, सम्मत्ते खलु तहेव मिच्छत्ते ।
मामाए अचियत्ते, कुलाइं दाएंति गीतत्था ॥१६३०॥

रातो दिवसतो वा वसहिट्ठिया अण्णत्थ वा इंददत्ताभिणामेगं वग्गेण य पुव्वादियासु दसासु ठवणकुले दाएंति दरिसेंति ॥१६३०॥

दरिसितेसु गुरुणो इमा सामायारी –

दाणे अभिगमसड्ढे, सम्मत्ते खलु तहेव मिच्छत्ते ।
मामाए अचियत्ते, कुलाइं अठ्ठवेंते चउगुरुगा ॥१६३१॥

गुरुणो ठवणकुले अठवेंतस्स चउगुरुगा ॥१६३१॥

चोदगाह – किं कारणं ?

किं कारणं च[1]मढणा, द[2]व्वखओ उग्ग[3]मो वि य ण सुज्झे ।
[4]गच्छम्मि णियकज्जं, [5]आयरिय [6]गिलाण पा[7]हुणए ॥१६३२॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आयरिओ भणति – चमढणा, दव्वखओ, उग्गमो ण सुज्झे, गच्छे य कज्जं णिययं, आयरिय-गिलाण पाहुणगा, य एते दारा ॥१६३२॥

इमा व्याख्या "[1]चमढणे" त्ति दारं –

पुव्वं पि धीरसुणिया, छिक्का छिक्का पधावती तुरियं ।
सा चमढणाए सिग्गा, संतं पि ण इच्छती घेत्तुं ॥१६३३॥

मुगहवितिज्जोग्रसहाओ लुद्धगो "धीरो" भण्णति । "पुव्वं" ति सो धीरो सावते अदट्ठे चेव क्रीडं हंतूण छिक्कारेति धावति य, ताहे सा धीरसुणिया इतो पधावति तुरियं । 'अवि" सद्दातो दिट्ठे वि एवं करेति । सा एवं धीरसुणिया रिक्कपहावणाहिं सिग्गा जति सो सावगं पच्छा दट्ठुं छिक्कारेति ताहे सा संतं पि घेत्तुं ण इच्छति, अतिश्रमात् प्रतारणाद्वा ॥१६३३॥

एवं सड्ढ-कुलाइं, चमढिज्जंताइं अण्णमण्णेहिं ।
णेच्छंति किंचि दातुं, संतं पि तहिं गिलाणस्स ॥१६३४॥

एवं ठवणकुला चमढिज्जंता अण्णोऽण्णेहिं साहूहिं अण्णोऽण्णेहिं वा रिक्कारणेहिं । पच्छा कारणे उप्पण्णे संतं पि घरे, तहावि गिलाणस्स दाउं ण इच्छंति ॥१६३४॥

इदाणिं "[2]दव्वक्खए" त्ति दारं –

अण्णो चमढणदोसो, दुल्लभदव्वस्स होति वोच्छेदो ।
खीणे दुल्लभदव्वे, णत्थि गिलाणस्स पाउग्गं ॥१६३५॥

दुल्लभदव्वं घतादियं, तं जति अकारणे दिणे दिणे गेण्हंति ताहे तं वोच्छिज्जति । तम्मि वोच्छिण्णे गिलाणपओयणे उप्पण्णे गिलाणपाउग्गं ण लभति । अलब्भंते य परिताव-महादुक्ख-गिलाणारोवणा भद्द-पंतदोसा य भवंति ॥१६३५॥

तत्थिमे पंतदोसा –

दव्वखएणं पंतो, इत्थिं घातेज्ज कीस ते दिण्णं ।
भद्दो हट्ठ पहट्ठो, (करे) किणेज्ज अण्णं पि साधूणं ॥१६३६॥

पंतस्स भज्जा सड्ढी हवेज्ज, सा साहूहिं रिक्कारिक्कपओयणे जातिता घतादि पयच्छेज्ज । तम्मि णिट्ठिते संघाडेणं कूरं मग्गिता, "णत्थि" त्ति भणेज्ज । एवं कुमारादि एक्केक्कं मग्गिता णत्थित्ति-भणेज्जा ।

सो भणाति – तं कहिं गयं ?

तो सड्ढी भणाति – साधूणं तं दिण्णं ।

ताहे सो पंतो तं घाएज्ज – कीस ते दिण्णं, साहूण वा पदुट्ठो जं काहिति, छोभगं वा देज्ज ।

इदाणिं "[3]उग्गमे" त्ति दारं --

पच्छद्धं – एवं चेव सड्ढीए कहीए हट्ठो हरिसिओ, सुट्ठु संतुट्ठो, पहट्ठो प्रकर्षेण हृष्टः प्रहृष्टः, प्रहसितमनाः, उद्धसियरोमश्च, भणाति – सुट्ठु ते कयं जं दिण्णं, ममेसा धम्मसहाइणि त्ति, अण्णं पि

१ गा० १६३२ । २ गा० १६३२ ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

साहुअट्ठा किणिउं पच्चप्पिणेज्ज, साहूणं पयच्छाहि, जया णिट्ठियं तदा पुणो कहेज्जासु, अण्णं वा उग्गमदोसं कारवेज्ज । एतद्दोसपरिहरणत्थं । गच्छे णियकज्जं, अ.यरिय-गिलाण-पाहुणगट्ठा । तम्हा अतिसेसियसंघाडगं मोत्तुं ठवणा-कुलेसु सेसा णो पविसेज्जा ।।१६३६।।

पाहुणगे य आगते पाहुणगं कायव्वं, तं च सभावाणुमयं देज्जा ।

ततो भण्णति –

जड्डे महिसे चारी, आसे गोणे य तेसि जावसिया ।
एतेसिं पडिवक्खो, चत्तारि तु संजता होंति ।।१६३७।।

जड्डो हत्थी, महिसो, आसो, गोणो य । एतेसिं चारिं अणुकूलं आणेति, जवसं वहंति जे ते जावसिया । ते य परियट्टया । पच्छद्धं कंठं ।।१६३७।।

पुव्वद्धस्स इमा वक्खा –

जड्डो जं वा तं वा, सुमालं महिसओ मधुरमासो ।
गोणो सुगंधदव्वं, इच्छति एमेव साधू वि ।।१६३८।।

हत्थिस्स इट्ठं णलइक्खु मोतगमादी, तं आहारेति । तस्साभावे "जं व" त्ति जं वा अणिट्ठं तं वा आहारेति, जं वा कमागयं ।

महिसो सुकुमालं वंसपत्तमादी, तस्साभावे तद्भाव भावितत्वात् अण्णं ण चरति, तं अह चरए पुट्ठिं ण गेण्हति ।

एवं आसो हप्पिच्छं (हरिमत्थं) मुग्गमादि मधुरं ।

गोणो अज्जुणमाति सुगंधदव्वं ।

एवं साहू वि चउरो, चउविधं भत्तमिच्छंति

जड्ड-समस्स – उक्कोसाभावे दासीणातिणा कडपूरणेण पओयणं ।

महिस-समस्स – सालिमातिणा सुकुमालोदणेण पओयणं ।

आस-समस्स – खंड-खीर-सालिमाइएहिं अ पओयणं ।

गोण-समस्स – हिंगुरिय-कट्ठ-मंडातिएहिं सुगंधेहिं पओयणं ।

एते पुण दव्वा ठवणकुलेसु संभवंति ।

अठविएसु य तेसु कतो आणेउ ?

पाहुण्णे य अकते अयसो, ण य णिज्जरालाभो । अतो कायव्वं ।।१६३८।।

चोदगाह – 'ठवणकुलेसु मा कोति पविसतु, जता पओयणं पाहुणगाति उप्पण्णं ताहे पवेसियव्वं ।"

आयरियाह –

एवं च पुणो ठविते, अप्पविसंते इमे भवे दोसा ।
वीसरणे संजताणं, वि सुक्खगोणी य आरामे ।।१६३९।।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पुव्वद्धं कंठं। "विस्सरणा संजताणंति" भिक्खावसमं दायव्व त्ति ण पडिवालेंति, खेत्तमातीयं चयंति वि सुक्खगोणी दिट्ठंतो इमो, जधा –

एगस्स गिहिवतिणो पगतं काउकामस्स तक्केण पओयणं। तस्स य गोणी पदोस-पच्चूसेसु कुलअं कुलअं दुद्धस्स पयच्छति। तेण चिंतियं – आसण्णगते दुज्झिहिति तो मे सगिहे चेव बहुतक्कं भविस्सइ त्ति ण दूढा। पत्ते य पगयकाले दोढुमाढत्तो जाव विसुक्का।

आरामे त्ति दिट्ठंतो – एवं मालागारेण वि चिंतियं - आसण्णे छण्णे उच्चीहामि त्ति ण उच्चोता। जाव छणासण्णं ताव ओप्फुल्लो आरामो। एवं जाहे उप्पण्णं कज्जं ताहे पविट्ठा ठवणकुलेसु, ताहे सड्ढा भणंति – एत्थंचिय अच्छंताण मुणह वेल अम्हं एए वत्ता वेला, अप्पविसंतेसु य ण कोति दंसणं पडिवज्जति, ण वा अणुव्वए, गिलाणपाउग्गं च णत्थि, तम्हा एगो अइसेसियसंघाडओ इमेहिं दोसेहिं वज्जितो पविसतु ॥१६३९॥

अलसं घसिरं सुचिरं, खमगं कोध-माण-माय-लोभिल्लं।
कोऊहलपडिबद्धं, वेयावच्चं ण कारेज्जा ॥१६४०॥

आलस्सितो ताव अच्छति जाव फिट्टा वेला।

अहवा – अपत्ते चेव देसकाले अडति, अलद्धे य गुरुमातियाण विराहणा, अतिक्कंतकाले अलाभो, वा अप्पलाभो वा, ठवणादोसा य, अपत्ते वा ओसक्कणदोसं, अण्णतो य अलाभो, चिरं वा हिंडेति।

"घसिरो" बह्वासी, सो वि अप्पणो जाव पज्जत्तं गेण्हति ताव वेलातिक्कमो, गहिते वा अप्पणो जाव पज्जत्तं गेण्हति ताव सीतलं, अकारकादि दोसा भवंति।

जे अलसे ते सुचिरे वि दोसा, स्वपनशीलः सुचिरः।

"खमगो" परिताविज्जति, सेसा घसिरदोसा खमगे वि संभवति।

"कोवी" अदत्ते रूसति, रुट्ठो वा घरं ण गच्छति, किं वा तुमं देसि त्ति दुव्वयणेहिं विप्परिणमेति।

"माणी" ऊणे वा दिण्णे, अब्भुट्ठाणे वा, अदिण्णे थब्भति त्ति, पुणो घरं माणेण ण गच्छति, तेण विणा जा हाणी तं पावति।

"माती" भद्दगं भोच्चा पंतं आहारेति, पंतेण वा छाएति।

"लुद्धो" ओभासति, दिज्जंतं वा ण वारेति, अणेगेसु पविसमाणेसु जे दोसा ते लुद्धे संभवंति।

कोऊएण णडआती पेच्छंतो ताव अच्छति जाव देसकालो फिडिओ।

सुत्तत्थेसु पडिबद्धो जाहे व पाढविरहो ताहे व अदेसकाले वि ओतरति, पडलं पाए वा अतिक्कंतकाले उत्तरति, एत्थ ओसक्कण - उस्सक्कणाति दोसा ॥१६४०॥

एते जो ठवेति, जस्स वा वसेण ठविज्जंति तस्सिमं पच्छित्तं –

तिसु लहुओ तिसु लहुगा, गुरुगो गुरुगा य दोसु लहुगा य।
अलसादीहिं कमसो, कारिंति गुरुस्स पच्छित्तं ॥१६४१॥

अलसमातिएसु जहासंखं देयं ॥१६४१॥

एतद्दोसविमुक्कं, कडजोगिं णात-सीलमायारं।
गुरुभत्तिमं विणीतं, वेयावच्चं तु कारेज्जा ॥१६४२॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

एतेसु अलसमादिया दोसा। तेहिं विमुक्के वज्जितो सुत्तत्थेसु कडो जोगो जेण सो कडजोगी गीतार्थेत्यर्थः। वेयावच्चे वा जेगऽण्णया वि कडो जोगो सो वा कडजोगी। अक्कोहणादिसीलं जस्स णायं सो णायसीलो। आयरणमायारो, सो य पंचविहो णाणादि, सो णातो जस्स सो णातायारो उद्यताचारेत्यर्थः। गुरु आयरिया, एसुवरि भत्तिमंतो गुरोः सर्वकरणीयकारकेत्यर्थः। अब्भुट्ठाणातिविणयकारी विणीतो। एरिसो गुरुमादियाण वेयावच्चं करिज्जति ॥१६४०-४२॥

एयगुणोववेयाण वेयावच्चकरणे इमे गुणा –

साहिंति य पियधम्मा, एसणदोसे अभिग्गहविसेसे।
एवं तु विहिग्गहणे, दव्वं वड्ढेंति खेतण्णा ॥१६४३॥

साहंति कथयंति। के कथयन्ति ? पियधम्मा, पिओ य धम्मो जेसिं ते पियधम्मा। प्रियधर्मत्वादेव एसणदोसे मक्खिताइए कयेंति, तेहिं दोसेहिं दुट्ठं साहूण ण दिज्जति, एवं बहुफलं भवति। साहूण य अभिग्गहविसेसे कहेंति। उक्खित्तचरगा निक्खित्तचरगा उक्खित्तनिक्खित्तचरगा अंतो संब्बुक्कादि-दंडायतियादि संसट्ठातियाओ य एसणाओ कहयंति, जिणकप्पअभिग्गहे य कहंति, एवं कहेयंता विधीए गहणं करेंता, एवं सड्ढं वड्ढेंता, दव्वं वड्ढेंति, खेयन्ना ज्ञानिन इत्यर्थ. ॥१६४३॥

एसण-दोसे व कते, अकते वा जति-गुणे वि कत्थेंता।
कधयंति असढभावा, एसण-दोसे गुणे चेव ॥१६४४॥

ते पुण उल्लोएण धम्मं कहेंति। एसण-दोसे कते अकते वा जतीणं गुणा खमातिता विविवं कहयंति-श्लाघयंतीत्यर्थः, असढभावा, ण [1]दंभेण, न भक्षणोपायनिमित्तं, एसणदोसे साधूण य गुणे कहेंति ॥१६४४॥

इमं च कहेंति –

ठाणं गमणागमणं, वावारं पिंडसोधिमुल्लोयं।
जाणंता ण वि तुब्भं, बहुवक्खेवाण कहयामो ॥१६४५॥

जत्थ साहू ठाणे ठिता भिक्खं गेण्हंति, जत्थ वा ठाणे ठितो दायगो ददाति, ठाणं वा स्थापनं-एसणदोषमित्यर्थः। गमो आगमो य दायगस्स जहा तहा कहेंति, कत्तण, पिंजण कंडणादिए य वावारे कहेंति, एरिसे गेज्झं, एरिसे वा अगेज्झं, एवं उवक्खेवेण पिंडणिज्जुती कहेंति। इमं च भणाति – जइ वि साहुधम्मं वियाणह तहावि बहुवक्खेवाण विस्सरिहिति अतो अविस्मरणत्थं कहामो ॥१६४५॥

बालादि-परिच्चत्ता, अकधिंत्तेणेसणादि-गहणं वा।
ण य कधपबंधदोसा, अध य गुणा-सोधिता होंति ॥१६४६॥

किं चान्यत् –

केसिं चि अभिग्गहिता, अणभिग्गहितेसणा य केसिं चि।
माहु अवण्णं काहिह, सव्वे वि हु ते जिणाणाए ॥१६४७॥

१ कैतवेन (भा)।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अभिग्गहिया एसणा जिणकप्पियाणं, अणभिग्गहिता गच्छवासियाणं । अण्णोण्णोवरणं दट्ठुं, णो अवण्णवातो भासियव्वो । सव्वे ते जिणाणाए सकल्पत्वात् ।।१६४७।।

ते पुण एसणदोसे कहेंति इमेण विधिणा –

बालादि-परिच्चत्ता, अकधितेणेसणादि-गहणं वा ।
ण य कधपबंधदोसा, अध य गुणा सोधिता होंति ।।१६४८।।
संविग्ग-भाविताणं, लोद्धग-दिट्ठंत-भाविताणं च ।
मोत्तूण खेत्त-काले, भावं च कहेंति सुट्ठुत्थं ।।१६४६।।

उज्जयविहारीहिं जे सड्ढा भाविया ते संविग्गभाविया, पासत्थाईहिं जे भाविता ते लुद्धदिट्ठंत-भाविता ।

कहं ते पासत्था एवं कहेंतिं ? –

जहा लुद्धगो हरिणस्स पिट्ठतो धावति, हरिणस्स पलायमाणस्स सेयं लुद्धगस्स वि जेण तेण पगारेणं तं हरिणं आमंतु वावादेंतस्स सेयं ।

एवं जहा हरिणो तहा साधू, जहा लुद्धगो तहा सावगो । साधू अकप्पियकंउप्पहारातो पलायति ।

पासत्थो सड्ढे भणाति – जेण तेण प्पगारेण सच्चालियादि भासिऊण तुब्भेहिं कप्पियं अकप्पियं वा साहूण दायव्वं, एयं तुज्झ सेयं भवति । कक्खडखित्तं अद्धाणं च पडुच्च साववायं कहति । दुब्भिक्खादिकालं गिलाणादिभाव पडुच्च साववाय कहेंति ।

एवमादि कारणे मोत्तुं सेसेसु खेत्तादिसु सुट्ठुत्थं कहेंति उत्सर्गत इत्यर्थः ।।१६४६।।

संथरणम्मि असुद्धं, दोण्ह वि गेण्हंत-देंतयाणऽहितं ।
आउर-दिट्ठंतेणं, तं चेव हितं असंथरणे ।।१६५०।।

फासुएसणिज्जा असणादिया पज्जत्ता जत्थ लब्भंति जत्थ हट्ठो य तं संथरंतम्मि संथरे, अफासुयं देंत-गेण्हंतगाण अहियं भवति । तं चेव अफासुयं असंथरे हितं भवति ।

चोदगाह – "तदेव कल्पं तदेवचाकल्पं, कथमेतत् ?

आचार्याह – आतुरदृष्टान्तसामर्थ्यात्, निरुजस्य विषादिना औषधेन किं प्रयोजनं, सरुजस्स तदेव विषादिकं पत्थं भवति ।।१६५०।।

संचइयमसंचइते, णाऊणमसंचयं तु गेण्हंति ।
संचइयं पुण कज्जे, णिब्बंधे चेव संतरितं ।।१६५१।।

घय-गुल-मोयगाइणा जे अविणासी ते संचइगा, खीरदहिमादिया विणासी जे ते असंचइया, ठवणकुलेसु पभूतं णाऊण असंचइयं गेण्हंति, संचइयं पुण गिलाणकज्जे उप्पण्णे गेण्हंति, अगिलाणो वि सड्ढग-णिब्बंधे गेण्हति, तं पुण "संतरितं" ण दिणे दिणे इत्यर्थः ।।१६५१।।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अपवादस्यापवादमित्युच्यते –

अहव ण सद्धा विभवे, कालं भावं च बाल-वुड्ढादी ।
णातु णिरंतरगहणं, अछिण्णभावे य ठायंति ।।१६५२।।

सावगाण सद्धं णाऊण, विपुलं च विभवं णाऊण, कालं च दुब्भिक्खाइयं, गिलाणभावं च, बालवुड्ढाण य अप्पायणं च, एवमाइकज्जेण णाऊण णिरंतरं गेण्हंति, जाव य तस्स दायस्स भावो ण वोच्छिज्जति ताव दिज्जमाणं वारयंति ।।१६५२।।

ठवणकुलेसु गेण्हंताण इमा सामायारी –

दव्वप्पमाण[1] गणणा[2], खारित[3] फोडित तहेव अद्धा[4] य[5] ।
संविग्ग एगठाणा, अणेगसाहूसु पण्णरसा ।।१६५३।।

"[1]दव्वगणणापमाणे" वि दो वि वक्खाणेति –

असणादि दव्वमाणे, दसपरिमितभत्तएगमुच्चारो ।
सो एगदिणं कप्पति, णिक्कंतियओ दरो इयरा ।।१६५४।।

तेसु ठवणकुलेसु असणस्स आदिसद्दातो पाण-खाइम-साइमस्स य परिमियापरिमियस्स दव्वस्स माणं साहुणा जाणियव्वं । गणणद्दारे जत्थ परिमियं तत्थ दसण्हरद्धे एगभत्तट्ठो उच्चरे[ति] सो एगदिणं साहूण कप्पति, बितियादिदिणेसु जइ गेण्हति तो णेक्कंतितो होति तम्हा ण कप्पति ।।१६५४।।

अपरिमिते आरेण वि, दसण्ह उच्चरति एगभत्तट्ठो ।
जं वंजणसमितिमपिट्ठो, वेसणमादीसु वि तहेव ।।१६५५।।

जत्थ पुण अपरिमियं रद्धति तत्थ आरेण वि दसण्हं णव-अट्ठ-सत्तिमादियाण रद्धे एगभत्तट्ठो उच्चरति, सो एगदिणं कप्पदि, सो वि अतो परं णेक्कंतितो भवति ।

[2]"खारिय-फोडिय" त्ति दारं । खारो लोणं छुब्भइ कडच्छुते घयं ताविज्जति, तत्थ जीरगादि छुब्भति, तेण जं धूवियं तं फोडियं भवति । व्यंजतेऽनेनेति व्यंजनं, तं च तीमण-माहुरगादि भण्णति । समिति [6]मातलाहणगादि, पिट्ठं उंडेरगादि, वेसणं कडुभंडं जीरयं हिंगपत्तसागाति "तहेव" त्ति – जहा असणादियाण तहा एतेसिं परिमियापरिमिताण परिमाणं णायव्वं ।।१६५५।। एवमुच्चारो य –

"[3]अद्ध" त्ति दारं –

सति कालद्धं णातुं, कुले कुले तत्थ ताहे पविसंति ।
ओसक्कणादि दोसा, अलंभे बालादि-हाणी य ।।१६५६।।

सति विद्यमानं भोजनकालं कुले कुले क्रमेणोत्क्रमेण वा प्रविसंति, उस्सक्कणातिया य दोसे परिहरंति । अह अदेसकाले पविसंति तो उस्सक्कणातिया दोसा । बालातियाण य अलाभे हाणी ।।१६५६।।

---

१ गा० १६५३ । २ गा० १६५३ । ३ गा० १६५३ ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

एगो व होज्ज गच्छो, दोण्णि तिण्णि व ठत्रणा असंविग्गे ।
[1]सोधी गिलाणमादी, असती दवादि एमेव ॥१६५७॥

जत्थ एगो गच्छो तत्थ ठवणकुलेसु एसा सामायारी भणिया । जत्थ पुण दोण्णि तिण्णि वा गच्छा तत्थ ठवणकुलेसु कहं गहणं ? ते य दो तिण्णि वा गच्छा परोप्परं संभोतिया असंभोइया वा । ॥१६५७॥

असंभोइएसु इमा विही –

संविग्गमणुण्णाते, अतिंति अधवा कुले विरिंचंति ।
अण्णाउंछं च सहू, एमेव य संजती-वग्गे ॥१६५८॥

संविग्गा उज्जयविहारी, तेहिं वत्थव्वसंविग्गेहिं आगंतुगा संविग्गा अणुण्णाया ठवणाकुलेसु 'अतिंति' प्रविशंतीत्यर्थः । वत्थव्वा साधू ठवणकुलवज्जेसु गुरुमाइयाण अप्पणो य भत्तमुप्पाएंति । अह दो वि असहू ताहे दोसु गच्छेसु अद्धद्धे कुले विरिंचंति, तिसु तिभागेण एवं चउसु चउभागेण, आगंतुगा वा साधू अण्णायउंछं हिंडंतु । जो अण्णसभोतिएसु संजतेसु विधी, संजतीसु संभोइयासंभोइयासु सो चेव विधी ॥१६५८॥

एवं तु अण्णसंभोइएसु संभोइएसु ते चेव ।
जाणित्ता णिब्बंधं वत्थव्वेणं स तु पमाणं ॥१६५९॥

एवं अण्णसंभोइयाण विधी भणितो, संभोतिएसु पुण ते चेव वत्थव्वा आणयंति, सड्ढाण वा णिब्बंधं जाणित्ता आगंतुगसंघाडओ वत्थव्वसंघाडएण सह पविसति, पविट्ठाण य ठवणकुलेसु जइ बहुयं भत्तं लब्भति तो आगंतुकेहिं ण गवेसणा कायव्वा, वत्थव्वस्स संघाडगो तत्थ प्पमाणं जाणति, तम्हा सो चेव तत्थ पमाणं एवं एगवसहिठिताण विहाणं ॥१६५९॥

असति वसधीए वीसुं रातीणिय वसधि भोयणागम्मं ।
असहू अपरिणता वा ताहे वीसुं सहू वितरे ॥१६६०॥

असतीए वसधीए वीसुं पृथक् स्थिता । तत्थ आगंतुगो वत्थव्वगो वा जो रातिणिओ तस्स वसहीए आगंतुं भुंजति ।

अह एगम्मि गच्छे असहू गिलाणा वा असहू अपरिणता वा सेहा, ताहे तेसु वीसुं पृथक् ठिएसु असहूण पढमालीयं वितरंति, पच्छा सव्वे गंतुं रातिणीय वसहिं एगओ भुंजंति ।

अह दोसु वि गच्छेसु असहू अपरिणता वा, ताहे को यि परोप्परं असहूण पढमालियं अणुजाणंति, पच्छा सव्वे एगतो भुंजंति ।

अह एक्कंसि दोसु वा गच्छेसु असहू सव्वहा चेव भुत्ता, ताहे सेसा रातिणियवसहीए गंतुं एगतओ भुंजंति ॥१६६०॥

अह संभोतिया वसहि अभावे मंडलिभूमि-अभावे वा गिलाणातिकारणेसु वा एगतो ण भुंजंति ।

ताहे इमो विधी –

तिण्हं एगेण समं, भत्तट्ठं अप्पणो [2]अवड्ढं तु ।
पच्छा इतरेण समं, आगमणे विरेगो सो चेव ॥१६६१॥

---

१ अस्या व्याख्या अग्रे द्रष्टव्या (गा० १६६१-६२) । २ अर्धः ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आयरिओ एगो वत्थव्वो, दो आगंतुगा, ताण दोण्ह जो रातिणितो तस्स संघाडगे अप्पणो भत्तट्ठस्स अवड्ढं गेण्हंति, आगंतुबितियसंघाडगे वि अप्पणो भत्तट्ठस्स अवड्ढं चेव गेण्हंति, रातिणिएण समाणं अवड्ढं भोच्चा इतरेण वि अवड्ढं भुंजति। दो वि संविग्गिता अप्पणो य भत्तट्ठो पुण्णो भवति। "आगमणे" त्ति जति तिमादिया आगच्छंति तो विभजनं विरेगो, सो चेव कायव्वो, जहा दोसु तहा तिसु चउमादिएसु य ॥१६६१॥

इयाणि "[1]असंविग्गे सोही गिलाणमादि" अस्य व्याख्या –

असंविग्गा साहू जत्थ खेत्ते वसंति तत्थ जे मेज्जातरादि ठवणकुला अण्णतो अलब्भंते तेसु कुलेसु पविसिउं "सोहि" त्ति सुद्धं जं भत्तपाणं तं गिलाणातिआण गेण्हेज्जा।

अतरंतस्स तु जोग्गासती य इतरेहि भाविते विसिउं।
अण्णमहाणसु वक्खड, भुंजति जं वा सयं सण्णी ॥१६६२॥

असंविग्गभाविएसु कुलेसु पविसंताण उग्गमाइया दोसा तम्हा णो पविसेज्जा। अतरंतो गिलाणो, तस्स जोग्गा असतीते "इतरे" त्ति पासत्थ-भाविता तेसु पविसिउं जम्मि महाणसे ते पासत्था भिक्खं गेण्हंति तत्थ न गेण्हंति, अण्णमहाणसे गेण्हंति। जं वा सण्णिमातियाण पिधोवक्खडं ततो गेण्हंति, अण्णतो वा जं पहेणगाति आयातं तं गेण्हति ॥१६६२॥

"[2]असती य दवाति एमेव" त्ति अस्य व्याख्या –

असति अण्णतो दवस्स संविग्ग-भावित-ठवणकुलेसु दवं जयणाए गेण्हंति। आदिसद्दातो असंविग्ग-भावित-ठवणकुलेसु दवं गेण्हंति। आदिसद्दातो असंविग्गभावियठवणाकुलेसु वि ;

असती एव दवस्स तु, परिसित्तिय-कंजि-गुल-दवादीणि।
अत्तट्ठिताणि गेण्हति, सव्वालंभे व मीसाइं ॥१६६३॥

असति अण्णतो अण्णायउंछे दव्वस्स संविग्गेतरभावियकुले दवं गेण्हेज्जा, तं च 'परिसित्तियं" – नाम उण्होदगेण दहिमट्टगा निच्चं गालिज्जंति तं परिसित्तगपाणगं भण्णति। कंजिगं पसिद्धं। गुलो जीए कवल्लीए कड्ढिज्जति तत्थ जं पाणियं कयं तत्तमतत्तं वा तं गुलपाणियं भण्णति। तो ते गिहत्थेहिं अत्तट्ठिताणि गेण्हंति। सव्वहा फासुगस्स अलाभे सचित्तमीसं पि गेण्हंति ॥१६६३॥

पाणट्ठा व पविट्ठो, असुद्धमाहारछंदितो गेण्हे।
अद्धाणादिमसंथरे, जतितुं एमेव जदसुद्धं ॥१६६४॥

संविग्गेतरभावितेसु कुलेसु पाणट्ठा पविट्ठो – सेसं कंठं। अद्धाणस्स वा आदीए मज्झे वा उत्तिण्णो वा असंथरंतो पणगातिजयणाए जतिउं पच्छा जं असुद्धं तं पि गेण्हंति ॥१६६४॥

बितियपदमणाभोगे, गेलण्णऽद्धाण-संजम-भए वा।
सत्थवसए व अवसे, परव्वसे वा वि णो पुच्छा ॥१६६५॥

अवसो खित्तचित्तादि, रायदुट्ठे. रायपुरिसवसगो परव्वसो, एवमादिएहिं कारणेहिं ण पुच्छेज्जा वि, अपुच्छंतो य सुद्धो ॥१६६५॥

---

१ गाथा १५५७। २ गा० १६५७।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जे भिक्खू णिग्गंथीणं उवस्सयंसि अविहीए अणुप्पविसइ
अणुप्पविसंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२३॥

णिग्गय गंथी णिग्गंथी। उवस्सओ वसही। तं जो अविधीए पविसति तस्स मासलहुं, आणादता दोसा भवंति।

इदाणिं णिज्जुत्ती –

णिक्कारणमविधीए, णिक्कारणतो तहेव य विधीए।
कारणतो अविधीए, कारणतो चेव य विधीए ॥१६६६॥

पवेसे चउरो भंगा भवंति –

पढमे – णिक्कारणे अविधीए, बितिए – णिक्कारणे विधीए।

तइए – कारणे अविधीए, चउत्थे – कारणे विधीए ॥१६६६॥

आदिभयणाण तिण्हं, अण्णतरीए तु संजतीसेज्जं।
जे भिक्खू पविसेज्जा, सो पावति आणमादीणि ॥१६६७॥

तिण्णि आदिमा भंगा आदिभयणा भण्णति। एतेसिं तिण्हं भंगाणं अण्णतरेण जो संजतिवसहिं पविसति तस्स आणातिता दोसा ॥१६६७॥

पढमभंगो वक्खाणिज्जति –

णिक्कारणम्मि गुरुगा, तीसु वि ठाणेसु मासियं गुरुगं।
लहुगा य वारमूले, अतिगतिमित्ते गुरू पुच्छा ॥१६६८॥

जात णिक्कारणे संजतिवसहिं जाति तो चउगुरुं, अविधीए पविसंतस्स तीसु वि ठाणेसु मासियं गुरुगं।

इमे तिण्णि ठाणा – अग्गद्दारे, मज्झे, आसण्णे।

एतेसु तीसु वि णिसीहियं अकरेंतस्स तिण्णि मासगुरुगा भवंति।

जइ मूलदारसमीवे बहिया ठायंति तो चउलहुं अंतो पविसइ तो चउगुरुं ॥१६६८॥

चोयगो पुच्छति –

पाणातिपातमादी, असेवतो केण होंति गुरुगा तु।
कीस च बाहिं लहुगा, अंतो गुरु चोदग ! सुणेहि ॥१६६९॥

पाणातिवातं अकरेंतस्स केण कारणेण चउगुरुं पच्छित्तं भवति ?

कीस वा बहिद्दारेमूले चउलहुं ? कीस वा अंतो अतिगयस्स चउगुरुं ?

आयरिओ भणति – हे चोदग ! सुणेहि कारणं ॥१६६९॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वीसत्था[1] य गिलाणा,[2] खमिय[3] वियारे[4] य भिक्ख[5] सज्झाए[6] ।
पाली[7] य होति भेदो, अत्ताणपरे तदुभए य ॥१६७०॥ दा० गा०

[1]वीसत्थ त्ति दारं –

कायी सुहवीसत्था, दर-जमिय अवाउडा य पयलादी ।
अतिगतमेत्ते तहियं, संकितपवलाइया थद्धा ॥१६७१॥

काति संजती वसहीए अंतो आयसुहेण अवंगुयसरीरा सुहवीसत्था अच्छति, अद्धभुत्ता वा अंतो वसहीए, दरणिवत्था अवाउडा णिसण्णा वा निवण्णा वा णिद्दायति, एवं तासु संजतीसु तम्मि संजते अतिगते पविट्ठे काति संकिता "अहमणेण अवाउडा दिट्ठ" त्ति पचलाइया नस्सति, सहसा पविट्ठे संखोहातो थद्धग— भवति ॥१६७१॥

"पवलातिय" त्ति अस्य व्याख्या

वीरल्लसउणि वित्तासियं जधा सउणि-वंदयं वुण्णं ।
वच्चति णिरावयक्खं, दिसि विदिसाओ विभज्जंतं ॥१६७२॥

वीरल्लग-सउणो उल्लगजाति, तेण वित्तासिता सउणो कवोतगाति, तेसिं वृंदं वुण्णं भयुब्भिण्णा-सण खुभियं वच्चति । अवेक्खा णाम अवलंभणा अण्णोण्णेसु पुत्तभंडातिसु, सा णिग्गता जस्स तं णिरवेक्खं भण्णति । दिसाओ विदिसा दिसोदिसं विभज्जंतं अपूरयमाणं । १६७२॥

एतस्स दिट्ठंतस्स इमोवसंहारो –

तम्मि य अतिगतमेत्ते, वितत्थ उ तहेव जह समणी ।
गिण्हंति य संघाडिं, रयहरणे या वि मग्गंति ॥१६७३॥

तम्मि संजते पविट्ठे विविधं त्रस्ता वित्रस्ता जहा ताओ सउणीओ ताओ वि संजतीओ, अण्णा अवाउयगत्ता तुरियं तुरियं पाउणति मग्गति च, अण्णाओ तुरियं रओहरणं मग्गंति, अवि सड्ढाओ संभमेण रओहरणं मोत्तुं णट्ठा पच्छा मग्गंति ॥१६७३॥

इमे दोसा –

छक्कायाण विराधण, आवडणं विसमखाणुए विलिता ।
थद्धा य पेच्छितुं भाव-भेदो दोसा तु वीसत्थे ॥१६७४॥

कुंभकारसालातिसु णिरवेक्खा णासंती छक्काये विराहेज्ज, आवडणं पक्खलणं हेट्ठोवरिं वा अफिडणं, विसमे वा पडति, खाणुए वा दुक्खविजति, अवाउडा वा विलिता विलक्खीभूता उब्बंधणादि करेज्ज, थद्धं वा अवाउडं पेच्छिऊण बहुअणमज्झे भावभेदो भवेज्जा, एगागिणीं वा एक्कं देज्ज । एते दोसा वीसत्थाए भवंति । दारं ॥१६७४॥

---

[1] गा० १६७० ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इदाणिं "[1]गिलाणे" त्ति दारं –

कालातिक्कमदाणे, गाढतरं होज्ज णेव पउणेज्ज ।
संखोभेण णिरोधो, मुच्छा मरणं च असमाही ॥१६७५॥

संजयसंखोभेणं गिलाणी ण भुंजति, भिक्खाए वा गिलाणीणिमित्तं ण वच्चति, एवं अतिक्कंतकाले दाणेण गाढतरं गेलण्णं हवेज्ज, ण वा पउणेज्ज ।

अहवा – संजयसंखोभेण काइयं सण्णं वा वायकम्मस्स वा णिरोहं करेज्ज, तत्थ गाढतरं गेलण्णं हवेज्ज, मुच्छा वा से हवेज्ज, णिरोहेण वा मरेज्ज, असमाधाणं वा से हवेज्ज । एत्थ परितावणादिणिप्फण्णं सव्वं पायच्छित्तं दट्ठव्वं । दारं ॥१६७५॥

इदाणिं "[2]खमग" त्ति दारं –

पारणग-पट्ठिता आणितं च अविगडित ऽदंसितं ण भुंजे ।
अचियत्तमंतराए, परितावमसब्भवयणे य ॥१६७६॥

खमिगा पारणगट्ठा पट्ठिया, जेट्ठज्जो आगओ त्ति णियत्तति, दारमूले वा सण्णिविट्ठो उवरिं ण गच्छामि त्ति णियत्तति, पवत्तिणी वा तस्स समीवे णिविट्ठा, खमिगाए वा पारणगमाणियं अविगडियं अणालोइयं अदंसितं च ण भुंजति, पवत्तिणीओ दिक्खतीओ अच्छति, खमियाए अचियत्तं अंतरायदोसा य, खमिगा परिताविज्जति, असब्भवयणं वा भणेज्ज, किं चि न किंचि ? कीलग अज्जो एस उवट्ठिय त्ति । दारं ॥१६७६॥

इयाणिं "[3]वियारे" त्ति दारं –

णोल्लेऊण ण सक्का, वियारभूमी य णत्थि से अंतो ।
संते वा ण पवत्तति, णिच्छुभण विणास गरहा य ॥१६७७॥

णोल्लणं संघट्टणं ताणं अंतो वियारभूमी णत्थि, संकाए वा कस्सति ण पवत्तति, सेज्जायरेण अणणुण्णाय जति वोसिरंति तो णिच्छुभेज्जा, दिया राओ वा णिच्छूढा अवसहिया विणासं पावेज्ज, गरहणं च पावति । दारं ॥१६७७॥

इदाणिं "[4]भिक्ख" त्ति दारं –

सति कालफेडणे एसणादि पेल्लेमपेल्लणे हाणी ।
संकादभावितेसु य, कुलेसु दोसा चरंतीणं ॥१६७८॥

ताओ य भिक्खं पट्ठिता, सो य आगतो, तस्स दक्खिण्णेणं ताव ठिता जाव सति कालो फिडितो, ततो अवेलाए एसणं पेल्लेज्जा, तण्णिप्फण्णं । अपेल्लतीणं अप्पाणो हाणी, तत्थ परितावणादि णिप्फण्णं, अभाविय-कुलेसु य अकाले चरंतीओ मेहुणट्ठे संकिज्जति । दारं ॥१६७८॥

इदाणिं "[5]सज्झाय" त्ति दारं –

सज्झाए वाघाओ, विहारभूमिं व पट्ठियणियत्ता ।
अकरण णासारोवण, सुत्तत्थ विणा य जे दोसा ॥१६७९॥

१ गा० १६७० । २ गा० १६७० । ३ गा० १६७० । ४ गा० १६७० । ५ गा० १६७० ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जेट्ठज्जो आगतो त्ति ण पढंति, वाघातो वसहीए वा असज्झायं, सज्झायभूमीए पट्ठिताणं तं दट्ठुं णियत्ताण सज्झायवाघातो। "अकरणे" त्ति सुत्तपोरिसिं ण करेंति मासलहुं, अत्थपोरिसिं ण करेंति मासगुरुं, सुत्तं णासेंति ङ्क। अत्थं णासेंति ङ्का। सुत्तत्थेहिं य णट्ठेहिं कहं चरणविसुद्धी। दारं ॥१६७९॥

इदाणिं "[1]पालियभेउ" त्ति दारं –

संजम-महातलागस्स, णाण-वेरग्ग-सुपरिपुण्णस्स।
सुद्धपरिणामजुत्तो, तस्स तु अणतिक्कमो पाली ॥१६८०॥

संजम-महातलागस्स अणइक्कमपालिए भेदो भवति, वसहि-पालिए वा भेदो भवति ॥१६८०॥

संजमअभिमुहस्स वि, विसुद्ध-परिणाम-भाव-जुत्तस्स।
विकहाति-समुप्पण्णो, तस्स तु भेदो मुणेतव्वो ॥१६८१॥

अहवा पालयतीति, उवस्सयं तेण होति सा पाली।
तीसे जायति भेदो, अप्पाण-परोभय-समुत्थो ॥१६८२॥

मोह-तिगिच्छा खमणं, करेमि अहमवि य बोहि-पुच्छा य।
मरणं वा अचियत्ता, अहमवि एमेव संबंधो ॥१६८३॥

सो गतो जाव एक्का वसहि-पाली अच्छति। तेण पुच्छिता किं ण गतासि भिक्खाए ?

सा भणति – अज्ज ! खमणं मे।

सो भणति – किं निमित्तं ?

सा भणति – मोह-तिगिच्छं करेमि।

ताए वि सो पुच्छिओ भणाति –

अहं पि मोह-तिगिच्छं करेमि।

कहं बोधि त्ति-लद्धा ? परोप्परं पुच्छंति।

तेण पुच्छिता-कहं सि पव्वइया ?

सा भणति – भत्तारमरणेण तस्स वा अचियत्त त्ति तेण पव्वतिता।

ताए सो पुच्छितो भणति – अहं पि एमेव त्ति।

एवं भिण्णकह-सब्भावकहणेहिं परोप्परं भाव-संबंधो हवेज्ज ॥१६८३॥

"[2]बोहि-पुच्छाए" त्ति अस्य व्याख्या –

ओमाणस्स व दोसा, तस्स व मरणेण सग्गुणो आसि।
महतरिय-पभावेण य, लद्धा मे संजमे बोधी ॥१६८४॥

ओमाणं ससवत्तियं। अहवा – ससावत्ते वि मं ओमं पासती, तेण दोसेण पव्वइया। सो मे भत्ता

१ गा० १६७०। २ गा० १६८३।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सगुणो णेहपरो आसि, तस्स मरणेण पव्वइया । महयरिया मे णेहपरा धम्मवक्खाणं करेति तेण मे बोधी लद्धा ॥१६८४॥

किं चान्यत् –

पंडुइया मि घरासे, तेण हतासेण तो ठिता धम्मे ।
सिट्ठं दाणि रहस्सं, ण कहिज्जति जं अणत्तस्स ॥१६८५॥

घरवासे वाकारलोपाओ घरासे, घरे वा आसा घरासा, तम्मि घरासे पंडुइया अंसिया। "तेणं" ति - भत्तारेण, हता आसा जस्सा सा हतासा सिट्ठं कहियं । इदाणिं रहस्सं णाम गुज्झं, अणत्तो अनाप्तः, तुमं पुण ममात्तो, तेण ते सव्वं कहियं ॥१६८५॥

किं चान्यत् –

रिक्खस्स वा वि दोसो, अलक्खणो सो अभागधेज्जो वा ।
ण य णिग्गुणामि अज्जो ! अवस्स तुब्भे वि णाहित्थ ॥१६८६॥

रिक्खं णाम नक्खत्तं । णूणं विवाहदिणे विवक्करादि-दोसो णक्खत्तस्स आसि, तेण सो ममोवरि णित्तण्हो णिरणेहो आसि । अलक्खणो वा सो अभाग्यानि अपुण्याणि ताणि जो धरेति सो अभागधेयो, न याहं णिग्गुणा, तहा वि मम सो णित्तण्हो, एतेहिं दोसेहिं "अज्जो" ति आमंतणे ।

अहवा – किं णिउत्ताए सराहिज्जति ? तुब्भे वि णाहिह । "अवस्स" त्ति णिद्धारणत्थे संदेहत्थे वा ॥१६८६॥

ताए पुच्छिओ सो वि दुद्धरो इमं भणति –

इट्ठ-कलत्त-विओगे, अण्णम्मि य तारिसे अविज्जंते ।
महतरय-पभावेण य, अहमवि एमेव संबंधो ॥१६८७॥

इट्ठं पियं घनं कलं यस्मात् सर्वं अत्ते गृण्हाति तस्मात् कलत्तं, सा य भारिया, तस्स वियोगे । अण्णं च तारिसं णत्थि । महत्तरो य मे णेहपरो, तेण अहमवि पव्वइतो । "एमेव" त्ति जहा तीए अप्पणो साणुरागं चरितं अक्खियं तं एमेव सो कहेति, एवं तेसिं परोप्परसंबंधो भवति ॥१६८७॥

किं चान्यत् –

किं पेच्छह ? सारिच्छं, मोहं मे णेति मज्झवि तहेव ।
उच्छंग-गता व मया, इधरा ण वि पत्तियंतो मि ॥१६८८॥

सो तं णिद्धाए दिट्ठीए जोएति ताए भणाति - किं पेच्छसि ?

सो भणाति – सारिच्छं, तुमं मम भारियाते हसिय - जंपिएण लडहत्तणेण य सव्वहा । सारिच्छा । तुज्झ दंसणं मोहं मे णेति, मोहं करेति ।

अहवा – मोहं णेति उप्पादयति, णज्जति सा चेव त्ति ।

सा भणाति – जहाऽहं तुज्झे मोहं करेमि, तहा मज्झवि तहेव तुमं करेसि ?

केवलं सा मम उच्छंगे मया, इहर त्ति - जति सा परोक्खातो मरंति तो देवाण वि ण पत्तियंतो जहा तुमं सा ण भवसि त्ति ॥१६८८॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इति संदंसण-संभासणेहिं भिण्णकध-विरह जोगेहिं ।
सेज्जातरादि-पासण, वोच्छेद दुदिट्ठधम्मे त्ति ॥१६८९॥

"इति" एवार्थे, परोप्परं दंसणेण संभासणेण य एयाहि य भिण्णकहाहि विरहो, एगंतं तत्थ जोगेहि चरित्तभेदो भवति । सेज्जातरो अण्णो वा कोति पासेज्ज, संकातीता दोसा । तस्स वा साहुस्स अण्णस्स वा वसहीए अण्णदव्वस्स वा वोच्छेदं करेज्ज । "दुद्दिट्ठधम्मो" त्ति वा विपरिणामिज्ज ।

लिंगेण लिंगिणीए, संपत्ती जो नियच्छती मूढो ।
निरयाउयं निबंधति, आसायण दीहसंसारी ॥१६९०॥

अहवा – तत्थ गतो इमे भावे करेज्जा –

पयला-णिद्द-तुयट्टे, अच्छिदिट्ठम्मि चमढणे मूलं ।
पासवणे सचित्ते, संका वुच्छम्मि उड्डाहो ॥१६९१॥

पयला-णिद्द-तुयट्टे, अच्छि अदिट्ठम्मि चउलहु होंति ।
सेसेसु वि चउगुरुगा, पासवणे मासियं गुरुगं ॥१६९२॥

निसन्नो पयलाति त्ति-जग्गो सुत्तो १ निसन्नो चेव निद्दायति २ सुत्तो सुत्तो तुयट्टेति ३ संथारेतुं णिवण्णो अच्छिं चमढेति ४ एतेसु पयलादिएसु परेण अदिट्ठे चउलहुं पच्छित्तं । "सेसेसु वि" त्ति परेण एएसु चेव दिट्ठे एक्केक्के संकाए चउगुरुअं चेव । निस्संकिते मूलं । जति संजतीणं फलिहंतोग्गहे काइयभूमीवज्जे काइयं वोसिरति तो मासलहुं ॥१६९२॥

पयलत्तं दट्ठूण परो इमं चिंतेति –

सज्झाएण णु खिण्णो, आओ अण्णेण जेण पयलाति ।
संकाए होंति गुरुगा, मूलं पुण होति णिस्संके ॥१६९३॥

किं एस संजतो सज्झायजागरेण खिण्णो पयलाइ ? आउ" त्ति अहोश्वित् "अण्णेणं" ति सागारिय-प्पसंगेण ? एवं संक-णिस्संकाए, पच्छद्धं ॥१६९३॥

सिद्धसेणक्षमाश्रमणकृता गाहा –

पयला णिद्द तुयट्टे, अच्छिमदिट्ठम्मि चउगुरू होंति ।
दिट्ठे वि य संकाए, गुरुगा सेसेसु वि पदेसु ॥१६९४॥

पुव्वद्धं गतार्थं । पयलायते परेण दिट्ठे वि य संकाए चउगुरुगा, णिस्संकिते मूलं, सेसेसु वि पएसु त्ति । णिद्दाइसु संकाए चउगुरुगा, निस्संकिए मूलं ॥१६९४॥

"[1]पासवणे मासियं गुरुगं" ति अस्य व्याख्या –

अण्णत्थ मोय गुरुगो, संजतिवोसिरणभूमिए गुरुगा ।
जोणोगाहणवी ,, केई धाराए मूलं तु ॥१६९५॥

१ गा० १६९२ ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मोयमिति काइयं। संजतीणं जा काइयभूमी, ताए स जति वोसिरति तो चउगुरुगं। तत्थ य कयाइ कीवस्स अण्णस्स वा बीयणिसग्गो भवे, तं बीयं जति धाराहतं मंजतीते जोणिं पविसति तो संजयस्स मूलं।

केइ आयरिया – धाराए चेव छिक्के मूलमिच्छंति, तहिं डिंडिमे उड्डाहाती दोसा, जम्हा एते दोसा तम्हा णो णिक्कारणे संजतिवसहिं गच्छे ॥१६६५॥ गतो पढमभंगो।

इयाणिं [1]बितियभंगो –

णिक्कारणे विधीए वि, दोसा ते चेव जे भणितपुव्वं।
वीसत्थपदं मोत्तुं, गेलण्णादी-उवरिमेसु ॥१६६६॥

जो णिक्कारणे संजतिवसतिं गच्छति, तिण्णि णिसीहियाओ करेंतो विधीए पविसति तस्स वि ते चेव दोसा, जे पुव्विं पढमभंगे भणिता। वीरल्लसउणिदिट्ठंतेण जे वीसत्थदोसा भणिता, ते मोत्तूण गिलाणाइया उवरिमा सव्वे बितियभंगे वि संभवंति ॥१६६६॥

णिक्कारणे विधीए वि, तिट्ठाणे गुरुगो जेण पडिकुट्ठं।
कारण-गमणे सुद्धो, णवरं अविधीए मास-तिगं ॥१६६७॥

जो णिक्कारणे संजतिवसतिं गच्छति तस्स तिट्ठाणे णिसीहिकाविधिं पउंजंतस्स वि मासगुरुगं भवति। कम्हा जम्हा ? पडिकुट्ठं गमणं। गतो बितियभंगो।

इदाणिं ततियभंगो – पच्छद्धं। कारणे जो गच्छति संजतिवसतिं सो सुद्धो।

णवरं – तिट्ठाणे णिसीहियं अकरेंतस्स तिमासगुरुं भवति, दोसु ठाणेसु न करेति दोमासगुरुं, एगम्मि ठाणे अकरेंतस्स एगमासगुरुं ॥१६६७॥

कारणतो अविधीए, दोसा ते चेव जे भणितपुव्वं।
कारणविधीए सुद्धो, पुच्छत्तं कारणं किं तु ॥१६६८॥

कारणे गच्छति, अविधीए पविसतो दोसा ते चेव जे पुव्वं पढमभंगे वुत्ता वीसत्थातो ते सव्वे संभवंति। ततियभंगं अविधिकारो त्ति काउं। गतो ततियभंगो।

इयाणिं [2]चउत्थभंगो – पच्छद्धं। कारणे गच्छइ तिट्ठाणे णिसीहियाविधिं पउंजंतो सुद्धो।

सीसो पुच्छति – "कारणं किं" ? तुसद्दो पादपूरणे ॥१६६८॥

आचार्याह –

गम्मति [1]कारणजाते, [2]पाहुणए [3]गणहरे [4]महिड्ढीए।
[5]पच्छादणा य सेहे, [6]असहुस्स चउक्क भयणा तु ॥१६६९॥

कारणजाए त्ति दारं।

---

१ गा० १६६६। २ गा० १६६६।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

एयस्स इमाग्रो दो दारगाहाग्रो –

[1]उवस्सए य [2]संथारे, [3]उवधी [4]संघ-पाहुणे ।
[5]सेहे [6]ठवणुद्देसे, [7]अणुण्णा [8]भंडणे [9]गणे [10]॥१७००॥

[11]अणपज्झ [12]अगणि [13]आऊ, [14]वियारे [15]पुत्त-[16]संगमे ।
[17]संलेहण [18]वोसिरणे, [19]वोसिट्ठे [20]णिट्ठिते तिहिं ॥१७०१॥

[1]उवस्सए संथारे त्ति दो दारा वक्खाणेंति –

अज्जाणं पडिकुट्ठं, वसधी-संथारगाण गहणं तु ।
ओभासित दातव्वा, वच्चेज्जा गणधरो तेणं ॥१७०२॥

संजतीण वसहीए संथारगाण य सयं गहणं पडिसिद्धं । वसहिं ओभासिम्रो (उं) प्रवखा वच्चति । संथारगाण य म्रोभट्ठसमप्पियाणं दाणट्ठा गच्छति गणधरो । संथारगे सयं विभयंतीम्रो मा अधि करिस्संति, तेण गणधरो गच्छति ॥१७०२॥

"[2]उवहि" त्ति दारं –

पडितं पम्हुट्ठं वा, पलावितं वा हितं व उग्गमितं ।
उवधिं भाएउं जे, दाउं जे वा वि वच्चेज्जा ॥१७०३॥

भिक्खादि-प्रडंतीण पडिता उवही, सज्झायभूमीए वा पम्हुट्ठा विस्सरिया, साणमाइ पलावित्ता, तेणगेहिं वा अवहरिता, सा साधूहिं लद्धा, गुरुणं समप्पिया, अपुव्वा वा उवही उग्ग पडिय-पम्हुट्ठादियाण भायणं, अपुव्वाए दाणं, एतेहिं कारणेहिं गणधरो वच्चेज्जा ॥१७०३॥

इयाणिं "[3]संघपाहुण" त्ति दारं –

ओहाणाभिमुहीणं, थिरिकरणं कातुमज्जियाणं तु ।
गच्छेज्जा पाहुणओ, संघकुल-थेर गण-थेरो ॥१७०४॥

काओ य संजतीओ परिसहबाहिताओ सजमसारपरम्मुहीओ ओहाणाभिमुहीओ अच्छंति थिरीकरणट्ठा संघपाहुणो गच्छेज्ज । कुल-गण-संघ-थेरा संघपाहुणा भण्णंति । अण्णो वा थिरीकरणलद्धि गच्छेज्ज ॥१७०४॥

इदाणिं "[4]सेहे" त्ति दारं –

अण्णत्थ अप्पसत्था, होज्ज पसत्था व अज्जिओवसए ।
एतेण कारणेणं, गच्छेज्ज उवट्ठवेउं जे ॥१७०५॥

सेहस्स उवट्ठावणाहेउं अज्जिओवस्सयं गच्छेज्ज ॥१७०५॥

---

१ गा० १७०० । २ गा० १७०० । ३ गा० १७०० । ४ गा० १७०० ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इदाणिं "[1]ठवणे" त्ति दारं –

ठवण-कुलाइ ठवेउं, तासिं ठविताणि वा णिवेएउं ।
परिहरिउं ठविताणि व, ठवणाऽऽदियणं व वोत्तुं जे ॥१७०६॥

सेज्जातर-मामगाइ ठवण-कुला भण्णंति । ते संजतिवसहीए गंतुं ताणं पुरतो ठवेंति, स वसहीए वा ठिएण ठविया ताण गंतुं णिवेएति, इमाणि वा ठवियाणि, मा पविसह त्ति णिवारणट्ठा गच्छंति । ठविएसु वा वा इदाणि गहणं करेहि त्ति अणुण्णवणट्ठा गच्छंति ॥१७०६॥

इदाणिं "[2]उद्देसाणुण्ण" त्ति दो दारा –

वसधी य असज्झाए, गारव भय सड्ढ मंगले चेव ।
उद्देसादी काउं, वाएउं वा वि गच्छेज्जा ॥१७०७॥

साधुवसहीए असज्झायं अप्पसत्था वा ताहे संजतिवसहिं गच्छति उद्देसाणुण्णट्ठा, गणधरा रायादि दिक्खितेहिं वा संजतिवसतिं गच्छंतेहिं ताण लोगे गारवं भवति, पडिणीयाण वा भयं भवति ।

अहवा – आयरियो उद्देसाति करेति, सुहं गारवभएहिं सिग्घं अहिज्जति, आयरिएण वा उद्दिट्ठे सद्धा भवति, संजतीण वा वसहीए मंगल्लं तत्थ उद्दिसति, एतेहिं उद्दिसातिकारणेहिं गच्छति । पवत्तिणीए वा कालगयाए अण्णा वायंती य णत्थि ताहे गणधरो वायणट्ठा गच्छति ॥१७०७॥

इदाणिं "[3]भंडणे" त्ति दारं –

उप्पण्णे अधिकरणे, विओसवेउं तहिं पसत्थं तु ।
अच्छंति खउरिताओ, संजमसारं ठवेतुं जे ॥१७०८॥

संजतीणं उप्पण्णे अधिकरणे ताओ संजमसारं ठवेत्तु अच्छंति, खउरिता खरंटिता रोषेणेत्यर्थः, ताण य ओसवणं संजतिवसहीए पसत्थं, अतो संजतिवसहिं ओसवणट्ठा गणधरो गच्छति ॥१७०८॥

इदाणिं "[4]गण" त्ति दारं –

जति कालगता गणिणी, णत्थि य अण्णा तु गणधरसमत्था ।
एतेण कारणेणं, गणचिंताए वि गच्छेज्जा ॥१७०९॥

गणचिंताए गणधरो गच्छेज्ज ॥१७०९॥

इदाणिं "[5]अणपज्झ त्ति दारं –

अज्जं जक्खाइट्ठं, खित्त-चित्तं व दित्त-चित्तं वा ।
उम्मातं पत्तं वा, काउं गच्छेज्ज अप्पज्झं ॥१७१०॥

जक्खेण आदिट्ठा गृहीता, ओमाणिया खित्त-चित्ता, हरिसेणं दित्त-चित्ता, अधिकतरप्रलापी मोहणियकम्मोदएण वा उम्मायं पत्ता वेदुम्मतेत्यर्थः । आयरिओ मंतेण वा तंतेण वा अप्पज्झं स्वस्थचित्तं काउकामो संजतिवसतिं गच्छेज्जा ॥१७१०॥

---

१ गा० १७०० । २ गा० १७०० । ३ गा० १७०० । ४ गा० १७०० । ५ गा० १७०१ ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इदाणिं "[1]अगणि" त्ति दारं –

जति अगणिणा तु दड्ढा, वसती दज्झाति व डज्झिहिति व त्ति ।
णाऊण व सोऊण व, संठविउं जे वि वच्चेज्जा ॥१७११॥

जति अगणिणा वसहीओ दड्ढाओ, डज्झंति वा संपतिकाले, परो वा कहेंतो सुणाति दज्झति । अहवा – दज्झिस्सति, एवं सयं णाऊणं सोऊणं वा परसमीवाओ संठवणट्ठा उज्झवणट्ठा वा गच्छेज्ज ॥१७११॥

इदाणिं "[2]आउ" त्ति दारं –

णदिपूरएण वसती, वुज्झति वूढा व वुज्झिहिति व त्ति ।
उदगभरितं व सोच्चा, उवघेत्तुं वा वि गच्छेज्जा ॥१७१२॥

उदगभरिए उल्लंचणट्ठा उवघेत्तुं उवग्गहकरणट्ठा गच्छति ॥१७१२॥

इदाणिं "[3]वियार" त्ति दारं –

घोडेहि व धुत्तेहि व, आवाहिज्जति वियारभूमीए ।
जयणाए वारेउं, संठवणाए वि गच्छेज्जा ॥१७१३॥

घोडा चट्टा, जूयकरादि-धुत्ता, तेहिं वसहीए पुरोहडे उवसग्गिज्जति । अहवा – बाहिं वियारभूमीए जइ उवसग्गिजंति तो तेसिं जयणाए साणुणतं णिवारणट्ठा गच्छेज्ज संजतीणं काइयसण्णाभूमिसंठवणट्ठा गच्छेज्ज ॥१७१३॥

इदाणिं "[4]पुत्ते" त्ति दारं –

पुत्तो पिया व भाया, भगिणी वा ताण होज्ज कालगया ।
अज्जाए दुक्खियाए, अणुसट्ठिं दाउ गच्छेज्जा ॥१७१४॥

अणुसट्ठी उवदेसो, तं उवदेसं दाउकामा गच्छति ॥१७१४॥

तेलुक्कदेवमहिता, तित्थकरा णीरया गया सिद्धिं ।
थेरा वि गता केयी, चरणगुणपभावया धीरा ॥१७१५॥

तेलोक्के जे देवा तेहिं महिता पूजिता ते वि ताव कालगया, थेरा गोयमादी ते वि कालगया किमंगं पुण अण्णे माणुसा ? ॥१७१५॥

तहा –

बम्ही य सुंदरी या, अण्णा वि य जाओ लोगजेट्ठाओ ।
ताओ वि य कालगता, किं पुण सेसाउ अज्जाओ ॥१७१६॥ कंठा

१ गा० १७०१ । २ गा० १७०१ । ३ गा० १७०१ । ४ गा० १७०१ ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ण हु होति सोयितव्वो, जो कालगतो दढो चरित्तम्मि ।
सो होइ सोयियव्वो, जो संजम - दुब्बलो विहरे ॥१७१७॥ कंठा

लद्धूण माणुसत्तं, संजमचरणं च दुल्लभं जीवा ।
आणाए पमाएत्ता, दोग्गति-भय-वड्ढगा होंति ॥१७१८॥

भगवतो आणं पमाएत्ता दोग्गतीओ भयं तस्स वड्ढगा भवंति ॥१७१८॥

इदाणिं "[1]संगमे" त्ति दारं –

पुत्तो पिया व भाया, अज्जाणं आगतो तहिं कोयि ।
घेत्तूण गणधरो तं, वच्चति तो संजती-वसधिं ॥१७१९॥

चिरं पवसितो आतातो तं गणधरो घेत्तुं वच्चति ।

इदाणिं "संलेहण" पच्छद्धं ।

"[2]संलेहण" परिकम्मकालो । "[3]वोसिरण" त्ति - अणसणपच्चक्खाणकालो ।

"[4]वोसट्ठे" त्ति - अणसणं पच्चक्खातं । "[5]णिट्ठिय" त्ति - कालगता ।

एतेसु कालेसु आयरियो अवस्सं गच्छति ।

"तिहिं" त्ति - उवरुवरि तिण्णि दिणे सोगावणयणहेउं गच्छति ॥१७१९॥

संलिहितं पि य तिविधं, वोसिरियव्वं च तिविह वोसट्ठं ।
कालगतं ति य सोच्चा, सरीरमहिमाए गच्छेज्जा ॥१७२०॥

आहारो सरीरं उवकरणं च, आहारे णिव्वीतियादि अप्पाहारो, सरीरस्स वि अवचयकारी, उवकरणे वि अप्पोवकरणो, एवं चेव तिविधं वोसिरति, एवं चेव तिविधं वोसट्ठ ।

अहवा – आहार-सरीर-कसाए य एयं तिगं, कालगयाए य जया सरीरं परिठविज्जति तया महिमा कज्जति, कुकूहिगातिपवयणउब्भावणट्ठा ॥१७२०॥

जाधे वि य कालगता, तांधे वि य दोण्णि वा दिवसो ।
गच्छेज्ज संजतीणं, अणुसट्ठिं गणधरो दातुं ॥१७२१॥

कालगताए उवरिं पयत्तिणिमादि दुत्थं जाणिय एक्कं दो तिण्णि वा दिणे अणुसट्ठिपदाणट्ठं गच्छति ॥१७२१॥ गम्मति कारणजाते" त्ति मूलदारं गतं ।

इदाणिं "[6]पाहुणे" त्ति दारं –

अप्प-विति अप्प-ततिआ, पाहुणगा आगया सउवयारा ।
सेज्जातर-मामाते, पडिकुट्ठुद्देसिए पुच्छा ॥१७२२॥

"सउवयारे" त्ति जे तिण्णि णिसीहियाओ काउं पविट्ठा ते सउवयारा ।

१ गा० १७०१ । २ गा० १७०१ । ३ गा० १७०१ । ४ गा० १७०१ । ५ गा० १७०१ । ६ गा० १६९९ ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अहवा – जेसिं आगयाणं उवचारो कीरइ ते सउवयारा, तेसु आगतेसु गणिणी जति थेरी तो अप्प - बीया णिगच्छति । अह तरुणी तो अप्प - ततिया निगच्छति, पुरतो थेरी ठायति ॥१७२२॥

तेसिं पुण आगयाणं इमो उवयारो –

आसंदग-कट्ठमओ, भिसिया वा पीढगं व छगणमयं ।
तक्खणलंभे असती, परिहारिय पेह ऽभोगऽण्णे ॥१७२३॥

जति साधुस्स आगतेसु तक्खणादेव आसंदगो कट्ठमओ अज्झुसिरो लब्भति, भिसिगा वा पीढगं वा छगणमयं तक्खणे पाडिहारियं ण गेण्हंति, तक्खणलंभासतीए पाडिहारियं घेत्तुं ठवेति, पेहिंति उभयसंज्झं, पेहिंति त्ति - पडिलेहिंति । "अभोगऽण्णे" त्ति अण्णो तं ण कोति वि परिभुंजति । ते तत्थ सुहासणत्था ठिता णिराबाधं सव्वं पुच्छंति ।

[1]पच्छद्धं – सेज्जातर - मामग - पडिकुट्ठुल्लगा अभोज्जा उद्देसियं वा जेसु कुलेसु कज्जति ते कुले पुच्छति ॥१७२३॥

इमा पुच्छगदायंतगाणं विधी –

बाहाए अंगुलीए व, लट्ठीय व उज्जुसंठितो संतो ।
ण पुच्छेज्ज न दाइज्जा, पच्चवाता भवे तत्थ ॥१७२४॥

एगा पएसिणी आयता अंगुली भण्णति । सेसं कंठं ॥१७२४॥

अविधीए दाइज्जंते इमे दोसा भवति –

तेणेहि व अगणीण व, जीवितववरोवणं च पडिणीते ।
खरए खरिया सुण्हा, णट्ठे वट्टक्खुरे संका ॥१७२५॥

बाहु - अंगुलि - लट्ठिमादिएहिं जं घरं दातियं तत्थ तेणेहिं किंचि हडं, अगणिणा वा दड्ढं, तम्मि वा घरे वेरिणा को वि जीवितातो ववरोवितो, दुक्खरगो वा णट्ठो, दुक्खरिया वा केण ति हडा, सुण्हा वा केणवि सह विटेण पलाता, वट्टखुरो घोडओ तम्मि वा णट्ठे साधू संकिज्जति । एताहिं दाहिति त्ति ताओ वा संकिज्जति । तम्हा णो अविधीए पुच्छे, णो वा दाते । ते तत्थ अच्छंता णो हसंति, णो कंदप्पंति, ण वा किंचि विसट्ठा राति कहं कहेंति ॥१७२५॥

इमं कहेंति –

सेज्जातराण धम्मं, कहिंति अज्जाण देंति अणुसट्ठिं ।
धम्मम्मि य कहितम्मी, सव्वे संवेगमावण्णा ॥१७२६॥

उज्जुताण थिरीकरणत्थं, विसीयमाणाण उज्जमणट्ठं, अज्जाण अणुसट्ठिं देति । सड्ढा संजतीतो य सव्वे संवेगमागया, अप्पणो य णिज्जरा भवति ॥१७२६॥

अहवा – [3]पाहुणगदारस्स इमा अण्णा वक्खा –

अण्णो वि य आएसो, पाहुणग अभासि दुल्लभा वसधी ।
तेणादि चिलिमिणिअंतर चातुस्साले वसेज्जा हिं ॥१७२७॥

---

१ गा० १७२३ पच्छद्धंस्स वक्खा । २ गा० १७२२ । ३ गा० १६६६ ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पुव्वानेसाओ इमो अण्णो आदेसो। "अभासित" त्ति कुडुक्कडुविडादि तम्मि य गामे दुल्लभा वसही।

अहवा – पच्चंतियविसये सो गामो, तत्थ तेणगाति-भया वसहिं ण लब्भति ताहे संजतीओ वसहिं मग्गंति। जइ ताहिं पि ण लद्धा तो बाहिं रुक्खमूलातिसु वसंतु। "तेण" त्ति जइ बाहिं सावय-तेणातिएहिं पच्चवाया भवेज्ज ताहे संजतीवसहीए चिलिमिलि अंतरिया चाउस्साले घरे वसेज्जा। हिं पायपूरणे ॥१७२७॥

पच्छिमा चिलिमिणी। जतो भण्णति –

कुड्डंतरिया असती, कडओ पोत्ती व अंतरे थेरा।
ते संतरिता खुड्डा, समणीण वि मग्गणा एवं ॥१७२८॥

अण्णवसहीते अभावे संजता संजतीओ य एक्कघरे वसंता कुड्डंतरिया वसंति, पिहदुवारे असति कुड्डस्स कडओ अंतरे दिज्जति, असति कडगस्स ताहे "पोत्ति" त्ति चिलिमिणि त्ति वुत्तं भवति, पोत्तीएतेण पोत्ति-अभावे वा जओ दढकुड्डं ततो तरुणीओ संजतीओ ठविज्जंति, ताहे मज्झिमा, ताहे थेरी, खुड्डी य। जतो संजतीतो, ततो अंतरे थेरा खुड्डा मज्झिमा तरुणा य। समणीण एस चेव मग्गणा। णवरं – सरिसवयं वज्जेज्जा॥१७२ ॥

एसा पुण कुड्डघरे विधी –

अण्णाते तुसिणीता, णाते सद्दं करेंति सज्झायं।
अच्चुव्वाता व सुते, अच्छंति व अण्णहिं दिवसं ॥१७२९॥

जति अण्णाया जणेण ठिता तो राओ तुसिणीआ अच्छंति, अह णाया तो सद्दसज्झायं करेंति, अतीव उव्वाय अच्चुव्वाता श्रान्ता इत्यर्थः। अच्चुव्वाता वा सुवंति, ण परोप्परं संजया संजतीओ य उल्लवेंति। एवं राओ जयणा एसा वुत्ता। कारणओ एगं दो तिण्णि वा दिणे अच्छंता दिवसतो अण्णत्थ उज्जाणादिसु अच्छंति ॥१७२९॥

समणी जणे पविट्ठे, णीसंतु उल्लाव ऽकारणे गुरुगा।
पयला-णिद्द-तुयट्टे, अच्छिच्चमढणे गिही मूलं ॥१७३०॥

गिहिजणेसु अप्पणो सयणीयघरेसु पविट्ठेसु ताए णिसंतवेलाए जति समणी संजतेण समं उल्लावं करेति तो चउगुरुं पच्छित्तं।

अहवा – समणीजणे समणजणे य पविट्ठे जइ एगा अणेगाओ वा एगेहिं वा अणेगेहिं वा संजतेहिं समाणं णिसंतवेलाए अंतो बहिं वा उल्लावं करेंति चउगुरु ते। दिवसतो अच्छंता जति पयला णिद्द तुयट्टणे अच्छि चमढणे चउगुरुं। गिहिदिट्ठे संकिते चउगुरुअं चेव। गिहिदिट्ठे णिस्संकिते मूलं

भत्तएसु वा काउं बाहिं परिट्ठवेंति, एवं जयंति। जति संजतिवसहिं संजता अदिट्ठा पविट्ठा तो अदिट्ठा एव णिंति णिग्गच्छंति। अह दिट्ठा पविट्ठा तो दिट्ठा वा अदिट्ठा वा णिंति एस भयणा ॥१७३०॥

तत्थऽण्णत्थ व दिवसं, अच्छंता परिहरंति णिद्दाती।
जतणाए व सुवंति, उभयं पि व मग्गते वसधिं ॥१७३१॥

संजति-वसधीए राओ वसिता दिवसतो तत्थ वा संजतिवसधीए अच्छंति अण्णत्थ वा उज्जाणादिसु, पयलाणिद्दादिपए परिहरंति, जवणियंतरिया वा जयणाए सुवंति, जहा सागारिगो ण पेच्छति। जति ते पाहुणगा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तत्थ किंचि कालं कारणेण अच्छिउकामा तो उभयं साहुसाहुणीओ य अण्णवसहिं मग्गंति तत्थ ते साहू ठायंति ॥१७३१॥

इदाणिं "[1]गणधरे" त्ति दारं –

उच्चारं पासवणं, अण्णत्थ व मत्तएसु व जतंति ।
अदिट्ठ-पविट्ठे वा, दिट्ठा णिंतेहरा भइतं ॥१७३२॥

उच्चाराती ण संजतिकायभूमीए करेंति, अण्णत्थ करेंति ॥१७३२॥

मुच्छा विसूइगा वा, सहसा डाहो जराइ मरणं वा ।
जति आगाढं अज्जाण होति गमणं गणधरस्स ॥१७३३॥

पित्तादिणा मुच्छा, अतिभुत्ते वा विसूतिआ, पित्तेण वा डाहो अग्गिणा वा, डाहजरो वा, मरणं वा, "सहस" त्ति अकम्हा जति आगाढं एरिसं अज्जाण होज्ज ताहे दिवसतो रातीए वा गणहरस्स गमणं भवे ॥१७३३॥

अथवा –

पडिणीय-मेच्छ-सावत-गय-महिसा-तेण-साणसादीसु ।
आसण्णे उवसग्गे, कप्पति गमणं गणहरस्स ॥१७३४॥

एतेहिं पडिणीयातिएहिं जता उवसग्गिज्जंति आसण्णे वसहीए ठिता तया गणहरस्स अण्णस्स वा कप्पति तण्णिवारणट्ठा गंतुं ।

अथवा – "आसण्णे" त्ति आसण्णो उवसग्गो, एसे काले भविस्सति ण ताव भवति, तं णिवारणट्ठा गच्छति ॥१ ३४॥

इदाणिं "[2]महिड्ढि" त्ति दारं –

रायाऽमच्चे सेट्ठी, पुरोहिते सत्थवाह पुत्ते य ।
गामउडे, रट्ठउडे, जे य गणधरे महिड्ढीए ॥१७३५॥

जो राया पव्वइओ, अमच्चो मंत्री, अट्ठारसण्ह पगतीणं जो महत्तरो सेट्ठि, सपुरजणवयस्स रण्णो जो होमजावादिएहिं असिवादि पसमेति सो पुरोहितो, जो वाणिओ रातीहिं अब्भणुण्णातो सत्थं वाहेति सो सत्थवाहो, तस्स पुत्तो सत्थवाहपुत्तो ।

अहवा – राया रायपुत्तो वा एवं सव्वेसु । गामउडो गाममहत्तरो, रट्ठउडो रट्ठमहत्तरो । जो अ गणहरो रायादिवल्लभो विज्जातिसयसंपण्णो महिड्ढिओ । एते रायातीता साहू सव्वे संजतिवसहिं गच्छंति ॥१७३५॥

इमो गुणो –

अज्जाण तेयजणणं, दुज्जण-सचक्कारता य गोरवता ।
तम्हा समणुण्णातं, गणधर-गमणं महिड्ढीए ॥१७३६॥

---

[1] गा० १६९७। [2] गा० १७०७।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तेयो उज्जो जणणं करणं, तेजकरणमित्यर्थः। पडिणीयापि दुज्जणो सचक्कारा य सासंका भवंति, न किंचित् प्रत्यनीकं कुर्वन्तीत्यर्थ.। लोगे य अज्जाओ गोरवियाओ भवंति, तम्हा गणहरस्स महिड्ढियाण य गमणं अणुण्णातं ॥१७३६॥

ते य रायादि-दिक्खिते वसहिमागते दट्ठुं इमं चिंतेति –

संतविभवा जति तवं, करेंति विप्पजहितूण इड्ढीओ ।
सीयंतथिरीकरणं, तित्थ-विवड्ढी य वण्णो य ॥१७३७॥

संतं विद्यमानं, विभवो सचित्ताचित्तादि दव्वसंपया, जति ताए छड्डिऊण तवं करेति किं अम्हे असंते विभवे पत्थेमाणीओ वि सीतामो, एवं ताओ थिरीकता भवंति, नंदिशेनशिष्यवत्। एवं थिरीकरणे कज्जमाणे तित्थवुड्ढी कता भवति। तित्थवड्ढीए य पवयणस्स वण्णो जसो पभावितो भवति ॥१७३७॥

इदाणिं "[1]पच्छादणा य सेहे" त्ति दारं – के यी रायपुत्ता समत्तलद्धबुद्धी णिक्खंता तेसिं पिता –

वीसुं भूओ राया, लक्खणजुत्तो ण विज्जइ कुमारो ।
पडिणीएहि य कहिते, आहावंती दवदवस्स ॥१७३८॥

सरीराओ वा जीवो, जीवाओ वा सरीरं वीसुं पृथग्भूतं राजा मृत इत्यर्थः। अमच्चादिया राजारिहं कुमारं वीणंति "इमो रज्जारिहो" त्ति. जे उत्तमा रज्जारिहा ते णिक्खंता, ततो पडिणीएहिं कहियं ते विहरमाणा इहेव अमुगुज्जाणे संपत्ता, ततो अमच्चातीया णिरुत्तं जाणिऊण रायहत्थि रायस्स छत्तं चामरं पाउया खग्गं एवमाति रायारिहं घेत्तुं आधाविउमारद्धा। कहं ? "दुतं दुतं" शीघ्रमित्यर्थः ॥१७३८॥

ते पुण इमेण कारणेण ते पडिणीया कहेंति -

अति सिं जणम्मि वण्णो, य संगती इड्ढिमंतपूया य ।
रायसुयदिक्खितेणं, तित्थविवड्ढी य लद्धी य ॥१७३९॥

अतीव एतेसिं जणे लोगे जसो, इमेण रायपव्वइएण राइणो संगतिं करिस्संति, इड्ढिमंता य अमच्चादिता एयप्पभावेण पूएस्संति, राया एत्थ पव्वयति, अण्णे वि अमच्चातीया पव्वयंति, एवं तित्थवुड्ढी। तप्पभावेण वत्थअसणादिएहिं य लद्धी। उण्णिक्खतेण य एते वण्णाइया ण भविस्संति त्ति पडिणीया कहयंति ॥१७३९॥

ते य आयरियसमीवे तिण्णि रायपुत्ता –

दट्ठूण य राइड्ढीं, परीसहपराजितो तहिं कोयि ।
आपुच्छति आयरिए, सम्मत्ते अप्पमत्तो हु ॥१७४०॥

तं रज्जरिद्धिं एज्जमाणिं पासिय एगो परीसहपराजितो आयरियं आपुच्छति – अहं असत्तो पव्वज्जं काउं।

आयरिएण वत्तव्वं "सम्मत्ते अप्पमातो कायव्वो, चेतिय-साहूण य पूयापरेण भवियव्वं" ॥१७४०॥

बितिओ आयरिएण भणिओ – अज्जो ! अमच्चातिया आगच्छंति उण्णिक्खावणहेउं, तो तुमं ओसराहि किं वा कीरउ ?

---

१ गा० १७०७।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सो भणाति –

किं काहिं ति ममेते, पडलग्गतणं व मे जढा इड्ढी ।
को वाऽणिट्ठफलेहिं, चलेहि विभवेहि रज्जेज्जा ॥१७४१॥

किं अमच्चाति मम काहिति, जहा पडे लग्गं तणं विधुव्वति एवं मए वि इड्ढी विधूता, मा तुब्भे बीहेह, रज्जस्स विसयाण भुत्ताण फलं नरओ, चला अधुवा, तेसु को रागं करेज्ज ? उत्तरमहुरवणिजवत् । बितितो धितिधणियबद्धकच्छो पागडो चेव सव्वे उवसग्गे जिणित्ता संजमं करेति ॥१७४१॥

तं रज्जरिद्धि एज्जमाणि दट्ठुं सोउं वा –

ततिओ संजम-अट्ठी, आयरिए पणमिऊण तिविधेणं ।
गेलण्णं णियडीए, अज्जाणमुवस्सयमतीति ॥१७४२॥

ततिओ रायपुत्तो तिविधेणं ति मणोवातिकाएहिं । गेलण्णं णियडी अयिगेलण्णेण संजतीण उवस्सयं अतीति ॥१७४२॥

अंतद्धाणा असती, जति मंसू लोय अंबिली-बीए ।
पीसित्ता देंति मुहे, अप्पगासे ठवंति य विरेगो ॥१७४३॥

जति मंतो अंजणं वा अंतद्धाणियं वा अत्थि तो अंतद्धितो कज्जति, अह अंतद्धाणस्स असति ताहे संजतिवसहिं णिज्जति । "जति मंसु" त्ति - जति स्मश्रु अत्थि तो लोओ कज्जति, ताहे अंबिल - बीयाणि पीसित्ता मुहमालिप्पति, संजतिवसहीए अप्पगासे ठविज्जति, विरेओ से दिज्जति ॥१७४३॥

संथार कुसंघाडी, अमणुण्णे पाणए य परिसेओ ।
घंसण पीसण ओसध, अद्धिति खरकम्मि मा बोलं ॥१७४४॥

संथारगे ठविज्जति । मइला फट्टा कुसंघाडी, सेसा (तारा) से पाउणिज्जति । अमणुण्णं गंधीलयं पाणीयं, तेण से परिसेओ कज्जति । अण्णा संजतीओ ओसधं घसंति, अण्णाओ ओसहं पीसंति, अण्णाओ करतलपल्हत्थमुहीओ अद्धितिं करेमाणीओ अच्छंति । खरकम्मिय त्ति रायपुरिसा, तेसागतेसु भण्णति – "मा" प्रतिषेधे, "बोलं" ति बोलं, तं मा करेह, एसा पवत्तिणी गिलाणा, ण सहति बोलं ति ॥१७४४॥

इदाणिं "[1]असहुस्स चउक्कभयण" त्ति दारं –

दोण्णि वि सहू भवंति, सो वऽसहू सा व होज्ज तू असहू ।
दोण्णं पि हु असहूणं, तिगिच्छ-जतणा य कायव्वा ॥१७४५॥

पढमभंगे – साधुणी वि सहू, साहू वि सहू । बितीयभंगे - साधुणी सहू "सो वऽसहू" त्ति साहू असहू ।

ततियभंगे – साधुणी असहू, साहू सहू । चउत्थभंगे – साहू साहुणी य दो वि असहू ।

चउसु वि भंगेसु तिगिच्छाए जयणा कायव्वा ॥१७४५॥

पढमभंगो ताव भण्णति ।

---

1 गा० १६९७ ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

साधु-साधुणीणं इमा सामायारी –

सोऊणं च गिलाणिं, पंथे गामे य भिक्खचरियाए ।
जति तुरितं णागच्छति, लग्गति गुरुगे चतुम्मासे ॥१७४६॥

सोऊणं गिलाणी पंथे गामे वा दिवसश्रो भिक्खावेलाए राम्रो वा जइ तुरियं गिलाणींतो णागच्छति तो चउगुरुगे सवित्थरे लग्गति ॥१७४६॥

जत्थ गामे सा गिलाणी तस्स बाहिरेण साहू वच्चति ।

ताहे गिहिणा भणाति – तुब्भं गिलाणिस्स पडिजागरणा किं कज्जति ?

साहुणा भणियं – सुट्ठु कज्जति ।

गिहिणा भणियं – जति कज्जति तो एत्थ गामे –

लोलंती छग-मुत्ते, सोत्तुं घेत्तुं दव्वं तु आगच्छे ।
तूरंतो तं वसधिं, णिवेदणं छादणऽज्झाए ॥१७४७॥

एगागी अप्पाणो छगण-मुत्ते लोलंती अच्छति । एवं सोउं ताहे साहू ततो चेव दव्वं घेत्तूण आगच्छे संजतिवसहिं । ताहे तीए वसहीए बाहिं ठाति । सेज्जियादिए तीए संजतीए णिवेतावेति "बाहिं साधू आगतो" त्ति, गत्तेसु य छादितेसु ताहे साधू पविसति ॥१७४७॥

इमं भणति –

आसासो वीसासो, मा भाहि त्ती थिरीकरण तीसे ।
धुविउं चीरऽत्थुरणं, तिस्सप्पण बाहि कप्पो य ॥१७४८॥

"आसासो" ति अहं ते सव्वं वेयावच्चं करिस्सं । "वीसासो" ति तुमं मम माया वा भगिणी वा वयाणुरूवं भणाति । थिरीकरणं ति दढीकरणं । छगण-मुत्तेण लुलितं तं संजतिं तीसे जे उवग्गहिया चीरा विट्टंति ते पत्थरेति । अभावे तेसिं सो साधू अप्पणगे पत्थरेति । सेसा चीरा छगण-मुत्तेण लुलिता ते वसहीए बाहिं कप्पेति ॥१७४८॥

"वसहिनिवेयणं" एयस्स पयस्स इमा वक्खाणगाहा –

एतेहिं कारणेहिं, पविसंते णिसीहियं करे तिण्णि ।
ठिच्चाणं कातव्वा, अंतर दूरे पवेसे य ॥१७४९॥

एतेहिं कारणेहिं पविसति तो तिण्णि णिसीहियाओ ठिच्चाणं करेति, णिसीहियं काउं ईसिं अच्छति, "अंतरे" त्ति मज्झे, "दूरे" त्ति अग्गद्दारे, "पवेसे" त्ति वसहिआसण्णे ॥१७४९॥

पडिहारिते पवेसो, तक्कज्जमाणणा य जतणाए ।
गेलण्णादी तु पदे, परिहरमाणो जतो खिप्पं ॥१७५०॥

ताहे सेज्जियाए पडिहारितं कथितमित्यर्थः ताहे संजतो पविसति । एवं सो संजतो तं कज्जं-गिलाणिकरणिज्जं व्याएघातमयगाए वक्खमाणाए य जयणाए समाणणत्ति परिसमाप्तिं नयतीत्यर्थः ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जता बहूणं मज्झे गिलाणिं पडिजग्गति तदा कारणे विविपविट्ठो वीसत्थपदं न संभवति । सेसा गिलाणातिपदा जयणाजुत्तो परिहरिमाणो जया पण्णविता भवति तदा खिप्पं अतिक्कमति, जयणाजुत्तो वा खिप्पं पण्णवेति ॥१७५०॥

अज्जाए वेयावच्चकरो इमेहिं गुणेहिं जुत्तो –

पियधम्मो दढधम्मो, मियवादी अप्पकोतुहल्लो उ ।
अज्जं गिलाणियं खलु, पडिजग्गति एरिसो साहू ॥१७५१॥

पियं बोल्लेति मियभासी, अप्पमिति अभावे, थणोरूयमातिएहिं ण कौतुकमस्तीत्यर्थः ॥१७५१॥

सो परिणामविहिण्णू, इंदिंयदारेहि संवरित-दारो ।
जं किंचि दुब्भिगंधं, सयमेव विगिंचणं कुणति ॥१७५२॥

सो इति वेयावच्चकरो साहू, परिणमगं परिणामो, विही-विकप्पे णाणी, परिणामविधिज्ञ इत्यर्थः । इंदिया चेव दारा इंदियदारा, ते सविरता स्थगिता निवारिता इत्यर्थः । जं किं चि काइयसण्णाति दुब्भिगंधं तं अण्णस्स अभावे सो सयं चेव विगिंचति ॥१७५२॥

"[1]अप्पकोउहल्ल" इति अस्य व्याख्या –

गुज्झंग-वयण-कक्खोरु-अंतरे तह थणंतरे दट्ठुं ।
संहरति ततो दिट्ठिं, ण य बंधति दिट्ठिए दिट्ठिं ॥१७५३॥

मृगीपदं गुज्झंगं, वयणं मुहं, उवच्छगो कक्खा, जहा गामाओ अण्णगामो गामंतरं, एवं ऊरुतो अण्णो उरुअंतरं, एवं थणंतरे वि, एतेसु जति दिट्ठिणिवातो भवति तो ततो दिट्ठिं संहरति निवर्तयतीत्यर्थः । न च परस्परतः दृष्टिबन्धं कुर्वन्ति ॥१७५३॥

"[2]जं किं चि दुब्भिगंधं" अस्य पश्चार्धस्य व्याख्या –

उच्चारे पासवणे, खेले सिंघाणए विगिंचणता ।
उव्वत्तण परियत्तण, णंतग णिल्लेवण सरीरे ॥१७५४॥

पुव्वद्धं कंठं । उत्ताणयस्स पासल्लियकरणं उव्वत्तणं, इयरदिसीकरणं परियत्तणं णंतगं वत्थं, सरीरं वा जइ छगणमुत्ताइणा लित्तं तं पि णिल्लेवेति धोवति त्ति वुत्तं भवति ॥१७५४॥

दव्वं तु जाणितव्वं, समाधिकारं तु जस्स जं होति ।
णायम्मि य दव्वम्मी, गवेसणा तस्स कातव्वा ॥१७५५॥

जस्स रोगस्स जं दव्वं पत्थं गिलाणीए वा जं समाहिकारगं तं जाणियव्वं । तस्स दव्वस पयत्तेण गवेसणा कायव्वा, तस्स वा गिलाणिस्स अपत्थं जाणिऊण ण कायव्वं ॥१७५५॥

किरियातीयं णातुं, जं इच्छति एसणादि जतणाए ।
सब्भावणं-परिण्णा पडियरण कधा णमोक्कारो ॥१७५६॥

---

१ गा० १७५१ । २ गा० १७५२ ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

किरियाए कीरमाणीए वि जा ण पण्णप्पति सा किरियातीता, तमेगिंसि णाउं जं दव्वं इच्छति तं से एसणादिसुद्धं दिज्जति. असती सुद्धस्स पणगपरिहाणीजयणाए दिज्जति । सा किरियातीया तहा सद्धाविज्जति जहा अणसणं पडिच्छति, परिण्णा अणसणं परिण्णिगं सव्वं पयत्तेण पडियरति, धम्मं से कहेति, मरणवेलाए य णमोक्कारो दिज्जति ।।१७५६।।

"किरियस्स सज्झाए" इमा विधी –

सयमेव दिट्ठपाढी, करेंति पुच्छंति अजाणतो विज्जं ।
दीवण-दव्वातिम्मि य, उवदेसे ठाति जा लंभो ।।१७५७।।

सो साधू जइ दिट्ठपाढी, वेज्जगस्स दिट्ठो पाढो जेण सो दिट्ठपाढी, अधीतवेज्जक इति यावत् । दीवण त्ति अहं एगागी मा हुज्ज अवसउणं वेज्जस्स दव्व-खेत्त-काल-भावेसु उवदेसे दिण्णे भणाइ जइ एयं ण लभामो तो किं देमो, पुणो पुच्छति, उवदेसे दिण्णे पुणो पुच्छेति 'जइ एयं पि ण लभामो" पुणो कहेति, एवं ताव पुच्छति जाव लाभो त्ति, ततो ठायति पुच्छाए ।।१७५७।।

अब्भासे व वसेज्जा, संबद्ध उवस्सगस्स वा दारे ।
आगाढे गेलण्णे, उवस्सए चिलिमिलि-विभत्ते ।

रातो वसंतस्स इमा विही – अब्भासे असंबद्धे अण्णघरे वा संबद्धे वसति तस्स वा उवस्सगस्स दारे वसति । पच्छद्धं कंठं ।।१७५८।।

तं पुण अंतो इमेण कारणेण वसति –

उव्वत्तण परियत्तण, उभयविगिंचणट्ठ पाणगट्ठा वा ।
तक्कर-भय-भीरू य व, णमोक्कारट्ठा वसे तत्थ ।।१७५९।।

उव्वत्तणाति कायव्वं । उभयं काइयसण्णा तस्स विगिंचणट्ठा उट्ठाणे वा असमत्था वोसिरणट्ठा उट्ठवेति, तण्हाए वा रातो पाणगं दायव्वं, तक्करभए वा साहू अंतो वसति, सा वा भीरु, णमोक्कारो वा दायव्वो । एतेहिं कारणेहिं अंतो वसति ।।१७५९।।

धिति-बलजुत्तो वि मुणी, सेज्जातर-सण्णि-सेज्जगादिजुतो ।
वसति परपच्चयट्ठा, सिलाहणट्ठा य अवराणं ।।१७६०।।

अंतो वसंतो इमे बितिज्जते गेण्हति सेज्जातरं, सण्णिं सावगं, सेज्जगो समोसियगो, तेहिं सह अंतो वसति परपच्चयट्ठा अवरे अण्णे साहू, तेसिं श्लाघा भवति ।।१७६०।।

जो एवं जहुत्तं विधाणं करेति –

सो णिज्जराए वट्टति, कुणति य वयणं अणंतणाणीणं ।
स बितिज्जओ कहेति, परियट्टेगागि वसमाणो ।।१७६१।।

पुव्वद्धं सुगमं । सो णिज्जाणगो वसंतो तस्स बितिज्जगस्स धम्मं कहेति । अह एगागी वसति तो परियट्टेति ।।१७६१।।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पडिजग्गिता य खिप्पं, दोण्ह सहू णं तिगिच्छ-जतणाए ।
तत्थेव गणधरो अण्णहिं व [illegible]जतणाए तो णेति ॥१७६२॥

एवं तेण साधुणा पयत्तेण पडिजग्गिता सा खिप्पं शीघ्रं पण्णता, एवं दोण्हं सहूणं तिगिच्छाकरणं जयणाए वुत्तं । जति तत्थेव गणधरो तो वच्चेति, अह अण्णहिं गणधरो तो सत्थेण पट्ठवेति, सयं वा – णेति ॥१७६२॥

णिक्कारणगिं चमढण, कारणगिं णेति अहव अप्पाहे ।
गमणित्थि मीस संबंधि वज्जिए असति एगागी ॥१७६३॥

जा सा गिलाणा संजती सा जति णिक्कारणेण गणातो निग्गता तो चमढेति खरंटेति त्ति वुत्तं भवति ।

अह कारणिया तो सयं णेति, जाण व सा संयती आयरियाण ताण अप्पाहेति संदिसइ ।

जयणाते तो णेति त्ति इमं वक्खाणं "गमणित्थिय" पच्छद्धं ।

इत्थीहि णाल-बद्धाहि नेइ उस्सग्गओ तयं सो उ ।
मीस त्ति इत्थिपुरिसेहि नाल-बद्धेहि तदभावे ॥१७६४॥

तह इत्थि णाल-बद्धाहिं पुरिस अणालेहि नवए भद्देहिं ।
तह पुरिसा णालइत्थी, अणाल-बद्धाहि तदभावे ॥१७६५॥

संबंधवज्जिय त्ती, अणाल-बद्धमीसीहिं ।
तदभावे पुरिसेहि, भद्देहिं अणाल-बद्धेहिं ॥१७६६॥

तो पच्छा संथुएहिं, असइ एतेसिं तो सयं णेति ।
दूराहि पिट्ठओ, जयणाए निज्जरट्ठिओ ॥१७६७॥

जया अप्पणा णेति तया इत्थिसत्थेणं णालाति-बद्धेणं ।

तस्सासति मीसेणं इत्थिपुरिसेण णालाति-बद्धेण णेति ।

तस्सासति इत्थीहिं संबद्धाहिं पुरिसेहिं असंबद्धेहिं भद्दगेहिं णेति ।

तस्सासति इत्थीहि असंबद्धाहिं भद्दाहिं पुरिसेहिं संबद्धेहि णेति ।

तस्सासति इत्थीहिं पुरिसेहिं य "वज्जिय" त्ति असंबद्धेहिं भद्देहि णेति ।

तस्सासति पुरिस-सत्थेण संबद्धेण णेति ।

तस्सासति पुरिस-सत्थेण असंबद्धेण भद्दगेण णेति ।

तस्सासति पच्छा एगागी णेति, अप्पणा अग्गतो संजती णासण्णे णातिदूरे पिट्ठओ । एवं जयणाए कारणिगिं णेति ॥१७६७॥ पढमभंगो गतो ।

---

१ वक्खा गा० १७६३ । २ गा० १८६ ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इदाणिं "[1]बितियभंगो" भण्णति–

ण वि य समत्थो सव्वो, हवेज्ज एतारिसम्मि कज्जम्मि ।
कातव्वो पुरिसकारो, समाधिसंधाणणट्ठाए ॥१७६८॥

णाण-दंसण-चरित्ताणं समाधारणं संधणट्ठा पुरिसकारो कायव्वो ॥१७६८॥

सो पुण इमेहिं पगारेहिं असहू ।

सोऊण व पासित्ता, संलावेणं तहेव फासेणं ।
एतेहि असहमाणे, तिगिच्छ जतणाए कातव्वा ॥१७६९॥

भासिय-हसिय-गीय-कूजिय-विविधे य विलवियसद्दे सोऊण णेवत्थियं इत्थिं कुचादिएहिं वा अंगावयवेहिं पासित्ता, इत्थिए वा सद्धिं उल्लावं करेंतो, इत्थिफासेण वा बुद्धो, एतेहिं जो असहू तेण तिगिच्छा जयणाए कायव्वा ॥१७६९॥

साहू असहू गिलाणिं पुच्छति – तुमं किं सहू असहू ?

ताहे सा गिलाणी भणाति –

अविकोविता तु पुट्ठा, भणाति किं मं ण पाससी णियगे ।
लोलंती छग-मुत्ते ? तो पुच्छसि किं सहू असहू ? ॥१७७०॥

अविकोविता अगीयत्था, णियगे आत्मीये ॥१७७०॥

साधू भणाति –

जाणामि णाम एतं, देहावत्थं तु भगिणि ! जा तुब्भं ।
पुच्छामि धिंतिबलं ते, मा बंभविराधणा होज्जा ॥१७७१॥

णामसद्दो पादपूरणे अवधारणे वा ॥१७७१॥

इयरथ वि ताव सद्दे, रूवाणि य बहुविधाणि पुरिसाणं ।
सोतूण व दट्ठूण व, ण मणक्खोभो महं कोयि ॥१७७२॥

सा साधुणी भणाति – इहरहे त्ति हट्ठा बलियसरीरा गीतादिए सद्दे सोऊण णेवत्थेहिं बहुविहा पुरिसरूवाते दट्ठूण न कोति त्ति कश्चित् स्वल्पोऽपि न भवतीत्यर्थः ॥१७७२॥

किं चान्यत् – **संलवमाणी वि अहं, ण यामि विगतिं ण संफुसित्ताणं ।**
हट्ठा वि किमु य इण्हिं, तं पुण णियगं धितिं जाण ॥१७७३॥

दिवसेऽपि पुरिसेण संलवंती पुट्ठा वा विगारं ण गच्छामि, सुद्धबंभयारधारणातो, असुद्धभावगमणं विगारो विगती भण्णति, हट्ठा बलिया णिरुयसरीरा, एण्हिं-एमाए गिलाणवत्थाए त्ति ।

सा तं साधुं भणति – तुमं णियगं आत्मीयं धितिं जाण ॥१७७२॥

---

१ गा० १७४३ ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सो मग्गति साधम्मिं, सण्णि अहाभद्दियं च सूतिं च ।
देति य से वेतणयं, भत्तं पाणं व पायोग्गं ॥१७७४॥

सो असहू सोहू तत्थ वा अण्णत्थ वा गामे संभोतियमसंभोतियं वा संजतिं मग्गति । तासि असति सण्णिं सावियं, असति अहाभद्दियं चेव सूइं, जा अगारीओ वियावेति सा सूती । अणिच्छंती वेयणएण विणा वेयणगं पि देति । "च" सद्दातो भत्तपाणं पि देति, गिलाणीए य भत्तपाणं पाउग्गं उप्पादेति, पाउग्गगहणातो एसणिज्जं पत्थं च, च सद्दातो अणेसणिज्जं पि ॥१७७४॥

एतासिं असतीए, ण कधेति जधा अहं खु मी असहू ।
सद्दाती-जतणं पुण, करेमि एसा खलु जिणाणा ॥१७७५॥

अहं खु मी आत्मावधारणे, अहमेव असहू । "पुण" सद्दो अनृतवाक्यप्रतिपादने, "खलु" सद्दो – आज्ञावधारणे ॥१७७५॥

सद्दादी इमा जयणा –

सद्दम्मि हत्थवत्थादिएहि दिट्ठीए चिलिमिलंतरितो ।
संलावम्मि परम्मुहो, गोवालग-कंचुओ फासे ॥१७७६॥

सद्देण जो असहू सो तं गिलाणिं भणाति – मा ममं वायाए किंचि आणवेज्जासि, हत्थेण वा वत्थेण वा अंगुलीयाए वा दाएज्जसि ।

दिट्ठि-कीवो – सव्वं चिलिमिलियंतरितो करेति ।

संलाव-कीवो – अवस-संलवियव्वे परम्मुहो संलवंति ।

फास-कीवो – तं पाउणिज्जंतो अप्पणो गोवालकंचुयं काउं उव्वत्तणाति करेति ।

एस पुण कंचुगो आचार्येण दर्शितो ज्ञेय: ॥१७७६॥ गतो बितियभंगो ।

इदाणिं [1]ततिओ भंगो –

एसेव गमो णियमा, णिग्गंथीए वि होइ असहूए ।
दोण्हं पि तु असहाणं, तिगिच्छ जतणाए कायव्वा ॥१७७७॥

पुव्वद्धं कंठं । गतो ततियभंगो ।

इदाणिं [2]चउत्थो – "दोण्हं पि" पच्छद्धं । दोण्हं पि साधुसाधुणीणं उवरिमेसु तिसु भंगेसु जा जयणा सा जहासंभवं सव्वें चउत्थे कायव्वा । गतो चउत्थो भंगो ॥१७७७॥

ततिय-चउत्थेसु असहू संजती इमं भणाति (भणेज्जा)

आतंक-विप्पमुक्का, हट्ठा बलिया य णिव्वुया संती ।
अज्जा भणिज्ज कायी, जेट्ठज्जा वीसमामो ता ॥१७७८॥

जहा घणेण विप्पमुक्को निद्धणो भवति एवं आयंकविप्पमुक्का हट्ठा भणति । "हट्ठे" त्ति निरोगा,

---

१ गा० १७४३ । २ गा० १७४३ ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उवचियमंसा बलिया, सत्थिंदिया सुही निव्वुता भणति – संजमभरोक्कंताण तप्परिच्चाए जहासुहं विहारो वीसमणं[1] ॥१७७८॥

किं चान्यत् –

दिट्ठं च परामट्ठं च, रहस्सं गुज्झमेक्कमेक्कस्स ।
तं विस्समामो अम्हे, पच्छा वि तवं करिस्सामो ॥१७७९॥

मुच्छियपडियाए अपाउयसुत्ताए वा वेयणट्टवेलाए उड्ढणिवेसणातिसु वा किरियासु दिट्ठं, "च" सद्दाओ अणेकसो, परिवत्तणादिकिरियासु परामट्ठं, चसद्दाओ अणेगसो रहस्संगा ऊरुगाती, सति रहस्से वि गुज्झंगं मृगीपदमित्यर्थः ।

अहवा – रहस्सं अरुहं जं गुज्झं तं रहस्सगुज्झं एक्कमेक्कस्स मया तुज्झ ममं पि तुमे । पच्छिमे-काले, "अवि" पदत्यसंभावणे "[2]पच्छावि ते पयाया" कारगगाहा ॥१७७९॥

इय विभणिओ उ भयवं, पियधम्मोऽवज्जभीरु संविग्गो ।
अपरिमितसत्तजुत्तो, णिक्कंपो मंदरो चेव ॥१७८०॥

"इय" त्ति एवं। जहा मंदरो वायुना न कंपते एवं परिभोग-णिमंतण-वायुणा ण कंपिज्जते॥१७८०॥

"[3]पच्छावि तवं करिस्सामो" त्ति भणंति तेण साधुणा –

उद्धंसित्ता य तेणं, सुट्ठु त्ति जाणाविया य अप्पाणं ।
चरसु तवं णिस्संका, तु आसित्रं सो तु चेतेति ॥१७८१॥

एवं भणंतीए तीए जो उज्जोता धंसिता उद्धंसिता, तेण साहुणा ।

अहवा – "उद्धंसिय" त्ति-खरंटिया णिधम्मे एरिसं दुक्खं अणुभवियं, ण वेरग्गं जायं, मया वि साधम्मिणि त्ति जीवाविया, इहरा मता होतं। सुट्ठु त्ति पसंसा । चसद्दो अतिमयवयणपदरिसणे । अम्हे जाणा-विया, चसद्दो ति निद्देसे, त्वया अप्पा उपदेसो "चरसु" पच्छद्धं । "आसित्रं" ति णिगच्छति, तस्मान्निर्ग-मनं करोतीत्यर्थः ॥१७८१॥

एसेव गमो नियमा, पण्णवण-परूवणासु अज्जाणं ।
पडिजग्गंति गिलाणं, साधुं अज्जा उ जयणाए ॥१७८२॥

चउभंगेण पण्णवणा, एक्केकभंगस्वरूपेण अक्खाणं परूवणा, "जयणाए" ति ॥१७८२॥

इमा जयणा संजतीए वि साधुपडियरणे –

सा मग्गति साधम्मीं, सण्णि-अहाभद्द-संचरादिं वा ।
देति य से वेयणयं, भत्तं पाणं च पाउग्गं ॥१७८३॥

संचरो ण्हाणिया सोधओ । शेषं पूर्ववत् ॥१७८३॥

कारणा अविधिते वि संजति-वसहिं पविसेज्ज –

---

१ स्वस्थेन्द्रिया । २ दशवैकालिकचतुर्थाध्ययने । ३ गा० १७७९ ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

बितियपदमणप्पज्झे, पविसे अविकोविते व अप्पज्झे ।
तेणऽगणि-आउ-संभम, बोहिगमादीसु जाणमवि ॥१७८४॥

अप्पज्झो, अकोविओ सेहो, तेणातिसंभमेसु जाणतो वि सहसा पविसे ॥१७८४॥

जे भिक्खू णिग्गंथीणं आगमण-पहंसि डंडगं वा लट्ठितं वा रयहरणं वा मुहपोत्तियं वा अण्णयरं वा उवगरणजायं ठवेति; ठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२४॥

जेण पहेण पक्खियादिसु आगच्छंति तम्मि पहे, दंडो बाहुप्पमाणो, लट्ठी आयप्पमाणा, अण्णतरग्गहणा ओहियं उवग्गहिअं वा णिक्खिवति, तम्मि पहे मुंचति, तस्स मासलहुं आणादिया य दोसा ।

कहं उवकरणस्स णिक्खेवसंभवो ? उच्यते –

णिसिदंतो व ठवेज्जा, पडिलेहंतो व भत्तपाणं तु ।
संथार-लोय-कितिकम्म कतितवा वा अणाभोगा ॥१७८५॥

णिसियंतो रयहरणं मुंचति, भत्तपाणाति वा पडिलेहंतो, संथारगं बद्धंतो मुयंतो वा, लोयं वा करेंतो, कितिकम्मं विस्सामणं तं वा करेंतो, माताए वा कतितवेण मुंचति, अणाभोगेण वा । एतेहिं कारणेहिं रयोहरणादि मुंचेज ॥१७८५॥

निग्गंथी-गमण-पहे, जे भिक्खू निक्खवे कइतवेणं ।
अन्नतरं उवकरणं, गुरुगा लहुगो इतरि आणा ॥१७८६॥

कइतवेण मेहुणट्ठस्स चउगुरुगं, इतरं अकेतवं अणाभोगो, अणाभोगेण मुंचति मासलहुं, आणादिया य दोसा भवंति ॥१७८६॥

इमा चरित्तविराहणा –

पडिपुच्छ-दाण-गहणे, संलावऽणुराग-हास-खेड्ड य ।
भिन्नकधादि-विराधण, दट्ठूण व भाव-संबंधो ॥१७८७॥

पढमा पुच्छा, बितिया "[1]पडिवुच्छा", तस्सिमं वक्खाणं –

कस्सेयंति य पुच्छा, ममं ति कातूण किं चुतं ? बितिया ।
चित्तं ण मे सधीणं, पक्खित्ते दट्ठु एज्जंति ॥१७८८॥

रयोहरणादि काति संजती घेत्तूणं पुच्छति – कस्सेयं ति रयोहरणं ? ।

साहू भणाति – "ममेयं त्ति काऊणं" ममीकृते साधुना इत्यर्थः ।

अहवा – साहूणं ति पढमपुच्छा, किं चुयं ? बितियपुच्छा, एम पडिपुच्छा दट्ठव्वा ।

ततो साहू भणाति – "चित्तं ण मे सहीणं" ति ण मे वसं वट्टति चित्तं ।

कस्माद्धेतो ? पवखीए तुमं आगच्छमाणी दिट्ठा ॥१७८८॥

---

१ गा० १७८७ ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सा भणाति –

किं च मए अट्ठो मे ? आमं णणु दाणि ऽहं तुह सहीणा ।
संपत्ती होतु कता, चउत्थ पच्छा तु एक्कतरो ॥१७८९॥

साहू भणाति – "आमं" अनुमतार्थे, इदाणिं तुह सहीणा आयत्तेत्यर्थः । ततियपुच्छा गता । संपत्ती सागारिय सेवणा । चउत्थं पुच्छं । संजतो करेति संजती वा ॥१७८९॥ "पडिपुच्छ" त्ति गयं ।

इदाणिं "[1]दान-गहणे" त्ति –

भणितो य हंद गेण्हह, हत्थं दातूण साहरति भुज्जो ।
तुह चेव होतु घेत्तुं, व मुंचते जा पुणो देति ॥१७९०॥

हंदेत्यामंत्रणे । संजतो हत्थं पसारेऊण भुज्जो पडिसाहरति, भणति य तुज्झेव भवतु ।

अहवा – सो संजतो तीए हत्थाओ घेत्तूण पुणो मुंचति । कस्माद्धेतोः ? "जा पुणो देति" – जेण द्वितीयवारं मम देति, देंतीए य पुणो हत्थफासो भविस्सति तस्माद्धेतोः ॥१७९०॥

इदाणिं "[2]संलावो" साहू भणाति –

धारेतव्वं जातं, जं ते पउमदल-कोमलतलेहिं ।
हत्थेहिं परिग्गहितं, इति हासऽणुराग-संबंधो ॥१७९१॥

इति हासमेतत्, इति हासातो अणुरागो भवति । ततो य परोप्परं भावसंबंधो ॥१७९१॥

इदाणिं "[3]अणुरागो" त्ति –

संवालादणुरागो, अणुरत्ता बेति मे मए दिण्णं ।
इतरो चिय पडिभणती (तुज्झ) व जीतेण जीवामो ॥१७९२॥

अणुरागो भवति । इदाणिं "हास-खेड्डे" य त्ति - संजती अणुरत्ता बेड – "मे मए दिण्णं" मे इति भवतः । इतरो – साहू भणति- जं पि मम जीवितं तं पि तुज्झायत्तं, तुज्झच्चएण जीविएण जीवामो ॥१७९२॥

एवं परोप्परस्सा, भावणुबंधेण होंति मे दोसा ।
पडिसेवण-गमणादी, गेण्हदिट्ठेसु संकादी ॥१७९३॥

पडिसेवणा चउत्थस्स, एगतरस्स दोण्ह वा गमणं उण्णिक्खमणं, आदिसद्दातो सलिंगट्ठितो वा अणायारं सेवति । संजतो वा वतिणिं, वतिणी वा संजतं उदिण्णमोहा बला वा गेण्हेज्जा ।

अहवा – खरकम्मिएहिं गेण्हणं, हासं, खेड्डं वा करेंताणि सागारिएण दिट्ठाणि । संकिते चउगुरुं, णिस्संकिते मूलं ।

अहवा – दिट्ठे घोडिय - भोतिकादि-पसंगो ॥१७९३॥

बंभव्वए विराधण, पुच्छादीएहि होति जम्हा उ ।
णिग्गंथी-गमण-पहे, तम्हा उ न निक्खिवे उवधिं ॥१७९४॥ कंठा

---

१ गा० १७८७ । २ गा० १७८७ । ३ गा० १७८७ ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

बितियपदमणाभोगे, पडिते पम्हुट्ठ संभमेगतरे ।
आसण्णे दूरे वा, णिवेद जतणाए अप्पिणणं ॥१७६५॥

पम्हट्ठं णाम विस्सरियं । एगतरसंभमो सावय-अगणि-आउमाति, सो संजयाणं उवहि वसहीए आसण्णे वा पडितो दूरे वा, जति आसण्णे तो णिवेदेंति, अह दूरे तो घेत्तुं जयणाए अप्पिणिंति ॥१७६५॥

आसण्णे साहंति, दूरे पडियं तु थेरिगा णेति ।
सण्णिक्खिवंति पुरतो, गुरूण भूमिं पमज्जित्ता ॥१७६६॥

वसहीए जइ आसण्णे पडियं, तो ण गेण्हंति । णियत्तिउं थेरिया गुरूण साहंति । अह दूरे पडियं तो थेरिया गिण्हंति, तरुणी वि घेत्तुं थेरियाण समप्पेंति, ता थेरिया संजयवसहिमागंतुं पमज्जित्ता भूमिं गुरूण पुरतो णिक्खिवंति । एसा अप्पिणणे जयणा भणिया ॥१७६६॥

जे भिक्खू णवाइं अणुप्पणाइं अहिगरणाइं उप्पाएति,
उप्पाएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२५॥

नवं यत् पुरातनं भवति, अणुप्पण्णं संपयकाले अविज्जमाणं, अधिकं करणं अधिकरणं, संयमयोगातिरिक्तमित्यर्थः, अधोकरणं अधिकरणं, अधोधः संयमकंडकेषु करोतीत्यर्थः । नरकतिर्यग्गतिषु वा आत्मानमधितिकरणं वा अधिकरणं अल्पसत्वमित्यर्थः । अधीकरणं वा, न धी अधी, अधीकरणं अबुद्धिकरणमित्यर्थः । "उप्पाए" त्ति उत्पादनमुत्पत्ती, जो उप्पाएति तस्स मासलहुं पच्छित्तं ।

इमा सुत्तफासिय-णिज्जुत्ती -

णामं ठवणा दविए, भावम्मि चतुव्विधं तु अहिगरणं ।
एतेसिं णाणत्तं, वोच्छामि अहाणुपुव्वीए ॥१७६७॥

णाम-ठवणाओ गयाओ । दव्वओ आगमओ य नो आगमओ य, आगमतो जाणओ अणुवउत्तो, णो आगमओ जाणगसरीर-भवियसरीरवइरित्तं इमं चउव्विहं -

णिव्वत्तण णिक्खिवणे, संजोगण णिसिरणे य बोधव्वे ।
अट्ठ चतुविधं दुविधं, तिविधं च कमेण णातव्वं ॥१८६८॥

णिव्वत्तणाधिकरणं अट्ठविधं, णिक्खिवणं चतुव्विधं, संजोयणाधिकरणं दुविधं, णिसिरणं तिविहं । एवं पच्छद्धं कमेण पुव्वद्धे जोएयव्वं ॥१७६८॥

णिव्वत्तणाधिकरणं दुविधं - मूलकरणं उत्तरकरणं च, तत्थ मूलं णिव्वत्तणाधिकरणं अट्ठविहं भण्णति -

पढमे पंच सरीरा, संघाडण साडणे य उभए वा ।
पडिलेहणा पमज्जण, अकरण अविधीए णिक्खिवणा ॥१७६६॥

पढमे त्ति णिव्वत्तणाधिकरणे पंचसरीरा ओरालियादि, संघातकरणं, साडकरणं, उभयकरणं च, एतं अट्ठविहं मूलकरणं । निक्खिवणाधिकरणं चउव्विहं इमं - पडिलेहणाए पमज्जणाए य अकरणे दो, एतेसिं चेव अविधिकरणे, एते चउरो ॥१७६६॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

संजोयणाधिकरणं दुविधं इमं –

भत्तोवधिसंजोए, णिसिरण सहसा पमादऽणाभोगे ।
मूलादि जाव चरिमं, अहवा वी जं जधिं कमति ॥१८००॥

भत्तसंजोयणा, उवधिसंजोयणा य, एते दो णिसिरणाधिकरणं । तिविधं इमं – सहसा णिसिरणं, पमातेण णिसिरणं, अणाभोगेण वा । एवं कमेण भेया भणिता ॥१८००॥

णिव्वत्तणाधिकरणसरूवं भणति –

णिव्वत्तणा य दुविधा, मूलगुणे चेव उत्तरगुणे य ।
मूले पंचसरीरा, दोसु तु संघातणा णत्थि ॥१८०१॥

णिव्वत्तणाधिकरणं दुविधं - मूलगुण-णिव्वत्तणाधिकरणं, उत्तरगुण - णिव्वत्तणाधिकरणं च । मूले ओरालियादि पंच सरीरा दट्ठव्वा । दोसु य तेयकम्माएसु सव्वसंघातो णत्थि, अनाद्यत्वात् ॥१८०१॥

संघातणा य पडिसाडणा य उभयं व जाव आहारं ।
उभयस्स अणियतठिती, आदि अंतेगसमओ तु ॥१८०२॥

त्रिकं त्रिष्वपि सम्भवति, उभयं संघातपरिसाडा, तस्स ठिती अणियता द्विकादिसमयसम्भवात् । संघातो आतीए समए, सव्वपरिसाडो अंते, एए दोण्णि एगसमतिता ॥१८०२॥

सर्वसंघातप्रदर्शनार्थमाह –

हविपूयो कम्मगरे, दिट्ठंता होंति तिसु सरीरेसु ।
कण्णे य खंधवण्णे, उत्तरकरणं व तीसु तु ॥१८०३॥

हवि घितं, तत्थ जो पूतो पच्चति सो हविपूयो, सो य घयपुण्णो भण्णति संघायं घते पक्खित्ते, पढमसमए एगंतेण घयग्गहणं करेति बितियादिसमएसु गहणं मुंचती य । कम्मकारो लोहकारो, तेण जहा तवियमायसं जले पक्खित्तं पढमसमए एगंतेण जलादाणं करेति, बितियादिसमएसु गहणं मुंचती य । एवं तिसु ओरालियादिसरीरेसु पढमसमए गहणमेत्र करेति, बितियादिसमएसु संघातपरिसाडा, तेयगकम्माणं सव्वकालं संघाडपरिसाडो अनादित्वात् । पंचण्ह वि अंते सव्वसाडो ।

अहवा तिण्हं ओराल - विउव्वि - आहारगाणं मूलंगकरणा अट्ठ - सिरो उरं उदरं पिट्ठी दो बाहाओ दोण्णि य ऊरु, सेसं उत्तरकरणं ।

अहवा तिसु आइल्लेसु ओरालादिसु उत्तरकरणं कण्णेसु - वेहकरणं, श्लेष्मेण खंधकरणं, त्रिफलादि घृतादिना वन्नकरणं ॥१८०३॥

अहवा इमं चउव्विहं दव्वकरणं –

संघाडणा य परिसाडणा य मीसे तहेव पडिसेहो ।
पड संख सगड थूणा उड्ढ-तिरिच्छातिकरणं तु ॥१८०४॥

संघायकरणं, पडिसाडणाकरणं, संघायपडिसाडणाकरणं, "पडिसेहो" त्ति - णो संघातो णो पडिसाडो ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जहासंखं उदाहरणाणि – पड - संख - सगड - थूणाए य उड्ड - तिरिच्छाति - करणं ।

अहवा – तिसु आइल्लेसु णिव्वत्तणाधिकरणं । तत्थ ओरालियं एगिंदियादि पंचविधं, तं 'जोणिपाहुडातिणा' जहा सिद्धसेणायरिएण अस्साए कता। जहा वा एगेण आयरिएण सीसस्स उवदिट्ठो जोगो जहा महिसो भवति । तं च सुयं आयरियस्स भाइणितेण । सो य णिधम्मो उण्णिक्खंतो महिसं उप्पादेउं सोयरियाण हट्ठे विक्किणति । आयरिएण सुयं । तत्थ गतो भणाति – किं ते एएण ? अहं ते रयणजोगं पयच्छामि, दव्वे आहाराहिते य आहरिता, आयरिएण संजोतिता, एगंते थले णिक्खित्ता, भणितो एत्तिएण कालेण ओक्खणेज्जाहि, अहं गच्छामि, तेण उक्खता दिट्ठीविसो सप्पो जातो, सो तेण मारितो, अधिकरणच्छेओ, सो वि सप्पो अंतोमुहुत्तेण मओ । एवं जो णिव्वत्तेइ सरीरं अधिकरणं । कहं ? जतो सुत्ते भणियं –

"[1]जीवे णं भंते ! ओरालियसरीरं णिव्वत्ते माणे किं अधिकरणं अधिकरणी? जीवो अधिकरणी, सरीरं अधिकरणं" । णिवत्तणाधिकरणं गतं ॥१८०४॥

इदाणिं णिक्खिवणाधिकरणं । तं दुविधं - लोइयं लोउत्तरियं च । तत्थ लोइयं अणेगविधं –

गल-कूड-पासमादी, उ लोइया उत्तरा चउविकप्पा ।
पडिलेहणा पमज्जण अधिकरणं अविधि-णिक्खिवणा ॥१८०५॥

गलो दंडगस्स अंतो लोहकंटगो कज्जति, तत्थ मंसपेसी कीरति, सो दीहरज्जुणा बद्धो मच्छट्ठा जले खिप्पइ । कूडंमियादीणं अट्ठा णिक्खिप्पइ । पासं त्ति राईणं अट्ठा निक्खिप्पइ । आतिसद्दावो वा [2]ओराण [3]उलाणसिगतससयाण जालच्छइयाए । एवमादि लोइयाणि ।

लोउत्तरियं तं चउव्विहं - पच्छद्धं ।
ण पडिलेहेति, न पमज्जति एगो विगप्पो ।
न पडिलेहेइ, पमज्जति बिइओ विगप्पो ।
पडिलेहेइ, न पमज्जइ ततिओ विगप्पो ।

जं तं पडिलेहे ति पमज्जति, तं दुप्पडिलेहियं दुप्पमज्जियं, दुप्पडिलेहियं सुपमज्जियं, सुप्पडिलेहियं दुप्पमज्जियं । एते तिण्णि वि भंगा चउत्थो विकप्पो । एसा अविधि - णिक्खिवणा अधिकरणं ।

सुप्पडिलेहियं सुप्पमज्जियं एस सुद्धो अधिकरणं न भवति ॥१८०५॥

इदाणिं संजोयणा, सा दुविहा - लोइया लोउत्तरिया य । लोइया अणेगविहा –

विसगरमादी लोए, उत्तरसंयोग मत्तउवहिम्मि ।
अंतो बहि आहारे, विहि अविधि सिव्वणाउवधी ॥१८०६॥

जाणि दव्वाणि संजोइयाणि विसं भवंति ताणि संजोएति, विसेण वा अण्णदव्वाणि संजोएति, जेण

---

१ भगवत्यां पाठोऽयमेवंरूपः –
जीवे णं भंते ! ओरालियसरीरं निव्वत्तेमाणे किं अधिकरणी, अधिकरणं ?
गोयमा ! अधिकरणी वि अधिकरणं पि ।
से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ – "अधिकरणी वि, अधिकरणं पि"
गोयमा ! अविरतिं पडुच्च, से तेणट्ठेणं जाव – अधिकरणं पि । भग० श० १६ उ० १
२ चारू । ३ बाजपक्षी ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

गरितो अच्छति ण मरति सहसा सो गरो, सो वि दव्वसंजोगा भवति । आदिसद्दातो अणेगरोगउप्पायगा जोगा संजोएति ।

लोउत्तरिया संजोयणा दुविहा – भत्ते उवकरणे य । आहारे दुविहा – अंतो बाहिं च । अंतो त्ति वसहीए । सा तिविहा – भायणे हत्थे मुहे य । तत्थ भायणे खीरे खंडं, हत्थे गुलं मंडएण, मुहे मंडगं पक्खिविता पच्छा गुलाति पक्खिवति । बाहिं भिक्खं चेव अडंतो जं जेण सह संजुज्जति तं ओभासिउं संजोएति ।

उवधिं णिक्कारणे अविधीते सिव्वति, णिक्कारणे विधीए, कारणे अविधीए, एते तम्रो वि भंगा अधिकरणं, चउत्थो सुद्धो ॥१८०६॥

इदाणिं णिसिरणा दुविधा – लोइया लोउत्तरिया य । लोइया अणेगविधा –

कंडादि लोअ णिसिरण, उत्तर सहसा पमायऽणाभोगे ।
मूलादी जा चरिमं, अधवा वी जं जहिं कमति ॥१८०७॥

कंडं णिसिरति, आदिसद्दातो गोप्फणपाहाणं कणयं सत्ति वा ।

लोउत्तरिया णिसिरणा तिविधा – सहसा, पमाएण, अणाभोगेण य । पुव्वाइट्ठेण जोगेण किं चि सहसा णिसिरति, पंचविधपमायऽण्णतरेण पमत्तो णिसिरति, एगंत [1]विस्सती अणाभोगो तेण णिसिरति ।

इदाणिं णिव्वत्तणातिसु पच्छित्तं –

तत्थ णिव्वत्तणा "मूलाति" पच्छद्धं । एगिंदियादि-णिव्वत्तयंतस्स अभिक्खसेवं पडुच्च पढमवाराए मूलं, बितियवाराए अणवट्ठं, ततियवाराए पारंचियं ।

अधवा – जे जहिं कमति त्ति संघट्टणादिकं आयविराहणादिणिप्फण्णं वा ॥१८०७॥

एगिंदियमादीसु तु, मूलं अधवा ति होति सट्ठाणं ।
झुसिरेतरणिप्फण्णं, उत्तरकरणंमि पुव्वुत्तं ॥१८०८॥

एगिंदियं जाव पंचिंदिय णिव्वेत्तेंतस्स मूलं ।

अहवा – वि होति सट्ठाणं ति "[2]छक्काय चउसु" गाहा ।

परित्तं णिव्वत्तेति चउलहुं । अणंते चउगुरुं । बेइंदिएहिं छल्लहुं । तेइंदिएहिं छग्गुरुं । चउरिंदिएहिं छेदो । पंचिदिएहिं मूलं । उत्तरकरणे झुसिराझुसिरणिप्फण्णं पुव्वुत्तं इहेव [3]पढमुद्देसए पढमसुत्ते ॥१८०८॥

णिक्खिव-संजोग-णिसिरणेसु इमं पच्छित्तं –

तिय मासिय तिग पणए, णिक्खिव संजोग गुरुग-लहुगा वा ।
झुसिरेतर-संतर-णिरंतरे य वुत्तं णिसिरणम्मि ॥१८०९॥

सत्तभंगीए पढम-बितिय-ततिएसु भंगेसु मासलहुं, चउत्थ-पंचम-छट्ठसु पणयं, चरिमो सुद्धो, तवकाल-विसेसितो कायव्वो । आहारे उवकरणे वा रागे चउगुरुगं, दोसे चउलहुगं ।

अहवा – सामण्णेण आहारे चउगुरुगा, उवकरणे लहुगो । णिसिरणे झुसिरे अझुसिरे य संतरणिरंतरेसु वुत्तं पच्छित्तं पढमसुत्ते ॥१८०९॥ दव्वाहिकरणं गयं ।

१ विस्सरई विस्मृतिः । २ गा० ११७ पृ० ४९ पीठिकायाम् । ३ गा० ५०३ पृ० ४ ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इदाणिं भावाधिकरणं –

जोगे करणे संरंभमादि चतुरो तहा कसायाणं।
एतेसिं संजोगे, सतं तु अट्ठुत्तरं होइ ॥१८१०॥

संरंभो, समारंभो, आरंभो।

एतेसिं अधो मण-वय-काया तिण्णि ठावेयव्वा।

तेसिं पि अहो करणकारावणाणुमती य तिण्णि ठावेयव्वा।

एतेसिं पि अधो कोह-माण-माया-लोभा चउरो ठावेयव्वा।

इमो पुणो चारणप्पगारो।

संरंभं मणेण करेति कोहसंपउत्ते। एवं माणतिया वि।

एते करणे चउरो, कारावणे वि चउरो, अणुमतीते वि चउरो।

एवं-बारस मणेण लद्धा। वाए वि बारस। काएण वि बारस। एते संरंभेण छत्तीसं लद्धा।

एवं समारंभेण वि छत्तीसं। आरंभेण वि छत्तीसं। सव्वे वि मेलिया अट्ठुत्तरं सतं भवति ॥१८१०॥

संरंभ मणेणं तू, करेंति कोवेण संपउत्तो उ।
इय माण-माय-लोभे, चउरो होती तु संजोगा ॥१८११॥

चतुरेते करणेणं, कारवणेणं च अणुमतीए य।
तिण्णि चतुक्का बारस, एते लद्धा मणेणं तु ॥१८१२॥

संकप्पो संरंभो, परितावकारो भवे समारंभो।
आरंभो उद्दवओ, सव्वणयाणं तु सुद्धाणं ॥१८१३॥

एतेसामण्णतरं, अधिकरणं जो णवं तु उप्पाए।
सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त-विराधणं पावे ॥१८१४॥

एतेसिं दव्वभावाधिकरणाणं अण्णतरं अणुप्पण्णं उप्पाएति जत्थ मासलहुं तत्थ सुत्तणिवातो, सेसा अत्थओ विकोवणट्ठा पच्छित्ता दिण्णा ॥१८१४॥

इह पुण सुत्ते भावाधिकरणेण पढमभंगेण अधिकारो।

इमे य दोसा –

तावो भेदो अयसो, हाणी दंसण-चरित्त-णाणाणं।
साहुपदोसो संसारवड्ढणो साहिकरणस्स ॥१८१५॥

अतिभणिय-अभणिते वा, तावो भेदो उ जीवचरणेसु।
रायकुलम्मि य दोसा, खुभेज्ज वा णीयमित्तादी ॥१८१६॥

तप्पति अहं तेण अतीव एवं भणितो, मए सो वा अतीव भणिओ पच्छा तप्पइ, अमुगो वा मए ण भणिओ त्ति पच्छा तप्पति। भेदो दुविधो – जीवे चरणे य। जीए कलहिउं पच्छा एगतरो दो वि वा अप्पाणं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मारेंति, उण्णिक्खमंति वा चरणे, अण्णोण्णपक्खेण वा गच्छभेओ भवति। पदोसेण वा रायकुले कहेज्ज, तत्थ गेण्हणादिया दोसा, एगतरस्स दोण्ह वा णीया खुभेज्ज, ते पंतवणादि करेज्ज, ताण वा परोप्परं कली भवे, लोगे अयसो "अहो डोंबा विव सततं कलहसीला, रोसणा, पेसुण्णभरिता"। तव्वेलं ण पढंति णाणहाणी, साधुपदोसे दंसणहाणी, अत्राच्छल्यकरणा – "जं अज्जितं चरित्तं" कारक गाहा। एवं चरणहाणी।

किं चान्यत् – साधुपदोसेण य संसारवड्ढी भवति। एते साधिकरणस्स दोसा जम्हा तम्हा णो अधिकरणं उप्पाएति ॥१८१६।

कारणे उप्पाएज्ज –

बितियपदमणप्पज्झे, उप्पादऽविकोवितेव अप्पज्झे।
जाणंते वा वि पुणो, विगिंचणट्ठाए उप्पाए ॥१८१७॥

अणप्पज्झो, अकोवितो वा सेहो अणरिहो कारणे पव्वावितो कते कारणे सो अधिकरणं काउं विगिंचियव्वो ।.१८१७।।

जे भिक्खू पोराणाइं अहिगरणाणि खामिय विओसमियाइं पुणो उदीरेइ, उदीरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२६॥

पोराणा पूर्वमुत्पन्ना। अधिकरणं पूर्ववत्। रोसावगमो खमा। तं च भण्णति तिविधं – खामियं ओसवियं मिच्छादुक्कडप्पयाणं।

अहवा – खामियं वायाए, मणसा विओसवियं व्युत्सृष्टं, ताणि जो पुणो उदीरति उप्पादयति तस्स मासलहुं।

खामित विउसविताइं, अधिकरणाइं तु जे पुणोप्पाए।
ते पावा णातव्वा, तेसिं तु परूवणा इणमो ॥१८१८॥

पावा ण साधुधर्मे व्यवस्थिता इत्यर्थः। कहं उप्पाएति ? के ति साहुणो पुव्वकलहिता तम्मि य खामिय विओसविते। तत्थेगो भणति – अहं णाम तुमे तदा एवं भणितो आसि ण जुत्तं तुज्झ।

इयरो पडिभणाति – अहं पि ते किं ण भणितो ?

इतरो भणाति – इयाणिं ते किं मुयामि ? एवं उप्पाएति स उप्पायगो ॥१८१८॥

उप्पादगमुप्पण्णो, संबद्धे कक्खडे य बाहू य।
आविट्टणा य मुच्छण, समुघाय ऽतिवायणे चेव ॥१८१९॥

पुणो विकलुसिता उप्पण्णं, संबद्धं णाम वायाए परोप्परं सेविउमारद्धा, कक्खडं णाम पासट्ठितेहिं विओसविज्जमाणा वि णोवसमंति, 'बाहूअं' ति - रोसवसेण बलोवलिं जुज्झं लग्गा, आविट्टणा एगो णिहओ, जो सो णिहतो सो मुच्छितो, मारणंतियसमुग्घाएण समोहितो, अतिवायणा मारणं ॥१८१९॥

एतेसु णवसु ठाणेसु उप्पायगस्स इमं पच्छित्तं –

लहुओ लहुगा गुरुगा, छम्मासा होंति लहु गुरुगा य।
छेदो मूलं च तहा, अणवट्ठप्पो य पारंची ॥१८२०॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

बितियादिसु चउलहुगादी पच्छित्ता, उप्पादगपदं ण भवति त्ति काउं ॥१८२०॥

तावो भेदो अयसो, हाणी दंसण-चरित्त-णाणाणं।
साधुपदोसो संसारवड्ढणो होतुदीरंते ॥१८२१॥

बितियपदमणप्पज्झे, उदीरे अविकोविदे व अप्पज्झे।
जाणंते वा वि पुणो, विगिंचणट्ठा उदीरेज्जा ॥१८२२॥

पूर्ववत्।

जे भिक्खू मुहं विप्फालिय विप्फालिय हसति, हसंतं वा सातिज्जति॥सू०॥२७॥

मुखं वक्त्रं वयणं च एगट्ठं, विप्फालेति विडाडेति, अतीव फालेति विप्फालेति वियंभमाणो व्व विविधैः प्रकारैः फालेति विप्फालेति विडालिकाकारवत्। वीप्सा पुनः पुनः।

मोहनीयोदयो, हास्यं तस्स चउव्विहा उप्पत्ती –

पासित्ता भासित्ता, सोतुं सरितूण वा वि जे भिक्खू।
विप्फालेत्ताण मुहं, सवियार कहक्कहं हसती ॥१८२३॥

असंवुडादि पासित्ता, वाचि विक्खलियं भासित्ता, णमोक्कारणिज्जुत्तीए काग-सरडादि-अक्खाणगे सुणेत्ता, पुव्वकीलिया ति सरिऊण, मोहमुदीरक अण्णस्स वा हासुप्पायगं सविकारं महंतेण वा उक्कलियासद्देणं कहक्कहं भण्णति ॥१८२३॥

जो एवं हसति –

सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त-विराधणं तहा दुविधं।
पावति जम्हा तेणं, सवियार कहक्कहं ण हसे ॥१८२४॥

को दोसो ?

पुव्वामयप्पकोवा, अभिणवसूलं च मत्तगहणं वा।
असंवुडणं वि भवे, तावसमरणेण दिट्ठंतो ॥१८२५॥

पुव्वामयो सूलाति रोगो सो उवसंतो पकोवं गच्छति। कण्णस्स अहो महंता गलसरणी मत्ता भण्णंति ता घेप्पेज्ज। मुहस्स वा असंवुडणं भवेज्ज, जहा सेट्ठिस्स मुहं विप्फाडिय हसमाणस्स तारिसं चेव-थद्धं ताहे वेज्जेण अयपिंडं तावेत्ता मुहस्स ढोइतं संपुडं जातं। किं चान्यत् – पंचसता तावसा णं मोयए भक्खंति। तत्थ एगेण अदेसकाले दाढिया मोडिया, सव्वे पहसिता, गलग्गेहिं मोयगेहिं सव्वे मता ॥१८२५॥

किं चान्यत् –

आसंक-वेरजणगं, परपरिभवकारणं च हासं तु।
संपातिमाण य वहो, हसओ मतएण दिट्ठंतो ॥१८२६॥

परस्स आसंका अहं अणेण हसितो त्ति, किं वा अहमणेण हसितो वेरसंभवो भवति, हसंतेहिं परपरिभवो कतो भवति, संपातिमादि मुहे पविसंति।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मयगदिट्ठंतो य भणियव्वो –

राया सह देवीए ओलोयणे चिट्ठति। देवी भणति रायं – [1]मुतं माणुसं हसति ! राया ससंभते कहं कत्थ वा? साधुं दरिसेति। राया भणति – कहं मतो त्ति? देवी भणति – इहभवे सव्वसुहवर्जितत्वात् मृतो मृतवत् ॥१८२७॥

बितियपदमणप्पज्झे, हसेज्ज अविकोविते व अप्पज्झे ।
जाणंते वा वि पुणो, सागारितमाइकज्जेसु ॥१८२७॥

सागारियमातिकज्जेसु सागारियं मेहुणं, तं कोति पडिबद्धवसहीए सेवति, ताहे हस्सिज्ज ति जेण 'णातोमि" त्ति लज्जियाण मोहो णासति ।

अहवा – मा अपरिणया इत्थियाए सद्दं सुणेंतु त्ति - हसिज्जति । आतिसद्दातो कारणे जागरातिसु ॥१८२७॥

जे भिक्खू पासत्थस्स संघाडयं देइ, देंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२८॥

जे भिक्खू पासत्थस्स संघाडयं पडिच्छइ, पडिच्छंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२६॥

जे भिक्खू ओसन्नस्स संघाडयं देइ, देंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३०॥

जे भिक्खू ओसन्नस्स संघाडयं पडिच्छइ, पडिच्छंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३१॥

जे भिक्खू कुसीलस्स संघाडयं देइ, देंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३२॥

जे भिक्खू कुसीलस्स संघाडयं पडिच्छइ, पडिच्छंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३३॥

जे भिक्खू नितियस्स संघाडयं देइ, देंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३४॥

जे भिक्खू नितियस्स संघाडयं पडिच्छइ, पडिच्छंतं वा सातिज्जति॥सू०॥३५॥

जे भिक्खू संसत्तस्स संघाडयं देइ, देंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३६॥

जे भिक्खू संसत्तस्स संघाडयं पडिच्छइ, पडिच्छंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३७॥

णाण - दंसण - चरित्ताण पासे ठितो पासत्थो, ओसन्नदोसो उस्सन्नो, उयो वा संजमो तम्मि सुण्णो उस्सण्णो, कुच्छियसीलो कुसीलो, बहुदोसो संसत्तो, दव्वाइए अमुयत्तो णितिओ, एतेसिं संघाडयं देति पडिच्छति वा तस्स मासलहुं ।

पासत्थोसण्णाणं, कुसील-संसत्त-नितियवासीणं ।
जे भिक्खू संघाडं, दिज्जा अहवा पडिच्छेज्जा ॥१८२८॥
सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त-विराधणं तहा दुविधं ।
पावति जम्हा तेणं, णो दिज्जा णो पडिच्छेज्जा ॥१८२६॥

"तेणं" ति संघाडएण ॥१८२६॥

---

[1] मृतं ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इमा चारित्तविराहणा –

अविसुद्धस्स तु गहणे, आवज्जण अगहिते य अहिगरणं ।
अप्पच्चओ गिहीणं, किं णु हु धम्मो दुहाऽऽदिट्ठो ॥१८३०॥

साहू तेण संघाडएण समं हिंडंतो जेण दोसेणासुद्ध गेण्हति तमावज्जति । अह साहू ण गेण्हति तो पासत्थस्स अचियत्तं, कलहं वा करेति । साहुणा पडिसिद्धे पासत्थेण गहिते जति साहू तुसिणीओ अच्छति एत्थ अणुमतीदोसो भवति । अपच्चओ गिहीणं भवति, इमं च भणिज्जा – किं तित्थकरेण दुविधो धम्मो कहितो ? ॥१८३०॥

एवं भणिए –

जति अच्छती तुसिणिओ, भणति त एवं पि देसिओ धम्मो ।
आसातणा सुमहती, सो च्चिय कलहो तु पडिघाते ॥१८३१॥

पासत्थाणुअत्तीए जइ साधू तुसिणिओ अच्छति, अणुमतीं वा करेति, तो सुमहती आसायणा दीहं च संसारं णिव्वत्तेति ।

अहवा – साधू भणति – "ण वट्टति, पासत्थवयणं च पडिघाएति", ताहे पासत्थो चिंतेति मं ओभासेति, सो चेव कलहो ॥१८३१॥

पासत्थाइया इमेण दोसे परिहरंति –

पासत्थोसण्णाणं, कुसील-संसत्त-णितियवासीणं ।
उग्गम उप्पादण एसणाए बातालमवराधा ॥१८३२॥

अहाच्छंदो अहा से अप्पणो छंदो अभिप्पाओ तहा पन्नवेति – उग्गमदोसा सोलस, उप्पादणा दोसा सोलस, दस एसणा दोसा ॥१८३२॥

संविग्गा पुण इमेण विधिणा परिहरंति –

उग्गम उप्पायण एसणाए तिण्हं पि तिकरणविसोधी ।
पासत्थे सच्छंदे कुसीलणितिए वि एमेव ॥१८३३॥

तिण्हं त्ति आहार उवहि सेज्जा, तिण्णि कारणा तिकारणा, तेहिं सुद्धं तिकरणसुद्धं ॥१८३३॥

एयस्स पुव्वद्धस्स इमा वक्खा –

मणउग्गमआहारादीया तिया तिण्णि तिकरणविसुद्धा ।
एक्कासीती भंगा, सीलंगगमेण णेतव्वा ॥१८३४॥

आहारउग्गमेणं, अविसुद्धं ण गेण्हे ण वि य गेण्हावे ।
ण वि गेण्हंतणुजाणे, एवं वायाए काएणं ॥१८३५॥

एमेव णव विकप्पा, उप्पातण एसणाए णव चेव ।
एए तिण्णि उ नवया, सगवीसाहारे भंगा तु ॥१८३६॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

एमेवोवधिसेज्जा, एक्केक्क सत्तवीस भंगा तु ।
एते तिण्णि वि मिलिता, एक्कासीती भवे भंगा ॥१८३७॥

मणाति - तियं । उग्गमाति - तियं, आहाराति - तियं, एते तिण्णि तिया तिकरणविसुद्धा कायव्वा ।

इमेण एक्कासीति भंगा - कायव्वा ।

आहारोवहिंसेज्जा एयस्स हेट्ठा उग्गमाति - तियं ।

एयस्स वि हेट्ठा मणाति - तियं ।

एयस्स वि हेट्ठा करणं - तियं ।

इमं च उच्चारणं

आहारं उग्गमेण असुद्धं मणेण ण गेण्हति, ण गेण्हावेति, गेण्हंतं णाणुमोयति ।

एते मणेण तिण्णि, वायाते तिण्णि, काएण वि तिण्णि । एते णव उग्गमेण लद्धा ।

उप्पादणाए वि णव । एसणाए वि णव । एते सत्तावीसं आहारे ।

उवकरणे वि सत्तावीसं । सेज्जाए वि सत्तावीसं । सव्वे एक्कासीति ।

जहा एते वायालीसं अवराहे एक्कासीतीए परिहरति, एवं पासत्थे अहाछंदे कुसीले संसत्ते णितिए, अविसद्दाओ ओसण्णे, एतेसिं संघाडगं तिकरणविसोहीए ण देज्जा, ण पडिच्छेज्जा, एक्कासीतीए वा भंगविकप्पेहिं परिहरेज्जा ॥१८३७॥

एताइं सोहितो, चरणं सोहेति संसओ नत्थि ।
एतेहिं असुद्धेहिं, चरित्तभेदं वियाण हि ॥१८३८॥

एते आहारातीए एक्कासीतीए भंगेहिं सोधयंतो चरित्तं सोहेति ॥१८३८॥

एवं अत्थेण पडिसिद्धे पासत्थत्तणे, जा तेहिं सह संसग्गी सा पडिसिज्झति –

पडिसेधे पडिसेहो, असंविग्गे दाण माति-तिक्खुत्तो ।
अविसुद्धे चतुगुरुगा, दूरे साधारणं काउं ॥१८३९॥
पासत्थादि-कुसीले, पडिसिद्धे जा तु तेहिं संसग्गी ।
पडिसिज्झति एसो खलु, पडिसेहे होति पडिसेहो ॥१८४०॥

पासत्थेण ण भवियव्वं एस पडिसेहो । सेसं कंठं ।

"[1]असंविग्गे दाणं" ति अस्य व्याख्या –

दाणाई-संसग्गी, सइं कयपडिसिद्धे लहुय आउट्टे ।
सम्भावति आउट्टे, असुद्धगुरुगो उ तेण परं ॥१८४१॥

जति पासत्थातियाणं संघाडगस्स वत्थातियाण वा दाणं करेति एस संसग्गी । सइं एक्कसि संसग्गिं करेति, पडिसिद्धो पचोइओ आउट्टो, मासलहुं से पच्छित्तं, सम्भावति आउट्टेति, एवं बितियवाराए त्रि

१ गा० १८३९ ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मासलहुं, ततियवारायए वि आउट्टस्स मासलहुं, तेण परं चउत्थवाराए णियमा असुद्धे त्ति मायावी, आउट्टस्स मासगुरुं ॥१८४०॥

"[1]माति तिक्खुत्तो" त्ति अस्य व्याख्या –

तिक्खुत्तो तिण्णि मासा, आउट्टंते गुरू उ तेण परं ।
अविसुद्धं तं वीसुं, करेंति जो भुंजते गुरुगा ॥१८४१॥

तिण्णि वारा ति-खुत्तो, तिण्णि वारा आउट्टंतस्स तिण्णि मासलहुं, तिण्हं वाराणं परेणं तेण परं, चउत्थवाराए णियमा मायी आउट्टे मायाणिप्फण्णं मासगुरुं ।

"[2]अविसुद्धे चउगुरुगा" अस्य व्याख्या – "अविसुद्धं" गाहद्धं । पासत्थ-संसग्गीकारी जति आलोयणं ण [3]पडिच्छिग्रो अविसुद्धो, तं अणाउट्टंतं वीसुं करेति वीसुं भोगमित्यर्थः । जो तं अण्णो साधू संभुज्जति तस्स चउगुरुं ॥१८४२॥

चोदग आह – कम्हा पढम-बितिय-ततियवारासु मासलहुं, चउत्थवाराए मासगुरुं ?

आयरियो आह –

सति दो तिसिय अमादी, ततिया सेवीतु णियम सो मायी ।
सुद्धस्स होति चरणं, मायासहिते चरणभेदा ॥१८४३॥

सइं पढमवारा, दो बितिय वारा, ति ततियवारा, सिता माती तिसिता सेविउं जाव जति अमाती तो मासलहुं, अह माती तो मासगुरुं । तेण परं णियमा माती तेण मासगुरुं । पच्छद्धं कंठं ॥१८४३॥

"[4]दूरे साधारणं काउं" ति अस्य व्याख्या –

समणुण्णेसु विदेसं, गतेसु अण्णाऽऽगता तहिं पच्छा ।
ते वि तहिं गंतुमणा, पुच्छंति तहिं मणुण्णे तु ॥१८४४॥

कयाइ संभोतिया साहू विदेसं गता, अण्णे य संभोतिया अण्णाम्रो विदेसाम्रो तं चेव गच्छम गता, जे ते बिदेसं गता ते तेहिं भ्रागंतुएहिं ण दिट्ठा, ते वि आगंतुगा तं चेव देसं गंतुकामा पुच्छंति, अत्थि केयी तहिं अस्माकं संभोइया ? ॥१८४४॥

एवं पुच्छंते –

अत्थि त्ति होइ लहुओ, कयाइ ओसण्ण भुंजणे दोसा ।
णत्थि ति लहुओ भंडण, ण खेत्तकहणं ण पाहण्णं ॥१८४५॥

आयरितो जइ भणति अत्थि तो मासलहुं, "[5]कताति ते ओसण्णो भूता होज्ज, ताहे गुरुवयणाम्रो संभुज्जमाणा ओसण्णसंभुत्तदोसे पावेज्ज । अह वि गुरु भणति णत्थि तह वि मासलहुं, यतः गुरुवयणाम्रो तेहिं सद्धि संभोगं ण करेंति, ताण य अपत्तियं, असंखडदोसा, ण य मास-कप्पजोगे खेत्ते कहेंति, णेव पाहुण्णं करेंति ।

१ गा० १८३६ । २ गा० १८३६ । ३ पडिच्छिम्रो प्रतीष्टः । ४ गा० १८३६ । ५ कदाचित् ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जम्हा एते दोसा तम्हा आयरिएणं इमं भणियव्वं –

आसि तदा समणुण्णा, भुंजध दव्वादिएहि पेहित्ता।
एवं भंडणदोसा, ण होंति अमणुण्णदोसा य ॥१८४६॥

दव्व-खेत्त-काल-भावेहिं पडिलेहेत्ता भुंजेज्जह, एवं साधारणे सव्वदोसा परिहरिया भवंति ॥१८४६॥

कारणा देज्ज वा पडिच्छेज्ज वा –

असिवे ओमोयरिए, रायदुट्ठे भए व गेलण्णे।
अद्धाण रोधए वा, देज्जा अधवा पडिच्छेज्जा ॥१८४७॥

असिवे कारणे एगागी, एगाणियस्स बहुं दोस-गुणं जाणित्ता पासत्थ-संघाडगं पडिच्छति। पासत्थस्स वा संघाडगो भवति, अफव्वंतो रायदुट्ठे रायवल्लभेण समाणं ण घेप्पति, भए बितिओ सहाओ भवति, गेलण्णे पडियरगं, अद्धाणे सहाओ, रोधणिग्गमणट्ठा, एतेहिं कारणेहिं सव्वत्थ पणगादि-जयणाए जाहे मासलहुं पत्तो ताहे देति वा पडिच्छति वा ॥१८४७॥

जे भिक्खू उदउल्लेण वा ससिणिद्धेण वा हत्थेण वा दव्वीए वा भायणेण वा, असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिग्गाहेति, पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३८॥

जे भिक्खू ससरक्खेण वा [1]मट्टिया-संसट्ठेण वा ऊसा-संसट्ठेण वा लोणिय-संसट्ठेण वा हरियाल-संसट्ठेण वा मणोसिला-संसट्ठेण वा वण्णिय-संसट्ठेण वा गेरुय-संसट्ठेण वा सेडिय-संसट्ठेण वा सोरट्ठिय-संसट्ठेण वा हिंगुल-संसट्ठेण वा अंजण-संसट्ठेण वा लोद्ध-संसट्ठेण वा कुक्कुस-संसट्ठेण वा पिट्ठ-संसट्ठेण वा कंतव-संसट्ठेण वा कंदमूल-संसट्ठेण वा सिंगबेर संसट्ठेण वा पुप्फ-संसट्ठेण वा उक्कुट्ठ-संसट्ठेण वा असंसट्ठेण वा हत्थेण वा दव्वीए वा भायणेण वा असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिग्गाहेति, पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३९॥

गिहिणा सचित्तोदगेण अप्पणट्ठा धोयं हत्थादि, अपरिणयं उदउल्लं भण्णति। पुढविमओ मत्तओ। कंसमयं भायणं। अंजणमिति सोवीरयं रसंजणं वा। ते पुढविपरिणामा वण्णिया, जेण सुवण्णं वणिज्जति। सोरट्ठिया तुवरि मट्टिया भण्णति। तंदुलपिट्ठं आमं असत्योवहतं। तंदुलाण कुक्कुसा। सचित्तवणस्सती–चुण्णो [2]ओक्कुट्ठो भण्णति। असंसट्ठं अणुवलित्तं।

उदउल्ल मट्टिया वा, ऊसगते चेव होति बोधव्वे।
हरिताले हिंगुलए, मणोसिला अंजणे लोणे ॥१८४८॥

---

१ अत्रोक्तानि कतिपयपदानि भाष्यचूर्ण्योर्न व्याख्यातानि। २ कुट्टितवनस्पतिचूर्णः।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

गेरुय वण्णिय सेडिय, सोरट्ठिय पिट्ठ कुक्कुसकते य ।
उक्कट्ठमसंसट्ठे, णेतव्वे आणुपुव्वीए ॥१८४६॥
एत्तो एगतरेणं, हत्थेणं दव्विभायणेणं वा ।
जे भिक्खू असणादी पडिच्छते आणमादीणि ॥१८५०॥
उदउल्लादीएसु, हत्थे मत्ते य होति चतुभंगो ।
पुढविआउवणस्सति, मीसे संयोगपच्छित्तं ॥१८५१॥

हत्थे उदउल्ले, मत्ते उदउल्ले, ।१। हत्थे उदउल्ले नो मत्ते ।२।
नो हत्थे, मत्ते ।३। नो हत्थे नो मत्ते ।४।
एवं पुढवादिसु चउभंगो ।
एते चउरो भंगा पुढवी - आउ - वणस्सतीसु संभवंति, नो सेसकाएसु ।
मीसेसु वि चउभंगा कायव्वा । "संजोगपच्छित्तं" ति पढमभगे दो मासलहुं, सेसेसु एक्केक्कं । चरिमो सुद्धो ।
अहवा – 'मीसे संजोगपच्छित्तं' ति सचित्तआउणा उदउल्लो हत्थो, मीसपुढवीकायगतो मत्तो । एत्थ जं पच्छित्तं तं संजोगपच्छित्तं भवति । एवं सर्वत्र योज्यम् ॥१८५१॥
असंसट्ठे इमं कारणं –

मा किर पच्छाकम्मं, होज्ज असंसट्ठगं तओ वज्जं ।
कर-मत्तेहिं तु तम्हा, संसट्ठेहिं भवे गहणं ॥१८५२॥

कारणे गहणं –

असिवे ओमोयरिए, रायदुट्ठे भए व गेलण्णे ।
अद्धाण रोधए वा, जतणा गहणं तु गीतत्थे ॥१८५३॥

"जयणाए गहण" ति जया पणगपरिहाणीए मासलहुं पत्तो ततो गेण्हति । १८५३॥

जे भिक्खू गामारक्खियं अत्तीकरेइ; अत्तीकरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४०॥
जे भिक्खू गामारक्खियं अच्चीकरेइ, अच्चीकरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४१॥
जे भिक्खू गामारक्खियं अत्थीकरेइ, अत्थीकरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४२॥
जे भिक्खू सीमारक्खियं अत्तीकरेइ, अत्तीकरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४३॥
जे भिक्खू सीमारक्खियं अच्चीकरेइ, अच्चीकरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४४॥
जे भिक्खू सीमारक्खियं अत्थीकरेइ, अत्थीकरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४५॥
जे भिक्खू रण्णारक्खियं अत्तीकरेइ, अत्तीकरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४६॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जे भिक्खू रण्णारक्खियं अच्चीकरेइ, अच्चीकरेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।४७।।

जे भिक्खू रण्णारक्खियं अत्थीकरेइ, अत्थीकरेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।४८।।

एवं पण्णरस सुत्ता उच्चारेयव्वा, अर्थः पूर्ववत् ।

अत्तीकरणादीसु, रायादीणं तु जो गमो भणिओ ।
सो चेव णिरवसेसो, गामादारक्खिमादीसु ।।१८५४।।

जो गमो भणितो इहेव उद्देसगे आदिसुत्तेसु ।।१८५३।।

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स पाए आमज्जेज्ज वा पमज्जेज्ज वा,
आमज्जंतं वा पमज्जंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।४९।।

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स पाए संबाहेज्ज वा पलिमद्देज्ज वा
संबाहेंतं वा पलिमद्देंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।५०।।

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स पाए तेल्लेण वा घएण वा वसाए वा
णवणीएण वा मक्खेज्ज वा भिलिंगेज्ज वा
मक्खेंतं वा भिलिंगेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।५१।।

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स पाए लोद्धेण वा कक्केण वा उल्लोलेज्ज वा
उव्वट्टेज्ज वा, उल्लोलेंतं वा उव्वट्टेंतं वा सातिज्जति।।सू०।।सू०।।५२।।

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स पाए सीओदग-वियडेण वा उसिणोदग-वियडेण वा
उच्छोलेज्ज वा पधोएज्ज वा,
उच्छोलेंतं वा पधोएंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।५३।।

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स पाए फुमेज्ज वा रएज्ज वा,
फुमेंतं वा रएंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।५४।।

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स कायं आमज्जेज्ज वा पमज्जेज्ज वा,
आमज्जंतं वा पमज्जंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।५५।।

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स कायं संवाहेज्ज वा पलिमद्देज्ज वा
संवाहेंतं वा पलिमद्देंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।५६।।

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स कायं तेल्लेण वा घएण वा वसाए वा णवणीएण वा
मक्खेज्ज वा भिलिंगेज्ज वा
मक्खेंतं वा भिलिंगेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।५७।।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स कायं लोद्धेण वा कक्केण वा उल्लोलेज्ज वा
उव्वट्टेज्ज वा, उल्लोलेंतं वा उव्वट्टेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५८॥

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स कायं सीओदग-वियडेण वा उसिणोदग-वियडेण वा
उच्छोलेज्ज वा पधोएज्ज वा
उच्छोलेंतं वा पधोएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५९॥

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स कायं फुमेज्ज वा रएज्ज वा,
फुमेंतं वा रएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६०॥

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स कायंसि वणं आमज्जेज्ज वा पमज्जेज्ज वा,
आमज्जंतं वा पमज्जंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६१॥

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स कायंसि वणं संबाहेज्ज वा पलिमद्देज्ज वा,
संबाहेंतं वा पलिमद्दंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६२॥

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स कायंसि वणं तेल्लेण वा घएण वा वसाए वा
णवणीएण वा मक्खेज्ज वा भिलिंगेज्ज वा,
मक्खेंतं वा भिलिंगेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६३॥

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स कायंसि वणं लोद्धेण वा कक्केण वा उल्लोलेज्ज वा
उव्वट्टेज्ज वा, उल्लोलेंतं वा उवट्टेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६४॥

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स कायंसि वणं सीओदग-वियडेण वा उसिणोदग-वियडेण वा
उच्छोलेज्ज वा पधोएज्ज वा
उच्छोलेंतं वा पधोएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६५॥

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स कायंसि वणं फुमेज्ज वा रएज्ज वा,
फुमेंतं वा रएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६६॥

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स कायंसि गंडं वा पिलगं वा अरइयं वा असियं वा
भगंदलं वा अन्नयरेणं तिक्खेणं सत्थजाएणं अच्छिंदेज्ज वा
विच्छिंदेज्ज वा, अच्छिंदेंतं वा विच्छिंदेंतं वा सातिज्जति॥सू०॥६७॥

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स कायंसि गंडं वा पिलगं वा अरइयं वा असियं वा
भगंदलं वा अन्नयरेणं तिक्खेणं सत्थजाएणं अच्छिंदित्ता
विच्छिंदित्ता पूयं वा सोणियं वा नीहरेज्ज वा विसोहेज्ज वा,
नीहरेंतं वा विसोहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६८॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स कायंसि गंडं वा पिलगं वा अरइयं वा असियं वा भगंदलं वा अन्नयरेणं तिक्खेणं सत्थजाएणं अच्छिंदित्ता विच्छिंदित्ता नीहरित्ता विसोहेत्ता सीओदग-वियडेण वा उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा पधोएज्ज वा उच्छोलेंतं वा पधोएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६९॥

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स कायंसि गंडं वा पिलगं वा अरइयं वा असियं वा भगंदलं वा अन्नयरेणं तिक्खेणं सत्थजाएणं अच्छिंदित्ता - विच्छिंदित्ता नीहरित्ता विसोहेत्ता उच्छोलेत्ता पधोएत्ता अन्नयरेणं आलेवणजाएणं आलिंपेज्ज वा विलिंपेज्ज वा आलिंपेंतं वा विलिंपेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७०॥

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स कायंसि गंडं वा पिलगं वा अरइयं वा असियं वा भगंदलं वा अन्नयरेणं तिक्खेणं सत्थजाएणं अच्छिंदित्ता-विच्छिंदित्ता नीहरित्ता विसोहेत्ता उच्छोल्लेत्ता पधोएत्ता आलिंपित्ता विलिंपित्ता तेल्लेण वा घएण वा वसाए वा णवणीएण वा अब्भंगेज्ज वा मक्खेज्ज वा, अब्भंगेंतं वा मक्खेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७१॥

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स कायंसि गंडं वा पिलगं वा अरइयं वा असियं वा भगंदलं वा अन्नयरेणं तिक्खेणं सत्थजाएणं अच्छिंदित्ता विच्छिंदित्ता नीहरित्ता विसोहेत्ता उच्छोलित्ता पधोइत्ता आलिंपित्ता विलिंपित्ता अब्भंगेत्ता मक्खेत्ता अन्नयरेण धूवणजाएण धूवेज्ज वा पधूवेज्ज वा, धूवंतं वा पधूवंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७२॥

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स पालु-किमियं वा कुच्छि-किमियं वा अंगुली निवेसिय निवेसिय नीहरइ, नीहरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७३॥

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स दीहाओ नह-सीहाओ दीहाइं रोमाइं कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा, कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७४॥

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स दीहाइं जंघ-रोमाइं कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू० ।७५॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स दीहाइं कक्ख-रोमाइं कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा,
कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७६॥

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स दीहाइं मंसु-रोमाइं कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा,
कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७७॥

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स दीहाइं वत्थि-रोमाइं कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा,
कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७८॥

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स दीहाइं चक्खु-रोमाइं कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा,
कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७९॥

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स दंते आघंसेज्ज वा पघंसेज्ज वा,
आघंसंतं वा पघंसंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥८०॥

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स दंते उच्छोलेज्ज वा पधोएज्ज वा,
उच्छोलेंतं वा पधोएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥८१॥

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स दंते फुमेज्ज वा रएज्ज वा,
फुमेंतं वा रएंतं वा सातिज्जिति ॥सू०॥८२॥

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स उट्ठे आमज्जेज्ज वा पमज्जेज्ज वा,
आमज्जंतं वा पमज्जंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥८३॥

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स उट्ठे संबाहेज्ज वा पलिमद्देज्ज वा,
संबाहेंतं वा पलिमद्देंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥८४॥

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स उट्ठे तेल्लेण वा घएण वा वसाए वा णवणीएण वा
मक्खेज्ज वा भिलिंगेज्ज वा,
मक्खेंतं वा भिलिंगेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥८५॥

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स उट्ठे लोद्धेण वा कक्केण वा उल्लोलेज्ज वा
उव्वट्टेज्ज वा, उल्लोलेंतं वा उव्वट्टंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥८६॥

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स उट्ठे सीओदग-वियडेण वा उसिणोदग-वियडेण वा,
उच्छोल्लेज्ज वा पधोएज्ज वा,
उच्छोल्लेंतं वा पधोएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥८७॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स उट्ठे फुमेज्ज वा रएज्ज वा,
फुमेंतं वा रएंतं वा सातिज्जिति ।।सू०।।८८।।

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स दीहाइं उत्तरोट्ठाइं कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा
कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।८९।।

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स दीहाइं अच्छिपत्ताइं कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा
कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।९०।।

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स अच्छीणि आमज्जेज वा पमज्जेज वा
आमज्जंतं वा पमज्जंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।९१।।

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स अच्छीणि संबाहेज्ज वा पलिमद्देज्ज वा
संबाहेंतं वा पलिमद्देंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।९२।।

जे भिक्खू अण्णमण्स्स अच्छीणि तेल्लेण वा घएण वा वसाए वा णवणीएण वा
मक्खेज्ज वा भिलिंगेज्ज वा
मक्खेंतं वा भिलिंगेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।९३।।

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स अच्छीणि लोद्धेण वा कक्केण वा उल्लोलेज्ज वा
उव्वट्टेज्ज वा, उल्लोलंतं वा उव्वट्टेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।९४।।

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स अच्छीणि सीओदग-वियडेण वा उसिणोदग-वियडेण वा
उच्छोल्लेज्ज वा पधोएज्ज वा,
उच्छोलेंतं वा पधोएंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।९५।।

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स अच्छीणि फुमेज्ज वा रएज्ज वा,
फुमेंतं वा रएंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।९६।।

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स दीहाइं भुमग-रोमाइं कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा,
कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।९७।।

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स दीहाइं पास-रोमाइं कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा,
कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।९८।।

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स अच्छि-मलं वा कण्ण-मलं वा दंत-मलं वा
नह-मलं वा नीहरेज्ज वा विसोहेज्ज वा
नीहरेंतं वा विसोहेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।९९।।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जे भिक्खू अण्णमण्णस्स कायाओ सेयं वा जल्लं वा पंकं वा मलं वा
नीहरेज्ज वा विसोहेज्ज वा,
नीहरेंतं वा विसोहेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।१००।।

जे भिक्खू गामाणुगामियं दूइज्जमाणे अण्णमण्णस्स सीसदुवारियं करेइ
करेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।१०१।।

इत्यादि [1]एक्कतालीसं सुत्ता उच्चारेयव्वा जाव अण्णमण्णस्स सीसदुवारियं करेति इत्यादि अर्थः पूर्ववत् ।

पादादी तु पमज्जण, सीसदुवारादि जो गमो ततिए ।
अण्णोऽण्णस्स तु करणे, सो चेव गमो चउत्थम्मि ।।१८५५।।

तृतीयोद्देशकगमेन नेयं ।।१८५५।।

जे भिक्खू साणुप्पए उच्चारपासवणभूमिं ण पडिलेहेति,
ण पडिलेहेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।१०२।।

साणुप्पओ णाम चउभागावसेसचरिमाए उच्चारपासवणभूमीओ पडिलेहियव्वाओ त्ति, ततो कालस्स पडिक्कमति, ततो पडिलेहेति, एस साणुप्पओ जति ण पडिलेहेति तो मासलहुं, आणादिया दोसा ।

पासवणुच्चाराणं, जो भूमी अणुपदे ण पडिलेहे ।
सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त-विराधणं पावे ।।१८५६।।

अपडिलेहिते इमे दोसा –

छक्कायाण विराधण, अहि विच्छुअ सण्ण-मुत्तमादीसु ।
वोसिरण-णिरोधेसू, दोसा खलु संजमायाए ।।१८५७।।

अपडिलेहिते जति वोसिरति ततो दव्वओ छक्कायविराहणा संभवति । भावतो पुण विराधिता एस संजमविराधणा । बिलाति संभवे अपडिलेहिते अहिविच्छुगादिणा खज्जति आयविराहणा । मुत्तेण वा पुरीसेण वा आदिसद्दातो वंतपित्तादिणा पायं लेवाडेज्ज, ततो उवकरणविणासो वा, सेहविप्परिणामो वा । अपडिलेहियं वा थंडिलं ति णिरोहं करोति वोसिरति, एवं च "मुत्तणिरोहे चक्खुं, वच्चणिरोहे जीवियं" एत्थ वि आयविराहणा ।।१८५७।।

जम्हा एते दोसा तम्हा –

चउभागसेसाए, चरिमाए पोरिसीए तम्हा तु ।
पयतो पडिलेहिज्जा, पासवणुच्चारमादीणं ।।१८५८।।

चरिमा पच्छिमा, पयतो प्रयत्नवान् ।।१८५८।।

---

१ किन्तु सूत्र-गणनया ५३ संख्याकानि सूत्राणि भवन्ति ?

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

भवे कारणं ण पडिलेहेज्जा वि –

गेलण्ण रायदुट्ठे, अद्धाणे संभमे भएगतरे ।
गामाणुगामवियले, अणुप्पत्ते वा ण पडिलेहे ॥१८५६॥

गिलाणो ण पडिलेहेइ, अगिलाणो वि गिलाणकज्जे आउलो ण पडिलेहेति, रायदुट्ठेण वा णिग्गच्छति, अद्धाणट्ठो वा सत्थट्ठाणं वियाले पत्तो, अगणिमाति-संभमे ण वा पडिलेहेति, मासकप्पविहारगामाओ गच्छतो अण्णो अणुकूलो गामो तं वियाले पत्तो । एतेहिं कारणेहिं अपडिलेहेंतो सुद्धो ॥१८५६॥

जे भिक्खू तओ उच्चार-पासवण-भूमीओ ण पडिलेहेइ,
ण पडिलेहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१०३॥

ततो-त्र्यं सूचनात् सूत्रमिति द्वादशविकल्पप्रदर्शनार्थं त्रयो ग्रहणं अपडिलेहंतस्स मासलहु , आणातिया य दोसा ।

पासवणुच्चारादीण भूमीओ जो तओ (उ) पडिलेहे ।
अंतो वा बाहिं वा, अहियासिं वा अणहियासिं ॥१८६०॥

अंतो णिवेसणस्स काइभूमीओ अणहियासियाओ तिन्नि – आसन्न मज्झ दूरे । अहियासियाओ वि तिन्नि-आसन्न मज्झ दूरे । एया काइयभूमीओ। बहिं णिवेसणस्स एवं चेव छ काइभूमीओ एवं पासवणे बारस, सण्णाभूमीओ वि बारस, एवं च ताओ सव्वाओ चउव्वीसं ।

किं णिमित्तं तिण्णि तिण्णि पडिलेहिज्जंति ? कयाति एक्कस्स वाघातो भवति तो बितियादिसु परिट्ठविज्जति । पासवणे तयो अपेहणे चेल्लगउट्टदिट्ठंतो भाणियव्वो । अणधियासियकारणं कोवि अतीव उव्वाहितो जाव दूरं वच्चति ताव आयविराहणा भवे तेण आसण्णे पेहा ॥१८६०॥

जो एया ण पडिलेहेति तस्स आणादिया दोसा ।

सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त-विराधणं तहा दुविहं ।
पावति जम्हा तेणं, चउवीसं भूमि-पडिलेहे ॥१८६१॥

बितिय पदगाहा –

छक्कायाण विराहण, अहि विच्छुग सण्ण-मुत्तमादीसु ।
वोसिरण निरोहेसु दोसा खलु संजमाताए ॥१८६२॥

गेलण्ण रायदुट्ठे, अद्धाणे संभमे भएगतरे ।
गामाणुगामवियले, अणुप्पते वा ण पडिलेहे ॥१८६३॥

जे भिक्खू खुड्डागंसि थंडिलंसि उच्चार-पासवणं परिट्ठवेइ,
परिट्ठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१०४॥

रयणिपमाणातो जं आरतो तं खुड्डं, तत्थ जो वोसिरति तस्स मासलहुं आणादिया य दोसा ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वित्थारायामेणं, थंडिल्लं जं भवे रतणि-मित्तं ।
चतुरंगुलोवगाढं, जहण्णयं तं तु वित्थिण्णं ॥१८६४॥

वित्थारो पोहच्चं, आयामो दिग्घत्तणं, रयणी हत्थो तम्माणे ठितं रयणीमेत्तं। जस्स थंडिल्लस्स चत्तारि अंगुला अहे अचित्ता तं चउरंगुलोवगाढं। एयप्पमाणं जहण्णं वित्थिण्णं ॥१८६४॥

एत्तो हीणतरागं, खुड्डागं तं तु होति णातव्वं ।
अतिरेगतरं एत्तो, वित्थिण्णं तं तु णायव्वं ॥१८६५॥

सव्वुक्कोसं वित्थिण्णं वारसजोयणं, तं च जत्थ चक्कवट्टिखंधावारो ठिओ ।

पासवणुच्चारं वा, खुड्डाए थंडिलम्मि जो भिक्खू ।
जति वोसिरती पावइ, आणा अणवत्थमादीणि ॥१८६६॥

छक्कायाण विराधण, उभएणं [1]पावणा तसाणं च ।
जीवित-चक्खु-विणासो, उभय-णिरोहेण खुड्डाए ॥१८६७॥

आसण्णे छक्काया ते उभएणं काइयसण्णाए प्लावेंति, तसाणं च प्लवणा, खुड्डयं काउं ण वोसिरति तेण जीविय-चक्खु-विणासो भवति ॥१८६७॥

बितियपदं –

थंडिल्ल असति अद्धाण रोधए संभमे भयासण्णे ।
दुब्बलगहणि गिलाणे, वोसिरणं होति जतणाए ॥१८६८॥

असति प्पमाणजुत्तस्स थंडिलस्स, चोरसावयभया पमाणजुत्तं ण गच्छति, "आसण्णे" त्ति - अणहियासओ प्पमाणजुत्तं गंतुं ण सक्कति, दुब्बलगहणि वा ण तरति गंतुं । इमा जयणा – एत्थ सण्णं वोसिरति कातियं अण्णत्थ, अह काइयं पि आगच्छति ताहे कातियं मत्तए पडिच्छति ॥१८६८॥

जे भिक्खू उचारपासवणं अविधीए परिट्ठवेइ,
परिट्ठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१०५॥

थंडिलसामायारीं ण करेति एसा अविधी, तीए वोसिरति तस्स मासलहुं ।

आणादिया य दोसा –

पासवणुच्चारं वा, जो भिक्खू वोसिरेज्ज अविधीए ।
सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त-विराधणं पावे ॥१८६९॥

इमा विही –

[1]पडिलेहणा दिसाणं, पायाण [2]पमज्जणा य कायदुवे ।
[3]भयणा [4]छाया दिसे [5]ऽभिग्गहे य जतणा इमा तत्थ ॥१८७०॥

---

१ प्लावना ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सागारियसंरक्खणट्ठा उड्डमहोतिरियं च दिसावलोगो कायव्वो, ग्रह ण करेति तो दवग्रप्पकलुसा-दिएहिं उड्डाहो भवति, पढमं पदं।

जत्थ वोसिरिउकामो तट्ठाणस्स पासे संडासगं पादे य पमज्जति, ग्रह ण पमज्जति तो रयादिविणासणा भवति ग्रसमायारी य, च सद्दातो थंडिलं च, बितियपदं।

"कायदुवे भयण" त्ति भयणासद्दो उभयदीपकः, इह कायदुवे भंगभयणा कज्जति –

जति पडिलेहेति, ण पमज्जति। एत्थ थावरे रक्खति, ण तसे।

ग्रध ण पडिलेहेति, पमज्जति। एत्थ ण थावरे, तसे रक्खति।

पडिलेहेति, पमज्जति। एत्थ दो वि काये रक्खति।

ण पडिलेहेति, ण पमज्जति। एत्थ दो वि न रक्खति।

ग्रधवा इमा चउव्विह भयणा –

थंडिलं तसपाण-सहितं।१। थंडिलं तसपाण-विरहितं।२।

ग्रथंडिलं तसपाण-विरहितं।३। ग्रथंडिलं तसपाण-सहितं।४।

एवं ततियपयं भयणा ॥१८७०॥

दिसि पवण गाम सूरिय, छायाए पमज्जितूण तिक्खुत्तो।
जस्सुग्गहो त्ति कुज्जा, डगलादि पमज्जणा जतणा ॥१८७१॥

"छाय" त्ति ग्रसंसत्तगहणी उण्हे वोसिरति, संसत्तगहणी छायाए वोसिरति, ग्रह उण्हे वोसिरति तो चउलहुं। एयं चउत्थ पदं। दिसाभिग्गहो – दिवा उत्तराहुत्तो, राग्रो दक्खिणाहुत्तो। ग्रह ग्रण्णतो मुहो बइसइ तो मासलहुं, दिसि-पवण-गाम-सूरियादि य सव्वं ग्रविवरीयं कायव्वं, विवरीए मासलहुं ॥१८७१॥

संका सागारद्दे, गरहमसंसत्त ग्रसति दोसे य।
पंचसु वि पदेसेते, ग्रवरपदा होंति णातव्वा ॥१८७२॥

बितियपदं दिसालोग्रं ण करेज्ज, तत्थ गामे तेणभयं, दिसालोग्रं करेंतो संकिज्जति। एस तेणो चारिग्रो वा। पादे वि ण पमज्जेज्जा, सागारिय त्ति काउं। ग्रद्दमिति ग्राद्रं थंडिलं ण पमज्जति।

ग्रधवा – तं थंडिलं गरिहणिज्जं तेण ण पमज्जति। ग्रसंसत्तगहणी तेण ण छायाए वोसिरति। ग्रसति दोसाणं दिसाभिग्गहणं ण करेज्ज। वट्टियसण्णो डगलगं पि ण गेण्हेज्जा। गाम-सूरियादीण व पिट्ठं देज्जा, जत्थ लोगो दोसं ण गेण्हेति। पंचसु वि पदेसु एते ग्रवरपता भणिता ॥१८७२॥

जे भिक्खू उच्चार-पासवणं परिठवेत्ता न पुंछइ,
न पुंछंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१०६॥

ण पुंछति ण णिड्डुगलेति।

जे भिक्खू उच्चार-पासवणं परिट्ठवेत्ता कट्ठेण वा किलिंचेण वा ग्रंगुलियाए वा सलागाए वा पुंछति, पुंछंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१०७॥

किलिंचो वंसकप्परी, ग्रण्णतरकट्ठघडिया सलागा, तस्स मासलहुं।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उच्चारमायरित्ता, जे भिक्खू ण (य) पुंछती अहिट्ठाणं ।
पुंछेज्ज व अविधीए, सो पावति आणमादीणि ॥१८७३॥

आयरित्ता वोमिरित्ता, अविधी कट्ठातिया बितियसुत्ते ॥१८७३॥

लित्थारणं दवेणं, जुत्तमजुत्तेण पावणा दोसा ।
संजम - आयविराधण, अविधीए पुंछणे दोसा ॥१८७४॥

अणिट्ठगलिते अतीव लेत्थरियं तं दवेण जुत्तेण थोवेणं ति भणियं होति, तेण ण सुज्झति । असुद्धे दिट्ठ उड्डाहो, सेहो वा विप्परिणमेज्ज ।

अह अजुत्तेण बहुणा दवेण धोवति तो प्लावनादि दोसा । एते अपुंछिते दोसा । अविधीपुंछिते इमं पच्छद्धं । लंछिएहिं आयविराहणा, अह जीवकायो त्ति संजमविराहणा य ॥१८७४॥

इमा अविधी –

कट्ठेण किलिंचेण व, पत्त सलागाए अंगुलीए वा ।
एसा अविधी भणिता, डगलगमादी विधी ति-विधा ॥१८७५॥

पत्तं पलासपत्तादि । डगलेण वा, चीरेण वा, अंगुलीए वा, एसा तिविधा विधी । डगला पुण दुविधा – संबद्धा भूमीए होज्जा, असंबद्धा वा होज्जा । जे असंबद्धा ते तिविधा – उक्कोसति । उवला उक्कोस', लेट्ठूमसिणा मज्झिमा, इट्टालं जहण्णं ॥१८७५॥

जम्हा एते दोसा –

तम्हा पुव्वादाणं, कातूणं डगलगाण छड्डेज्जा ।
उत्थाणोसहपाणे, असती व ण कुज्ज आदाणं ॥१८७६॥

आयाणं डगलगादीण, छड्डेज्ज उच्चारं वोसिरिज्जा । बितियपदं गाहापच्छद्धं । उत्थाणं-अतिसारो, ओसहपीतो वा ण गेण्हति, असती वा ण गेण्हति ॥१८७६॥

जे भिक्खू उच्चार-पासवणं परिट्ठवेत्ता णायमति,
णायमंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१०८॥

जे भिक्खू उच्चार-पासवणं परिट्ठवेत्ता तत्थेव आयमति,
आयमंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१०६॥

जे भिक्खू उच्चार-पासवणं परिट्ठवेत्ता दूरे आयमति,
आयमंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥११०॥

तिण्णि सुत्ता उच्चारेयव्वा । उच्चारे वोसिरिज्जमाणे अवस्सं पासवणं भवति त्ति तेण गहितं । पासवणं पुण काउं सागारिए णायमंति जहा उच्चारे । तत्थेव त्ति थंडिले, जत्थ सण्णा वोसिरिया । अविदूरे हत्थसयमाणमेत्ते ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उच्चारं वोसिरित्ता, जे भिक्खू णेव आयमेज्जा हि ।
दूरे वाऽऽसण्णे वा, सो पावति आणमादीणि ।।१८७७।।

आयमणं णिल्लेवणं, आसण्णं तत्थेव थंडिले ।।१८७ ।।

अणायमंते इमे दोसा –

अयसो पवयण-हाणी, विप्परिणामो तहेव य दुगुंछा ।
दोसा अणायमंते, दूरासण्णायमंते य ।।१८७८।।

अयसो – इमे असोइणो त्ति, ण एते णिल्लेवेंति त्ति ।

ण पव्वयंति, अण्णे वि पव्वयंते वारेति, पवयण-हाणी ।

दंसणे चरित्ते वा अब्भुवगमं काउकामस्स विप्परिणामो भवति ।

सेहाण वा मा एतेहिं विट्टलेहिं सह संफासं करेहि, एसा पुच्छा । दूरे वि एते दोसा । आसण्णे वि एते चेव दोसा ।

कहं ? सागारिओ पासति, संजओ सण्णं वोसिरिउं दूरं गतो, सागारिओ वि जोविउं पराभग्गो "ण णिल्लेवितं" ति लोगस्स कहेति । आसण्णे तत्थेव संजतो णिल्लेवेउं गतो, सागारिए आगंतु पलोइयं जाव मुत्तियं देक्खति, एतं से कातियं ति ण णिल्लेवितं, पच्छा लोगस्स कहेति ।

उत्थाणोसहपाणे, दव असतीए व णायमेज्जाहिं ।
थंडिल्लस्स व असती, आसण्णे वा वि दूरे वा ।।१८७९।।

अन्नस्स थंडिलस्स असति तत्थेव णिल्लेवेति, थंडिलट्ठा दूरं गंतुं णिल्लेवेति, सागारिओ पुण वोलावेति ।।१८७९।।

जे भिक्खू उच्चार-पासवणं परिट्ठवेत्ता नावा पूराणं आयमति, आयमंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।१११।।

"नाव" त्ति पसती, ताहिं तिहिं आयमियव्वं ।

अण्णे भणंति –

अंजलि पढमणावापूरं तिहा करेत्ता अवयवे विगिंचति, बितियं णावपूरं तिहा करेत्ता तिण्णि कप्पे करेति सुद्धं, अतो परं जति करेति तो मासलहुं ।

उच्चारमायरित्ता, परेण तिण्हं तु णाव-पूरेणं ।
जे भिक्खू आयमती, सो पावति आणमादीणि ।।१८८०।।

इमे दोसा –

उच्छोलणुप्पिलावण, पडणं तसपाण-तरुगणादीणं ।
कुरुकुयदोसा य पुणो, परेण तिण्हायमंतस्स ।।१८८१।।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

"[1]उच्छोलणा पधोइस्स, दुल्लभा सोग्गति तारिसयस्स" उच्छोलणादोसा भवंति, पिपीलिगादीणं वा पाणाण उप्पिलावणा हवइ, खिल्लरंधे तसा पडंति, तरुगणपत्ताणि वा पुप्फाणि वा फलाणि वा पडंति, आतिग्गहणेणं पुढवि-आऊ-तेउ-वाऊण य, यत्राग्निस्तत्र वायुना भवितव्यमिति कृत्वा, कुरुकयकरणे य पाउस्सत्तं भवति ॥१८७१॥

कारणे अतिरित्तेण वि आयमे –

बितियपद सेह रोधण, हरिसा आगार-सोयवादीसु ।
उत्थाणोसहपाणे, परेण तिण्हायमेज्जासि ॥१८८२॥

जेण वा णिल्लेवं णिग्गंधं भवतीत्यर्थः ॥१८८२॥

जे भिक्खू अपरिहारिएण परिहारियं वदेज्जा – "एहि अज्जो ! तुमं च अहं च एगओ असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिग्गाहेत्ता, तओ पच्छा पत्तेयं पत्तेयं भोक्खामो वा पाहामो वा" जो तं एवं वदति, वदंतं वा सातिज्जति ।

तं सेवमाणे आवज्जति मासियं परिहारट्ठाणं उग्घातियं ॥सू०॥११२॥

पायच्छित्तमणावण्णो अपरिहारिओ, आवण्णो मासाति - जाव - छम्मासियं सो परिहारिओ, बूया - ब्रवीति, अज्ज इति आमंत्रणे, एगतओ संघाडएण भत्तं भोक्खामो, पाणगं पाहामो, उग्घाएति - मासलहुं ।

सीसो भणति - भगवं ? सो किहमाउत्तो आवण्णो ?

आयरिओ आह –

कंटगमादीसु जहा, आदिकडिल्ले तधा जयंतस्स ।
अवसं छलणाऽऽलोयण, ठवणा णाते जुत्ते य वोसग्गे ॥१८८३॥

णाणादि तिगकडिल्लं, उग्गम-उप्पादणेसणा वा वि ।
आहार उवधि सेज्जा, पिंडादि चतुव्विधं वा वि ॥१८८४॥

जहा कंटगाकिण्णे पहे उवउत्तस्सापि कंटगो लग्गति, आदिसद्दातो विसमे आउट्टे वि आगच्छंतो पडति, कयपयत्तो वा णतिपूरेण हरिज्जति, सुसिक्खिओ वि जहा असिणा लंछिज्जति, एवं - कंटगस्थानीयं आइकडिल्लं । तं च उग्गम उप्पादणा एसणा । णाण - दंसण - चरित्ता । एतेसु सुट्ठु वि आउत्तस्स अवस्सं कस्सति छलणा भवति, छलिएण अवस्सं आलोयणा दायव्वा, संघयणातीहिं जुत्तं णाउं ततो से ठवणा ठविज्जति । ततो स साहूण जाणावणट्ठा सव्वेसिं पुरओ णिरुवसग्गणिमित्तं मंगलट्ठं च काउस्सग्गो कीरति ॥१८८४॥

"[2]ठवणा णाते जुत्त" पयाण इमा वक्खा –

ठवणा तू पच्छित्तं, णाते समत्थो य होति गीतो य ।
आवण्णो वा जुत्तो, संघयण-धितीए जुत्तो वा ॥१८८५॥

---

१ दसवैकालिक - चतुर्थाध्ययने । २ गा० १८८३ ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

"ठवणे" त्ति - सव्वसाधूहिं सम.णं पच्छित्तठवणा ठविज्जति, णाते त्ति समत्थो गीयत्थो वा णातो, आवण्णति पच्छितेण जुत्तो, संघयणधितीए वा जुत्तो ॥१८८५॥

आयरिओ काउस्सग्गकरणकाले इमं भणइ –

एस तवं पडिवज्जति, ण किं चि आलवति मा (एनं) आलवहा ।
अत्तट्ठ-चिंतगस्सा, वाघातो भे ण कातव्वो ॥१८८६॥

पडिहारतवं पडिवज्जति ॥१८८६॥

इमे वाघातकारणा –

आलवणं पडिपुच्छण, परियट्टुट्ठाण - वंदणग-मत्ते ।
पडिलेहण संघाडग, भत्तदाण संभुंजणा चेव ॥१८८७॥

"आलवणं" त्ति - आलावो । हे भगवं ! सुत्तत्थं पुच्छति, पुव्वाधीयं परियट्टेति, तेण समकालस्स उट्ठेति वंदणं देति, मत्तगं से देति, उवकरणं से पडिलेहेति, भिक्खं अडंतस्स संघाडगो भवति, भत्तं पाणं वा देति, तेण समाणं एगमंडलीए भुंजति ॥१७८७॥

संघाडगा उ जावं, लहुगो जा उ दसण्ह उ पयाणं ।
लहुगा य भत्तदाणे, संभुंजणे होंतऽणुग्घाता ॥१८८८॥

एतेसिं आलवणाइयाण दसण्हं पदाणं – जाव – संघाडगपतं ताव पारिहारियस्स आलवणाति करेंतस्स अट्ठसु पतेसु मासलहुं । पच्छद्धं कंठं ॥१८८८॥

सुत्तणिवातो एत्थं, णायव्वो आदिमट्ठसु पदेसु ।
एतेसामण्णतरं, सेवंताऽऽणादिणो दोसा ॥१८८९॥

आलवणाती करेंतेण तित्थकराणाइक्कमो, पमत्तं वा देवता छलेज्ज, आतविराहणा ।

अण्णेण वा भणितो – कीस आलवणातीणि करेसि त्ति ? सुट्ठु त्ति भणंते अधिकरणं, एवं चरणभेदो, तम्हा ण करेज्ज । एताणि पदाणि॥१८८९॥

कारणे करेज्जा वि –

विपुलं च अण्णपाणं, दट्ठूणं साधुवज्जणं चेव ।
णाऊण तस्स भावं, संघाडं देंति आयरिया ॥१८९०॥

संखडीए छणूसवेसु वा विउलं भत्तपाणं साधूहि लद्धं, तं दट्ठूण ईसिं तदभिलासो, साधूहिं वज्जितो ऽहं सदुच्चरितेहिं स (अ) चेलओ, एवं आयरिया णाउं संघाडगं देंति ॥१८९०॥

अधवा आयरिया चेव इमं णाउं संघाडगं देंति –

देहस्स तु दोब्बल्लं, भावो ईसिं च तप्पडीबंधो ।
अगिलाइ सोधिकरणेण वा वि पावं पहीणं से ॥१८९१॥

आयरिया अतीव देहदुब्बल्लं दट्ठुं अतिसएण आगारेण वा भावं ईसिं विपुल-भत्ताभिलासिणं णच्चा पावं च से खीणप्पायं ताहे संघाडं देंति ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इमेण विहिणा – आयरिया भणंति –

एज्जाहि अज्जो अमुगघरं, तत्थ य पुव्वगता आयरिया सो पच्छा वच्चति, ताहे से विरूवं रूवं ओगाहिमगादिभत्तं दव्वावेंति । एतेहिं कारणेहिं उवलक्खित्ता, अण्णहा ण देंति ॥१८८९॥

"[1]णाऊण तस्स भावं" ति अस्य व्याख्या –

आगंतु एतरो वा, भावं अतिसेसिओ से जाणिज्जा ।
हेतूहि वा स भावं, जाणित्ता अणतिसेसी वि ॥१८९०॥

"इयरो" त्ति वत्थव्वो, अइसएण हेऊहिं वा स अणतिसती वि भावं णाऊण संघाडगं ददंतीत्यर्थः ॥१८९०॥

कारणाभावे पुण इमं करेंति –

भत्तं वा पाणं वा, ण देंति पारिहारियस्सिमं करेंति ।
कारण उट्ठवणादी, चोदग गोणीए दिट्ठंता ॥१८९३॥

सेसकाले संघाडयं भत्तं वा आणेउं न देंति । इमं पुण करेंति - जाहे खीणो ण तरति उट्ठेउं पडिलेहणं वा काउं ताहे सो भणति उट्ठिज्जामि, निसिज्जामि, भिक्खं हिंडिज्जामि, भंडगं पडिलेहिज्जामि, ताहे अणुपडिहारिओ बाहाए गहाय उट्ठवेति, णिसियावेइ वा, धरेइ वा बाहुं पडिलेहावेति, धरियं वा भिक्खं हिंडावेति, एवं जं जं ण तरति, तं तं से कीरति ।

चोयगो भणति – किं पच्छित्तं ? अवसो व रायदंडो तुब्भ त्ति ? एयावत्थस्स जेग आणेउं ण - दिज्जति ?

एत्थ आयरिओ दिट्ठंतं करेइ – जहा णवपाउसे जा गोणी ण तरति उट्ठेउं तं गोवो उट्ठवेति, अडविं चरणट्ठा णेति, जा ण तरति गंतुं तस्स गिहे आणेउं पयच्छति, एवं परिहारिओ वि जं तरति काउं तं कारविज्जति । जं ण तरति तं किज्जति ॥१८९३॥

इमो गुणो –

एवं तु असढभावो, विरियायारो य होति अणुविचिण्णो ।
भयजणणं सेसाणं, य तवो य सप्पुरिसचरियं च ॥१८९४॥

एवं असढभावो भवति, वीरियं च ण गूहितं भवति, सेससाहूण य भयं जणियं भवति, तवो य कतो, सत्पुरिसचरियं च कतं भवतीति ॥२८९४॥

---

१ गा० १८८८ ।

॥ इति विसेस-णिसीहचुण्णीए चउत्थो उद्देसओ समत्तो ॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पंचम उद्देशकः

इदानीं उद्देसकस्स उद्देसकेन सह संबंधं वक्तुकामो आचार्यः भद्रबाहुस्वामी निर्युक्ति-गाथामाह –

परिहारतवकिलंतो, रुक्खमधिट्ठाणमादिचिंतेंतो ।
अभिघातिमरक्खट्ठा, पलोयए एस संबंधो ॥१८६५॥

चउत्थस्स अंतसुत्ते परिहारतवो भणितो । तेण किलंतो रुक्खस्स अहे ठिओ ठाण-णिसीयणाति करेंतो लउडादिअभिघायातिमरक्खट्ठा उवरि पलोएति। एस संबंधो ॥१८६५॥

जे भिक्खू सचित्त-रुक्ख-मूलंसि ठिच्चा आलोएज्ज वा पलोएज्ज वा आलोएंतं वा पलोएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१॥

सह चित्तेण सचित्तो । रुक् पृथिवी तं खातीति रुक्खो । मूलं रुक्खावग्गहो । तम्मि ठिच्चा आलोयणं सकृत्, अनेकशः प्रलोकनं । एस पंचमउद्देसगे आदिसुत्तस्स संखेवतो अत्थो ।

सच्चित्त-रुक्ख-मूलं, खंधातो जाव रतणिमेत्तं तु ।
तेण परं अच्चित्तं, सुत्तणिवाओ उ सच्चित्ते ॥१८६६॥

जस्स सचित्तरुक्खस्स हत्थिपयप्पमाणो पेहुल्लेण खंधो तस्स सव्वतो जाव रयणिप्पमाणा ताव सचित्ता भूमी, एतं आणासिद्धं सेसं कंठं ॥१८६४॥

रयणिप्पमाणातो अंतो बाहिं वा ।

अहवा – सचित्तं अचित्तं वा –

सपरिग्गहं अपरिग्गहं च एक्केक्कगं भवे दुविधं ।
सपरिग्गहं चतुद्धा, दिव्व-मणुय-तिरिक्ख-मीसं च ॥१८६७॥

सपरिग्गहं अपरिग्गहं वा एक्केक्कं दुविधं । स परिग्गहं चउव्विहं – देवपरिग्गहं मणु - तिरिय - मीसं च । मीसस्स चउरो भेया – दुगसंजोगे तिण्णि, तिगसंजोगे एगो ॥१८६५॥

एक्केक्कं तं दुविहं, पंतग-भद्देहि होइ नायव्वं ।
गुरुया गुरुओ लहुया, लहुओ पढमम्मि दोहि गुरू ॥१८६८॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

देवातिपरिग्गहं एक्केक्कं दुभेयं कज्जति, भद्दग - पंतेहिं। एतेसु एवंकप्पिएसु ठायंतस्स इमं पच्छित्तं। "गुरुगा" पच्छद्धं। दिव्वे पंतपरिग्गहे अंतो चउगुरु। ङ्क। दिव्वे भद्दपरिग्गहे अंतो मासगुरु। दिव्वे पंतपरिग्गहे बाहिं चउलहुं, दिव्वे भद्दपरिग्गहे बाहिं मासलहुं। एवं दिव्वे तवकालगुरुं पच्छित्तं। मणुएसु वि एवं चेव। णवरं – तवगुरुं। तिरिएसु वि एवं चेव। णवरं – कालगुरुं ॥१८९८॥

एतं तु परिग्गहितं, तव्विवरीतमपरिग्गहं होति।
सच्चित्त-रुक्ख-मूलं, हत्थिपदपमाणतो हत्थं ॥१७९९॥

एयं सपरिग्गहं सपच्छित्तं भणियं, तव्विवरीयं अपरिग्गहं। पच्छद्धं। गतार्थं ॥१८९९॥

मीसे इमं पच्छित्तं–

ति-परिग्गह-मीसं वा, पंते अंतो गुरुगा बहिं गुरुगो।
भद्देसु य ते लहुगा, अपरिग्गह मासो भिण्णो य ॥१९००॥

पंत-सुर-परिग्गहिते, चतुगुरु अंतो बहिं तु मासगुरू।
भद्दे वा ते लहुगा, णर-तिरिय-परिग्गहे चेवं ॥१९०१॥

एतं चिय पच्छित्तं, दुगाइसंजोगतो (जा) लता चउरो।
अपरिग्गह-तरुहेट्ठा, मासो भिण्णो य अंतो बहिं ॥१९०२॥

दिव्व - मणुय - तिरिय - तिहिं वि परिग्गहियं मीसं।
तत्थ दिव्व-मणुय - मीस - पंत - परिग्गहे अंतो चउगुरुगं।
एतेसु चेव पंतेसु बाहिं मासगुरुं।
एतेसु चेव भद्देसु अंतो चउलहुगं।
एतेसु चेव भद्देसु बाहिं मासलहुं।
एयं उभयलहुं दिव्व - तिरिय - परिग्गहे एवं चेव, णवरं – कालगुरुं।
माणुस - तिरिय - परिग्गहे एवं चेव, णवरं – तवगुरुं।
दिव्व - मणुय - तिरिए परिग्गहे एयं चेव, णवरं – उभयगुरुं।
अपरिग्गहे अंतो मासलहुं, बाहिं भिण्णमासो ॥१९०२॥

एक्केक्कपदा आणा, पंता खेत्तादि चउण्हमण्णयरं।
णर तिरि गेण्हणाहण, अपरिग्गह संजमाताए ॥१९०३॥

सपरिग्गहं एतेसिं एक्केक्कातो पदातो आणा अणवत्थं, मिच्छत्तं विराहणा भवति। तत्थ पंतदेवता खित्तचित्तं दित्तचित्तं जक्खाइट्ठं उम्मायपत्तं – एतेसिं चउण्हं एगतरं कुज्जा।

अहवा – उवसग्गाण वा चउण्हं – हासा पओसा वीमंसा पुढोवेमाया एतेसिं एगतरं कुज्जा। णरा गेण्हणादी करेज्ज। तिरिया आहणण - मारणाती करेज्जा। अपरिग्गहेवि आय - संजमविराहणा ॥१९०३॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इमा संजमे –

हत्थादिपादघट्टण, सहसाऽवत्थंभ अधवऽणाभोगा ।
गातुम्हा उस्सासो, खेलादिविगिंचणे जं च ॥१९०४॥

एतेहिं पगारेहिं खंधस्स पिंडं करेज्ज ॥१९०४॥

इमा आयविराहणा –

अट्ठिं व दारुगादी, सउणग-परिहार-पुप्फ-फलमादी ।
जीवोवघात देवत-तिरिक्ख-मणुया भवे दुट्ठा ॥१९०५॥

अट्ठि वा दारुगं वा पडति, [1]ढंकातियाण सण्णाए लेवाडिज्जति, पुप्फफलाणं अन्नेसिं च खंधेयातियाण जीवाणं उवघातो भवति, देवय-तिरिक्ख-मणुया वा दुट्ठा सपरिग्गहापरिग्गहे दट्ठव्वं । एते सपरिग्गह-अपरिग्गहेसु दोसा ॥१९०५॥

कारणेण य पलोयणं करेज्जा –

बितियपय गेलण्णे, अद्धाणे चेव तह य ओमम्मि ।
रायदुट्ठ-भए वा, जतणाए पलोयणादीणि ॥१९०६॥

एतीए गाहाए संखेवओ इमं वक्खाणं –

रायदुट्ठऽभएसू, दुरूहणा होज्ज छायणट्ठाते ।
अहवा वि पलंबट्ठा, सेसे छायं पलंबट्ठा ॥१९०७॥

रायदुट्ठे बोधिगादिभये य अप्पणो छायणट्ठा दुरुहंतो पलोएज्ज, अलभंतो भत्तपाणं एतेसु चेव पलंबट्ठा पलोएज्ज । सेसा गिलाणादिदारा तेसु णियमा पलंबट्ठा पलोएज्ज । गिलाणो वा णिज्जंतो छायाए वीसमति त्ति पलोएज्ज ॥१९०७॥

"[2]जयणाए" त्ति अस्य व्याख्या –

अपरिग्गहिते बाहिं, भद्दग-पंते व ऽणुण्णविय बाहिं ।
अपरिग्गहं तो भद्दे, अंतो पंते ततो अंतो ॥१९०८॥

पढमं अपरिग्गहे बाहिं, ततो भद्दगपरिग्गहिएसुं अणुण्णविय बाहिं, ततो पंतेसु अणुण्णविय बाहिं, ततो अपरिग्गहे अन्तो, ततो भद्दएसु अणुण्णविय अंतो, ततो पंतेसु अणुण्णविय अंतो ॥१९०८॥

जे भिक्खू सचित्त-रुक्ख-मूलंसि ठिच्चा ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा तुयट्टणं वा चेएइ, चेएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२॥

ठाणं काउस्सग्गो, वसहि णिमित्तं सेज्जा, वीसम-ट्ठाण-णिमित्तं णिसीहिया ।

सच्चित्त-रुक्ख-मूले, ठाण-णिसीयण-तुयट्टणं वा वि ।
जे भिक्खू चेतीते, सो पावति आणमादीणि ॥१९०९॥

---

१ काकादीनाम् । २ गा० १९०६ ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

हत्थादि पायघट्टण, सहसाऽवत्थंभ अहवऽणाभोगा ।
गातुम्हा उस्सासे, खेलादिविगिंचणा जं च ॥१६१०॥

अट्ठिं व दारुगादी, सउणग-परिहार-पुप्फ-फलमादी ।
जीवोवघात देवत-तिरिक्ख-मणुया भवे दुट्ठा ॥१६११॥

पूर्ववत् ।

असिवोम-दुट्ठ-रोधग, गेलण्णऽद्धाण संभम भए वा ।
वसधीवाघातेण य, असती जतणा य जा जत्थ ॥१६१२॥

असिवेण गहिता अण्णत्थ वसहिं अलभंता रुक्खमूले अच्छंता जा जा रुक्खाओ छाया णिग्गता तत्थ ठायंति, रुक्खमूले ठिता कागादी णिवारेंति, पडमंडवं वा करेंति ॥१६१०॥

सेसेसु इमं वक्खाणं –

रायदुट्ठ-भए वा, दुरूहणा होज्ज छादणट्ठाए ।
अहवा वि पलंबट्ठा, सेसे ठाही पलंबट्ठा ॥१६१३॥

पूर्ववत् ।

"[1]वसहिवाघाएण" अस्य व्याख्या –

इत्थी णपुंसको वा, खंधारो आगतो त्ति णिग्गमणं ।
सावय मक्कोडग तेण वाल मसगा ऽयगरे साणे ॥१६१४॥

गामबहिट्ठा देवकुले ठिताण सुण्णघरे इत्थी णपुंसगो वा उवसग्गेति, खंधावारो वा आगतो तत्थ ठितो, दीविगादिसावयं वा पइट्ठं, तत्थेव पतितं विगाले कहियं, मक्कोडगा वा राओ उब्भुआणा, तेणगा वा वा रातो आगच्छंति, सप्पो व राति उवसग्गेति, मसगा वा राओ भवंति, अयगरो वा राओ आगच्छति, साणो वा राओ पत्तए अवहरति। एतेहिं वसहिवाघातेहिं णिग्गता अण्णवसहिं अलभंता सचित्तरुक्खमूले ठाएज्जा ॥१६१२॥

इमा जयणा –

अपरिग्गहम्मि बाहिं, भद्दगपंते बऽणुण्णविय बाहिं ।
अपरिग्गहन्तो भद्दे वि, अंतो पंते ततो अंतो ॥१६१५॥

पूर्ववत् ।

जे भिक्खू सचित्त-रुक्ख-मूलंसि ठिच्चा असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा आहारेंति, आहरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३॥

सचित्त-रुक्ख-मूले, असणादी जो उ भुंजए भिक्खू ।
सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त-विराधणं पावे ॥१६१६॥

---

१ गा० १६१२ ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

(अत्र गाथाः १६०६ । १६१० । १६१२ । १६१३ । संख्याकाः पुनरपि पठनीयाः)

पूर्ववत् ।

जे भिक्खू सचित्त-रुक्ख-मूलंसि ठिच्चा उच्चार-पासवणं परिट्ठवेइ,
परिट्ठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४॥

सचित्त-रुक्ख-मूले, उच्चारादी आयरेइ जो भिक्खू ।
सो आणा अणवत्थं, विराहणं अट्ठिमादीहिं ॥१६१७॥

पूर्ववत् ।

थंडिल्ल असति, अद्धाण रोधए संभमे भयासण्णे ।
दुब्बलगहणि गिलाणे, वोसिरणं होति जतणाए ॥१६१८॥

असति त्ति अण्ण थंडिल्ल णत्थि, रोहए तं अणुण्णायं, आसण्णे भावा सण्णा ते दूरं ण सक्केति गंतु ॥१६१६॥

जे भिक्खू सचित्त-रुक्ख-मूलंसि ठिच्चा सज्झायं करेइ,
करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५॥

जे भिक्खू सचित्त-रुक्ख-मूलंसि ठिच्चा सज्झायं उद्दिसइ,
उद्दिसेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६॥

जे भिक्खू सचित्त-रुक्ख-मूलंसि ठिच्चा सज्झायं समुद्दिसइ,
समुद्दिसंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७॥

जे भिक्खू सचित्त-रुक्ख-मूलंसि ठिच्चा सज्झायं अणुजाणइ,
अणुजाणंतं वा सातिज्जिति ॥सू०॥८॥

जे भिक्खू सचित्त-रुक्ख-मूलंसि ठिच्चा सज्झायं वाएइ,
वाएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६॥

जे भिक्खू सचित्त-रुक्ख-मूलंसि ठिच्चा सज्झायं परियट्टेइ,
परियट्टेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥११॥

अणुप्पेहा धम्मकहा पुच्छाओ सज्झायकरणं । उद्देसो अभिनव अधीतस्स, अथिरस्स समुद्देसो, थिरीभूयस्स अणुण्णा । सुत्तत्थाण वायणं देति, सुत्तमत्थं वा आयरियसमीवा पडिपुच्छति, सुत्तमत्थं वा पुव्वाधीतं अब्भासेति परियट्टेइ ।

सच्चित्त-रुक्ख-मूले, उद्देसादीणि आयरे जो तु ।
सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त-विराधणं पावे ॥१६१६॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

बीयं जोगागाढे, सागर मते व असति वोच्छेदो ।
एतेहिं कारणेहिं, उद्देसादीणि कप्पंति ॥१६२०॥

जोगो आगाढो, इह वसहीए असज्झायं, तेण रुक्खमूले उद्देसातीणि करेज्ज ।

अहवा – वसहीए सागारियं, रहस्स सुत्तं वा, अपरिणया बहू ताहे बाहिं गम्मति । मतो वा सो जस्स पासतो तं गहियं, वसहीए य असज्झातियं ताहे अज्झयणट्ठा बाहिं रुक्खमूलातिसु अब्भसेज्ज, आसण्णे वा मतं, वोच्छेदो णाम एगस्स तं अत्थि सो वि अतिमहल्लो ताहे वसहि असज्झातिते बाहिं रुक्खमूलादिसु करेंति तुरिता ॥१६१८॥

जे भिक्खू अप्पणो संघाडिं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा सागारिएण वा सिव्वावेइ, सिव्वावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१२॥

अप्पणो अप्पणिज्जं, संघाडी णाम सवडी सण्हसति त्ति काऊणं दोहिं अंतेहिं मज्झे य जति अणउत्थिएण ससरक्खातिणा, गिहत्येण तुण्णागातिणा, संसिव्वावेइ अप्पणेण ।

णिक्कारणम्मि अप्पणा, कारणे गिहि अहव अण्णतित्थीहिं ।
जे भिक्खू संघाडिं, सिव्वावे आणमादीणि ॥१६२१॥

(अत्र १६०६ अंक मिता गाथाः पुनः पठनीयाः) ।

जति णिक्कारणे अप्पणा सिव्वेति, कारणे वा अण्णउत्थिय-गारत्थिएहिं सिव्वावेति तस्स मासलहुं । आणाइया य दोसा ॥१६१६॥

इमे दोसा –

णिक्कारणम्मि लहुगो, गिलाणआरोवणा य विद्धम्मि ।
छप्पइकाई संजमे, कारणे सुद्धो खलु विधीए ॥१६२२॥

विद्धे आयविराहणा, छप्पतियवहे य संजमविराहणा, कारणे विधीए सयं सिव्वंतो सुद्धो ॥१६२२॥

चोदग आह – पढमुद्देसगे परकरणे मासगुरुं वण्णियं, इह कहं मासलहुं भवति ?

आयरिय आह –

कामं खलु परकरणे, गुरुओ मासो तु वण्णिओ पुव्विं ।
कारणियं पुण सुत्तं, सयं च णुण्णायते लहुओ ॥१६२३॥

कामं अणुमयत्थे, खलु पूरणे, पुव्वं पढमुद्देसए, इह तु कारणिए सुत्ते अप्पणो अणुण्णाते, परेण सिव्वावेंतस्स मासलहुं ॥१६२३॥

सिव्वावणे इमे दोसा –

णेगगुणममुंचंते, बंधमुयंते य होति पलिमंथो ।
एगस्स वि अक्खेवे ऽवहारो होइ सव्वेसिं ॥१६२४॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जति बद्धं पडिलेहेति अणेगरूवधुणणदोसो। अह बंधे मोत्तुं पडिलेहेति य बंधति ततो सुत्तत्थ-पलिमंथो भवति, पडच्छोडग-तेणगेण अक्खित्ते एगे वि सव्वेसिं अवहारो भवति ॥१९२४॥

अकारणा सिव्वणे य इमे दोसा –

सयसिव्वणम्मि विद्धे, गिलाण आरोवणा तु सविसेसा।
छप्पतियऽसंजमम्मी, सुत्तादी अकरणे इमं च ॥१९२५॥

अप्पणो सिव्वंतो सूतीए विद्धो ताहे गिलाण आरोवणा सविसेसा सपरितावमहादुक्खा। छप्पतियवधे असंजमो भवति। तत्थ लग्गो सुत्तत्थपोरिसिं ण करेति। जहासंखं सुत्तं नासेति ङ्क, अत्थं णासेइ ॥१९२५॥

इमं च परकारवणे दोसदंसणं –

अविसुद्ध ठाणे काया, पप्फोडण छप्पया य वातो य।
पच्छाकम्मं व सिया, छप्पति-वेधो य हरणं च ॥१९२६॥

अविसुद्धे ठाणे पुढविकायादियाणं उवरिं ठवेति कायविराहणा, पप्फोडणे छप्पया पडंति, वाउसंघट्टणा य, घाणावडियंविलिएण देस-सव्वण्हाणं करेज्ज, छप्पयाओ वा विंधेति, अप्पणो वा उरुयं विंधति, हरेज्ज वा तं संघाडिं ॥१९२६॥

इदाणिं अप्पणो सिव्वणे कारणं भण्णति –

वितियं च वुड्ढमुड्ढोरगे य गेलण्ण विसमवत्थे य।
एतेहिं कारणेहिं, संसिव्वणमप्पणा कुज्जा ॥१९२७॥

वुड्ढो तस्स हत्था वा पाया वा कंपंति, ण तरति पुणो पुणो संठवेउं।

अधवा – उड्ढोरगो गिलाणो वा, ण तरति पुणो पुणो संठवेउं, विसमवत्थाणि वा एगट्ठं सीविज्जंति, एतेहिं कारणेहिं सयं सीवंतो सुद्धो। जहण्णेण तिण्णि बंधा, एक्को दंसते, बितिओ पासंते, ततीतो मज्झे। वितीयदिसा ए वि तिण्णि, उक्कोसेण छ भवंति ॥१९२७॥

कारणे अण्णउत्थिएण सिव्वावेति –

वितियपदमनिउणे वा, णिउणे वा होज्ज केणती असहू।
वाघातो व सहुस्सा, परकरणं कप्पती ताधे ॥१९२८॥

अप्पणा अणिउणो वा, णिउणो वा असहू, ग्लानवाघातो गिलाणाति-पओयणेण वावडो, एवं परो कारवेउं कप्पति ॥१९२८॥

इमाए जयणाए –

पच्छाकड साभिग्गह, णिरभिग्गह भद्दए य अस्सण्णी।
गिहि अण्णतित्थिएहिं च, असोय-सोए गिही पुव्वं ॥१९२९॥

पच्छाकडो पुराणो, पढमं तेण। ततो अणुव्वतसंपन्नो सावओ साभिग्गहो। ततो दंसणसावतो णिरभिग्गहो। ततो असण्णी भद्दओ। एते चउरो गिहिभेदा। अण्णउत्थिए एते चउरो भेदा। एक्केक्के असोय-सोयभेया कायव्वा। पुव्वं गिहीसु असोएसु, पच्छा सोयवादिसु, पच्छा अण्णतित्थिएसु ॥१९२९॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जे भिक्खू अप्पणो संघाडीए दीह-सुत्ताइं करेति;
करेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।१३।।

जे ते संघाडिबंधणसुत्ता ते दीहा ण कायव्वा, अह दीहे करेति तो मासलहुं, आणादिणो य दोसा ।

जे भिक्खू दीहाइं, कुज्जा संघाडिसुत्तगाइं तु ।
सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त-विराधणं पावे ।।१६३०।।

इमे दोसा –

अंछणे सम्मद्दा, पडिलेहा चेव णेगरूवाणं ।
सुत्तत्थतदुभएसु य, पलिमंथो होति दीहेसु ।।१६३१।।

अंछणं णाम कड्ढणं, तत्थ सम्मद्दा णाम पडिलेहणदोसो अणेगरूवघुणगदोसो य भवति, मूढेसु सम्मोहेंतस्स वलेंतस्स य सुत्तत्थपलिमंथो ।।१६३१।।

जम्हा एते दोसा तम्हा इमं पमाणं –

चतुरंगुलप्पमाणं, तम्हा संघाडिसुत्तगं कुज्जा ।
जहण्णेण तिण्णि बंधा, उक्कोसेणं तु छब्भणिता ।।१६३२।।

चतुरंगुलप्पमाणा कायव्वा, छब्बंधा दोसु विदिसासु ।।१६३२।।

तेसिं मूले इमेरिसो पडिबंधो –

सउणग-पाय-सरिच्छा, तु पासंगा दोण्णि अंतो मज्झेगो ।
तज्जातेण गहेज्जा, मोत्तूण य होति पडिलेहा ।।१६३३।।

सउणगो पक्खी, तस्स जारिसो तिप्फडो पातो भवति तारिसो कायव्वो । तज्जाएण उण्णियं उण्णिएण, खोमियं खोमिएण । जया पडिलेहेति तता ते बंधे मोत्तूण पडिलेहेइ ।।१६३३।।

बितिय पद वुड्ढमुड्ढोरगे य गेलण्ण विसमवत्थे य ।
एतेहिं कारणेहिं, दीहे वि हु सुत्तए कुज्जा ।।१६३४।।

वुड्ढो ते दीहे बधिउंन सक्केइ पूर्ववत् ।।१६३४।।

जे भिक्खू पिउमंद-पलासयं वा पडोल-पलासयं वा बिल्ल-पलासयं वा
सीतोदग-वियडेण वा उसिणोदग-वियडेण वा संफाणिय संफाणिय
आहारेति; आहारेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।१४।।

पिचुमंदो लिंबो, पलासं पत्तं, 'संफाणियं'' ति धोविउं ।

अहवा – ''संफोडिउं'' मेलितुमित्यर्थः ।

आहारमणाहारस्स मग्गणा णि (य) म सा कता होति ।
निंबपडोलादीहि य, दिय-रात्रो चउक्कभयणाओ ।।१६३५।।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

को आहारो, को वा अणाहारो, एतेहिं लिंबपडोलाइएहिं मग्गणा कता भवति, आहार-अणाहारे य दियराइं चउभंगो कायव्वो। दिया गहितं दिया भुत्तं, एवं चउभंगो ॥१६३५॥

जो हट्ठस्साहारो, चउव्विधो पारिगासियं तं तु।
णिंबपलोलादीयं, सति लाभे जं च परिभुंजति ॥१६३६॥

हट्ठो णिरोगो णिव्वाधितो समत्थो, तस्स जो आहारो असणाइ-चउव्विहो तं परियासिउं जो भुंजति। चउभंगेण तस्स पच्छित्तं। लिंबपडोलाइयं च जं सति लाभे परियासियं भुंजति ॥१६३६॥

चउभंगे तस्स य पच्छित्तं इमं –

चतुभंगे चतुगुरुगा, आहारेतरे य होंति चतुलहुगा।
सुत्तं पुण तद्दिवसं, जो धुवति अचेतणा पलासे ॥१६३७॥

आहारे परियासिते चउसु वि भगेसु चउगुरुगं, 'इतरे' अणाहारिमे, चउसु वि भगेसु चउलहुं इमं पुण सुत्तं जो तद्देवसियं अचित्तं धुविउं भुंजति तस्स भवति ॥१६३७॥

अणाहारिमं परियासियं पडुच्च भण्णति –

भयणपदाण चतुण्हं, अण्णतराएण जो तु आहारे।
णिंब पडोलादीयं, सो पावति आणमादीणि ॥१६३८॥

चउरो भंगा भयणा पदा, तेहिं जो आहारेति तस्स आणादि दोसा ॥१६३८॥

संफाणं ति सुत्तपदं, तस्सिमा वक्खा –

सीतेण व उसिणेण व, वियडेणं धोवणा तु संफाणि।
अहवा जायं धोवति, संफाहो उण णेगाहं ॥१६३९॥

णेगाहा णेगाहं, अणेगदिवसपिंडिताणि धोवति ॥१६३९॥

इमा विराहणा –

छट्ठवत-विराधणता, पाणादी तक्कणायि संमुच्छे।
तद्देवसिते वि अणट्ठा तण्णिस्सितघात भुंजंते ॥१६४०॥

छट्ठं रातीभोयणव्वयं, तं विराहिज्जति, मच्छियातिपाणा तत्थ निलेंति, ते गिहकोइलियातिणा तक्किज्जंति। तेसु वा पिंडिएसु कुंथुमाति समुच्छंति, आदिशब्दः तर्कणादिदोष प्रतिपादकः, यथा गवादीन् ब्राह्मणान् परिभोजयेत्। एते परिवासते दोसा।

इमे "तद्देवसिते" तद्देवसिते वि लिंबपत्ताति अणट्ठा घेत्तुं धोविउं भुंजंतस्स तण्णिसियपाणिघातो भवति, धोवंतस्स य प्लावणदोसो, अतो तद्देवसियं पि ण कप्पति भुंजिउं ॥१६४०॥

कारणा कप्पति –

बितियपदं गेलण्णे, वेज्जुवएसे य दुल्लभे दव्वे।
तद्दिवसं जतणाए, बीयं गीयत्थ संविग्गे ॥१६४१॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

गिलाणकारणे वेज्जुवदेसेण संफाणे, दुल्लभदव्वं वा अणेगदिवसे संफाणेति। तद्दिवसियं पुण परसंफाणियं गेण्हति। असति अप्पणा वि संफाणेति, तद्दिवसियम्मि अलभंते वितियमिति आगाढे पओयणे गीतत्थो संविग्गो [1]संविगरणं पि करेज्ज ॥१६४१॥

तं पुण पित्तादिरोगाणं पसमणट्ठा इमं गेण्हे –

पउमप्पल मातुलिंगे, एरंडे चेव णिंबपत्ते य।
वेज्जुवदेसे गहणं, गीतत्थे विकरणं कुज्जा ॥१६४२॥

पित्तुदए य पउमुप्पला, सण्णिवाए माउलिंगं, वाते एरंडो, सिंभे णिंबपत्ता।

"[2]तद्दिवसं जयणाए" त्ति अस्य व्याख्या – "वेज्जुवएसे गहणंति"।

"[3]बितियं संविग्ग" त्ति अस्य व्याख्या – "गीयत्थे विकरणं कुज्जा" ॥१६४२॥

एतदेवार्थं स्फुटतरं करोति –

संफाणितस्स गहणं, असती घेत्तूण अप्पणा धोवे।
तद्दिवसिगि लंभासति, णेगा विणिसा तु संफाणे ॥१६४३॥

तद्देवसियस्स अलाभे अणेगदिवसे वि धरेति ॥१६४३॥

जे भिक्खू पाडिहारियं पायपुंछणं जाइत्ता "तामेव रयणीं पच्चप्पिणिस्सामि त्ति" सुए पच्चप्पिणति, पच्चप्पिणंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१५॥

प्रतीपं हरणं प्रातिहार्यं, तं अज्ज अमुयवेलाए रातो वा अप्पिणिहामि त्ति सुए कल्ले अप्पेति तस्स मासलहुं आणातिया य दोसा।

जे भिक्खू पाडिहारियं पायपुंछणं जाइत्ता "सुए पच्चप्पिणिस्सामि त्ति" तामेव रयणिं पच्चप्पिणति, पच्चप्पिणंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१६॥

अर्थः पूर्ववत् –

पाउंछणगं दुविधं, वितिओद्देसम्मि वण्णितं पुव्वं।
तं पाडिहारियं तू, गेण्हंताऽऽणादिणो दोसा ॥१६४४॥

उस्सग्गियं अववातियं च पुव्वं बितिओद्देसे सभेयं वण्णियं। तं जो पाडिहारियं गेण्हति, तस्स आणादिया दोसा ॥१६४४॥

इमे पाडिहारियदोसा –

णट्ठे हित विस्सरिते, अणप्पिणंतम्मि होइ वोच्छेओ।
पच्छाकम्म पवहणं, धुवावणं वा तयट्ठस्स ॥१६४५॥

---

१ संधिकरणं-संविगरणं पा०। २ गा० १६४१। ३ गा० १६४१।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

भिक्खाइ अडंतस्स पडियं णट्ठं, तेणगेण हरियं, सज्झायाति-भूमीगयस्स कतो विस्सरियं, एतेहिं कारणेहिं अणप्पिणंतस्स तव्वादव्वस्स साहुस्स वा वोच्छेओ हवेज्ज, गिहत्थो वा अण्णं पाउंछणं करेज्ज, पच्छाकम्मं वा ठवियं जं अच्छति पवत्तणं करेज्ज । तस्स धुवावणं दवावणं तदट्ठस्स पादपुंछणस्स अण्णट्ठं वा मुल्लं दवावेज्ज तम्हा पाडिहारियं ण गेण्हेज्जा ॥१९४५॥

उव्वत्ताए पुव्वं, गहणमलंभे उ होइ पडिहारी ।
तं पि य ण छिण्णकालं, दोसा ते चेव छिण्णम्मि ॥१९४६॥

जं पाडिहारियं णिद्देज्जं तं उव्वत्ता गहणं पुव्वं तारिसं घेत्तव्वं, तारिसस्स अलंभे पाडिहारियं अज्जं वा कल्ले वा छिण्णकालं ण करेति । गेण्हंतेण भाणियव्वं – कता वि कए कज्जे आणेहामि । दोसा छिण्णम्मि ते चेव अज्जे सुए वा अप्पेहामि त्ति । छिण्णकाले कताति वाघातो हवेज्ज ततो अणप्पिणंतो माया मोसं अदत्तं भवति ॥१९४६॥

सो साहू इमेहिं कारणेहिं पाडिहारियं गेण्हति –

णट्ठे हित विस्सरिते, झामिय वूढे तहेय परिजुण्णे ।
असती दुल्लभपडिसेहओ य गहणं पडिहारिए चउहा ॥१९४७॥

झामितं दड्ढं, वूढं णतिउत्तरणेण, कालेण वा खुत्थं परिजुण्णं, असति पाडिहारियं ण लब्भन्ति, दुल्लभे वा जाव लब्भति, पडिणीएण वा पडिसेहितो इमं चउव्विहं पाडिहारियं गेण्हति –

उस्सग्गुस्सग्गियं । उस्सग्गिय-अववाइयं ।

अववाइयं, उस्सग्गियं । अववायाववातियं ॥१९४७॥

अणाभोगेण कते छिण्णकाले, अलब्भंते वा छिण्णकाले कते ।

दोण्ह वि सुत्ताण विवच्चासकरणे जहा गाहा –

तं पाडिहारियं पायपुंछणं गिण्हिऊण जे भिक्खू ।
वोच्चत्थमप्पिणादी, सो पावति आणमादीणि ॥१९४८॥

तं पाडिहारियं छिण्णकालं गेण्हित्तु तम्मि चेव काले अप्पेयव्वं ॥१९४८॥

विवरीयमप्पिणंतस्स इमे दोसा –

मायामोसमदत्तं, अपच्चओ खिंसणा उवालंभो ।
वोच्छेद-पदोसादी, वोच्चत्थं अप्पिणंतस्स ॥१९४९॥

पूर्ववत् ।

वितियपदे वाघातो, होज्जा पहुणो वि अप्पणो वा वि ।
एतेहिं कारणेहिं, वोच्चत्थं अप्पिणिज्जाहि ॥१९५०॥

पभुणो गिलाणसयाती वाघायकारणा होज्ज ॥१९५०॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अप्पणो इमे –

गेलण्ण वास महिता, पडिणीए रायसंभम-भए वा ।
अह समणे वाघातो, णिव्विसगादी य इतरम्मि ॥१६५१॥

गिलाणो जातो, वासं महिता वा पडंति, पडिणीओ वा अंतरे, रायदुट्ठं बोहियादिभयं वा, अग्गिमातिसंभमं वा जातं, एते समणे वाघातकरणा ॥१६५१॥

जे भिक्खू सागारिय-संतियं पादपुंछणं जाइत्ता "तामेव रयणिं पच्चप्पिणिस्सामि त्ति" सुए पच्चप्पिणति, पच्चप्पिणंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१७॥

जे भिक्खू सागारिय-संतियं पादपुंछणं जाइत्ता "सुए पच्चप्पिणिस्सामि त्ति" तामेव रयणिं पच्चप्पिणिति, पच्चप्पिणंतं वा सातिज्जति॥सू०॥१८॥

सागारिओ सेज्जातरो ।

जे भिक्खू पाडिहारियं दण्डयं वा लट्ठियं वा अवलेहणियं वा वेलु-सूइं वा जाइत्ता "तामेव रयणिं पच्चप्पिणिस्सामि त्ति" सुए पच्चप्पिणति, पच्चप्पिणंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१९॥

जे भिक्खू पाडिहारियं दंडयं वा लट्ठियं वा अवलेहणियं वा वेलु-सूइं वा जाइत्ता "सुए पच्चप्पिणिस्सामि त्ति" तामेव रयणिं पच्चप्पिणति, पच्चप्पिणंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२०॥

जे भिक्खू सागारिय-संतियं दंडयं वा लट्ठियं वा अवलेहणियं वा वेलु-सूइं वा जाइत्ता "तामेव रयणिं पच्चप्पिणिस्सामि त्ति" सुए पच्चप्पिणति, पच्चप्पिणंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२१॥

जे भिक्खू सागारिय-संतियं दंडयं वा लट्ठियं वा अवलेहणियं वा वेलु-सूइं वा जाइत्ता "सुए पच्चप्पिणिस्सामि त्ति" तामेव रयणिं पच्चप्पिणति, पच्चप्पिणंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२२॥

सूत्रार्थः पूर्ववत् ।

पडिहारिए जो तु गमो, णियमा सागारियम्मि सो चेव ।
दंडगमादीसु तहा, पुव्वे अवरम्मि य पदम्मि ॥१६५२॥

पाउंछणगं दुविधं, बितिओद्देसम्मि वण्णितं पुव्विं ।
सागारिय - संतियं तं, गेण्हंताणादिणो दोसा ॥१६५३॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

णट्ठे हिय विस्सरिए, अणप्पिणंते य होइ वोच्छेओ ।
पच्छाकम्म पवहणं, धुवावेणं वा तयट्ठस्स ॥१६५४॥

उव्वत्ताए पुव्वं, गहण अलंभे य होज्ज पडिहारि ।
तं पिय ण छिण्णकालं, ते च्चिय दोसा भवे छिण्णे ॥१६५५॥

णट्ठे हित विस्सरिते, झामिय वूढे तहेव परिजुण्णे ।
असती दुल्लभपडिसेवतो य गहणं सागारिए चउहा ॥१६५६॥

सागारिय-संतियं तं, पायपुंछणं गेण्हिऊण जे भिक्खू ।
वोच्चत्थमप्पिणेइ, सो पावति आणमादीणि ॥१६५७॥

मायामोसमदत्तं, अप्पच्चओ खिंसणा उवालंभो ।
वोच्छेद-पदोसादी, वोच्चत्थं अप्पिणंतस्स ॥१६५८॥

गेलण्ण वास महिया, पडिणीए रायसंभम-भए वा ।
अह समणे वाघातो, णिव्विसगादी य इयरम्मि ॥१६५९॥

भाष्य-ग्रन्थः अविशेषेण पूर्ववत् ॥१६५४-१६५९॥

जे भिक्खू पाडिहारियं वा सागारिय-संतियं वा सेज्जा-संथारयं पच्चप्पिणित्ता दोच्चं पि अणणुन्नविय अहिट्ठेइ, अहिट्ठेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२३

सेज्जा एव संथारओ सेज्जा-संथारओ

अहवा – सेज्जा सव्वंगिया, संथारओ अड्ढाइज्ज हत्थो ।

अहवा – सेज्जा वसही, संथारओ पुण परिसाडिमेतरो वा । सामिणो अप्पेउं अणणुण्णवेत्ता पुणो अधिट्ठेति परिभुंजति तस्स मासलहुं ।

सेज्जा-संथारदुगं, णिज्जाजेतुं गतागते संते ।
दोच्चमणणुण्णवेत्ता, तमधिट्ठंतम्मि आणादी ॥१६६०॥

परिसाडि अपरिसाडी णिज्जायमाणा अप्पेउं गता अन्नसउणेहिं पच्चागता । सो य संथारओ तहेव प्रच्छति । त दोच्चं अणणुण्णवेत्ता पुणो अधिट्ठेति परिभुंजति, मासलहुं आणाइया य दोसा ॥१६६०॥

मायामोसमदत्तं, अपच्चओ खिंसणा उवालंभो ।
वोच्छेदपदोसादी, अणण्णुण्णातं अधिट्ठं तो ॥१६६१॥

पूर्ववत् ।

कारणे अधिट्ठेति –

बितियपदमणाभोगा, दुट्ठादी वा पुणो वि तक्कज्जं ।
आसण्णकारणम्मि व अधिट्ठे अद्धाणमादिसु वा ॥१६६२॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अणाभोगेण वा अधिट्ठेति, दुट्ठादि वा सो अधिट्ठेति, पुण ण किं चि भणाति, तेण कज्जं तक्कज्जं, संथारगसामिम्मि पविसते तक्कज्जे य उप्पण्णे अधिट्ठिते, आसण्णं तुरियं तुरिए अधिट्ठेत्ता पच्छा अणुण्णवेति। अद्धाण पवण्णा वा ॥१९६२॥

इमं वसहीए बितियपदं –

अद्धाणे गेलण्णे, ओमऽसिवे गामाणुगामि वि-वेले ।
तेणा सावय मसगा, सीतं वा तं दुरहियासं ॥१९६३॥

अद्धाणादिएहि कारणेहिं अणणुण्णवेंता अहिट्ठेति, बहिं रुक्खमूलातिसु ण वसंति ॥१९६३॥

तेणातिएहि कारणेहिं जं पुण संथारयं वसही वा अणणुण्णातं अधिट्ठेति तं इमेसिं –

सण्णी सण्णाता वा, अहभद्दा ऽणुग्गहो त्ति णे भण्णे ।
सुण्णे य जहा गेहे, अणणुण्णवितुं तदा ऽधिट्ठे ॥१९६४॥

सण्णी सावओ, सयणा वा, अहाभद्दओ वा अणुग्गहं भणति जो तस्स संथारगो वा वसही वा अधिट्ठिज्जति ॥१९६४॥

जे भिक्खू सण-कप्पासओ वा उण्ण-कप्पासओ वा पोंड-कप्पासओ वा अमिल-कप्पासओ वा दीहसुत्ताइं करेति, करेंतं वा सातिज्जति॥सू०॥२४॥

दीर्घ-सूत्रं करोति, दीहसुत्तं णाम कत्तति, तस्स मासलहुं ।

पोंडमयं वागमयं, वालमयं वा वि दीह सुत्तं तु ।
जे भिक्खू कुज्जाही, सो पावति आणमादीणि ॥१९६५॥

सुत्तत्थे पलिमंथो, उड्डाहो भुसिरदोस सम्मद्दो ।
हत्थोवघाय संचय, पसंग आदाण गमणं च ॥१९६६॥

तं करेंतस्स सुत्तत्थपरिहाणी, गारत्थिएहिं दिट्ठे गिहिकम्मं ति उड्डाहो, भुसिरं च तं, तम्मि भुसिरे दोसा भवति, मसगादि-संपातिमा संवज्झंति, पिंजिज्जंते वाउकायवधो, संम्मद्ददोसो य।

अवि य भणियं –

"[1]जीवेणं भंते ! सता समितं एयति वेयति चलति घट्टति फंदति ताव णं बंधति" – संजमविराहणा, हत्थोवघातो आयविराहणा, संचए पसंगो ।

अहवा – अतिपसंगो तणवुणणादियं पि करेज्ज, सेहस्स य उण्णिक्खिउकामस्स आयाणं भवति आदाणे य गमणं भवति ॥१९६६॥

भवे कारणं करेज्जा वि –

अद्धाण णिग्गतादी, झामिय वूढे तहेव परिजुण्णे ।
दुब्बलवत्थे असती, दीहे वि हु सुत्तए कुज्जा ॥१९६७॥

१ भग० श० ३ उ० ३ । किन्तु तत्र "ताव णं बंधति" इत्यंशः नोपलभ्यते ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

"अद्धाणे" त्ति दारं ।

चोदगाह – अद्धाणं किं दार-गाहा गम्मति ?

आयरियाह - सुणेहि –

उद्दरे सुभिक्खे, अद्धाण पवज्जणा तु दप्पेणं ।
लहुया पुण सुद्धपदे, जं वा आवज्जती तत्थ ॥१६६८॥

दुविधा दरा वण्णदरा य पोट्टदरा य, ते उद्धं पुरेंति जत्थ तं उद्दरं । जत्थ पुण सुलभं भिक्खं तं सुभिक्खं ।

उद्दरगहणातो णणु सुभिक्खं गहियं ?

आयरिय आह – णो ।

कुतः ? चउभंगसंभवात् ।

उद्दरं, सुभिक्खं । णो उद्दरं, सुभिक्खं ।

उद्दरं, णो सुभिक्खं । णो उद्दरं, णो सुभिक्खं ।

पढम-तइयभंगेसु जो अद्धाणं दप्पेण पडिवज्जति तस्स चउलहुयं । सुद्धपदे अह आय-संजमविराहणं किं चि आवज्जति तो तण्णिप्फण्णं भवति ॥१६६८॥

कारणेण गच्छेज्जा –

णाणट्ठ दंसणट्ठा, चरित्तट्ठा एवमादि गंतव्वं ।
उवगरणपुव्वपडिलेहिएण सत्थेण जयणाए ॥१६६९॥

णाणादि-कारणेहिं जता गम्मति तता अद्धाणोवकरणोग्गाहितेण पडिलेहितेण सत्थेण सुद्धेण जयणाए गंतव्वं । एसा गाहा उवरिं सवित्थरा वण्णिज्जेहिति ॥१६६९॥

सत्थे वि वच्चमाणे, अस्संजत-संजते तदुभए य ।
मग्गंते जयणदाणं, छिण्णं पि हु कप्पती घेत्तुं ॥१६७०॥

णाणाति-कारणेहिं गम्ममाणे अंतरा तेणा भवंति, ते य चउव्विहा –

अस्संजय-पंता पढमो भंगो, संजय-पंता बितियभंगो ।

तदुभयपंता-ततिय भंगो, तदुभयभद्दा चउत्थो भंगो ॥१६७०॥

एतेसिं भंगाण फुडीकरणत्थं इमा गाहा –

संजत-भद्दा गिहि-भद्दगा य पंतोभए उभय-भद्दा ।
तेणा होंति चउद्धा, विगिंचणा दोसु तु यतीणं ॥१६७१॥

संजयभद्दा णो गिहिभद्दा, णो संजयभद्दा गिहिभद्दा ।

उभयपंता, उभयभद्दा । बितिय-ततिएसु जतीण विकिंचणा भवति ॥१६७१॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

"[1]मग्गंति" अस्य व्याख्या –

जइ देंत ऽजाइया जा, इयत्ति न वि देंति लहुग-गुरुगा य ।
सागारदाण गमणं, गहणं तस्सेव ण ऽण्णस्स ॥१६७२॥

साहू अजातिता गिहीहिं जति ताण चीरे देति तो चउलहुं । अह जातिता ण देंति तो चउगुरुगं । अदिण्णे उड्डाहं, पदोसं वा करेज्ज । "सागारं" पडिहारियं देंति, जस्स तं चीरं दिण्णं सो जति अण्णेण पहेण गच्छति साघूण वि ततो गमणं चीरट्ठा, जाहे अद्धाणातो विणिग्गतो तस्समीवातो साघू तमेव चीरं गेण्हति, णो अण्णं ॥१६७२॥

"[2]जयणादाणं" इमं ।

दंड-पडिहार-वज्जं, चोल-पडल-पत्तबंध-वज्जं च ।
परिजुण्णाणं दाणं, उड्डाह पदोस रक्खट्ठा ॥१६७३॥

महंता जुण्ण कंबली सरडिता डंडपरिहारो भण्णति । डंडपरिहारो, चोलपट्टो, पडला, पत्तगबंधो एते ण दिज्जंति । अवसेसा पडिजुण्णा दिज्जंति – उड्डाह-पदोस-रक्खट्ठा ॥१६७३॥

"[3]छिण्णं पि हु कप्पते घेत्तुं" तमेव, अविसद्दातो –

धोतस्स व रत्तस्स व, अण्णस्स व गेण्हणम्मि चउलहुगा ।
तं चेव घेत्तु धोत्तं, परिभुंजे जुण्णमुज्झे वा ॥१६७४॥

जति तेण गिहत्थेण धोअं रत्तं वा अण्णहा वा असाहुपाओग्गं कतं ति ण गेण्हाति तो चउलहुगा, अतो तमेव घेत्तुं धोतं साधुपाओग्गं काउं परिभुंजति, अतिजुण्णं वा उज्झति ॥१६७४॥ पढमो भंगो गतो ।

इदाणिं बितियभंगो । तत्थ पुणो चउभंगो संभवति –

संजतीतो विवित्ता, णो संजता । णो संजतीओ विवित्ता, संजता ।

संजतीतो संजता विवित्ता । णो संजतीओ णो संजता विवित्ता ।

सट्ठाणे अणुकंपा, संजति पडिसारिते णिसड्ढे य ।
असती तदुभए वा, जतणा पडिसत्थमादीसु ॥१६७५॥

जत्थ संजता गिही य उद्दूढा ण संजतीओ तत्थ संजतीण सट्ठाणं साहू ते अणुकंपियव्वा तेषां दातव्यमित्यर्थः । साहूहिं संजतिसंतियं पाडिहारियं घेत्तव्वं ।

जत्थ संजतीओ गिहत्था य उद्दूढा ण संजता तत्थ साघूणं संजतीतो सट्ठाणं तासां दातव्यम् । तेसिं पुण देंतेहिं णिसट्ठं णिद्देज्जं दातव्यं ।

तदुभयं साघु-साघुणीओ य । तेसिं असतीते जयणाए पडिसत्थमादिएसु मग्गंति ॥१६७५॥

ण विवित्ता जत्थ मुणी, समणी य गिही य तत्थ उद्दूढा ।
सट्ठाणऽणुकंपतहिं, समणुण्णितरेसु वि तहेव ॥१६७६॥

---

१ गा० १६७० । २ गा० १६९१ । ३ गा० १६७१ ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

समणुण्ण संभोतिता, इतरे पासत्थादि, पच्छा गिही, सव्वाभावे वि सव्वत्थ । पुव्वं संजतीओ अणुकंपणिज्जा, सेसेसु सव्वत्थ आसण्णतरं ठाणं अणुकंपणिज्जं ॥१६७६॥

लिंगट्ठ भिक्ख सीते, गिण्हंती पाडिहारियमिमेसु ।
अमणुण्णेतरगिहिसुं, जं लद्धं तंणिभं देंति ॥१६७७॥

सव्वायरेण लिंगट्ठा रयहरणं घेत्तव्वं । पत्तगबंधो भिक्खट्ठा । सीयट्ठा पाउरणं । सव्वहा अलभंते पाडिहारियं इमेसु गेण्हति – अमणुण्णा असंभोतिता, इतरे पासत्थादि, पच्छा गिहीसु । जं चोलपट्टादि लद्धं तण्णिभं पडिसमप्पेंति । इह द्वितीयभंगे व्याख्यायमाने प्रथम-तृतीय-चतुर्थ-भंगा अपि लेशेन स्पृष्टा । गतो बितियभंगो ॥१६७७॥

इदाणि ततिओ –

उड्ढे वि तदुभए, सपक्ख परपक्ख तदुभयं होति ।
अहवा वि समण समणी, समणुण्णितरेसु एमेव ॥१६७८॥

उद्दूढं मुषितं, तदुभयं – सपक्खो संजता, परपक्खो गिहत्था ।

अहवा – तदुभयं – समणा, समणीओ य ।

अहवा – समणुण्णा संभोइया, इतरे असंभोइता ।

अहवा – संविग्गा, इयरे असंविग्गा ॥१६७८॥

समणुण्णेतर गिहि-संजतीण असति पडिसत्थ-पल्लीसु ।
तिण्हट्ठाए गहणं, पडिहारिय एतरे चेव ॥१६७९॥

समणुण्णा संभोइया, इतरे असंभोइया पासत्थाइणो वा गिहीसु वा संजतीसु य "असति" त्ति अभावे तत्थाइयाण पडिसत्थे पल्लीसु वा जतंति पणगहाणीए । संजतीण णत्थि जयणा, तासिं जहेव लब्भति तहेव घेत्तुं गत्तच्छायणं कज्जति । "तिण्हं" ति लिंग-भिक्ख-सीयट्ठा गहणं करेंति । इतरेसुं पडिहारियस्स, "एतरे" त्ति पासत्था । च सद्दातो असंभोतियगिहि-संजतीसु य, "एव" अवधारणे,

अहवा – एवं घेत्तुं अण्णम्मि लद्धे पडिहारियं तण्णिभं अप्पेंति ॥१६७९॥

एवं तु दिया गहणं, अहवा रत्तिम्मि लेज्ज पडिसत्थे ।
गीतेसु रत्ति-गहणं, मीसेसु इमा तहिं जयणा ॥१६८०॥

पणगहाणीए एगम्मि पडिसत्थे इमा जयणा – जति सव्वे गीतत्था तो रातो चेव गेण्हंति ॥१६८०॥

अहवा – अगीतत्थमीसा तो इमा जयणा –

वत्थेण व पाएण व, णिमंतएऽणुग्गते च अत्थमिते ।
आदिच्चो उदिए त्ति य, गहणं गीयत्थ-संविग्गे ॥१६८१॥

पडिसत्थो कोइ अणुग्गते अत्थमिते वत्थेण णिमंतेति, तत्थ जति एक्को वा रातो चेव गंतुकामो ताहे गीयत्था भणंति – तुम्हे वच्चह अम्हे उइते आइच्चे घेत्तुमागच्छिस्सामो, ते रातो चेव घेत्तुं सत्थस्स मग्गतो णातिदूरे आगच्छंति, ठिते य सत्थे आगता आलोएंति । उदिते आदिच्चे गहणं कायंति । एवं गीयत्थसंविग्गा गेण्हंति ॥१६८१॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पल्लि-पडिसत्थाण वा अभावे –

खंडे पत्ते तह दब्भ-चीवरे तह य हत्थ-पिहणं तु ।
अद्धाण-विवित्ताणं, आगाढं सेस ऽणागाढं ॥१६८२॥

चर्मखण्डं, शाकादिपत्रं, दब्भं, चीरं, घणं गुप्फति, जहा मग्गपालीए । सव्वाभावे गुज्झदेसो हत्थेण पिहिज्जति, एस संजतीए विधी, संजतिमीसेसु वा । एगागियाण संजयाणं इच्छाए तम्मि विहाणे अद्धाणे विवित्ताण आगाढं कारणं, सेसं अद्धाणं तम्मि उवकरणाभावे अणागाढं ण भण्णति, सेसं वा झामिताइ ते अणागाढा ॥१६८२॥

असति विहि-णिग्गता, खुड्डगादि पेसंति चउसु वग्गेसु ।
अप्पाहेंति वऽगारं, साधुं च वियारमादिगतं ॥१६८३॥

असति त्ति पडिसत्थपल्लिमाइसु, अभावे उवकरणस्स, अद्धाणातो णिग्गता खुड्डगं पेसंति । चउसु वग्गेसु - संजति संजय सावग साविगाण य, एतेसिं चेव चउण्ह वग्गाण अप्पाहेंति । अहाभद्दगाण वा खुड्डगाभावे वियारमातिगयं साधुं भणंति – मुसियामो चीरे णीणेह । एत्थ संजया सड्ढगा य संजयाण हत्थाहत्थिं, संजती सड्ढिका य संजतीण देंति हत्थाहत्थिं ॥१६८३॥

जत्थ संजतीतो संजताण देंति, संजता वा संजतीणं तत्थिमा विही –

खुड्डी थेराणप्पे, आलोगितरी ठवेत्तु पविसंति ।
ते वि य घेत्तुमतिगता, समणुण्णजढे जयंतेवं ॥१६८४॥

खुड्डीणं असति इतरा तरुणी मज्झिमी साहु आलोइए उवकरणं ठवित्तु पविसति । ते साधू तं उवकरणं परिहेत्ता गामं पविसंति । समणुण्णा संभोइया तेसु विरहिए एवं जयंति ॥१६८४॥

यथा वक्ष्यति –

अद्धाण-णिग्गतादी, संविग्गा दुविध सण्णि असण्णी ।
संजति एसणमादी, असंविग्गा दोण्णि वी वग्गा ॥१६८५॥

जे अद्धाणणिग्गता मुसिता आदिसद्दातो अणिग्गता वा जे विसूरंति ते वक्खमाणविहाणेण जयंति ।
संविग्गा दुविहा – संभोतिता अण्णसंभोइया य ।
सण्णी दुविधा – संविग्गभाविया असंविग्गभाविया य ।
असण्णी दुविधा – आगाढ - मिच्छद्दिट्ठी अणागाढ मिच्छद्दिट्ठी य ।
उज्जमंतसंजतीसु विकप्पो णत्थि । दोण्णि वग्गा – साहुवग्गो साहुणिवग्गो य पुणो ।
एक्केक्को दुविधो कज्जति – संविग्गपक्खिओ असंविग्गपक्खिओ य ॥१६८५॥

"[1]संणि - असण्णि" त्ति अस्य व्याख्या –

संविग्गेतरभाविय, सण्णी मिच्छो तु गाढऽणागाढे ।
असंविग्ग-मिगाहरणं, अभिगह-मिच्छेसु विसं हीला ॥१६८६॥

[1] गा० १६८५ ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पुव्वद्धं गतार्थं। असंविग्गभाविता ते मगा। हरिणदिट्ठंतेण अकप्पियं देंति। आगाढमिच्छादिट्ठी विसंवादेति, हीलं वा करेति, तेण तेसु पढमं ण गेण्हति ॥१९८६॥

एतेसु पढमं गेण्हति –

संविग्ग-भावितेसुं अणगाढेसुं जतंति पणगादी।
उवएसो संघाडग, पुव्वगहितं तु अण्णेसु ॥१९८७॥

संविग्गभावितेसु सुद्धं, तेसु असति अणागाढमिच्छेसु सुद्धं, तेसु असति असंविग्गभावितेसु सुद्धं। तेसु असति अणागाढभावितेसु सुद्धं, तेसु असति अण्णसंभोतियोवदिट्ठकुलेसु मग्गंति सुद्धं. असति अण्णसंभोतिय-संघाडएण सुद्धं, असति "अण्णेसुं" ति अण्णसंभोतितेसु जं पुव्वोवग्गहियं सुद्धं ॥१९८७॥

अण्णसंभोतितेसु उक्तोप्यर्थः पुनरुच्यते विशेषज्ञापनार्थम्।

उवएसो संघाडग, तेसि सट्ठाइ पुव्वगहियं तु।
अहिणव-पुराण सुद्धे, उत्तरमूले सयं वा वि ॥१९८८॥

अण्णसंभोतितेसुं उवदेससंघाडगविधि जाहे अइक्कंतो ताहे अण्णसंभोतिएसुं पुव्वोगहियं सयट्ठाए उत्तरमूलगुणेसु सुद्धं, तं अहिणवं पुराणं वा, पुव्वं अहिणवं गेण्हंति, पच्छा पुराणं। "जतंति पणगाइ" त्ति – ततो पच्छा पणगपरिहाणीए जतंति. जाहे मासलहुं पत्ता ताहे पासत्थातिसु ॥१९८८॥

उवएसो संघाडग, पुव्वग्गहितं च णितियमादीणि।
अभिणव-पुराण सुद्धं, पुव्वमभुत्तं ततो भुत्तं ॥१९८९॥

णितियातितेसु उवदिट्ठघरेसु मग्गंति। असति णितिगातिसंघाडगेण उप्पाएंति। असति तेसु चेव णितियातिएसु जं पुव्वोगहितं सुद्धं णवं अपरिभुत्तं तं गेण्हंति। तस्सासति तेसु चेव जं तं पुव्वोगहितं। पुराणं अपरिभुत्तं गेण्हंति ॥१९८९॥

अस्यैवार्थस्य विशेष-ज्ञापनार्थं पुनरप्याह –

उत्तरमूले सुद्धे, णवग-पुराणे चउक्कभयणेवं।
परिकम्मण-परिभोगे, ण होंति दोसा अभिणवम्मि ॥१९९०॥

मूलगुण-उत्तरगुणेसु सुद्धं णवं अपरिभुत्तं, पच्छा एत्थ चेव पुराणं अपरिभुत्तं, पच्छा एत्थ चेव णवं परिभुत्तं, पच्छा एत्थ चेव पुराणं परिभुत्तं। एवं त्रितियाति-विकप्पेसु वि चउरो भंगा भणितव्वा। कम्हा णवं पुव्वं ? अत्र कारणमाह "परिकम्मण" पच्छद्धं। ण परिकम्मणदोसो, सुगंधवासियाविधि-परिभोगदोसा य ण भवंति ॥१९९०॥

असती य लिंगकरणं, पण्णवणट्ठा सयं व गहणट्ठा।
आगाढकारणम्मी, जहेव हंसादिणं गहणं ॥१९९१॥

सव्वहा असति उवकरणस्स सक्काति-परलिंगकरणं कज्जति, तेण लिंगेण उवासगाति पण्णविज्जंति, तल्लिंगट्ठितेहिं वा उवकरणं घेप्पति, अण्णहा ण लब्भति। सव्वहा अभावे जहेव हंसतेल्लादियाण गहणं दिट्ठं उवकरणस्स वि तहेव।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अधवा – हंसो तेणगो, जहा हंसो गहणं करेति कज्जति, तहावि असति सुत्तं जाएत्ता तुणावेति। असति सुत्तं जाएत्ता अप्पसागारिए तंतु काएति। कारणा असति दीहसुत्तयं पि करेति ॥१६६१॥

सेडुग रूते पिंजिय, पेलुग्गहणे य लहुग दप्पेणं।
तवकालेसु विसिट्ठा, कारणे अकमेण ते चेव ॥१६६२॥

सेडुओ कप्पासो, रूअं उट्ठियं, रूयपडलं पिंजियं, तमेव वलितं पेलू भण्णति। एतेसिं दप्पतो गहणे चउलहुं तवकालविसिट्ठं। कारणे पुव्वं पेलू, पच्छा रुतं, पच्छा सेडुओ। उक्कमगहणे चउलहुं ॥१६६२॥

एवं –

कडजोगि एक्कगो वा, असतीए णालबद्ध-सहितो वा।
णिप्फाते उवगरणं, उभओ पक्खस्स पाउग्गं ॥१६६३॥

कडजोगी गीतत्थो, जेण वा गिहवासे कत्तियं तंतुकातितं वा सो कडजोगी, एक्कओ उवकरणं उप्पाएति, एरिसस्स असती णालबद्ध संजती-सहिओ उभयपक्खस्स पाओग्गं उवकरणं उप्पाएति ॥१६६३॥

अग्गीतेसु विगिंचे, जह लाभं सुलभ-उवधि-खेत्तेसु।
पच्छित्तं च वहंती, अलाभे तं चेव धारेंति ॥१६६४॥

अगीतवतिमिस्सा सुलभउवधिखेत्तेसु गता अण्णोवकरणे लब्भमाणे पुव्वोवकरणं जहालाभं विकिंचिंति, अहालहुगं च पच्छित्तं वहंति अगीयपच्चयणिमित्तं, अण्णस्स अभावे तं चेव धरेंति। अह सव्वे गीयत्था ताहे अण्णम्मि अलब्भमाणे जं आहाकम्मकडं विधीए उप्पाइयं तं परिच्चयंति वा ण वा इच्छेत्यर्थः ॥१६६४॥

एसेव गमो णियमा, सेसेसु पदेसु होइ णायव्वो।
झामितमादीएसुं, पुव्वे अवरम्मि य पदम्मि ॥१६६५॥ कंठा

जे भिक्खू सचित्ताइं दारु-दंडाणि वा वेलु-दंडाणि वा वेत्त-दंडाणि वा करेइ, करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२५॥

जे भिक्खू सचित्ताइं दारु-दंडाणि वा वेलु-दंडाणि वा वेत्त-दंडाणि वा धरेइ, धरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२६॥

सचित्ता जीवसहिता, वेणू वंसो, वेत्तो वि वंसभेओ चेव, दारुं सीसवादिकरणं। परहस्ताद् ग्रहणमित्यर्थः। ग्रहणादुत्तरकालं अपरिभोगेण धरणमित्यर्थः।

सच्चित्तमीसगे वा, जे भिक्खू दंडए करे धरे वा।
सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त-विराधणं पावे ॥१६६६॥

सयमेव छेदणम्मी, जीवा दिट्ठे परेण उड्डाहो।
परछिण्ण मीसदोसा, भारेण विराहणा दुविधा ॥१६६७॥

सयं छेयणे जीवोवघातो, परेण दिट्ठे उड्डाहो भवति। परछिण्णे वि मीसवणस्सति त्ति जीवोवघोता भवति, सार्द्रत्वाच्च। गुरुः गुरुत्वादात्मसंयमोपघातः ॥१६६७॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सुत्तणिवातो एत्थं, परछिण्णे होति दंडए तिविधे।
सो चेव मीसश्रो खलु, सेसे लहुगा य गुरुगा य ॥१९९८॥

तिविधो – वंस-वेत्त-दारुमयो य, सो चेव परछिण्णो मीसो भवति, एत्थ सुत्तणिवातो सेस त्ति – सचित्ते परित्ते चउलहुग्रं, श्रणंते चउगुरुयं ॥१९९८॥

बितियपदमणप्पज्झे, गेलण्णऽद्धाण सावयभए वा।
उवधी सरीर तेणग, पडिणीते साणमादीसु ॥१९९९॥

श्रणप्पज्झो करेति ॥१९९९॥

गिलाण-श्रद्धाणेसु इमं वक्खाणं –

वहणं तु गिलाणस्सा, बाला उवधी पलंब श्रद्धाणे।
श्रच्चित्ते मीसेतर, सेसेसु वि गहण जतणाए ॥२०००॥

गिलाणो बालो उवही पलंबाणि वा श्रद्धाणे वुज्झंति, सावयभए णिवारणट्ठा घेप्पंति, उवहिसरीराण वहणट्ठा तेणग-पडिणीय-साणमादीण णिवारणट्ठा पुव्वं श्रचित्तं, पच्छा मीसं, "सेसा" परित्ताणंता, पुव्वं परित्तं, पच्छा श्रणंतं ॥२०००॥

जे भिक्खू चित्ताइं दारु-दंडाणि वा वेलु-दंडाणि वा वेत्त-दंडाणि वा करेइ, करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२७॥

जे भिक्खू चित्ताइं दारु-दंडाणि वा वेलु-दंडाणि वा वेत्त-दंडाणि वा धरेइ, धरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०। २८॥

जे भिक्खू विचित्ताइं दारु-दंडाणि वा वेलु-दंडाणि वा वेत्त-दंडाणि वा करेइ, करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२९॥

जे भिक्खू विचित्ताइं दारु-दंडाणि वा वेलु-दंडाणि वा वेत्त-दंडाणि वा धरेइ, धरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३०॥

चित्रक एकवर्णः । विचित्रो नानावर्णः । करेति धरेति वा तस्स मासलहुं ।

चित्ते य विचत्ते य, जे भिक्खू दंडए करे धरे वा।
सो श्राणा श्रणवत्थं, मिच्छत्त-विराधणं पावे ॥२००१॥

चित्तो णाम एगतरेण वण्णेण उज्जलो, विचित्तो दोहिं वण्णेहिं, चित्तविचित्तो पंचवण्णेहिं ॥२००१॥

सहजेणागंतूण व, श्रण्णतरजुश्रो य चित्तवण्णेणं।
दुप्पभितिसंजुश्रो पुण, विचित्तं श्रविभूसिए सुत्तं ॥२००२॥

सहजो णाम तद्द्रव्योत्थितः, कल्माषिका वंशडंडकवत्, श्रागंतुको चित्रकरादिचित्रितः, सूत्रस्याभिप्रायो श्रविभूषाभूषिते प्रायश्चित्तं भवति ॥२००२।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

बितियपदमणपज्झे, गेलण्णे असती अद्धाण-संभम-भए वा ।
उवधी सरीर तेणग, पडिणीए साणमादिसु वि ॥२००३॥

अण्णंसि डंडगाणं अभावे चित्तविचित्तादि गेण्हंति ॥२००३॥

जे भिक्खू सचित्ताइं दारु-दंडाणि वा वेलु-दंडाणि वा वेत्त-दंडाणि वा परिभुंजइ, परिभुंजंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३१॥

जे भिक्खू चित्ताइं दारु-दंडाणि वा वेलु-दंडाणि वा वेत्त-दंडाणि वा परिभुंजइ, परिभुंजंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३२॥

जे भिक्खू विचित्ताइं दारु-दंडाणि वा वेलु-दंडाणि वा वेत्त-दंडाणि वा परिभुंजइ, परिभुंजंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३३॥

जे भिक्खू नवग-णिवेसंसि वा गामंसि वा-जाव-सन्निवेसंसि वा अणुप्पविसित्ता असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३४॥

पढमा वासं णवं, करातियाण गम्मो गामो, करो जत्य ण विज्जति तं णयरं. धूली पगारो जस्स तं खेडं, कुणगरं कब्बडं, अड्ढाइज्जजोयणमब्भंतरे जस्स गोउलादीणि णत्थि तं मडंवं, जलेण थलेण दोसु वि मुहं दोणमुहं, जलपट्टणं पुरिमाती, थलपट्टणं आणंदपुराति, आसमं तावसासमादि, सत्थट्ठाणं णिवेसणं, वणिया जत्थ केवला वसंति णिगमं, वासासु किंसि काउं पभायवरिसे तं घण्णं जत्थ दुग्गे संगोढुं वसंति तं संबाहं, रायाधिट्ठिया रायहाणी-एतेसु जो असणादि गेण्हति तस्स मासलहुं आणादिया य भद्द-पंतदोसा य ।

गामाइ-सण्णिवेसा, जेत्तियमेत्ता य आहिया सुत्ते ।
तेसू असणादीणि, गेण्हंताऽऽणाइणो दोसा ॥२००४॥

मंगलममंगले या, पवत्तण णिवत्तणे य थिरमथिरे ।
दोसा णिव्विसमाणे, पुढवीमादीण चिट्ठम्मि ॥२००५॥

भद्दो अणावासिउ कामो वि साहुं दट्ठूण मंगल ति काउं आवासेति, एवं पवत्तणं । थिरीभूते य भणति-अहो साहुदरिसणं धण्णं, साधूण वा पढमं भिक्खापदाणं कतं तेण थिरीभूता । अण्णतरं उग्गमदोसं तेसिं अण्णेसिं वा करेज्ज । पंतो पुण आवासिउकामो वि साधुं दट्ठुं अमंगलं ति काउं णावासेति. एवं णिवत्तणं । अत्थिरे वा जाते भणंति-"कुतो अम्हाणं सुहं" ति जं पढमं ते लुत्तसिरा दिट्ठा, पडिलाभिया वा, भिक्खं वा तेहिं भमाडिता, तेसिं अण्णेसिं वा तत्थ वा भत्ताति णिवारियंति, अंतरायदोसा य । एए निविस्समाणे दोसा । णिविट्ठे सचित्तपुढवियसंघट्टणादिदोसा, आदिसद्दाओ आऊहरियक्काओ वा भवे ॥२००५॥

मंगल-बुद्धिपवत्तण, अधिकरण थिरम्मि होति तं चेव ।
अप्पडिपोग्गलठाणे, ओभावणमंतरायादी ॥२००६॥

पूर्वार्धं गतार्थम् । ठाण त्ति ठायंताण साहुदरिसणे ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अहवा – अहापडिवत्तीए एतेसिं अपडिपुग्गलं णाम दारिद्दता ताहे बहुजणमज्झे पंता ओभासंति अण्णेसिं पि दिज्जमाणे णिवारेंति, अंतरायदोसा ।।२००६।।

असिवे ओमोयरिए, रायदुट्ठे भए व गेलण्णे ।
अद्धाण रोहए वा, जतणा गहणं तु गीयत्थे ।।२००७।।

जयणाए गीयत्थो गहणं करेति ।।२००७।।

सा इमा जयणा –

पुव्वपवत्ते गहणं, उक्खित्तपरंपरे य अणभिहडे ।
चुल्लीपदेसरसवति, परिमलिते रुक्खदड्ढादी ।।२००८।।

णवग - णिवेसे पुव्वंपव्वत्तपरिवेसणाए गेण्हंति मा पवत्तणे दोसो भविस्सति । जं पुव्वुक्खित्तं परंपरणिक्खित्तं च तं गेण्हंति सट्ठाणट्ठं, नो अभिहडं । चुल्लिपदेसे विद्धत्थो पुढविकाओ तत्थ गेण्हंति, भत्तरसवइपएसे जं वा गोरुगमादीहिं परिमलियं ठाणं तत्थेव गेण्हंति, रुक्खो वा जत्थ दड्ढो, आदिसद्दातो गोमुत्तिगादिसु ।।२००८।।

जे भिक्खू नवग-निवेसंसि वा अयागरंसि वा तंबागरंसि वा तउआगरंसि वा सीसागरंसि वा हिरण्णागरंसि वा सुवण्णागरंसि वा रयणागरंसि वा वइरागरंसि वा अणुप्पविसित्ता असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिग्गाहेइ; पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।३५।।

अयं लोहं, तं जत्थ उप्पज्जति सो अयागरो, तवु, तंबं, सीसगं, हिरण्णं रुप्पयं, सुवण्णं, वइरं रत्न विशेषः पाषाणकः तत्थ जो गेण्हति तस्स मासलहुं, आणादिया दोसा ।

अयमाइ आगरा खलु, जत्तियमेत्ता य आहिया सुत्ते ।
तेसु असणादीणि, गेण्हंताऽऽणादिणो दोसा ।।२००६।।

मंगलममंगले वा, पवत्तण णिवत्तणे य थिरमथिरे ।
दोसा णिव्विसमाणे, इमे य दोसा णिविट्ठम्मि ।।२०१०।।

पूर्ववत् ।

इमे य दोसा णिविट्ठे –

पुढवि-ससरक्ख-हरिते, सचित्ते मीसए हिए संका ।
सयमेव कोइ गिण्हति, तण्णीसाए अहव अण्णे ।।२०११।।

णवग - णिवेसे असत्थोवहता सचित्तपुढवी ।

अहवा – धाउ - मट्टिता खता ताए हत्था खरंटिता, ससरक्खेण वा हत्थेण देज्ज, णवग - णिवेसे वा हरियसंभवो, सचित्तमीसस्स । तत्थ अण्णेण सुवण्णातिते हरिते साहू संकिज्जति ।

अहवा – कोइ संजतो लुद्धो उण्णिवक्खमिउकामो सयमेव गेण्हति ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अहवा – साहुणिस्साते अण्णो कोइ गेण्हति । तत्थ आसंकाए गेण्हण - कड्ढणातिया दोसा । जम्हा एते दोसा तम्हा णवगणिवेसेसु णो गेण्हेज्ज ॥२०१२॥

कारणा गेण्हेज्जा वि –

असिवे ओमोयरिए, रायदुट्ठे भए व गेलण्णे ।
अद्धाण रोहए वा, जतणा गहणं तु गीतत्थे ॥२०१२॥ पूर्ववत् ।

जे भिक्खू मुह-वीणियं करेइ, करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३६॥

जे भिक्खू दंत-वीणियं करेइ, करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३७॥

जे भिक्खू उट्ठ-वीणियं करेइ, करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३८॥

जे भिक्खू नासा-वीणियं करेइ, करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०३९॥

जे भिक्खू कक्ख-वीणियं करेइ, करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४०॥

जे भिक्खू हत्थ-वीणियं करेइ, करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४१॥

जे भिक्खू नह-वीणियं करेइ, करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४२॥

जे भिक्खू पत्त-वीणियं करेइ, करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४३॥

जे भिक्खू पुप्फ-वीणियं करेइ, करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४४॥

जे भिक्खू फल-वीणियं करेइ, करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०४५॥

जे भिक्खू बीय-वीणियं करेइ, करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४६॥

जे भिक्खू हरिय-वीणियं करेइ, करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४७॥

❀ ❀ ❀

जे भिक्खू मुह-वीणियं वाएइ, वाएंतं वा सातिज्जति ॥सू॥४८॥

जे भिक्खू दंत-वीणियं वाएइ, वाएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४९॥

जे भिक्खू उट्ठ-वीणियं वाएइ, वाएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५०॥

जे भिक्खू नासा-वीणियं वाएइ, वाएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५१॥

जे भिक्खू कक्ख-वीणियं वाएइ, वाएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५२॥

जे भिक्खू हत्थ-वीणियं वाएइ, वाएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५३॥

जे भिक्खू नह-वीणियं वाएइ, वाएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५४॥

जे भिक्खू पत्त-वीणियं वाएइ, वाएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५५॥

जे भिक्खू पुप्फ-वीणियं वाएइ, वाएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५६॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जे भिक्खू फल-वीणियं वाएइ, वाएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५७॥

जे भिक्खू बीय-वीणियं वाएइ, वाएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५८॥

जे भिक्खू हरिय-वीणियं वाएइ, वायंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५६॥

मुह-वीणियातीर्हि वादित्रशब्दकरणं। बितियसुत्ते मुहवीणियं करेंतो मोहोदीरके सद्दे करेति, अण्णतर-ग्रहणात् संयोगमवेक्खति, तं पगारमावण्णाणि तहप्पगाराणि, तत-वितत-प्रकारमित्यर्थः।

मुहमादि वीणिया खलु, जत्तियमेत्ता य आहिया सुत्ते।
सद्दे अणुदिण्णे वा, उदीरयंतम्मि आणादी ॥२०१३॥

अणुदिण्णं जे मोहं जणेति. उवसंतं वा उदीरेति ॥२०१३॥

सविगार अमज्झत्थे, मोहस्स उदीरणा य उभयो वि।
पुणरावत्ती दोसा, य वीणिगाओ य सद्देसु ॥२०१४॥

सविगारता भवति, लोगो य भणति – अहो इमो सविकारो पव्वतितो। मज्झत्थो रागदोस-विजुत्तो, सो पुण अमज्झत्थो। अप्पणो परस्स य मोहमुईरेति, पुणरावत्ति णाम कोइ भुत्तभोगी पव्वतितो सो चिंतेति अम्ह वि महिलाओ एवं करेंति, तस्स पुणरावत्ती भवति। अण्णेसिं वा साहूणं सुणेत्ता पडिगमणादयो दोसा भवंति। वीणियासु वीणियासद्देसु य एते दोसा भवंति ॥२०१४॥

इत्थि-परियार-सद्दे, रागे दोसे तहेव कंदप्पे।
गुरुगा गुरुगा गुरुगा, लहुगा लहुगो कमेण भवे ॥२०१५॥

इत्थि-सद्दे चउगुरुं। परियार-सद्दे चउगुरुं। अण्णतर-सद्दं रागेण करेति चउगुरुं। एतेसु तिसु चउ गुरुगा। दोसेण करेति चउ लहुगा। कंदप्पेण करेति मासलहुं ॥२०१५॥

बितियपदमणप्पज्झे, करेज्ज अविकोविओ व अप्पज्झे।
जाणंते वा वि पुणो, सण्णा सागारमादीसु ॥२०१६॥

अणप्पज्झो करेति, अविकोवितो वा सेहो करेति, दिया रातो वा अद्धाणे मिलणट्ठा सण्णासद्दं करेंति, भावसागारियपडिबद्धाए वा वसहीए सद्दं करेंति, जहा तं ण सुणेंति ॥२०१६॥

जे भिक्खू उद्देसियं सेज्जं अणुपविसइ; अणुपविसंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६०॥

उद्दिश्य कृता औद्देशिका, उवागच्छति प्रविसति तस्स मासलहुं।

ओहेण विभागेण य, दुविहा उद्देसिया भवे सिज्जा।
ओहेणेवतियाणं, बारसभेदा विभागम्मि ॥२०१७॥

ओहो संखेवो अविसेसियं समणाणं वा माहणाणं वा ण णिद्दिसति। एवं वा अविसेसिते पंचण्ह वा छण्ह वा जणाण अट्ठाए कता जाहे पविट्ठा भवंति ताहे जो अण्णो गणणातिक्कंतो पविसति तस्स कप्पति। एसा हु उद्देसिया बारसभेया विभागे भवति ॥२०१७॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जामातिय-मंडवग्रो, रसवति रह-साल-ग्रावण-गिहादी ।
परिभोगमपरिभोगे, चउण्हट्ठा कोइ संकप्पे ॥२०१८॥

जामातिया-णिमित्तं कायमाणमंडवो कतो ग्रासी, भत्ते वा रसवती कता ग्रासी, रहट्ठाए वा साला कता ग्रासी, ववहरणट्ठा वा ग्रावणो कतो ग्रासी, ग्रप्पणो वा गिहं कतं ग्रासी, ग्रप्पणा परिभुत्तं वा ग्रपरिभुत्तं वा ग्रप्पणो णिरुवभोजीभूयं ण भुंजति ॥२०१८॥

इमेसिं चउण्ह –

उद्देसगा समुद्देसगा य ग्रादेस तह समादेसा ।
एमेव कंडे चउरो, कम्ममिवि होति चत्तारिं ॥२०१९॥

एयस्स इमं वक्खाणं –

जावंतियमुद्देसो, पासंडाणं भवे समुद्देसो ।
समणाण तु ग्रादेसो, निग्गंथाणं समादेसो ॥२०२०॥

ग्राचंडाला जावंतियं उद्देसं भण्णति । सामण्णेणं पासंडीणं समुद्देसं भण्णति । समणा णिग्गंथ सक्क तावसा गेरु य ग्राजीव-एतेसु उद्दिट्ठं ग्रादेसं भण्णति । णिग्गंथा साहू, तेसिं उद्दिट्ठं समादेसं भण्णति ॥२०२०॥ कडे वि एते चेव चउरो भंगा ।

इमं विसेसलक्खणं –

सडित-पडिताण करणं, कुड्डकडादीण संजतट्ठाए ।
एमादिकडं कम्मं, तु भंजितुं जं पुणो कुणति ॥२०२१॥

कुड्डकडातीणं सडितं संजयट्ठा करेति, कुड्डकडातीण खंडं पडियं संजयट्ठा करेति, ग्रादिग्गहणेणं छावण-यूणादियाण एवमादि कडं भण्णति । कम्मं पुव्वकयं भंजित्ता तेणेव दारुणा चोक्खतरं ग्रण्णं करेति ॥२०२१॥

तं कम्मं भण्णति –

उद्देसियम्मि लहुगो, चउसु वि ठाणेसु होइ उ विसिट्ठो ।
एमेव कडे गुरुग्रो, कम्मादिम-लहुग तिसु गुरुगा ॥२०२२॥

ग्रोहुद्देसे मासलहुं । विभागुद्देसे चउसु वि भंगेसु मासलहुं तवकालविसिट्ठं । कडे चउसु वि भेदेसु मासगुरुं तवकालविसेसियं । कम्मे जावंतियभेदे चउलहुयं । सेसेसु तिसु चउगुरुं ॥२०२२॥

सुत्तणिवातो ग्रोहे, ग्रादिविभागे य चउसु वि पदेसु ।
एतेसामण्णतरं, पविसंताऽऽणादिणो दोसा ॥२०२३॥

ग्रसिवे ग्रोमोयरिए, रायदुट्ठे भए व गेलण्णे ।
ग्रद्धाण रोहए वा, जयणाए कप्पती वसितुं ॥२०२४॥

जयणा जाहे पणगहाणीए मासलहुं पत्तो ॥२०२४॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जे भिक्खू स-पाहुडियं सेज्जं अणुपविसइ, अणुपविसंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६१॥

जम्मि वसहीए ठियाण कम्मपाहुडं भवति सा स-पाहुडिया छावण-लेवणादि-करणमित्यर्थः ।

सा इमा सपाहुडिया –

पाहुडिया वि हु दुविधा, बादर सुहुमा य होति णायव्वा ।
एक्केक्का वि य तत्था, पंचविहा होंति भज्जंती ॥२०२५॥

बायरा पंचभेया, सुहुमा पंचभेया ॥२०२५॥

इमा बायरा पंचविधा –

विद्धंसण[1] छावण[2] लेवणे[3] य भूमी-कम्मे[4] पडुच्च[5] पाहुडिया ।
ओसक्कणऽहीसक्कण, देसे सव्वे य णायव्वा ॥२०२६॥

विद्धंसणं भंजणं । छज्जकरणं छायणं । कुड्डाण लिंपणं लेवणं । भूमीए समविसमाए परिकम्मणं भूमीकम्मं । कालाण उस्सक्कणं ओसक्कणं, कालस्स संवड्ढणं उस्सक्कणं । एवं एक्केक्कं (देसे) दट्ठव्वं । विद्धंसणादिया य दोसा सव्वे य दट्ठव्वा ॥२०२६॥

विद्धंसणे उस्सक्कणं इमं –

गिहवतिणा चिंतियं – इमं गिहं जेट्ठमासे भंजिउं अण्णं नवकं काहामि, जेट्ठमासे य तत्थ साहू मासकप्पेण ठिता ।

ताहे सो चिंतेति –

अच्छंतु ताव समणा, गतेसु भंतुं ततो णु काहामो ।
ओभासिए व संते, ण एंति ता भंतुणं कुणिमो ॥२०२७॥

इदाणिं अच्छंतु, गतेसु एतेसु आसाढमासे भंजिऊण करिस्सामि, एसा उस्सक्कणा । खेत्तपडिलेहगेहिं ओभासियं लद्धं ताहे चिंतेति – जेट्ठमासे साहू ठायंति तदा दुक्खं कज्जति, अतो जाव ते णागच्छंति ताव वइसाहे चेव भंजणं करेमि । एवं ओसक्कणा भवति ॥२०२७॥

एसेव गमो णियमा, छज्जे लेप्पे य भूमि-कम्मे य ।
तेसाल चउस्साले, पडुच्च करणं तु जति णिस्सा ॥२०२८॥

एवं छावणे लेवणे भूमीकम्मे उस्सक्कण अहिसक्कणाओ दट्ठव्वाओ । इयाणिं पडुच्च करणं तं इमेरिसं "तेसाल" पच्छद्धं-आयट्ठा तेसालं काउंकामो साहुं "पडुच्च" चाउसालं करेति ॥२०२८॥

अहवा –

पुव्वघरं दाऊणं, जई ण अण्णं करेति सट्ठाए ।
कातुमणो वा अण्णं, ण्हाणादिसु कालमोसक्के ॥२०२९॥

पुव्वकयं घरं सअट्ठा, एयं साहूण दाउं अप्पणो अट्ठाए अण्णं करेति । एवं वा पडुच्चकरणं ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अहवा – कोइ सड्ढो अण्णघरं अप्पणो अट्ठाते काउकामो जेट्ठमासे, तत्थ ण्हवणं रहजत्ता वा वैसाहमासे भविस्सति, ताहे चिंतेति – अणागयं करेमि जेण तत्थ साहुणो चिट्ठंति। एस ओसक्कणा साहुं पडुच्च ।।२०२९।।

एमेव य ण्हाणादिसु, सीतलकज्जट्ठ कोइ उस्सक्के ।

मंगलबुद्धी सो पुण, गतेसु तहियं वसितुकामो ।।२०३०।।

एमेव कोति सड्ढो सीयकाले काउकामो चिंतेति – वैसाहमासे इह ण्हवणं तत्थ य साहुसमागमो भविस्सति, तं च तदा णवघरं साहूण सीयलं भविस्सति तम्हा ण्हवणकालासण्णमेव करिस्सामि एवं साहवो पडुच्च उसक्कणा। सो पुण ओसक्कणं अहीसक्कणं वा करेति मंगलबुद्धीए, पुव्वं साहवो परिभुंजंतु त्ति तेसु य साहुसु गतेसु तम्मि य घरे अप्पणा वसिस्सं ति, एयं वा पडुच्चकरणं ।।२०३०।। बातर-पाहुडिता गता।

इदाणि सुहुमा –

सम्मज्जण वरिसीयण, उवलेवण पुप्फदीवए चेव ।

ओसक्कण उसक्कण, देसे सव्वे य णायव्वा ।।२०३१।।

सम्मज्जण त्ति पमज्जणं, उदगेण वरिसण आवरिसणं, छवणमट्टियाए लिंपणं उवलेवणं, पुप्फोवयारप्पदाणं, दीवग-पज्जालणं वा, एते – पुव्वमप्पणो कज्जमाणे चेव । णवरं – साधवो पडुच्च ओसक्कणं उस्सक्कणं वा। एतेसिं पि करणं देसे सव्वे वा ।।२०३१।।

इमं ओसक्कास्सक्कविहाणं –

जाव ण मंडलिवेला, ताव पमज्जा... ...ति ओसक्का ।

उट्ठेंति ताव पडिउं, उस्सक्कणमे... सव्वत्थ ।।२०३२।।

एवं सव्वत्थ आवरिसणाइएसु वि ।।२०३२।।

इमं पच्छित्तं –

सव्वम्मि उ चउलहुगा, देसम्मि य बादरा य मासो तु ।

सव्वम्मि मासियं तू, देसे भिण्णो उ सुहुमाए ।।२०३३।।

विद्धंसणातिएसु पंचसु वि सव्वे चउलहुगा, देसे मासलहुं। सम्मज्जणातिएसु पंचसु त्रि मासलहुं सव्वे, देसे भिण्णमासो ।।२०३३।।

सा पुण सुहुमा पाहुडिया कालतो –

छिण्णमछिण्णाकाले, पुणो य णियया य अणियया चेव ।

णिद्दिट्ठमणिद्दिट्ठा, पाहुडिया अट्ठभंगा उ ।।२०३४।।

जीसे उवलेवणादि-परिछिण्णो काले कज्जति सा छिण्णा, इतरा अछिण्णा, छिण्णकाले जा अवस्सं कज्जति सा णियया, इतरा अणियता, पुरिसो पाहुडियकारगो इंददत्तादि-णिद्दिट्ठो, णामेण अणुवलक्खितो अणिद्दिट्ठो । छिण्ण-णियय-णिद्दिट्ठ, एतेसु तिसु वि पदेसु अट्ठभंगा कायव्वा ।।२०३४।।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कालतो इमा छिण्णा –

मासे पक्खे दसरातए य पणए य एगदिवसे य ।
वाघातिमपाहुडिया, होति पवाता णिवाता य ॥२०३५॥

मासंते पक्खंते दसराते पणए एगदिवसे एगंतरातो णिरंतरा वा दिणे दिणे एसा छिण्णा। अछिण्णा पुण णज्जति कम्मि (कस्मिंचित्) इ दिवसे ? काए वेलाए ? जा सुत्तत्थपोरिसिवेलासु पाहुडिय कज्जति सा वाघातिमा ॥२०३५॥

छिण्णकाले णिव्वाघातिमा इमा –

पुव्वण्हे अवरण्हे, सूरम्मि अणुग्गते व अत्थमिए ।
मज्झण्हे इय वसती, सेसं कालं पडिकुट्ठा ॥२०३६॥

पुव्वण्हे जा अणुग्गते सूरिए, अवरण्हे जा अत्थमिए सूरिए, मज्झण्हे कालवेलाए अत्थपोरिसि-उट्ठियाण। एतेसु कालेसु जा पाहुडिया कज्जति सा अव्वाघातिमा। सेसं कालं पडिकुट्ठा ॥२०३६॥

पुरिसज्जाओ अमुओ, पाहुडिया कारओ त्ति निद्दिट्ठो ।
सेसा तु अणिद्दिट्ठा, पाहुडिया होति णायव्वा ॥२०३७॥

जातय-ग्रहणं स्त्रीपुंनपुंसकप्रदर्शनार्थम् ॥२०३७॥

मासस्य य। क्रियते सा इमेण कारणेण णिव्वाघातिमा भवति –

काऊण मासकप्पं, वयंति जा कीरते उ मासस्स ।
सा खलु णिव्वाघाता, तं वेलाऽऽरेण णिंताणं ॥२०३८॥

कयाए पाहुडियाए पतिट्ठा मासकप्पं काऊण पाहुडियकरणकालातो आरेण णिगच्छमाणाण णिव्वाघाता भवति ॥२०३८॥

"[1]पवाय-णिवाता य" त्ति अस्य व्याख्या –

अवरण्ह गिम्हकरणे, पवाय सा जेण णासयति घम्मं ।
पुव्वण्हे जा सिसिरे, णिव्वात णिवाय सा रत्तिं ॥२०३९॥

गिम्हकाले अवरण्हे उवलेवणकारणेण सीतत्वात् घर्मं नाशयति यतस्तस्मात् प्रवाता। शिशिरकाले पुव्वण्हे उवलेवणकारणेण सव्वदिणेण 'णिव्वात" त्ति उव्वाणा, सा रात्रौ णिवाता भवति, व्यपगतनेहत्वाः ॥२०३९॥

पुव्वण्हमपट्ठविते, अवरण्हे उट्ठितेसु य पसत्था ।
मज्झण्ण-णिग्गएसु य, मंडलि सुत पेह वाघातो ॥२०४०॥

पुव्वण्हे अपट्ठविते अणुग्गए सूरिए अपट्ठविते सज्झाते, अवरण्ह उट्ठितेसु, मज्झण्हे भिक्ख-णिग्गतेसु, एया पसत्थाओ जेण सुयभोयणमंडलीए उवकरणपेहणाए य अव्वाघायकरा, शेषकालं व्याघातकरा इत्यर्थः। तम्हा एयद्दोसपरिहरणत्थं अपाहुडियाए वसहीए वसियव्वं। ॥२०४०॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कारणे सपाहुडियाए वसंतो [2]पढमभंगे वसति ।

सेसेसु वि भंगेसु वसंतस्स इमा जयणा –

तं वेलं सारवेंती, पाहुडिया-कारयं व पुच्छंति ।
मोत्तूण चरिमभंगं, जयंति एमेव सेसेसु ॥२०४१॥

जं वेलं पाहुडिया कज्जति तं वेलं उवकरणं सारवेंति ।

ग्रहवा – पाहुडियाकारगं पुरिसं पुच्छंति कं वेलं काहिसि, चरिमभंगं मोत्तुं सेसभंगेसु एवं जतंति ॥२०४१॥

चरिमे वि होइ जयणा, वसंति ग्राउत्तउवहिणो णिच्चं ।
दक्खे य वसतिपाले, ठवेंति थेरे पुणित्थीसु ॥२०४२॥

चरिमे वि इमा जयणा – णिच्चं ग्राउत्ता उवहीए ग्रच्छंति, दक्खे य वसहिपाले ठवंति, ग्रणित्थीसु वा पुरिसेसु त्ति तरुणे वसहिपाले ठवेति, ग्रह इत्थीग्रो थेरे ठवेंति ॥२०४२॥

देसम्मि बायरा ते, सुत्तणिवातो उ णिवतती एत्थं ।
सव्वम्मि य सुहुमाए, तं सेवंतम्मि ग्राणादी ॥२०४३॥

बादराए देसे सुहुमाए सव्वे एत्थ सुत्तणिवातो भवति ग्राणातिया य दोसा, सेसं विकोवणट्ठा भणियं ॥२०४३॥

ग्रसिवे ग्रोमोयरिए, रायदुट्ठे भए व गेलण्णे ।
ग्रद्धाण रोहए वा, जतणाए कप्पती वसितुं ॥२०४४॥

पूर्ववत् ।

जे भिक्खू सपरिकम्मं सेज्जं ग्रणुप्पविसइ, ग्रणुप्पविसंतं वा, सातिज्जति ॥सू०॥६२॥

सह परिकम्मेण सपरिकम्मा, मूलगुणउत्तरपरिकर्म यस्यास्तीत्यर्थः ; तस्स मासलहुं ग्राणाइया य दोसा ।

सपरिकम्मा सेज्जा, मूलगुणे चेव उत्तरगुणे य ।
एक्केक्का वि य एत्तो, सत्तविहा होइ णायव्वा ॥२०४५॥

सपरिकम्मा सेज्जा दुविहा । एक्केक्का पुण सत्तविहा ॥२०४५॥

इमे मूलगुणा सत्त –

पट्ठीवंसो दो धारणाग्रो चत्तारि मूलवेलीग्रो ।
मूलगुण-सपरिकम्मा, एसा सेज्जा उ णायव्वा ॥२०४६॥

१ गा० १४३ । २ गा० १४२ ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इमे उत्तरगुणेसु मूलगुणा सत्त –

वंसग कडणोक्कंपण, छावण लेवण दुवारभूमी य।
सप्परिकम्मा सेज्जा, एसा मूलुत्तरगुणेसु ॥२०४७॥

वंस इति दंडगो, आकडणं कुड्डकरणं, दंडगोवरि ओलवणं उक्कंपणं, दब्भातिणा छायणं, कुड्डाण लेवणं, वृहद्दल्पकरणं दुवारस्स, विसमाए समीकरणं भूकर्म, एसा सपरिकम्मा। उत्तरगुणेसु एते मूलगुणा इत्यर्थः ॥२०४७॥

इमे उत्तरोत्तरगुणा विसोहिकोडिट्ठिया वसहीए उवघायकरा।

दूमिय धूमिय वासिय, उज्जोवित बलिकडा अवत्ता य।
सित्ता सम्मट्ठा वि य, विसोहिकोडी कया वसही ॥२०४८॥

दूमियं उल्लोइयं, दुग्गंधाए धूवाइणा धूवियं, दुग्गंधाए चेव पडिवासिणा वासाणं, रयणप्पदीवादिणा उज्जोवितं, कूरातिणा बलिकरणं, छगणमट्टियाए पाणिएण य अवत्ता, उदगेण केवलेण सित्ता, बहुकाराइणा सम्मट्ठा प्रमार्जिता ॥२०४८॥

इमं पच्छित्तं –

अप्फासुएण देसे, सव्वे वा दूमितादि चउलहुआ।
अप्फासु धूमजोती, देसे वि तहिं भवे लहुगा ॥२०४९॥

दुमियाइ-सत्तसु पदेसु अफासुएण देसे सव्वे वा चउलहुअं, धूवजोती णियमादेव अफासुयं, एतेसु देसे वि चउलहुअं ॥२०४९॥

सेसेसु फासुएणं, देसे लहु सव्वहिं भवे लहुगा।
सम्मज्जण साह कुसादिछिण्णमेत्तं तु सच्चित्तं ॥२०५०॥

सेसेसु पंचसु पएसु फासुएण देसे मासलहुं सव्वहिं चउलहुगा। सम्मज्जणं सचित्तेणं कहं भवति ? भण्णति – सचित्तेण कुसादिणा छिण्णमेत्तेण संभवति ॥२०५०॥

वसधीए मूलुत्तरगुणसंभवे चउक्कभंगो भण्णति।

मूलुत्तरे चतुभंगो, पढमे वितिए य गुरुदुग-सविसेसा।
ततियम्मि होति भयणा, अत्तट्ठकडे चरिमसुद्धो ॥२०५१॥

पढमो – मूलगुणेसु असुद्धो, उत्तरगुणेसु असुद्धो।

बितितो – मूलगुणेसु असुद्धो, उत्तरगुणेसु सुद्धो।

ततियो – उत्तरगुणेसु असुद्धो, मूलगुणेसु सुद्धो।

चरिमो – दोसु वि सुद्धो।

पढमभंगे चउगुरुं तवकालविसिट्ठं।

बितिए तं चेव तवविसिट्ठं।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तइयभंगे भयणा – जति वंसकडणातियाते मूलगुणघाति त्ति चउगुरुं कालगुरुं, (अ) घूविया बितिया ते विसोहिकोडि त्ति काउं भासलहुं। एत्थ य सुत्ताणि वा।

यस्मान्मूलगुणोत्तरगुणा आत्मार्थं कृता तस्माच्चरिमः शुद्धः।

अथवा – दूमियाती अत्तट्ठिया सुद्धा, चरिमभंगो विसुद्धो चेव ॥२०५१॥

न केवलं एते वसहीए उवघायकारणा।

अण्णे य इमे –

[1]संठावण [2]लिंपणता, [3]भूमी-कम्मे [4]दुवार [5]संथारे।
[6]थिग्गलकरणे [7]पडिवुज्जणे य [8]दग-णिग्गमे चेव ॥२०५२॥

[9]संकम-करणे य तहा, [10]दग-वात [11]बिलाण होति पिहणे य।
[12]उच्छेव [13]संधिकम्मे, उवघाय उवस्सेते ॥२०५३॥

चत्तारि दारा एगगाहाए वक्खाणेति –

सडितपडिताण करणं, संठवणा लिंप भूमि-कुलियाणं।
संकोयण वित्थरणं, पडुच्च कालं तु दारस्स ॥२०५४॥

अवयवाण साडगो एगदेसखंडस्स पडणं एतेसिं संठवणा, लिंपणं भूमि-कुलियाणं कुड्डं, भूमीए विसमाए समीकरणं भूमि-परिकम्मं, सीतकालं पडुच्च वित्तिण्णदुवारा संकुडा कज्जति, णिवायट्ठा गिम्हं पडुच्च संकुडदुवारा विसाला कज्जति पवायट्ठा ॥२०५४॥

तज्जातमतज्जाता, संथारा थिग्गला तु वातट्ठा।
पडिवुज्जणा तु तेसिं, वासा सिसिरे निवायट्ठा ॥२०५५॥

संथारा तज्जाया उवट्टगा करेंति, अतज्जाया कंबिआया करेंति। थिग्गल ति गिम्हे वातागमट्ठा गवक्खादि छिड्डे करेंति वासासु वा सिसिरेसु वा णिवातट्ठा तेसिं चेव पडिवुज्जणा ॥२०५८॥

दग-णिग्गमो पुव्वुत्तो, संकमो दगवातो सीभरो होति।
तिण्हं परेण लहुगा, थिग्गल उच्छेय जति वारा ॥२०५६॥

दग-णिग्गमो दग-वीणिया, सा य बितिओद्देसगे पुव्वुत्ता। संकमो पयमग्गो, सो वि तत्थेव पुव्वुत्तो। दगवातो सीतभरो, सा य उज्झंवणी भण्णति। मूसगाति-कय-बिलाण पिहणं करेति। परिपेलव च्छातिते णेव्वे गलणं उच्छेवो। कडगस्स य संधी असंवुडा, तीए संवुडकरणं संधिकम्मं। एवं कुड्डस्स वि।

इमं पच्छित्तं– एक्कं थिग्गलं करेति मासलहुं। दोसु दो मासा। तिसु तिण्णि मासा। तिण्ह परेण चउलहुगा, पडिवुज्जणे वि एवं चेव। उच्छेवं जति वारा लिंपति साहति भंडगं वा उड्डेति तति चउलहुगा।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अण्णे भणंति – मासलहुं ॥२०५६॥

दगवाय संधिकम्मे, लहुग विले होंति गुरुग मूलं वा ।
अप्फासु फासुकरणं, देसे सव्वे य सेसेसु ॥२०५७॥

दगवाते संधिकम्मे य एतेसु चउलहुगा । वसिमे विले मूलं, अवसिमे चउगुरुं । "सेसेसु" त्ति – सठवण-लिपण-भूमिकम्मे य अफासुएण देसे सव्वे वा चउलहुं । एतेसु चेव फासुएण देसे मासलहुं ; सव्वे चउलहुं । संथारदुवारे चउलहुं, उदग-वाह-संकमेसु मासलहुं ॥२०५८॥

पच्छा एते मूलुत्तरदोसा केवतिकालं परिहरियव्वा ? उत्तरमाह –

कामं उदुविवरीता, केइ पदा होंति आयरणजोग्गा ।
सव्वाणुवाइ केई, केइ तक्कालुवट्ठाणा ॥२०५८॥

काममवधृतार्थे द्रष्टव्य: । किमवधृतं ? यथा वक्ष्यति ।

"उडुविवरीय" त्ति पूर्वार्धस्य व्याख्या –

हेमन्तकडा गिम्हे, गिम्हकडा सिसिर-वासे कप्पंति ।
अत्तट्ठित-परिभुत्ता, तद्दिवसं केइ ण तु केई ॥२०५९॥

उत्तरगुणोवघाता हेमंतजोग्गा जे कया ते गिम्हे अजोग त्ति काउं कप्पंति । गिम्हे जे कता पवातट्ठा ते सिसिर-वासासु अजोग त्ति काउं कप्पंति । केति दूमितादि गिहीहिं अत्तट्ठिया परिभुत्ता तक्काले चेव कप्पंति । "[1]सव्वाणुवाते केइ" ति - सव्वकालं अणुअत्तंति, तद्दोसभावेन न कदाचित् कल्पंति । ते च मूलगुणा इत्यर्थ: ।

"[2]केइ तक्कालुवट्ठाण" त्ति अस्य व्याख्या –

"अत्तट्ठियपरिभुत्ता तद्दिवसं" । केइ गिहीहिं अत्तट्ठियपरिभुत्ता तद्दिवसं चेव साधूणं कप्पंति ।

अहवा – तं कालं तं उडुं वज्जेउं अण्णकाले उवट्ठायंति, ण उ केति त्ति मूलगुणा । गतार्थम् ॥२०५९॥

सुत्तणिवाओ एत्थं, विसोहिकोडी य णिवयई णियमा ।
एए सामण्णयरं, पविसंताऽऽणाइणो दोसा ॥२०६०॥

दुमितादिएसु सुत्तणिवातो ॥२०६०॥

भवे कारणं –

असिवे ओमोयरिए, रायदुट्ठे भए व आगाढे ।
गेलण्ण उत्तमट्ठे, चरित्तऽसज्झाइए असती ॥२०६१॥

उत्तिमट्ठपडिवण्णओ साहू अण्णा य वसही ण लब्भति, जा य लब्भति सा उत्तिमट्ठपडिवण्णाण पाउग्गा ण भवति, चरित्तदोसो वा अण्णासु वसहीसु, असति णाम णत्थि अण्णा वसहि, बाहिं च असिवाति, तेण ण गच्छंति, अण्णं वा मासकप्पपाउग्गं खेत्तं णत्थि ॥२०६१॥

---

१ गा० २०५८ । २ गा० २०५८ ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आलंबणे विसुद्धे, सत्तदुगं परिहरिज्ज जतणाए ।
आसज्ज तु परिभोगं, जतणा पडिसेह संकमणं ॥२०६२॥

आलंबणं कारणं, विसुद्धे स्पष्टे कारणेत्यर्थः । सत्तदुगं मूलगुणा पट्ठिवंसादि सत्त, उत्तरगुणा वि वंसगादि सत्त, एते वे सत्तगा "परिहरे" णाम परिभुञ्जे, जयणाए पणगपरिहाणीए जदा मासलहुगादि पत्तो । कारणं पुण आसज्ज पडिसेहिय वसहीसु परिभोगं काउकामो अप्पबहुयजयणाए पणगपरिहाणीए जाहे चउगुरुं पत्तो ताहे ॥२०६२॥

इमं अप्पबहुयं –

एगा मूलगुणेहिं, तु अविसुद्धा इत्थि-सारिया बितिया ।
तुल्लारोवणवसही, कारणे कहिं तत्थ वसितव्वं ॥२०६३॥

एगा मूलगुणेहि असुद्धा, अवरा सुद्धा, णवरं-इत्थिपडिबद्धा । दोसु य चउगुरुं कहिं ठाओ॥२०६३॥

एत्थ भण्णति –

कम्मपसंगऽणवत्था, अणुण्णदोसा य ते समतीता ।
सतिकरणभुत्तऽभुत्ते, संकातियरी यऽणेगविधा ॥२०६४॥

आहाकम्मियसेज्जपरिभोगे आहाकम्मे पसंगो कतो भवति-परिभुंजति त्ति पुणो पुणो करेति । एवं प्रसंगः । एगेण आयरिएण एगा आहाकम्मा सेज्जा परिभुत्ता, अण्णे वि परिभुंजंति त्ति अणवत्था कता भवति । परिभुंजतेण य पाणिवहे अणुण्णा कया भवति । एते उक्ता दोषाः । एतेषां प्रति अतिक्रान्ता भवन्ति । इतरी णाम इत्थीपडिबद्धा । ताहे भुत्तभोगीण सतिकरणं अभुत्तभोगीण कोउअं, पडिगमणादी दोसा, गिहीण य संका । एते एतट्ठिया णूणं पडिसेवंति । संकिते ङ्का । णिस्संकिए मूलं । इत्थिसागारिए एवं अणेगे दोसा भवन्ति । तम्हा आहाकम्माए ठायंति ॥२०६४॥

अधवा गुरुस्स दोसा, कम्मे इतरी य होति सव्वेसिं ।
जइणो तवो वणवासे, वसंति लोए य परिवातो ॥२०६५॥

आहाकम्मवसहीए गुरुस्स चेव पच्छित्तं, ण सेसाणं । जतो भणितं "कस्सेयं पच्छित्तं ? गणिणो" । इतरीए इत्थिसागारियाए सव्वसाहूण सति करणादिया दोसा, लोगे य परिवातो "साहु तवोवणे वसंति" अतिशयवचनं ॥२०६५॥

अधवा पुरिसाइण्णा, णातायारे य भीयपरिसा य ।
बालासु य वुड्ढासु य, नातीसु य वज्जइ कम्मं ॥२०६६॥

जा इत्थिसागारिया सा पुरिसाइण्णा पुरिसबहुला इत्यर्थः । ते वि पुरिसा णाताचारा सीलवंता, इत्थियाओ वि सीलवंतीओ भीयपरिसा य ते पुरिसा ।

अहवा – ताओ इत्थियाओ बाला, अप्पत्त-जोव्वणा ।

अहवा – अतीववुड्ढा ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अहवा – तरुणीओ वि तेसिं साहूण णालबद्धा अगम्माओ, एरिसो आहाकम्मं वज्जिज्जति इत्थि - सागारियं ॥२०६६॥

यतश्चैवम् –

तम्हा सव्वाणुण्णा, सव्वनिसेहो य णत्थि समयम्मि ।
आय-व्वयं तुलेज्जा, लाभाकंखि व्व वाणियओ ॥२०६७॥

तस्मात् कारणादेकस्य वस्तुनः सर्वथा सर्वत्र सर्वकालमनुज्ञेति न भवति, नापि प्रतिषेधः । किं तु आय-व्वय तुले यत्र बहुतरगुणप्राप्तिस्तद् भजन्ते वणिजवत् ॥२०६७॥

दव्वपडिवद्ध एवं, जावंतियमाइगासु भइतव्वा ।
अप्पा व अप्पकालं, व ठाउकामा ण दव्वम्मि ॥२०६८॥

एवं दव्वपडिबद्धा सेज्जा जावंतियमातियासु सेज्जासु अप्पबहुत्तेण भइयव्वा । जत्थ अप्पतरा दोसा तत्थ ठायव्वं ।

अहवा – अप्पा ते साहू अप्पं च कालं अच्छिउकामा ताहे दव्वपडिबद्धाए ठायंति, ण जावंतिय सु ॥२०६८॥

जे भिक्खू "णत्थि संभोगवत्तिया किरिय" त्ति वदति;
वदंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६३॥

नास्तीत्ययं प्रतिषेधः, 'सं" एगीभावे "भुज" पालनाभ्यवहारयोः, एकत्रभोजनं संभोगः ।

अहवा – समं भोगो संभोगो यथोक्तविधानेनेत्यर्थः । संभुंजते वा संभोगः, संभुज्जते वा, स्वस्य वा भोगः संभोगः । एवं उवस्सग्गवसा अत्थो वत्तव्वो । "वत्तिया" प्रत्यया क्रिया कर्मवन्धः । जो एवं वयति भाषते तस्स मासलहुं । एस सुत्तत्थो ।

इयाणिं णिज्जुत्ती –

संभोगपरूवणता सिरिघर-सिवपाहुडे य संभुत्ते ।
दंसण णाण चरित्ते, तवहेउं उत्तरगुणेसु ॥२०६९॥

[1]"संभोगपरूवण" त्ति अस्य व्याख्या –

ओह अभिग्गह दाणं, गहणे अणुपालणा य उववातो ।
संवासम्मि य छट्ठो, संभोगविधी मुणेयव्वो ॥२०७०॥

ओहद्दारस्स इमे बारस पडिदारा –

उवहि सुत भत्त पाणे, अंजलीपग्गहेति य ।
दावणा य णिकाए य, अब्भुट्ठाणेति यावरे ॥२०७१॥

१ गा० २०६६ ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कितिकम्मस्स[८] य करणे, वेयावच्चे[९] करणेति य ।
समोसरण[१०] सणिसेज्जा[११], कधाए[१२] य पबंधणे ।।२०७२।।

उवहि त्ति दारस्स इमे छ पडिदारा –

उग्गम[१] उप्पादण[२] एसणा[३] य परिकम्मणा[४] य परिहरणा[५] ।
संजोय[६]-विहि-विभत्ता, छट्ठाणा होंति उवधिम्मि ।।२०७३।।

तत्थ "[१]उग्गम" त्ति दारं अस्य व्याख्या –

समणुण्णेण मणुण्णो, सहितो सुद्धोवधिग्गहे सुद्धो ।
अह अविसुद्धं गेण्हति, जेणऽविसुद्धं तमावज्जे ।।२०७४।।

संभोतितो संभोइएण समं उवहिं सोलसेहिं आहाकम्मतिएहिं उग्गमदोसेहिं सुद्धं उप्पाएति तो सुद्धो । अह असुद्धं उप्पाएति जेण उग्गमदोसेण असुद्धं गेण्हति तत्थ जावतिओ कम्मबंधो जं च पायच्छित्तं तं आवज्जति ।।२०७४।।

एगं व दो व तिण्णि व, आउट्टं तस्स होति पच्छित्तं ।
आउट्टंते वि ततो, परेण तिण्हं विसंभोगो ।।२०७५।।

संभोइओ असुद्धं गेण्हंतो चोइओ भणाति – "संता पडिचोयणा, मिच्छामि दुक्कडं, ण पुणो एवं करिस्सामो" एवं आउट्टे जमावण्णो तं पच्छित्तं दाउं संभोगो ।

एवं बितियवाराए वि, ततियवाराए वि ।

एवं ततियवाराओ परेणं चउत्थवाराए तमेव अतियारं सेविऊण आउट्टंतस्स वि विसंभोगो।।२०७६।।

णिक्कारणे अमणुण्णे, सुद्धासुद्धं च जो उ उग्गोवे ।
उवधि विसंभोगो खलु, सोधी वा कारणेसुद्धो ।।२०७६।।

णिक्कारणे अमणुण्णो अण्णसंभोतितो, तेण समाणं सुद्धं असुद्धं जो उवहिं "उग्गोवेति" त्ति - उप्पाएति सो जति चोइतो णाउट्टति तो पढमवाराए चेव विसंभोगो, खलु अवधारणे, अह आउट्टति तो सोही संभोगो य, एवं तिण्णि वारा परतो विसंभोगो कारणे अण्णसंभोतितेण समाणं उवहिं उप्पाएंतो सुद्धो ।।२०७७।। एवं पासत्थाइएहिं गिहिहिं आहाछंदेहि य समाणं उग्गतेण सुद्धं असुद्धं वा ।

उप्पाएंतस्स इमं पच्छित्तं –

संविग्गमण्णसंभोगिएहि पासत्थमाइ य गिहीहिं ।
संघाडगम्मि मासो, गुरुग अहाछंद जं च ऽण्णं ।।२०७७।।

संविग्गेहिं अण्णसंभोतिएहिं पासत्यातिसु गिहीसु य मासलहुं पच्छित्तं । अहाच्छंदे मासगुरुं, अण्णे भणंति – चउगुरुं । "जं चऽण्णं" ति जं तेहिं समं असुद्धं गेण्हीहि ति जं च हेट्ठा भणियं – "पासत्थस्स संघाडगं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

देति" तं च आवज्जति । जं च अहाछंदो अहाच्छंदप्पण्णवणं पण्णवेज्जा, तं गेण्हेजा, अह तुण्हिक्को अच्छति तो अणमोयणा पडिघाए अधिकरणादि ।।२०७७।।

संजतिवग्गे चेवं, समणुण्णितराण णवरि सव्वासिं ।
संविग्गासंविग्गाण, होंति णिक्कारणे गुरुगा ।।२०७८।।

जति संजतीहिं संविग्गाहिं असंविग्गाहिं वा संभोइयाहिं असंभोइयाहिं वा समाणं उग्गमेण सुद्धं असुद्धं वा उवधिं उप्पाएति तो चउगुरुगं ।।२०७८।। एवं ताव पुरिसाण गतं ।

इत्थीण भण्णति –

एमेव संजतीण वि, संजतिवग्गे गिहत्थवग्गे य ।
साधम्मि एतरासु य, णवरं पुरिसेसु चउगुरुगा ।।२०७९।।

संजतीण इत्थिवग्गे जहा साधूण पुरिसवग्गे तहा वत्तव्वं । जहा साधूण इत्थिवग्गे तहा तेसिं पुरिसवग्गे वत्तव्वं । साहम्मगहणातो साहू, इतरग्गहणातो गिहत्था, णवरं-पुरिसवग्गे तेसिं चउगुरुगादि ।।२०७९।।

संघाडं दाऊणं, आउट्टंतस्स एक्कतो तिण्णि ।
ण होति विसंभोगो, तेण परं णत्थि संभोगो ।।२०८०।।

एवं असंभोतितातियाण संघाडगं दाऊण पडिचोइओ आउट्टो मासलहुं संभोगो य ।
बितियवाराए वि चोतिओ आउट्टस्स मासलहुं संभोगो य ।
ततियवाराए वि चोतिओ आउट्टस्स मासलहुं संभोगो य ।
चउत्थवाराए जइ देति संघाडयं तो पच्छित्तवुड्ढी मासगुरुं विसंभोगो य ।।२०८०।।

सीसो पुच्छति – पच्छित्तवुड्ढी कतिप्पगारा ?

आयरियाह –

पच्छित्तस्स विवड्ढी, सरिसट्ठाणातो विसरिसे तमेव ।
तप्पभिती अविसुद्ध मादी संभुंजतो गुरुगा ।।२०८१।।

पच्छित्तस्स वुड्ढी दुविधा – सट्ठाणवुड्ढी परट्ठाणवुड्ढी य ।

तत्थ सट्ठाणवुड्ढी तिण्णि वारा मासलहू चउत्थवाराए तमेव मासगुरुं । एवं चउलहुओ चउगुरुं छल्लहुओ छग्गुरुं । एस सट्ठाणवुड्ढी ।

परट्ठाणवुड्ढी विसरिसं –

जहा मासलहुयाओ दोमासियं, दुमासातो तेमासितं, एवं सव्वा विसरिसा परट्ठाणवुड्ढी । तओ वारा अमायी, ततो परतो णियमा मायी अविसुद्धो य, सो विसंभोगी कज्जति । जो तं संभुंजति तस्स चउगुरुगा ।।२०८१।।

एमेव सेसगाण वि, अवराहपयाणि जाव तप्पभितिं ।
आउट्टिऊण पुणरवि, णिसेवमाणे विसंभोगो ।।२०८२।।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अणिद्दिट्ठसरूवेसु सेसेसु अवराहपदेसु सव्वेसु सट्ठाणपच्छित्तं, तिण्णि वारा आउट्टिऊणं पुणरवि चउत्थवाराए णिसेविणो सट्ठाणवुड्ढी वा परट्ठाणवुड्ढी वा पच्छित्तस्स भवति विसंभोगो य ।।२०८२।।

स किमवि कातूणऽधवा सुहुमं बा बादरं व अवराहं ।
णाउट्ट विसंभोगो, असद्दहंते असंभोगो ।।२०८३।।

अहवा – एक्कसि सुहुमं बादरं वा अवराहपदं काऊण जो ण आउट्टत्ति सो वि विसंभोगी कज्जति, जो वा एयं उग्गमदारत्थं परूवियं ण सद्दहति सो वि असंभोगी कज्जति ।।२०८३।। उग्गमे त्ति दारं गतं ।

[1]इदाणिं "उप्पायण-एसण" त्ति दो दारा –

उप्पायणेसणासु वि, एमेव चउक्कओ पडोयारो ।
पुरिसाण पुरिस-इत्थिसु, इत्थीणं इत्थि-पुरिसेसु ।।२०८४।।

चउक्कओ इमो पडोयारो –

पुरिसा पुरिसेहिं संभोइया - अण्णसंभोतिएहि पासत्थाति ।

अहवा – गिहत्थ अहाच्छंदेहिं समं एक्को पडोयारो ।

पुरिसा इत्थियाहि संभोतिय - अण्णसंभोतिय - गिहत्थीहिं समं बितितो गमो ।

इत्थिया इत्थियाहिं संभोतिय - अण्णसंभोतिय - गिहत्थीहिं समं तइओ पडोयारो ।

इत्थिया पुरिसेहिं संभोतिया - संभोतिएहि सव्वेहिं समं चउत्थो पडोयारो ।

"उप्पायण-एसण" त्ति अभिलावो कायव्वो । शेषं पूर्ववत् ।।२०८७।।

इदाणिं "परिकरणे" त्ति दारं ।

पडिकम्मणा णाम जं उवहिं पमाणप्पमाणेणं संजयपाउग्गं करेति ।

एत्थ चत्तारि भंगा –

परिकम्मणे चउभंगो, कारणविधि बितिओ कारणाअविधी ।
णिक्कारणम्मि य विधी, चउत्थो णिक्कारणे अविधी ।।२०८५।।

कारणे विधीए परिकम्मेति ।।१।। कारणे अविधीए परिकम्मेति ।।२।।
णिक्कारणे विधीए ।।३।। णिक्कारणे अविधीए । ङ्क ।।२०८५।।

कारणमणुण्ण-विधिणा, सुद्धो सेसेसु मासिया तिण्णि ।
तवकालेहि विसिट्ठा, अंते गुरुगा य दोहिं वि ।।२०८६।।

एत्थ पढमभंगो अणुण्णातो । तेण परिकम्मंतो सुद्धो । सेसेहिं तिहिं भंगेहि मासलहुं तवकालविसिट्ठा । अंतिमभंगे दोहिं वि गुरुं ।।२०८६।।

कारणमकारणे वा, विहि अविहीए उ मासिया चउरो ।
संविग्गअण्णसंभोइएसु गिहिणं तु चउलहुगा ।।२०८७।।

---

१ गा० २०७३ ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

न। अपवादकारणमत्र गृहीतव्यम्। उवधेः प्रयोजनमत्र ग्राह्यम्। अतो भणति – संविग्गेहिं अण्ण-संभोतिएहिं समं कारणे विधीए अविधीए वा, णिक्कारणे विधिए अविधिए वा चउसु भंगेसु चउरो मासिया हवंति, गिहिपासत्थाइएहिं समं चउलहुगा चउरो, अहाच्छंदेहिं समं चउगुरुगा चउरो। सव्वे तवकाल-विसेसिता ॥२०८७॥

समणुण्ण-संजतीणं, परिकम्मेऊण गणहरो देति।
संजति-जोग्ग विधीए, अविधीए चउगुरू होंति ॥२०८८॥

संभोतियाणं संजतीणं उवधि विहिणा संजतिपाउग्गं गणहरो परिकम्मेत्ता देंतो य सुद्धो। अह अविधीए परिकम्मेत्ता देति तो चउगुरु ॥२०८८॥

पासत्थि अण्णसंभोइणीण विहिणा उ अविहिणा गुरुगा।
एमेव संजतीण वि, णवरिं मणुण्णेसु वी गुरुगा ॥२०८९॥

पासत्थादीहिं असंभोतिताहिं संजतीहिं संभोइयाहिं वा गिहत्थीहिं वा कारणे विधीए अविधीए वा, णिक्कारणे विधीए अविधीए वा उवधिं परिकम्मेति चउगुरुं तवकालविसिट्ठं। एवं संजतीण वि संजतीहिं समाणं परिकम्मणं करेंतीणं। संजतीओ पुरिसाण परिकम्मेउं ण देंति, ण वा तेहिं समाणं परिकम्मेउं देंति। अध परिकम्मेउं देंति, तेहिं वा समाणं परिकम्मेंति तो समणुण्णेसु वि चउगुरुगा तवकालविसिट्ठा ॥२०८९॥ "परिकम्मणे" त्ति गतं।

इदाणिं "[1]परिहरणे" त्ति दारं। परिहरणा णाम परिभोगो।
कारणे विधीए परिभुंजात।१। कारणे अविधीए।२।
णिक्कारणे विधीए।३। णिक्कारणे अविधीए।४।

विधिपरिहरणे सुद्धो, अविहीए मासियं मणुण्णेसुं।
विधि अविधि अण्णमासो लहुगा पुण होंति इतरेसुं ॥२०९०॥

"मणुण्णेसुं" ति संभोतितेसु समाणं पढमे भंगे उवकरणं परिभुंजतो सुद्धो, सेसेसु तिसु भंगेसु मासलहुं तवकालविसिट्ठं। अण्णसंभोइएसु समाणं उवकरणं परिभुंजति। चउसु वि मासलहुं तवकालविसेसियं। "इयरेसु" त्ति पासत्थाइसु गिहीसु य समं उवकरणपरिभोगे चउसु वि चउलहुगा तवकालविसेसिया। अहाच्छंदेसु चउगुरुं तवकालविसेसियं ॥२०९०॥

संजतिवग्गे गुरुगा, एमेव य संजतीण जतिवग्गे।
णवरिं संजतिवग्गे, जह जतिणं साहुवग्गम्मि ॥२०९१॥

संजति-गिहत्थीहिं समाणं चउसु वि भंगेसु चउगुरुगा तवकालविसिट्ठा। जहा संजयाण संजतीवग्गे भणियं एवं संजतीण संजयवग्गे वत्तव्वं, णवरं- संजतीणं गिहत्थीहिं पासत्थीहिं संजतीहिं समाणं परिभोगविधी भणियव्वो, जहा संजयाण साधुवग्गे भणितं तहा भणियव्वं ॥२०९१॥ "परिहरण" त्ति दारं गतं।

---

१ गा० २०७३।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इदाणिं "[१]संजोयण" त्ति दारं –

दस दुयए संजोगा, दस तियए चउक्कए उ पंचगमा ।

एक्को य पंचगमी, णवरं पच्छित्त-संजोगा ॥२०६२॥

दस दुयसंजोया, दस तियसंजोया, पंच चउक्कसंजोया, एक्को पंचग-संजोगो । तत्थ दस दुग्र संजोग्रा संभोतितो संभोतिएण समं उग्गमेण उप्पादणाए य सुद्धं उवहि उप्पादेति । संभोतितो संभोइएण समं उग्गमेण एसणाए य सुद्धं उवधिं उप्पाएति ।२। एवं परिकम्मणा ।३। परिहरणा ।४ङ्क। एते उग्गमं ग्रमुयंतेण लद्धा । एवं उप्पायणं ग्रमुयंतेहिं तिण्णि लब्भंति । एसणं ग्रमुयंतेहिं दो लब्भंति । परिकम्मणपरिभोगे एक्को । एते सव्वे दसदुगसंजोग्रा ।

इदाणिं तिय-संजोया भण्णंति –

संभोतिग्रो संभोतिएण सह उग्गमउप्पादणेसणा सुद्धं उवहिं उप्पाएत्ति, एवं उग्गमउप्पायण-परिकम्मणाए वि ।२।, उग्गमउप्पायण परिहरणाए वि ।३। एवं उवज्जिऊण दस तिगसंजोगा भाणियव्वा । तहा पंच चउक्कसंजोगा भाणियव्वा । एगो य पंचगसंजोगो भाणियव्वो । एवं एते छत्तीसं भंगा ॥२०६२॥ एत्थ संभोइए समाणं सव्वत्थ सुद्धो ।

इदाणिं ग्रण्णसंभोतियातीहिं भाणियव्वं । तस्य ज्ञापनार्थमिदमुच्यते –

संजोय-विधि-विभागे, चउपडोयारो तहेव गमग्रो उ ।

समणुण्णाऽसमणुण्णा, इतरे एमेव इत्थी वि ॥२०६३॥

संजोग एव विधि, उग्गमादिभेदमपेक्ष्य स विधिविकल्पो भवति । तस्य विभागे क्रियमाणे छव्वीसं भंगा भवंति । एतेसु एक्के भंगे चउप्पडोयारो गमग्रो, जहा उग्गमदारे तहा विस्तरेणात्रापि ।

तथापि स्मरणार्थं संक्षेपेण इदमाह –

"समण" त्ति । साधू, ते समणुण्णा ग्रमणुण्णा, 'इतरे' गिहिपासत्थादि ग्रहाच्छंदो य, एस एक्को पडोयारो । पुरिसाणं इत्थीहिं बितिग्रो । एमेव इत्थीहिं वि दो गमा – इत्थीणं इत्थीहिं, इत्थीणं पुरिसेहिं । एत्थ संजोगपच्छित्तं, जहा दुगसंजोगे जं उग्गमदोसे उप्पायणादोसे य एते दो वि दायव्वा, एवं सेसभंगेसु वि संजोगपच्छित्तं ॥२०६३॥ "उवहि" त्ति दारं गयं ।

इदाणिं "सुत्ते" त्ति दारं –

[१]वायण [२]पडिपुच्छण, [३]पुच्छणा य [४]परियट्टणा य [५]कधणा य ।

[६]संजोग-विधि-विभत्ता, छट्ठाणा होति उ सुतम्मि ॥२०६४॥

संभोतितो संभोइयं विधिणा वाएति सुद्धो । ग्रविधीए ग्रणिसिज्जं ग्रपात्रं पात्रं वा ण वाएति, एवं ग्रविधीए वायंतस्स पच्छित्तं ॥२०६४॥

ग्रसंभोतिगो वा –

ग्रण्णे वायण लहुगो, पासत्थादीसु लहुग गुरुगा य ।

सट्ठाणे इत्थीसु वि, एमेव-विवज्जए गुरुगा ॥२०६५॥

१ गा० २०७३ ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अण्णं संभोइयं अविधिमागयं अणुवसंपण्णं वा वाएति मासलहुं, पासत्थादी गिही वा वाएति चउलहुं, अहाच्छंदं वाएंतस्स चउगुरुगा - एस एक्को पडोयारो – बितिओ इत्थीणं इत्थीवग्गे एयं चेव पच्छित्तं जं पुरिसाणं सट्ठाणे। विवज्जते गुरुगा। पुरिसाणं इत्थीवायणाए चउगुरुगा ततिओ गमो। इत्थीणं पुरिसवायणाए चउगुरुगा चेव, चउत्थो गमो। वायणा गता।

इदाणिं "[1]पडिपुच्छणे" त्ति एत्थ वि चत्तारि - पडोयारा पायच्छित्ता भाणियव्वा।

एवं "पुच्छणाए" वि चत्तारि पडोयारा।

"परियट्टणाए" वि चत्तारि पडोयारा।

"अणुओगकहणाए" वि चत्तारि पडोयारा।

संजोग एव विधिः, सो छत्तीसतिभंगविभागेण विभत्तो, एत्थ वि चत्तारि पडोयारा ॥२०९५॥

इदाणिं एतेसु वायणादिसु साववातं विशेषमाह –

पडिपुच्छं अमणुण्णे, वि देंति ते वि यतओ पडिच्छंति।
अण्णासती अमणुण्णीण देंति सव्वाणि वि पदाणि ॥२०९६॥

अमणुण्णे पडिपुच्छं देति, ते वि अमणुण्णा ततो पडिपुच्छं दिज्जंतं पडिच्छंति न दोषः। संजतीण जइ आयरियं मोत्तुं अण्णा पवत्तिणीमाती वायंती णत्थि, आयरिओ वायणातीणि सव्वाणि एताणि देति न दोषः ॥२०९६॥ "सुत्ते" त्ति दारं गतं।

इदाणिं "[2]भत्त-पाणे" त्ति दारं –

उग्गम[1] उप्पायण[2] एसणा[3] य संभुंजणा[4] णिसिरणा[5] य।
संजोग[6]-विधि-विभत्ता, भत्ते पाणे वि छट्ठाणा ॥२०९७॥

अस्य व्याख्या सदृशस्यातिदेशः –

जो चेव य उवधिम्मि, गमो तु सो चेव भत्त-पाणम्मि।
भुंजणवज्ज मणुण्णे, तिण्णि दिणे कुणति पाहुण्णं ॥२०९८॥

जहा उवहिम्मि उग्गम-उप्पायण-एसणासु भणियं चउपडोयारं तहा इहापि भाणियव्वं भुंजणमेगं दारं वज्जेउं। णवरं - आहारे पि अभिलावविसेसो।

इदाणिं "[3]भुंजणे" त्ति दारं – समणुण्णो समणुण्णेण समं भुंजंतो सुद्धो, समणुण्णे य तिण्णि दिणे पाहुण्णं करेति, अह ण करेति अविधीए भुंजति[?] अपरिहेण वा कुट्ठ-क्खयाति-सहिएण समं भुंजति तो चउलहुं विसंभोगो य। अण्णसंभोइएण समं भुंजति मासलहुं, तस्स वि तिण्णि दिणे पाहुण्णं करेति ॥२०९८॥

इमेण विधिणा –

ठवणाकुले व मुंचति, पुव्वगतो वा वि अहव संघाडं।
अविसुद्ध भुंजगुरुगा, अविगडितेणं च अण्णेणं ॥२०९९॥

१ गा० २०९४। २ गा० २०७१। ३ गा० २०९७।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ठवणकुले वा मुंचति, सड्ढाइ ठवणकुलेसु वा पुव्वगतो दव्वावेति, ग्रहवा – संघाडयं देति । 'ग्रविगडियेणं च ग्रण्णेणं'' त्ति ग्रह ग्रण्णसंभोतिएण समं ग्रणाभोतिए एगमंडलीए भुंजति तो मासलहुं तिण्णि वारा, परतो मासगुरुं विसंभोगे य । जो तं ग्रविसुद्धं भुंजति तस्स चउगुरुगा । एवं जत्थ चउलहुगा तस्स तिण्णि वारा ग्राउट्टंतस्स चउलहुं चेव, चउत्थवाराए चउलहुगा विसंभोगो य । जो त ग्रविसुद्धं भुंजति तस्स चउलहुगा । एवं जत्थ चउगुरुं तत्थ ग्राउट्टंतस्स तिण्णि वारा चउगुरुं चेव, चउत्थवाराए छल्लहुं । जो तं संभुंजति तस्स चउगुरुं । एवं सव्वतवारिहेसु वत्तव्वं ॥२०९९॥

समणि मणुण्णी छेदो, ग्रमणुण्णी भुंजणे भवे मूलं ।
पासत्थे केयि छल्लहु, सच्छंदेणं तु छग्गुरुगा ॥२१००॥

समणीए मणुण्णाए समं एगमंडलीए भुंजति छेदो, ग्रण्णसंभोतिणीए मूलं, पासत्थादि-गिहत्थेसु चउलहुयं, ग्रहच्छंदे चउगुरुयं ।

केइ ग्रायरिया भणंति–पासत्थाइगिहत्थेसु छल्लहुं, ग्रहच्छंदे छग्गुरुं । जहा साधूण सपक्ख-परपक्खेसु भणियं, एवं संजतीण वि सपक्ख-परपक्खेसु वत्तव्वं ॥२१००॥ 'भुंजणे'' त्ति गतं ।

इदाणिं ''[1]णिसिरणे'' त्ति दारं –

समणुण्णस्स विधीए, सुद्धो णिसिरंतो भत्त-पाणं तु ।
ग्रमणुण्णेतरसंजति, लहुग्रो लहुगा य गुरुगा य ॥२१०१॥

समणुण्णो संभोतितो, तस्स ग्रासण्णा बलियविधीए णिसिरंतो सुद्धो । ''ग्रमणुण्णेयर'' त्ति – पासत्थाती गिहत्था य, ग्रहाछंदा संजतीग्रो य । जहा संख पच्छित्तं – लहुग्रो लहुग्रा ग्रधाच्छंदसंजतीसु गुरुगा । एवं संजतीण वि सपक्ख-परपक्खेसु णिसिरणं पच्छित्तं च वत्तव्वं ॥२१०१॥

भुंजण-वज्ज-पदाणं, कज्जे ग्रणुण्णातु ग्रधव थी-वज्जा ।
ग्रण्णे भायण ग्रसती, इतरे व सति सढे वा वि ॥२१०२॥

ग्रण्णसंभोइयाईणं भुंजणपदं वज्जेऊणं ग्रण्णेसु सव्वपदेसु ग्रसिवादि-कज्जेसु ग्रणुण्णा, भोयणे वि ग्रणुण्णा, कारणे इत्थीग्रो मोत्तूण । 'ग्रण्णे'' त्ति ग्रण्णसंभोतिया, तेसिं भायणस्स ग्रसतीए ।

कहं पुण भायणस्स ग्रसती होज्जा ? तेसु सिया ग्रण्णसंभोतियाण साहूण सगासमागता तेसिं च भायणाणि भरियाणि ताहे ग्रोहेणालोएत्ता एगट्ठं भुंजति । ''इतरे'' णाम पासत्थातीहिं तेहिं समं एरिसा चेव भायणाण ग्रसती होज्जा ते वा साधूहिं समं भुंजेज ।

ग्रहवा – एरिसा चेव भायणा ग्रसतीए ग्रण्णसंभोइयाहिं समं संखडीए उवट्ठिया तत्थ तेण संखडित्तेण भोयणं सव्वेसिं णिसट्ठं, ग्रण्णसंभोतियाति-भायणेसु गहियं ''सढे वा वि'' त्ति – सढा भणेज्ज – ''उड्डेह भायणाणि'' जाहे भागो दिज्जति ।

ग्रहवा – ग्रम्हेहिं समं भुंजह ते जाणंति न एते ग्रम्हेहिं समं भुंजिहिंति, एयं भत्तपाणं सव्वं ग्रम्हं चेव होति, एते सढा णाऊणं भायणेसु वा गेण्हे एगट्ठं वा भुंजे ॥२१०२॥ ''भत्तपाणे'' त्ति गयं ।

---

[1] गा० २०३७ । [2] गा० २०७१ ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इदाणिं "अंजलिपग्गहे" त्ति दारं –

वंदिय[1] पणमिय[2] अंजलि[3], गुरुगालावे[4] अभिग्गह णिसिज्जा[5] ।
संजोग[6]-विधि-विभत्ता, अंजलि पगहे वि छट्ठाणा ॥२१०३॥
पणवीसजुतं पुण, होइ वंदणं पणमितं तु मुद्धेणं ।
हत्थुस्सेह णमो त्ति य, णिसज्ज करणं च तिण्हट्ठा ॥२१०४॥

पणवीसावसयजुत्तं वंदणं – गाहा–चउसिरं बारसावत्तं, दुपवेसं दुओणयं तिगुत्तं च ।
अहाजायं णिक्खमेगं, वंदणयं पणवीसजुयं ।
मुद्धाणं सिरं तेण पमाणकरणं भण्णति, एगेण वा दोहिं वा मउलिएहिं हत्थेहिं णिडालसंठितेहिं अंजली भण्णति । भत्ति-बहुमाण-णेह-भरितो सरभसं "णमो खमासमणाणं ति" तो गुरुआलावो भण्णति । णिसज्जकरणं तिण्हट्ठा सुत्तपोरिसीए अत्थपोरिसीए ततिया आलोयण णिमित्तं अवराहालोयणा पक्खियाइसु वा एसा अभिग्गह-णिसेज्जा भण्णति । एयाणि सव्वाणि संभोइयाणं अण्णसंभोइयाण य संविग्गाणं करेंतो सुद्धो ॥२१०४॥

पासत्थाइयाण करेति, संविग्गाण ण करेति तो इमं पच्छित्तं –

इतरेसु होंति लहुगा, संजति गुरुगा य जं च आसंका ।
सेसाऽकरणे लहुओ, लहुगा वत्थुं वा आसज्ज ॥२१०५॥

इतरा पासत्थाइया गिहत्था य, तेसु वंदणं करेंतस्स चउलहुं, जति संजतीण वंदणं करेति तो चउगुरुगं, 'जं च" त्ति अन्यच्च आसंका भवति किं मेहुणत्थी, अह कुवियं पसादेति ।

अहवा – जं च आसंकिते पच्छित्तं च पावति, संकिते छ्क, णिस्संकिते मूलं । सेसाणं-संभोतियाअसंभोतिताणं संविग्गाणं वंदणस्स अकरणे मासलहुं, आयरियाति-वत्थुं वा आसज्ज चउव्विहं भवति–आयरियस्स वंदणं ण करेति चउलहुं, उवज्झायस्स ण करेति मासगुरुं, भिक्खुस्स मासलहुं, खुड्डस्स भिण्णमासो ॥२१०५॥

अविरुद्धा सव्वपदा, उवस्सए होंति संजतीणं तु ।
अतिथिरपत्तगुरुम्मि य, बहिया गुरुगा य आणादी ॥२१०६॥

साधु-उवस्सए पक्खियातिसु आगताण संजतीण वंदणातिया पदा सव्वे अविरुद्धा भवंति । अह बाहिं भिक्खादिगताओ वंदणादि करेंति तो चउगुरुगा आणादिया य दोसा, संकातिया य ।

किं ण पमाणेण विण्णवितो होज्ज ? सपक्खे पुण बहिणिग्गता वंदणाति-करेंति जह साहू साहूणं । संजोगे छव्वीसं भंगा ॥२१०६॥ "अभिग्गह-णिसज्ज" त्ति गतं ।

इदाणिं "[1]दावणं" त्ति दारं –

सेज्जो[1]वहि[2] आहारे[3], सीसगणाणुप्पदाण[4] सज्झाए[5] ।
संजोग[3]-विहि-विभत्ता, दवावणाए वि छट्ठाणा ॥२१०७॥

सेज्जोवहि आहारो एते तिण्णि जहा णिसिरणद्दारे, सज्झाओ जहा सुत्तद्दारे ॥२१०७॥

गा० २०६१ ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सीसगणाणुप्पताणे त्ति अस्य व्याख्या –

सीसगणम्मि विसेसो, अण्णेसु वि कारणे हरा लहुओ !
इयरेसि देंति गुरुगा, संजतिवग्गे य जो देति ॥२१०८॥

सीसगणाणुप्पयाणं एक्के विसेसो, सेसा दो पूर्ववत् ।

"अण्णे" त्ति अण्णासंभोतिया, तेसु सुप्र-वत्थाइयेहिं संगहं कातुं असत्तेसु एएण कारणेण देंतो सुद्धो, इहर त्ति णिक्कारणा सीसगणं देंति तो मासलहुं, पासत्थादीण देति चतुगुरुगा, जति संजतिवग्गे संजतिं देति तस्स वि चतुगुरुगं ॥२१०८॥

समणी उ देति उभयं, जतीण जतो वि सिस्सिणी तीए ।
छंदनिकाय निमंतण, एगट्ठा तत्थ वि तहेव ॥२१०९॥

समणी संभोइयाण उभयं पि देति सुद्धा । उभयं पि णाम सीसं सीसिणिं । "जतो" त्ति-साधू, सो वि संभोतियाए संजतीए सिस्सिणिं देंतो सुद्धो । "दावणं" ति गयं ।

इयाणिं "[१]णिकायण" त्ति दारं –

"छंदणं ति वा "णिकायणं" त्ति वा "णिमंतणं" त्ति वा एगट्ठं ॥२१०९॥

सेज्जोवहि[१] आहारे[२], सीसगणाणुप्पदाण[३] सज्झाए[४] ।
संजोग[५]-विधि-विभत्ता[६], णिकायणाए वि छट्ठाणा ॥२११०॥

जहेव दावणा-दारं, तहेव णिकायणा-दारं पि अविसेसं भाणियव्वं ॥२११०॥ णिकायण त्ति गयं ।

इयाणिं "[२]अब्भुट्ठाणे" त्ति दारं ।

तस्सिमाणि छद्दाराणि –

अब्भुट्ठाणे[१] आसण[२], किंकर[३] अब्भासकरण[४] अविभत्ती[५] ।
संजोग[६]-विधि-विभत्ता, अब्भुट्ठाणे वि छट्ठाणा ॥२१११॥

जह चेव य कितिकम्मे, तह चेव य होति किंकरो जाव ।
सव्वेसिं पि भुताणं, धम्मे अब्भासकरणं तु ॥२११२॥

अब्भुट्ठाणादिया-जाव-किंकरो एते तिण्णि दारा जहा कितिकम्मं तहा वत्तव्वं । एत्थ पुण कितिकम्मं-वंदणं, तं च पज्जायवयणेण अंजलिपग्गहो भणिओ, आयरियस्स छंदं अणुवत्तति-किं करेमि त्ति किंकरः, गिलाणस्स पाहुणयस्स य आगयस्स भणाति–संदिसह विस्सामणादि किं करेमि त्ति ।

"[३]अब्भासकरण त्ति दारं – अभ्यासे वर्तयति अभ्यासवर्ती, अभ्यासं करोतीत्यर्थः । सव्वेसिं पि चउव्विह-समण-संघातो जो सामत्थे करेंतो सुद्धो अकरेंतस्स पच्छित्तं विसंभोगो य ।

---

१ गा० २०३१ । २ गा० २०७१ । ३ गा० २१११ ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इदाणिं "[1]अविभत्ती दारस्स" इमं वक्खाणं –

भुंजण-वज्जा अण्णे, अविभत्ती इतर लहुग गुरुगा य।
संजति थेर-विभत्ती, माता इतरीसु गुरुगा उ ॥२११३॥

एगट्ठभोयणं मोत्तूण अण्णसंभोतिताण वि अविभत्तिं करेंतो सुद्धो, पासत्थाइगिहत्थेसु जइ अविभत्तिं करेति तो चउलहुगा, अहच्छंदे चउगुरुगा, संजतीण जा थेरी संविग्गा तीसे इमेरिसी अविभत्ती कायव्वा-तुमं मम माया वा भगिणी वा जारिसी, णाहं तुज्झ अप्पणो मायाए भइणीए वा विसेसं मण्णामि। "इयरीसु" त्ति पासत्थाइयासु गिहत्थीसु अविभत्तिं करेति चउगुरुगा, संविग्गासु तरुणिसजतीसु जइ अविभत्तिं करेति असुद्ध-भावितो चउगुरुगा, अह च सुद्धभावो करेति तो सुद्धो ॥२११३॥ "अब्भुट्ठाणे" त्ति गयं।

इयाणिं "[2]कितिकम्मस य करणं" त्ति दारं।

तस्स इमाणि छद्दाराणि –

सुत्ता[1]यामसिरोणत[2,3], मुद्धाणं[4] सुत्तवज्जियं[5] चेव।
संजोग[6]-विधि-विभत्ता, छद्दाणा होंति कितिकम्मे ॥२११४॥
सुत्तं कड्ढति वेट्ठो, उट्ठ-णिवेसादि ण तरती काउं।
आयामे पुण वेट्ठो, करोति बितिओ ससुत्तपरो ॥२११५॥

जो साहू वाएण गहितो उट्ठेऊण णिवेसिउं वा ण सक्केति, हत्थावि से वातेण गहिता चालेऊ ण तरति, ताहे सो आवत्ते दाउं असत्तो णिविट्ठो चेव वंदणगसुत्तं अक्खलियादि प्रतिपदं कड्ढति। सुत्ते त्ति गत।

इदाणिं "[3]आयाम" त्ति अस्य व्याख्या –

आयामे पच्छद्धं। उट्ठेउं णिवेसिउं वा असत्तो उवविट्ठो चेव आवत्ते ससुत्ते करेउं तरति।

अहवा – पूर्वात् (अ) क्लिष्टतरो यस्मात् स सूत्रानावर्तान् करोति ॥२११५॥ आयामे त्ति गतं।

इदाणिं "[4]सिरोणय" ति दारं, अस्य व्याख्या –

रातिणिय-सारिअतरणं, सिरप्पणामं करेति ततिओ उ।
महुरोगी आयामें, मुद्ध समत्ते ऽधव गिलाणो ॥२११६॥

कम्मि य गच्छे कस्स ति साहुस्स ओमरातिणिओ आयरिओ होज्ज, तेणं आयरिएणं मज्झिमए वंदणए रातिणियस्स वंदणं दायव्वं, तेण य रातिणिएणं सो आयरिओ वुत्तओ होज्ज – मा तुमं मम वंदणयं देज्जह, मा सेहा परिभविस्संति त्ति काउं, ताहे सो सिरेणं पणामं करेति, सुत्तं उच्चारेउं, सागारिए वा सुत्तं अणुच्चारेऊणं सिरप्पणामं करेति। "अतरणे" त्ति - गिलाणो, सो वि एवं चेव। "सिरोणयं" ति गयं।

इदाणिं "[5]मुद्धाणं" – समत्ते वंदणे जं आयरिओ पणामं करेति एयं मुद्धाणं अह व असत्तो गिलाणो मुद्धमेव केवलं पणामेति, मुद्धाणं आवत्तं सूत्रादिवर्जिता मूर्ध्नं एव केवला क्रिया इत्यर्थः ॥२११६॥ "मुद्धाणं" ति गयं।

१ गा० २१११। २ गा० २०७२। ३ गा० २११४। ४ गा० २११४। ५ गा० २११४।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इयाणिं "[1]सुत्तवज्जिउं" ति अस्य व्याख्या –

"मुहरोगी ग्रायामे" एस सव्वं उट्ठणिवेसावत्ताति करेति, मुहरोगे सुत्तं उच्चारेउं ण सक्केति, मणसा पुण कड्ढति । छट्ठे वि "[2]संजोगद्दारे" संजोगा भाणियव्वा ।

जह चेवऽब्भुट्ठाणे, चउक्कभयणा तहेव कितिकम्मे ।
संजति संजयकरणे, ण मुद्ध केई तु रयहरणं ॥२११७॥

जहा ग्रब्भुट्ठाणदारे वुत्तं तहेव इहं पि ।

चउक्कभयणा णाम –

संजता संजताणं । संजया संजईण ।

संजतीग्रो संजयाण । संजतीग्रो संजतीण ।

सपायच्छित्तं जहा कितिकम्मे वि तहा कायव्वमित्यर्थः । जत्थ संजतीग्रो संजयाण कितिकम्मं करेंति तत्थ सव्वं उद्धट्ठिता सुत्तावत्ताइ करेंति, ण मुद्धाणं ठिए रयहरणे पाडेंति ।

इह केयी ग्रायरिया भणंति –

उद्धट्ठिता चेव रयोहरणे सिरे पणामेंति, तं चेव तेसिं मुद्धाणं ॥२११८॥ कित्तिकम्मकरणे त्ति गतं ।

इयाणिं "[3]वेयावच्चकरणे" त्ति दारं –

[1]आहार [2]उवहि [3]विभत्ता, [4]अधिकरण-विग्रोसणा [5]य सुसहाए ।
[6]संजोग-विहि-विभत्ता, वेयावच्चे वि छट्ठाणा ॥२११८॥

ग्रधिकरणं कलहो, तस्स विविधं ग्रोसवणं विग्रोसवणं ॥२११८॥

ग्रोसवणं ग्रधिकरणे, सव्वेसु वि सेस जह उ ग्राहारे ।
ग्रसहायस्स सहायं, कुसहाए वा जहा सीसे ॥२११९॥

तं ग्रधिकरणं उप्पण्णं सव्वेहिं उवसमियव्वं मोत्तुं गिहत्थो । सेसा ग्राहार उवहि मत्तग्रो य जहा ग्राहारे तहा वत्तव्वं, णवरं – तिण्णि मत्तया - उच्चारे पासवणे खेलमत्तग्रो य ।

"[4]सुसहाय" त्ति ग्रस्य व्याख्या –

ग्रसहायस्स सहायं देति, कुसहायस्स वा सुसहायं देति । एवं जह सीसगणप्पदाणे तहा इमं पि दट्ठव्वं, णवरं – ग्रजाणं सहायो वि दिज्जति पंथाइसु, जति ण देति तो चउलहुं ॥२११९॥ वेयावच्चे त्ति गतं ।

इदाणिं "[5]समोसरणे" त्ति दारं –

[1]वास [2]उडु ग्रहालंदे, [3]साहारोग्गह [4]पुहत्त इत्तरिए ।
[5]वुड्ढा [6]वास समोसरणे, छट्ठाणा होंति पविभत्ता ॥२१२०॥

१ गा० २११४ । २ गा० २११४ । गा० २०७२ । ४ गा० २११८ । ५ गा० २०७२ ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

एत्थ णत्थि संजोगो, पूरेंति चेव छप्पया – वासा, उडु, अहालंदे त्ति, इत्तरीए, वुड्डवासे, समोसरणे। एते संजोगवज्जिया छप्पया।

अहवा – आएसंतरेण इमे छप्पया।

वास उडु अहालंदे, एते च्चिय होंति छप्पया गुणिता ;
साधारणोग्गहेणं, पत्तेगेणं तुभयकाले ॥२१२१॥

वासोग्गहो, उडुबद्धोग्गहो, अहालंदोग्गहो, एते तिण्णि वि उडुबद्ध-वासाकाले साधारण-पत्तेगेण य दोहिं गुणिया छप्पया भवंति। इत्तरिओ वुड्डवासो समोसरणोग्गहो य एते उडुबद्धवासोग्गहेसु पइट्ठा।

अहवा – इत्तिरिओ समोसरणोग्गहो य अहालंदे पइट्ठा। वुड्ड वासो उडुबद्धवासोग्गहेसु पइट्ठो।

वासोग्गहो दुविधो – साधारणोग्गहो पत्तेगो य। एवं उडुबद्धोग्गहो वि, एवं अहालंदोग्गहो वि ॥२१२१॥

पडिबद्धलंदि उग्गह, जं णिस्साए तु तस्स तो होति।
रुक्खादी पुव्वठिते, इत्तरि वुड्ढे स ण्हाणादी ॥२१२२॥

जे अहालंदिया गच्छपडिबद्धा तेसिं जो उग्गहो सो जं निस्साए आयरियं विहरति तस्स सो "उग्गहो" भवति। रुक्खाति-हेट्ठिताण वीसमणट्ठा इत्तरिओ उग्गहो भवति। तत्थ जो पुव्वं अणुण्णवेउं ठितो तस्स सो उग्गहो। अध समगं अणुण्णविउं ताहे साधारणो भवति। वुड्ढावासोग्गहो जंघाबलपरिखीणस्स भवति। सो वि साधारण पत्तेगो भवति। समोसरणं ण्हाणं अणुयाणं पडिमाति-महिमा एतेसु साहू मिलंति तं समोसरणं। एत्थ पत्तेयो ण भवति ॥२१२२॥

साधारण-पत्तेगो, चरिमं उज्जित्त उग्गहो होति।
गेण्हमदेंताऽऽरुवणा, सचिताचित्तणिप्फण्णा ॥२१२३॥

आइल्ला पंच दुविधा – साधारणा होज, पत्तेगा वा। चरिमो णाम समोसरणं, तत्थ उग्गहो णत्थि, तत्थ वसहीए उग्गहमग्गणा, वसही साधारणा पत्तेया वा, एतेसु उग्गहेसु आउट्टियाए अणाभव्वं गेण्हंताणं अणाभोगेण वा पुव्वोग्गहियं अदेंताणं "आरुवण" त्ति-पच्छित्तं भवति। तं सचित्ताचित्तणिप्फण्णं, अचित्ते उवहि-णिप्फण्णं, सचित्ते चउगुरुं, आएसेण अणवट्ठो ॥२१२३॥

समणुण्णमणुण्णे वा, अदितऽणाभव्वगेण्हमाणे वा।
संभोग वीसु करणं, इतरे य अलंभे य पेल्लंति ॥२१२४॥

संभोतितो जो अणाभव्वं गेण्हंति गहियं वा ण देति सो संभोगातो वीसु पृथक् क्रियते। असंभोइओ वि अणाहव्वं गेण्हति, गहियं वा ण देति, जेसिं सो संभोइओ ते तं विसंभोगं करेंति। 'इयरे" त्ति-पासत्थाती, तेसिं णत्थि उग्गहो, अणुग्गहे वि पासत्थाइयाण जति खुड्डगं खेत्तं अण्णओ य संविग्गा संथरंता पेल्लंति तत्थ सचित्ताचित्तणिप्फण्णं। अह पासत्थादियाण बित्थिण्णं खेत्तं, ते य ण देंति, अण्णतो य असंथरंता, ताहे संविग्गा पेल्लं त्ति, सचित्ताइयं च गेण्हंता सुद्धा ॥२१२४॥ समोसरणे त्ति दारं गतं।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इदाणिं "[1]सण्णिसेज्ज" त्ति दार –

परियट्टणा[1]णु[2]ओगो[3], वागरण[4] पडिच्छणा[5] य आलोए।

[6]संजोग-विधि-विभत्ता, सण्णिसेज्जे वि छट्ठाणा ॥२१२५॥

सणिसेज्जो व गतो पुण, तग्गतेण परियट्टणे हवति सुद्धो।

अण्णेण होति लहुओ, इतरे लहुगा य गुरुगा य ॥२१२६॥

दोण्णि आयरिया संभोतिया संघाडएण परियट्टंति, पत्तेयं णिसेज्जगता सुद्धा, तग्गएण णिसिज्जा-गतेणेत्यर्थः। अह अण्णसंभोतिएण तो मासलहुं भवति। "इतरेहिं" ति पासत्थाइएहिं गिहत्थेहिं य समं तो चउलहुं। अहाच्छंदगिहत्थीहिं संजतीहिं च समं णिक्कारणे परियट्टेति चउगुरु। संजतीण वि इत्थीपुरिसेसु एयं चेव भाणियव्वं ॥२१२६॥ "परियट्टणे" त्ति गतं।

इदाणिं "[2]अणुओगे" त्ति दारं –

अणिसेज्जा अणुओगं, सुणेंति लहुगा उ होंति देंते य।

वागरण णिसेज्जगतो, इतरेसु वि देंतऽसुद्धो तु ॥२१२७॥

अक्ख-णिसेज्जाए विणा अणुओगं कहेंतस्स सुणेंतस्स य चउलहुगा। संजतीण अक्ख णिसेज्जा णत्थि। सेसं विधि करेति।

इयाणिं "वागरणे" त्ति पृष्टः सन् व्याकरोति" "वागरणं" पच्छद्धं। इतरे णाम पासत्थादी, अपिशब्दात् गिहत्थाण वि गिहत्थीण वि संजतीण वि देंतो असुद्धो ॥२१२७॥

"[1]पडिपुच्छणालोए" त्ति दो दारा एगट्ठं वक्खाणेति –

जो उ णिसज्जोवगतो, पडिपुच्छे वा वि अह व आलोवे।

लहुया य विसंभोगो, समणुण्णो होति अण्णो वा ॥२१२८॥

णिसज्जाए उवविट्ठो णिसज्जोवगतो भवति, जति सुत्तमत्थं वा पडिच्छति।

अहवा – णिसेज्जोवविट्ठो आलोयणं देति तस्स मासलहुं। अणाउट्टंतो य विसंभोगो कज्जति। समणुण्णो वि जो उवसंपण्णो सो, विसंभोगी कज्जति।

अहवा – जेसिं सो संभोतिगो से विसंभोगं करेंति ॥२१२८॥

इदाणिं "[2]संजोगो" त्ति छट्ठं दारं जहा संभवं भाणियव्वं। सण्णिसेज्ज त्ति गतं।

इयाणिं [3]कहाए पवंधणे" त्ति दारं –

वादो[1] जप्प[2] वितंडा[3], पइण्णग[4]-कहा य णिच्छय[5]-कहा य।

[6]संजोग-विहि-विभत्ता, कध-पडिबन्धे वि छट्ठाणा ॥२१२९॥

---

१ मा २०७०। २ गा० २११५। ३ गा० २०७२।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वादं जप्प वितंडं, सव्वेहि वि कुणति समणि-वज्जेहिं ।
समणीण वि पडिकुट्ठा, होंति सपक्खे वि तिण्हि कहा ॥२१३०॥

मतमभ्युपगम्य पंचावयवेन त्र्यवयवेन वा पक्ष-प्रतिपक्षपरिग्रहात् छलजातिविरहितो भूतार्थान्वेषणपरो वादः ।

परिगृह्य सिद्धान्तं प्रमाणं च छल-जाति-निग्रह-स्थानपरं भाषणं यत्र जल्पः ।

यत्रैकस्य पक्षपरिग्रहो, नापरस्य, दूषणमात्रप्रवृत्तः स वितंडः ।

साधू वादं जल्पं वितंडं वा एता तिण्णि वि कहा समणीवज्जेहिं असंभोतियातीहिं सव्वेहिं अण्णतित्थिएहिं वि समं करेति । समणीण समणीओ सपक्खो, तेहिं वि समाणं तिण्णि – वाद-जल्प-वितंड - कहा य पडिकुट्ठा प्रतिषिद्धा इत्यर्थः ॥२१३०॥

उस्सग्गा पइन्न-कहा य, अववातो होति णिच्छय-कथा तु ।
अहवा ववहारणया, पइण्णसुद्धा य णिच्छइगा ॥२१३१॥

उस्सग्गो पइन्नकहा भन्नति, अववातो णिच्छयकहा भण्णति ।

अहवा – णेगम - संगह - ववहारेहिं जं कहिज्जति सा पइण्णकहा, रिजुसुत्तादिएहिं सुद्धणएहिं जं कहिज्जति सा णिच्छयकहा ॥२१३१॥ एस बारस विहो ओहो ।

इमो विभागो –

बारस य चउव्वीसा, छत्तीसऽडयालमेव सट्ठी य ।
बावत्तरी विभत्ता, चोयालसयं तु संभोए ॥२१३२॥

सव्वे बावत्तरी तिगादिएहिं गुणिया इमं भवति –

दो चेव सया सोला, अट्ठासीया तहेव दोण्णि सया ।
तिण्णि य सट्ठिसयाइं, चत्तारि सया य बत्तीसा ॥२१३३॥

जहा बारस दुगातिएहिं गुणिया इमं भवति –

बारस य चउव्वीसा, छत्तीसऽडयालमेव सट्ठी य ।
बावत्तरि छग्गुणिया, चत्तारि सया तु बत्तीसा ॥२१३४॥

तहा बावत्तरीवि दुगादिएहिं गुणिया पज्जंते छग्गुणिया चत्तारि सया तु बत्तीसा भवंति ।

एतेसिं तु पदाणं, करणे संभोग अकरणे इतरो ।
दोहि विमुक्के चउवीस होति तस्सहिते इतरो उ ॥२१३५॥

एतेसिं ओहसंभोतियपदाण दुगमाइगुणकारुप्पण्णाण विभागपदाण जहुत्ताण करणे संभोगो, अकरणे पुण 'इतरे'' त्ति विसंभोग इत्यर्थः । इयाणि दुगातिगुणकारसरूवं भण्णति – "दोहि" पच्छद्धं । ते चेव बारस दोहिं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

रागदोसविप्पमुक्कस्स चउव्वीसातिविधो संभोगो भवति, तेहिं चेव सहितस्स चउव्वीसतिविधो विसंभोगो भवति ॥२१३५॥

णाणादी छत्तीसा, चउक्कसायविवज्जितस्स अडयाला ।
संवर सट्ठि दुसत्तरि, छहि अहव त एव छद्दारा ॥२१३६॥

एवं णाण-दंसण-चरित्तेहि तिहिं गुणिता बारस छत्तीसतिविधो संभोगो भवति ।

अण्णाणादिएहिं तिहिं छत्तीसतिविधो विसंभोगो भवति ।

चउक्कसायावगयस्स चउग्गुणा बारस अडयालीसतिविधो संभोगो, सो चेव चउक्कसायसहियस्स विसंभोगो। संवरो पंचमहव्वयाति, तेहिं गुणिया सट्ठी। रातीभोयणसहितेहिं छग्गुणिया बारस बावत्तरी भवंति ।

अधवा – उवधिमातिया त एव बारसदारा एक्केक्कं छव्विधं, ते मिलिया बावत्तरी भवंति जहा बारस दुगातिएहिं गुणिया ॥२१३६॥ एवं –

बावत्तरिं पि तह चेव, कुणसु रागादिएसु संगुणितं ।
अकप्पादि छहि पदेहिं, चतारि सया उ बत्तीसा ॥२१३७॥

अकप्पो, आदिसद्दातो गिहिभायणं, पलियंक णिसेज्जा, सिणाणं, सोभकरणं ।

अहवा – अकप्पछक्कं, आदिसद्दातो वयछक्कं कायछक्कं च । एतेसिं अण्णतरेण छक्केण गुणिया बावत्तरि, चत्तारि सता बत्तीसा भवंति ॥२१३७॥ "ओहे" त्ति दारं गतं ।

इदाणिं "अभिग्गहे" त्ति दारं –

अभिग्गहसंभोगो पुण, णायव्वो तवे दुवालसविधम्मि ।
दाणग्गहेण दुविधो, सपक्खपरपक्खतो भइतो ॥२१३८॥

अभिराभिमुख्येन ग्रहो अभिग्गहो, सो वि तवे दुवालसविधे जहासत्तीए अभिग्गहो घेत्तव्वो, सत्ति परिहावेमाणस्स पच्छित्तं ।

इदाणिं "[1]दाणग्गहणे" त्ति दारं –

दाणग्गहणे दुविधो संभोगो – सपक्खे परपक्खे य ।

एत्थ चउक्को भंगो –

दाणं गहणं, एत्थ संभोतिता । दाणं नो गहणं, एत्थ संजतितो ।

नो दाणं गहणं, एत्थ गिहत्था । नो दाणं नो गहणं, एत्थ पासत्थाती ।

पढम-बितिया सवक्खे, ततितो परपक्खे । चउत्थो संभोगं पति सुण्णो ॥२१३८॥ दाणग्गहणे त्ति दारं गतं ।

इदाणिं "[2]अणुपालण" त्ति दारं –

अणुपालण-संभोगो, णायव्वो होति संजतीवग्गे ।
उववाते संभोगो, पंचविधुवसंपदाए तु ॥२१३९॥

---

१ गा० २०७१ । २ गा० २०७१ ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

खेत्तोवहिसेज्जाइएसु खेत्तसंकमणेसु य संजतीओ विधीए अणुपालेयव्वातो ।

इदाणिं "[१]उववाते" ति पच्छद्धं – उववातो उवसंपज्जणं, उवसंपताए संभोगो भवति ।।२१३९।।

सा य उवसंपया इमा पंचविधा –

सुत सुह-दुक्खे खेत्ते, मग्गे विणए य होइ बोधव्वो ।
उववाते संभोगो, पंचविगप्पो भवति एसो ।।२१४०।।

सुत्तत्थाण णिमित्तं उवसंपया सुत्तोवसपया ।

सुहदुक्खोवसंपया घाउविसंवादादिएहिं अहिडक्कातीहिं वा आगंतुगेहिं बहुं पच्चवायं माणुस्सं जाणिऊण अण्णतरेण मे रोगातंकेण वाहियस्स ममेते वेयावच्चं काहिति, अहं पि एतेसिं करिस्सामि अतो असहायो गच्छे उवसंपयं पवज्जति । एस सुहदुक्खोवसंपया ।

एक्कस्स आयरियस्स बहुगुणं खेत्तं तमण्णो आयरिओ जाणिऊण अणुजाणावेऊण तस्स खेत्ते ठायति एस खेत्तोवसंपया ।

दुवे आयरिया आणंदपुरातो महुरं गंतुकामा ताण एक्को देसितो एक्को अदेसितो ।

देसिओ अप्पणो पुरिसकारेण पत्थिओ ।

अदेसिओ विसण्णो, देसियं भणति – अहं तुहप्पभावेण तुमे समाणं महुरं गच्छे ।

देसितो तस्सोवसंपण्णस्स मग्गाणुरूवं उवएसं पयच्छति, एस मग्गोवसंपदा गया ।

सुरट्ठाविसए दुवे आयरिया, एगो तत्थ वत्थव्वो, सो आगंतुगस्स सुगम-दुग्गमे मग्गे सुहविहारे य खेत्ते सव्वं कहेति, सचित्ताइयं उप्पण्णं सव्वे तेण वत्थव्वस्स णिवेदियव्वं, एस विणओवसंपदा। एस पंचविधो उववायसंभोगो ।।२१४०।। "उववाते" त्ति दारं गतं।

इदाणिं "[२]संवासे" त्ति दारं –

संवासे संभोगो, सपक्ख-परपक्खतो य णायव्वो ।
सरिकप्पेसु सपक्खे, परपक्खम्मी गिहत्थेसु ।।२१४१।।

संवास-संभोगो दुविधो – सपक्खे परपक्खे य, सरिसो कप्पो जेसिं ते सरिसकप्पा संभोतिया इति यावत् । सपक्खे सरिसकप्पेसु संवासो, ण अण्णसंभोतिआइसु, परपक्खे गिहत्थेसु संवासो ।।२१४१।।

इयाणिं एतेसु चेव अभिग्गहातिएसुं पच्छित्तं ।

तवे सत्ति परिहरेंतस्स इमं पच्छित्तं –

पक्खिय चउवरिसे वा, अकरणे आरोवणा तु सति विरिए ।
सेसतवस्स अकरणे, लहुगो अमणुण्णता चेव ।।२१४२।।

पक्खिए चउत्थं ण करेति, चउत्थं चेव पच्छित्तं । चाउम्मासिए छट्ठं ण करेति, तं चेव पच्छित्तं । संवच्छरे अट्ठमं ण करेति, अट्ठमं चेव पच्छित्तं । सेसो तवो आवकहिगमणासगं मोत्तुं बारसविहो तं ण करेति मासलहुं, अणाउट्टंते य अमणुण्णया असंभोगो ।।२१४२।।

---

१ गा० २०७१ । २ गा० २०७१ ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

दाणग्गहणे इमं –

चउभंगो दाणगहणे, मणुण्णे पढमो तु संजती बितिम्रो ।
गिहिएसु होति ततिम्रो, इयरेसु तु अंतिमो भंगो ॥२१४३॥

गतत्था । अण्णसंभोतिएसु तिसु भंगेसु मासलहुं । गिहत्थ पासत्थाइयाण तिसु भंगेसु चउलहुं । अहाच्छंदं पडुच्च तिसु वि भंगेसु चउगुरुगं । पढम-ततिएसु संजति पडुच्च चउगुरुं ॥२१४३॥

अणुपालणं पडुच्च इमं –

अविधी अणुपालेंते, अणाभवंतं व देंतगेण्हंते ।
पच्छित्त वीसुकरणे, पच्छाऽऽउट्टं व संभुंजे ॥२१४४॥

संजतीम्रो अविधीए अणुपालेति अणाभव्वं च तेसिं देति, जहा रयहरणं दंडियं सबिटयं वा लाउयं सविसाणं वा भिसियं, तेसिं वा हत्थाम्रो गेण्हति चउगुरुगं पच्छित्तं । अणाउट्टंतस्स वीसुकरणं, पुणो वा आउट्टं संभुंजे ॥२१४४॥

इदाणिं उववाते –

संभोगमण्णसंभोइए, व उववाततो उ संभोगो ।
संवासो तु मणुण्णे, सेसे लहु लहुग गुरुगा य ॥२१४५॥

संभोतितो पवसितो पच्चागम्रो आलोयणउववातेण संभोगो, अण्णसंभोतिम्रो वि आलोयणं देंतो उवसंपज्जति । संभोतितो अणालोइयं उवसंपज्जावंतस्स मासलहुं, विसंभोगो य ।

अहवा – [1]"अणाभव्वं देंतो गेण्हंति" त्ति एवं वयणं एत्थ उववाते दट्ठव्वं, सचित्ताचित्तणिप्फण्णं पायच्छित्तं दायव्वं ।

इयाणिं "संवासे" ति पच्छद्धं – संभोइम्रो संभोइएसु वसंतो सुद्धो । "सेस" त्ति अण्णसंभोतियादिया अण्णसंभोतिएसु मासलहुं, पासत्थाति-गिहीसु चउलहुगं, अहाच्छंदे संजतीसु य चउगुरुगा । संजतीण वि एवं चेव, सरिसवग्गे विसरिसवग्गे य वत्तव्वं । एस ओहातिएहिं संवास-पज्जवसाणेहिं छहिं दारेहिं संभोगविही भणितो ॥२१४५॥

जस्सेतेसंभोगा, उवलद्धा अत्थतो य विण्णाया ।
णिज्जूहितुं समत्थो, णिज्जूढे यावि परिहरितुं ॥२१४६॥

सुत्तपदेहिं उवलद्धा अत्थावधारणे य विण्णाया सो परं सीदंतं णिज्जूहिउं समत्थो, अप्पणा णिज्जूढं परेण वा णिज्जूढं परिहारिउं समत्थो भवति ॥२१४६॥

सरिकप्पे सरिच्छंदे, तुल्लचरित्ते विसिट्ठतरए वा ।
कुव्वे संथव तेहिं, णाणीहि चरित्तगुत्तेहिं ॥२१४७॥

थेरकप्पियस्स थेरकप्पिम्रो चेव सरिसकप्पो, दव्वादिएहिं अभिग्गहेहिं सरिसच्छंदो दट्ठव्वो,

१ गा० २१४४ ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सामायियचरित्तिणो सामायियचरित्ती तुल्ल-चरित्ती अज्झवसाणविसेसेण वा संजमकंडएसु विसिट्ठतरो, एरिसेहिं समाणं संथवो संवासो णाणीहिं । चरित्तेण गुत्ता, चरित्ते वा गुत्ता, ते चरित्त-गुत्ता ॥२१४ ॥

सरिकप्पे सरिछंदे, तुल्लचरित्ते विसिट्ठतरए वा ।
आदेज्ज भत्तपाणं, सएण लाभेण वा तुस्से ॥२१४८॥

एरिसेण साहुणा भत्तपाणं आनीय आताए–आत्मीयेन वा लाभेन तुष्ये, न हीनतरसत्कं गृण्हे ॥२१४८॥

किं चान्यत् –

ठितिकप्पम्मि दसविहे, ठवणाकप्पे य दुविधमण्णयरे ।
उत्तरगुणकप्पम्मि य, जो सरिकप्पो स संभोगो ॥२१४६॥

[1]"आचेल्लक्कुद्देसिय, सेज्जातर-रायपिंड-कितिकम्मे ।
वयजेट्ठ-पडिक्कमणे, मासं पज्जोसवण कप्पे" ।

एयम्मि जो दसविधे ठियकप्पे ठितो ।

दुविधो य ठवणाकप्पो – सेहठवणाकप्पो - अट्ठारसपुरिसेसुइत्यादि ।

अकप्पठवणाकप्पो '[2]वयछक्क-कायछक्क' इत्यादि, णासेवतीत्यर्थः ।

जो एयम्मि दुविधे ठितो; पिंडस्स जा विसोही इत्यादि, एयम्मि उत्तरगुणे कप्पे जो सरिसकप्पो; स संभोगो भवति इति ॥२१४६॥ एस संभोगो सप्पभेओ वण्णिओ। एस य पुव्वं सव्वसंविग्गाणं अड्ढभरहे एक्क संभोगो आसी, पच्छा जाया इमे संभोइया इमे असंभोइया ।

शिष्य आह – किं कारणं एत्थ ?

आयरिओ – इमे उदाहरणे कप्पे उदाहरति –

अगडे[1] भातुए[2] तिल[3] तंदुले[4] य सरक्खे[5] य गोणि[6] असिवे ।
अविणट्ठे संभोए, सव्वे संभोइया आसी[3] ॥२१५०॥

[4]अगड-पयस्स वक्खाणं –

आगंतु तदुत्थेण व, दोसेण विणट्ठे कूवे ततो पुच्छा ।
कओ आणीयं तुदयं, अविणट्ठे णासि सा पुच्छा ॥२१५१॥

एगस्स नगरस्स एक्काए दिसाए बहवे महुरोदगा कूवा । तत्थ य केई कूवा आगंतुय तदुत्थेहिं दोसेहिं दुट्ठोदगा जाता । आगंतुएण तया विसातिणा, तदुत्थेण खार-लोण-विस-पाणियसिरा वा जाता । तत्थ य केसुइ कूवेसु पाणियं पिज्जमाणं कुट्ठादिणा सरीरं सदूसणकरं भवंति। केइ ण्हाणाइसु अविरुद्धा । केति ण्हाणाइसु वि विरुद्धा । एतद्दोसदुट्ठे णाउं बहुजणो दगादि वारेति । आणिए य कओ आणियंति पुच्छा । जति णिद्दोसं तया परिभुंजति । अह सदोसं जइ जाणंतेण आणियं ताहे तओ वा वाराओ फेडिज्जति तज्जिज्जति य । अह अजाणंतेणं तो वारिज्जति, मा पुणो आणिज्जासि । एवं असंभोतिया वि केति चरित्त-सरीर-उत्तरगुण-दूसगा

१ एकादशोद्देसके । २ दशवैकालिके अ० ६ गा० ८ । ३ समणा (पा०)। ४ गा० २१५० ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

केति चरित्त-जीविय-ववरोवगा, केति संफास-परिभोगिणो, केति पुण संफासम्रो वि वज्जिता । जाव य अविणट्ठपाणिया ताव पुच्छा वि णासी ।।२१५१।।

[1]"भाउय" पयस्स वक्खा –

भोइयकुलसेविश्राओ दुस्सीलेक्के उ जाए ततो पुच्छा ।
एमेव सेसएसु वि, होइ विभासा तिलादीसु ।।२१५२।।

दो कुलपुत्ता भायारो रण्णो भयरहिया सेवगा सव्वावारियप्पवेसा । तेसिं कणिट्ठेण अंतपुरे अणायारो कओ । तस्स पवेसो वारिओ । जेट्ठो वि तद्देसेण रण्णो अणिवेइते पवेसं ण लहति । रण्णा पुच्छिज्जति– जेट्ठो, कणिट्ठो ? जेट्ठो त्ति कहिते पविसति । पुव्वं एसा पुच्छा णासी । एवं संभोइया वि, उवणयविसेसो भाणियव्वो । एवं सेसेसु वि तिलादिएसु विसेसा कता । पुव्वं सव्वावणेसु तिला अरुभतिया विक्कायंता ततो एगेण वाणिएण पूतिता पागडिया, ततो पभिति पुच्छा पयट्टा । एवं तंदुलेसु वि ।

एगम्मि नगरे एगदिसाए बहवे देवकुला, तेसु सव्वेसु सुसीला वसंति । बहुजणा ते सव्वे अविसेसेण पूएंति । पच्छा केसु वि देवकुलेसु दुस्सीला जाया । ततो आमंतणे पुच्छा पयट्टा कतमे निमंतिताम त्ति।

एगम्मि गामे एगो गोवग्गो असिवग्गहितो जाओ । पुव्वं ततो गामातो आणीयासु गोणीसु नासी च्छा। पच्छा तम्मि गामे असिवग्गहिय त्ति पुच्छा पयट्टा। एवं साहम्मिओ वि परिक्खिउं परिभुंजियव्वो ।२१५२

इमा परिक्खा –

साधम्मत वेधम्मत, निघरिस-भाणे कूवे य ।
अविणट्ठे संभोए, सव्वे संभोइया आसी ।।२१५३।।

समाणधम्मता साहम्मता, तं णाऊणं परिभुंजति । विगयधम्मो वेधम्मता, तं वेधमत्तं णाऊणं ण परिभुंजति । यथा सुवण्णं णिग्घरिसे परिक्खिज्जति एवं अण्णायसीलस्स भायणेण परिक्खिज्जइ । भायणस्स तलं ण घृट्ठं, उवकरणं वा अविधीए सिव्वितं दीसति, तथा आलएण विहारेण इत्यादि, एवमाइएहिं सीयंतो णज्जति । "तहेव कूवे य" त्ति - जहा कूवाती णाउं परिहरिया एवं एसो वि परिक्खिउं परिहरिज्जति । पुव्विं पुण "अविणट्ठे" पच्छद्धं ; पूर्वं आसीदित्यर्थः ।।२१५३।। "सभोगपरूवणं" त्ति मूलदारं गतं ।

इदाणिं [2]सिरिघर सिव पाहुडे य संभुत्ते" त्ति अस्य व्याख्या –

सीसो पुच्छति – कतिपुरिसजुगे एक्को संभोगो आसीत् ? कम्मि वा पुरिसे असंभोगो पयट्टो ? केव वा कारणेण ?

ततो भणति –

संपति-रण्णुप्पत्ती सिरिधर उज्जाणि हेट्ठ बोधव्वा ।
अज्जमहागिरि हत्थिप्पभिती जाणह विसंभोगो ।।२१५४।।

वद्धमाणसामिस्स सीसो सोहम्मो । तस्स जंबुणामा । तस्स वि पभवो । तस्स सेज्जंभवो । तस्स वि सीसो जसभद्दो । जसभद्दसीसो संभूतो । संभूयस्स थूलभद्दो । थूलभद्दं जाव - सव्वेसिं एक्कसंभोगो आसी ।

---

१ गा० २१५०। २ गा० २०७०।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

थूलभद्दस्स जुगप्पहाणा दो सीसा – अज्जमहागिरी अज्जसुहत्थी य। अज्जमहागिरी जेट्ठो। अज्जसुहत्थी तस्स सद्वियरो।

थूलभद्दसामिणा अज्जसुहत्थिस्स नियओ गणो दिण्णो। तहा वि अज्जमहागिरी अज्जसुहत्थी य पीतिवसेण एक्कओ विहरंति।

अण्णया ते दो वि विहरंता कोसंबाहारं गता। तत्थ य दुब्भिक्खं।

ते य आयरिया वसहिवसेण पिहप्पिहं ठियाणं एगम्मि व सेट्ठिकुले साधूहिं मोयगादि खज्जगविहाणं भत्तं च जावतियं लद्धं।

एगो रंको तं साहुं दट्ठुं ओभासति।

साहूहिं भणियं – अम्हं आयरिया जाणगा, ण च सक्केमो दाउं।

सो रंको साधुपिट्ठतो गंतुं अज्जसुहत्थिं ओभासति भत्तं।

साहूहिं वि सिट्ठं – अम्हे वि एतेण ओभासिता आसीत्।

अज्जसुहत्थी उवउत्तो पासति - पवयणाधारो भविस्सति। भणितो - जति णिक्खमाहि। अब्भुवगतं। णिक्खंतो सामातियं कारवेत्ता जावतियं समुदाणं दिण्णं, तद्दिणरातीए चेव अजीरतो कालगओ। सो अवत्तसामातिओ अंधकुमारपुत्तो जातो।

"तस्स उप्पत्ती" –

चंदगुत्तस्स पुत्तो बिंदुसारो। तस्स पुत्तो असोगो। तस्स पुत्तो कुणालो। तस्स बालत्तणे चेव उज्जेणी कुमारभुत्ती दिण्णा। ताहे वरिसे वरिसे दूओ पाडलिपुत्तं असोगरण्णो पयट्टेइ।

अण्णया असोगरण्णा चिंतियं – इदाणिं कुमारो धणुवेइयाण कलाण जोग्गो। ततो असोगरण्णा सयमेव लेहो लिहिओ – "इदाणिं अधीयतां कुमारः कलाइ" त्ति लिखित।

रण्णो अणाभोगेण कुमारस्स य कम्मोदएण भवियव्वयाए अगारस्स उवरिं बिंदू पडिओ।

[1]केति भणंति –

"राया लिहिउं असंवत्तियं लेहं मोत्तुं वच्चाघरे पविट्ठो, एत्थंतरे य मातिसवत्तीए अणुव्वाएउं अगारस्स बिंदू कतो"।

रण्णा पच्चागतेण अवायित्ता चेव संवत्तितो, बाहिं रण्णा णामंकिओ मुद्दिओ, उज्जेणीं णीतो। लेहगो वाएत्ता तुण्हिक्को ठितो। कुमारेण सयमेव वातिओ।

कुमारेण चिंतितं – जइ रण्णो एवं अभिप्पेयं पीती वा तो एवं कज्जति। अम्ह य मोरियवंसे अपडिहता आणा। णाहं आणं कोवेमि। सलागं तावेत्ता सयमेव अक्खीणि अंजिताणि। रण्णो जहावत्तं कहियं, अंधीकयो ता किमंधस्स रज्जेण। एगो से गामो दिण्णो। तंमि गामे-अच्छंतस्स कुणालकुमारस्स सो रंको घरे उप्पण्णो। णिवत्ते बारसाहे "संपत्ती" से णामं कतं।

सो य कुणालो गंधव्वे अतीव कुसलो। ताहे सो य अणायचज्जाए याति, सामंत-भोतिय-कुलेसु गायति। अतीव जणो अक्खित्तो। असोगरण्णा सुयं, आणितो जवणियंतरितो गायति।

१ यथाह भद्रेश्वरसूरिः कथावल्या द्वितीयखंडे।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

राया आउट्टो भणाति – किं देमि ? तेण भणियं –

गाहा–[1]चंद्रगुत्त–पपुत्तो उ, बिंदुसारस्स नत्तुओ। असोगसिरिणो पुत्तो, अंधो जायति कागिणिं ।।

रण्णा भणियं – थोवं ते जाइतं,

मंतीहिं भणियं – बहुतं जातितं।

कहं ?

रज्जं कागिणी भण्णति।

रण्णा भणियं – किं ते अंधस्स रज्जेण ?

तेण भणितं–पुत्तो मे।

रण्णा भणियं–संपति पुत्तो वि ते।

[2]अण्णे एत्थ णामकरणं भणंति –

उज्जेणी से कुमारभोत्ती दिण्णा। तेण सुरट्ठविसओ [3]अंधा दमिला य उयविया। अण्णया आयरिया पतीदिसं (?) जियपडिमं वंदिउं गताओ। तत्थ रहाणुजाणे रण्णो घरे रहो परिअंचति, संपतिरण्णा ओलोयणगतेण 'अज्जसुहत्थी' दिट्ठो। जातीसरणं जातं। आगओ पाएसु पडिओ। पच्चुट्ठिओ विणओणओ भणति – भगव ! अहं ते कहिं दिट्ठो ? सुमरह।

आयरिया उवउत्ता – आमं दिट्ठो। तुमं मम सीसो आसि। पुव्वभवो कहितो। आउट्टो। धम्मं पडिवण्णो। अतीव परोप्परं णेहो जाओ। तत्थ य महागिरी सिरिघरायणे आवासितो। अज्जसुहत्थी सिवघरे आवासितो। ततो राया अभिक्खं अभिक्खं अज्जसुहत्थिं पज्जुवासति पवयणभत्तीए अप्पणो विसए जणं-पिंडेतूणं भणाति – तुब्भे साधूणं आहारातिपायोग्गं देह। अहं भे मोल्लं देहामि।

अज्जसुहत्थी सीसाणुरागेण साहू गेण्हमाणे सातिज्जति, णो पडिसेहेति। तं अज्जमहागिरी जाणित्ता अज्जसुहत्थिं भणाति – अज्जो ! कीस रायपिंडं पडिसेवह ?

तओ अज्जसुहत्थिणा भणियं – जहा राया तहा पया, ण एस रायपिंडो। तेल्लिया तेल्लं, घयगोलिया घयं, दोसिया वत्थाइं, पूइया भक्खभोज्जे देंति, एवं साहूणं सुभविहारे। अज्जमहागिरी माति त्ति काउं अज्जसुहत्थिस्स कसातितो। एस सिस्साणुरागेण ण पडिसेहेति।

ततो अज्जमहागिरी अज्जसुहत्थिं भणाति – अज्जप्पभितिं तुमं मम असंभोतिओ।

एवं "पाहुडं" कलह इत्यर्थः।

ततो अज्जसुहत्थी पच्चाउट्टो मिच्छादुक्कडं करेति, ण पुणो गेण्हामो। एवं भणिए संभुत्तो। एत्थ पुरिसे विसंभोगो उप्पण्णो। कारणं च भणियं।

ततो अज्जमहागिरी उवउत्तो, पाएण "मायाबहुला मणुय" त्ति काउं विसंभोगं ठवेति ।।२१५४।। "सिरिघर-सिव – पाहुडे य संभुत्ते" ति दारं गतं।

इदाणिं "[4]दंसणे" त्ति दारं –

सद्दहणा खलु मूलं, सद्दहमाणस्स होति संभोगो।
णाणम्मि तदुवओगो, तहेव अविसीयणं चरणे ।।२१५५।।

---

१ बृहत्कल्प द्वितीयोद्देशे। २ कथावल्यादौ। ३ आंध्र देश। ४ गा० २०६६।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सद्दहणं दरिसणं, तं मोक्खमग्गस्स मूलं, खलु अवधारणे, सुत्ते जे भावा पण्णत्ता उस्सग्गाववाइएहिं ववहार-णिच्छयणएहिं वा इमं वा संभोगं परूवियं सद्दहमाणस्स संभोगो, अण्णहा असंभोगो । दंसणे त्ति गतं ।

इदाणिं "[1]णाणे" त्ति दारं– 'णाणम्मि तदुवओगो"। सुअणाणोवएसे उवउज्जति–[2]किं मे कडं, किं च मे किच्चसेसं, किं सक्कणिज्जं ण समायरामि, एवं णाणोवओगेणं उवउज्जमाणो संभोइओ, अन्नहा असंभोइओ, उवउज्जमाणस्स य णाणं भवति ।

इयाणिं "[3]चरित्तं" जति चरित्तेण विसीयात उज्जयचरणो तो संभोतिओ, अण्णहा विसंभोइओ मा विसंभोगो भविस्सामि त्ति उज्जमति । [4]'तवहेउं"-तवकारणमित्यर्थः । तवे वीरियं हावेंतो विसंभोगो कज्जमाणो तहेव उज्जमति, ण य इहलोगाससितं तवं करेति, णिज्जरट्ठा य तवं करेंतो संभोतिगो, अन्नहा विसंभोओ ।।२१५५।।

विसंभोओ किं उत्तरगुणे मूलगुणे ?

आयरिओ भणति – उत्तरगुणे ।

अधवा – उत्तरगुणेसु सीयंतो संभोतिओ त्ति काउं चोतिज्जति । एवं चोयणाए उत्तरगुणसंरक्खणे मूलगुणा संरक्खिया भवंति ।

एयस्स अत्थस्स पडिसमावणत्थं भणति –

दंसण-णाण-चरित्ताण वड्ढिहेउं तु एस संभोओ ।
तवहेउ उत्तरगुणेसु चेव सुहसारणा भवति ।।२१५६।।

एवं दंसण-णाण-चरित्ताण परिवुड्ढी-णिमित्तं संभोगो इच्छिज्जति । तवहेउं - तववुड्ढीनिमित्तं च संभोगो इच्छिज्जइ । उत्तरगुणेसु य सीयंतो संभोतिगो त्ति काउं सुहसारणाओ भवंति । एवं चरित्तरक्खणा कता भवति ।।२१५६।।

एतेसामण्णतरं, संभोगं जो वदेज्ज णत्थि त्ति ।
सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त-विराधणं पावे ।।२१५७।। कंठा

वितियपदमणप्पज्झे, वदेज्ज अविकोविदे व अप्पज्झे ।
जाणंते वा वि पुणो, भयसा तव्वादि गच्छट्ठा ।।२१५८।।

पासत्यातीहिं समाणं संभोगेण णत्थि कम्मबंधो त्ति अणप्पज्झो भणेज्ज, सेहो वा अविकोवितो भणेज्ज, गीयत्थो वा विकोविओ भया भणेज्ज, 'तव्वाती' कोति दंडिओ हवेज्ज "णत्थिसंभोगवत्तिया किरिय" त्ति तम्मि पण्णवेंति, तुण्हिक्को अच्छति, भया पुच्छिओ वा "आमं" ति भणेज्ज, अप्पणो गच्छस्स व रक्खणट्ठा भणेज्जा ।।२१५८।।

जे भिक्खू लाउय-पातं वा दारु-पातं वा मट्टिया-पातं वा अलं थिरं धुवं धारणिज्जं परिभिंदिय परिभिंदिय परिट्ठवेति, परिट्ठवेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।६४।।

---

१ गा० २०६६ । २ दश० द्वि० चू० गा० १२ । ३ गा० २०६९ । ४ गा० २०६९ ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अकारलोपाओ लाउयं दारुयं, भुंदणघडियं, मट्टियामयं कुंभारघडियं, अलं पज्जत्तं, थिरं दढं, धुवं अपरिहारियं, धारणिज्जं लक्खणजुत्तं, खंडाखंडिकरणं पलिभेओ भण्णति, जो एवं करेति तस्स मासलहुं।

जं पज्जतं तमलं, दढं थिरं अपरिहारिय धुवं तु।
लक्खणजुत्तं पायं, तं होती धारणिज्जं तु ॥२१५६॥

गतार्थाः ॥२१५६॥ एतेसु चउसु पदेसु सोलस भंगा। अलं थिरं धुवं धारणिज्जं, एस पढमो भंगो। सेसा कायव्वा।

एत्तो एगतरेणं, गुणेण सव्वेहि वा वि संजुत्तं।
जे भित्तूणं पादं, परिट्ठवे आणमादीणि ॥२१६०॥

कंठा ॥२१६०॥ भित्तुं परिट्ठवेंति।

इमेसि विराहणा हवेज्ज –

अद्धाण-णिग्गयादी, झामिय सेसे व तेण पडिणीए।
आय पर तदुभए वा, असती जे पाविहिति दोसा ॥२१६१॥

अद्धाण-णिग्गता साधू आगया अज्झायणा, तेहिं ते जातिता, पलिभिण्णादि परिट्ठवेति किं देंतु ? जति ण देंति ताहे जं ते पाविहिंति तमावज्जंति। अह देंति अप्पणो हाणिं। आदिसद्दातो असिवणिग्गता आगता। एवं ओमेण, रायदुट्ठ-गिलाणकारणेण।

अहवा – तेसिं चेव झामियं उपकरणं परस्स वा उभयस्स वा सेहा वा पडुप्पण्णा भायणा सति ण पव्वावेंति, जं ते गिहारंभे काहिति तमावज्जे।

अहवा – अण्णेसिं संभोतियाणं सेहा उवट्ठिता, ते भायणाणि मग्गंति, जति ण देंति अप्पणो हाणि।

अहवा – तेणेहिं उवकरणं अवहरियं, अप्पणो परस्स उभयस्स वा। एवं पडिणीएहिं अवहितं जे दोसे पाविहिंति तमावज्जे ॥२१६१॥

अद्धाण णिग्गतादी, ण य देंते हाणि अप्पणो देंते।
गिहिभाणेसण पोरिसि, कायाण विराधणमडंतो ॥२१६२॥

पुव्वद्धं गतार्थं। पलिभिदिय परिट्ठवितेसु भायणासति जति गिहिभायणपरिभोगं करेति, अणेसणीयं वा गेण्हति, भायणे वा गवेसंतो पोरिसिभंगं करेति, भायणट्ठा वा अडंतो कायविराहणं करेति ॥२१६२॥ सव्वेसेतेसु पच्छित्तं वत्तव्वं।

एतद्दोसपरिहरणत्थं –

तम्हा ण वि भिंदिज्जा, जातमजातं विगिंचते विधिणा।
विस विज्ज मंत थंडिल्ल, असती तुच्छे य बितियपदं ॥२१६३॥

विस-विज्जाति-कयं जायं, णिद्दोसं अजायं, दुविहं पि जहाभिहिअं विधीए विगिंचए, कारणे भिंदित्ता वि परिट्ठवेति। विसभावियं विज्जाए मंतेण वा अभियोजितं थंडिलस्स वा सति तुच्छं वा डहरयं ण तक्कज्जसाहयं, एतेहिं कारणेहिं भिंदिउं परिट्ठवेति ॥२१६३॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जे भिक्खू वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पायपुंछणं वा अलं थिरं धुवं धारणिज्जं पलिच्छिंदिय पलिच्छिंदिय परिट्ठवेति, परिट्ठवेंतं वा सातिज्जति ।।सू० ६५।।

खोम्मिय कप्पासाति वत्थं, उण्णिगकप्पासाति कंबलं, रय-हरणं पायपुंछणं, उवग्गहियं वा, वा, पलिछिंदिय शस्त्रादिना ।

जे भिक्खू दंडगं वा लट्ठियं वा अवलेहणियं वा वेलु-सूइं वा पलिभंजिय पलिभंजिय परिट्ठवेति, परिट्ठवेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।६६।।

हत्थेहिं आमोडणं पलिभंजणं ।

पायम्मि य जो उ गमो, णियमा वत्थम्मि होति सो चेव ।
दंडगमादीसु तहा, पुव्वे अवरम्मि य पदम्मि ।।२१६४।।

जे भिक्खू अइरेय-पमाणं रयहरणं धरेइ, धरेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।६७।।

रओ दव्वे भावे य । तं दुविहं पि रयं हरतीति रयोहरणं । अतिरेगं धरेंतस्स मासलहुं ।

गणणाए पमाणेण य, हीणातिरित्तं च अवचितोवचितो ।
झुसिरं खर-पम्हं वा, अणेगखंडं च जो धारे ।।२१६५।।

सव्वेसु वि झुसिरवज्जेसु मासलहुं, झुसिरे चउलहुं, गणणाए उदु-बद्धे एगं, वासासु दो, पमाणपमाणेण बत्तीसंगुलदीहं । जति हीणं एत्तो पमाणाओ करेति तो ओणमंतस्स कडिवियडणा, अपमज्जंतस्स पाणविराहणा, अतिरित्ते अधिकरणं भारो य संचयदोसा य ।

अहवा – सारत्ते एगं धरेति तं हिंडंतस्स उल्लं, जति तेण उल्लेण पमज्जति तो उंडया भवंति, तारिसेण पमज्जंतस्स असंजमो, अपमज्जंतो असंजतो । भारिये आयविराहणा । पोरप्पमाणातो जं ऊणं तं अवचियं, तम्मि भामाणविराहणा, जं पोरप्पमाणातो अतिरित्तं तं उवचियं तम्मि भारो भयपरितावणादि, अतिरित्ते अधिकरणं च संचयदोसा । झुसिरं कोयवगणपावारगणवयगेसु अतिरोमघूलयं वा झुसिरं वा एतेसु संजमविराधणा । पडिलेहणा य ण सुज्झति । खरा णिसट्ठा दसाओ जस्स तं खरपम्हं । एत्थ पमज्जणे कुंथुमादिविराधणा । अणेगसिव्वणीहिं अणेगखंडझुसिरं भवति, एत्थ वि संजमविराहणा । सिव्वंतस्स य सुत्तत्थपलिमंथो । २१६५ ।

जो एवं धरेति –

सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त-विराधणं तहा दुविधं ।
पावइ जम्हा तम्हा, ण वि धारे हीणमइरित्तं ।।२१६६।।
हीणे कज्जविवत्ती, अतिरेगे संचतो अ अधिकरणं ।
झुसिरादि उवरिमेसुं, विराहणा संजमे होति ।।२१६७।।

बत्तीसंगुलातो हीणतरं । शेषं गतार्थं ।।२१६७।।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

हीणाधिए य पोरा, भाणविवत्ती य होति भारो य ।
कडिवियणा य अदीहे, उण्णम उड्डाहमादीया ॥२१६८॥

अंगुट्ठपोराओ हीणं अवचियं, अहियं उवचियं, हीणे भायणविवत्ती, अधिए भारो बत्तीसंगुलातो हीणं अदीहं भवति, तम्मि उणमंतस्स कडिवियणा, अति ओणते य जलहरपलंबणे उड्डाहो ॥२१६८॥

उडु-वासासु धरणे इमं पमाणं –

एगं उडुबद्धम्मि, वासावासासु होति दो चेव ।
दंडो दसा य तस्स तु पमाणतो दोण्ह वी भइया ॥२१६६॥

जति दंडो हत्थपमाणो तो दसा अट्ठंगुला । इह दंडगहणातो गब्भदडिया रयोहरणपट्टगो वा । अह दंडो वीसंगुलो तो दसा बारंगुला । अह दंडगो छव्वीसंगुलो तो दसा छ अंगुला । एवमाइ भयणा ॥२१६६॥

इमेरिसं धरेयव्वं –

पडिपुण्ण हत्थ पूरिम, जुत्तपमाणं तु होति णायव्वं ।
अप्पोलम्मि तु पम्हं, च एगखंडं चऽणुण्णातं ॥२१७०॥

बत्तीसंगुलपडिपुण्णं बाहिरणिसज्जाए सह हत्थपूरिमं, एरिसं जुत्तपमाणं रओहरणं । पोल्लड़यं पोल्लं अपोल्लं, अज्झुसिरमित्यर्थः, मउअ दसम्मि उ पोम्हं, एगखडं च एरिसं अणुण्णातं ॥२१७०॥

भवे कारणं जेण सव्वाण वि धरेज्जा –

बितियपदमणप्पज्झे, असइ पुव्वकय दुल्लभे चेव ।
सण्हे थुल्ले य खरे, एगस्स सती य दुगमादी ॥२१७१॥

अणप्पज्झो सव्वाणि करे धरेति वा । अप्पज्झो वि असति जहाभिहियस्स हीणातिरित्तिए करेज्ज वा, पुव्वकतं वा हीणातिरित्तादियं, दुल्लभं वा, जाव लभति ताव हीणातिरित्ताए वि धरेति, असतीए सण्हं वा धरेति, थूलं वा धरेति, खरदसं वा धरेति, एगखंडस्स वा असति दुगति-खंडं धरेति ॥२१७१॥

सण्हे करेति थुल्लं, उ गब्भयं परिहरेंति तं थुल्ले ।
झुसिरेऽवणेति लोमे, खरं तु उल्लं पुणो मलए ॥२१७२॥

सण्हे रयहरणपट्टते थूलं गब्भयं करेति । अह थूलो रहरणपट्टतो ताहे रयहरणगब्भयं परिहरेंति । गब्भए वा थूले तं पट्टयं परिहरेति । रोमज्झुसिरे तो रोमे अवणेति । अह खरदसं ताहे उल्लेउं पुणो मलिज्जति ॥२१७२॥

जे भिक्खू सुहुमाइं रयहरण-सीसाइं करेति, करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६८॥

सुहुमा सण्हा, रयहरणसीसगा दसाओ ।

जे भिक्खू सुहुमाइं, करेज्ज रयहरण-सीसगाइं तु ।
सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त-विराधणं पावे ॥२१७३॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इमे दोसा –

मूढेसु सम्मद्दो, भुसिरमणाइण्णदुब्बला चेव।
सुहुमेसु होंति दोसा, बीतियं कासी य पुव्वकते ॥२१७४॥

मूढेसु सम्मद्दोसो, भुसिरदोसो, साधूहिं अणाइण्णो, दुब्बला य भवंति। बितियपदं अणप्पज्झाइ पुव्वकते वा ॥२१७४॥

जे भिक्खू रयहरणं कंडूसग-बंधेणं बंधति, बंधंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६९॥

कंडूसगबंधो णाम जाहे रयहरणं तिभागपएसे खोमिएण उण्णिएण वा चीरेणं वेढियं भवति ताहे उण्णियदोरेण तिपासियं करेति, तं चीरं कंडूसगपट्टओ भण्णति।

कंडूसगबंधेणं, तज्जइतरेण जो उ रयहरणं।
बंधति कंडूसो पुण, पट्टउ आणादिणो दोसा ॥२१७५॥

आणाइणो दोसा मासलहुं च ॥२१७५॥

इमे य दो दोसा –

अतिरेगउवधिअधि करणमेव सज्झाय-झाण-पलिमंथो।
कंडूसगबंधम्मी, दोसा लोभे पसज्जणता ॥२१७६॥

अतिरेगोवहि निरुवओगत्तणओ य अधिकरणं, तस्स सिव्वणधोवणा बंधण-मुयणेहिं सुत्तत्थपलिमंथो, य पसंगो, णट्ठे हिय-विस्सरिएहिं य अधिती भवति ॥२१७६॥

बितियपदमणप्पज्झे, असतीए दुब्बले य पडिपुण्णे।
एतेहिं कारणेहिं, संबद्धं कप्पती काउं ॥२१७७॥

एगम्मि पएमे दुब्बलं, ताहे पडिसवडिं करेंति, अपडिपुण्णं वा तेण वेढेत्ता हत्थपूरिमं करेंति। एतेहिं कारणेहिं तथेव थिग्गलकारेणं संबद्धं करेति, जेण एगपडिलेहणा भवति ॥२१७७॥

जे भिक्खू रयहरणं अविहीए बंधति, बंधंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७०॥

अवसव्वादि अविधिबंधो।

जे भिक्खू रयहरणं एक्कं बंधं देति देंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७१॥

एगबंधो एगपासियं।

जे भिक्खू रयहरणस्स परं तिण्हं बंधाणं देइ, देंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७२॥

तिपासितातो परं चउपासियादि। आणादिणो य दोसा। बहुबंधणे सज्झायझाणे य पलिमंथो य भवति।

एतेसिं तिण्ह वि सुत्ताण इमो अत्थो।

तिण्हुवरि बंधाणं, डंड-तिभागस्स हेट्ठ उवरिं वा।
दोरेण असरिसेण व संतरं बंधणाणादी ॥२१७८॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

दंडतिभागस्स जति हेट्ठा बंधति, उवरिं वा बंधति, असरिसेण वा दोरेण अतज्जाइएण बंधतो वा संतरं दोरं करेति तो आणातिया दोसा, सव्वेसु मासलहुं ॥२१७८॥

जम्हा एते दोसा –

तम्हा तिपासियं खलु, दंडतिभागे उ सरिसदोरेणं ।
रयहरणं बंधेज्जा, पदाहिण णिरंतरं भिक्खू ॥२१७९॥

बितियपदमणप्पज्झे, बंधे अविकोविते व अप्पज्झे ।
जाणंते वा वि पुणो, असती अण्णस्स दोरस्स ॥२१८०॥

अण्णासति तज्जातियस्स ॥२१८०॥

जे भिक्खू रयहरणं अणिसट्ठं धरेति, धरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७३॥

अणिसट्ठं णाम तित्थकरेहिं अदिण्णं, तस्स मासलहुं आणादिणो य दोसा ।

णिज्जुत्ती इमा –

दव्वे खेत्ते काले, भावे य चउव्विधं तु अणिसट्ठं ।
बितिओ वि य आएसो, जं ण वि दिण्णं गुरुजणेणं ॥२१८१

पंचतिरित्तं दव्वे उ, अचितं दुल्लभं च दोसुं तु ।
भावम्मि वन्नमोल्ला, अणणुण्णायं व जं गुरुणा ॥२१८२॥

दव्वतो पंचण्हं अइरित्तं-उण्णियं उट्टियं सण वच्चय मुंज-पिच्चं वा । एतेसिं पंचण्हं परतो णाणुण्णातं, "दोसु" खेत्त-कालेसु जं अच्चित्तं दुल्लभं वा तं णाणुण्णातं, भावतो जं वण्णड्ढं, महद्धण-मोल्लं व, तं णो तित्थकरेहिं णिसट्ठं ण दत्तमित्यर्थः ।

अहवा – बितिओ आएसो – जं गुरुजणेण नो अणुन्नायं तं अणिसिट्ठं ॥२१८२॥

एतेसामण्णतरं, रयहरणं जो धरेज्ज अणिसट्ठं ।
आणाति विराहणया, संजम मुच्छा य तेणादी ॥२१८३॥

महद्धणे वण्णड्ढे वा मुच्छा भवति । रागो रागेण संजमविराधणा, तेणातिएहिं वा हरिज्जति ॥२१८३॥

बितियपदमणप्पज्झे, धरेज्ज अविकोविते व अप्पज्झे ।
जाणंते वा असती, धरेज्ज असिवादिवेगागी ॥२१८४॥

असिवेण एगागी जातो । तेण कस्स णिवेएउ ? गुरू णत्थि । एवं अणिसट्ठं पि धरेज्ज ॥२१८४॥

जे भिक्खू रओहरणं वोसट्ठं धरेइ, धरंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७४॥

आउग्गहखेत्ताओ, परेण जं तं तु होति वोसट्ठं ।
आरेणमवोसट्ठं, वोसट्ठे धरेंत आणादी ॥२१८५॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वोसट्ठं णाम आउग्गहातो परेण । जं पुण आतोग्गहे वट्टति तं अवोसट्ठं । आयपमाणं खेत्तं आयोग्गहे । इह पुण रयोहरणं पडुच्च समंततो हत्थो, हत्थाओ परं ण पावति त्ति वोसट्ठं भण्णति ॥२१८५॥

वोसट्ठ-धरणे इमे दोसा –

मूइंगमाति-खइते, अपमज्जंते तु ता विराधेति ।
सप्पे व विच्छुगे वा, जा गेण्हति खइए आताए ॥२१८६॥

मूइंगा पिपीलिता एताहिं खतितो, आदिसद्दातो मक्कोडगातिणा । जति अपमज्जिउं रयोहरणेण कंडूयति तो विराहेति । रयहरणं अपावेंतो वा सहसा कंडूयति तो विराहेति । आरुट्ठो सप्पो विच्छुगो वा आगतो जाव रयहरणं गेण्हति ताव खइतो मतो, आयविराहणा ॥२१८६॥

बितियपदमणप्पज्झे, धोतुल्ल-गिलाण-संभमेगतरे ।
असिवादी परलिंगे, वोसट्ठं पी धरेज्जाहि ॥२१८७॥

अणप्पज्झो धरेति, धोवं वा जाव उच्चादि, नइसंतरणे वा उल्लं, गिलाणो गिलाणपडियारगो वा उव्वत्तणाइ करेंतो, अगणिसंभमे वा धरेंतो, असिवादिकारणेण वा परलिंगं गहियं । एतेहिं कारणेहिं वोसट्ठं पि धरेज्ज ॥२१८७॥

मुहपोत्ति-णिसेज्जाए, एसेव गमो उ होइ णायव्वो ।
वोसट्ठमवोसट्ठे, पुव्वे अवरम्मि य पदम्मि ॥२१८८॥

मुहपोत्तियणिसेज्जाए एसेव गमो वोसट्ठावोसट्ठेसु पुव्वावरपतेसु ॥२१८८॥

जे भिक्खू रओहरणं अभिक्खणं अभिक्खणं अधिट्ठेति,
अधिट्ठंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७५॥

अधिट्ठणं णाम जं णिसेज्जवेढिए चेव उववसिणं, एयं अहिट्ठणं, मासलहुं, आणादिया य दोसा ।

तिण्हं तु विकप्पाणं, अण्णतराएण जो अधिट्ठेज्जा ।
पाउंछणगं भिक्खू, सो पावति आणमादीणि ॥२१८९॥

इमे तिण्णि विकप्पा –

दोहि वि णिसिज्जणाह, एक्केण व बितिओ ततिय पादेहिं ।
अहवा मग्गतो एक्को, दोहि वि पासेहि दोण्णि भवे ॥२१९०॥

णिसेज्जणा पुता भण्णति, तेहिं दोहिं वि उववसति, एक्को विकप्पो । एगेण वा बितिओ विकप्पो । दोसु पायपण्हिआसु अक्कमति । ततिओ विकप्पो ।

अहवा– मग्गतो त्ति पिट्ठतो अक्कमति । एगो विकप्पो । दोसु पासेसु पुतोरूएसु अक्कमति । एते दो विकप्पा । एते वा तिण्णि ॥२१९०॥

बितियपदमणप्पज्झे, अधिट्ठे अविकोविते व अप्पज्झे ।
जाणंते वा वि पुणो, भूसग-तेणातिमादीसु ॥२१९१॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मूसगेण वा कुट्टिज्जति, तेणगेसु वा हरिज्जति, आदिसद्दातो चेडरूवाणि वा हरेज्जा, पडिणीओ वा तेण अधिट्ठेज्ज ॥२१६१॥

जे भिक्खू रयहरणं उस्सीस-मूले ठवेति, ठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७६॥

जे भिक्खू रयहरणं तुयट्टेइ, तुयट्टेंतं वा सातिज्जति
तं सेवमाणे आवज्जति मासितं परिहारट्ठाणं उग्घाइयं ॥सू०॥७७॥

तं सेवमाणे आवज्जति मासितं परिहारट्ठाणं उग्घाइयं। सीसस्स समीवं उवसीसं, वकारलोपात् तत्स्थानवाची मूलशब्दः। सीसस्स वा उवखंभणं उसीसं ट्ठवणं णिक्खेवो सुत्तपडिसेधितं, सेवमाणे आवज्जति-पावति, परिहरणं परिहारो, चिट्ठति जम्मि तं ठाणं, लहुगमिति उग्घातियं।

जे भिक्खू तुयट्टेंते, रयहरणं सीसते ठवेज्जा हि।
पुरतो व मग्गतो वा, वामगपासे णिसण्णो वा। २१६२॥

त्वग्वर्तनं तुयट्टणं शयनमित्यर्थः, वामपासे, दाहिणपासे वा उवरिहुत्तदसं, पादमूले वा ठवेति, ण केवलं णिसण्णो, णिसण्णो वा पुरओ मग्गओ वा वामपासे ठवेति ॥२१६२॥

सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त-विराधणं तहा दुविधं।
पावति जम्हा तेणं, दाहिणपासम्मि तं कुज्जा ॥२१६३॥

तम्हा णिवण्णो णिसण्णो वा दाहिणपासे अधोदसं करेज्जा ॥२१६३॥

बितियपदमणप्पज्झे, करेज्ज अविकोविते व अप्पज्झे।
ओवास असति मूसग-तेणगमादीसु जाणमवि ॥२१६४॥

॥ इति विसेस-णिसीहचुण्णीए पंचमो उद्देसओ समत्तो ॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

षष्ठ उद्देशकः

पंचमउद्देसाओ छट्ठस्स इमो संबंधो –

उस्सीसग-गहणेणं, निसि सुवणं निसि समुब्भवो मोहो ।
गुरुलहुगा चउ मासा, वुत्ता चउमासिया इणमो ॥२१६५॥

पंचमस्स अंतिमे सुत्ते उस्सीसगगहणं कतं, तेण रत्तिं सुवणं वक्खायं, रातो सुव्वति, दिवसतो ण कप्पति सुविउं । रातो य समुब्भवो मोहो भवति । तेण य उदिण्णेण कोइ मेहुणपडियाए माउग्गामं विण्णवेज्ज । एस संबंधो ।

अहवा - इमो अण्णो संबंधो –

आइल्लएसु पंचसु उद्देसएसु गुरु लहु मासो भणितो, इयाणिं चउम्मासिया गुरुलहुगा भण्णंति ॥२१६५॥

जे भिक्खू माउग्गामं मेहुणपडियाए विण्णवेति,
विण्णवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१॥

मातिसमाणो गामो मातुगामो । मरहट्ठविसयभासाए वा इत्थी माउग्गामो भण्णति । मिहुणभावो मेहुणं, मिथुनकर्म वा मेहुनं अब्रह्ममित्यर्थः । मिथुनभावप्रतिपत्तिः । पडिया मैथुनसेवनप्रतिज्ञेत्यर्थः । विज्ञापना प्रार्थना ।

अथवा – तद्भावसेवनं विज्ञापना, इह तु प्रार्थना परिगृह्यते । सुत्तत्थो ।

अधुना – निर्युक्तिविस्तरः –

माउग्गामो तिविहो, दिव्वो माणुस्सतो तिरिक्खो अ ।
एक्केक्को वि य दुविहो, देहजुतो चेव पडिमजुओ ॥२१६६॥

सो मातुगामो तिविधो – दिव्वो माणुस्सतो तिरिच्छो । पुणो एक्केक्को दुविधो कज्जति – देहजुतो, लेप्पगादि-पडिमाजुत्तो य ॥२१६६॥

देहजुतो वि य दुविहो, सज्जीवो तह य चेव णिज्जीवो ।
सण्णिहितमसण्णिहितो, दुविधो पडिमाजुतो होति ॥२१६७॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

देहं सरीरमित्यर्थः । देहजुतो पुण दुविधो – सचेयणो अचेयणो य । पडिमाजुतोवि दुविधो कज्जति-सन्निहिओ असन्निहिओ य ॥२१९७॥ एस दिव्वभेतो भणितो । माणुस-तिरिच्छएसु एस चेव भेदो भाणियव्वो ।

दिव्वे अचित्तदेहजुते इमं भण्णति –

पण्णवणामेत्तमिदं, जं देहजुतं अचेतणं दिव्वं ।
तं पुण जीव-विमुक्कं, भिज्जति स तधा जह य दीवो ॥२१९८॥

यस्मादचित्तं देवशरीरं नास्ति, तस्मात् प्रज्ञापना मात्रं । तं पुण इमेण कारणेण नत्थि – जीवविमुक्क-मेत्तमेव स तहा भिज्जति, प्रदीपशिखावत् ॥२१९८॥

एक्केक्को वि य तिविधो, जहण्णओ मज्झिमो य उक्कोसो ।
परिगहियमपरिगहिओ, एक्केक्को सो भवे दुविहो ॥२१९९॥

सो माउग्गामो दिव्वातिओ एक्केक्को तिविधो - जहण्णमज्झिमुक्कोसो । वाणमंतरं जहण्णं, भवणजोइसिया मज्झिमं, वेमाणियं उक्कोसं । माणुसेसु पायावच्चं जहण्णं, कोडुबियं मज्झिमं, दंडियं उक्कोसं । तिरिएसु जहण्णे अय-एलगादि । मज्झिमं व लवा - महासड्ढियादि, उक्कोसं गो-महिसादि । एक्केक्कं पुणो सपरिग्गहापरिग्गहभेएणं दुविहं कज्जति ॥२१९९॥

सपरिग्गहं पुणो तिविधं इमेहिं कज्जति –

पायावच्च कुडुंबिय, दंडियपरिग्गहो भवे तिविधो ।
तव्विवरीओ य पुणो, णातव्वऽपरिग्गहो होति ॥२२००॥

एतेहिं तिहिं परिग्गहियं सपरिग्गहं, एयव्वतिरित्तं अपरिग्गहं ॥२२००॥

एवं तियभेदपरूवियस्स माउग्गामस्स विण्णवणा दुविहा –

दिट्ठमदिट्ठा य पुणो, विण्णवणा तस्स होइ दुविहा उ ।
ओभासणयाए या, तब्भावासेवणाए य ॥२२०१॥

विण्णवणा दुविधा । ओभासणता प्रार्थनता, मैथुनासेवनं तदभावासेवनं ॥२२०१॥

इयाणिं एतेसिं भेयाणं ओभासणाए तब्भावासेवनाए य पच्छित्तं भण्णति ।

तत्थ पढमं तब्भावासेवणाए भण्णति –

मासगुरुगादि छल्लहु, जहण्णए मज्झिमे य उक्कोसे ।
अपरिग्गहितऽचित्ते, दिट्ठादिट्ठे य देहजुते ॥२२०२॥

दिव्वे देहजुत्ते अचित्ते अपरिग्गहं जहण्णयं अदिट्ठे सेवति मासगुरुं । दिट्ठे ङ्का ।
एयम्मि चेव मज्झिमए अदिट्ठे ङ्क । दिट्ठे ङ्का ।
एयम्मि [illegible] . उक्कोसए अदिट्ठे ङ्का । दिट्ठे फ्ं । एयं अपरिग्गहं गयं ॥२२०२॥

इयाणिं एतं चेव अचित्तं पायावच्चपरिग्गहं भणति –

चउलहुगादी मूलं, जहण्णगादिम्मि होति अचित्ते ।
तिविहे अपरिग्गहिते, दिट्ठादिट्ठे य देहजुते ॥२२०३॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

दिव्वे देहजुते अचित्ते पायावच्चपरिग्गहे जहण्णए अदिट्ठे ङ्क। दिट्ठे ङ्का।
एयम्मि चेव मज्झिमए अदिट्ठे ङ्क। दिट्ठे फुं।
एतम्मि चेव उक्कोसए अदिट्ठे दिट्ठे फ्री।
कोडुंबिए चउगुरुगातो आढत्तं अड्ढोक्कंतीए छेते ठाति।
दंडिय – पडिग्गहे छल्लहुयातो आढत्तं अड्ढोक्कंतीए मूले ठाति। गतं अचित्तं ॥२२०३॥

इयाणिं सचित्तं भण्णति –

चतुगुरुगादी छेदो जहण्णए मज्झिमे य उक्कोसे।
अपरिग्गहिते देहे, दिट्ठादिट्ठे य सच्चित्ते ॥२२०४॥

दिव्वे देहजुते सचित्ते अपरिग्गहे जहण्णए अदिट्ठे ङ्का। दिट्ठे फुं,
एयम्मि चेव मज्झिमए अदिट्ठे फुं। दिट्ठे फ्री।
एयम्मि चेव उक्कोसए अदिट्ठे फ्री। दिट्ठे छेतो। दिव्वं सचित्तं अपरिग्गहं गतं ॥२२०५॥

इयाणिं सपरिग्गहं –

छल्लहुगादी चरिमं, जहण्णगादिम्मि होति सच्चित्ते।
तिविहे ति-परिग्गहिते, दिट्ठादिट्ठे य देहजुते ॥२२०५॥

दिव्वं देहजुत्तं सचित्तं पायावच्चपरिग्गहं जहण्णयं अदिट्ठे फुं। दिट्ठे फ्री।
एयम्मि चेव मज्झिमे अदिट्ठे छेतो। दिट्ठे मूलं।
कोडुंबियपरिग्गहे छग्गुरुगातो अणवट्ठे ठायति।
दंडियपरग्गहे छेयाति पारंचिए ठायति ॥२२०५॥ दिव्वं देहजुयं गतं।
इयाणिं पडिमाजुतं भण्णति।

तत्थिमो अतिदेसो –

सण्णिहितं जह स-जियं, अच्चित्तं जह तधा असण्णिहितं।
पडिमाजुतं तु दिव्वं, माणुस तेरिच्छि एमेव ॥२२०६॥

जहा दिव्वं देहजुयं सचित्तं भणियं सण्णिहियं पडिमाजुयं वत्तव्वं।
जहा दिव्वं देहजुत्तं अचित्तं भणियं, तहा असण्णिहियं पडिमा जुत्तं वत्तव्वं। दिव्वं गतं।
इयाणिं माणुसं तिरिक्खजोणियं च भण्णति।
ते वि अविसिट्ठा एवं चेव भाणियव्वा ॥२२०६॥

णवरं–इमो विसेसो –

पच्छित्तं दोहि गुरुं, दिव्वे गुरुगं तवेण माणुस्से।
तेरिच्छे दोहि लहू, तवारिहं विण्णवंतस्स ॥२२०७॥

जे दिव्वे तवारिहा ते दोहिं वि तवकालेहिं गुरुगा। माणुस्से जे तवारिहा ते तवगुरुगा। तेरिच्छे जे तवारिहा ते कालगुरु।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अहवा – दोहिं वि तवकालेहिं लहुगा। तब्भावासेवविण्णवणाए एयं पच्छित्तं वुत्तं ॥

अहवा – इमो अण्णो तब्भावासेवणपायच्छित्तदाणविगप्पो।

तिण्णि पया तेरिच्छा ठावेयव्वा – दिव्व-मणुय-तिरिया।

तेसिमहो दो पता ठावेयव्वा - देहजुत्तं, पडिमाजुयं च।

तेसिं पि अहो तिण्णि पया ठावेयव्वा–जहण्ण मज्झिम मुक्कोसं च।

तेसिमधो तिण्णि पया ठावेयव्वा – पायाइय-कोडुंबिय-दंडियसपरिग्गहा।

तेसिमहो दो पया ठावेयव्वा–अचित्तं, सचित्तं च।

तेसिमहो दो पया ठावेयव्वा - अदिट्ठं दिट्ठं च ॥२२०७॥

एवं ठाविएसु इमा गाहा पढियव्वा –

अयमण्णो उ विगप्पो, तिविहे तिपरिग्गहम्मि णायव्वो।
सजिएयर पडिमजुए, दिव्वे माणुस्स तिरिए य ॥२२०८॥

"तिविह" त्ति - जहण्णादिया तिपरिग्गहिया पायातिया तिया सजीयं-सचेयणं, इयरं च अचेयणं। पडिमाजुतं सण्णिहियं असण्णिहियं च। दिव्वादियं च तिविहं, चसद्दाओ दिट्ठं अदिट्ठं ॥२२०८॥

एतेसिं अहो इमे सत्त पायच्छित्तपया ठावेयव्वा –

चत्तारि छच्च लहुगुरु, छम्मासिओ छेओ लहुगगुरुगो य।
मूलं जहण्णगम्मि वि, णिसेवमाणस्स पच्छित्तं ॥२२०९॥

चउलहुगं चउगुरुं छल्लहुं छग्गुरुं छल्लहुछेदो छग्गुरुछेदो मूलं च। एते अढोवक्कंतीए चारेयव्वा।

इमो चारणियप्पगारो –

दिव्वे देहजुते जहण्णए पायावच्चपरिग्गहे अचित्ते अदिट्ठे ङ्क। दिट्ठे ङ्का।

दिव्वे देहजुते जहण्णए पायावच्चपरिग्गहे सचित्ते अदिट्ठे ङ्का। दिट्ठे र्फु।

दिव्वे देहजुते जहण्णए कोडुंबियपरिग्गहे अचित्ते अदिट्ठे र्फु। दिट्ठे र्फा।

दिव्वे देहजुते जहण्णए कोडुंबियपरिग्गहे सचित्ते अदिट्ठे र्फा। दिट्ठे छल्लहुछेदो।

दिव्वे देहजुते जहण्णए दंडियपरिग्गहे अचित्ते अदिट्ठे र्फु। दिट्ठे र्फा। (छग्गुरुछेदो)

दिव्वे देहजुते जहण्णए दंडियपरिग्गहे सचित्ते अदिट्ठे छग्गुरुछेदो, दिट्ठे मूलं ॥२२०९॥

एयं जहण्णाते तब्भावविण्णवणाए[1] य भणियं।

इयाणिं मज्झिमे –

चउगुरुग छच्च लहु गुरु, छम्मासिय छेदो लहुग गुरुगो य।
मूलं अणवट्ठप्पो, मज्झिमए सेवमाणस्स ॥२२१०॥

एसेव चारणियप्पगारो, णवरं–चउगुरुगा पारद्धं अणवट्ठे ठायति ॥२२१०॥

---

१ सेवणाए।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इयाणिं उक्कोसं –

तव छेदो लहु गुरुगा, छमासिउ मूलसेवमाणस्स।
अणवट्ठप्पो पारंचिओ य उक्कोसविण्णवणे ॥२२११॥

तवगहणातो छल्लहु छग्गुरुगा। छेयग्गहणातो छल्लहुछेदो, छग्गुरुछेदो। सेसं गंथपसिद्धं। एत्थ छल्लहु आढत्तं पारंचिए ठाति। देहजुत्तं गतं ॥२२११॥

इमं पडिमाजुयं –

सण्णिहियं जह सजियं, अच्चित्तं जह तहा असण्णिहियं।
पडिमाजुयं तु दिव्वं, माणुस तेरिच्छि एमेव ॥२२१२॥
पच्छित्तं दोहि गुरुं, दिव्वे गुरुगं तवेण माणुस्से।
तेरिच्छे दोहि लहु, तवारिहं विण्णवेंतस्स ॥२२१३॥

पूर्ववत्। एते पच्छित्ता दिव्वे दोहिं गुरू, मणुस्से तवगुरू, तेरिंच्छे कालगुरू।

अहवा–दोहिं लहु।

अहवा – मणुस–तिरिएसु इमो अण्णो विकप्पो।

अहवा – जं भणियं तं दिव्वे चेव ॥२२१३॥

इयाणिं माणुस-तिरिएसु भण्णति।

तत्थ वि इमं मणुएसु –

चउगुरुगा छग्गुरुगा, छेदो मूलं जहण्णए होंति।
छग्गुरुगा छेदो, मूलं अणवट्ठप्पो य मज्जिमए ॥२२१४॥

माणुस्सं जहण्णं पायावच्चपरिग्गहं अदिट्ठं सेवति ङ्का। दिट्ठे फ्रुं।

कोडुंबिए अदिट्ठे सेवति फ्रुं। दिट्ठे छेदो।

दंडिए अदिट्ठे सेवति छेदो, दिट्ठे मूलं।

एवं जहण्णए। मज्झिमे पच्छद्धं-छग्गुरुग आढत्तं अणवट्ठे ठाति ॥२२१४॥

इमं उक्कोसे –

छेदो मूलं च तहा, अणवट्ठप्पो य होति पारंची।
एवं दिट्ठमदिट्ठे, माणुस्से विण्णवेंतस्स ॥२२१५॥

छेयातो आढत्तं पारंचिए ठाति ॥२२१५॥ माणुसं गयं।

इयाणिं तिरियाणं -

चउलहुगा चउगुरुगा, छेदो मूलं जहण्णए होति।
चउगुरु छेदो मूलं, अणवट्ठप्पो य मज्झिमए ॥२२१६॥
छेदो मूलं च तहा, अणवट्ठप्पो य होति पारंची।
एवं दिट्ठमदिट्ठे, तेरिच्छं विण्णवेंतस्स ॥२२१७॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जहा माणुसे चारणा तहा एयम्मि दट्ठव्वं ॥२२१७॥

मेहुणभावो तब्भावसेवणे सेवगस्स पच्छित्तं ।
वुत्तं वोच्छामेत्तो, ओभासंतस्स पच्छित्तं ॥२२१८॥

मेहुणसेवणं तद्भावसेवणा, ताए पच्छित्तं भणियं ।

अहवा – इमो अण्णो तद्भावसेवणे पच्छितविकप्पो ।

मासगुरुं चउगुरुगा, दो चतुगुरुगा य लहुय लहुया य ।
दो चतुलहुगा य तहा, दिव्वे माणुस्स तेरिच्छे ॥२२१९॥

अविसेसिते देहसंजुत्ते अचित्ते अपरिग्गहे अदिट्ठे मासगुरुं । दिट्ठे चउगुरुं
अविसेसिते देहसंजुत्ते सचित्ते अविसेसियपरिग्गहे अदिट्ठे चउगुरुं । दिट्ठे वि चउगुरुं ।
अविसेसिते देहजुते अपरिग्गहे अचित्ते अदिट्ठे मासलहुं । दिट्ठे चउलहुं ।
अविसेसिते देहजुते अचित्ते अविसेस-परिग्गहे अदिट्ठे चउलहुं । दिट्ठे वि चउलहुं ।
दिव्व-माणुस-तिरिएसु अविसेसियं भणियं ॥२२१९॥ एवं देहजुयं गयं ।

इमं पडिमाजुयं –

सण्णिहियं जह सजियं, अचित्तं जह तहा असण्णिहियं ।
पडिमाजुयं तु दिव्वं, माणुस तेरिच्छि एमेव ॥२२२०॥

पच्छित्तं दोहि गुरु, दिव्वे गुरुगं तवेण माणुस्से ।
तेरिच्छे दोहि लहू, तवारिहं विण्णवेंतस्स ॥२२२१॥

पूर्ववत् ॥२२२२॥ तब्भावसेवणो ततिओ विकप्पो गओ ।

[1]"वोच्छामेत्तो ओभासंतस्स पच्छित्तं" ति अस्य व्याख्या –

अविसेसितमदिट्ठे, गुरुगो दिट्ठे य होंति गुरुगा उ ।
दिव्वनरअदिट्ठ गुरुगो, दिट्ठे गुरुगा य दोहिं पि ॥२२२२॥

दिव्व-मणुय-तिरियविसेसेणं अविसेसियं ओभासति अदिट्ठे मासगुरुं । दिट्ठे चउगुरुगा ।

इयाणिं-विसेसियं दिट्ठं अदिट्ठं ओभासति ।

(देवेसु अदिट्ठे) मासगुरुं, नरेसु (अदिट्ठे) ओभासति मासगुरुं । एवं चेव दोहिं वि दिट्ठेसु चउगुरुगा ॥२२२२॥

तिरियमचेतसचेते, गुरुओ अदिट्ठे दिट्ठे चउलहुगा ।
ओभासंतस्सेवं, तब्भावासेवणे वुत्तं ॥२२२३॥

---

१ गा० २२१८ ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तिरिएसु चेयणे अचेयणे वा अदिट्ठे ओभासति मासगुरुं। दोसु वि दिट्ठेसु चउलहुगा। एयं ओभासेंतस्स वुत्तं। तब्भावासेवणे पुण: पुरा वुत्तं।

सीसो पुच्छति – सचित्ते ओभासणं भवति, अचित्ते ओभासणा कहं संभवति ?

आयरिओ आह – अचित्ते संकप्पकरणा चेव ओभासणा ॥२२२३॥

एतेसामणतरं, माउग्गामं तु जो उ विण्णवए।
सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त-विराधणं पावे ॥२२२४॥

पूर्ववत् ॥२२२४॥ पडिमाजुत्तं जं सण्णिहियं तं दुविधं – पंता, भद्दा वा।

सण्णिहिय-भद्दियासु, पडिबंधो गिण्हणादिओ दोसा।
पंतासु लग्गकड्ढण, खित्तातो दिट्ठ पत्थारो ॥२२२५॥

पडिमाजुते सण्णिहिते भद्दिया इत्थिविब्भमे करेज्ज, ताहे तत्थेव से पडिबंधो भवेज्ज। एस अदिट्ठे दोसो।

अह केणति दिट्ठो ताहे उड्डाहो गेण्हण-कड्ढणादओ दोसा। पंतासु इमे अदिट्ठे दोसा पंता-पडिसेवंतं तत्थेव लगेज्ज, श्वानवत्।

अह केणइ दिट्ठो ताहे गेण्हणादयो दोसा। अहवा – सा पंता खित्तातियं करेज्जा। दिट्ठे पत्थारदोसे य। पत्थारो णाम एयस्स णत्थि दोसो, अपरिक्खय-दिक्खगस्स (अह) दोसो, ॥२२२५॥ एते सण्णिहिते दोसा वुत्ता।

इमे असण्णिहिते –

एमेव असण्णिहिते, लग्गण-खेत्तादिया णवरि णत्थि।
तत्थेव य पडिबंधो, दिट्ठे गहणादिया उभए॥२२२६॥

दिट्ठे गेण्हणादिया दोसा असण्णिहिए वि भवंति। "उभए" त्ति अप्पणो परस्स य आयरियादीणं ॥२२२६॥

सुत्तणिवातो एत्थं, चउगुरुगा जेसु होंति ठाणेसु।
उच्चारितऽत्थ सरिसा, सेसा तु विकोवणट्ठाए ॥२२२७॥

वितियपदमणप्पज्झे, अप्पज्झे वा वि दुविह[2] तेइच्छे।
अभिओग[3] असिव[4] दुब्भिक्खमादिसू जा जहिं जयणा ॥२२२८॥

अणप्पज्झो विण्णवेज्जा वि ण य पच्छित्तं पावेज्जा। अप्पज्झो वा दुविधे तेइच्छे करेज्जा—सणिमित्ते अणिमित्ते वा मोहोदए तिगिच्छा ॥२२२८॥

तत्थिमा जयणा –

मोहोदय अणुवसमे, कहणे अकहेंत होंति गुरुगा उ।
कहितोपेहा गुरुगा, जं काहिति जं च पाविहिती ॥२२२९॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

साहुस्स मोहे उदिण्णे अणुवसमंते आयरिस्स कहेयव्वं। जइ आयरियस्स न कहेति तो साहुस्स चउगुरुं पच्छित्तं। अह कहिते आयरिओ उवेहं करेति तो आयरियस्स चउगुरुगा, उवेहकरणे जं सो मोहोदया हत्थकम्माति काहिति तं सव्वं आयरियस्स पच्छित्तं, जं च गेण्हणादियं उड्डाहं पाविहिति तं पि आयरिओ पावति ॥२२२६॥

दुविधे तेगिच्छम्मी, णिव्वीइतियमादियं अतिक्कंतो।
अट्ठाणसद्दहत्थे, पच्छाऽचित्ते गणे दोच्चं ॥२२३०॥

तम्हा आयरिएण दुविध-मोहोदए तेइच्छं णिव्विगतिमाति कारवेयव्वं।
णिव्वितियं करेउ।

तह वि ण ट्ठिते णिव्वीतियं निब्बलं आहारेइ।

तह वि अट्ठंते ओमं आयंबिलाति उद्धट्ठाणाइयं पि अतिक्कंतो ताहे अट्ठाणेसु ठायति, दुवक्खरियं पाडयं।

तह वि अट्ठंते सद्दपडिबद्धं गच्छति।

तह वि अट्ठंते असागारिए हत्थकम्मं करेइ।

तह वि अट्ठेंतें अचित्ते इत्थीसरीरे बीयनिसग्गं करेइ।

तह वि अट्ठंते "गणे दोच्चं" त्ति-पिहट्ठितो गणस्स दोच्चभंगेण कढिगं पडिसेवति। एस अक्खरत्थो ॥२२३०॥

इयाणिं एतीए चेव गाहाए सवित्थरो अत्थो भण्णति –

उवभुत्त-थेरसद्धिं, सद्दजुता वसहि तह वि उ अठंते।
अचित्त-तिरिय-णारिसु, णारिं णिव्वेगलक्खेज्जा ॥२२३१॥

[1]"अट्ठाण सद्दे" त्ति अस्य व्याख्या – भुत्तभोगिणो जे थेरा तेहिं सद्धिं दुवक्खरियातिपाडगे सद्दपडिबद्धाए य ठायति, जति णाम आलिंगणोवगूहण-चुंबणेतियसद्दं परिचारणसद्दं वा सोउं बीयनिसग्गो भवेत्! [2]"पच्छा अचित्ते" ति अस्य व्याख्या – "अचित्त" पच्छद्धं।

तह वि अट्ठंते अचित्ते तिरिय-णारी-सरीरं पडिसेवति तिण्णि वारा।

तह वि अट्ठंते माणुस्सीए अचित्तसरीरे, तं पुण जइ णिव्वंगं तो सयं करेइ, मा वेयालो हि त्ति। तत्थ वि तिण्णि वारा ॥२२३१॥

तह वि अट्ठंते "गणे दोच्चं" ति दोच्चग्गहणेणं बितिओ भंगो गहितो। बितियभंगग्गहणातो चत्तारि भंगा सूतिता।

ते य इमे –

सलिंगेण सलिंगे। सलिंगेण अण्णलिंगे।

अण्णलिंगेण सलिंगे। अण्णलिंगेण अण्णलिंगे।

सलिंगट्ठितेण अण्णलिंगे सेवियव्वं।

---

[1] गा० २२३०। [2] गा० २२३०।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तं पुण इमाए जयणाए –

लिंगेण चेव किढिया, दियासु जा तिण्णि तेण परमूलं ।
तत्तो चउत्थभंगे, सेसा भंगा पडिक्कुट्ठा ॥२२३२॥

सलिंगेण परलिंगे सेवमाणो गणाम्रो उवभुत्तथेरेहिं सद्धिं अण्णवसहीए ठाविज्जति । तत्थंधकारे किढि-सड्ढीए मेलिज्जति, जहा अण्णोण्णं ण पस्संति । एवं तिण्णि वारा । जति उवसंतं सुंदरं । उवसंतस्स चउगुरु । तिण्हं वाराणं परतो परिसेवमाणस्स मूलं । तह वि अट्ठंतो ततो चउत्थ भंगे सेवति, तत्थ वि तिण्णि वारा, परतो मूलं । सेसा पढम–ततियभंगा पडिक्कुट्ठा ॥२२३२॥

पढमभंगे इमा भवति –

सद्देसे सिस्सिणि सज्झंऽतेवासिणी कुल-गणे य संघे य ।
कुलकण्णगा कुलवधू, विधवा य तहा सलिंगेणं ॥२२३३॥

सदेसे परदेसे वा सिस्सिणीं पडिसेवति, सज्झिवियं पडिसेवति, अंतेवासिणी पडिच्छिगा ।

अहवा – सज्झंतिगस्स अंतेवासिणी भर्तृज्जिकेत्यर्थः, कुले चियं, गणे चियं, संघे चियं वा सेवति ।

बितियभंगेण इमा जइ पडिसेवति –

पितृमातृविशुद्धां कुलकन्यां अभिण्णजोणीं जति तं पडिसेवति, विगतधवं वा रंड, कुलवधुं वा पडिसवति सलिंगेण ॥२२३३॥

एत्थ भंगेसु इमं पच्छित्तं –

लिंगम्मि य चउभंगो, पढमे भंगम्मि होति चरिमपदं ।
मूलं चउत्थभंगे, बितिए ततिए य भयणा तु २२३४॥

सलिंग परलिंगेहिं चउभंगो । तत्थ पढमभंगे पडिसेवंतस्स णियमा चरिमपदं । चरिमे णियमा मूलं । बितिय ततियभंगेसु भयणा पच्छित्तं ॥२२३४॥

बितियभंगे इमा भयणा –

अण्णत्थ सलिंगेणं, कन्नागमणम्मि होति चरिमपदं ।
विहवाए होति णवमं, अविहवणारी य मूलं तु ॥२२३५॥

"अण्णत्थ" त्ति - अण्णलिंगिणी, सलिंगेण पडिसेवति । कण्णं चरिमं, विहवाए अणवट्ठो, अ-विधवाए मूलं ॥२२३५॥

अहवा – बितियभंगे चेव इमं पच्छित्तं ।

अधवा पायावच्ची, कोडंबिणि दंडिणी य लिंगेणं ।
मूलं अणवट्ठप्पो, चरमपदं पावती कमसो ॥२२३६॥

पायावच्चीए मूलं, कोडुंबिणीए अणवट्ठं, डंडिणीए चरिमं ॥२२३६॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ततियभंगे इमा भयणा –

अण्णेण सलिंगम्मि य, सिस्सिणी सज्भंतिगी कुले चरिमं ।
णवमं गणिच्चियाए, संघच्चीए भवे मूलं ॥२२३७॥

अण्णलिंगेण सलिंगि पडिसेवति । सिस्सिणिं सज्जंतिया, सिस्सिणिं कुलेच्चिया, एतेसु चरिमं, गणेच्चियाते अणवट्ठो, संघेच्चियाए मूलं ॥२२३७॥

बितियभंगपडिसेवणाए अणुवसंतो चरिमभंगेण पडिसेवति ।

तत्थिमा जयणा –

गंतूण परविदेसं, लिंगविवेगेण सड्ढि किढिगासु ।
पुव्वभणिया य दोसा, परिहरियव्वा पयत्तेणं ॥२२३८॥

जम्मविहारभूमीओ वज्जेउं परविदेसं गंतूण सलिंगं मोत्तुं किढि-सड्ढिगातिएसु एक्क-दो-तिण्णिवारा, परतो मूलं । पुव्वभणिया य इमे–कण्णा कूलवधू विधवा अमच्ची रण्णो महादेवी पयत्तेणं परिहरियव्वा ॥२२३८॥

सेसासु पडिसेवंतो इमं जयणं करेइ –

जोणी वीए य तहिं, चउक्कभयणा उ तत्थ कायव्वा ।
एग दुग तिण्णि वारे, सुद्धस्स उ वड्ढिता गुरुगा ॥२२३९॥

इत्थीए जाव पणपन्नं वासा ण पूरेंति ताव अमिलायजोणी, अत्तव्वं भवति, गर्भं च गृण्हातीत्यर्थः पणपन्नवासाए पुण कस्सइ अत्तव्वं भवति, ण पुण गब्भं गेण्हति ।

पणपण्णाते परतो णो अत्तव्वं, णो गब्भं गेण्हति, एसा दुस्समं वाससतायुए य पडुच्च पण्णवणा परतो पुण आउसद्धं सव्वाउय-वीसति-भाग-सहियं एसा अमिलायजोणी आतवं भवति । कालो-जाव-पुव्व कोडीयायुया परतः सकृत् प्रसवधर्मिण्यः अमिलाणयोनयश्च अवस्थितयौवनत्वात् ।

जस्स पणपण्णवासा ण पूरंति तस्सिमो चउभंगो –

सबीयाए अंतो बीयं परिसाडेति, सबीयाए बाहिं, अबीयाए अंतो, अबीयाए बाहिं ।

पणपण्णपूरवासाए एस चेव चउभंगो । एत्थ बीयगहणातो अत्तवदिणा घेप्पंति ॥२२३९॥

एतेसु भंगेसु इमं पच्छित्तं –

सबीयम्मि अंतो मूलं, बाहिर-पडिसाडणे भवे छेदो ।
पणपण्णिगाइ अंतो, छेदो बाहिं तु छग्गुरुगा ॥२२४०॥

पणपण्णवरिसा जस्स ण पूरंति ताए तिसु अत्तवदिणेसु तारिसाए सबीयाए अंतो बीयपोग्गले परिसाडेंति मूलं । अह बाहिं तो छेतो । पणपण्णपूरवरिसाए सबीयाए अंतो छेतो । बहिं छग्गुरुगा ॥२२४०॥

अण्णे भणंति –

छेदो छग्गुरु अहवा, दसण्ह अंतो बहिं व आरेणं ।
पणपण्णायपरेणं, छग्गुरु चउगुरुग अंतो बहिं ॥२२४१॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उडु-संभवदिणाम्रो-जाव-दसदिणा ण पूरेंति-ताव-अंतो छेतो, बाहिं छग्गुरुं । "आरेणं" ति – पणरणवासियाए आरेण य एयं भणियं । सेससव्वभंगेसु पणपणाए य परतो छप्पण्णादिवरिसेसु अंतो छग्गुरुगा, बाहिं चउगुरुं । एवं सणिमित्ते अणिमित्ते वा पडिसेवंतस्स एसा जयणा ॥२२४१॥ तेइच्छं ति दारं गतं ।

इयाणिं "[1]अभिओगे" त्ति दारं –

कुलवंसम्मि पहीणे, रज्जं अकुमारगं परो पेल्ले ।
तं कीरतु पक्खेवो, एत्थ उ बुद्धीए पाहणं ॥२२४२॥

अभिओगे ण पडिसेवेज्जा ।

तत्थिमं उयाहरणं – कोइ अपुत्तो राया अमच्चेहिं भणिओ अपुत्तस्स तुज्झ कुलवंसे पहीणे अकुमारस्स य परो पेल्लेहिति रज्जं, किं कज्जउ, भणह–"तुज्झ बुद्धीए पाहण्णं वट्टति ।" मंतीहिं भणियं अंतपुरे कोइ खिप्पउ, तुह खेत्तज्जायया तुह ते पुत्ता । राया भणइ–अयसो मे भविस्सति. । ते भणंति "जहा अयसो ण भवति तहा कज्जति । इमे समणा णिग्गंथा ण कहंति, एते पक्खिप्पंतु । एवं कीरउ । ताहे जे तरुणसंजता ते गहिया एक्कम्मि पासाए छूढा ॥२२४२॥

तरुणीण य पक्खेवो, भोगेहि निमंतणा य भिक्खुस्स ।
भोत्तुं अणिच्छमाणे, मरणं व तहिं च वसियस्स ॥२२४३॥
सुट्ठुल्लसिते भीते, पच्चक्खाणे पडिच्छ गच्छ थेर विदू ।
मूलं छेदो छग्गुरु, चउगुरु लहुमासो गुरु लहुओ ॥२२४४॥

[2]पेढे पूर्ववत् ॥२२३४॥

एवं ता अहिओगेण पडिसेवंतस्स जयणा भणिया ।

"[3]असिव-दुब्भिक्खादिसु" इमा –

बहुआइण्णे इतरेसु, गेण्हमाणाण दुल्लभे भिक्खे ।
असिवम्मि इमा जतणा, दुब्भिक्खे चेव संथरणे ॥२२४५॥

"इतरेसु" पासत्थाइसु बहुयाइण्णे एसणाणेसणेहिं गिण्हंतेसु, साहूण एसणिज्जे दुल्लभे, असिवे वा असंथरंतो, दुब्भिक्खे वा असंथरंतो, ॥२२३५॥

असिव दुब्भिक्खाणमणागयकाले आयरियाण इमा सामायारी –

लहुगो य होइ मासो, दुब्भिक्ख-विसज्जणम्मि साहूणं ।
णेहाणुरागरत्तो, खुड्डो वि य णेच्छती गंतुं ॥२२४६॥
भिक्खं पि य परिहायति, भोगेहि णिमंतणा य भिक्खुस्स ।
गेण्हति एगंतरिते, लहुगा गुरुगा य चउमासा ॥२२४७॥
पडिसेवंतस्स तहिं, छम्मासा होंति छेद मूलं च ।
अणवट्ठप्पो पारंचिओ य पुच्छा य तिविधम्मि ॥२२४८॥

[4]पेढे पूर्ववत् । णवरं-तिविहं–दिव्वं माणुस्सं तेरिच्छं सणिमित्ताणिमित्तोदया ॥२२४८॥

१ गा० २२२६ । २ गा० ३६६ । ३ गा० २२२६ । ४ गा० ३ २, ३७४, ३ ५ ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए हत्थकम्मं करेइ,
करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अंगादाणं कट्ठेण वा किलिंचेण वा अंगुलियाए वा सलागाए वा संचालेइ,
संचालेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अंगादाणं संबाहेज्ज वा पलिमद्देज्ज वा
संबाहेंतं वा पलिमद्देंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अंगादाणं तेल्लेण वा घएण वा वसाए वा णवणीएण वा अब्भंगेज्ज वा मक्खेज्ज वा
अब्भंगेंतं वा मक्खेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अंगादाणं कक्केण वा लोद्धेण वा पउमचुण्णेण वा ण्हाणेण वा सिणाणेण वा चुण्णेहिं वा वण्णेहिं वा उव्वट्टेइ वा परिवट्टेइ वा
उव्वट्टेत्तं वा परिव्वटेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अंगादाणं सीओदग-वियडेण वा उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा पधोएज्ज वा
उच्छोलेंतं वा पधोएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अंगादाणं णिच्छल्लेइ,
णिच्छल्लेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥८॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अंगादाणं जिग्घइ,
जिग्घंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥९॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अंगादाणं अन्नयरंसि अचित्तंसि सोयंसि अणुपवेसेत्ता सुक्कपोग्गले निग्घायइ,
निग्घायंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१०॥

माउग्गामो पुव्ववण्णिओ, तं माउग्गामं हिअए ठवेउं, ''मम एसा अविरतिअ'' त्ति काउं एवं हियए णिवेसिऊण, आत्मनो हस्तकर्म करेति । हस्तकर्म पूर्वं वर्णितं, चउगुरुं पच्छित्तं ।

अहवा – ''जे'' त्ति णिद्देसे, भिक्खू पुव्ववण्णितो, माउग्गामो वि पुव्ववण्णिओ, तस्स माउग्गामस्स मैथुनप्रतिज्ञया हस्तकर्म करोति, अंगुल्यादिना घट्टयतीत्यर्थः अंगादाणं ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मातुग्गामं हियए, णिवेसइत्ताण हत्थकम्मादी ।
जे भिक्खू कुज्जाही, तं मेहुणसण्णितं होति ॥२२४६॥

हत्थाइ-जाव-सोतं, पढमुद्देसम्मि जो गमो भणितो ।
मेहूणं पडियाए, छट्ठुद्देसम्मि सो चेव ॥२२५०॥

इह पुण माउग्गामं हियए काउं करेति तेण चउगुरुगं । तं चेव बितियपदं, सच्चेवं "अट्ठाणसद्दहत्या-दिया जाव गणे दोच्च" त्ति ।

जे भिक्खू माउग्गामं मेहुणवडियाए अवाउडिं सयं कुज्जा करेंतं वा (सयं बूया, बूएंतं वा) सातिज्जति ॥सू०॥११॥

भिक्खू य माउग्गामो य पुव्ववण्णितो । जो तं सयमेव अवाउडिं करेति ।

अहवा – सयं चेव बूया इच्छामि ते "अज्ज" त्ति आर्ये ! अचेलभावो, अचेलीया अपावृता इत्यर्थः, अंगादाणं पुव्ववण्णितं, पासित्तए प्रेक्षितुमिच्छे ङ्का ।

जे कुज्जा बूया वा, माउग्गामं तु मेहुणट्ठाए ।
इच्छामो ते अज्जे, अचेलियं दट्ठुमाणादी ॥२२५१॥

मैथुनेच्छया आणादिया दोसा भवंति । परेण य दिट्ठे संका भोइयघाडियातिया दोसा ॥२२५१॥

अहवा –

णातग कहण पदोसे, सयं दट्ठूण गेण्हणादीया ।
आसुग्गहणं कीवे, अंगादाणं तु मा पेहे ॥२२५२॥

सा कुविया णायग-भोतिगादीण कहेज्ज, ते पदोसं गच्छेज्जा, पदुट्ठा जं काहिंति तमावज्जे ।

अहवा – ताहे अंगादाणे दातिते सो सयमेव गहणं करेज्जा । तत्थ गेण्हण-कड्ढणातिया दोसा । कीवो य आसु पडिसेवणं करेज्ज । एत्थ वि गहणपदोसातिया दोसा ।

अहवा – ताए दाइयं ण पुण पडिसेवणं देति ताहे सो चिंताए दट्ठुमिच्छति । जम्हा एते दोसा तम्हा अंगादाणाणि णो पेहे ॥२२५२॥

किं चान्यत् –

अहभावदरिसणम्मि वि, दोसा किमु जो तदट्ठिओ पेहे ।
अहियं तं बंभवओ, सूरालोगो व चक्खुस्स ॥२२५३॥

अहाभावो – अधाप्रवृत्ति, महाभावेण वि दिट्ठं मोहुदयं भवति, किमु जो मेहुणट्ठी पेहति । तस्स पलोयणं बंभचारिणो अहियं भवति जहा चक्खुस्स सूरालोयणं ॥२२५३॥

बितियपदमणप्पज्झे, अप्पज्झे वा वि दुविध तेइच्छे ।
अभिओग असिव दुब्भिक्खमादिसू जा जहिं जतणा ॥२२५४॥*

(*अत्र—२२२६, २२३०, २२३१ संख्याकाः गाथाः पुनः पठनीयाः)

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

भणेज्ज वा करेज्ज वा, पढमं ता भणाति, जति णेच्छति ताहे अवणेति वि, अभिओगेण वि बला अवणाविज्जति ॥२२४४॥

मोहोदयअणुवसमे, कहणा अकहेंति होंति गुरुगा य ।
कहितापेहा गुरुया, जं काहिति जं च पाविहिति ॥२२५५॥

दुविधे तेइच्छम्मी, निव्वीतियमाइयं अतिक्कंते ।
अट्ठाण सद्द हत्थे, पच्छा चित्ते गणे दोच्चं ॥२२५६॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए कलहं कुज्जा, कलहं बूया, कलहवडियाए बूया, कलहवडियाए गच्छइ, गच्छंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१२॥

मेहुणट्ठी कुचोरुसिरातिएहिं पंतावेति, जारिसं वा कामातुरो उल्लवति तारिसं चेव बूया, एतेसिं चेव दंसणवडियाए वसहीओ साधीओ वाडगाओ गामाओ वा बाहिं गच्छति । जत्थेस कामकलहो संभवति । तस्स चउगुरुं ।

विसयकलहेतरं वा, मातुगामस्स मेहुणट्ठाए ।
जो कुज्जा बूया वा, बहिया गच्छेज्ज आणादी ॥२२५७॥

कलहो दुविहो–विसयकलहो इतरो य । इतरो णाम कसायकलहो । शेषं गतार्थं ॥२२५७॥

इमो विसयकलहो –

काएण व वायाए, वासपत्ताए विसयकलहो तु ।
चंडिक्कितं व पासं, इतरो पुण तीय असहीहिं ॥२२५८॥

वामो कामस्तत्प्रवृत्तिः जा पंतावणकिरिया सो कायकलहो । जं कामातुरो थी पुरुसो वा उल्लवति सो वायकलहो । रुट्ठा चंडिक्किता, तं चंडिकितं कसातियं पासिऊण साहू तस्साराहणणिमित्तं तीसे विपक्खेहिं सह जं कलहेति, एस "इयरो" कसायकलहेत्यर्थः । ताहे सा आराहिया पडिसेवणं पयच्छेज्ज ॥२२५८॥

इमे दोसा –

पडिपक्खो तु पदुट्ठो, छोभग्गहणादि अहव पंतावे ।
अण्णेसिं पि अवण्णो, णिच्छुभणादी य दियराओ ॥२२५९॥

तीसे पडिपक्खो सण्णाइया इयरे वा ते पदुट्ठा संजयस्स छोभगं देज्ज – णूणं तुमं एयस्स माणुसस्स कज्जं करेसि, गेण्हण कड्ढणादिए अ दोसे पावेज्ज ।

अहवा – ते पडिपक्खा तं संजयं आउसेज्ज वा हणेज्ज वा बंधेज्ज वा मारेज्ज वा, ते पदुट्ठा अण्णसाधूण वि - अवण्णं वएज्ज, आतोसादियं वा करेज्ज । गामवसहीओ वा णिच्छुभेज्जा, दिया ङ्क । रातो ङ्का ॥२२५९॥

बितियपदभणप्पज्झे, अप्पज्झे वा वि दुविध तेइच्छे ।
अभिओग असिव दुब्भि क्खमादिसू जा जहिं जतणा ॥२२६०॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए लेहं लिहति, लेहं लिहावेंतं, लेहवडियाए वा गच्छति, गच्छंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१३॥

अप्पणो भावं लिहिउं मेहुणट्ठाए तस्स पट्ठवेति। अण्णेण वि लिहावेति। लिहणट्ठाए वा बहिं गच्छति। चउगुरुं।

लेहो दुविधो –

छण्णेतरं च लेहो, माउग्गामस्स मेहुणट्ठाए।
जे लेहति लेहावति, वहिया गच्छे व आणादी ॥२२६१॥

छण्णो अप्पगासो, इयरो पगडो य ॥२२६१॥

तत्थ छण्णो इमो तिविहो –

लिवि भासा अत्थेण व, छण्णो इतरो लिवीउ जा जहियं।
उत्ताणत्थो सभासा, गतो य अप्पाहितं वा वि ॥२२६२॥

लिवी जा दोहिं मिलिउं उप्पाइया। अधवा – दविडमाई जा जम्मि देसे णत्थि। अणारिया तासा छण्णा। अत्थओ – जं अप्पई ताभिहाणेण लिहितं वा ववहियं वा। "इयरो" अच्छण्णो – जा जहिं सरइ लिवी ताए लिहइ। उत्ताणट्ठं सभासए वा लिहइ, वाइअं वा फुडवियडत्थं संदिसइ **पुरिसो इमं** लहिउं पट्ठवेइ अत्थतोऽववहितं ॥२२६२॥

काले सिहि-णंदिकरे, मेहनिरुद्धम्मि अंबरतलम्मि।
मित-मधुर-मंजुभासिणि, ते धन्ना जे पियासहिता ॥२२६३॥

पयपढमक्खरा विण्णवेंति।

इत्थी पडिलेहं पयच्छइ –

कोमुति णिसा य पवरा, वारियवामा य दुद्धरो मयणो।
रेहंति य सरयगुणा, तीसे य समागमो णत्थि ॥२२६४॥

पढमपायमक्खरेहिं पडिवयणं।

इमो वि इत्थिलेहो –

एवं पाउसकाले, वरिसारत्ते य वासितुं मेहा।
होउं णिब्भरभारा, तुरियं संपत्थिया सरदे ॥२२६५॥

इहावि पादपढमक्खरेहिं आयभावपण्णवणं।

तुह दंसण-संजणिओ, हियए चिंतिज्जमाण विलसंतो।
वग्गति य मे अणंगो, सोगुल्लोगेसु अंगेसु ॥२२६६॥

लिक्खंत-णिज्जमाणे, अप्पिज्जंते कहिज्जमाणे वा।
दोसा होंति अणेगा, लिहग-णिवेदेंत-णिंताणं ॥२२६७॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

लिक्खंतो केण दिट्ठो तत्थ गेण्हणातिया दोसा। एवं णिउजंतो अंतरा केण ति दिट्ठो, गहितो वा, अप्पिज्जंतो भोतिगादिणा, संदेसो वा कहेज्जंतो सुतो केणइ। पच्छद्धं गतार्थम् ।।२२६७।।

बितियदमणप्पज्झे, अप्पज्झे वा वि दुविध तेइच्छे।
अभिओग असति दुब्भिक्खमादिसू जा जहिं जतणा ।।२२६८।।

पूर्ववत् ।।२२६८।।

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए पोसंतं वा पिट्ठंतं वा सोतं वा भल्लायएण उप्पाएंति, उप्पाएतं वा सातिज्जति ।।सू०।।१४।।

तेन सेव्यमानेन पुष्यत इति पोषः, आत्मानं वा तेन पोषयतीति पोषः, तदर्थिनो वा तं पोषयतीति पोषः मृगीपदमित्यर्थः। तस्य अंतानि पोषंतानि। पिट्ठिए अंतं पिट्ठंतं अपानद्वारमित्यर्थः। तस्यांतानि पिट्ठंतानि। उत् प्राबल्येन पावयति उप्पाएति। जो एवं करेति तस्स चउगुरुं।

भल्लायगमादीसुं, पोसंते वा वि अहव पिट्ठंते।
जे भिक्खू उप्पाए, मेहुणट्ठाए आणादी ।।२२६९।।

आदिसद्दातो चित्रकमूलादिना, आणादिया य दोसा ।।२२६९।।

किं णिमित्तं सोतं उप्पाएति?

पडिणीयता य अण्णे, आयतिहेतुं व कोउएणं वा।
चीयत्ता य भविस्ससि, पउणिस्ससि ता इमेणं तु ।।२२७०।।

सो साहु तीए अगारीए पडिणीयत्तेण, "अण्णे" त्ति जे तस्स णीता संघाडओ वा तस्स पडिणीययाए, आयतिहेउं एस ममायत्ता जं भणीहामि तं कज्जिता करिस्सति, दंसणकोउएणं वा उप्पक्कं ममेयं दंसेहित्ति काउं।

अधवा – संघाडस्स अचियत्तता। ताहे साहुं पुच्छति कथं मम संघाडगस्स चियत्ता भवेज्जामि ताहे सो भणाति – अहं ते एरिसं जोणियालेवं देमि, जेण भोइगस्स चियत्ता भविस्ससि।

अहवा – तस्सा तम्मि देसे किंचि दुक्खति ताहे पुच्छितो भणति – इमेण ओसहेण लिंपाहि, ताहे पउणिस्ससि ।।२२७०।।

इमे दोसा –

दिट्ठा व भोइएणं, सिट्ठे णीया व जं सि काहंति।
परितावणा व वेज्जे, तुवरे लेवट्ठता काया ।।२२७१।।

तं परिभोगकाले भोतिएण दिट्ठं पुच्छिया किमेयं? कहियं, संजएण मे एयं कयं। एगतरपओसं गच्छे। जं ते पंतावणादि करिस्संति तमावज्जे, सावज्जं अणागाढातिवेयणं वा पावति त संजयस्स पच्छित्तं। उद्दावणाए मूलं। वेज्जा वा जं किरियं करेंता तुवरट्ठया लेवट्ठया वा काए ववरोवेज्ज, एत्थ वि संजयस्स कायणिप्फण्णं ।।२२७१।।

संजएण वा लेवे उवदिट्ठे आगम्म कहेज्जा –

उप्पक्कंमे गत्तं, पेच्छामु ण जा से कीरती किरिया।
ते च्चिय दोसा दिट्ठे, अंगादाण पासणे जे तु ।।२२७२।।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ताए भणियं उप्पवकं मे गत्तं पेच्छासो जा से किरिया किज्जति, ते चेव सव्वे दोसा जे अंगायाण-पामणसुत्ते वुत्ता ॥२२७२॥

बितियपदमणप्पज्झे, अप्पज्झे वा वि दुविध तेइच्छे ।
अभिओग असति दुब्भिक्खमादिसू जा जहिं जतणा ॥२२७३॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए पोसंतं वा पिट्ठंतं वा सोतं वा
भल्लायएण उप्पाएत्ता सीओदग-वियडेण वा उसिणोदग-वियडेण वा
उच्छोल्लेज्ज वा पधोएज्ज वा
उच्छोलेंतं वा पधोएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१५॥

सीतोदग वियडेणं, पासंते वा वि अहव पिट्ठंते ।
जे भिक्खू पाहित्ता, उच्छोले आणमादीणि ॥२२७४॥

बितियपदमणप्पज्झे, अप्पज्झे वा वि दुविध तेइच्छे ।
अभिओग असति दुब्भिक्खमादिसू जा जहिं जतणा ॥२२७५॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए पोसंतं वा पिट्ठंतं वा सोतं वा
उच्छोलेत्ता पधोएत्ता अन्नयरेणं आलेवणजाएणं आलिंपेज्ज वा
विलिंपेज्ज वा, आलिंपेंतं वा विलिंपेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१६॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए पोसंतं वा पिट्ठंतं वा सोतं वा
उच्छोलेत्ता पधोएत्ता आलिंपेत्ता विलिंपेत्ता तेल्लेण वा
घएण वा वसाए वा णवणीएण वा अब्भंगेज्ज वा मक्खेज्ज वा,
अब्भंगेंतं वा मक्खेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१७॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए पोसंतं वा पिट्ठंतं वा सोतं वा
उच्छोलेत्ता पधोएत्ता आलिंपेत्ता विलिंपेत्ता अब्भंगेत्ता मक्खेत्ता
अन्नयरेण धूवण-जाएण धूवेज्ज वा पधूवेज्ज वा,
धूवेंतं वा पधूवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१८॥

सीतोदे जो उ गमो, णियमा सो चेव तेल्लमादीसु ।
गंधादीएसु तहा, पुव्वे अवरम्मि य पदम्मि ॥२२७६॥

सीतोदगेण देसे सव्वे फासुगाफासुगेण उप्पिलावणाइया य दोसा, घोयं तेल्लाइणा मक्खेयव्वं, एत्थ वि ते चेव दिट्ठाइया लोद्धादिणा वा सुगंधदव्वेण, आउक्काइयादिविराहणा ॥२२७६॥

बितियपदमणप्पज्झे, अप्पज्झे वा वि दुविध तेइच्छे ।
अभिओग असती दुब्भिक्खमादीसु जा जहिं जतणा ॥२२७७॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए कसिणाइं वत्थाइ धरेइ; धरेंतं वा सातिज्जति ।
जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अहयाइं वत्थाइं धरेइ; धरेंतं वा सातिज्जति ।
जे भिक्खू माउग्गामसस्स मेहुणवडियाए धोव-रत्ताइं वत्थाइं धरेइ; धरेंतं वा सातिज्जति ।
जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडिवयाए चित्ताइं वत्थाइं धरेइ; धरेंतं वा सातिज्जति ।
जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए विचित्ताइं वत्थाइं धरेइ; धरेंतं वा सातिज्जति ।
॥सू०॥१९॥ ॥सू०॥२०॥ ॥सू०॥२१॥ ॥सू०॥२२॥ ॥सू०॥२३॥

अहयं णाम तंतुग्गत्तं, परिभोगत्तेण धरणं ।

अहवा – धारणं अपरिभोगत्तणेणं, तेसिं दाहामि त्ति धरेति । पाणादिणा मलस्स फेडणं धोयं । ते मलिणा धरेति, धरं अणुभट्टाएत्ता संकगिज्जो भविस्सामि एयं आयभावियासु धरेति ।

अहवा – सो चेव मलिणो धरेति । वरं ाम एयाओ अतट्ठभाविताओ मलिणवासस्स वीसंभं एंति । चित्तं णाम एगतरवण्णुज्जलं । विचित्तं णाम दोहिं तिहिं वा सव्वेहिं वा उज्जलं ; सव्वेसु चउगुरुगं आणादिया य दोसा ।

अह जे य धोयमइले, रत्ते चित्ते तधा विचित्ते य ।
मेहुण्ण-परिण्णाए, एताइ धरेंति आणादी ॥२२७८॥

मइले अणुभडहेतुं, आतट्ठित भाविताासु वा वहती ।
आत-पर-मोहउदयट्ठयाए सेसाण दाहामो वा ॥२२७९॥

वहति णाम परिभोगं करेति । सेसा तंतुगयाइया मइलं मोत्तुं आय-पर-मोहुदयट्ठयाए वहइ । तेसिं वा दाहिंति धरेति त्ति । जति देति जं ताओ काहिति कम्मबंधप्पसंगो य दट्ठव्वो ।

अहवा – देंतो दिट्ठो करणं अणुवघीते ॥२२७९॥

बितियपदमणप्पज्झे, अप्पज्झे वा वि दुविध तेइच्छे ।
अभिओग असति दुब्भिक्खादिसू जा जहिं जतणा ॥२२८०॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो पाए आमजेज्ज वा पमजेज्ज वा,
आमज्जंतं वा पमज्जंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२४॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो पाए संबाहेज्ज वा पलिमद्देज्ज वा
संबाहेंतं वा पलिमद्देंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२५॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो पाए तेल्लेण वा घएण वा
वसाए वा णवणीएण वा मक्खेज्ज वा भिलिंगेज्ज वा,
मक्खेंतं वा भिलिंगेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२६॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो पाए लोद्धेण वा कक्केण वा
उल्लोल्लेज्ज वा उव्वट्टेज्ज वा
उल्लोलेंतं वा उव्वट्टेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२७॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो पाए सीओदग-वियडेण वा
उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा पधोएज्ज वा
उच्छोलेंतं वा पधोएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२८॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो पाए फुमेज्ज वा रएज्ज वा,
फुमेंतं वा रएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२९॥

❀ ❀ ❀

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो कायं आमज्जेज्ज वा पमज्जेज्ज वा
आमज्जंतं वा पमज्जंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३०॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो कायं संवाहेज्ज वा पलिमद्देज्ज वा
संवाहेंतं वा पलिमद्देंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३१॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो कायं तेल्लेण वा घएण वा
वसाए वा णवणीएण वा मक्खेज्ज वा भिलिंगेज्ज वा,
मक्खेंतं वा भिलिंगेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३२॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो कायं लोद्धेण वा कक्केण वा
उल्लोल्लेज्ज वा उव्वट्टेज्ज वा,
उल्लोलेंतं वा उव्वट्टेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३३॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो कायं सीओदग-वियडेण वा
उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा पधोएज्ज वा
उच्छोलेंतं वा पधोएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३४॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो कायं फुमेज्ज वा रएज्ज वा,
फुमेंतं वा रएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३५॥

❀ ❀ ❀

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो कायंसि वणं आमज्जेज्ज वा
पमज्जेज्ज वा, आमज्जंतं वा पमज्जंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३६॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो कायंसि वणं संवाहेज्ज वा
पलिमद्देज्ज वा, संवाहेंतं वा पलिमद्देंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।३७।।

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो कायंसि वणं तेल्लेण वा
घएण वा वसाए वा णवणीएण वा मक्खेज्ज वा भिलिंगेज्ज वा
मक्खेंतं वा भिलिंगेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।३८।।

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो कायंसि वणं लोद्धेण वा कक्केण वा
उल्लोल्लेज्ज वा उव्वट्टेज्ज वा
उल्लोलेंतं वा उव्वट्टेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।३९।।

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो कायंसि वणं सीओदग-वियडेण वा उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा पधोएज्ज वा
उच्छोलेंतं वा पधोएंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।४०।।

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो कायंसि वणं फुमेज्ज वा
रएज्ज वा, फुमेंतं वा रएंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।४१।।

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो कायंसि गंडं वा पिलगं वा
अरइयं वा असियं वा भगंदलं वा अण्णयरेणं तिक्खेणं सत्थजाएणं
अच्छिंदेज्ज वा विच्छिंदेज्ज वा अच्छिंदंतं वा विच्छिंदंतं वा
सातिज्जति ।।सू०।।४२।।

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो कायंसि गंडं वा पिलगं वा
अरइयं वा असियं वा भगंदलं वा अण्णयरेणं तिक्खेणं सत्थजाएणं
अच्छिंदित्ता विच्छिंदित्ता पूयं वा सोणियं वा नीहरेज्ज वा विसोहेज्ज वा,
नीहरेंतं वा विसोहेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।४३।।

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो कायंसि गंडं वा पिलगं वा
अरइयं वा असियं वा भगंदलं वा अण्णयरेणं तिक्खेणं सत्थजाएणं
अच्छिंदित्ता विच्छिंदित्ता नीहरित्ता विसोहेत्ता सीओदग-वियडेण वा
उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा पधोएज्ज वा
उच्छोलेंतं वा पधोएंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।४४।।

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो कायंसि गंडं वा पिलगं वा
अरइयं वा असियं वा भगंदलं वा अण्णयरेणं तिक्खेणं सत्थजाएणं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अच्छिंदित्ता विच्छिंदित्ता नीहरित्ता विसोहेत्ता उच्छोलेत्ता पधोएत्ता
अन्नयरेणं आलेवणजाएणं आलिंपेज्ज वा विलिंपेज्ज वा,
आलिंपेंतं वा विलिंपेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४५॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो कायंसि गंडं वा पिलगं वा
अरइयं वा असियं वा भगंदलं वा अण्णयरेणं तिक्खेणं सत्थजाएणं
अच्छिंदित्ता विच्छिंदित्ता नीहरित्ता विसोहेत्ता उच्छोलेत्ता पधोएत्ता
आलिंपेत्ता विलिंपेत्ता तेल्लेण वा घएण वा वसाए वा णवणीएण वा
अब्भंगेज्ज वा मक्खेज्ज वा, अब्भंगेंतं वा मक्खेंतं वा सातिज्जति॥४६॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो कायंसि गंडं वा पिलगं वा
अरइयं वा असियं वा भगंदलं वा अण्णयरेणं तिक्खेणं सत्थजाएणं
अच्छिंदित्ता विच्छिंदित्ता नीहरित्ता विसोहेत्ता उच्छोलेत्ता पधोएत्ता
आलिंपेत्ता विलिंपेत्ता अब्भंगेत्ता मक्खेत्ता अन्नयरेणं धूवणजाएण
धूवेज्ज वा पधूवेज्ज वा, धूवेंतं वा पधूवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४७॥

❀ ❀ ❀

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो पालुकिमियं वा कुच्छिकिमियं वा
अंगुलीए निवेसिय निवेसिय नीहरइ,
नीहरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४८॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो दीहाओ नहसीहाओ कप्पेज्ज वा
संठवेज्ज वा, कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४९॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो दीहाइं जंघ-रोमाइं कप्पेज्ज वा
संठवेज्ज वा, कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५०॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो कक्ख-रोमाइं कप्पेज्ज वा
संठवेज्ज वा, कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५१॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो मंसु-रोमाइं कप्पेज्ज वा
संठवेज्ज वा, कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५२॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो वत्थि-रोमाइं कप्पेज्ज वा
संठवेज्ज वा, कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५३॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो चक्खु-रोमाइं कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा, कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५४॥

❀ ❀ ❀

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो दंते आघंसेज्ज वा पघंसेज्ज वा आघंसंतं वा पघंसंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५५॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो दंते उच्छोलेज्ज वा पधोएज्ज वा, उच्छोलेंतं वा पधोएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५६॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो दंते फूमेज्ज वा रएज्ज वा, फूमेंतं वा रएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५७॥

❀ ❀ ❀

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो उट्ठे आमज्जेज्ज वा पमज्जेज्ज वा, आमज्जंतं वा पमज्जंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५८॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो उट्ठे संवाहेज्ज वा पलिमद्देज्ज वा, संवाहेंतं वा पलिमद्देंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५६॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो उट्ठे तेल्लेण वा घएण वा वसाए वा णवणीएण वा मक्खेज्ज वा भिलिंगेज्ज वा मक्खेंतं वा भिलिंगेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६०॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो उट्ठे लोद्धेण वा कक्केण वा उल्लोल्लेज्ज वा उव्वट्टेज्ज वा, उल्लोलेंतं वा उवट्टेंतं वा सातिज्जति॥सू०॥६१॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो उट्ठे सीओदग-वियडेण वा उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा पधोएज्ज वा, उच्छोलेंतं वा पधोएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६२॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो उट्ठे फूमेज्ज वा रएज्ज वा, फूमेंतं वा रएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६३॥

❀ ❀ ❀

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो दीहाइं उत्तरोट्ठाइं अच्छिपत्ताइं कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा, कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति॥सू०॥६४॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो दीहाइं अच्छिपत्ताइं
कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा, कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।६५।।

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो अच्छीणि आमज्जेज्ज वा,
पमज्जेज्ज वा, आमज्जंतं वा पमज्जंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।६६।।

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो अच्छीणि संबाहेज्ज वा,
पलिमद्देज्ज वा, संबाहेंतं वा पलिमद्देंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।६७।।

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो अच्छीणि तेल्लेण वा घएण वा
वसाए वा णवणीएण वा मक्खेज्ज वा भिलिंगेज्ज वा,
मक्खेंतं वा भिलिंगेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।६८।।

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो अच्छीणि लोद्धेण वा
कक्केण वा उल्लोलेज्ज वा उव्वट्टेज्ज वा,
उल्लोलेंतं वा उव्वट्टेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।६९।।

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो अच्छीणि सीओदग-वियडेण वा
उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा पधोएज्ज वा,
उच्छोलेंतं वा पधोएंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।७०।।

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो अच्छीणि फुमेज्ज वा रएज्ज वा.
फुमेंतं वा रएंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।७१।।

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो दीहाइं भुमग-रोमाइं कप्पेज्ज वा
संठवेज्ज वा, कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।७२।।

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो दीहाइं पास-रोमाइं कप्पेज्ज वा
संठवेज्ज वा, कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।७३।।

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो अच्छि-मलं वा कण्ण-मलं वा
दंत-मलं वा नह-मलं वा नीहरेज्ज वा विसोहेज्ज वा,
नीहरेंतं वा विसोहेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।७४।।

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो कायाओ सेयं वा जल्लं वा
पंकं वा मलं वा नीहरेज्ज वा विसोहेज्ज वा,
नीहरेंतं वा विसोहेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।७५।।

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए गामाणुगामं दूइज्जमाणे
सीस-दुवारियं करेइ, करेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।७६।।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मलिणो रयगुंडितो, अचक्खुस्सो वा अणिट्ठच्छवी वा अफुडियहत्थपादो इत्थीणं अकामणिज्जो पादप्पमज्जणाती करेति, वरं इत्थीणं कमणिज्जो भविस्सामी ति, चउगुरु आणादिया य दोसा।

पादे पमज्जणादी, सीसदुवारादि जो गमो ततिए।
मेहुण्ण-परिण्णाए, छट्ठुद्देसम्मि सो चेव ॥२२८१॥

बितियपदमणप्पज्झे, अप्पज्झे वा वि दुविध तेइच्छे।
अभिओग असति दुब्भिक्खमादिसू जा जहिं जतणा ॥२२८२॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए खीरं वा दहिं वा नवणीयं वा सप्पिं वा गुलं वा खंडं वा सक्करं वा मच्छंडियं वा अन्नयरं वा पणीयं आहारं आहारेइ; आहारेंतं वा सातिज्जति, तं सेवमाणे आवज्जति चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घातियं ॥सू०॥७७॥

मधु-मज्ज-मंसा अववाते दट्ठव्वा, अण्णतरं वा णेहावगाढं उवक्खडियं आहारेति, अवरं उवचिय-मंस-सोणिओ भविस्सामि सुकुमालो य, अतो कमणिज्जो भविस्सामि। उवचियमंससोणिएहिं सुहं पडिसेविज्जति, जति एयणिमित्तं भुंजति ङ्का।

खीर-दधिमादीहिं, सेसाहारा विसूइया होंति।
मेहुण्ण-परिण्णाते, ताणाहारेंत आणादी ॥२२८३॥

जइ मेहुणवडियाए आहारेति तो चउगुरुं, इहरहा मासगुरुं। विगतिपरिवूढदेहस्स ते चेव गमणादिया दोसा ॥२२८१॥

णाणादि संधणट्ठा, वि सेविता णेति उप्पहं विगती।
किं पुण जो पडिसेवति, विगती वण्णादिणं कज्जे ॥२२८४॥

जति वि णाणादिसंधणट्ठा विगतिं भुंजति ततोवि विगइ उप्पहं णेति, किं पुण जो वण्णातीणं अट्ठा मेहुणट्ठा वा विगतिं भुंजति ॥२२८२॥

बितियपदमणप्पज्झे, अप्पज्झे वा वि दुविध तेइच्छे।
अभिओग असति दुब्भिक्खमादिसु जा जहिं जतणा ॥२२८५॥पूर्ववत्।

पुरिसाणं जो उ गमो, इत्थीवग्गम्मि होइ सो चेव।
एसेव अपरिसेसो, इत्थीणं पुरिस-वग्गम्मि ॥२२८६॥

पुरिसाणं जो गमो इत्थीवग्गे भणितो जहा "भिक्खू माउग्गामं मेहुणवडियाए विण्णवेति" एस इत्थीणं पुरिसवग्गे वत्तव्वो – "जा भिक्खुणी वि पिउग्गामं मेहुणवडियाए विण्णवेइ," उस्सग्गाववाएहिं दोसदंसणेहिं अत्थो तहेव वत्तव्वो ॥२२८४॥

॥ इति विसेस-णिसीहचुण्णीए छट्ठो उद्देसओ समत्तो ॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सप्तम उद्देशकः

छट्ठुदेसगे सत्तमुद्देसगो एवं संबज्झति –

आहारमंतभूसा, मालियमादी उ बाहिरा भूसा ।
विगती विगतिसहावा, व बाहिरं कुज्ज संठप्पं ॥२२८७॥

छट्ठुदेसगस्स अंतिमसुत्ते विगतीआहारो पडिसिद्धो, मा तेण विगतिआहारेण य पीणियसरीरस्स ब्भंतरभूसा भविस्सति । सत्तमुद्दे सगे वि आइमसुत्ते मालिगपडिसेहो, मा बाहिरभूसा भविस्सति ।

अहवा – विगतीआहारातो संजमविगतसभावो बाहिरविभूसाणिमित्तं तणमालियाति करेज्ज

तप्पडिसेहणत्थं इमं सुत्तं –

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए तण-मालियं वा मुंज-मालियं वा वेत्त-मालियं वा मयण-मालियं वा पिंछ-मालियं वा पोंडिअ-दंत-मालियं वा सिंग-मालियं वा संख-मालियं वा हड्ड-मालियं वा भिंड-मालियं वा कट्ठ-मालियं वा पत्त-मालियं वा पुप्फ-मालियं वा फल-मालियं वा बीय-मालियं वा हरिय-मालियं वा करेइ; करेंतं वा सातिज्जति॥सू०॥१॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए तण-मालियं वा मुंज-मालियं वा वेत्त-मालियं वा मयण-मालियं वा पिंछ-मालियं वा पोंडिअदंत-मालियं वा सिंग-मालियं वा संख-मालियं वा हड्ड-मालियं वा भिंड-मालियं वा कट्ठ-मालियं वा पत्त-मालियं वा पुप्फ-मालियं वा फल-मालियं वा बीय-मालियं वा हरिय-मालियं वा धरेइ; धरेंतं वा सातिज्जति॥सू०॥२॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए तण-मालियं वा मुंज-मालियं वा वेत्त-मालियं वा मयण-मालियं वा पिंछ-मालियं वा पोंडिअदंत-मालियं वा सिंग-मालियं वा संख-मालियं वा हड्ड-मालियं वा भिंड-मालियं वा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कट्ठ-मालियं वा पत्त-मालियं वा पुप्फ-मालियं वा फल-मालियं वा
बीय-मालियं वा हरिय-मालियं वा पिणद्धइ, पिणद्धंतं वा सातिज्जति।।सू३।।

वीरणातितणेहिं पंचवण्णमालियाओ कीरंति जहा महुराए। मुजमालिया, जहा – विज्जातियाणं जडीकरणे।

वेत्त-कट्ठेसु कडगमादी कीरंति, कट्ठे वा चुंदपडिया भवंति। मयणे मयणपुप्फा कीरंति, पंचवण्णा।

भेंडेसु भेंडाकारा करेंति, मोरंगमयी वा।

मक्कडहड्डेसु हड्डमयी डिंभाणं गलेसु बज्झति, हत्थि-दंतेसु दंतमयी, वराडगेसु कवडगमयी।

महिससिंगेसु जहा पारसियाणं, पत्तमालिया तगरपत्तेसु माला गुज्झति।

अहवा – विवाहेसु अणेगविहेसु अणेगविहो वंदणमालियाओ कीरंति। फलेहिं गुजातितेहिं रुद्दक्खेहिं वा पुत्तंजीवगेहिं वा वोंडीवमणे तप्फलेहिं वा माला कीरति। अण्णेण वा कारवेइ, अणुमोएति वा। कयं वा अपरिभोगत्तणेण धरेति, पिणद्धति अप्पणो सरीरं आभरेति, सव्वेसु वि मेहुणपडियाए। एत्थ एक्केक्काओ पदातो आणादिया दोसा आय-संजम-विराहणा य भवति ।।२२८७।।

तणमालियादिया उ, जत्तियमेत्ता उ आहिया सुत्ते।
मेहुण्ण-परिण्णाए, ता उ धरेंतस्स आणादी ।।२२८८।।

तण-वेत्त-मुंज-कट्ठे, भिंड-मयण-मोर-पिच्छ-हड्डमयी।
पोंडियदंते पत्तादि, करे धरे पिणिद्धे आणादी ।।२२८९।।

सविकारो मोहुदीरणा य वक्खेव रागऽणाइण्णं।
गहणं च तेण दंडिग, गोमिय भाराधिकरणादी ।।२२९०।।

सलिंगातो सविकारया लब्भति, आय-पर-मोहुदीरणं वा करेति, सुत्तत्थेसु वा पलिमंथो, सरागो वा लब्भति, अणाइण्णं तित्थकरेहि य अदिण्णं; तेणगेहिं वा तदट्ठाए घेप्पति, असाहु त्ति काउं दंडिगेहिं वा घेप्पति, गोम्मिएहिं घेप्पति, भारेण य आयविराहणा, अणुवकारित्ता य अधिकरणं भवति, फालण-छिंदण-घंसणादिएसु वा आतविराहणा, झुसिराझुसिरेहिं य संजमविराहणा, लोगे य उड्डाहो ।।२२९०।। जम्हा एते दोसा तम्हा ण करेति, णो धरेति, णो पिणद्धति।

भवे कारणं –

बितियपदमणप्पज्झे, अप्पज्झे वा वि दुविध तेइच्छे।
अभिओग असिव दुब्भिक्खमादिसू जा जहिं जतणा।।२२९१।।

अणप्पज्झो सव्वाण वि करेज, ण य पच्छित्तं। अप्पज्झो वा दुविध तेइच्छे तारिस खरियादीणं आराहणट्ठाए करेज। ताहे ताओ लोभावियाओ पडिसेवणं देज। पढमं ता जाओ अप्पमोल्लाओ वा, पच्छा य बहुमोल्लाओ। एवं दुब्भिक्खे वि भेंडगादि कण्णपूरगादि काउं दंडियस्स उवट्ठविज्जंति, सो परितुट्ठो भत्तं दाहिति ।।२२९१।।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अय-लोहाणि वा तंब-लोहाणि वा
तउय-लोहाणि वा सीसग-लोहाणि वा रुप्प-लोहाणि वा
सुवण्ण-लोहाणि वा करेति, करेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।४।।

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अय-लोहाणि वा तंब-लोहाणि वा
तउय-लोहाणि वा सीसग-लोहाणि वा रुप्प-लोहाणि वा
सुवण्ण-लोहाणि वा धरेइ, धरेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।५।।

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अय-लोहाणि वा तंब-लोहाणि वा
तउय-लोहाणि वा सीसग-लोहाणि वा रुप्प-लोहाणि वा
सुवण्ण-लोहाणि वा परिभुंजति, परिभुंजंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।६।।

हिरण्णं रुप्पं –

अयमादी लोहा खलु, जत्तियमेत्ता उ आहिया सुत्ते ।
मेहुण्ण-परिण्णाए, एताइ धरेंतस्स आणादी ।।२२९२।।

सविगारो मोहुदीरणा य वक्खेव रागऽणाइण्णं ।
गहणं च तेण दंडिय-दिट्ठंतो नंदिसेणेण ।।२२९३।।

मेहुणट्ठाए करेंते पिणिद्धतस्स इ्का आणादिया य विराहणा । धमंत-फूमंतस्स संजम-छक्काय-विराहणा । राउले वा मूइज्जइ तत्थ बंधणातिआ य दोसा । सुवण्णं वा कारविज्जति, लोहादि वा कुट्टंतस्स आयविराहणा वा, तेहिं वा घेप्पेज्ज ।।२२९१।। जम्हा एते दोसा तम्हा णो करेति, णो धरेति, णो पिणद्धति ।

कारणे कारे –

बितियपदमणप्पज्झे, अप्पज्झे वा वि दुविध तेइच्छे ।
अभिओग असिव दुब्भिक्खमादिसू जा जहिं जतणा ।।२२९४।।

रायाभिओगेण मेहुणट्ठे वा करेज्ज । बलामोडीए वा कारविज्जति, दुब्भिक्खे वा असंथरंतो सयं करेज्ज ।

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए हाराणि वा अद्धहाराणि वा एगावलीं वा
मुत्तावलीं वा कणगावलीं वा रयणावलीं वा कडगाणि वा
तुडियाणि वा केऊराणि वा कुंडलाणि वा पट्टाणि वा
मउडाणि वा पलंबसुत्ताणि वा सुवण्णसुत्ताणि वा करेति,
करेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।७।।

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए हाराणि वा अद्धहाराणि वा एगावलीं वा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मुत्तावलीं वा कणगावलीं वा रयणावलीं वा कडगाणि वा
तुडियाणि वा केऊराणि वा कुंडलाणि वा पट्टाणि वा
मउडाणि वा पलंबसुत्ताणि वा सुवण्णसुत्ताणि वा धरेति;
धरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥८॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए हाराणि वा अद्धहाराणि वा एगावलीं वा
मुत्तावलीं वा कणगावलिं वा रयणावलीं वा कडगाणि वा
तुडियाणि वा केऊराणि वा कुंडलाणि वा पट्टाणि वा
मउडाणि वा पलंबसुत्ताणि वा सुवण्णसुत्ताणि वा परिभुंजति,
परिभुंजंतं वा सातिज्जति ॥सू०। ६॥

कुंडलं कण्णाभरणं, [1]गुणं कडीसुत्तयं, मणी सूर्यमणीमादय, तुडियं बाहुरक्खिया, तिण्णि सरातो तिसरियं, वालंभा मउडादिसु ओचूला, अगारीण वा गलोलइया, नाभि जा गच्छइ सा पलंबा सा य उलंबा भण्णति । अट्ठारसलयाओ हारो, णवसु अद्धहारो, विचित्तेहिं एगसरा एगावली, मुत्तिएहिं मुत्तावली, सुवण्णमणिएहिं कणगावली, रयणेहिं रयणावली, चउरंगुलो सुवण्णओ पट्टो, त्रिकूटो मुकुटः ।

कडगाई आभरणा, जत्तियमेत्ता उ आहिया सुत्ते ।
मेहुण्ण-परिण्णाए, एताइ धरेंतस्स आणादी ॥२२६५॥

सविगारो मोहुदीरणा य वक्खेव रागऽणाइण्णं ।
गहणं च तेण दंडिय-दिट्ठंतो णंदिसेणेण ॥२२६६॥

मेहुणवडियाए ङ्का, जच्चेव लोहेसु विराहणा ।

कारणे –

वितियपदमणप्पज्झे, अप्पज्झे वा वि दुविध तेइच्छे ।
अभिओग असिव दुब्भिक्खमादिसू जा जहिं जतणा ॥२२६७॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए आईणाणि वा आईण-पावराणि वा
कंबलाणि वा कंबल-पावराणि वा कोयराणि वा कोयर पावराणि वा
काल-मियाणि वा णील-मियाणि वा सामाणि वा मिहा-सामाणि वा
उट्टाणि वा उट्टलेस्साणि वा वग्घाणि वा विवग्घाणि वा परवंगाणि वा
सहिणाणि वा सहिणकल्लाणि वा खोमाणि वा दुगुल्लाणि वा
पणलाणि वा आवरंताणि वा चीणाणि वा अंसुयाणि वा
कणग-कंताणि वा कणग-खचियाणि वा कणग-चित्ताणि वा

१ गुणं वा मणि वा तिसराणि का वालंभाणि वा" एतानि सूत्रे न सन्ति चूर्णौ व्याख्यातानि ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कणग-विचित्ताणि वा आभरण-विचित्ताणि वा करेति,
करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१०॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए आईणाणि वा आईण-पावराणि वा कंबलाणि वा कंबल-पावराणि वा कोयराणि वा कोयर-पावराणि वा काल-मियाणि वा णील-मियाणि वा सामाणि वा मिहासामाणि वा उट्टाणि वा उट्टलेस्साणि वग्घाणि वा विवग्घाणि वा परवंगाणि वा सहिणाणि वा सहिणकल्लाणि वा खोमाणि वा दुगुल्लाणि वा पणलाणि वा आवरंताणि वा चीणाणि वा अंसुयाणि वा कणग-कंताणि वा कणग-खचियाणि वा कणग-चित्ताणि वा कणग-विचित्ताणि वा आभरण-विचित्ताणि वा धरेइ,
धरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥११॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए आईणाणि[1] वा आईण-पावराणि वा कंबलाणि वा कंबल-पावराणि वा कोयराणि वा कोयर-पावराणि वा काल-मियाणि वा णील-मियाणि वा सामाणि वा मिहा-सामाणि वा उट्टाणि वा उट्टलेस्साणि वा वग्घाणि वा विवग्घाणि वा परवंगाणि वा सहिणाणि वा सहिणकल्लाणि वा खोमाणि वा दुगुल्लाणि वा पणलाणि वा आवरंताणि वा चीणाणि वा अंसुयाणि वा कणग-कंताणि वा कणग-खचियाणि वा कणग-चित्ताणि वा कणग-विचित्ताणि वा आभरण-विचित्ताणि वा परिभुंजति,
परिभुंजंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१२॥

अजिणं चम्मं, तम्मि जे कीरंति ते आईणाणि, सहिणं सूक्ष्मं, कल्लाणं स्निग्धं, लक्षणयुक्तं वा, किंचि सहिणं कल्लाणं च, चउभंगो। आयं णाम तोसलिविसए सीयतलाए अयाणं खुरेसु सेवालतरिया लग्गंति, तत्थ वत्था कीरंति। कायाणि कायविसए काकजंघस्स जहिं मणी पडितो तलागे तत्थ रत्ताणि जाणि ताणि कायाणि भण्णंति। दुते वा काये रत्ताणि कायाणि। पोंडमया खोम्मा, अण्णे भणंति – रुक्खेहिंतो निग्गच्छंति, जहा "बडेहिंतो पादगा साहा"। दुगुल्लो रुक्खो तस्स वागो घेत्तुं उदूखले कुट्टिज्जति पाणिएण ताव जाव भूसीभूतो ताहे कज्जति एतेसु दुगुल्लो, तिरीडरुक्खस्स वागो, तस्स तंतू पट्टमरिसो सो तिरीलो पट्टो, तम्मि कयाणि तिरीडपट्टाणि।

अहवा – किरीडयलाला मयलविसए मयलाणि पत्ताणि कोविज्जति, तेसु वालएसु पत्तुणा दुगुल्लातो अब्भंतरहिते जं उप्पज्जति तं अंसुयं, सुहुमतरं चीणंसुयं भण्णति। चीणविसए वा जं तं चीणंसुयं, जत्थ विसए जा रंगविधी ताए, देसे रत्ता देसरागा। रोमेसु कया अमिला।

---

१ सूत्रस्य-पदानि चूर्णौ अनानुपूर्व्या व्याख्यातानि, सूत्रबहिर्भूतानि अपि कानिचित्।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अहवा – णिम्मला अमिला घट्टिणी घटिता ते परिभुज्जमाणा कडं कडेंति । गाज्जतसमाण सद्दं करेंति ते गज्जला । फडिगपाहाणनिभा फाडिगा अच्छा इत्यर्थः । कोतवो वरको उवारसा कंबला खरडग-पारिगादि पावारगा, सुवण्णे दुते सुतं रज्जति, तेण जं वुतं तं कणगं, अंता जस्स कणगेण कता तं कणगयकं, कणगेण जस्स पट्टा कता तं कणगपट्टं ।

अहवा – कणगपट्टा मिगा, कणगसुत्तेण फुल्लिया जस्स पाडिया तं कणग-खचित्तं, कणगेण जस्स फुल्लिताउ दिण्णाउ तं कणगफुल्लियं । जहा कद्दमेण उड्डेडिज्जति । वग्घस्स चम्मं वग्घाणि, चित्तग-चम्मं विवग्घाणि । एत्थ छपत्रिकादि एकाभरणेन भंडिता आभरणत्थत्रिकं चंदलेहिक-स्वस्तिक-घंटिक-मोत्तिकमादीहिं मंडिता आभरणविचित्ता, सुणगागिती जलचरा सत्ता तेसिं अजिणा उट्ठा ।

अण्णे भण्णंति – उड्ढं चम्मं गोरमिगाणं अइणा गोरमिगादिणा पेसा पसवा तेसिं अइणं ।

अण्णे भणंति – पेसा लेसा य मच्छादियाण एते –

सहिणादी वत्था खलु, जत्तियमेत्ता य आहिया सुत्ते ।
मेहुण्ण-परिण्णाए, ताइ धरेंतम्मि आणादी ॥२२९८॥

सविगारो मोहुदीरणा य वक्खेव रागऽणाइण्णं ।
गहणं च तेण दंडिय-दिट्ठंतो णंदिसेणेण ॥२२९९॥

आणादि भारो भय-परितावणादि सव्वे दोसा वत्तव्वा ।

बितियपदमणप्पज्झे, अप्पज्झे वा वि दुविध तेइच्छे ।
अभिओग असिव दुब्भिक्खमादिसू जा जहिं जतणा ॥२३००॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अक्खंसि वा ऊरुंसि वा उयरंसि वा थणंसि वा गहाय संचालेइ, संचालेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१३॥

अक्खा णाम संखाणियप्पदेसा । अधवा – अण्णतरं इंदियजायं अक्खं भण्णति, उवगच्छया कक्खा भण्णति, वक्खंसि वा ऊरुंसि, हत्थादिएसु वा मेहुणवडियाए संचालेति चउगुरुं ।

अक्खादी ठाणा खलु, जत्तियमेत्ता उ आहिया सुत्ते ।
जो घेत्तुं संचाले, सो पावति आणमादीणि ॥२३०१॥

आणादिया दोसा, जस्स सा अविरइया रूसति । अहवा – सच्चेव रूसेज्ज, गेण्हणादयो दोसा ॥२२९६॥

बितियपदमणप्पज्झे, अप्पज्झे वा वि दुविध तेइच्छे ।
अभिओग असिव दुब्भिक्खमादिसू जा जहिं जतणा ॥२३०२॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स पाए आमज्जेज्ज वा पमज्जेज्ज वा, आमज्जंतं वा पमज्जंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१४॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स पाए संवाहेज्ज वा
पलिमद्देज्ज वा, संवाहेंतं वा पलिमद्देंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१५॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स पाए तेल्लेण वा
घएण वा वसाए वा णवणीएण वा मक्खेज्ज वा भिलिंगेज्ज वा,
मक्खेंतं वा भिलिंगेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१६॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स पाए लोद्धेण वा कक्केण वा
उल्लोल्लेज्ज वा उव्वट्टेज्ज वा,
उल्लोलेंतं वा उव्वट्टेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१७॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स पाए सीओदग-वियडेण वा
उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा पधोएज्ज वा,
उच्छोलेंतं वा पधोएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१८॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स पाए फूमेज्ज वा रएज्ज वा,
फुमेंतं वा रएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१९॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स कायं आमज्जेज्ज वा
पमज्जेज्ज वा, आमज्जंतं वा पमज्जंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२०॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स कायं संवाहेज्ज वा
पलिमद्देज्ज वा, संवाहेंतं वा पलिमद्देंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२१॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स कायं तेल्लेण वा घएण वा
वसाए वा णवणीएण वा मक्खेज्ज वा भिलिंगेज्ज वा,
मक्खेंतं वा भिलिंगेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२२॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स कायं लोद्धेण वा कक्केण वा
उल्लोलेज्ज वा उव्वट्टेज्ज वा
उल्लोलेंतं वा उव्वट्टेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२३॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स कायं सीओदग-वियडेण वा
उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोल्लेज्ज वा पधोएज्ज वा,
उच्छोलेतं वा पधोएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२४॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स कायं फुमेज्ज वा रएज्ज वा, फुमेंतं वा रएंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।२५।।

❀ ❀ ❀

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स कायंसि वणं आमज्जेज्ज वा पमज्जेज्ज वा, आमज्जंतं वा पमज्जंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।२६।।

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स कायंसि वणं संबाहेज्ज वा पलिमद्देज्ज वा, संबाहेंतं वा पलिमद्देंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।२७।।

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स कायंसि वणं तेल्लेण वा घएण वा वसाए वा णवणीएण वा मक्खेज्ज वा भिलिंगेज्ज वा, मक्खेंतं वा भिलिंगेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।२८।।

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स कायंसि वणं लोद्धेण वा कक्केण वा उल्लोलेज्ज वा उव्वट्टेज्ज वा, उल्लोलेंतं वा उव्वट्टेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।२९।।

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स कायंसि वणं सीओदग-वियडेण वा उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा पधोएज्ज वा, उच्छोलेंतं वा पधोएंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।३०।।

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स कायंसि वणं फुमेज्ज वा रएज्ज वा, फुमेंतं वा रएंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।३१।।

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस कायंसि गंडं वा पिलगं वा अरइयं वा असियं वा भगंदलं वा अण्णयरेणं तिक्खेणं सत्थजाएणं अच्छिंदेज्ज वा विच्छिंदेज्ज वा, अच्छिंदेंतं वा विच्छिंदेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।३२।।

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स कायंसि गंडं वा पिलगं वा अरइयं वा असियं वा भगंदलं वा अण्णयरेणं तिक्खेणं सत्थजाएणं अच्छिंदित्ता विच्छिंदित्ता पूयं वा सोणियं वा नीहरेज्ज वा विसोहेज्ज वा, नीहरेंतं वा विसोहेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।३३।।

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स कायंसि गंडं वा पिलगं वा अरइयं वा असियं वा भगंदलं वा अण्णयरेणं तिक्खेणं सत्थजाएणं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अच्छिंदित्ता विच्छिंदित्ता नीहरित्ता विसोहेत्ता सीओदग-वियडेण वा
उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा पधोएज्ज वा,
उच्छोलेंतं वा पधोएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३४॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स कायंसि गंडं वा पिलगं वा
अरइयं वा असियं वा भगंदलं वा अण्णयरेणं तिक्खेणं सत्थजाएणं
अच्छिंदित्ता विच्छिंदित्ता नीहरित्ता विसोहेत्ता उच्छोलेत्ता पधोएत्ता
अण्णयरेणं आलेवण-जाएणं आलिंपेज्ज वा विलिंपेज्ज वा,
आलिंपंतं वा विलिंपंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३५॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स कायंसि गंडं वा पिलगं वा
अरइयं वा असियं वा भगंदलं वा अण्णयरेणं तिक्खेणं सत्थजाएणं
अच्छिंदित्ता विच्छिंदित्ता नीहरित्ता विसोहेत्ता
उच्छोलेत्ता पधोएत्ता आलिंपित्ता विलिंपित्ता तेल्लेण वा घएण वा
वसाए वा णवणीएण वा अब्भंगेज्ज वा मक्खेज्ज वा
अब्भंगेंतं वा मक्खंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३६॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स कायंसि गंडं वा पिलगं वा
अरइयं वा असियं वा भगंदलं वा अण्णयरेणं तिक्खेणं सत्थजाएणं
अच्छिंदित्ता विच्छिंदित्ता नीहरेत्ता विसोहेत्ता
उच्छोलेत्ता पधोएत्ता आलिंपित्ता विलिंपित्ता अब्भंगेत्ता मक्खेत्ता
अन्नयरेण धूवण-जाएण धूवेज्ज वा पधूवेज्ज वा
धूवंतं वा पधूवंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३७॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स पालु-किमियं वा
कुच्छि-किमियं वा अंगुलीए निवेसिय निवेसिय नीहरइ,
नीहरंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३८॥

❀ ❀ ❀

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स दीहाओ नहसीहाओ
कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा, कप्पंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति॥सू०॥३९॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स दीहाइं जंघ-रोमाइं
कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा, कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति॥सू०॥४०॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स दीहाइं कक्ख-रोमाइं कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा, कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति।।सू०।।४१।।

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स दीहाइं मंसु-रोमाइं कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा, कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति।।सू०।।४२।।

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स दीहाइं वत्थि-रोमाइं कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा, कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति।।सू०४३।।

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स दीहाइं चक्खु-रोमाइं कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा, कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति।।सू०।।४४।।

❀ ❀ ❀

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स दंते आघंसेज्ज वा पघंसेज्ज वा, आघंसंतंवा पघंसंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।४५।।

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स दंते उच्छोलेज्ज वा पधोएज्ज वा, उच्छोलेंतं वा पधोएंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।४६।।

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स दंते फुमेज्ज वा रएज्ज वा, फुमेंतं वा रएंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।४७।।

❀ ❀ ❀

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स उट्ठे आमज्जेज्ज वा पमज्जेज्ज वा, आमज्जंतं वा पमज्जंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।४८।।

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स उट्ठे संबाहेज्ज वा पलिमद्देज्ज वा, संबाहेंतं वा पलिमद्देंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।४९।।

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स उट्ठे तेल्लेण वा घएण वा वसाए वा णवणीएण वा मक्खेज्ज वा भिलिंगेज्ज वा, मक्खेंतं वा भिलिंगेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।५०।।

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स उट्ठे लोद्धेण वा कक्केण वा उल्लोलेज्ज वा उव्वट्टेज्ज वा
उल्लोलेंतं वा उव्वट्टेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।५१।।

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स उट्ठे सीओदग-वियडेण वा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा पधोएज्ज वा,
उच्छोलेंतं वा पधोएंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।५२।।

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स उट्ठे फुमेज्ज वा रएज्ज वा,
फुमेंतं वा रएंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।५३।।

❀ ❀ ❀

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स दीहाइं उत्तरोट्ठाइं
कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा, कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति।।सू०।।५४।।

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स दीहाइं अच्छिपत्ताइं
कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा, कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति।।सू०।।५५।।

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स अच्छीणि आमज्जेज्ज वा
पमज्जेज्ज वा, आमज्जंतं वा पमज्जंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।५६।।

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स अच्छीणि संबाहेज्ज वा
पलिमद्देज्ज वा, संबाहेंतं वा पलिमद्देंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।५७।।

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स अच्छीणि तेल्लेण वा
घएण वा वसाए वा णवणीएण वा मक्खेज्ज वा भिलिंगेज्ज वा
मक्खेंतं वा भिलिंगेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।५८।।

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स अच्छीणि लोद्धेण वा
कक्केण वा उल्लोलेज्ज वा उव्वट्टेज्ज वा,
उल्लोलेंतं वा उव्वट्टेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।५९।।

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स अच्छीणि सीओदग-
वियडेण वा उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा पधोएज्ज वा,
उच्छोलेंतं वा पधोएंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।६०।।

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स अच्छीणि फुमेज्ज वा
रएज्ज वा, फुमेंतं वा रएंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।६१।।

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स दीहाइं भुमग-रोमाइं
कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा, कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।६२।।

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स दीहाइं पास-रोमाइं
कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा, कप्पेंतं वा संठवेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।६३।।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स अच्छि-मलं वा कण्ण-मलं वा
दंत-मलं वा नह-मलं वा नीहरेज्ज वा विसोहेज्ज वा
नीहरेंतं वा विसोहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६४॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स कायाओ सेयं वा
जल्लं वा पंकं वा मलं वा नीहरेज्ज वा विसोहेज्ज वा,
नीहरेंतं वा विसोहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६५॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स गामाणुगामं दूइज्जमाणे
सीस-दुवारियं करेइ, करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६६॥

अण्णमण्णस्स पाए पमज्जति. इमो साहू इमस्स, इमो वि इमस्स । दोण्ह वि एस संकप्पो-माउग्गामस्स अभिरमणिज्जा भविस्सामो त्ति काउं ।

पायप्पमज्जणादी, सीसदुवारादि जो गमो छट्ठे ।
अण्णोण्णस्स तु करणे, सो चेव गमो उ सत्तमए ॥२३०४॥

बितियपदमणप्पज्झे, अप्पज्झे वा वि दुविध तेइच्छे ।
अभिओग असिव दुब्भिक्खमादिसू जा जहिं जतणा ॥२३०५॥

इमे अत्थ-सुत्ता –

अण्णोण्ण-करण-वज्जा, जे सुत्ता सत्तमम्मि उद्दिट्ठा ।
उभयस्स वि विण्णवणे, इत्थी-पुरिसाण तो सुणसु ॥२३०६॥

अण्णोण्णकरणसुत्ता जे सत्तमुद्देसे वुत्ता ते वज्जेउं सेसगा पाय-पमज्जणादी-जाव-सीसदुवारादि ।

अहवा – तणमालियादि-जाव-सीसदुवारसुत्तं ते उभयस्स वि इत्थी-पुरिसाणं विण्णवणाए-दट्ठव्वा । किमुक्तं भवति – इत्थी पुरिसं विण्णवेति, पुरिसो इत्थीं विण्णवेति ॥२२६६॥

एसेव गमो णियमा, णपुंसगेसुंपि इत्थि पुरिसाणं ।
पादादि जा दुवारं, सरिसेसु य बालमादीसु ॥२३०७॥

पुरिसो इत्थीणेवत्थं णपुंसगं विण्णवेति । इत्थी वि पुरिसणेवत्थं णपुंसगं विण्णवेति ।

"सरिसेसु बालमादीसु" त्ति - इत्थी इत्थिरूवं बालं चुंबति । पुरिसो पुरिसरूवं बालं चुंबति चसद्दातो विसरिसेसु अ जति मेहुणवडियाए-बालं चुंबति, आदिसद्दातो अबालं पि, तो चउगुरुं ।

जे भिक्खू माउग्गामं मेहुणवडियाए अणंतरहियाए पुढवीए णिसीयावेज्ज वा
तुयट्टावेज्ज वा, णिसीयावेंतं वा तुयट्टावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६७॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए ससिणिद्धाए पुढवीए णिसीयावेज्ज वा तुयट्टावेज्ज वा, णिसीयावेंतं वा तुयट्टावेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।६८।।

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए ससरक्खाए पुढवीए णिसीयावेज्ज वा तुयट्टावेज्ज वा, णिसीयावेंतं वा तुयट्टावेंतं वा सातिज्जति।।सू०।।६९।।

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए महयाकडाए[1] पुढवीए णिसियावेज्ज वा तुयट्टावेज्ज वा, णिसीयावेंतं वा तुयट्टावेंतं वा सातिज्जति।।सू०।।७०।।

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए चित्तमंताए पुढवीए णिसीयावेज्ज वा तुयट्टावेज्ज वा, णिसीयावेंतं वा तुयट्टावेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।७१।।

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए चित्तमंताए सीलाए णिसीयावेज्ज वा तुयट्टावेज्ज वा, णिसीयावेंतं वा तुयट्टावेंतं वा सातिज्जति।।सू०।।७२।।

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए चित्तमंताए लेलूए णिसीयावेज्ज वा तुयट्टावेज्ज वा, णिसीयावेंतं वा तुयट्टावेंतं वा सातिज्जति।।सू०।।७३।।

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए कोलावासंसि वा दारुए जीवपइट्ठिए सअंडे सपाणे सबीए सहरिए सओसे सउदए सउत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा-संताणगंसि णिसीयावेज्ज वा तुयट्टावेज्ज वा, णिसीयावेंतं वा तुयट्टावेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।७४।।

अणंतरहिता णाम सचित्ता । अंते ठिता अंता, ण अंता अणंता मध्यस्थिता इत्यर्थः । सा सीतवातादीर्हि सत्थेहि रहिता अशस्त्रोपहता । अशस्त्रोपहतत्वाच्च आद्यपदार्थत्वेन सचित्ताख्यानमित्यर्थः । तम्मि जो मेहुणनिमित्तं णिसियावेति तुयट्टावेति वा तस्स ङ्का । पुढविनिप्फण्णं ङ्क । एवं स्वतः अचित्ता आउक्काएणं पुण ससणिद्धा, सचित्तपुढविरयेण ससरक्खा, महंता कंदा (रूवा) सिला, सचित्ता सचेयणा सिला, लेलू लेट्ठू, कोला घुणा, ताण आवासो घुणितं काष्ठमित्यर्थः ।

अहवा – तं दारुं कोलेहिं विरहियं अणतरेसु जीवेसु पइट्ठियं. इमेसु वा पिपीलियादिअंडेसु पाडवद्धं, पाणा कुंथुमादी, सालगादी बीया, दुब्बादी हरिया, उस्सा वा तम्मि ठिता. उत्तिगो कीलियावासो, पणगो उल्ली, दग पाणीयं, कोमारा मट्टिया ।

अथवा -- उल्लिया मट्टिया, कोलियापुडगो मक्कडसंताणओ ।

अहवा – संताणओ पिपीलियादीण । मेहुणवडियाए चउगुरुं । संघट्टणादि कायणिप्फण्णं च ।

पुढवीमादीएसुं, माउग्गामे उ मेहुणट्ठाए ।
जे भिक्खू णिसियावे, सो पावति आणमादीणि ।।२३०८।।

---

१ महिआण ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ते चेव दोसा –

बितियपदमणप्पज्झे, अप्पज्झे वा वि दुविध तेइच्छे।
अभिओग असिव दुब्भिक्खमादिसू जा जहिं जतणा ॥२३०९॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अंकंसि वा पलियंकंसि वा निसीयावेज्ज वा तुयट्टावेज्ज वा, निसीयावेंतं वा तुयट्टावेंतं वा सातिज्जति॥सू०॥७५॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अंकंसि वा पलियंकंसि वा णिसीयावेत्ता वा तुयट्टावेत्ता वा असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा
अणुग्घासेज्ज वा अणुपाएज्ज वा
अणुग्घासंतं वा अणुपाएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७६॥

एगेण ऊरूएणं अंको, दोहिं पलियंको। एत्थ जो मेहुणट्ठाए णिसियावेति तुयट्टावेति वा ड्ढ। ते चेव दोसा। दिट्ठे संकादिया गेण्हणादिया दोसा।

अनु पश्चाद्भावे, अप्पणा ग्रसितुं पच्छा तीए ग्रासं देति, एव [1]करोडगादीसु अप्पणा पाउं पच्छा तं पाएति।

अंके पलियंके वा, माउग्गामं तु मेहुणट्ठाए।
जे भिक्खू णिसियावे, सो पावति आणमादीणि ॥२३१०॥
बितियपदमणप्पज्झे, अप्पज्झे वा वि दुविध तेइच्छे।
अभिओग असिव दुब्भिक्खमादिसू जा जहिं जतणा ॥२३११॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए आगंतागारेसु वा आरामागारेसु वा गाहावइ-कुलेसु वा परियावसहेसु वा निसीयावेज्ज वा तुयट्टावेज्ज वा, निसीयावेंतं वा तुयट्टावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७७॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए आगंतागारेसु वा आरामागारेसु वा गाहावइ-कुलेसु वा परियावसहेसु वा निसीयावेत्ता वा तुयट्टावेत्ता वा असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा अणुग्घासेज्ज वा अणुपाएज्ज वा अणुग्घासंतं वा अणुपाएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७८॥

दो सुत्ता। अर्थः तृतीयोद्देशके पूर्ववत्। णवरं – मेहुणवडियाए ड्ढ।

आगंतागारादिसु, माउग्गामं तु मेहुणट्ठाए।
जे भिक्खू णिसियावे, सो पावति आणमादीणि ॥२३१२॥

---

[1] नालिकेराम्भस्सु।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

बितियपदमणप्पज्झे, अप्पज्झे वा वि दुविध तेइच्छे ।
अभिओग असिव दुब्भिक्खमादिसू जा जहिं जतणा ॥२३१३॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णतरं तेइच्छं आउट्टति, आउट्टंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७९॥

अण्णतरं णाम वतुव्विधाए तिगिच्छाए – वादिय - पेत्तिय - संभिय - सण्णिवातियाए आउट्टति णाम करेति त्ति । जा वि रुत्थघंसणपीसणविराहणा, जं च सा पउणा असंजमं काहिति ।

अहवा – से अविरओ पासेज्ज ताहे सो भणेज्ज -- केणेस तिगिच्छं काराविते ? अण्णतरस्स पदोसं गच्छेज्ज ।

अण्णतरं तेइच्छं, माउग्गाणं तु मेहुणट्ठाए ।
जे भिक्खू कुज्जाहि, सो पावति आणमादीणि ॥२३१४॥

बितियपदमणप्पज्झे, अप्पज्झे वा वि दुविध तेइच्छे ।
अभिओग असिव दुब्भिक्खमादिसू जा जहिं जतणा ॥२३१५॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अमणुन्नाइं पोग्गलाइं नीहरइ (अवहरति), नीहरंतं (अवहरंतं) वा सातिज्जति ॥सू०॥८०॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए मणुन्नाइं पोग्गलाइं उवकिरति (उवहरति), उवकिरंतं (उवहरंतं) वा सातिज्जति ॥सू०॥८१॥

अमणुण्णो पोग्गले अवहरति । मणुण्णे उवहरति संपाडेति ।

अमणुण्णाणऽवहारं, उवहारं चेव तह मणुण्णाणं ।
जे भिक्खू पोग्गलाणं, देहट्ठाणे व आणादी ॥२३१६॥

अवहारो उवहारो वा एक्केक्को दुविधो – सरीरे ठाणे य । सरीरे दुविहो - अंतो बाहिं च ॥२३१६॥

इमो अंतो –

वमण-विरेगादीहिं, अब्भंतर-पोग्गलाण अवहारो ।
तेल्लुव्वट्टण-जल-पुप्फ-चुण्णमादीहि बज्झाणं ॥२३१७॥

असुभूसता (असुइभूया) स संदूसिय-संभिय-पित्त-रुहिरादियाण वमण - विरेयणादीहिं अवहारो । बाहिरो सरीरातो पूय - सोणिय - सिंघाण - लाल - कण्णमलादि तेल्लुव्वट्टणादीहिं वज्जं अवहरति ॥२३१७॥

जत्थ ठाणे अच्छति तत्थिमं करेति ।

कयवर-रेणुचारं, मुत्तं चिक्खल्ल-खाणु-कंटाणं ।
सद्दादमणुण्णाणं, करेज्ज तट्ठाण अवहारं ॥२३१८॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

बहु भुसिरदव्वसंकरो कयवरो, रेणू धूली, उच्चार-पासवण-चिक्खल्ल-खाणु-कंटादीयं च जहा रुदियादिसद्दाणं असुभगंधाण य अहिमडादीणं तट्ठाणातो अवहारं करेति। सुभाण य उवहारं करेति ॥२३१८॥

आवरिसायण उवलिंपणं च चुण्ण-कुसुमोवयारं च।
सद्दादि मणुण्णाणं, करेज्ज तट्ठाण उवहारं ॥२३१९॥

जत्थ जत्थ अच्छति सा इत्थी तं ठाणं संपमज्जित्ता उदगेणावरिसति, छगणमाणिएण वा उवलिंपति, पडवासादिए वा चुण्णे उक्खिवति, पुप्फोवयारं वा करेति, गीयादि वा सद्दे करेज्ज, अवणेति उवहरेति वा मेहुणट्ठा ङ्का। दिट्ठे संकादिया दोसा, घरं संजओ सोवेति त्ति उड्डाहो ॥२३१९॥

बितियपदमणप्पज्झे, अप्पज्झे वा वि दुविध तेइच्छे।
अभिओग असिव दुब्भिक्खमादिसू जा जहिं जतणा ॥२३२०॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अन्नयरं पसु-जायं वा पक्खि-जायं वा पायंसि वा पक्खंसि वा पुच्छंसि वा सीसंसि वा गहाय (उज्जिहति वा पव्विहति वा) संचालेति (उज्जिहेंतं वा पव्विहेंतं वा) संचालेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥८२॥

[1]अमिलाइया पसुजाती। हंसचकोरादिया पक्खिजाती। पक्खादिया अंगावयवा पसिद्धा। तेसु गहाय उज्जिहति उप्पाडेति, परिस्सण बहुं खिवति पव्विहति।

अहवा – प्रतीपं विहं पविहं मुंचतीत्यर्थः। मेहुणट्ठाए संचालेति वा ङ्का। सा तडफडेज्जा, तस्स अप्पणो वा आयविराहणा। कायादीण वा उवरि पडेज्ज।

पक्खी-पसुमादीणं, सिंगादीएसु जो उ घेत्तूणं।
उव्वीहे पव्वीहे, मेहुणट्ठा य आणादी ॥२३२१॥

बितियपदमणप्पज्झे, अप्पज्झे वा वि दुविध तेइच्छे।
अभिओग असिव दुब्भिक्खमादिसू जा जहिं जतणा ॥२३२२॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणट्ठाए अन्नयरं पसु-जायं वा पक्खि-जायं वा सोतंसि कट्ठं वा कलिंचं वा अंगुलियं वा सलागं वा अणुप्पवेसित्ता संचालेति, संचालेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥८३॥

पसू पुव्ववण्णितो, कलिंचो वंसकप्परी, घडिया सलागा, अण्णतरं सोतं अहिट्ठाणं, जोणीदारं, वा।मो अणुकूलं पवेसो अणुप्पवेसो, थोयं वा पवेसोऽणुप्पवेसो। संचालनं विघट्टनं। मेहुणट्ठा ङ्का। आणादिया य दोसा, परितावणादिए मूलं, दिट्ठे संकादिया।

पक्खी-पसुमाईणं, जे भिक्खू सोय कट्ठमादीणि।
अणुपविसेउं चाले, मेहुणट्ठाए आणादी ॥२३२३॥

---

१ अमिल -- भेड़, अमिला – पाडी।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

णव सोत्रो खलु पुरिसो, सोया इक्कारसे व इत्थीणं ।
मणुयगईसू एवं, तिरि-इत्थीणं तु भतियव्वा ॥२३२४॥

दो कण्णा, दो अच्छी, दो णासा, मुहं, अंगादाणं, अधिट्ठाणं, च एते नव पुरिसस्स, इत्थीए ते चेव अण्णे दो थणा एते एक्कारस – एवं मणुयगतीए । तिरिएसु इमं भाणियव्वं ॥२३२४॥

एक्कार-तेर-सत्तर, दुत्थणि चउ अट्ठ ेव भयणा तु ।
णिव्वाघाते एते, वाघाएणं तु भइयव्वा ॥२३२५॥

अयमादिदुत्थणि ११ गवादी १३ सूयरमादी १७ णिव्वाघाए एवं । वाघाए एगच्छिणी अया दस सोत्ता, तिपयोधरा गौ ॥२३२५॥

बितियपदमणप्पज्झे, अप्पज्झे वा वि दुविध तेइच्छे ।
अभिओग असिव दुब्भिक्खमादिसू जा जहिं जतणा ॥२३२६॥

अणपज्झो (अप्पज्झो) दुविधतेगिच्छाए वा सुक्कपोग्गलणिग्घायणट्ठं, रायाभिओगेण वा, असिवे संजयपंता असंजउ त्ति काउं न मारेति, दुब्भिक्खे वा समुद्देसट्ठा कोति गाविमादी व णेज्जा ॥२३२६॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णयरं पसु-जायं वा पक्खि-जायं वा
अयमित्थि त्ति कट्टु आलिंगेज्ज वा परिस्सएज्ज वा परिचुंबेज्ज वा
विच्छेदेज्ज वा आलिंगंतं वा परिस्सयंतं वा परिचुंबंतं वा
विच्छेदंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥८४॥

आलिंगनं स्पर्शनं, उपगूहनं परिष्वजनं, मुखेन चुंबनं, दंतादिभिः सकृत् छेदनं, अनेकशो विच्छेदः विविध प्रकारो वा च्छेदः वोच्छेदः, जं सा णहमादीहिं परिताविज्जति । दिट्ठे संकादिया दोसा ।

पक्खीपसुमादीणं, एसा इत्थि त्ति जो करिय भिक्खू ।
दंत-णहादीएसुं, मेहुणट्ठा य आणादी ॥२३२७॥

मेहुणट्ठा ङ्का ।

बितियपदमणप्पज्झे, अप्पज्झे वा वि दुविध तेइच्छे ।
अभिओग असिव दुब्भिक्खमादीसू जा जहिं जतणा ॥२३२८॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा
देइ, देंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥८५॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा
पडिच्छइ, पडिच्छंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥८६॥

मेहुणट्ठाए देति पडिच्छति य ङ्क ।

जे भिक्खू असणादी, माउग्गामस्स मेहुणट्ठाए ।
देज्जा व पडिच्छेज्जा, सो पावति आणमादीणि ॥२३२९॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वितियपदमणप्पज्झे, अप्पज्झे वा वि दुविध तेइच्छे ।
अभिओग असिव दुब्भिक्खमादिसू जा जहिं जतणा ॥२३३०॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पायपुंछणं वा देइ, देंतं वा सातिज्जति॥सू०॥८७॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणट्ठाए वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पायपुंछणं वा पडिच्छइ, पडिच्छंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥८८॥

मेहुणट्ठाए देति पडिच्छति य ङ्का ।

जे भिक्खू वत्थादी, माउग्गामस्स मेहुणट्ठाए ।
देज्जा य पडिच्छेज्जा, सो पावति आणमादीणि ॥२३३१॥

वितियपदमणप्पज्झे, अप्पज्झे वा वि दुविध तेइच्छे ।
अभिओग असिव दुब्भिक्खमादिसू जा जहिं जतणा ॥२३३२॥

जे भिक्खू माउग्गामं मेहुणवडियाए सज्झायं वाएइ, वाएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥८९॥

जे भिक्खू माउग्गामं मेहुणवडियाए सज्झायं पडिच्छइ, पडिच्छंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥९०॥

इह सज्झायग्गहणातो सुत्तमत्थो वा, तं उवदिसति, सव्वे पदा मेहुणट्ठाए ङ्का ।

पंचविधं सज्झायं, माउग्गामस्स मेहुणट्ठाए ।
जे भिक्खू कुज्जाही, सो पावती आणमादीणि ॥२३३३॥

वितियपदमणप्पज्झे, अप्पज्झे वा वि दुविध तेइच्छे ।
अभिओग असिव दुब्भिक्खमादिसू जा जहिं जतणा ॥२३३४॥

दुविधे तेगिच्छाए चरियाणि वा उद्दिसति ॥२३३४॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णयरेणं इंदिएणं आकारं करेइ करेंतं वा सातिज्जति

तं सेवमाणे आवज्जति चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं ॥सू०॥९१॥

सोयादि अण्णतरं इंदियं जो मेहुणट्ठाए करेति सो आवज्जति पावति चाउम्मासातो णिप्फण्णं चाउम्मासियं, समवसण्णाए अणुग्घाइयं गुरुगं ।

अहवा – छेदो पर्यवकरणं (पर्यवापाकरणं) उवघातो, यथा उग्घातियसवकं । नास्योद्घातः अनुद्घातः। गुरुत्वाद् दुस्तरत्वाच्च अनुद्घातमित्यर्थः ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आगारमिंदिएणं, अण्णतराएण मातुगामस्स ।
जे भिक्खू कुज्जाही, सो पावति आणमादीणि ॥२३३५॥

अण्णतरेण इंदिएण इंदियाणि वा आगारे करेति सो आणादिदोसे पावति ॥२३३५॥

इत्थिअणुरत्तस्स पुरिसस्स इमे आगारा –

काणच्छि रोमहरिसो, वेवहू सेओ वि दिट्ठमुहराओ ।
णीसासजुता य कधा, वियंभियं पुरिसआयारा ॥२३३६॥

काणच्छिं करेति । जस्स अणुरत्तो दट्ठुं रोमंचो भवति, हरिसो वा भवति ।

अहवा – रोमाण हरिसो रोमहरिसो रोमंचेत्यर्थः, शरीरस्य ईषत् कंपो भवति । प्रस्वेदो भवति । दिट्ठीए मुहस्स रागो जायति । सनिश्वासं भाषते । पुनः पुनस्तत् कथां वा करोति," पुनः पुनः विजुंभिका भवति । एते पुरिसागारा ॥२३३६॥

जा पुरिसाणुरत्ता इत्थी तस्सिमे आगारा –

सकडक्खपेहणं वाल-सुंवणं कण्ण-णासकंडुयणं ।
छण्णंगदंसणं घट्टणाणि उवगूहणं बाले ॥२३३७॥

छण्णंगदंसणं (छण्णंगणे य चट्टणा –) ।

णीयल्लयदुच्चरिताणुकित्तणं तस्सुहीण य पसंसा ।
पायंगुट्ठेण मही-विलेहणं णिट्ठुभणपुव्वं ॥२३३८॥

जस्स अणुरत्ता तस्सग्गतो अप्पणो णियल्लगाण दुच्चरियं कित्तेति ।

भूसण-विघट्टणाणि य, कुवियाणि सगव्वियाणि य गयाणि ।
इति इत्थी-आगारा, पुरिसायारा य जे भणिता ॥२३३९॥

एते आगारे करेंतो संघाडादिणा दिट्ठो भत्तसंकादि, गेण्हणादि दोसा य ।

बितियपदमणप्पज्झे अप्पज्झे वा वि दुविध तेइच्छे ।
अभिओग असिव· दुब्भिक्खमादिसू जा जहिं जतणा ॥२३४०॥

॥ इति विसेस-णिसीहचुण्णीए सत्तमो उद्देशओ समत्तो ॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अष्टम उद्देशकः

उक्तः सप्तमः । इदानीं अष्टमः । तस्स इमो संबंधो –

कहिता खलु आगरा, ते उ कहिं कतिविधा उ विण्णेया ।
आगंतागारादिसु, सविगारविहारमादीया ॥२३४१॥

सत्तमस्स अंतसुत्ते थीपुरिसागारा कहिता । ते कहिं हवेज्ज ? आगंतागारादिसु । ते आगंतागारादी समए कतिविहा गामे आगारा विण्णेया ? इह अपुव्वरूवियाणि ।

जे भिक्खू आगंतारेसु वा आरामागारेसु वा गाहावइ-कुलेसु वा परियावसहेसु वा एगो इत्थीए सद्धिं विहारं वा करेइ, सज्झायं वा करेइ, असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा आहारेइ, उच्चारं वा पासवणं वा परिट्ठवेइ, अण्णयरं वा अणारियं निट्ठुरं अस्समणपाओग्गं कहं कहेति, कहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१॥

एगो साहू एगाए इत्थियाए सद्धिं समाणं, गामाओ गामंतरो विहारो ।

अहवा–गतागतं चंकमणं सज्झायं करेति, असणादियं वा आहारेति, उच्चार-पासवणं परिट्ठवेति । एगो एगित्थीए सद्धिं वियारभूमिं गच्छति । अणारिया कामकहा णिरंतरं वा अप्रियं कहं कहेति कामनिट्ठुर-कहाओ । एता चेव असमणपायोग्गा ।

अधवा – देसभत्तकहादी जा संजमोवकारिका ण भवति सा सव्वा असमणपाउग्गा ॥२३४१॥

आगंतारागारे, आरामागारे गिहकुला वसहे ।
पुरिसित्थि एगणेगे, चउक्कभयणा दुपक्खे वि ॥२३४२॥

एगे एगित्थीए सद्धिं, एगे अणेगित्थीए सद्धिं, अणेगा एगित्थीए सद्धिं, अणेगा अणेगित्थीए सद्धिं ॥२३४२॥

जा कामकहा सा होतऽणारिया लोकिकी व उत्तरिया
णिट्ठुर भल्लीकहणं, भागवतपदोसखामणया ॥२३४३॥

तत्थ लोइया–णरवाहणदत्तकधा । लोगुत्तरिया – तरंगवती, मलयवती, मगधसेणादी । णिट्ठुरं णाम "भल्लीघरकहणं" – एगो साधू भरुकच्छा दक्खिणापहं सत्थेण यातो य भागवएण पुच्छितो किमेयं भल्लीघरं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ति ? तेण साहुणा दारवतिदाहातो आरब्भं जहा वासुदेवो य पयाओ, जहा य कूरचारगभंजणं कोसंबारण्णप्रवेसो, जहा जरकुमारागमो, जहा य जरकुमारेणं भल्लिणा हओ य । एवं भल्लीघरुप्पत्ती सव्वा कहिया । ताहे सो भागवतो पदुट्ठो चिंतेति – जइ एयं न भविस्सति तो एस समणो घातेयव्वो । सो गओ दिट्ठो यऽगेण पादे भल्लीए विद्धो । ताहे आगंतूण तं साहुं खामेति भणति य मए एत्रं चिंतियमासी तं खमेज्जासि । एवमादी [1]णिदुरा । एवमादि पुरिसाण वि ता ण जुज्जेति कहिउं, किमु वा एगित्थियाणं ॥२३४३॥

अवि मायरं पि सद्धिं, कधा तु एगागियस्स पडिसिद्धा ।
किं पुण अणारियादी, तरुणित्थीहिं सह गयस्स ॥२३४४॥

माइभगिणिमादीहिं अगमम्मित्थीहिं सद्धिं एगाणियस्स धम्मकहा वि काउं ण वट्टति । किं पुण अण्णाहिं तरुणित्थीहिं सद्धिं ।

अण्णा वि अप्पसत्था, थीसु कधा किमु अणारिय असब्भा ।
चंकमण-ज्झाय-भोयण, उच्चारेसुं तु सविसेसा ॥२३४५॥

अण्णा इति धम्मकधा, अविसद्दाओ सवेरग्गा, सा वित्थीसु एगागिणियासु विरुद्धा, किं पुण अणारिया, अणारियाण जोग्गा अणारिया, सा य कामकहा, असभा जोग्गा असब्भा ।

अहवा – असब्भा जत्थ उल्लविज्जंति । चंकमणे सति विब्भम-इंगितागारं दट्ठु मोहुब्भवो भवति, सज्झाए मणहरसद्देण, भोयणदाणग्गहणातो विसंभे, उच्चारे ऊरुगादि-छण्णंगदरिसणं ॥२३४५॥

भयणपदाण चउण्हं, अण्णतरजुते उ संजते संते ।
जे भिक्खू विहरेज्जा, अहवा वि करेज्ज सज्झायं ॥२३४६॥

भयणपदा - चउब्भंगो पुव्वुत्तो ।

असणादी वाऽऽहारे, उच्चारादि य आचरेज्जाहि ।
णिट्ठुरमसाधुजुत्तं, अण्णतरकधं च जो कहए ॥२३४७॥

सोऽआणा अणवत्थं, मिच्छत्त-विराधणं तहा दुविधं ।
पावति जम्हा तेणं, एए तु पदे विवज्जेज्जा ॥२३४८॥

दिट्ठे संका, भोइगादि, जम्हा एते दोसा तम्हा ण कप्पति विहारादि काउं ॥२३४८॥

कारणे पुण करेज्जा –

बितियपद[1]मणप्पज्झे, गेल[2]ण्णु[3]सग्ग-रोह[4]गऽद्धा[5]णे ।
संभ[6]म-भ[7]य-वास[8]सु य, खंति[1]यमादी य णिक्खमणे ॥२३४९॥

अणप्पज्झो सो सव्वाणि विहारादीणि करेज्ज ॥२३४९॥

---

१ णिट्ठुरा ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इदाणिं "[1]गेलण्णे" –

उद्देसम्मि चउत्थे, गेलण्णे जो विधी समक्खाओ ।
सो चेव य बितियपदे, गेलण्णे अट्ठमुद्देसे ॥२३५०॥ कंठा

इयाणि "[2]उवसग्गे" त्ति तत्थिमं उयाहरणं –

कुलवंसम्मि पहीणे, सस-भिसएहिं तु होइ आहरणं ।
सुकुमालिय-पव्वज्जा, सपच्चवाया य फासेणं ॥२३५१॥

इहेव अड्ढभरहे वाणारसीणगरीए वासुदेवस्स जेट्ठभाओ जरकुमारस्स पुत्तो जियसत्तू राया । तस्स दुवे पुत्ता ससओ भसओ य, धूया य सुकुमालिया । असिवेण सव्वम्मि कुलवंसे पहीणे तिण्णि वि कुमारगा पव्वतिता । सा य सुकुमालिया जोव्वणं पत्ता । अतीवसुकुमाला रूववती य । जतो भिक्खादिवियारे वच्चइ ततो तरुणजुआणा पिट्ठओ वच्चंति । एवं सा रूवदोसेण सपच्चवाया जाया ॥२३५१॥

एतीए गाहाए इमाओ वक्खाणगाहाओ –

जियसत्तु-णरवरिंदस्स, अंगया सस-भिसो य सुकुमाला ।
धम्मे जिणपण्णत्ते, कुमारगा चेव पव्वइया ॥२३५२॥

तरुणाइण्णे णिच्चं, उवस्सए सेसिगाण रक्खट्ठा ।
गणिणि गुरुणो उ कहणं, वीसुवस्सए हिंडए एगो ॥२३५३॥

तं णिमित्तं तरुणेहिं आइण्णे उवस्सगे सेसिगाण रक्खणट्ठा गणिणी गुरूण कहेति । ताहे गुरुणा ते सस-भिसगा भणिया-संरक्खह एयं भगिणिं । ते घेत्तुं वीसुं उवस्सए ठिया । ते य बलवं सहस्सजोहिणो । ताणेगो भिक्खं हिंडति एगो तं पयत्तेण रक्खति । जे तरुणा अहिवडंति ते हयविहए काउं घाडेति । एवं तेहिं बहुलोगो विराधितो ॥२३५३॥

तत्थ उ तुरुमिणिणगरीए पंचसताहिं साहूहिं ठिता सपक्खोमाणं च –

हंतविहतविप्परद्धे, वण्हिकुमारेहि तुरमिणीणगरे ।
किं काहिति हिंडंतो, पच्छा ससओ व भिसओ वा ॥२३५४॥

चक्की वीसतिभागं, सव्वे वि य केसवाओ दसभागं ।
मंडलिया छब्भागं, आयरिया अद्धमद्धेणं ॥२३५५॥

एवं ते किलिस्समाणे णाउं –

भायणुकम्पपरिण्णा, समोहणं एगो भंडगं बितिओ ।
आसत्थवणियगहणं, भाउ य सारिच्छ दिक्खा य ॥२३५६॥

---

[1] गा० २३४८ । [2] गा० २३४९ ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

भायणुकंपाए सुकुमालिया अणसणं पव्वज्जति। बहुदिणखीणा सा मोहं गता। तेहिं णायं कालगय त्ति। ताहे तं एगो गेण्हति, बितिओ उपकरणं गेण्हति। ततो सा पुरिसफासेण रातो य सीयलवातेण णिज्जंती अप्पातिता सचेयणा जाया। तहावि तुण्हिक्का ठिता, तेहि परिट्ठविया, ते गया गुरुसगासं। सा वि आसत्था। इओ य अदूरेण सत्थो वच्चति। दिट्ठा य सत्थवाहेणं गहिया, संभोतिया रूववती महिला कया, कालेण भातियागमो, दिट्ठा, अब्भुट्ठिया य दिण्णा भिक्खा। तहावि साधवो णिरक्खंता अच्छं। तीए भणियं – किं णिरक्खह ?

ते भणंति – अम्ह भगिणीए सारिक्खा हि, किंतु सा मता, अम्हेहिं चेव परिट्ठविया, अण्णहा ण पत्तियंता। तीए भणियं – पत्तियह, अहं चिय सा, सव्वं कहेति। वयपरिणया य तेहिं दिक्खिया। एवमादिया उवसग्गेण चउब्भंगण्णतरेण वसेज्जा ॥२३५६॥

इदाणि "[1]रोधग" त्ति दारं –

सेणादी गम्मिहिती, खेत्तुप्पादं इमं वियाणित्ता।
असिवे ओमोयरिए, भयचक्काऽणिग्गमे गुरुगा ॥२३५७॥

मासकप्पपाउग्गं खेत्तं भेत्तुं सेणं गम्मिहिति, सेणाए वा अभिपडंतिए ताहे तो खेत्ताओ गम्मति, आदिसद्दाओ [2]संवट्टंमि। वासकप्पखेत्ते इमे उवद्दवा होंति – असिवुवघातो ओमबोहिगभओप्पाओ य परचक्कागम्मुयाओ, एते णाउं जति ण णिग्गच्छति तो चउगुरुगं पच्छित्तं ॥२३५७॥

आणादिया य दोसा, विराधणा होति संजमाताए।
असिवादिम्मि परुविते, अहिगारो होति सेणाए ॥२३५८॥

अणिंतस्स आणादी दोसा आयसंजमविराहणा य। जया असिवादी सव्वे प्रतिपदं परूविता भवंति तदा इह सेणापदेणाहिकारो कायव्वो। तं पुण असिवादी इमे जाणंति अणागयमेव ॥२३५८॥

अविसेस-देवत-णिमित्तमादि अवितह पवित्ति सोऊणं।
णिग्गमण होति पुव्वं, अणाते रुद्धे वोच्छिण्णे ॥२३५९॥

ओहिमादिअतिसएण णायं, देवयाए वा कहियं, अविसंवादिणिमित्तेण वा णायं, पवत्तिवत्ता तं वा अवितहं णाउं, ततो अणागतं णिग्गंतव्वं, अणाते सहसा रोहिते, वोच्छिण्णेसु वा पहेसु ण णिग्गच्छति, ण दोसा ॥२३५९॥

तम्हा अणागयं –

सोच्चा व सोवसग्गं, खेत्तं मोत्तव्वमणागतं चेव।
जइ ण मुयति सगाले, लग्गइ गुरुए सवित्थारे ॥२३६०॥

णाउं जति अणागयं ण मुंचति तो चउगुरु सवित्थारं भवति ॥२३६०॥

इमो वित्थारो "[3]परिताव महादुक्खो" – कारग गाहा।

---

१ गा० २३४९। २ वक्खा गा० २३७३। ३ बृह० प्रथ० गा० १८६६।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इमेहिं पुण कारणेहिं अणितां वि सुद्धो –

गेलण्ण-रोह-असिवे, रायदुट्ठे भए व ओमम्मि ।
उवधी सरीरतेणग, णाते वि ण होइ णिग्गमणं ॥२३६१॥

गिलाण पडिबद्धो, रोहिते णिग्गमो णत्थि, बाहिं असिवं ।

अहवा – रायदुट्ठं ओमं वा बाहिं, उवहिसरीरतेणगा बाहिं ॥२३६१॥

एएहि य अण्णेहि य, न णिग्गया कारणेहि बहुएहिं ।
अच्छंते होंति जतणा, संवट्टे णगररोहे य ॥२३६२॥

एतेहि य अण्णेहिं य कारणेहिं य अच्छंताण देससंवट्टेण णगररोधे य इमा जयणा ॥२३६२॥

बोहिगादिभएण परचक्कभएण च बहू गामा संवट्टिया एक्कतो ठिता संवट्टो भण्णति, ते च्चिय रायधिट्टिता सेणा ।

तेसिमाजयणा –

संवट्टम्मि तु जतणा, भिक्खे भत्तट्ठ-वसहि-थंडिल्ले ।
तम्मि भए पत्तम्मी, अवाउडा एगतो ठंति ॥२३६३॥

तत्थ "[1]भिक्खे" त्ति दारं –

वइयासु व पल्लीसु व, भिक्खं काउं वसंति संवट्टे ।
सव्वम्मि रज्जखोभे, तत्थेव य जाइ थंडिल्ले ॥२३६४॥

संवट्टेण वा वासे सच्चित्ते सच्चित्तो पुढविक्काओ त्ति काउं ण हिंडंति, पुव्वट्ठितासु वतितासु पल्लीसु वा भिक्खं हिंडंता ततो चेव थंडिल्ले भोत्तुं रात्रो संवट्टे वसंति । अव वइयादि णत्थि, सव्वम्मि रज्जखोभो, तो तत्थेव संवट्टे जाणि थंडिल्लअचित्ताइं तेसु भिक्खं गेण्हंति ॥२३६४॥

अह णत्थि थंडिल्लअचिता ताहे इमा जयणा –

पूअलिय सत्तु ओदण, गहणं पडलोवरिं पगासमुहे ।
सुक्खादीण अलंभे, अजवंते वा विलक्खणता ॥२३६५॥

उल्लम्मि पडंते मा पुढविकायविराहणा भविस्सति तेग मंडगादि सुक्खपूअलियाए "असंसत्त" सुत्तगाहा । सुक्खोयणं वा कुम्मासा, पगासमुहे भायणे गेण्हंति, पडलोवरिट्ठिते चेव । अह सुक्खं ण लब्भति, ण वा सरीरस्स जावगं, उल्ले घेप्पमाणो लेवाडिते पडले लेवाडगं लक्खेंति । दारं ॥२३६५॥

इदाणिं "[2]भत्तट्ठे" त्ति –

पच्छण्णासति वहिता, अह सभयं तेण चिलिमिणी अंतो ।
असती य व सभयम्मि व, धरेंति अद्धं तरे भुंजे ॥२३६६॥

---

१ गा० २३६३ । २ गा० २३६३ ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

संवट्टस्स बाहिरे पच्छण्णे भत्तट्ठं करेतु, असति पच्छण्णस्स सभए संवट्टस्स अंतो चेव चिलिमिलिं दाउं भुंजति। असति चिलिमिलीए सभए वा चिलिमिली ण पागडिज्जंति ताहे अद्धभायणाणि धरेंति, अद्धा कमढगादिसु भुंजंति ॥२३५६॥

काले अपहुप्पंते, भए व सत्थे व गंतुकामम्मि।
कप्पुवरि भायणाइं, काउं एक्को उ परिवेसे ॥२३६७॥

अह वारगेण काले ण पहुप्पति, भए वा तुरियं भोयव्वं, संवट्टादिसव्वो चलितो गंतुकामो ताहे भायणा कप्पुवरिं ठवेउं सव्वे कमढगादिसु भुंजंति, एक्को परिवेसति ॥२३५२॥

पत्तेयचडुगासति, सज्झिलगा एगतो गुरू वीसुं।
ओमेण कप्पकरणं, अण्णो गुरु णेक्कओ वा वि ॥२३६८॥

सव्वेसिं चडुगा ण पहुप्पंति ताहे सज्झिलगा – जे वा पीतिवसेण एक्कतो मिलंति एक्कतो भुंजंति, गुरु वीसुं भुंजति, जाहे भुत्ता ताहे ओमेण आयामणं चडुगाणं कायव्वं, गुरुसंतियं कमढगं ण तेसिं मेलिज्जति, अण्णो कप्पेति। अहवा –अपहुव्वमाणेसु एक्कतो कप्पिज्जंति ॥२३६८॥

इयाणिं भायण-कप्पविही –

भाणस्स कप्पकरणं, दड्ढेल्लग-मुत्त-कडुयरुक्खेसु।
तस्सऽसति कमढ कप्पर, काउमजीवे पदेसे वा ॥२३६९॥

उदित्तगादि दड्ढभूमीए गोमुत्तियपदेसेसु वा खारकडुयरुक्खहेट्ठा वा, एवमादि थंडिलाण असति कमढगे घडादिकप्परे वा भायणस्स कप्पं काउं अण्णत्थ णेउं थंडिले, गते वा संवट्टे पच्छा परिमिलियाजीवपदेसेसु परिठवेति। स एवातुरे थंडिलस्स वा अभावे धम्माधम्माकासाजीवपदेसवुद्धिकाउं परिट्ठवेति ॥दारं॥२३६९॥

इदाणिं "[3]वसहि" त्ति दारं –

गोणादी वाघाते, अलब्भमाणे व बाहि वसमाणा।
वातदिसि सावतभए, सयं पडालिं पकुव्वंति ॥२३७०॥

संवट्टस्संतो निराबाधे मिलियपदेसे वसंति, अंतो वा – गोणमहिसादिएहिं तडप्फडंतेहिं वाघातो, अलंभे वा जतो धाडीभयं ततो वज्जेउं वसंति। अह सावयभयं ताहे वायाणुकूलं वज्जेंति, अंतो बाहिं वा वसमाणा सीत-वातातव-जल-सावतरक्खणट्ठा पुव्वकताए पडालीए ठायंति। असति फासुएहिं सयं करेंति। आगाढे वि धारणं[2] काउं वसंति। वतिए वि एवं। दारं ॥२३७०॥

इदाणिं उच्चारविधी भण्णति।

"[3]थंडिले" त्ति दारं –

पढमासति सेसाण व, मत्तए वोसिच्च [4]रयणिए।
थंडिल्ल निवेसे वा, गतेसु सभए पदेसेसुं ॥२३७१॥

पढमं अणावातमसंलोअं, तस्सासति सेसाण आपायसंलोयादिया, असति दिवसतो अच्छिउं रातो

१ गा० २३६३। २ विधानम्। ३ गा० २३६३। ४ दिया णिसि पभाते।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मत्तए वोसिञ्च पभाए थंडिले परिट्ठवेंति, तत्थ सन्निवेसे वा गते वोसिरति परिट्ठवेति वा। अह पिट्ठतो भयं अणघियासो वा ताहे धम्मादिपदेसेसु वोसिरति। दारं।

इदाणिं "तम्मि भए" पच्छद्धं। जो ण परचक्कादिभएण संवट्टे पइट्ठा तम्मि पत्ते परचक्के धाडियागमे वा सव्वोवकरणं गुविलपदेसे ठवेउं "अत्ताउडा एकतो"त्ति अण्णतो एकपदेसे ठायंति ॥२३७१॥

कम्हा एवं करेंति ? भण्णति –

जिणलिंगमप्पडिहतं, अवाउडा वा वि दट्ठु वज्जेंति।
थंभणि मोहणिकरणं, कतजोगो वा भवे करणं ॥२३७२॥

अचेलिया जिणलिंगं उस्सग्गे ठिया य, एवं ठिते ण कोति उवद्दवेति, एस उववातो अपडिलेहितो जिणमुद्रेत्यर्थः।

अहवा – ते तेणगा अवाउडे दट्ठुं सयमेव वज्जेंति, विज्ज-मंतपभावेण थंभण-मोहणं करेति, सहस्सजोही वा तीसत्थे वा कयजोगो तस्स तारिसे [1]आकंपं उभयगच्छसंरक्खणट्ठा करणं भवे। दारं ॥२३७२॥ "सवट्टे" त्ति गतं।

इदाणिं "[2]णगररोहे" त्ति दारं –

संवट्ट णिग्गयाणं, णियट्टणा अद्धरोधजयणा य।
भत्तट्ठण थंडिल्ले, सरीरभिक्खे विगिंचणता ॥२३७३॥

जे मासकप्पखेत्ताण णिग्गंतुं संवट्टे ठिया ते संवट्टणिग्गया। ते इदाणिं [3]उखंदचोरएणं संवट्टातो णियत्तिउ णगरं पविट्ठा ॥२३७३॥

जे अणगारा तो ण णिग्गता तेसिं इमा अट्ठमासे रोहगजयणा भण्णति –

[4]हाणी जा एगट्ठा, दो दारा कडग चिलिमिणी वसभा।
तं चेव एगदारे, मत्तगसुधोवणं च जतणाए ॥२३७४॥
रोहे उ अट्ठमासे, वासासु सभूमिए णिवा जंति।
रुद्धे उ तेण णगरे, हावंति ण मासकप्पं तु ॥२३७५॥

अट्ठ उडुबद्धिते मासे रोहेउं णिवा वासासु अप्पणो रज्जाणि गच्छंति, उडुबद्धे रोहिते तहाव साधू मासकप्पो ण हावियव्वो, अट्ठवसहीओ अट्ठभिक्खायरियातो, अट्ठवसहीओ अमुंचंतेण भिक्खायरियाओ ॥८॥७॥६॥५॥४॥३॥२॥१॥ पुणो वि सत्तवसहीओ अमुंचंतेण अट्ठादी भिक्खायरिया। एवं-जाव-एगा वसही एगा भिक्खायरिया। एतदुक्तं भवति "[5]हाणी जा एगट्ठा" इमा य गाहा एत्थ-अत्थे जोएयव्वा ॥२३७५॥

भिक्खस्स व वसधीय व, असती सत्तेव चतुरो जा एक्का।
लंभालंभे एक्केक्कगस्सऽणेगा उ संजोगा ॥२३७६॥

कंठा। दारं ॥२३७६॥ "अद्धरोधगजयण" त्ति गयं।

---

१ आकंपेउ भए गच्छ। २ गा० २३६९। ३ घेरा डालना अथवा शत्रु को छल से मारना। ४ वक्खा गा० २३७५, २३७६, २३७७। ५ गा० २३७४।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इदाणिं "[1]हाणी जा एगट्ठा" त्ति अस्य द्वितीयं व्याख्यानं – सपक्ख - परपक्खवसहिजयणा य भण्णति। तत्थिमे विकप्पा – पत्तेया समणाणं। पत्तेया समणीणं। महाजणसम्मद्देण वा दुल्लभवसहीए समण-समणीण एगट्ठा।

अहवा – सव्वपासंडित्थीण एगट्ठा। सव्वपासंडपुरिसाण य एगट्ठा।

अहवा – सव्वपासंड पुरिसइत्थीण एगट्ठा।

अहवा – सव्वपासंड (समण) पुरिसित्थीण एगट्ठा ॥२३७६॥

पत्तेयसमणविकप्पे "पासंडित्थी" तत्थिमा जयणा –

एगत्थ वसंताणं, पिहं दुवारासती सयं करणं।
मज्झेण कडगचिलिमिलि [2]तेसुभओ थेर-खुड्डीओ ॥२३७७॥

सजय-संजतीणं पत्तेयवसहिअभावे जदा एगवसहीए वसंति तहा चउसाले पिहं दुवारे वसंति पिहदुवारासति सयमेव कुड्डं छेत्तुं दुवारं करेंति। गिहमज्झे कुड्डासति कडगं चिलिमिलिं वा ठावेंति कडगासण्णे थेरा ठायंति। संजतीणं खुड्डियाओ थेराण परतो खुड्डा। खुड्डीण परतो थेरी। खुड्डाण परओ मज्झिमा संजतिवग्गे थेरीण परतो मज्झिमाओ। मज्झिमाण परतो तरुणा। संजतिवग्गे वि मज्झिमाण परतो तरुणीओ एसा विही दढकुड्डिगिहे। एवं सव्वं वसभा जयणं करेंति ॥२३७७॥ पुव्वद्धस्स वक्खाणं गतं।

"[4]तं चेव एगदारे" त्ति अस्य व्याख्या –

दारदुगस्स तु असती, मज्झे दारस्स कडगपोत्ती वा।
णिक्खम-पवेसवेला, ससद्दपिंडेण सज्झाओ ॥२३७८॥

बितियदुवारस्सासति करणं वा न लब्भति तदा एगदुवारं कडगचिलिमिलीहिं दुधा वि कज्जति, अद्धेण संजया अद्धेण संजतीतो णिग्गच्छंति। अह संकुडं ण लब्भति वा विसज्जिउं ताहे परोप्परं णिग्गमणवेलं वज्जेंति वंदेण, ससद्दं णिप्फिडंति, पिंडेण सज्झायं करेंति, संगारकहं ण करंति पढंति वा ॥२३७८॥

"[5]तेसु भतो थेरखुड्डीओ" त्ति अस्य व्याख्या –

अंतम्मि व मज्झंमि व, तरुणी तरुणा तु सव्वबाहिरओ।
मज्झे मज्झिम-थेरी, खुड्डग-थेरा य खुड्डी य ॥२३७९॥

दढकुड्डे अंते सपक्खवायमागासे मज्झे तरुणीओ। शेषं गतार्थम्।

इदाणिं "[6]मत्तगे" त्ति दारं –

[7]पत्तेय समण दिक्खिय, पुरिसा इत्थी य सव्वे एगट्ठा।
पच्छण्ण कडगचिलिमिलि, मज्झे वसभा य मत्तेणं ॥२३८०॥

पत्तेगा जत्थ त्थीवज्जा सव्वपासंडा एगवसहीए ठिया, जत्थ वा सव्वे पासंडा थीसहिया एगट्ठिया तत्थिमा जयणा – जो पच्छण्णपदेसो तत्थ ठायंति, असति पच्छण्णस्स मज्झेगं कडगचिलिमिली वसभा देंति अप्पसागारियकाइयभूमीए असति दिवा रातो वा वसभा मत्तगेहिं जतियंति। वसभग्गहणं ते खेत्तण्णा अप्पसागारियं परिठवेंति। एवं संजतीओ वि पासंडित्थिमज्झे जयंति।

---

१ गा० २३७४। २ गा० २३७९। ३ गा० २३७४। ४ गा० २३७४। ५ वक्खा गा० २३७७
६ गा० २३७४। ७ वक्खा गा० २३८२।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अहवा – "वसभा य मत्तेणं" त्ति जत्थ संजतासंजतीणं एगदुवारा एगवसही तत्थ अप्पसागारिय काइयभूमीए असति बाहिं वा सच्चवातो रातो तरुणीओ अंते, मज्झे वा वसभिणीओ, मत्तएसु काइयं वोसिरिउं मज्झिमाण अप्पेंति, ताओ थेरीण, थेरी खुड्डीणं, थेरा वसभाणं, ते परिट्ठवेंति ॥२३८०॥

पच्छण्ण असति णिण्हग, बोडिय भिक्खू असोय सोए य ।
पउरदव-चड्डगादी, गरहा य सअंतरं एक्को ॥२३८१॥

पच्छण्णकडगचिलिमिलीण असति णिण्हएसु ठायंति, तेसु असति बोडिएसु, तेसु असति भिक्खुएसु, एवं पुव्वं असोयवादीण, पच्छा सोयवाइसु ठिया, आयमणादिकिरियासु पउरदवेणं कज्जं करेति, चड्डगं कमढगं, तेसु भुंजंति, गरहापरिहरणत्थं, संतरं ठिया 'एगे" त्ति खुड्डगादि एगो चड्डगाण कप्पं करेति । अहवा – एगो साधू आयमणादिकिरियासु अंतरे ठायति ॥२३८१॥

"[1]पत्तेय समणा दिक्खिय" अस्य व्याख्या –

पासंडीपुरिसाणं, पासंडित्थीण वा वि पत्तेगे ।
पासंडित्थि पुमाणं, व एगतो होतिमा जतणा ॥२३८२॥

पुरिसा पत्तेयं, इत्थी पत्तेयं ।

अधवा – पुरिसा इत्थी य सव्वे एगतो ठिता । इमा जयणा । "पच्छण्ण असति णिण्हग" अस्यार्थस्य स्पृशनं ॥२३८२॥

जे जहिं असोयवादी, साहम्मं वा वि जत्थ तहिं वासो ।
[2]णिहुता य जुद्धकाले, ण वुग्गहो णेव सज्झाओ ॥२३८३॥

साधम्मिया णिण्हयबोडिएसु भिक्खएसु वि कारुणियत्तं जीवातिपयत्थाणि वा जेसु अत्थित्तं तेसु तेसु ठायंति, जुद्धकालो रोधगमित्यर्थः । ण तत्थ सपक्ख-परपक्खेहिं सद्धिं वुग्गहं करेंति, ण च सज्झायं करेंति ॥२३८३॥ "अद्धरोहगजयणा" सम्मत्ता । भत्तट्ठाणे वि एत्थेव गता ।

इदाणिं "[3]थंडिले" त्ति –

तं चेव पुव्वभणियं, पत्तेगं दिस्समत्त कुरुकूयं ।
थंडिल्ल-सुक्ख-हरिते, पवायपासे पदेसे वा ॥२३८४॥

पुव्वभणियं "अणावायमसंलोए" एयं चेव पत्तेयं ।

अहवा – सेसं थंडिलेसु पत्तेयमग्गहणं करेंति ॥२३८४॥

"[4]मट्टिय कुरुकुयं" च अस्य व्याख्या –

पढमासति अमणुण्णे, तराण गिहियाण वा वि आलोए ।
पत्तेय मत्त कुरुकुय, दवं व पउरं गिहत्थेसुं ॥२३८५॥

पढमं अणावायमसंलोयं, तस्सासति अमणुण्णाय आवातं गच्छेति, तस्सासति पासत्थादियाणं । ततो बितियभंग असोअ-सोआण गिहिपासंडियाण य कमेण आलोयं गच्छेति । पच्छद्धं कंठं ॥२३८५॥

---

१ गा० २३८० । २ निर्व्यापाराः । ३ गा० २३६३ । ४ दिस्समाणे कुरुगाय । ५ गा० २३८४ ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तेण पर गिहत्थाणं, असोयवादीण गच्छ आवायं।
इत्थी णपुंणएसु वि, परम्मुहो कुरुकुया सेव ॥२३८६॥

ततो ततियभंगे गिहिपासंडिय असोय सोयाण कमेण आवातं गच्छे। तेण परं बितियभंगे इत्थी-णपुंसालोयं गच्छेति। परम्मुहो कुरुकुचं च करेति। ततो ततियभंगे इत्थिनपुंसावातं, तत्थ वंदेण बोलं करेंता वच्चंति। जयणाए पूर्ववत्। एसा थंडिलजयणा।

बाहिं ण लब्भति णिग्गंतुं जं अंतो थंडिलं विदिण्णं तत्थ वोसिरे, जति णत्थ हरितं सुक्खे वोसिरेति, असति सुक्खस्स मलियमीसेसु वोसिरति। अहो य भूमी न पासइ ताहे धम्मादिपदेसेसु वोसिरतो सुद्धो। दारं ॥२३८६॥

इदाणिं "[1]सरीरे" त्ति दारं –

पच्छण्ण-पुव्वभणिते, विदिण्ण थंडिल सुक्ख हरिते वा।
अगड वरंडग दीहिय, जलणे पासे य देसेसु ॥२३८७॥

रोधगे सरीरपरिट्ठवणविधी अवरदक्खिणाए चेव दिसाए अणावातमसंलोयं पच्छण्णपुव्वभणियं परिट्ठावणियं से रयहरणादि उवकरणं पासे ठविज्जति ॥२३८७॥

अण्णाते परलिंगे, णाउवओगद्ध मा उ मिच्छत्तं।
णाते उड्डाहो वा, अयसो पत्थारदोसा वा ॥२३८८॥

अण्णाओ वा जो तस्स परलिंगं कज्जति। तं पि उवओगकालाओ परतो कज्जति, मा सो मिच्छत्तं गमिस्सति। जो जण-णातो तम्मि परलिंगं ण कज्जति, मा जणो भणिहिति एते मातिणो, पावायारा, परोव-घातिणो य, एवं उड्डाहो, पवयणोवघातो, पत्थारदोसो य। एतद्दोसपरिहरणत्थं सलिंगेण चेव विदिण्णे थंडिले परिट्ठविज्जति। अह हरितं ताहे सुक्खसु, असति मीसमलिएसु. अगडे वा अणुण्णायं, पागारोवरिएण वा खिवियव्वं, दीहियाए वा वहंतीए छुभियव्वं, जलणे वा जलंते छुभियव्वं। एतेसिं वा पासे ठविज्जति। अह ण लब्भति ताहे धम्मादिपएस त्ति काउं एतेसु खिवंति ॥२३८८॥

इदाणिं "[2]भिक्ख" त्ति दारं –

ण वि कोइ किं चि पुच्छति, णिंतमणिंतं च बाहि अंतो वा।
आसंकिते पडिसेहो, गमणे आणादिणो दोसा ॥२३८९॥

जत्थ रोधगे अंतो बाहिं वा ण को ति पडिपुच्छति, णिप्फिडंतो पविसंतो वा तत्थिच्छा, अंतो बाहिं वा अडंति। जत्थ आसंकियं "को एस? कतो वा आगतो? मा एस अंतो कहेहिति, कहिं वा णिग्गच्छति? मा एस भेदं दाहिति" एरिसे आसंकिते पडिसेहे ण गंतव्वं। आणादिया य दोसा ॥२३८९॥

पउरऽण्णपाणगमणे, चउरो मासा हवंतऽणुग्घाता।
सो य इतरे य चत्ता, कुल-गण-संघे य पत्थारो ॥२३९०॥

संथरंतो जति गच्छति चतुगुरु, जो गच्छति तेण अप्पा परिच्चत्तो, इतरे य अच्छंता ते य एतेण परिच्चत्ता, बाहिरा वा रिउ त्ति काउं गेण्हंति। भेदं पयच्छंति त्ति अब्भंतरा गेण्हंति। उभओ वि कुल-गण-संघ-पत्थारसंभवो ॥२३९०॥

---

१ गा० २३७३। २ गा० २३७३।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अंतो अलब्भमाणेसणमादीसु होइ जइतव्वं ।
जावंतिए विसोधी, अमच्चमादी अलाभे वा ॥२३९१॥

फासुए एसणिज्जे य अंतो अलब्भमाणे अंते चेव पणगपरिहाणीए जयंति । जावंतिया विसोहिकोडीए जाव-चउलहुं पत्तो । विसोहिकोडीए असति अमच्चो दाणसड्ढादिया वा ओभासिज्जंति, देंताण अविसोहिकोडीए वि घेप्पंति ॥२३९१॥

आपुच्छिय आरक्खिय, सेट्ठि सेणावति अमच्च-रायाणं ।
णिग्गमण-दिट्ठरूवे, भासा वि तहिं असावज्जा ॥२३९२॥

तहावि अलब्भंते, आरक्खितो कोट्टपालो, तं पुच्छंति, अम्हं असंथरं णिग्गच्छामो, दारं णे देहि ।

जति सो भणेज – मा णिग्गच्छह, अहं भे देमि, ताहे घेप्पंति ।

अह सो भणेज्ज – "णत्थि मे भत्तं, बीहेमि य रण्णो, सेट्ठि पुच्छह" ।

ताहे सेट्ठि पुच्छंति। एवं सेणावतिं, अमच्चं, रायाणं, दिंतेसु गहणं। तेसिं वा अणुण्णाते णिग्गच्छंति। दारपालाण य साहू दरिसिज्जंति एते दिट्ठरूवे करेह ।

एते भत्तट्ठा णेंति अतितिय, ण किं चि तुब्भेहिं वत्तव्वा, बाहिं निग्गएहिं य असावज्जा भासा भासियव्वा ॥२३९२॥

मा णीह सयं दाहं, संकाए वा ण देंति णिग्गंतुं ।
दाणम्मि होइ गहणं, अणुसट्ठादीणि पडिसेहे ॥२३९३॥

आरक्खियादि पुच्छिया भणंति – "मा णीह, अम्हे सयं भत्तं देमो", ते पुण भेदसंकाए णिग्गंतुं ण देंति । ते जति अविसुद्धं देंति तहावि गहणं । अह णो भत्तं णो णिग्गंतुं देंति ताहे अणुसट्ठी धम्मकहा विज्जा-मंतादिया वा पयुज्जंति ॥२३९३॥

जता णिग्गच्छंति तदा बहिया वि इमं विधिं पयुंजंति –

बहिया वि गमेतूणं, आरक्खगमादिणो ततो णिंति ।
हित-णट्ठ-चारियादि, एवं दोसा जढा होंति ॥२३९४॥

अंतो बहिं च गमिते सव्वे चारिगादिदोसा परिचत्ता भवंति ॥२३९४॥

बहिया जे साहू पट्ठविज्जंति ते इमेहिं गुणेहिं जुत्ता –

पियधम्मे दढधम्मे, संबंधऽविकारिणो [1]करणदक्खे ।
पडिवत्तीण य कुसले, [2]तब्भूते पेसते बहिता ॥२३९५॥

जेसिं अंतो बाहिं च सयणसंबंधो अत्थि, अविकारी ण उब्भडवेसा, ण कंदप्पसीला भिक्खगहादि-किरियदक्खा, पडिवत्ती प्रतिवचनं तं प्रति कुशला बाहिं खंधारो आगतो तत्थ जे जा उप्पणा, ते बाहिं पेसिज्जंति ॥२२९५॥

---

१ किरिय । २ भूमे (पा०) ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

"[1]भासा वि तहि असावज्ज" त्ति अस्य व्याख्या –

केवइय आस-हत्थी, जोधा धण्णं च केत्तियं णगरे ।
परितंत अपरितंता, णागरसेणा व ण वि जाणे ॥२३६६॥

वाहिरच्चेहिं पुच्छितो ण भणाति, ण जाणामि ॥२२६६॥

ते भणंति – तत्थेव वसंता कहं न याणह ? साहू भणंति –

सुणमाणे वि ण सुणिमो, सज्झाए समिति गुत्ति आउत्ता ।
सावज्जं सोऊण वि, ण हु लब्भाऽऽइक्खिउं जइणो ॥२३६७॥

जइ किं चि सुणिमो तहावि सावज्जं न युज्जति अक्खिउं । अंतो वि पुच्छितो भिक्खादिउवओगे ण णायं । अंतो बहिया य – इमं उत्तरं "[2]बहु सुणेति" – सिलोगे ।.२२६७॥

एवं हिंडंते पडुप्पण्णे समुदाणे –

भत्तट्ठणमालोए, मोत्तूणं संकिताइ ठाणाइं ।
सच्चित्ते पडिसेहो, अतिगमणं दिट्ठिरूवाणं ॥२३६८॥

"भत्तट्ठणमालोए" त्ति अस्य व्याख्या –

सावग सण्णिठाणे, ओयवितेतर करेंति भत्तट्ठं ।
तेसऽसती आलोए, चड्डग कुरुयाइ णो छण्णे ॥२३६६॥

जत्थ सड्ढो य सड्ढी य उभयं पि अप्पसागारियं तत्थ भत्तट्ठं करेंति, असती [3]एगतरोयविते, इयरग्गहणेण [4]अणोयविएवि, असति अहाभद्दएसु वा, एतेसिं असतीए अडवीए असंकणिज्जे घणदरट्ठाणे वज्जेंता, आलोए पगासे भत्तट्ठं करेंति, चारिगादिसंकाए णो छण्णे करेंति । सचित्तो सेहो जइ को ति पव्वाइउं ठाति तस्स पडिसेहो, न पव्वावेंति । अह कोइ काउं लिंगं पविसति, ताहे भणंति – अम्हे गया णामंकिया दारेण णिग्गता, तं जइ तुमे वेप्पसि तो अवस्सं मारिज्जसि, दारे गणिया पुच्छिया भणंति – ण जाणामो कोइ एस त्ति, पविसंता भणंति दारिट्ठं "अम्हे ते चेव इमे दिट्ठरूवे करेसि" ॥२३६६॥

भत्तट्ठितऽपाहाडा, पुणरवि घेत्तुं अतिंति पज्जत्तं ।
अणुसट्ठी दारिट्ठे, अण्णे वऽसती य जं अंतं ॥२४००॥

एवं भत्तट्ठिया तद्दूणे भायणे पुणरवि पज्जत्तं घेत्तुं अतिंति, जति दारपालो मग्गति वा ण वा पवेसं देति, रुद्धेसु जइ अण्णो कोइ अणुकंपाए देज्ज तत्थ अणुमती, ण वा वारिज्जति, अण्णदातारस्स वा असतीते तं जं अंतं पंतं दिज्जति ॥२४००॥

रुद्धे वोच्छिण्णे वा, दारिट्ठे दो वि कारणं दीवे ।
इहरा चारियसंका, अकाल ओखंदमादीसु ॥२४०१॥

अह णिग्गताण दारं रुद्धं स्थगितमित्यर्थः, गमागमो य वोच्छिण्णो, अब्भिंतरा साहू बाहिरा जे भिक्खाणिग्गया एते वि दो वि दारपालस्स भिक्खादि णिग्गमणकारणं दीवेंति । इहरा अकहीए साहू णिग्गता,

१ गा० २३६२ । २ दश० अ० ८ गा० २० । ३ परिकर्म्मित । ४ अपरिकर्म्मित ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ण ते पविट्ठा, णूणं ते चारिया आगता आसी, जे ते साहू णिग्गता ते ण पविट्ठा, णूणं तेहिं एस उक्खंद ओकड्डिओ ।।२४०१।।

बाहिं तु वसितुकामं, अतिणेति पेल्लिया अणिच्छंतं ।
गुरुगा पराजय जए, बितियं रुद्धे व वोच्छिण्णे ।।२४०२।।

भिक्खट्ठताणिग्गताण जइ कोइ साहू बाहि वसित्तुमिच्छति तं पि ते सहाया बला पवेसंति । एगे अणेगे वा णिक्कारणे बाहिं वसते चउगुरुगा । अब्भिंतररिल्लाण पराजय-जए अणेगे दोसा भवंति । बितियपदेण सव्वं णित्थरं णगरं रुद्धं, गमनागमो वोच्छिण्णो, एवं अपविसंतो दारिट्ठे वा अणिवेदेंते सुद्धो ।।२४०२।। एवं रोहकारणे – इत्थीहिं सह विहारादि पदा हवेज्ज । "रोधगे" त्ति दारं गतं ।

इदाणिं "[1]अद्धाणे" त्ति अद्धाणे जत्थ सपच्चवायं । तत्थ जति संजतीतो सत्थेणं पधाविता तत्थ सत्थे जति बोधियतेणाइभयं हवेज्ज तत्थ गमणे, रातो वा सुवंताणं, इमा जयणा –

मज्झम्मि य तरुणीओ, थेरीओ तासि होंति उभयंतो ।
थेरि बहिट्ठा खुड्डी, खुड्डिबहिट्ठा भवे थेरा ।।२४०३।।

थेरबहिट्ठा खुड्डा, खुड्डबहिट्ठा उ होंति तरुणा उ ।
दुविधम्मि वि अद्धाणे, सपच्चवायम्मि एस गमो ।।२४०४।।

तरुणीओ मज्झे कीरंति, तासिं पिट्ठतो अग्गओ य थेरीओ हवंति, तासिं उभयंते थेरा, थेराणं उभयंते खुड्डा, तेसिं उभयंतो तरुणा, दुविधं अद्धाणं – पंथो मग्गो य । तम्मि सपच्चवाए एस गमो भणितो। एवं अद्धाणे वा इत्थीहिं सद्धिं विहारादिया पदा भवे । दारं ।।२४०४।।

इदाणिं "[2]संभम भय वासं" तिण्णि वि दारा एगगाहाए दंसेति –

आऊ अगणी वाऊ, तेणग रट्ठादि संभमो भणितो ।
बोहियमेच्छादिभए, गोयरचरियाए वासेणं ।।२४०५।।

आऊमादिया संभमा, बोहियमेच्छादिभयं । गोयरं अडंता वासेण अब्भहता एगणिलए वि होज्जा ।।२४०५।।

जलसंभमे थलादिसु, चिट्ठंताणं भवेज्ज चउभंगो ।
एगतरुवस्सए वा, वूढगलंते व सव्वत्तो ।।२४०६।।

एगो एगित्थीए समं हवेज्ज, आउक्कायसंभमेणं उदगवाहगे थले एगं उण्णयं थलं पव्वयं डोगरं वा, तत्थ चिट्ठंताणं चउभंगसंभवो हवेज्ज । जलसंभमे वा खेताओ खेत्तं संकमेज्ज । एत्थ वि चतुभंगसंभवो । एगतरवसधीए वा वूढाए जाव अन्ना वसधी न लब्भति ताव चतुभंगसंभवो, सव्वओ वा एगपक्खस्स वसधी गलति, एवं पि एगट्ठिताण चउभंगो ।।२४०६।।

एगतरझामिए उवस्सयम्मि डज्झेज्ज वा वि मा वसधी ।
ऐमेव य वातम्मि वि, तेणभया वा णिलुक्काणं ।।२४०७।।

---

१ गा० २३४६ । २ गा० २३४६ ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

संजत-संजतीण एगतरस्स झामिता वसधी । वसहिसंरक्खट्ठा वा ताण वसधि गता । झामित-वसधिए वा खेत्ताओ खेत्तं संकामिज्जंति । एवं वाते वि चउभंगसंभवो हवेज्ज । तेणगभएण वा गुविले चउभंगसंभवेण णिलुक्का अच्छंति ॥२४०७॥

भोइयमाइविरोधे, रट्ठादीणं तु संभमे होज्जा ।
बोहिय-मेच्छभए वा, गुत्तिणिमित्तं च एगत्थ ॥२४०८॥

भोइयस्स भोइयस्स विरोहो, एवं गामस्स गामस्स य, रट्ठस्स रट्ठस्स य, एरिसे संभमे चउभंग-संभमो हवेज्ज । बोहियमेच्छभएण पलायाण चउभंगसंभवेन विहारसज्झाय असणादिया, उच्चारादिमा वा एगत्थ णिलुक्काण संभवो हवेज्ज, गुत्ति वा रक्खणं करेंताण संभवेज्जा ॥२४०८॥

पुव्वपविट्ठेगतरे, वासभएणं विसेज्ज अण्णतरो ।
तत्थ रहिते परंमुहो, ण य सुण्णे संजती ठंति ॥२४०९॥

वासासु वासावासे पडंते संजतो संजती वा किं चि णिव्वोवगिं ठाणं पविट्ठं हवेज्ज, पच्छा इयरं पविसिज्ज । तत्थ जणविरहिते दो वि परोप्परं परंमुहा अच्छंति, सज्झायजुत्ता य । सुट्ठु वि वासे पडंते संजती सुण्णट्ठाणे णो पविसति । दारं ॥२४०९॥

इदाणिं "[1]खंतिमाईण णिक्खमणे" त्ति –

कारण एग मडंबे, खंतिगमादीसु मेलणा होज्ज ।
पव्वज्जमब्भुपगमे, अप्पाण चउव्विहा तुलणा ॥२४१०॥

असिवादिकारणेण एगागिओ छिण्णमडंबं गतो हवेज्ज, तत्थ य "खंतियमादी" असंकणित्थी मिलेज्ज, सा य पव्वज्जब्भुवगमं करेज्ज, ततो अप्पाणं चउव्विहाए दव्व-खेत्त-काल-भावतुलणाए तुलेति ॥२४१०॥

एसेव अत्थो इमाहिं गाहाहिं भण्णति –

असिवादिकारणगतो, वोच्छिण्णमडंब संजतीरहिते ।
कहिता कहित उवट्ठिय, असंकइत्थीसिमा जयणा ॥२४११॥

अड्ढाइय जोयणब्भंतरे जस्स अण्णं वसिमं णत्थि तं छिण्णमडंबं सा असंकणिज्जत्थी धम्मे कहिते अकहिते वा पव्वज्जं उवट्ठिता, तत्थिमा जयणा अप्पणो दव्वतो तुलणा ॥२४११॥

इमा तुलणा–

आहारादुप्पादण, दव्वे समुतिं व जाणते तीसे ।
जति तरति णित्तु खेत्ते, आहारादीणि वऽद्धाणे ॥२४१२॥

दव्वतो जति आहारं उवहि सेज्जं वा तरति उप्पाएतुं, समुइ णाम-जो तीसे सभावो भुक्खालू सीयालू । जति य तं पढमालियादि संपाडेउं सक्केति, महुरादि पाणगं वा एयाणि उप्पाएउं सक्केति, ततो पव्वावेति । खेत्ततो जइ अद्धाणं णेउं तरति, जति य अद्धाणे आहारादी उप्पाएउं सत्तो ॥२४१२॥

---

१ गा० २३४९।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

गिम्हातिकालपाणग, णिसिगमणोमेसु वा वि जति सत्तो ।
भावे कोधादि जई, गाहे णाणे य चरणे य ।।२४१३।।

कालतो जति गिम्हकाले रिउक्खमं पाणगं पदायवसही य आदिसद्दातो सीतकालादिसु य जं तम्मि रिउम्मि दुल्लभं तं जति उप्पाएतुं सत्तो, रातो वा जति सत्तो णेउं, श्रोमे वा जंते आहारुप्पादणं काउं सत्तो, भावे जति अप्पणो कोहादियाणं जयं काउं सत्तो, रत्तस्स वा जयं कारावेउं सत्तो । णाणचरणाणि वा जति सत्तो अणिव्वेएण गाहेउं, चक्कवालसामायारिं च गाहेउं जइ सत्तो ।।२४१३।।

गुरु गणिणिपादमूलं, एवमपत्ताए अप्पतुलणाए ।
आवकधसमत्थो वा, पव्वावे एतरे भयणा ।।२४१४।।

जो वा जावज्जीवं समत्थो वट्टावेउं सो णियमा पव्वावेति, इयरो असमत्थो य, तस्स भयणा । जइ से अण्णो वट्टावगो अत्थि तो पव्वावेति । अह नत्थि न पव्वावेइ । एसा भयणा ।।२४१४।।

अब्भुज्जतमेगतरं, पडिवज्जिउ कामो सो वि पव्वावे ।
गण गणि सलद्धिते उ, एमेव अलद्धिजुत्तो वि ।।२४१५।।

अब्भुज्जियमरणं परिण्णादि, अब्भुज्जिय-विहारो जिणकप्पादि । एयं एगतरं अब्भुज्जतिविहारं पडिवज्जितुकामो । इत्थिया य उवट्ठिया पव्वज्जं । जति अण्णो गणे गणी सलद्धी अत्थि तीसे परियट्टियव्वा ते । ताहे तं तस्स अप्पेउं अप्पणा अब्भुज्जविहारं पडिवज्जति । अह णत्थि अण्णो वट्टावगो ताए णो अब्भुज्जय-विहारं पडिवज्जइ । तं परियट्टति । किं कारणं ? अब्भुज्जियविहारातो तस्स विधिपरियट्टणे बहुतरिया णिज्जरा । अलद्धिजुत्तो वि अण्णवट्टावगसंभवे पव्वावेति, इयरहा णो ।।२४१५।।

पव्वावणिज्ज-तुलणा, एमेवित्थ तदिक्खणा होति ।
अविदित-तुलणा उ परे, उवट्ठित-तुलणा य आतगता ।।२४१६।।

जो पव्वावणिज्जो तस्स वि एसेव दव्वादिया चउव्विहा तुलणा कज्जति ।

चोदग आह – जति ता तस्स माता वा भगिणी वा तो सो तस्सा समुई जाणाति चेव, किं तुलिज्जति ?

उच्यते – कताइ सो खुड्डुलओ चेव तेसिं मज्झाओ फिडितो तो न जाणइ, एवं परे अविदिते तुलणा भवति । जस्स पुण सुह-दुह-कोहादिया समुती णज्जति तस्स नत्थि तुलणा । तम्मि उवट्ठिते आयतुलणा भवति ।।२४१६।।

तस्स पव्वावणिज्जस्स इमा तुलणा भवति –

[1]पारिच्छ पुच्छमण्णह, कायाणं दायणं च दिक्खा य ।
तत्थेव गाहणं पंथे, णयणं अप्पाय इत्तरिया ।।२४१७।।

अस्य विभाषा –

पेज्जाति पातरासे, सयणासणवत्थ पाउरणदव्वे ।
दोसीण दुब्बलाणि य, सयणादि असक्कता एण्हिं ।।२४१८।।

---

१ ववखा गा० २४२५ परीक्षाद्वारम् ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

परिच्छा णाम तुलणा । सा भण्णति –

पुव्वं तुममन्नहा दव्वादिएसु उचिया, इयाणिं पव्वतियाए अण्णहा ।

पुव्वं अणुप्पए खीरादिपेज्जाओ इत्थिया (इच्छिया) पायरासा-पढमालिय त्ति वुत्तं भवति, इदाणिं सा णत्थि मज्झण्हे भिक्खं अडित्ता पारेयव्वं । उदुबद्धे सयणभूमीए, इक्कड कढिणादिसंथारगेसु वासासु आसणं ।

पुव्वं आसंसादिसु. इदाणिं उडुबद्धाए णिसज्जाए वासासु णं संथारग-भिसिगादिएसुं ।

पुव्वं तुज्झ वत्थपाउरणा महद्धणमुल्ला सण्हा य आसि, इयाणिं ते अमहद्धणमुल्ला थूलकडा य ।

पुव्वं ते रुप्प-सुवण्णादिसु भोयणं, इदाणिं ते लाउ-कमढादिसु ।

आहारो वि ते पुव्वं णेहावगाढे रिउक्खमो अणुकूलो य, इदाणिं ते वोसीणो णिब्बलो असंस्कृतः । एण्हिं सयणादिया वि असंस्कृता । "एण्हिं" ति-इयाणिं ॥२४१८॥

पडिकारा य बहुविधा, विसयसुहा आसि तेण पुण एण्हिं ।
चंकमणण्हाण धुवणा, विलेवणा ओसहाइं च ॥२४१९॥

पडियारा णाम सरीरसंस्कारा, चंकमणादि विविधरोगोवसमणियओसहाणि । एवं दव्वे गतं ॥२४१९॥

इमं खेत्ते –

अद्धाण दुक्ख सेज्जा, सरेणु तमसा य वसधिओ खित्ते ।
परपातेसु गयाणं, वुत्थाण व उदु-सुहघरेसु ॥१४२०॥

मासकप्पे पुण्णे अद्धाणं णिरणुवाणएहिं । दुक्खकारियाओ सेज्जाओ रेणुकज्जवाओ, अजोतिकडाओ तमसाओ, एवं पव्वज्जाए । गिहवासे पुण तुमं सिवियादिएहिं आसादिएहिं जाणेहिं उदए वातणिवातेसु य हरितोवलित्तेसु य ऊसिता, कहं पव्वज्जाए धितिं करेज्जह ? ॥२४२०॥

आहारादुवभोगो, जोग्गो जो जम्मि होइ कालम्मि ।
सो अण्णहा ण य णिसिं, अकालऽजोग्गो य हीणो य ॥२४२१॥

आहारादिओ उवभोगो जो जम्मि काले जोग्गो सो पव्वज्जाकाले अण्णहा विवरीतो । णिसिं च जावज्जीवं ण भोत्तव्वं, दिया वि वेलातिक्कमे लब्भते, अजोग्गो अणणुकूलो, सो वि हीणो ओमो-दरियाए ॥२४२१॥

एण्हिं भावे –

सव्वस्स पुच्छणिज्जा, ण य पडिकूलेइ सइरमुइतत्था ।
खुड्डी वि पुच्छणिज्जा, चोदण-फरुसादिया भावे । २४२२॥

गिहवासे राओ पच्चुट्ठिता मुहसलिलादिएहिं सव्वस्स पुच्छणिज्जा आसी, गिहवासे ण ते कोति

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पडिकूलं करेति, आगमगमादिएहिं य "सतिर" मिति सेच्छा, "उदित" मिति भाविया, इदाणीं ते खुड्डी त्ति पुच्छिगिज्जा। असामायारिकरणे फरुसवयणेहिं चोतिज्जिहिसि। सव्वं सोढव्वं ॥२४२२॥

इमं संखेवश्रो भण्णति –

जा जेण व तेण जधा, व लालिता तं तहण्णहा भणति ।
सोताइ-कसायण य, जोगाण य णिग्गहो समिती ॥२४२३॥

सुहभाविता अण्णहा भण्णति, ण दुक्खभाविता। सोयादिमिंदियाणं सदा णिग्गहो कायव्वो, कोहादिकसाया जेयव्वा, मणादि अप्पसत्थाण जोगाण णिग्गहो कायव्वो, इरियादिसमितीसु अ सदा समियाए होयव्वं ॥२४२३॥

इयाणिं "[1]कायाणं" ति –

आलिहण-सिंच-तावण-, वीयण-दंत-धुवणादिकज्जेसु ।
कायाणाणुवभोगो, फासुगभोगो परिमितो य ॥२४२४॥

पुढविकाए णो आलिहण विलीहणादी कायव्वा, आउक्काए सिंचणादि, अगणीए तावणादि, वाते वीयणादि, वणस्सतीए दंतधावणादी, एवमादिसु कज्जेसु णणुवभोगो, जो भोगो सो फासुएण, तेण वि परिमितेण ॥२४२४॥

अब्भुवगता य लोश्रो, कप्पट्ठग लिंगकरण दावणता ।
भिक्खग्गहणं कहेति व, णेति वहं ते दिसा तिण्णि ॥२४२५॥

एवं सव्वं अब्भुवगच्छति जइ तो से लोचो कज्जति। [2]दावणं च दिक्खाए त्ति, जो साधू कप्पट्ठगस्स नियंसेति, एवं से परिहरणलिंगकरणं दाइज्जति "[3]तत्थेव" त्ति छिण्णमंडवे, अप्पणो समीवे गहणासेवणसिक्खं गाहेति, उग्गमादि विसुद्धभिक्खागहणं च कारेति, पंथं व णेति, संबद्धइत्थिसहिएण असंबंधिइत्थीहिं वा पुरिसमीसेण वा संबंधिपुरिससत्थेण वा असंबंधेहिं वा भद्दगेहिं-जाव-गुरुसमीवं पत्ता ता "[4]इत्तर" दिसाबंधं करेति। इमं, अहं ते दिसा तिन्नि – अहं ते आयरिओ, अहं ते उवज्झाओ, पवत्तीण य। गरुसमीवं पुण पत्ताए गुरू वाहिति। एवं बितियपदे एगे एगित्थीए सद्धिं चउभंगसंभवं इत्यर्थः ॥२४२५॥

जे भिक्खू उज्जाणंसि वा उज्जाण-गिहंसि वा उज्जाण-सालंसि वा निज्जाणंसि वा निज्जाण-गिहंसि वा निज्जाण-सालंसि वा एगो एगाए इत्थीए सद्धिं विहारं वा करेति, सज्झायं वा करेति, असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा आहारेति, उच्चारं वा पासवणं वा परिट्ठवेति, अण्णयरं वा वा अणारियं पिहुणं अस्समण-पाओग्गं कहं कहेति,
कहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२॥

जे भिक्खू अट्टंसि वा अट्टालयंसि वा चरियंसि वा पागारंसि वा दारंसि वा गोपुरंसि वा एगो एगाए इत्थीए सद्धिं विहारं वा करेति, सज्झायं वा

१ गा० २४१७। २ गा० २४१७। ३ गा० २४१७। ४ गा० २४१७।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

करेति, असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा आहारेति, उच्चारं वा पासवणं वा परिट्ठवेति, अण्णयरं वा अणारियं पिहुणं अस्समण-पाउग्गं कहं कहेति, कहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३॥

जे भिक्खू दगंसि वा दग-मग्गंसि वा दग-पहंसि वा दग-तीरंसि वा दग-ट्ठाणंसि वा एगो एगाए इत्थीए सद्धिं विहारं वा करेइ, सज्झायं वा करेइ, असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा आहारेति, उच्चारं वा पासवणं वा परिट्ठवेति, अण्णयरं वा अणारियं पिहुणं अस्समण-पाउग्गं कहं कहेति, कहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४॥

जे भिक्खू सुण्ण-गिहंसि वा सुण्ण-सालंसि वा भिन्न-गिहंसि वा भिन्न-सालंसि वा कूडागारंसि वा कोट्ठागारंसि वा एगो एगाए इत्थीए सद्धिं विहारं वा करेइ, सज्झायं वा करेइ, असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा आहारेति, उच्चारं वा पासवणं वा परिट्ठवेति, अण्णयरं वा अणारियं [1]पिहुणं अस्समण-पाउग्गं कहं कहेति, कहेंतं वा सातिज्जति॥सू०॥५॥

जे भिक्खू तण-गिहंसि वा तण-सालंसि वा तुस-गिहंसि वा तुस-सालंसि वा छुस-गिहंसि वा छुस-सालंसि वा एगो एगाए इत्थीए सद्धिं विहारं वा करेइ, सज्झायं वा करेइ, असणं वा पाणं खाइमं वा साइमं वा आहारेति, उच्चारं वा पासवणं वा, परिट्ठवेति, अण्णयरं वा अणारियं [2]पिहुणं अस्समण-पाउग्गं कहं कहेति, कहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६॥

जे भिक्खू जाण-सालंसि वा जाण-गिहंसि वा जुग्ग-सालंसि वा जुग्ग-गिहंसि वा एगो एगाए इत्थीए सद्धिं विहारं वा करेइ, सज्झायं वा करेइ, असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा आहारेइ, उच्चारं वा पासवणं वा परिट्ठवेति, अण्णयरं वा अणारियं पिहुणं अस्समण-पाउग्गं कहं कहेति, कहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७॥

जे भिक्खू पणिय-सालंसि वा पणिय-गिहंसि वा परिया-सालंसि वा परिया-गिहंसि वा [3]कुविय-सालंसि वा कुविय-गिहंसि वा एगो एगाए इत्थीए सद्धिं विहारं वा करेइ, सज्झायं वा करेइ, असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा आहारेति, उच्चारं वा पासवणं वा परिट्ठ-

---

१ निट्ठुरं । २ निट्ठुरं । ३ कंमियसालंसि वा ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

**अण्णयरं वा अणारियं पिहुणं अस्समण-पाउग्गं कहं कहेति,
कहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥८॥**

जे भिक्खू गोण-सालंसि वा गोण-गिहंसि वा महा-कुलंसि महा-गिहंसि वा एगो एगाए इत्थीए सद्धिं विहारं वा करेइ, सज्झायं वा करेइ, असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा आहारेति, उच्चारं वा पासवणं वा परिट्ठवेति, अन्नयरं वा अणारियं पिहुणं अस्समण-पाउग्गं कहं कहेइ, कहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥९॥

उज्जाणं जत्थ लोगो उज्जाणियाए वच्चति, जं वा ईसि णगरस्स उवकंठं ठियं तं उज्जाणं ।

रायादियाण णिग्गमणट्ठाणं णिज्जाणिया, णगरणिग्गमे जं ठियं तं णिज्जाणं एतेसु चेव गिहा कया उज्जाण – णिज्जाणगिहा ।

नगरे पागारो तस्सेव देसे अट्टालगो ।

पागारस्स अहो अट्ठहत्थो रहमग्गो चरिया ।

बलाणगं दारं, दो बलाणगा पागारपडिबद्धा । ताण अंतरं गोपुरं ।

जेण जणो दगस्स वच्चति सो दग-पहो दग-वाहो दग-मग्गो दग-ब्भासं दग-तीरं ।

सुण्णं गिहं सुण्णागारं ।

देसे पडियसडियं भिण्णागारं ।

अधो विसालं उवरुवरिं संवट्टितं कूडागारं ।

धन्नागारं कोट्ठागारं ।

दब्भादितणट्ठाणं अधोपगासं तणसाला ।

सालिमादि-तुसट्ठाणं तुस-साला, मुग्गमादियाण तुसा ।

गोकरीसो गोमयं, गोणादि जत्थ चिट्ठंति सा गोसाला, गिहं च ।

जुगादि जणाण अकुड्डा साला सकुड्डं गिहं ।

अस्सादिया वाहणा, ताणं साला गिहं वा ।

विक्केयं भंडं जत्थ छूढं चिट्ठति सा साला गिहं वा ।

पासंडिणो परियागा, तेसि आवसहो साला गिहं वा ।

छुहादिया जत्थ कम्मविज्जंति सा कम्मंतसाला गिहं वा ।

मह पाहन्ने बहुत्ते वा, महंतं गिहं महागिहं, बहुसु वा उच्चारएसु महागिहं ।

महाकुलं पि इब्भकुलादी पाहण्णे बहुजणआइण्णं बहुत्ते ।

इमा सुत्तसंगहगाहा –

**उज्जाणऽट्टाल दगे, सुण्णा कूडा व तुस भुसे गोमे ।
गोणा जाणा पणिगा, परियाग महाकुले सेवं ॥२४२६॥**

एवं जहा पढमसुत्ते । एवं एतेसु उस्सग्गाववातेण चउभंगसंभवो वत्तव्वो ॥२४२६॥

४५

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इमं "[1]उज्जाणवक्खाणं" –

सभमादुज्जाणगिहा, णिग्गमणगिहा वणियमादिणं इयरे ।
नगरादिनिग्गमेसु य, सभादि निज्जाणगेहा तु ॥२४२७॥

इयरे त्ति णिज्जाणे, वणियमादिया णिग्गमगहियं कयं णिज्जाण – गिहं ।

अहवा – पच्छद्धेणं बितियं वक्खाणं ॥२४२७॥

सालागिहाण इमो विसेसो –

साला तु अहे वियडा, गेहं कुड्डसहितं तुऽणेगविधं ।
वणिभंडसाल परिभिक्खुगादिमहवहुगपाहणे ॥२४२८॥

पणियसाला पणियवसवो, महाकुलं पच्छद्धेण व्याख्यातं ।

जे भिक्खू राओ वा वियाले वा इत्थि-मज्झगते इत्थि-संसत्ते इत्थि-परिवुडे अपरिमाणाए कहं कहेइ, कहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१०॥

संझा राती भणिता, संझाए उ विगमो वियालो तु ।
केसिं ची वोच्छत्थं, पच्छण्णतरे दुविधकाले ॥२४२९॥

रातीति राती संज्ञा, तीए विगमो वियालो ।

अधवा – जंसि काले चोरादिया रज्जंति सा राती संझावगमेत्यर्थः, ते च्चिय जम्मि काले विगच्छंति सो वियालो संझेत्यर्थः ॥२४२९॥

इत्थीणं मज्झम्मी, इत्थी-संसत्तेपरिवुडे ताहिं ।
चउ पंच उ परिमाणं, तेण परं कहंत आणादी ॥२४३०॥

इत्थीसु उभओ ठियासु मज्झं भवति उरुकोप्परमादीहिं संघट्टंतो संसत्तो भवति, दिट्ठीए वा परोप्परं संसत्तो, सव्वतो समंता परिवेढिओ परिवुडो भण्णति । परिमाणं - जाव - तिण्णि चउरो पंच वा वागरणानि, परतो छट्ठादि अपरिमाणं कहं कहेंतस्स चउगुरुगं आणादिया य दोसा ॥२४३०॥ एस सुत्तत्थो ।

इदाणिं णिज्जुत्ती –

मज्झं दोण्हंतगतो, संसत्तो ऊरुगादिघट्टंतो ।
चतुदिसिठिताहि परिवुडो, पासगताहि व अफुसंतो ॥२४३१॥

अहवा – एगदिसिठियाहिं वि अफुसंतीहिं परिवुडो भण्णति ॥२४३१॥

दुविधं च होति मज्झं, संसत्तो दिट्ठि दिट्ठि अंतो वा ।
भावो वि तासु णिहतो, एमेवित्थीण पुरिसेसु ॥२४३२॥

---

१ गा० २४२६ ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

च सड्ढाओ संसत्तं पि दुविधं – ऊरुगादिघट्टंतो संसत्तो दिट्ठीए वा, इत्थीण वा मज्झे, दिट्ठीण वा मज्झे ।

अहवा – संसत्तस्स इमं वक्खाणं – तेण तासु भावो णिहृतो णिवेसितो, ताहिं वा तम्मि णिसेवितो, परस्परं गृद्धानीत्यर्थः ॥२४३२॥

इमे दोसा –

इत्थीणातिसुहीणं, अचियत्तं आसि आवणा छेदो ।
आत-पर-तदुभए वा, दोसा संकादिया चेव ॥२४३३॥

इत्थीणं जे णायओ भाया पिया पुत्त भच्चयमादी ताण वा जे सुही मित्ता एतेसिं अचियत्तं हवेज्ज, अचियत्ते वा उप्पण्णे दिया असिवावेंति डक्क । रातो डक्का । तेसिं अण्णेसिं वा नसहिमादियाणं वोच्छेदं करेज्ज आय-पर-उभयसमुत्थाणा एक्कतो मिलियाण दोसा हवेज्ज । अह संकंति एते रातो मिलिता किं पुण अणायारं करेज्ज, संकिते चउगुरुं, णिस्संकिते मूलं । गेण्हणादिया दोसा तम्हा णो रातो इत्थीणं धम्मो कहेयव्वो॥२४३३॥

भवे कारणं –

बितियपदमणप्पज्झे, णातीवग्गे य सण्णिसेज्जासु ।
णाताचारुवमग्गे, रण्णो अंतेपुरादीसु ॥२४३४॥

अणवज्झो वा णातिवग्गं वा सो चिरस्स गतो ताहे भणेज्ज – रत्तिधम्मं कहेह, ताहे सो कहेज्ज – वरं; कोइ धम्मं पव्वज्जं वा पडिवज्जेज्ज । सावग-सेज्जातर-कुलेसु वा असंकणिज्जेसु अदुट्ठसीलेसु वा णायायारेसु । उवसग्गो वा जहा अंतेपुरे अभिवुत्तो ।

अहवा – राया भणेज्ज – अंतेपुरस्स मे धम्मं कहेह, ताहे अक्खेज्ज ॥२४३४॥

तत्थिमं विधाणं –

णच्चासण्णम्मि ठिओ, दिट्ठिमबंधंतो ईसि व किढीसु ।
वेरग्गं पुरिसविमिस्सियासु किढिगाजुयाणं वा ॥२४३५॥

णासण्णे ठितो, भण्णइ य – दूरे ठायह, मा य मे संघट्टेह, तासु दिट्ठिं अबंधंतो ईसि वुड्ढासु दिट्ठी बंधेंतो वेरग्गकहं कहेति, पुरिसविमिस्साण वा कहेति ।

अहवा – सव्वा इत्थीओ ताहे थेरविमिस्साण कहेति ॥२४३५॥

जे भिक्खू सगणिच्चियाए वा परिणिच्चियाए वा णिग्गंथीए सद्धिं गामाणुग्गामं दूइज्जमाणे पुरओ गच्छमाणे पिट्ठओ रीयमाणे ओहयमणसंकप्पे चिंता-सोय-सागरसंपविट्ठे करतलपल्हत्थमुहे अट्टज्झाणोवगए विहारं वा करेइ, सज्झायं वा करेइ, असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा आहारेइ, उच्चारं वा पासवणं वा परिट्ठवेइ, अण्णयरं वा अणारियं पिहुणं अस्समण-पाउग्गं कहं कहेइ, कहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥११॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

स-गणिच्चया स-सिस्सिणि, अधवा वि स-गच्छवासिणी भणिता ।
पर-सिस्सिणि पर-गच्छे, णायव्वा पर-गणिच्चीओ ॥२४३६॥

सगणिच्चिया, ससिस्सिणी वा, सगच्छवासिणी वा। परसिस्सिणी वा, परगणवासिणी वा परिगणिच्चिया ॥२४३६॥

पुरतो व मग्गतो वा, सपच्चवाते अपच्चवाते य ।
वच्चंताणं तेसिं, चउक्कभयणा अवोच्चत्थं ॥२४३७॥

पुरतो अग्गतो ठितो साहू वच्चति ।

अहवा – पिट्ठतो मग्गतो ठितो साधू वच्चति ॥२४३७॥

एत्थ चउभंगो इमो –

पुरतो वच्चति साधू, अधवा पिट्ठेण एत्थ चउभंगो ।
अहव ण पुरओऽवाओ, पिट्ठे वा एत्थ वा चतुरो ॥२४३८॥

पुरतो साधू वच्चति णो मग्गतो । णो पुरतो मग्गओ वच्चति ।
बहूसु पुरतो वि मग्गतो वि । णो पुरतो णो मग्गतो पक्खापक्खी सुण्णो वा ।

अहवा – इमो चउभंगो –

पुरतो सावायं, णो पिट्ठतो । णो पुरतो, पिट्ठतो सावायं ।
पुरतो वि सावायं, पिट्ठतो वि सावातं । णो पुरतो णो पिट्ठतो सावातं ।
णिब्भए "[1]अव्वोच्चत्थं" गंतव्वं – पुरओ साधू, पिट्ठतो संजतीतो ॥२४३८॥

भयणपदाण चतुण्हं, अण्णतरातेण संजतीसहिते ।
ओहतमणसंकप्पो, जो कुज्ज विहारमादीणि ॥२४३९॥

संजतिसहिओ जति ओहियमणसंकप्पो विहरति छुक्का ॥२४३९॥

सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त-विराधणं तथा दुविधं ।
पावति जम्हा तेणं, एते तु पदे विवज्जेज्जा ॥२४४०॥

सो पुण किं ओहयमणसंकप्पो विहरति ? भण्णति –

अद्धितिकरणे पुच्छा, किं कहितेणं अणिग्गहसमत्थे ।
दुक्खमणाए किरिया, सिट्ठे सत्तिं ण हावेस्सं ॥२४४१॥

ताओ ओहयमणसंकप्पं दट्ठुं पुच्छंति, जेट्ठज्जो ? किं अधितिं करेह ?

ताहे संजतो भणेज्जा – जो णिग्गहसमत्थो ण भवति तस्स किं कहिएण ?

ताहे संजतीओ भणंति – "दुक्खे अणाते किरिया ण कज्जति, णाए पुण दुक्खपडियारो सोढा, अप्पणो सत्तिं ण हावेस्सं ॥२४४१॥

---

1 गा० २४३७ ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

एवं भणिते तह वि गारवेण अकहेंते संजतीतो इमं भणंति –

अम्ह वि करेति अरती, सुइतदुक्खं इमं असीसंतं ।
इति अणुरत्तं भावं, णातुं भावं पदंसेति ।।२४४२।।

असीसंतं अकहिज्जंतं । ताओ अणुगतभावाओ णाउं अब्भुट्ठधम्मो अप्पणो भावं दंसेति। आकारविकारं करेज्ज । एवं सपरोभय – समुत्था दोसा भवंति ।।२४४२।।

किं चान्यत् –

पंथे ति णवरि णेम्मं, उवस्सगादीसु एस चेव गमो ।
णिस्संकिता हु पंथे, इच्छमणिच्छे य वावत्ती । २४४३।।

निब्भमेत्तं णेमं ताण पुरतो, णो उवस्सए वि ओहियमणसंकप्पेण अच्छियव्वं, संजती जइ इच्छति ताहे चारित्रविराहणा, जइ णो इच्छइ ताहे संजयस्स आयविराहणा, चिंताए वेहाणसं करेज्ज ।।२४४३।।

कारणे –

बितियपदमणप्पज्झे गेलण्णुवसग्ग-दुविधमद्धाणे ।
उवधी सरीर-तेणग, संभस-भय-खेत्त संकमणे ।।२४४४।।

अणप्पज्झो ओहयमणसंकप्पो भवे ।।२४४४।।

गेलण्णे इमं –

पाउग्गस्स अलंभे, एगागि-गिलाण खंतियादिसु वा ।
डंडिगमाउवसग्गा, मुच्चेज्ज कधं च इति चिंता ।।२४४५।।

गिलाणपाउग्गं ण लब्भति ताहे अधिति करेज्ज । खंतियादिसु वा गिलाणीसु वा अधिति करेज्ज ।
उवसग्गे इमं – डंडिएण उवसग्गिजंतो उवसग्गिज्जंतीसु वा चिंतं करेज्ज, उवसग्गे डंडिएण अप्पणो संजतीण वा उवसग्गे कीरंति कहं मुचेज्जामो त्ति चित्तं करेज्ज ।।२४४५।।

"[1]उवही सरीरतेणग" त्ति अस्य व्याख्या –

उवधी सरीर चारित्त भाव मुच्चेज्ज किह णुहु अवाया ।
ववसायसहायस्स वि, सीयति चित्तं धितिमतो वि ।।२४४६।।

उवधीतेणगा सरीरतेणगा य । संजतीण वा चारित्ततेणगा । कहिं एतेहिंतो अविग्घेण णित्थरेज्ज । एरिसे कज्जे समत्थस्स वि चित्तं सीदति ।।२४४६।।

परिसंतो अद्धाणे, दवग्गिभयसंभमं च नाऊणं ।
वोहियमेच्छभए वा, इति चिंता होति एगस्स ।।२४४७।।

[2]अद्धाणे परिस्संतो तण्हा खुहत्तो वा अद्धाणं कहं णित्थरेज्ज । दगवाहसंभमे अग्गिसंभमे भयादिसंभमे वा चिंता भवति । वोहियमेच्छभएण वा चिंतापरो भवेज्ज ।।२४४७।।

---

१ गा० २४४४ । २ गा० २४४४ ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इदाणि "[1]खेत्तसंकमेण" त्ति दारं –

णिग्गंथीणं गणधर-परूवणा[1] खेत्तपेहणा[2] वसधी[3] ।
सेज्जातर[4] वीयारे[5], गच्छस्स[6] य आणणा दारा ॥२४४८॥

एरिसो संजतीणं गणधरो भवति –

पियधम्मे दढधम्मे, संविग्गेऽवज्ज ओयतेयंसी
संगहुवग्गह-कुसलो, सुत्तत्थविदू गणाधिपती ॥२४४६॥

पियधम्मो णामेगे णो दढधम्मे । एवं चउभंगो । ततियभंगिल्लो गणधरो । संविग्गो दव्वे भावे य । दव्वे मिगो, भावे साधू । संसारभउव्वग्गो मा कतो वि पमाएण छलिज्जीहामि त्ति सततोवउत्तो अच्छति । वज्जं पावं तस्स भीरू । ओयतेयस्सि त्ति ॥२४४६॥

आरोह-परीणाहो, चितमंसो इंदियाइऽपडिपुण्णो ।
अह ओयो तेयो पुण, होइ अणोत्तप्पता देहे ॥२४५०॥

उस्सेहो आरोहो भण्णति, वित्थारो परिणाहो भण्णति, एते जस्स दो वि तुल्ला, चियमंसो-बलियसरीरो, इंदियपडिपुण्णो णो विगलिंदिओ, ण चक्खुविगलादीत्यर्थः । अहेति – एस ओओ भण्णति । तेजो सरीरे । अणोत्तप्पत्ता "त्रपूष" लज्जायां (अ) लज्जनीयमित्यर्थः । वत्थादिएहिं जो [2]संगहकरो, ओसहभेसज्जेहिं उवग्गहकरो, क्रियापरो कुसलो, सुतत्थे जाणंतो विदू भण्णति । एरिसो गणाहिवती भण्णति ॥२४५०॥ गणधरपरूवणे त्ति दारं गतं ।

इदाणीं "[3]खेत्तपेहणे" त्ति दारं –

खेत्तस्स उ पडिलेहा, कायव्वा होइ आणुपुव्वीए ।
किं वच्चती गणधरो, जो वहती सो तणं चरइ ॥२४५१॥

खेत्तपडिलेहणकमो जो सो चेव आणुपुव्वी । संजतीणं खेत्तं संजतेहिं पडिलेहियव्वं णो संजनीहिं, तत्थ वि गणधरेण ।

चोदगाह – किं वच्चति गणधरो ?

उच्यते – जो वहती सो तणं चरति ।

एवं जो गणभोगं भुंजति सो सव्वं गणचिंताभरं वहति ॥२४५१॥

संजतिगमणे गुरुगा, आणादी सउणि-पेसि-पेल्लणता ।
तुच्छालोभेण य आसियावणादी भवे दोसा ॥२४५२॥

संजतीओ खेत्तपडिलेहगा गच्छंति, तो आयरियस्स चउगुरुं आणादिया य दोसा । जहा सउणी वीरल्लसउणस्स गंमा भवति, एवं ताओ वि दुट्ठगम्माओ भवंति । सव्वस्स अभिलसणिज्जा भवंति, मंसपेसि

१ गा० २४४४ । २ गा० २४४६ । ३ गा० २४४८ ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

व्व विसयत्थीहि य पेल्लिज्जंति। तुच्छं स्वल्पं, तेण वि लोभिज्जंति। आसियावणं हरणं, एवमादि दोसा भवंति ।।२४५२।।

तुच्छेण वि लोहिज्जति, भरुयच्छाहरण नियडिसड्ढेणं।
णिंतणिमंतण वहणे, चेइयरूढाण अक्खिवणं ।।२४५३।।

भरुयच्छे रूववतीतो संजतीओ दट्ठुं आगंतुगवणियओ णियडिसड्ढित्तणं पडिवण्णो, वीसंभिया गमणकाले पव्वत्तिगि विण्णवेति। वहणट्ठाणे मंगलट्ठाणंतादि विवत्तेमि, संजतीओ पट्ठवेह। पट्ठविया। वहणे चेइयवंदणट्ठा आरूढा। पयट्टियं वहणं। "अक्खिवणं" ति एवं हरणदोसा भवंति ।।२४५३।।

एमादिकारणेहिं, ण कप्पती संजतीण पडिलेहा।
गंतव्वं गणधरेणं, विहिणा जो वण्णितो पुव्विं ।।२४५४।।

पुव्व ति-ओहणिज्जुत्तीए। दारं।

इदाणिं [1]"वसहि" दारं -

घणकुड्डा सकवाडा, सागारिय भगिणिमाउ पेरंते।
णिप्पच्चवाय जोग्गा, विच्छिण्ण पुरोहडा वसधी ।।२४५५।।

[2]पक्किट्टगादि घणकुड्डा, सह कवाडेण सकवाडा, सेज्जातरमातुभगिणीणं जे घरे ते संजतिवसहीए पेरंतेण ठिता, दुट्ठतेणगादि पच्चवाया णत्थि, महंत पुरोहडा य ।।२४५५।।

णासण्ण णाइदूरे, विधवा-परिणतवयाण पडिसेवे।
मज्झत्थ विकाराणं, अकुतूहलभाविताणं च ।।२४५६।।

विहवा रंडा, प्रमहंता परिणतवया, मज्झत्था ण कंदप्पसीला, गीतादिविगाररहितातो, संजतीण भोयणादिकिरियासु अकोतुआ, धम्मे साधुसाधुणीहिं वा भाविता एरिसा पडिसेवे सवासिणीओ ।।२४५६।। वसहि त्ति गतं।

इयाणिं "[3]सेज्जायरे" त्ति दारं -

गुत्तागुत्तदुवारा, कुलपुत्ते सत्तिमंत गंभीरे।
भीत परिसमद्दविते, अज्जासेज्जायरे भणिता ।।२४५७।।

कुलपुत्ते ति तिण्णिपदा पढियसिद्धा ।।२४५७।।

सो य इमो-

भोइय-महयरमादी, बहुसयणो पेल्लओ[4] कुलीणो य।
परिणतवओ अभीरू, अणभिग्गहितो अकोहल्ली ।।२४५८।।

सत्तिमंतो महंतमवि पओयणं अज्ज वसही उप्पण्णे पओयणे अभिरू अणभिग्गहितमिच्छतो। सेसं कंठं ।।२४५८।।

१ गा० २४४८। २ पववेष्टकादि। ३ गा० २४४८। ४ पितओ पा०।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इयाणिं "[1]वीयारे" त्ति, अणावायमसंलोगादी चतुण्हं भंगाणं तेसिं कयमो पसत्थो ? तेसिं कि वियारभूमी ? अंतो पसत्था, बाहिं पसत्था ?

भण्णति –

वीयारे बहि गुरुगा, अंतो विय तइयवज्जते चेव ।
ततिए वि जत्थ पुरिसा, उवेंति वेसित्थियाओ य ॥२४५९॥

उस्सग्गेण संजतीणं अंतो वियारभूमी, जइ बाहिं वियारभूमी गच्छंति तो आयरियस्स चउगुरुं । अंतो ततियभंगे अणुण्णायं, तत्थ विही-अावातं अंतो वि सेसभगेसु चउगुरुं । ततिए वि जइ पुरिसा आवयंति वेसित्थियाओ य तहावि चउगुरुं ॥२४५९॥

जत्तो दुस्सीला खलु, वेसित्थि णपुंस हेट्ठ तेरिच्छा ।
सा तु दिसा पडिकुट्ठा, पढमा बितिया चउत्थी य ॥२४६०॥

परदाराभिगामी दुस्सीला हेट्ठोवासणहेउं जत्थ लोयकरा ठाअंति जत्थ य वाणरादि तिरिया बद्धा घिट्ठंति तत्थ इमे उवेंति ॥२४६०॥

चार भड घोड मेंठा, सोलग तरुणा य जे य दुस्सीला ।
उब्भामित्थी वेसिय, अपुमेसु य एंति तु तदट्ठी ॥२४६१॥

पंचालवट्टादि घोडा, सोला तुरगपरियट्टगा, उब्भामगवेमित्थिय अपुमेसु य तदट्ठिणो अण्णे वा आगच्छंति ॥२४६१॥

"[2]हेट्ठ" त्ति अस्य व्याख्या –

हेट्ठउवासणहेउं, णेगागमणम्मि गहण उड्डाहो ।
वानर मयूर हंसा, छगलग-सुणगादि-तेरिच्छा ॥२४६२॥

गुज्झदेसोवासणहेउं ते जति उदिण्णमोहा संजतिं गेण्हति तो उड्डाहो ।

"[3]तेरिच्छि" त्ति अस्य व्याख्या – 'वानर" पच्छद्धं । एते किल इत्थियं अभिलसंति ॥२४६२॥

जइ अंतो वाघातो, बहिया सिं ततियया अणुण्णाता ।
सेसा णाणुण्णाया, अज्ञाण वियारभूमीओ ॥२४६३॥

बहिया वि इत्थियावातो ततियभंगो, तो अणुण्णाओ ॥दारं॥२४६३॥

इदाणिं "[4]गच्छस्स आणण" त्ति दारं –

पडिलेहियं च खेत्तं, संजतिवग्गस्स आणणा होंति ।
णिक्कारणम्मि मग्गतो, कारण पुरतो व समगं वा ॥२४६४॥

जया खेत्ताओ खेत्तं संजतीतो संचारिज्जंति तदा णिब्भए णिराबाहे साधू पुरओ ठिता ताओ य

१ गा० २४४८ । २ गा० २४६० । ३ गा० २४६० । ४ गा० २४४८ ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मग्गतो ठिता आगच्छंति । भयातिकारणे पुण साधू पुरतो मग्गतो पक्खापक्खियं वा समंतओ वा ठिया गच्छंति ॥२४६४॥

णिप्पच्चवाय-संबंधि-भाविते गणधरप्पवितिय-ततिओ ।
णेति भए पुण सत्थेण, सद्धिं कतकरणसहितो वा ॥२४६५॥

संजतीण संबंधिणो जे संजता तेहिं सहितो गणवरो अप्पवितिओ अप्पततिओ वा णिप्पच्चवाए णेति । सपच्चवाए सत्थेण सद्धि णेति । जो वा संजतो सहस्सजोही सत्थे वा कयकरणो तेण सहितो णेति ॥२४६५॥

उभयट्ठातिणिविट्ठं, मा पेल्ले वइणि तेण पुरएगे ।
तं तु ण जुज्जति अविणय, विरुद्ध उभयं च जतणाए ॥२४६६॥

एगे आयरिया भणंति – पुरतो वि ठिया संजतीतो गच्छंतु ।

किं कारणं ? आह – काइयसण्णागिवेट्ठं संजयं मा वइणी पेल्लिहिति, सो वा वइणिं, तम्हा पुरओ गवछंतु ।" तं ण जुज्जति । कम्हा ? तासिं अविणतो भणति, लोगविरुद्धं च । तम्हा उभयं जयणाए करेज्ज ।

का जयणा ? जत्थ एगो काइयं सण्णं वोसिरति तत्थ सव्वे वि चिट्ठंति, ततो वि चिट्ठंते दट्ठुं मग्गतो चेव चिट्ठंति, ताओ वि पिट्ठतो सरीरचित्तं करेंति । एवं दोसा ण भवंति ॥२४६६॥

जे भिक्खू णायगं वा अणायगं वा उवासयं वा अणुवासयं वा अंतो उवस्सयस्स
अद्धं वा रातिं कसिणं वा रातिं संवसावेइ
संवसावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१२॥

"णायगो" स्वजनो, "अणायगो" अस्वजनः, "उवासगो" श्रावकः, इयरो अणुवासगो । "अद्ध" रातीए दो जामा, "वा" विकप्पेण एगं वा जामं, चउरो जामा कसिणा राती, वा विकप्पेण तिण्णि जामा । एगवसहिए संवासो "वसाहि" त्ति भणाति, अण्णं वा अणुमोदति । जो तं न पडिसेधेति, अण्णं वा अपडिसेधंतं अणुमोयति तस्स चउगुरु ।

णातगमणातगं वा, सावगमस्सावगं च जे भिक्खू ।
अद्धं वा कसिणं वा, रातिं तू संवसाणादी ॥२४६७॥

आणा अणवत्थिया दोसा ॥२४६७॥

साधुं उवासमाणो, उवासतो सो वती य अवती वा ।
सो पुण णातग इतरे, एवऽणुवासे वि दो भंगा ॥२४६८॥

साधुं उवासतीति उवासगो, थूलगपाणवहादिया वता जेण गहिता सो वती, इयरो अवती । सो दुविहो वि सयणो असयणो य । एवं अणुवासए वि दो भंगा । "भंगा" इति प्रकारा इत्यर्थः ।

इमं पुण सुत्तं इत्थि पडुच्च –

इत्थि पडुच्च सुत्तं, सहिरण्ण सभोयणे च आवासे ।
जति णिस्सागय जे वा, मेहुण-णिमिभोयणे कुज्जा ॥२४६९॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जइ इत्थी उवसग्गे संवसति, सइत्थीओ वा पुरिसो, अणित्थीओ वा सहिरण्णो, गहियभत्तपाणो जो, एते साधुवसहीए आवासेति, रातो साधुं वा पडुच्च आगता वसधिठिया मेहुणं करेंति. रातो वा भुंजति, एएसु सुत्तणिवातो ङ्का। एतद्दोसविप्पमुक्के पुरिसे ङ्क ॥२४६६॥

कहं पुण अद्धराइए एगं वा जामं तिण्णि वा जामा संभवंति ? –

जति पत्ता तु निसीधे, पए व णितेसु अद्धमण्णयरे ।
एगतरमुभयतो वा, वाघातेणं तु अद्धणिसिं ॥२४७०॥

जइ अड्ढरत्ते वा एगम्मि वा जामे गते तिहिं वा जामेहिं गतेहिं पत्ता हवेज्ज "एगतर" त्ति - गिहत्था संजता वा, "उभय" त्ति गिहत्था संजता य। एवं वाघायकारणेण वा अप्पणो वा रुतीए पए णिग्गच्छंताण अद्धणिस्सादि संभवो भवति ॥२४७०॥

गिहिणा सह वसंताणं इमे दोसा –

सागारिय अधिकरणे, भासादोसा य वालमातंके ।
आउय-वाघातम्मि य, सपक्ख-परपक्ख-तेणादी ॥२४७१॥

काइयसण्णावोसिरणे उदगस्स अभावे कारणतो मोयायमणेण वा पादपमज्जणे वा सागारियं भवति, आउज्जोवणवणियादिअधिकरणं।

अहवा – णिताणिते चलणादिसंघट्टिते 'अधिकरणं" कलहो हवेज्ज । जति संजतिभासाहिं भासंति तो गिहत्था गेण्हंति । अह गारत्थियभासाहिं भासति तो असंजतो वोलिति । सो गिहत्थो सप्पेण खइतो आयकेण वा मतो अधायुकालेण वा मतो ताहे संका ॥२४७१॥

किंचण अट्ठा एएहिं, घातितो गहण-दोस-गमणं वा ।
अण्णेण वा वि अवहिते, संका गहणादिया दोसा ॥२४७२॥

णूणं एयस्स गिहत्थस्स किंचणं आसि तं आयु संजएहिं उद्दविओ, गेण्हणादिया दोसा। "सपक्खे" त्ति कोइ सेहो असेहो वा अब्भुट्ठधम्मो तं हिरण्णं जागित्ता तं से हरिउं णासेज्जा । एयं गमणग्गहणं। "परपक्खे" त्ति सहिरण्णगं जागित्ता तं गिहत्थं अण्णो कोइ गिही हरेज्ज ताहे संजता संकिज्जंति । ताहे सो रायकुलं गंतुं कहेज्ज, संजएहिं मे हिरण्णं आसियावियं। तत्थ गेण्हणादिया दोसा। आदिग्गहणातो वा उभयं हरेज्ज ॥२४७२॥

जम्हा एते दोसा –

तम्हा ण संवसेज्जा, खिप्पं णिक्कामते तओ ते उ।
जे भिक्खू ण णिक्खामे, सो पावति आणमादीणि ॥२४७३॥

णिक्खमणं णिप्फेडणं, "ततो" त्ति आश्रयात्, ते इति गृहस्थाः साधूहिं वत्तव्वा "णिग्गच्छह" त्ति ॥२४७३॥

भवे कारणं –

बितियपदं गेलण्णे, पडिणीए तेण सावयभए वा ।
सेहे अद्धाणम्मि य, कप्पति जतणाए संवासो ॥२४७४॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

गिलाणट्ठा वेज्जो आणितो, पडिणीए वा उवद्दवेंते कोति. विइज्जो आणिज्जति। एवं तेणसा-वयभएसु वा सेहो वा जाव ण पव्वाविज्जति, अद्धाणीए वा सह आगतं ण णिक्खामे "अद्धाणपवण्णा वा समगं पविट्ठा" ।।२४७४।।

आगंतुगं तु वेज्जं, अण्णट्ठाणासती य संवसते।
पडिणीए तु गिहीणं, अल्लियति गिही व आणेति ।।२४७५।।

गतार्था। [1]जयणा जहा अधिकरण उड्डाहादी ण भवंति तहा जयंतीत्यर्थः ।।२४७५।।

जे भिक्खू णायगं वा अणायगं वा उवासयं वा अणुवासयं वा अंतो उवस्सयस्स अद्धं वा रातिं कसिणं वा रातिं संवसावेति, तं पडुच्च निक्खमति वा पविसति वा, निक्खमंतं वा पविसंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।१३।।

"पडुच्च" त्ति जाहे सो गिहत्थो काइयादि णिग्गच्छति ताहे संजतो वि चिंतते "एस काइयं गतो अहमवि एयण्णिस्साए काइयं गच्छामि, उट्ठावेति वा एहि, वच्चामो।

संवासे जे दोसा, णिक्खमण-पवेसणम्मि ते चेव।
णातव्वा तु मतिमता, पुव्वे अवरम्मि य पदम्मि ।।२४७६।।

जे संवासे अधिकरणादी दोसा भवंति ते णिग्गच्छंते वि ।।२४७६।।

इमे अधिकतरा –

गिहिसहितो वा संका, आरक्खिगमादि गेण्हणादीया।
उभयाचरणदवासति, अवण्ण-अपमज्जणादीया ।।२४७७।।

गिहत्थसहितो त्ति काउं चोरपारदारिओ त्ति काउं संका भवति, ताहे दंडवासियादीहिं गेण्हणादी दोसा। काइयसण्णा-उभयं, तं वोसिरतो दवादि असतीए उड्डाहो लोगो अवण्णं भासति, पादथंडिलादी य ण पमज्जति संजमविराहणा ।।२४७७।।

जे भिक्खू रण्णो खत्तियाणं मुदियाणं मुद्धाभिसित्ताणं समवाएसु वा पिंड-नियरेसु वा इंद-महेसु वा खंद-महेसु वा रुद्द-महेसु वा मुगुंद-महेसु वा भूत-महेसु वा जक्ख-महेसु वा णाग-महेसु वा थूभ-महेसु वा चेइय-महेसु वा रुक्ख-महेसु वा गिरि-महेसु वा दरि-महेसु वा अगड-महेसु वा तडाग-महेसु वा दह-महेसु वा णदि-महेसु वा सर-महेसु वा सागर-महेसु वा आगर-महेसु वा अण्णयरेसु वा तहप्पगारेसु विरूवरूवेसु महा-महेसु असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिग्गाहेति, पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति।।सू०।।१४।।

---

१ गा० २४१४।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

खत्तिय इति जातिग्गहणं, मुदितो जाति-सुद्धो, पितिमादिएण अभिसित्तो मुद्धाभिसित्तो, समवायो गोट्ठिभत्तं, पिंडणिगरो दाइभत्तं, पिति-पिंडपदाणं वा पिंडणिगरो, इंदमहो, खंधो स्कन्द कुमारो, भागिणेयो रुद्रः, मुकुन्दो बलदेवः, चेतितं देवकुलं, कर्हि चि रुक्खस्स जत्ता कीरइ गिरिपव्वइए जत्ता, णागदरिगादि धाउवायविलं वा सेसा पसिद्धा । एतेसिं एगतरे महे जत्थ रण्णो अंसिया, पत्तेगं वा रण्णो भत्ते जो गेण्हति ङ्का ।

समवायाई तु पदा, जत्तियमेत्ता उ आहिया सुत्ते ।
तेसिं असणादीणं, गेण्हंताऽऽणादिणो दोसा ॥२४७८॥

गणभत्तं समवाओ, तत्थ ण कप्पं जहिं णिवस्संसी ।
पितिकालो पिंडनिवेदणं तु णिवणीयसामण्णो ॥२४७९॥

पितृपिंडप्रदानकालो मघा (यथा) श्राद्धेषु भवति ॥२४७९॥

इंदमहादीएसुं, उवहारे णिवस्स जणवतपुरे वा ।
वितिमिस्सितो न कप्पति, भद्दग-पंतादि दोसेहिं ॥२४८०॥

इंदादीण महेसु जे उवहार णिज्जंति बलिमादिया जणेण पुरेण वा, ते जइ णिवपिंडवइमिस्सितो ण संकप्पंति, भद्रपंतादिया दोसा ॥२४८०॥

रण्णो पत्तेगं वा, वि होज्ज अहवा वि मिस्सिता ते तु ।
गहणागहणेगस्स उ, दोसा उ इमे पसज्जंति ॥२४८१॥

अण्णसंतियं गेण्हंति, रण्णो संतियस्स अग्गहणं । अह रण्णस्सेगसंतियस्स वा गहणे अग्गहणे त्रि दोसा ॥२४८१॥

गहणे दुविधा – भद्द-पंतदोसा इमे –

भद्दगो तण्णीसाए, पंतो घेप्पंत दट्ठूणं भणति ।
अंतो घरे इच्छध, इह गहणं दुट्ठधम्मोत्ति ॥२४८२॥

भद्दतो चिंतेति एएण उवाएण गेण्हंति ताहे अभिक्खणं समवायादिसंखडीतो करेति, लोगेण वा समं पत्तेगं वा । पंतो तत्थ समवायादिसु घेप्पंतं दट्ठूण भणति – अंतो मम घरे ण इच्छह इय मम संतियं जणवयभत्तेण सह गेण्हह, अहो ! दुट्ठधम्मो, ततो सो रुट्ठो ॥२४८२॥

भत्तोवधिवोच्छेदं, णिव्विसय-चरित्त-जीवभेदं वा ।
एगमणेगपदोसे, कुज्जा पत्थारमादीणि ॥२४८३॥

भत्तादी वोच्छेदं करेज्ज, मा एतेसिं को उवकरणं देज्ज, णिव्विसए वा करेज्ज, चरित्ताओ वा भंसेज्ज, जीवियाओ वा ववरोवेज, एगस्स वा पदुस्सेज्ज अणेगाण वा । कुल-गण-संघे वा पत्थारं करेज्ज ॥२४८३॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इमे अगहणे दोसा -

तेसु अगेण्हंतेसू, तीसे परिसाए एवमुप्पज्जे ।
को जाणति किं एते, साधू घेत्तुं ण इच्छंति ॥२४८४॥

साधूहिं अगेण्हंतेहिं तीसे गोट्ठि परिसाए एवं चित्तमुप्पज्जति को पुण कारणं जाणेज्ज, किमिति-कस्माद्धेतोरित्यर्थः ॥२४८४॥

इतरेसिं गहणम्मी, णिव-चोल्लग-वज्जणे जणासंका ।
जातीदोसं से ते, जाणंतागंतओ सो य ॥२४८५॥

इयरे गोट्ठियजणा तेसिं चोल्लगस्स गहणे णिवचोल्लगस्स वज्जणे जणस्स आसंका भवति – एते [1]साधु नूणं से हीणजाति त्ति जाणंति दोसं । सो य तत्थ आगंतुगो करकंडुवत् । जणेण घूसियं, रण्णा उवालद्धं, ताहे पदुट्ठो भत्तोवहिवोच्छेदादिए दोसे करेज्ज ॥२४८५॥

तम्हा ण तत्थ गमणं, समवायादीसु जत्थ रण्णो उ ।
पत्तेगं वा भत्तं, अण्णेण जणेण वा मिस्सं ॥२४८६॥

गोट्ठियसमवायभत्तेसु वा पत्तेयभद्दं कुलगणसम्मिस्सं वा रण्णो णो गेण्हे ॥२४८६॥

बितियपदं गेलण्णे, णिमंतणा दव्वदुल्लभे असिवे ।
ओमोयरियपदोसे, भए य गहणं अणुण्णातं ॥२४८७॥

आगाढे गेलण्णे अण्णतो ण लब्भति ताहे घेप्पंति, अभिक्खणं णिमंतमाणस्स घेत्तुं पसंगं वारेंति, जं वा से णत्थि तं मग्गंति, दुल्लभं दव्वं तं च अण्णतो णत्थि, असिवगहिया अण्णे गिहा, नो रण्णो । ओमे रण्णो गेहे लब्भति, अण्णो अधिकतरो राया पदुट्ठो, अण्णतो बोहिगादि भयं, एवमादिएहिं कारणेहिं गहण अणुण्णायं ॥२४८७॥

जे भिक्खू रण्णो खत्तियाणं मुदियाणं मुद्धाभिसित्ताणं
उत्तर-सालंसि वा उत्तर-गिहंसि वा रीयमाणं असणं वा पाणं वा
खाइमं वा साइमं वा पडिग्गाहेति, पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति॥सू०॥१५॥

अत्थानिगादिमंडवो उत्तरसाला, हयगयाण वा साला उत्तरसाला, मूलगिहमसंबद्धं उत्तरगिहं ।

उत्तर-साला उत्तर-गिहा य रण्णो हवंति दुविधा तु ।
गहणागहणे तत्थ उ, दोसा ते तं च बितियपदं ॥२४८८॥ कंठा

सालत्ति णवरि णेमं, उज्जाण-पवेसण सव्वहिं वज्जे ।
सालाणं पुण गहणं, हतादि हितणट्ठमासंका ॥२४८९॥

णिभमेत्तं "णेमं" उदाहरणमात्रं, हयादि हिते णट्ठे वा संका भवति । कल्ले एत्थ संजया आगया, ताहिं हडं हडेतु वा अण्णेसिं कहियं, तेहिं वा हडं ॥२४८९॥

---

१ ते "साधू णूणं से हीण-जातिदोसं जाणंति सो ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

१"उत्तरसालागिहाणं" इमं वक्खाणं –

मूलगिहमसंबद्धा, गिहा य साला य उत्तरा होंति ।
जत्थ व ण वसति राया, पच्छा कीरंति जावऽण्णे ॥२४६०॥

जत्थ वा कीडा पुव्वं गच्छति ण वसति ते उत्तरसालागिहा वत्तव्वा । जे वा पच्छा कीरंते ते उत्तरसालागिहा । एतेसु ठाणेसु मीसं ग्रमीसं वा जो गेण्हति ते चेव दोसा । तं चेव पच्छित्तं । तं चेव बितियपदं ॥२४६०॥

जे भिक्खू रण्णो खत्तियाणं मुदियाणं मुद्धाभिसित्ताणं हय-सालागयाण वा गय-सालागयाण वा मंत-सालागयाण वा गुज्झ-सालागयाण वा रहस्स-सालागयाण वा मेहुण-सालागयाण वा असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिग्गाहेति, पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१६॥

हयगयसालासु हयगयाण उवजेवण पिंडमाणिय देति, तत्थ रायपिंडो अंतरायदोसो य सेससालासु पइट्ठा भत्ता ।

अहवा – सुताऽभिहियसालासु ठितादीण अणाहादियाण भत्तं पयच्छंति । जो गेण्हति ङ्का ।

हयमादी साला खलु, खत्तियमेत्ता उ आहिया सुत्ते ।
गहणागहणे तत्थ उ, दोसा ते तं च बितियपदं ॥२४६१॥

रण्णो रायपिंडो त्ति ण गेण्हति, अण्णेसिं गेण्हति ? जे ईसरादिया दंसणगट्ठगे आणेंति । अण्णेसिं तस्स गहणसंभवो भवति ॥२४६१॥

जे भिक्खू रण्णो खत्तियाणं मुदियाणं मुद्धाभिसित्ताणं सण्णिहि-सण्णिचयाओ खीरं वा दहिं वा णवणीयं वा सप्पिं वा गुलं वा खंडं वा सक्करं वा मच्छंडियं वा अण्णयरं वा भोयणजातं पडिग्गाहेति, पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१७॥

सन्निही णाम दधिखीरादि जं विणासि दव्वं, जं पुण घय - तेल्ल - वत्थ - पत्त - गुल - खंड - सक्कराइयं अविणासि दव्वं, चिरमवि अच्छइ ण विणस्सइ, सो सचतो । विडं कृष्णलवणं, सामुद्रकादि उद्भिज्जं ।

सण्णिधिसण्णिचयातो, खीरादी वत्थपत्तमादी वा ।
गहणागहणे तत्थ उ, दोसा ते तं च बितियपदं ॥२४६२॥

ओदण-गोरसमादी, विणासि दव्वा तु सण्णिधी होंति ।
सक्कुलि-तेल्ल-घय-गुला, अविणासी संचइय दव्वा ॥२४६३॥

---

१ गा० २४८८ ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

"सक्कुली" पर्पटि: ॥२४६३॥

जे भिक्खू रण्णो खत्तियाणं मुदियाणं मुद्धाभिसित्ताणं उस्सट्ठ-पिंडं वा संसट्ठ-
-पिंडं वा अणाह-पिंडं वा किविण-पिंडं वा वणीमग-पिंडं वा
पडिग्गाहेति, पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति
तं सेवमाणे आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं ॥सू०॥१८॥

ओसट्ठे उज्झिय-धम्मिए उ संसट्ठे सावसेसे सु ।
वणिमग जातणपिंडो, अणाहपिंडे अबंधूणं ॥२४६४॥

ऊसट्ठे उज्झिय-धम्मिए । संसत्तपिंडो भुत्तावसेसं । वणिमगपिंडो णाम जो जायणवित्तिणो, दाणादि फलं लवित्ता लभंति, तेसिं जं कडं तं वणिमगपिंडो भण्णति । अणाहा अबंधवा, तेसिं जो कओ पिंडो । एतेसिं जो गेण्हति ड्का ॥२४६४॥

एतेसामण्णतरं, जे पिंडं रायसंतियं गिण्हे ।
ते चेव तत्थ दोसा, तं चेव य होइ बितियपदं ॥२४६५॥

दोसा ते चेव, बितियपदं ॥२४६५॥

॥ इति विसेस-णिसीहचुण्णीए अट्ठमो उद्देसओ समत्तो ॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नवम उद्देशक:

जे भिक्खू रायपिंडं गेण्हइ, गेण्हंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।१।।

जे भिक्खू रायपिंडं भुंजइ, भुंजंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।२।।

इमो संबंधो –

पत्थिव-पिंडऽधिकारो, अयमवि तस्सेव एस णवमस्स ।
सो कतिविधोत्ति वा, केरिसस्स रण्णो विवज्जो उ ।।२४९६।।

अट्ठमुद्देसगस्स अंतिमसुत्ते पत्थिवपिंडविचारो, इहावि णवमस्स आदिसुत्ते सो चेवाधिकतो । एस संबंधो । सो कतिविहो पिंडो ? केरिसस्स वा रण्णो वज्जेयव्वो ? ।।२४९६।।

जो मुद्धा अभिसित्तो, पंचहि सहिओ पभुंजते रज्जं ।
तस्स तु पिंडो वज्जो, तव्विवरीयम्मि भयणा तु ।।२४९७।।

मुद्धं परं प्रधानमाद्यमित्यर्थः, तस्स आदिराइणा अभिसितो मुद्धो मुद्धाभिसित्तो, सेणावइ अमच्च पुरोहिय सेट्ठि सत्थवाहसहिओ रज्जं भुंजति । एयस्स पिंडो वज्जणिज्जो । सेसे भयणा । जति अत्थि दोसो तो वज्जे, अह णत्थि दोसो तो णो वज्जे ।।२४९७।।

मुदिते मुद्धभिसित्तो, मुदितो जो होति जोणितो सुद्धो ।
अभिसित्तो च परेहिं, सयं च भरहो जधा राया ।।२४९८।।

मुइए मुद्धाभिसित्ते । मुइते, णो मुद्धाभिसित्ते । णो मुइए, मुद्धाभिसत्ते । णो मुइते णो मुद्धाभिसित्ते । (एस चउभंगो) मुइतो जो उदितो उदियकुल-वंस-संभूतो, उभयकुलविसुद्धो, मुद्धाभिसित्तो मउडपट्टबंधेन पि (प) राहिं वा अप्पणा वा अभिसित्तो जहा भरहो । एस मुद्धाभिसित्तो ।।२४९८।।

पढमंग-भंगो वज्जो, होतु व मा वा वि जे तहिं दोसा ।
सेसेसु होति पिंडो, जहिं दोसा तं विवज्जंति ।।२४९९।।

पढमभंगो वज्जो, सेस-ति-भंगे अपिंडो, अपिंडे वि जत्थ दोसा सो वज्जणिज्जो ।।२४९९।।

राय-पिडस्स इमो भेओ –

असणादिया चउरो, वत्थे पाए य कंबले चेव ।
पाउंछणगा य तहा, अट्ठविहो राय-पिंडो उ ।।२५००।। कंठा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अट्ठविध-राय-पिंडे, अण्णतरागं तु जो पडिगाहे ।
सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त-विराधणं पावे ॥२५०१॥

अण्णतरं जो गेण्हति ङ्का । आणादिया य दोसा ॥२५०१॥

ईसर-तलवर-माडंबिएहिं सेट्ठीहिं सत्थवाहेहिं ।
णिंतेहि य अणिंतेहि य, वाघाओ होइ भिक्खुस्स ॥२५०२॥

ईसरभोइयमादी, तलवरपट्टेण तलवरो होइ ।
वेंटणबद्धो सेट्ठी, पच्चंतणिवो तु माडंबी ॥२५०३॥

इश ऐश्वर्ये, ऐश्वर्येण युक्तः ईश्वरः, सो य गामभोतियादिपट्टबंधो । रायप्रतिमो चामरविरहितो तलवरो भण्णति । जम्मि य पट्टे सिरिया देवी कज्जति तं वेंटणगं, तं जस्स रण्णा अणुन्नातं सो सेट्ठी भण्णति । जो छिण्णमंडवं भुंजति सो माडंबिओ, पच्चंतविसयणिवासी राया माडंबिओ जो सरज्जे पररज्जे य पचभिण्णातो । सत्थं वाहेति सो सत्थवाहो ॥२५०२ । २५०३॥

जा णिंति इंति ताव ऽच्छणे उ सुत्तादिभिक्खपरिहाणी ।
रीया अमंगलं ति य, पेल्ला हणणा इहरधा वा ॥२४०४॥

एतेहिं एवमादीएहिं पविसंतेहिं वा णिक्खमंतेहिं वा वाघातो भिक्खुस्स भवति । आस - हत्थि - पाय त्ति - रहसंघट्टे पविसंतस्स भायणाणि भिज्जेज्ज । अण्णतरं वा इंदियजायं लुसेज्ज । अह जाव ते अतिंति णिंति वा ताव उदिक्खंते तो सुत्तत्थभिक्खापरिहाणी य भवति । इरिओवउत्तस्स अभिघाओ भवति, आसादि णिरिक्खतस्स संजमविराधना, कस्स "अमंगलं" ति काउं अस्सादिणा पेल्लणं, कस्सादिणा वाघातं देज्जा । "इहरह" त्ति - जणसम्मद्दे अहाभावेणं पेल्लणं घातो वा भवे ॥२५०४॥

अहवा – तत्थिमे दोसा –

लोभे एसणघातो, संका तेण णपुंस इत्थी य ।
इच्छंतमणिच्छंते, चातुम्मासा भवे गुरुगा ॥२५०५॥

अण्णत्थ एरिसं दुल्लभं ति गेण्हे अणेसणिज्जं पि ।
अण्णेण वि अवहरिते, संकेज्जति एस तेणो त्ति ॥२५०६॥

[1]वाघातो सज्झाए, सरीरवाघात भिक्खवाघातो ।
राखत्तिय चउभंगो, इत्थं वाघातदोसा य ॥२५०७॥

रायकुलघरं पविट्ठस्स अंतेपुरियाहिं उक्कोसं दव्वं णीणियं, तं च अणेसणिज्जं ।

सो चिंतेति – अण्णत्थ एरिसं णत्थि, दुल्लभं वा दव्वं, ताहे लोभेण अणेसणिज्जं पि गेण्हेज्जा । "संका तेण" त्ति रण्णो वा घरे [1]उच्छुद्धविप्पइण्णे अण्णेण वि अवहडे संजतो आराती त्ति संकिज्जति । लुद्धो वा अप्पणो चेव कए गेण्हणादिया दोसा ।

अधवा – तेणगो चिंतेति – एतेण लिंगेण पवेसो लब्भिहिति, लिंगं काउं पविसेज्ज ॥२५०७॥

---

१ प्रक्षिप्त विप्रकीर्णे ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

"[1]णपुंसइत्थिय" त्ति अस्य व्याख्या –

अलभंता पवियारं, इत्थि णपुंसा बला पि गेण्हंति।
आयरियकुल-गणे वा, संघे व करेज्ज पत्थारं ॥२५०८॥

इत्थि - णपुंसा तत्थ णिरुद्धेंदिया विरहितोगासे बला वि साहू गेण्हेज्ज, जति पडिसेवति चरित्तविराहणा, अह तीए भणितो णेच्छति ताहे सा कूवेज्ज – एस मे समणो बला गेण्हति, तस्स पंतावणादिया दोसा। एवं आय - पर - उभयसमुत्था य दोसा भवंति।

अहवा – रुट्ठो राया आयरिय - कुल - गण - संघ पत्थारं करेज्ज ॥२५०८॥

अण्णे वि होंति दोसा, आइण्णे गुम्मरयणमादीया।
तण्णीसाए पवेसो, तिरिक्ख-मणुया भवे दुट्ठा ॥२५०९॥

रयणादि – आइण्णे गुम्मिय तिट्ठाणइल्ला अइभूमिं पविट्ठो तेहिं घेप्पइ हम्मति वा, तण्णीसाए वा अवहरणट्ठा अण्णो पविसति, वाणरादि वा तिरिया दुट्ठा तेहिं उवद्दविज्जंति, अणारियपुरिसा वा दुट्ठा वा हणिज्ज ॥२५०९॥

"[2]आइण्णे" त्ति अस्य व्याख्या –

आइण्णे रयणाइं, गेण्हेज्ज सयं परो व तण्णीसा।
गोमिय-गहणा हणणा, रण्णा य णिवेदिते जे तु ॥२५१०॥

रण्णो वावाओ, रण्णो वा उवणीए (उवणीता) जं राय पंतावणाइ करिस्सति ॥२५१०॥

चारिय-चोराभिमरा, कामी पविसंति तत्थ तण्णीसा।
वाणर-तरच्छ-वग्घा, मिच्छादि-णरा व घातेज्जा ॥२५११॥

एते साधुणिस्साए पविसेज्ज। जति वि साहुस्स पवेसो अणुण्णातो तहा वि मेच्छमणुया अयाणंता घाएज्ज ॥२५११॥

भवे कारणं –

दुविधे गेलण्णम्मि य, णिमंतणा दव्वदुल्लभे असिवे।
ओमोयरियपदोसे, भए य गहणं अणुण्णातं ॥२५१२॥

आगाढं अणागाढं च। अणागाढे तिखुत्तो मग्गिऊण जति ण लभति ताहे पणगपरिहाणीए जाहे चउगुरुं पत्तो ताहे गेण्हति, आगाढे खिप्पमेव गेण्हति।

"भिक्खं गेण्हाहि" ति णिमंतिओ रण्णा, भणाति – "जइ पुणो ण भणिहिसि तो गेण्हामो" णिब्बंधे वा गेण्हति। दव्वं वा किं चि दुल्लभं तित्तमहातित्तगादी, असिवे वा अण्णतो अलभमाणे राजकुलं वा असिवेण णो गहियं तत्थ गेण्हति। ओमे वा अण्णतो अलभंते, अण्णम्मि वा असिवे, राया ण पदुट्ठ, कुमारे वा, ताहे रण्णो घरातो अभिगच्छंतो गेण्हति। बोहिग - मेच्छ - भए वा तत्थ ठितो गेण्हति। एवमादिएहिं कारणेहिं गहणं रायपिंडस्स अणुण्णातं ॥२५१२॥

---

[1] गा० २५०५। [2] गा० २५०६।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जे भिक्खू रायंतेपुरं पविसति, पविसंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३॥

अंतेउरं च तिविधं, जुण्ण णवं चेव कण्णगाणं च ।
एक्केक्कं पि य दुविधं, सट्ठाणे चेव परठाणे ॥२५१३॥

रण्णो अंतेपुरं तिविधं – ण्हसियजोव्वणाओ अपरिभुज्जमाणीओ अच्छंति, एयं जुण्णंतेपुरं। जोव्वणयुता। परिभुज्जमाणीओ नवंतेपुरं। अप्पत्तजोव्वणाण रायदुहियाण संगहो कन्नंतेपुरं। तं पुण खेत्ततो एक्केक्कं दुविधं – सट्ठाणे परट्ठाणे य। सट्ठाणत्थं रायघरे चेव, परट्ठाणत्थं वसंतादिसु उज्जाणियागयं ॥२५१३॥

एतेसामण्णतरं, रण्णो अंतेउरं तु जो पविसे ।
सो आणा अणवत्थं, भिच्छत्त-विराधणं पावे ॥२५१४॥

इमे दोसा –

दंडारक्खिय दोवारेहिं वरिसधर-कंचुइज्जेहिं ।
णिंतेहि अणिंतेहि य, वाघातो चेव भिक्खुस्स ॥२५१५॥

एतीए गाहाए इमं वक्खाणं –

दंडधरो दंडारक्खिओ उ दोवारिया उ दारिट्ठा ।
वरिसधर-वद्ध-चिप्पिति, कंचुगिपुरिसा तु महतरगा ॥२५१६॥

दंडगहियग्गहत्थो रक्खतो अंतेपुरं रक्खइ। रण्णो वयणेण इत्थिं पुरिसं वा अंतेपुरं णीणंति पवेसेति वा, एस दंडारक्खितो।

दोवारिया दारे चेव णिविट्ठा रक्खंति।

वरिसधरा जेसिं जातमेत्ताण चेव दोभाउयाच्छेज्जं दाऊणं गालिता ते वड्ढिता। जातमेत्ताण चेव जेसिं मेलितेहिं चोतिआ ते चिप्पिसा।

रण्णो आणत्तीए अंतेपुरियसमीवं गच्छंति, अंतेपुरियाणत्तीए वा रण्णो समीवं गच्छंति ते कंचुइया।

जे रण्णो समीवं अंतेपुरियं णयंति आणेंति वा रिउण्हायण्हातं वा कहं कहेंति, कुवियं वा पसादेंति, कहेंति य रण्णो, विदिते कारणे अण्णतो वि जं अग्गतो काउं वयंति, ते महतरगा ॥२५१६॥

अण्णे य इमे दोसा –

अण्णे वि होंति दोसा, आइण्णे गुम्मरयणइत्थीओ ।
तण्णीसाए पवेसो, तिरिक्ख-मणुया भवे दुट्ठा ॥२५१७॥ पूर्ववत्

सद्दाइ इंदियत्थोवओगदोसा ण एसणं सोधे ।
सिंगारकहाकहणे, एगतरुभए य बहु दोसा ॥२५१८॥

तत्थ गीयादिसद्दोवओगेण इरियं एसणं वा ण सोहेति, तेहिं पुच्छितो सिंगारकहं कहेज्ज, तत्थ य आयपरोभयसमुत्था दोसा ॥२५१८॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इमे परट्ठाणे –

बहिया वि होंति दोसा, केरिसिया कहण-गिण्हणादीया ।
गव्वो बाउसियत्तं, सिंगाराणं च संभरणं ॥२५१६॥

उज्जाणादिठियासु कोइ साधू कोउगेण गच्छेज्ज, ते चेव पुव्ववण्णिया दोसा, सिंगारकहाकहणे वा गेण्हणादिया दोसा, अंतेपुरे धम्मकहणेण गव्वं गच्छेज्ज, ओरालसरीरो वा गव्वं करेज्ज, अंतेपुरे पवेसे उब्भातितोऽम्हि हत्थपादादिकप्पं करेंते बाउसदोसा भवंति, सिंगारे य सोउं पुव्वरयकीलिते सरेज्ज ।

अहवा – ताओ दट्ठुं अप्पणो पुव्वसिंगारे संभरेज्ज, पच्छा पडिगमणादि दोसा हवेज्ज ॥२५१६॥

बितियपदमणाभोगा, वसहि-परिक्खेव सेज्ज-संथारे ।
हयमाई दुट्ठाणं, आवतमाणाण कज्जे व ॥२५२०॥

अणाभोगेण पविट्ठो ।

अहवा – अंतेपुरं परट्ठाणत्थं साधुणा ण णातं – 'एयाओ अंतेपुरिओ" त्ति, पुव्वाभासेण पविट्ठो अयाणंतो ।

अहवा – साहू उज्जाणादिसु ठिता, रायतेउरं च सव्वओ समंता आगतो परिवेढिय ठियं, अण्णवसहि – अभावे य तं वसहिं अंतेपुरं मज्झेण अतिति णिति वा ।

अहवा – संथारगस्स पच्चप्पणहेउं पविट्ठो ।

अहवा – सीह-वग्घ-महिसादियाण दुट्ठाण पडिणीयस्स वा भया रायंतेपुरं पविसेज्ज । अण्णतो णत्थि णीसरणोवातो, "कज्जे" त्ति कुल-गण-संघकज्जेसु वा पविसेज्ज, तत्थ देवी दट्ठव्वा, सा रायाणं उवणेति ॥२५२०॥

जे भिक्खू रायंतेपुरियं वदेज्जा – "आउसो रायंतेपुरिए ! णो खलु अम्हं कप्पति रायंतेपुरं णिक्खिमित्तए वा पविसित्तए वा इमम्हं तुमं पडिग्गहणं गहाय रायंतेपुराओ असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा अभिहडं आहट्टु दलयाहि" जो तं एवं वदति वदेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४॥

नीहरिय निष्क्रम्य, गृहीत्वा आहृत्य मम ददातीत्यर्थः ।

जे भिक्खू वएज्जाहि, अंतेउरियं ण कप्पते मज्झं ।
अंतेउरमतिगंतुं, आहारपिंडं इहाणादी ॥२५२१॥

अंतेपुरवासिणी अंतेपुरिया रण्णो भारिया इत्यर्थः । इहेव बाहिं ठियस्स मम आहारादि आनय ॥२५२१॥

इमे दोसा –

गमणादि अपडिलेहा, दंडियकोवे हिरण्णसच्चित्ते ।
अभिओग-विसे हरणं, भिदे विरोधे य लेवकडे ॥२५२२॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

गच्छंती आगच्छंती य छक्कायविराहेज्ज, अपडिलेहिए य गमागमे भिक्खा ण कप्पति, अपडिलेहिए वा भायणे गेण्हेज्ज, दंडिओ वा दट्ठुं पदुसेज्ज, संकेज्ज वा अणायारं, हिरण्णादि वा किंचि तेणियं पच्छातीया तत्थ छुभेज्ज, पलंबादि वा सचित्तं छुभेज्ज, ओरालियसरीरस्स वा वसीकरणं देज्ज, अप्पणा पदुट्ठा अण्णेग वा पउत्ता विसं देज्ज, भायणं वा हरेज्ज, अजाणंती वा भायणं भिंदेज्ज, खीरंवि हवी विरोहिदव्वे एकत्तो गेण्हेज्ज, पोग्गलादि वा संजमविरुद्धं गेण्हेज्ज, लेवाडेज्ज वा पत्तगवंधं ॥२५२२॥

लोभे एसणघातो, संका तेणे चरित्तभेदे य ।
इच्छंतमणिच्छंते, चाउम्मासा भवे गुरुगा ॥२५२३॥

उक्कोसगलोभेण एसणघातं करेज्ज, णूणं से उब्भामगो संकितो ङ्का, णिस्संकिते मूलं, तेणट्ठे वा संकेज्ज – किं पि हरिउं एयस्स पणामियं, आयपरोभयसमुत्थेहिं दोसेहिं चरित्तभेदो, अगारीए य बला गहिहे इच्छंते चरित्तभेदो. उड्डाहभया अणिच्छंतो ङ्का ।

दुविधे गेलण्णम्मि, णिमंतणा दव्वदुल्लभे असिवे ।
ओमोयरियपदोसे, भए सा कप्पते भणितुं ॥२५२४॥ पूर्ववत्।

जे भिक्खू नो वएज्जा, रायंतेपुरिया वएज्जा - "आउसंतो समणा ! णो खलु तुज्झं कप्पइ रायंतेपुरं निक्खमित्तए वा पविसित्तए वा आहरेयं पडिग्गहगं अतो अम्हं रायंतेपुराओ असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा अभिहडं आहट्टु दलयामि" जो तं एवं वदंतीं, पडिसुणेति, पडिसुणेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५॥

साहूण आयरगोयरं जाणमाणी भणेज्ज –

एसेव गमो णियमा, णायव्वो होति वितियसुत्ते वि ।
पुव्वे अवरे य पदे, दुविहे उवहिम्मि वि तहेव ॥२५२५॥

दुविहो उवही – ओहीओ उवग्गहितो । तत्थ वि एसेव गमो वत्तव्वो ॥२५२५॥

जे भिक्खू रण्णो खत्तियाणं मुदियाणं मुद्धाभिसित्ताणं दुवारिग-भत्तं वा पसु-भत्तं वा भयग-भत्तं वा बल-भत्तं वा कयग-भत्तं वा हय-भत्तं वा रय-भत्तं वा कंतार-भत्तं वा दुब्भिक्ख-भत्तं वा दमग-भत्तं वा गिलाण-भत्तं वा वद्दलिया-भत्तं वा पाहुण-भत्तं वा पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६॥

रण्णो दुवारमादी, भत्ता वुत्ता य जत्तिया सुत्ते ।
गहणागहणे तत्थ, दोसा उ इमे पसज्जंति ॥२५२६॥
दोवारियपुव्वुत्ता, बलं पयादी पसु हयगयादी ।
सेवग-भोइगमादी, कयऽकयवित्ती णव पुराणा वा ॥२५२७॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कंतार-णिग्गताणं, दुब्भिक्खे दमग वरिसवद्दलिया ।
पाहुणग अतिहियाए, सिया य आरोग्गसालितरं ॥२५२८॥

दोवारिया दारपाला । बलं चउव्विहं—पाइक्कबलं आसबलं हत्थिबलं रहबलं । एतेसिं कयवित्तीण वा अकयवित्तीण वा णावालग्गाण वा जं रायकुलातो पेट्टगादि भत्तं णिग्गच्छति ।

कंताराते अडविणिग्गयाणं भुक्खत्ताणं जं दुब्भिक्खे राया देति तं दुब्भिक्खभत्तं, दमगा रंका तेसिं भत्तं दमगभत्तं, सत्ताहवद्दले पडते भत्तं करेति राया अपुव्वाणं वा अविघीण भत्तं करेति राया ।

अहवा – रण्णो को ति पाहुणगो आगतो तस्स भत्तं आदेसभत्तं, आरोग्गसालाए वा "इतरमि" ति-विणा।वि आरोग्गसालाए जं गिलाणस्स दिज्जति तं गिलाण-भत्तं ॥२५२८॥

भद्दो तण्णिस्साए, पंतो घेप्पंत दट्ठुणं भणति ।
अंतो घरे न इच्छह, इह गहणं दुट्ठधम्म त्ति ॥२५२९॥

भत्तोवहिवोच्छेयं, णिव्विसिय चरित्त-जीवभेदं वा ।
एगमणेगपदोसे, कुज्जा पत्थारमादीणि ॥२५३०॥

तेसु अगिण्हंतेसू, तीसे परिसाए एवमुप्पज्जे ।
को जाणति किं एते, साहू घेत्तुं न इच्छंति ॥२५३१॥

दुविहे गेलण्णम्मी, णिमंतणा दव्वदुल्लभे असिवे ।
ओमोयरियपदोसे, भए व गहणं अणुण्णातं ॥२५३२॥ पूर्ववत् ।

जे भिक्खू रण्णो खत्तियाणं मुदियाणं मुद्धाभिसित्ताणं इमाइं छद्दोसायथणाइं अजाणिय अपुच्छिय अगवेसिय परं चउराय-पंचरायाओ गाहावति-कुलं पिंडवायपडियाए निक्खमति वा पविसति वा निक्खमंतं वा पविसंतं वा सातिज्जति, तं जहा—कोट्ठागार-सालाणि वा भंडागार-सालाणि वा पाण-सालाणि वा खीर-सालाणि वा गंज-सालाणि वा महाणस-सालाणि वा ॥सू०॥७॥

"इमे" त्ति प्रत्यक्षीभावे, षडिति संख्या, दोसाणं आयणं ठाणं णिलए त्ति, अविज्ञाय भिक्षार्थं प्रविशति, चतुरात्रात् परतः, आदेशेन वा पंचरात्रात् परतः ङ्का, सपरिखेवातो अंतो पविसति, अंतातो वा बाहिरियं णिग्गच्छति, धण्णभायणं कोट्ठागारो, "भांडागारो" – हिरण्ण-सुवण्णभायणं, जत्थ उदगादि पाणं सा पाणसाला भण्णति, खीरघरं खीरसाला, जत्थ धण्णं दभिज्जति सा गंजसाला, उवक्खडणसाला महाणसो, पुव्वदिट्ठे पुच्छा, अपुव्वे गवेसणा, अपुच्छंतस्स ङ्का ।

इमा णिज्जुत्ती –

छद्दोसायतणे पुण, रण्णो अविजाणिऊण जे भिक्खू ।
चउराय-पंचरायं, परेण पविसाणमादीणि ॥२५३३॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कोट्ठागारा य तहा, भंडागारा य पाणगारा य।
खीर-घर-गंज-साला, महाणसाणं च आयतणा ॥२५३४॥

जत्थ सण-सत्तरसाणि धण्णाणि कोट्ठागारो।

भंडागारो जत्थ सोलसविहाइं रयणाइं।

पाणागारं जत्थ पाणियकम्मं तो सुरा-मधु-सीधु-खंडगं-मच्छंडिय-मुद्दियापभित्तीग पाणगाणि।

खीरघरं जत्थ खीरं-दधि-णवणीय-तक्कादीणि अच्छंति।

गंजसाला जत्थ सण-सत्तरसाणि-धण्णाणि कोट्टिज्जंति।

अहवा – गंजा जवा ते जत्थ अच्छंति सा गंजसाला।

महाणससाला जत्थ असण-पाण-खातिमादीणि णाणाविहभक्खे उवक्खडिज्जंति ॥२५३४॥

एतेसु इमे दोसा –

गहणाईया दोसा, आययणं संभवो त्ति वेगट्ठा।
दिट्ठेयर पुच्छि गविसण गंजसाला उ कुट्टणिया ॥२५३५॥

गहणादियाणं दोसाणं आययणं ति वा संभवट्ठाणं ति वा एगट्ठं, पुव्वदिट्ठे पुच्छा तत्थेव ताणि जत्थ पुरा आसीत्यर्थः, "इतरे" – अदिट्ठे गवेसणं – केवतियाणि ? कतोमुहाणि वा ? कम्मि वा ठाणे ? किंचिधाणि वा ? शेषं गतार्थम् ॥२५३५॥

पढमे वितिए ततिए, चउत्थमासावि चउगुरू अन्ते।
उच्चातो पढमदिणे, वितिया एगेसि ता पंच ॥२५३६॥

जत्थ पढमदिवसे ण पुच्छति मासलहुं, वितियदिवसे ण पुच्छति मासगुरुं, ततियदिवसे ण पुच्छति चउलहुं ति। तिण्हं परेणं अंते त्ति चतुर्थदिवसे चउगुरुं।

एगे भणंति – पढमदिणे परिसंतो वक्खेण वा अपरिसंतो ताहे वितियदिणातो आरब्भ पंचदिणे चउगुरुं, एवं चउराउ त्ति वुत्तं भवति ॥२५३६॥

अहवा पढमे दिवसे, भिण्णमासादि पंचमे गुरुगा।
वीसादि व एगेसिं, परेण पंचण्ह दिवसाणं ॥२५३७॥

पढमदिवसे भिण्णमासे ॥२५॥०॥०॥ ङ्का। पंचमे चउगुरुं ङ्का।

अधवा – पढमदिणे वीसादि ॥२०।२५।०।०॥ ङ्का। छट्ठ दिवसे चउगुरुं, ङ्का। एवं सुत्ते वण्णियं पंच गता ॥२५३७॥

तो परं –

भद्देसु रायपिंडं, आवज्जति गहणमादिपंतेसु।
असिवे ओमोयरिए 'गेलण्णपदे य वितियपदं ॥२५३८॥

भद्देसु रायपिंडदोसा, पंतेसु गेण्हणादयो दोसा, जे रक्खगा ते भद्दपंता।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

भट्टा भणंति – किं अज्जो ! अतिगता ? पंता चारिय चोर त्ति काउं पंतावणगेण्हणादी करेज्ज । बितियपदे असिवादियं पणगपरिहाणीए जइउं जाहे चउगुरुं पत्तो ताहे गेण्हेज्ज ।।२५३८।।

जे भिक्खू रण्णो खत्तियाणं मुदियाणं मुद्धाभिसित्ताणं अइगच्छमाणाण वा णिग्गच्छमाणाण वा पयमवि चक्खुदंसणपडियाए अभिसंधारेंति, अभिसंधारेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।८।।

अतियानं प्रवेशः, बहिर्निर्गमो निर्याणं, चक्षुदंसणाण दट्ठुं प्रतिज्ञा ।

अथवा – चक्षुषा दर्शयामीति प्रतिज्ञा, एगपदं पि गच्छति तस्स आणादिया दोसा ।

जे भिक्खू रातीणं, णिग्गच्छंताण अहव णिंताणं ।
चक्खुपडियाए पदमवि, अभिधारे आणमादीणि ।।२५३९।।

अतिंति प्रविशंति, एकमवि पदं अभिधारेंतो आणादिदोसे पावति ।।२५३९।।

संकप्पुट्ठियपदभिंदणे य दिट्ठेसु चेव सोही तु ।
लहुओ गुरुगो मासो, चउरो लहुगा य गुरुगा य ।।२५४०।।

मणउट्ठियपदभेदे, य दंसणे माससमादि चतुगुरुगा ।
गुरुओ लहुगा गुरुगा, दंसणवज्जेसु य पदेसु ।।२५४१।।

पडिपोग्गले अपडिपोग्गले य गमणं नियत्तणं वा वि ।
विजए पराजए वा, पडिसेहं वा वि वोच्छेदं ।।२५४२।।

"रायाणं पासामि" त्ति मणसा चिंतेति मासलहुं, उट्ठिते मासगुरुं, पदभेदे चउलहुं, दिट्ठे चउगुरुं ।

अहवा – बितियादेसेण – मणसा चिंतेति मासगुरुं, उट्ठिते चउलहुं, पदभेदे चउगुरुं, एगपदभेदे वि चउगुरुगा किमंग पुण दिट्ठे । आणादि विराहणा भद्दपंता दोसा य ।

जो भद्दतो सो पडिपोग्गले त्ति - साधुं दृष्ट्वा ध्रुवा सिद्धिः अच्छिउकामो वि गच्छइ ताहे अधिकरणं भवति, जं च सो जुज्झाति-करेस्सति, जति से जओ ताहे णिच्चमेव संजए पुरतो काउं गच्छति ।

"अपडिपोग्गले" त्ति - इमेहिं लुत्तसिरेहिं वि दिट्ठेहिं कतो मे सिद्धि, गंतुकामो वि णियत्तेति ।

अह कहं वि गतो पराजिओ ताहे पच्चागतो पदूसति, पउट्ठो य जं काहिति भत्तोवकरणपव्वयंताण य पडिसेहं करेज्ज, उवकरणवोच्छेदं वा करेज्ज । अपहरतीत्यर्थः ।।२५४२।।

अहवा – इमे दोसा हवेज्ज –

दट्ठूण य रायड्ढिं, परीसहपराजितोऽत्थ कोती तु ।
आसंसं वा कुज्जा, पडिगमणादीणि वा पदानि ।।२५४३।।

आसंसा णिदाणं कुज्जा ।

अहवा – तस्समीवे अलंकियविभूसियाओ इत्थीओ दट्ठुं पडिगमणं – अण्णतित्थिणीं सिद्धपुत्तिं संजतीं वा पडिसेवति, हत्थकम्मं वा करेति ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अहवा – कोइ ईसरपुत्तो कुमारो पव्वइतो, सो तं रायाणं थी-परिवुडं दट्ठूण चिंतेइ – लद्धं लोइयं अम्हेहिं एरिसीणं णाणुभूतं, ताहे पडिगच्छेज्जा ।।२५४३।।

भवे कारणं –

बितियपदमणप्पज्झे, अभिधारऽविकोविते व अप्पज्झे ।
जाणंते वा वि पुणो, कुल-गण-संघाइकज्जेसु ।।२५४४।।

कुलादिकज्जे जइ राया पधाविओ ताहे ण अल्लियंति मग्गतो गच्छति । एवं पडियरिऊण जति ने पडिपुग्गलादयो दोसा न भवंति तो जहिं ठिओ तहिं अलियंति ।।२५४४।।

जे भिक्खू रण्णो खत्तियाणं मुदियाणं मुद्धाभिसित्ताणं इत्थीओ सव्वालंकार-विभूसियाओ पयमवि चक्खुदंसणपडियाए अभिसंधारेति, अभिसंधारेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।६।।

जे भिक्खू इत्थियाए, सव्वलंकारभूसियाए उ ।
चक्खुवडियाए पदमवि, अभिधारे आणमादीणि ।।२५४५।। पूर्ववत् ।

मणउक्खियपयभेदे, य दंसणे मासमादि चतुगुरुगा ।
गुरुओ लहुगा गुरुगा, दंसणवज्जेसु य पदेसु ।।२५४६।।

केइत्थ भुत्तभोगी, अभुत्तभोगी य केइ निक्खंता ।
रमणिज्जलोइयं ति य, अम्हं पेयारिसं आसि ।।२५४७।।

भुत्तभोगिणो सति विभवे निक्खंता पुणो संभवंता वच्चंति ।।२५४७।।

पडिगमण अण्णतित्थिय, सिद्धी संजति सलिंगहत्थे य ।
वेहाणस ओहाणे, एमेव अभुत्तभोगी वि ।।२५४८।।

पेढे पूर्ववत् । अभुत्तभोगी वि उप्पण्णकोउओ पडिगमणादी पदे करेज्ज ।।२५४८।।

किं चान्यत् –

रीयाति अणुवओगो, इत्थी-णाती-सुहीणमचियत्तं ।
अजितिंदिय उड्डाहो, आवडणे भेद पडणं च ।।२५४९।।

तण्णिरिक्खंतो रीयाए अणुवउत्तो भवति, इत्थीए जे सयणा सयणाण वा जे सुहीणो तेसिं अचियत्त भवति, जहा से अणुरत्ता दिट्ठी लक्खिज्जति तहा से अंतगओ वि भावो णज्जति अजिइंदिओ एवं उड्डाहो । तं निरिक्खंतो खाणगादिसु आवडेज्ज, भायणं वा भिंदेज्ज, सयं वा पडेज्ज, हत्थं पादं वा लूसेज्ज, आयविराहणा ।।२५४९।।

बितियपदमणप्पज्झे, अभिधारऽविकोविते व अप्पज्झे ।
जाणंतो वा वि पुणो, मोह-तिगिच्छाइ-कज्जेसु ।।२५५०।।

मोहतिगिच्छाए वसभेहिं समं अप्पसागारिए ठितो णिरिक्खति ।।२५५०।।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सो इमं विधिमतिक्कंतो पासइ –

णिव्वीयमायतीए, दिट्ठीकीवो असारिए पेहे ।
अद्धाणाणि व गच्छति, संवाहणमणादि दच्छंति ॥२५५१॥

णिव्वीतियादियं जाहे आतीतो ताहे अप्पसारिए दिट्ठितो दिट्ठीए कीवो पासति, जइ से पोग्गल-परिसाडो जाओ तो लट्ठं. अणुवसमंते संबाधादिए वा देच्छति, अद्धाणं गच्छेज्ज, तत्थ दच्छंति पदभेदे वि णत्थि पच्छित्तं ॥२५५१॥

जे भिक्खू रण्णो खत्तियाणं मुदियाणं मुद्धाभिसित्ताणं मंस-खायाणं वा मच्छ-खायाणं वा छवि-खायाणं वा बहिया निग्गयाणं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति॥सू०॥१०॥

मिगादिपारद्धिणिग्गता मंसखादगा – दह-णइ-समुद्देसु मच्छखादगा, छवी कलमादिसंगा, ता खामो त्ति णिग्गया उज्जाणियाए वा णियकुलाण ।

मंस छवि भक्खणट्ठा, सव्वे उड्डणिग्गया समक्खाया ।
गहणागहणे सत्थउ, दोसा ते तं च वितियपदं ॥२५५२॥

तेसु छसु उड्डसु राइण णिग्गताणं तत्थेव असण-पाण-खाण-सातिमं उवकरेंति तडियकप्पडियाण वा तत्थेव भत्तं करेज्ज । तत्थ भद्दपंतादयो दोसा पूर्ववत् । अण्णेसिं गहणे, रण्णो अग्गहणे इमं वक्खाणं ॥२५५२॥

मंसक्खाया पारद्धिणिग्गया मच्छ-णति-दह-समुद्दे ।
छवि-कलमादीसंगा, जे य फला जम्मि उ उडुम्मि ॥२५५३॥

तत्थ गया पगते कारवेंति ॥२५५३॥

जे भिक्खू रण्णो खत्तियाणं मुदियाणं मुद्धाभिसित्ताणं अण्णयरं उववूहणियं समीहियं पेहाए तीसे परिसाए अणुट्ठियाए अभिण्णाए अव्वोच्छिण्णाए जो तमण्णं पडिग्गाहेति, पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥११॥

क्षतात् त्रायन्तीति क्षत्रिया, अण्णतरग्गहणेन भेददर्शनं, शरीरं उपबृंहयंतीति उपबृंहणीया, समीहिता समीपमतिता, तं पुण पाहुडं, पेहाए प्रेक्ष्य ।

उववूहणिय त्ति अस्य पदस्य व्याख्या –

मेहा धारण इंदिय, देहाऊणि विवज्जए जम्हा ।
उववूहणीय तम्हा, चउव्विहा सा उ असणादी ॥२५५४॥

शीघ्रं ग्रन्थग्रहणं मेधा, गृहीतस्याविस्मरणेन धृति धारणा, सोतिदियमादियाणं सविसए पाडव-जणणं, देहस्सोपचओ, आउसंवट्टणं, जम्हा एते एवं उववूहति तम्हा उववूहणिया । सा य चउव्विहा-असणादि ॥२५५४॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

"तीसे परिसाए अणुट्ठिए" त्ति अस्य व्याख्या –

आसण्णमुक्का उट्ठिय, भिण्ण उ विणिग्गया ततो केई ।
वोच्छिण्णा सव्वे णिग्गया उ पडिपक्खओ सुत्तं ॥२५५५॥

जेमंतस्स रण्णो उवबूहणिया आणिया, विट्ठओ त्ति वुत्तं भवति, तं जो ताए परिसाए अणुट्ठिताए गेण्हति तस्स ङ्का । रायपिंडो चेव सो । आसणाणि मोत्तुं उद्धट्ठिताए अच्छंति, ततो केति णिग्गता भिण्णा, असेसेसुं णिग्गतेसु वोच्छिण्णा, एरिसे ण रायपिंडो । पडिपक्खे सुत्तं – अणुट्ठिताए अभिण्णाए अव्वोच्छिण्णाए-इत्यर्थः ॥२५५५॥

रण्णो उवबूहणिया, समीहितो वक्खडा तु दुविहा तु ।
[2]छिन्नाच्छिन्ने तत्थ उ, दोसा ते तं च बितियपदं ॥२५५६॥

उवक्खडा अणुवक्खडा य । [1]ओदणकुसणादि उवक्खडा य, खीरदहिमादि अणुवक्खडा, सव्वेसु परिविट्ठेसु छिण्णा परिविस्समाणी अच्छिण्णा सा उवबूहणिया । तीए परिसाए अणुवट्ठिताए अभिण्णाए अव्वोच्छिण्णाए उवबूहणियाए घेप्पमाणीए ते चेव भद्दपंते दोसा तं चेव बितियपदं ॥२५५६॥

अह पुण एवं जाणेज्ज – "इहज्ज रायखत्तिए परिवुसिए" जे भिक्खू ताए गिहाए ताए पयसाए ताए उवासंतराए विहारं वा करेइ, सज्झायं वा करेइ. असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा आहारेइ, उच्चारं वा पासवणं वा परिट्ठवेइ, अण्णयरं वा अणारियं पिहुणं अस्समण-पाउग्गं कहं कहेति, कहेंतं वा सातिज्जति॥सू०॥११॥

"अथे" त्ययं निपातः, उक्तः पिंडः, वसहिविसेसणो पुण सद्दो यथावक्ष्यमाणं एवं जाणेज्जा – "ज्ञा" अवबोधने, "इह" भूप्रदेशे "अज्जे" त्ति वर्तमानदिने, परिवुसे पर्युषिते वसतेत्यर्थः । जे भिक्खू तस्मिन् गृहे निकृष्टतरो अपवरकादि प्रदेशः, तस्मिन्नपि निकृष्टतरः खद्वास्थानं अवकाशः विहारादि करेज्ज. तस्स ङ्क ।

राया उ जहिं उसिते, तेसु पएसेसु बितियदिवसादि ।
जे भिक्खू विहरेज्जा, अहवा वि करेज्ज सज्झायं ॥२५५७॥

असणादी वाहारे, उच्चारादीणि वोसिरेज्जा वा ।
सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त-विराधणं पावे ॥२५५८॥

आणादिणो दोसा, तस्मिन् गृहे यस्मिन् राजा स्थितः आसीत्, ततो रायोच्चरियाओ रक्खिज्जंति, तत्थ गहणादयो दोसा । अह उच्चारपासवणं परिट्ठवेति ताहे तमेव छन्नाऽऽविज्जति ॥२५५८॥

अहवा –

पम्हुट्ठ अवहए वा, संका अभिचारुगं च किं कुणति ।
इति अभिनववुत्थम्मि, चिर वुत्थऽचियत्तगहणादी ॥२५५९॥

---

१ व्यंजनम् । २ गहणागहणमच्छिन्ने, इति पूनासत्कभाष्यप्रतौ पाठः ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तत्थ किं चि पम्हुट्ठं। पम्हुट्ठं णाम पडियं, वीसरियं वा किं चि होज्ज, अण्णेण वि अवहरिते संकिज्जति, पम्हुट्ठस्स हरणबुद्धीए इंदियठिया उच्चाटण-वसीकरणाणि, एस एत्थ ठितो अभिचारुअं करेति। अहिणवपवुत्थे एते दोसा, चिरपवुत्थे अपत्तियं, गहणादिया दोसु वि।

अहवा सचित्तकम्मे, दट्ठूणोधारिते तु ते दिव्वे।
अत्थाणी वासहरे, णिवण्णसंबाहिओ व ईह ॥२५६०॥

तासु सचित्तकम्मासु वसहीसु अण्णारिसो भावो समुप्पज्जति-एत्थ अत्थाणि मंडवो, एत्थ से वासघरं, एत्थ णिवण्णो, एत्थ संबाधितो, एवमादि ठाणा दट्ठुं ॥२५६०॥

भुत्तभुत्ताण तहिं, हवंति मोहुब्भवेण दोसा उ।
पडिगमणादी तम्हा, एए उ पए वि वज्जेज्जा ॥२५६१॥

भुत्तभोगीण तं सुमरिउं मोहुब्भवो भवे, इतरेसिं कोउएण ॥२५६१॥

कारणेण –

बितियपदमणप्पज्झे, उस्सण्णाइन्न-संभमभए वा।
जयणाएऽणुण्णवेत्ता, कप्पंति विहारमादीणि ॥२५६२॥

अणवज्जो सव्वाणि वि करेज, उस्सण्णं णाम ण तत्थ कोति वावारं वहति, प्रोज्झितमित्यर्थः, आइण्णं – सव्वलोगो आयरति, अण्णत्रसहीए अभावे अग्गिमादिसंभमे वा बोहिगादिभये वा जयणाए तप्पडियरगे अणुण्णवेत्ता विहारमादीणि करेति ॥२५६२॥

जे भिक्खू रण्णो खत्तियाणं मुदियाणं मुद्धाभिसित्ताणं बहिया जत्ता-संठियाणं
असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिग्गाहेइ,
पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१२॥

जे भिक्खू रण्णो खत्तियाणं मुदियाणं मुद्धाभिसित्ताणं बहिया जत्ता-पडिणियत्ताणं
असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिग्गाहेइ,
पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१३॥

जाहे परविजयट्ठा गच्छति ताहे मंगलसंतिणिमित्तं दियादीण-भोयणं काउं गच्छंति, पडिणियत्ता वि विजए संखडिं करेंति।

जत्तुग्गतरादीणं, अहवा जत्ता उ पडिणियत्ताणं।
गहणागहणे तत्थ उ, दोसा ते तं च बितियपदं ॥२५६३॥

गहणागहणे भद्दपंतदोसा, रण्णो ण गेण्हंति अण्णेसिं गेण्हंति, अण्णेहिं वा अत्तट्ठियं गेण्हंति, ते चेव दोसा, तं चेव बितियपदं ॥२५६२॥

मंगलममंगलिच्छा, णियत्तमणियत्तमे य अहिकरणं।
जावंतिगमादी वा, एमेव य पडिनियत्ते वी ॥२५६४॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जत्ताभिमुहस्स णियत्तस्स वा मंगलबुद्धीए अमंगलबुद्धीए वा। मंगलबुद्धीए गच्छति पविसति वा, अमंगलबुद्धीए ण गच्छति ण वा गिहं पविसति। दुहा वि अधिकरणं। जावंतियमादीणि वा दोसेण दुट्ठं भत्तं गेण्हेज्जा ।।२५६४।।

जे भिक्खू रण्णो खत्तियाणं मुदियाणं मुद्धाभिसित्ताणं णइ-जत्ता-पट्ठियाणं
असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिग्गाहेइ,
पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।१४।।

जे भिक्खू रण्णो खत्तियाणं मुदियाणं मुद्धाभिसित्ताणं णइ-जत्ता-पडिणियत्ताणं
असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिग्गाहेइ,
पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।१५।।

जे भिक्खू रण्णो खत्तियाणं मुदियाणं मुद्धाभिसित्ताणं गिरि-जत्ता-पट्ठियाणं
असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिग्गाहेइ,
पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।१६।।

जे भिक्खू रण्णो खत्तियाणं मुदियाणं मुद्धाभिसित्ताणं गिरि-जत्ता-पडिनियत्ताणं
असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिग्गाहेति,
पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।१७।।

गिरिजत्तपट्ठियाणं, अहवा जत्ताओ पडिनियत्ताणं।
गहणागहणे तत्थ उ, दोसा ते तं च वितियपदं ।।२५६५।।
गिरिजत्ता गयगहणी, तत्थ उ संपट्ठिया नियत्ताणं।
गहणागहणे तत्थ उ, दोसा ते तं च वितियपदं ।।२५६६।।

चारिवंधं हत्थिगहणी तीए गच्छति ।।२५६६।।

जे भिक्खू रण्णो खत्तियाणं मुदियाणं मुद्धाभिसित्ताणं महाभिसेयंसि वट्टमाणंसि
णिक्खमति वा पविसति वा, णिक्खमंतं वा पविसंतं वा सातिज्जति।।१८।।

जे त्ति निद्देसे, भिक्खू पुव्ववण्णिओ, "राजृ दीप्तौ", ईसरतलवरमादियाणं अभिसेगाणमहंततरो अभिसेयो महाभिसेओ, अविरायत्तेण अभिसेयो, तम्मि वट्टंते जो तस्समीवेण मज्भेण वा णिक्खमति वा तस्स आणादी दोसा ङ्क।

रण्णो महाभिसेगे, वट्टंते जो उ णिक्खमे भिक्खू।
अहवा वि पविसेज्जा, सो पावति आणमादीणि ।।२५६७।।
मंगलममंगले वा, पवत्तण णिवत्तणे य थिरमथिरे।
विजए पराजए वा, वोच्छेयं वा वि पडिसेहं ।।२५६८।।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मंगलवुद्धीए पवत्ताण अधिकरणं, अमंगलवुद्धीए णियत्तणे अधिकरणदोसा, वोच्छेदादिया य, जइ से थिररज्जं विजओ वा जातो पुणो पुणो मंगलिएसु अत्थेसु साहवो तत्थ ठविज्जंति अधिकरणं च। अथिरे पराजए वा वोच्छेदं पडिसेहं वा, णिव्विसयादि करेज्ज।

अहवा –

दट्ठूण य रायड्ढिं, परीसह-पराजिओऽत्थ कोई तु।
आसंसं वा कुज्जा, पडिगमणाईणि व पयाणि ॥२५६९॥ पूर्ववत्।

बितियपदमणप्पज्झे, अभिचारऽविकोविते व अप्पज्झे।
जाणंते वा वि पुणो, अणुण्णवणादीहिं कज्जेहिं ॥२५७०॥

काए विधीए अणुण्णवितव्वो ? किं पुव्विं पच्छा मज्झे अणुण्णवेयव्वो ?

उच्यते –

णाउणमणुण्णवणा, पुव्विं पच्छा अमंगलमवण्णा।
उवओगपुच्छिऊणं, न णाए मज्झे अणुण्णवणे ॥२५७१॥

ओहादीयाभोगिणि, णिमित्तविसएण वा वि णाऊणं।
भद्दे पुव्वाणुण्णा, पंतमणाए य मज्झम्मि ॥२५७२॥

ओहिमादिणा णाणविसेसेण आभोगिणिविज्जाए वा अवितहनिमित्ते वा उवउज्जिऊण, अप्पणो असति अण्णं वा पुच्छिऊणं थिरंति रज्जं णाऊणं अणुण्णवणा पुव्विं भवति। अथिरं वा रज्जं णाऊण पुव्विं अणुण्णाविज्जंतो अमंगलवुद्धी वा से उप्पज्जति, पच्छा अवज्ञावुद्धी उप्पज्जति, ओहिमादिणाणाभावे वा मज्झे अणुण्णवेति ॥२५७२॥

अणुण्णविते दोसा, पच्छा वा अप्पियं अवण्णो वा।
पंते पुव्वममंगल, णिच्छुभण पओस पत्थारो ॥२५७३॥

मम रज्जाभिसेए अट्ठारस पगतीओ सव्वपासंडा य अग्वे घेत्तूमागया इमे सेयभिक्खुणो णागता तं एते अप्पयद्धा अलोकज्ञा।

अहवा – अहमेतेसिं अप्पिओ, णिव्विसयादी करेज्ज, पच्छा वि अवज्ञादोषा भवंति, पुव्वं अमंगलदोसो, तम्हा ते अणुण्णवेयव्वा ॥२५७३॥

आभोएत्ताण विदू, पुव्विं पच्छा णिमित्तविसएण।
राया किं देमि त्ति य, जं दिण्णं पुव्वरादीहिं ॥२५७४॥

धम्मलाभेत्ता भणंति – अणुजाणह पाउग्गं, ताहे जइ जाणति पाउग्गं, भद्दगो वा ताहे भणाति – जाव अणुण्णायं। अयाणगो राया भणति – किं देमि ? ताहे साहवो भणंति – जं दिण्णं पुव्व-रातीहिं ॥२५७४॥

जाणंतो अणुजाणति, अजाणतो भणति तेहि किं दिण्णं।
पाउग्गं ति य वुत्ते, किं पाउग्गं इमं सुणसु ॥२५७५॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

किं दिण्णं पुव्वरातीहिं ? साहवो भणंति – इमं सुणसु –

आहार उवहि सेज्जा, ठाण णिसीयण तुयट्ट-गमणादी ।
थी-पुरिसाण य दिक्खा, दिण्णा णे पुव्वरादीहिं ॥२५७६॥

एवं भणिए –

भद्दो सव्वं वितरति, दिक्खावज्जमणुजाणते पंतो ।
अणुसट्ठातिमकाउं, णिंते गुरुगा य आणादी ॥२५७७॥

पंतो भणाति – मा पव्वावेह, सेसं अणुण्णायं, जइ तुब्भे सव्वं लोगं पव्वावेह, किं करेमो ? एवं पडिसिद्धा अणुसट्ठादी अकाउं ततो रज्जातो णिंति चउगुरुं, आणादिणो ॥२५७७॥

इमे य दोसा –

चेइय-सावग-पव्वतिउकामअतरंत-बाल-वुड्ढा य ।
चत्ता अजंगमा वि य, अभत्ति तित्थस्स हाणी य ॥२५७८॥

एते सव्वे परिचत्ता भवंति, चेतियतित्थकरेसु अभत्ती, पवयणे हाणी कता, एत्थ पडिसिद्धं अन्नत्थ वि पडिसिद्धं, एवं ण कोति पव्वयति एवं हाणी ॥२५७८॥

अच्छंताण वि गुरुगा, अभत्ति तित्थे य हाणि जा वुत्ता ।
भणमाण भाणवेंता, अच्छंति अणिच्छे वच्चंति ॥२५७९॥

पडिसिद्धे वि अच्छंताण चउगुरुं । अण्णत्थ वि भविय जीवा बोहियव्वा । ते ण बोहेंति । अउ तत्थ अच्छंता सयं भणंता अण्णेहि य भणाविता किं चि कालं उ दिक्खंति, सव्वहा अणिच्छंते अण्णरज्जं गच्छंति ॥२५७९॥

संदिसह य पाउग्गं, दंडिगो णिक्खमण एत्थ वारेति ।
गुरुगा अणिग्गमम्मी, दोसु वि रज्जेसु अप्पबहुं ॥२५८०॥

"[1]पुव्वभणियं तु जं भणणति – कारग-गाहा"–

एत्थ पडिसेहे देसाणुण्णा । का अणुण्णा ? इमा, "दोसु वि रज्जेसु अप्पबहु" त्ति – तस्स दो रज्जे हवेज्ज ॥२५८०॥

एक्कहि विदिण्ण रज्जे, रज्जे एगत्थ होइ अविदिण्णं ।
एगत्थ इत्थियाओ, पुरिसज्जाता य एगत्थ ॥२५८१॥

अहवा – सो भणेज्ज - मम दो रज्जे, एगत्थ पव्वातेह, एगत्थ मा । तत्थ साहवो रज्जेसु अप्पबहुं जाणिऊण जत्थ बहुया पव्वयंति तत्थ गच्छंति ।

अहवा – एगत्थ रज्जे इत्थियाओ अब्भणुण्णाया, एगत्थ पुरिसा, दोसु वि रज्जेसु एगतरं वा ॥२५८१॥

---

१ पिठिकायां तृतीय पृष्ठे ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तरुणा थेरा य तहा, दुग्गयगा अड्ढगा य कुलपुत्ता ।
जणवयगा णागरगा, अब्भंतरबाहिरा कुमरा ॥२५८२॥

अहवा – भणेज्ज – थेरे पव्वावेह, मा तरुणे ।

अहवा – मा थेरा, तरुणा । दुग्गए पव्वावेह, मा अड्ढे ।

अहवा – अड्ढे मा, दुग्गते । कुलपुत्ते – कुलपुत्तगहणाओ सुसीला, सुसीले पव्वावेह, मा दुस्सीले ।

अहवा – दुस्सीले, मा सुसीले । एवं जाणवदा, णागरा, णगरब्भंतरा, बाहिरा, कुमारा अकतदारसंगहा ॥२५८२॥

ओहीमाती णातुं, जे दिक्खमुवेंति तत्थ बहुगा उ ।
ते वेंति समणुजाणसु, असती पुरिसे य जे य बहु ॥२५८३॥

असति त्ति ओहिमादीण, पुरिसे पव्वावेंति जो वा थी-पुरिसादियाण बहुतरो वग्गो तं पव्वावेंति ॥२५८३॥

एताणि वितरति तहिं, कम्मघण कक्खडो उ णिव्विसए ।
भरहाहिवो णऽसि तुमं, पभवामी अप्पणो रज्जे ॥२५८४॥

कोति एयाणि वितरति, कोति पुण अतिपंतो "कम्मघणो" त्ति - कम्मबहुलो "कक्खडो" - तिव्वकम्मोदए वट्टमाणो णिव्विसए आणवेज्ज । तत्थ पुलागलद्धिमादिणा वत्तव्वं – भरहाहिवो णऽसि तुमं । सो भणति – जइ वि णो भरहाहिवो तहावि अप्पणो रज्जे पभवामि ॥२५८४॥

सो पुण णिव्विसए इमेण कज्जेण करेति –

दिक्खेहिं अच्छंता, अमंगलं वा मए इमे दिट्ठा ।
मा वा ण पुणो देच्छं, अभिक्खणं चेति णिव्विसए ॥२५८५॥

मा अच्छंता दिक्खेहिति, अमंगलं वा, इमे मए दिट्ठा मा पुणो अभिक्खणं देच्छामि, एतेण कारणेण णिव्विसए ॥२५८५॥

भणति तत्थ –

अणुसट्ठी धम्मकहा, विज्जणिमित्ते पभुस्स करणं वा ।
भिक्खे अलब्भाणे, अद्धाणे जा जहिं जयणा ॥२५८६॥

अणुसट्ठी धम्मकहा विज्जा-मंत-णिमित्तादिएहिं उवसामिज्जति । अणुवसमंते जति पभू तो करणं करेति ॥२५८६॥

वेउव्वियलद्धी वा, ईसत्थे विज्जओरसबली वा ।
तवलद्धि पुलागो वा, पेल्लेति तमेतरे गुरुगा ॥२५८७॥

जहा भगवया "विण्हुणा" अणगारेण, ईसत्थे वा जो कयकरणो, विज्जासमत्थो वा जहा "अज्जखउडो", सहस्सजोही वा उरस्सबलेण जुत्तो, तवसा वा जस्स तेओलद्धी उप्पण्णा, पुलागलद्धी वा, एरिसो समत्थो बंधिता पुत्तं सरज्जे ठवेति ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अहवा – अप्पणा वट्टावेति जाव रायपुत्तो जोग्गो लद्धो । इतरो पुण असमत्थो जइ पेल्लेति तो चउगुरुगा । अणुवसमंते णिग्गंतव्व, णिग्गएहिं उग्गमुप्पायणेसणासुद्धं भुंजतेहिं गंतव्वं, जाहे ण लब्भइ ताहे पणगपरिहाणीए जतितुं घेप्पति, अद्धाणे जा जयणा वुत्ता सा जयणा इहा वि दट्ठव्वा ॥२५८७॥

जे भिक्खू रण्णो खत्तियाणं मुदियाणं मुद्धाभिसित्ताणं इमाओ दसअभिसेयाओ रायहाणिओ उद्दिट्ठाओ गणियाओ वंजियाओ अंतो मासस्स दुक्खुत्तो वा तिक्खूत्तो वा णिक्खमति वा पविसति वा, णिक्खमंतं वा पविसंतं वा सातिज्जति। तं जहा-चंपा महुरा वाणारसी सावत्थी साएयं कंपिल्लं कोसंबी मिहिला हत्थिणपुरं रायगिहं वा ॥सू०॥१६॥

"इमा" प्रत्यक्षीभावे, दस इति संखा, राईण ठाणं रायधाणि त्ति उद्दिट्ठातो, गणियाओ दस, वंजियाओ णामेहिं, अंतो मासस्स दुक्खुत्तो तिक्खुत्तो वा णिक्खम-पवेसं करेंतस्स ङ्क ।

दसहिं य रायहाणी, सेसाणं सूयणा कया होइ ।
मासस्संतो दुग-तिग, ताओ अतितम्मि आणादी ॥२५८८॥

अन्नाओ वि णयरीओ बहुजणसंपगाढाओ णो पविसियव्वं ॥२५८८॥

इमा सूत्रस्य व्याख्या –

इम इति पच्चक्खम्मी, दस संखा जत्थ राइणो ठाणा ।
उद्दिट्ठ-रायहाणी, गणिता दस वंज चंपादी ॥२५८९॥

णामेहिं वंजियाओ चंपादि ॥२५८९॥

चंपा महुरा वाणारसी य सावत्थिमेव साएतं ।
हत्थिणपुर कंपिल्लं, मिहिला कोसंबि रायगिहं ॥२५९०॥

बारसचक्कीण एया रायहाणीओ ॥२५९०॥

संती कुथू य अरो, तिण्णि वि जिणचक्की एक्कहिं जाया ।
तेण दस होंति जत्थ व, केसवजाया जणाइण्णा ॥२५९१॥

जासु वा णगरीसु केसवा अण्णा वि जा जणाइण्णा सा वि वज्जणिज्जा ॥२५९१॥

तत्थ को दोसो ?

तरुणा वेसित्थि विवाहरायमादीसु होति सतिकरणं ।
आउज्ज-गीयसद्दे, इत्थीसद्दे य सवियारे ॥२५९२॥

तरुणे ण्हातविलित्ते थीगुम्मपरिवुडे दट्ठूण, वेसित्थीओ उत्तरवेउव्वियाओ, वीवाहे य विवाहरिद्धिसमिद्धे आहिंडमाणो, रायाऽणेयविविहरिद्धिजुत्ते णिंताणिंते दट्ठुं, भुत्तभोगीणं सतिकरणं, अभुत्ताणं कोउयं पडिगमणादी दोसा। आदिसद्दातो बहु नडनट्टादि आओज्जाणि वा ततविततादीणि गीयसद्दाणि वा ललिय-विलास-हसिय-भणियाणि, मंजुलाणि य इत्थीसद्दाणि, सविगारग्गहणातो मोहोदीरणा ॥२५९२॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

किं चान्यत् –

रूवं आभरणविहिं, वत्थालंकार भोयणे गंधे ।
मत्तुम्मत्तविउव्वण, वाहण-जाणे सतीकरणं ॥२५९३॥

सिंगारागाररूवाणि, हारऽद्धहारादिया आभरणविधी. वत्था "आजीनसहिणादिया" सत्तमुद्देसगा-भिहिता, केसपुप्फादि अलंकारो, विविधं वंजणोववेयं भोयणजायं भुंजमाणं पासित्ता, मिगंड-कप्पूरागरु-कुंकुम-चंदण-तुरुक्खादिए गंधे, तहा मत्ते विलोलघोलंतनयणे, उत् प्राबल्येन मत्ते उन्मत्ते दरमत्तो वा उन्मत्तो, विविधवेसेहिं विउव्विया, आसादिवाहणारूढा, सिबियादिएहिं जाणेहिं गच्छमाणे पासित्ता, सतिकरणादिएहिं दोसेहिं संजमाओ भज्जेज्ज ।

अहवा – वेहाणसं गद्धपट्ठं वा करेज्ज ॥२५९३॥

इमे य विराहणादोसा –

हय-गय-रह-सम्मद्दे, जणसम्मद्दे य आयवावत्ती ।
भिक्ख वियार विहारे, सज्झायज्झाणपलिमंथो ॥२५९४॥

हय-गय-रह-जाणसम्मद्देण आयविराहणा भवे, बहुजणसम्मद्देण रोहिय-रत्थासु दिवखंतस्स भिक्खवियारे विहारेसु सज्झाएसु य पलिमंथो अच्चाउले झाणपलिमंथो ॥२५९४॥ जम्हा एते दोसा तम्हा एत्य ण गंतव्वं ।

भवे कारणं –

बितियपदे असिवादी, उवहिस्स वा कारणे व लेवस्स ।
बहुगुणतरं च गच्छे, आयरियादि व्व आगाढे ॥२५९५॥

अण्णो असिवं तेण अतिगम्मति, उवही वा अण्णओ ण लब्भति, तत्थ सुलभो लेवो, गच्छवासीण वा तं बहुगुणं खेत्तं, आयरियाण वा तत्थ जवणिज्जं पाउग्गं वा लब्भति । आदिसद्दाओ बाल-वुड्ढ-गिलाणाण वा अण्णतरे वा आगाढे पओयणे ॥२५९५॥

अहवा –

रायादि-गाहणट्ठा, पदुट्ठ-उवसामणट्ठ-कज्जे वा ।
सेहे व अतिच्छंता, गिलाण वेज्जोसहट्ठा वा ॥२५९६॥

रण्णो धम्मगाहणट्ठा । रण्णो अण्णस्स वा पदुट्ठस्स उवसमट्ठा । सेहो वा तत्थ ठितो सण्णायगाण य अगम्मो, तम्मज्झेण वा गच्छिउकामो, गिलाणस्स वा वेज्जोसह – णिमित्तं ॥२५९६॥

जे भिक्खू रण्णो खत्तियाणं मुदियाणं मुद्धाभिसित्ताणं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा परस्स नीहडं पडिग्गाहेति, पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति । तं जहा - खत्तियाण वा राईण वा कुराईण वा राय-संसियाण वा राय-पेसियाण वा ॥सू०॥२०॥

क्षतात् त्रायन्तीति क्षत्रिया आरक्षकेत्यर्थः, अधिवो राया, कुस्सितो राया कुराया ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अहवा – पच्चंत-णिवो कुराया, जे एतेसिं चेव प्रेष्या पेसिता, एतेसिं णीहडं - णिसट्ठं - दत्तमित्यर्थः ।

खत्तियमादी ठाणा, जतियमेत्ता उ आहिया सुत्ते ।
तेसू णीहड-गहणे, दोसा ते तं च बितियपदं ॥२५६७॥

जे भिक्खू रण्णो खत्तियाणं मुदियाणं मुद्धाभिसित्ताणं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा परस्स नीहडं पडिग्गाहेति, पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति । तं जहा-णडाण वा णट्टाण वा कच्छुयाण वा जल्लाण वा मल्लाण वा मुट्ठियाण वा वेलंबगाण वा कहगाण वा पवगाण वा लासगाण वा दोखलयाण वा छत्ताणुयाण वा ॥सू॥२१॥

णाडगादि णाडयंता णडा, णट्टा अकेल्ला, जल्ला राज्ञः स्तोत्रपाठकाः, अणाहमल्लगाणं पविट्ठा मल्ला, मुट्ठिया जुज्झणमल्ला, वेलंबका खेलं वा(?)अक्खातिगा कहाकारगा कहगा, णदीसमुद्दादिसु जे तरंति ते पवगा, जयसद्दपयोत्तारो लासगा भंडा इत्यर्थः ।

नडमादी ठाणा खलु, जत्तियमेत्ता य आहिया सुत्ते ।
तेसू णीहड-गहणे, दोसा ते तं च बितियपदं ॥२५६८॥

जे भिक्खू रण्णो खत्तियाणं मुदियाणं मुद्धाभिसित्ताणं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा परस्स नीहडं पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति । तं जहा—आस-पोसयाण वा हत्थि-पोसयाण वा महिस-पोसयाण वा वसह-पोसयाण वा सीह-पोसयाण वा वग्घ-पोसयाण वा अय-पोसयाण वा पोय-पोसयाण वा मिग-पोसयाण वा सुण्ह-पोसयाण वा सूयर-पोसयाण वा मेंढ-पोसयाण वा कुक्कुड-पोसयाण वा तित्तिर-पोसयाण वा वट्टय-पोसयाण वा लावय-पोसयाण वा चीरल्ल-पोसयाण वा हंस-पोसयाण वा मयूर-पोसयाण वा सुय-पोसयाण वा ॥सू०॥२२॥

बृहत्तरा रक्तपादा वट्टा, अल्पतरा लावगा ।

पोसगमादी ठाणा, जत्तियमेत्ता उ आहिया सुत्ते ।
तेसू णीहड-गहणे, दोसा ते तं च बितियपदं ॥२५६९॥

जे भिक्खू रण्णो खत्तियाणं मुदियाणं मुद्धाभिसित्ताणं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा परस्स णीहडं पडिग्गाहेति, पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति । तं जहा-आस-दमगाण वा हत्थि-दमगाण वा ॥सू०॥२३॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जे भिक्खू रण्णो खत्तियाणं मुदियाणं मुद्धाभिसित्ताणं वा असणं वा पाणं वा
खाइमं वा साइमं वा परस्स नीहडं पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहेंतं वा
सातिज्जति। तं जहा – आस-मिंठाण वा हत्थि-मिंठाण वा ॥सू०॥२४॥

जे भिक्खू रण्णो खत्तियाणं मुदियाणं मुद्धाभिसित्ताणं असणं वा पाणं वा
खाइमं वा साइमं वा परस्स णीहडं पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहेंतं वा
सातिज्जति। तं जहा आस-रोहाण वा हत्थि-रोहाण वा॥सू०॥२५॥

दमगादी ठाणा खलु, जत्तियमेत्ता उ आहिया सुत्ते।
तेसू नीहड-गहणे, दोसा ते तं च वितियपदं ॥२६००॥

इमं सुत्तवक्खाणं –

आसाण य हत्थीण य, दमगा जे पढमताए विणियंति।
परियट्ट मेंठ पच्छा, आरोहा जुद्धकालम्मि ॥२६०१॥

जे पढमं विणयं गाहेंति ते दमगा, जे जणा जोगासणेहिं वावारं वा वहेंति ते मेंठा, जुद्धकाले जे आरुहंति ते आरोहा ॥२६०१॥

जे भिक्खू रण्णो खत्तियाणं मुदियाणं मुद्धाभिसित्ताणं असणं वा पाणं वा
खाइमं वा साइमं वा परस्स नीहडं पडिग्गाहेति, पडिग्गाहेंतं वा
सातिज्जति। तं जहा – सत्थवाहाण वा संवाहावयाण वा
अब्भंगावयाण वा उव्वट्टावयाण वा मज्जावयाण वा मंडा-
वयाण वा छत्त-ग्गहाण वा चामर-ग्गहाण वा हडप्प-ग्गहाण वा
परियट्ट-ग्गहाण वा दीविय-ग्गहाण वा असि-ग्गहाण वा धणु-
ग्गाहाण वा सत्ति-ग्गहाण वा कोंत-ग्गहाण वा ॥सू०॥२६॥

ईसत्थमादियाणि रायस्त्थाणि आहयंति कथयंति ते सत्थवाहा, पडिमद्दंति जे ते परमद्दा शयन-काले परिपिट्टंति, शतपाकादिना तैलेन अब्भंगेति, पादेहिं. उव्वट्टेति, ण्हावेंति जे ते मज्जावका, मउडादिणा मंडेति जे ते मंडावगा, वस्त्रपरावर्तं गृण्हन्ति जे ते परियट्टगा, आभरणभंडयं "हडप्पो", चावं धणुयं, असी खग्गं।

सत्थवाहादि ठाणा, जत्तियमेत्ता उ आहिया सुत्ते।
तेसू नीहड-गहणे, दोसा ते तं च वितियपदं ॥२६०२॥

जे भिक्खू रण्णो खत्तियाणं मुदियाणं मुद्धाभिसित्ताणं असणं वा पाणं वा
खाइमं वा साइमं वा परस्स नीहडं पडिग्गाहेति, पडिग्गाहेंतं वा
सातिज्जति। तं जहा – वरिस-धराण वा कंचुइज्जाण वा
दोवारियाण वा डंडारक्खियाण वा ॥सू०॥२७॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वरिसधरट्ठाणादी, जत्तियमेत्ता उ आहिया सुत्ते ।
तेसू नीहड-गहणे, दोसा ते तं च बितियपदं ॥२६०३॥

गतार्थाः –

जे भिक्खू रण्णो खत्तियाणं मुदियाणं मुद्धाभिसित्ताणं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा परस्स नीहडं पडिग्गाहेति, पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति । तं जहा – खुज्जाण वा चिलाइयाण वा वामणीण वा वडभीण वा बब्बरीण वा पाउसीण वा जोणियाण वा पल्हवियाण वा ईसणीण वा थारुगिणीण वा लउसीण वा लासीग वा सिंहलीण वा आलवीण वा पुलिंदीण वा सबरीण वा परिसणीण वा. तं सेवमाणे आवज्जति चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं ॥ . ॥२८॥

शरीरवक्रा खुज्जा, पट्टिवदुगाहारा (पट्ठी कुज्जागारा) णिग्गता वडभं, सेसा विसया[illegible] ।

खुज्जाई ठाणा खलु, जत्तियमेत्ता उ आहिया सुत्ते ।
तेसू नीहड-गहणे, दोसा ते तं च बितियपदं ॥२६०४॥

अद्धाण-सद्दोसा, दुगुंछिता लोए संकसतिकरणं ।
आत-परसमुत्थेहिं, कड्ढणगहणादिया दोसा ॥२६०५॥

खुज्जादियासु गच्छंतस्स अद्धा(द्धा)णदोसा । गीयादिया य सद्दोसा । दुगुंछिताओ य ताओ लोए, [illegible]ायारसेवणे संकिज्जति । भुत्ताण सतिकरणादिया दोसा । इतराण कोउयं । आय-पर-उभयसमुत्था य दोसा । सो वा इत्थिं, इत्थी वा तं बला गेण्हेज्ज । गेण्हण-कड्ढणदोसा ॥२६०५॥

॥ इति निसीह-विसेसचुण्णीए नवमओ उद्देसओ समत्तो ॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

About the Book :

Nishtha is an important Agama text of the Jainas. The bhashya of Sthavira Pungava Shri Vishahagani Mahattara and the Churni of Jinadasa Mahattara on this Agama text posses a great value and special significance. The Bhashya describe different aspects of conduct suited to life according to different situations created by the circumstances of time and place. Besides, the Bhashya throws light on the cultural, Political, Social and other aspects contemporaneous with the period of Bhashyakara.

Infact, Nishith is an encyclopaedia of knowledge which the Bhashya suppliments additionally. It was first published by Sanmati Gyan Peeth, Agra under the Editorship of Pujya Shri Amar Muni Ji Maharaj and Muni Shri Kanhaiya Lal Ji. A number of scholars have written thesis on the work obtained Doctorates.

With the first edition going out of print, there has been an incessant demand for the supply of this book. It is to meet this long-felt need of scholars, Universities and private Institutes that this present reprint has seen the light of the day.

Complete set in four Parts **Rs. 600.00**

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow